



# दिल्ली सल्तनत

[ ७११ से १५२६ ई तक ]

डॉ आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव

एम ए पी एच डी डी लिट (तख्तऊ) टी लिट (आगरा)  
सर जदुनाथ सरकार स्वण पदक विजता

शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी प्राइवेट लिमिटेड  
पुस्तक प्रकाशक तथा विक्रेता आगरा-२

रजिस्टर्ड कार्यालय  
अस्पताल रोड जागरा



गाथाए

चीन रास्ता जयपुर ● खजूरी बाजार इंदौर

प्रथम संस्करण	अप्रैल १९५२	द्वितीय संस्करण	जुलै १९५५
तृतीय संस्करण	अगस्त १९५६	चतुर्थ संस्करण	नितम्बर १९६२
		पंचम संस्करण	माच १९६५

मूल्य दस रुपय

दुर्गा प्रिंटिंग प्रेस जागरा

## पंचम सस्करण के प्रति

प्रस्तुत पुस्तक व पंचम सस्करण का पाठका व ज्ञाया म दन हुए मुझ वर प्रसंगता है। यह सस्करण चतुथ सस्करण की आवृत्ति मात्र है फिर भा यर्न वहाँ गननिया का मुधार निया गया है। मुन आशा है कि पुस्तक पहन का भीति हा पाठका व तिर उपयोगी मिद हागा।

आगरा

१ माच १९६५

आशीर्वादीलाल धीवाम्त्व

## तृतीय सस्करण के प्रति

प्रस्तुत सस्करण म पुस्तक का पूणनया सशोधित कर निया गया है और नो नय अध्याय— अफगानिस्तान म हिन्दू राय तथा प्राक मय युग म हिन्दुआ का पराजय व कारण और वन निया गय है। ये ज्ञाना अध्याय तबालान मून खाना म प्राप्न सामग्री व पर्याप्न अध्ययन पर आधारित है। अफगा निस्तान भारत का हा एक भाग था और ६७० ई म हमवे हाम म तिरन गया था। हिन्दुओ की पराजय व कारण अध्याय म यह स्पष्ट किया गया है कि भारत ने अरब और तुर्कों आक्रमणकारिया का ७वा शताब्दी के मय म १२वी शताब्दी व अन तक प्रयन प्रतिरोध किया था। लगक व दूठ निष्पय अजाव अथवा आश्चयप्र नो प्रतीत हा सकन हैं किन्तु व अग्नी और फारमा म त्रिगित तत्कालीन मून सामग्री व अध्ययन पर आधारित हैं। आशा है कि इस नय रूप म त्रिनी मतनत विद्वाना विद्यार्थिया तथा जज्ञसाधारण व द्वारा हमके पहन सस्करणो की भीति ही नमाहन और प्रप्ण की जायगी।

आगरा कालिज

आगरा

१५ जगस्त १९५९

आशीर्वादीलाल धीवास्तय



## द्वितीय संस्करण के प्रति

इस पुस्तक के प्रथम संस्करण का देना के मन्त्री कारिजा और विरव विद्यालय में स्वागत हुआ जिससे प्राप्तमाहित हाकर लखनू न इसका दूसरा संस्करण प्रकाशित किया है । पहला संस्करण बहुत पहन ही समाप्त हो गया था और दूसरा संस्करण सन १९५४ तक छप जाना चाहिए था, किन्तु कुछ अनिर्दिष्ट परिस्थितियों के आत रहने के कारण इसके प्रकाशन में लगभग आठ मास का विराम ही गया ।

इस संस्करण का मशायद बनी मावधानों के साथ किया गया है । नासिद्धान सुभरवशाह का उत्पत्ति (मौलिकता) अब तक के अर्थ मन्त्री लखनू के लिए पहली बना हुआ था किन्तु श्री के एम मुशी द्वारा उनके प्रश्न पूछे जाने पर लखनू न इस पहली का मुलनाकर उनके वास्तविक रूप का मन्त्री पहन इस पुस्तक में स्थान दिया है ।

कुछ त्रुटि और घटनाओं के सम्बन्ध में भी सुधार किए गए हैं और दिल्ली सल्तनत का निश्चिन्त तथा राजवंश की वशावला-वृत्त के साथ-साथ सल्तनत काल के कुछ दृष्टान्त चित्र भी नये हैं ।

सबसे पहल इस पुस्तक के प्रथम संस्करण में ही यह स्पष्ट रूप से बतलाया गया था कि सल्तनत-काल के शासक किन्हीं के किन्तु कुछ विद्वानों ने यह मित्र करने का प्रयत्न किया है कि यह बात ऐसा नहीं था । इलियट जी के हाउसन वृत्त History of India as told by its Own Historians का दूसरा जिल्द का भूमिका में प्राक्कर मुहम्मद हबीब ने यह दृष्टान्तपूर्वक कहा है कि मुस्लिम शासन किन्हीं शासन नहीं था । इसके पक्ष में उनका बवल यज्ञा तक है कि इस काल के मुयानमान शासकों का शृ-सरकार (Home Government) भारत के बाहर नहीं था । किन्तु वह यह भन जान है कि इस काल के लगभग सभी शासक कम से कम मिद्वान्त रूप से तो खलीफा का अपना एकाधिपति मानते थे और बवल खलीफा के ही अधीन रहते थे । खलीफा ही नहीं बवल खलीफा के बन्धुसूत्र में भजत और भक्ता भगवान इत्यादि इत्यादि तीर्थ-स्थानों में धर्म करने के लिए अतुन धनराशि भी भजते थे । यह सब है कि उन्होंने भारत का अपना धर्म मान लिया था किन्तु उनका उद्देश्य इस देश के अस्तित्व में बनाना था । उनकी सरकार पूर्णतः विदेशी सरकार थी तथा उनका धर्म एक सत्त्वित विदेशी धर्म और इन्होंने भारत पर अपना

चाहते थे । इसका साथ साथ उनकी शासन प्रणाली तथा रहन सहन भी विदेशी था । वे अरब तथा मध्य एशिया से ही प्रेरणा प्राप्त किया करते थे । वे भारतीयों का सना मत तो भरती कर लेते थे किन्तु उनका धर्म सस्कृति परम्परा तथा रहन सहन से उन्हें कोई सहानुभूति नहीं थी । वे भारतीय नहीं बनना चाहते थे और उनका पीछिया से यहाँ प्रवास करने पर भी वे पूर्णरूप से भारतीय नहीं बन पाये । प्राफेसर पी हार्डी का मत है कि सल्तनत सरकार हिन्दुओं का धर्म हस्तक्षेप करने का ही अपना सामाजिक कर्तव्य मान समझता था । मुसलमान इस हस्तक्षेप को भले ही सामाजिक कर्तव्य समझ लें किन्तु हिन्दुओं के लिए यह हस्तक्षेप उनका राष्ट्रीय एवं सांस्कृतिक विनाश मात्र ही था । अतः लखनऊ उपयुक्त विद्वानों का मत से सहमत नहीं ।

वर्तमान संस्करण लेखक के कनिष्ठ पुत्र जयाभानु एम एस सी की सहायता से शीघ्र प्रकाशित हो सका है । उनके सहयोग के बिना इसका प्रकाशन संभव नहीं हो जाता । आशा है अधिक से अधिक विद्यार्थी इससे लाभ उठावग ।

भागव होस्टल

आगरा

२४ जुलाई १९५५

आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव

## प्रथम सस्करण का प्राक्कथन

The Sultanate of Delhi का देश व सभी भागों का अध्यापका तथा विद्यार्थियों ने स्वागत किया इसी से प्रास्ताविक शर्कर विद्यार्थियों का लाभ के लिए मैं उसका हिन्दी रूपान्तर प्रकाशित किया है।

पुस्तक मुख्यतः हमारे विश्वविद्यालय के वा ए के विद्यार्थियों के लिए लिखी गयी है और उनके न उहाँ का आवश्यकताओं का विशेष रूप से ध्यान में रखा है किन्तु ज्ञाता है कि उच्चतर शिक्षा के तथा प्रतियोगिता परीक्षाओं में वर्तमान विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए भी यह उतनी ही उपयोगी सिद्ध होगी।

यह एक पाठ्य-पुस्तक है अनुसंधान ग्रन्थ नहीं, किन्तु सामान्य वाक्य की पाठ्य-पुस्तक नहीं है जसा कि बाजार में बड़ी मिलती है। यह जानकारी के उन मूल साधनों के सम्बन्ध अध्ययन पर आधारित है जो फारसी तथा अन्य भाषाओं में उपलब्ध हैं जिनसे उनके भलीभाँति परिचित हैं। इस ग्रन्थ में पन्नी बार इस युग के इतिहास का महत्वपूर्ण समस्याओं का विश्लेषण की गयी है जिस (१) अरब तथा तुर्क आक्रमणकारी अपनी सरलता तथा द्रुतगति से हमारे देश को पराजित करने में क्या सफल हुए। (२) वे एक सांस्कृतिक जनसमूह के रूप में हम नष्ट क्या नहीं कर सकें जिस कि उन्होंने एशिया तथा अफ्रीका को अरब जातियों को कर दिया था। (३) इस्लाम का हमारे ऊपर क्या प्रभाव पड़ा? (४) हम इन नवागन्तुकों को अपने में क्या नहीं पचा सके जबकि यूनानियों को हूणा आदि का हमने पूर्णतया अस्विकार कर लिया था। (५) भारतीय मुसलमानों के साथ हमारा सम्बन्ध—जो समस्या आज भी हमारे नेताओं और राजनीतियों का परधान विषय है। दुर्भाग्य से इस विषय पर इससे पहले जितने भी ग्रन्थ लिखे गये हैं उनमें भारत में इस्लाम की प्रगति का इतिहास हा लिया गया है। किन्तु प्रस्तुत पुस्तक में देश का इतिहास लिखने का प्रयत्न किया गया है। सामान्य पाठ्य-पुस्तक में ही नहीं बल्कि विशिष्ट ज्ञान में भी हमारे अरब तथा तुर्क-अफगान शासकों के लिए भ्रमात्मक मुस्लिम शब्दों का प्रयोग किया गया है। इससे दो गलत धारणाएँ उत्पन्न हुई हैं—(१) भारतीय मुसलमान तथा उनके वंशज भ्रमवश



यह समझने लग है कि मध्य युग में हम भारत के शासक बग थे यह निता त गलत धारणा कुछ तागा में अब भा पाया जाता है और (२) जनक पाड़िया स हमारी अधिकांश जनता भारतीय मुसलमानों का पूज्यता का हमारे ऊपर अरब तुक तथा अफगान शासकों द्वारा किये गये अत्याचारों—विशेषकर धार्मिक अत्याचारों के लिए जिम्मेदार समझना आती है। इस पुस्तक में हम प्रकार की सभी गतनियों से बचा गया है। इसके अतिरिक्त शासन सम्बन्धी सामाजिक सांस्कृतिक तथा आर्थिक सफ़लताओं से सम्बन्ध रखने वाली सभी आवश्यक तथा महत्त्वपूर्ण बातों को भी समाविष्ट करने तथा उनका महत्त्व समझाने का प्रयत्न किया गया है किन्तु इन चीजों का दान के लिए राजनीतिक प्रतिभाओं का किसी प्रकार से काम नहीं लिया गया है। पुस्तक में विशेष रूप से तयार किया गया बारह मानचित्र लिये गये हैं जो अब तक उपलब्ध सभी मानचित्रों से अधिक समुन्नत हैं। भर पुत्र धर्मभानु एम ए त्रकचरार सनातन धर्म विद्या का विज मुजपफरनगर में मानचित्र बन परिश्रम से तयार किया है।

पुस्तक में दाप भी है और तब उनसे भरीभाति परिचित है। जिस याजना के आधार पर इसे लिखा गया है उसका ध्यान में रखते हुए चीजों का दुस्तराना अनिवाय था। अंतिम अध्यायों में मध्यकालीन शासन सम्बन्धी सामाजिक तथा सांस्कृतिक संस्थाओं का जो क्रमबद्ध विकास दिखाया गया है वह विभिन्न सुनानों के शासनकाल में किया गया सुधारों का सारांश मात्र है जो वह इससे जनावा कुछ हा भी नहीं सकता था। विद्यार्थियों की सहायता का विकास तथा यकितियों के जीवन की सफ़लताओं का समझने में सहायता देने के लिए एक विषय से सम्बन्धित सामग्री यथासम्भव एक ही स्थान पर एकत्र कर दा गयी है। पुस्तक की भाषा का अधिक से अधिक सरल ब्रह्मन्त का प्रयत्न किया गया है जिससे हमारे बा ए के विद्यार्थी उसे सरलता से समझ सकें।

जागरा का विज

आगरा

जाशीर्वादीलास श्रीवास्तव

१५ अप्रैल १९५२

## विषय-सूची

पृष्ठ-संख्या

अध्याय १ सिंध पर अरब आक्रमण के समय हमारा देश १—१०

राजनानिक अवस्था १ हिमालय के पहाड़ों का पठार जपान  
निम्नान २ काश्मीर २ नेपाल २ आसाम ३ गंगा और सिंधु का  
मगान बंगाल ३ सिंध ४ अरब ४ भारत ५ अफगानिस्तान  
बाकान्ध ५ पानव-वंग ५ मुद्गर दक्षिण ५ गामन-व्यवस्था  
राज्य ६, राजा के अधिकार ६ मद्रा और उनका वन्य ७  
स्थानीय शासन ७ राजस्व ८ समाज और मनुष्य ८ ।

अध्याय २ सिंध तथा मुल्तान पर अरबों की विजय [७११—७१३ ई.]

११—३१

अरब विजय के समय सिंध की दशा ११ कारण १० आक्रमण  
कारा मना की शक्ति १५ दवन का विजय १६ मुल्तान की विजय  
१८ सिंध के पतन के कारण १८ सिंध में अरबों की शासन  
व्यवस्था आशिक धार्मिक महिष्णुता का नाति २० राजनानिक  
विभाजन तथा उसके सामाजिक व्यवस्था २४ राजस्व प्रणाली २४  
व्याप २५ धार्मिक नीति २५ साधारण जनता का दुःशा २६  
मुद्गम विन कामि का मृत्यु २६ अरबों की सिंध में अन्तिम  
अमफतना के कारण २७ अरब विजय के प्रभाव २० ।

अध्याय ३ हिन्दू अफगानिस्तान—इसकी विजय एवं इस पर तुर्कों का अधिकार

३२—३७

अफगानिस्तान पर हिन्दू गामन ३० अफगानिस्तान में अरबों  
की अमफतना ३३ अफगानिस्तान पर तुर्कों का विजय ६ ।

अध्याय ४ मध्य-युग के आरम्भ में हिन्दू राज्यों के पतन के कारण ३८—४८

अध्याय ५ महम्मूद गजनवी के आक्रमण के समय का भारत ४९—५५

राजनानिक अवस्था ४८ मुल्तान और सिंध के अरब राज्य  
४८ हिन्दूशाही राज्य ५० काश्मीर ५० बंगाल ५१ बंगाल का  
पाल-वंग ५१, छान्द राज्य ५० दक्षिण के राज्य ५० सामाजिक  
तथा धार्मिक दशा ५२ धार्मिक जीवन ५५ ।

अध्याय ६ महमूद गजनवी

५६—७३

तुर्कों का उत्थान ५६ उनका प्रारम्भिक धाव सुनुवनगीन ५६  
महमूद का सिंहासनारोहण ५७ महमूद का चरित्र ५८ महमूद का  
भारत पर आक्रमण ५९ महमूद का कायों का मूल्यांकन ६६ महमूद  
के उत्तराधिकारी ६९ गजनवी शासन का अन्तगत पञ्जाब का दशा  
७० वशावली-वृक्ष ७२ ।

अध्याय ७ मुहम्मद गोरी का आक्रमण के समय भारत की दशा ७४—७९

गजनवी शासन का अन्तगत पञ्जाब ७४ करमायिया की अधी  
नता में मुल्तान ७५ सुघ्न शासन का अन्तगत सिन्ध ७५ राजपूत  
उनके गुण दाप ७५ अहिलवाड का चानुक्य ७५ अजमेर का चौहान  
७६ कन्नौज के गहड़वार ७६ बुन्देलखण्ड के चन्दल तथा चैत्र का  
कलचुरी ७७ उत्तरी बंगाल का पात ७७ बंगाल का सन  
राज्य ७८ ।

अध्याय ८ मुहम्मद गोरी

८०—९८

गोरी का प्रारम्भिक इतिहास ८ मुहम्मद के आक्रमण का  
कारण ८१ सिन्ध तथा मुल्तान की विजय ८२ अहिलवाड में  
मुहम्मद की पराजय ८२ पञ्जाब विजय गजनवी वंश का अन्त ८२  
हिन्दुस्तान में उसका सम्पत् ८३ तराइन का युद्ध में मुहम्मद का  
पराजय ८४ तराइन का युद्ध में पृथ्वीराज की पराजय ८४ तराइन  
का दूसरा युद्ध का परिणाम ८६ बुन्दशहर मरठ तथा दिल्ली पर  
अधिकार ८६ अजमेर में दूसरा विद्रोह ८७ कन्नौज के जयचन्द की  
पराजय ८७ अजमेर में तीसरा विद्रोह ८८ ग्वालिमर का कन्नौज पर  
अधिकार ८९ राजस्थान में चौथा विद्रोह ८९ बुन्दखण्ड की विजय  
९० बिहार की विजय ९१ बंगाल की विजय ९२ मुहम्मद गोरी  
की मृत्यु उसकी सफलताएँ ९३ हमारा पराजय का कारण ९४  
वशावली-वृक्ष ९८ ।

अध्याय ९ कुतुबुद्दीन ऐबक तथा उसके उत्तराधिकारी

९९—१०४

गुनाम वंश अनुपयुक्त नाम ९९ कुतुबुद्दीन ऐबक (१२०६  
१२१० ई) प्रारम्भिक जीवन ९९ सिंहासनारोहण १ १ मुल्तान  
की हैसियत में कुतुबुद्दीन का काय १०१ विदेश नाति १०२ उसका  
म्याकन १०३ आरामशाह (१२१० १२११ ई) १०४ ।

अध्याय १० इल्तुतमिश तथा उसके उत्तराधिकारी

१०५—१२६

इल्तुतमिश (१२११ १२३६ ई) प्रारम्भिक जीवन १०५

मिहामनारायण १०१ उसका प्रारम्भिक कठिनाय्याँ १०६ एल्जीज  
 म मघप १०६ मगाल आक्रमण का भय १०७ कुब्राचा का पराजय  
 तथा मृत्यु १०८ बगान की पुनर्विजय १०९ राजस्थान का पुन-  
 म्बन्धना होना ११० राजपूताना में पल्लुनमिश का मतिक काय  
 वाहिया १११ दाआब की पुनर्विजय ११२ इल्तुतमिश का मृत्यु  
 ११२ उसका चरित्र तथा सफलताएँ ११२ रकुनुद्दीन फीरोजशाह  
 (१२३६ ई) ११४ रजिया (१२३६-१२४० ई) ११५ रजिया  
 का पतन ११६ रजिया के कार्यों का मूल्यांकन ११७ मुईजुद्दीन  
 बहरामशाह (१२४०-१२४२ ई) ११८ अलाउद्दीन मल्लुदशाह  
 (१२४२-१२४६ ई) ११९ नासिरुद्दीन महमद (१२४६-१२६५ ई)  
 मिहामनारायण तथा चरित्र ११ बदनवन—वास्तविक शासक  
 (१२४६-१२५२ ई) १२२ बदनवन का क्षणिक पराभव रामद्वन  
 का प्रधानमंत्री होना (१२५५ ई) १२३ बदनवन का पुनर्निर्गुक्ति  
 (१२५५ ई) १२४ बदनवन द्वारा विद्रोहियों का दमन १२५  
 नासिरुद्दीन महमूद की मृत्यु १२५ बशाबला-भूषण १२५।

अध्याय ११ बदनवन तथा उससे उत्तराधिकारी १२७—१४०

बदनवन (१२६५-१२८७ ई) प्रारम्भिक जीवन १२७ राय्या  
 राहण १२८ ताज की प्रतिष्ठा का पुनर्स्थापना बदनवन का  
 राजत्व मम्बन्धा सिद्धान्त १२८ चालास के मण्डल का नाश १२९  
 गुप्तचर विभाग का संगठन १३१ सेना का पुनर्गठन १३१  
 विनाहा का म्मन १३२, बगाल का पुनर्विजय १३४, मगोल आक्रमण  
 १३५ बदनवन का मृत्यु १३६ बदनवन का मूल्यांकन १३६ बकुबाद  
 (१२८७-१२९० ई) १३८।

अध्याय १२ तयाकथित गुलाम सुल्तानों की शासन-व्यवस्था १४१—१५४

राय्य विस्तार १४१ राज्य का रूप १४२ गनीफा से सम्बन्ध  
 १४३ कनीय सरकार सुल्तान १४४ मन्ना १४५ प्रांतीय शासन  
 १४६ पालसा भूमि १४७ सना १४८ वित्त मम्बन्धी व्यवस्था  
 १४८ याय-व्यवस्था १५१ समाज तथा सन्धिति १५२।

अध्याय १३ खलजी साम्राज्यवाद १५५—१६६

खलजुद्दीन फीरोज खलजी (१२९०-१२९५ ई) प्रारम्भिक  
 जीवन १५५ राय्याराहण १५५ उसका सामाजिक अप्रियता १५६  
 गृह-नीति १५७ विदेश नीति १५८ नवान मुसलमान १५९,  
 खलजुद्दीन की मृत्यु १६०, खलजुद्दीन फीरोज का मूल्यांकन १६१

अत्ताउद्दीन खलजी (१२६६ १३६१ ई) प्रारम्भिक जीवन १६२  
 उसकी प्रारम्भिक कठिनाणियाँ १६५ त्रिस्तापत्र अधिनियम १६६ उसका  
 राजस्व सम्बन्धी सिद्धांत १६७ गृह-नीति विनाहा का मन—उनका  
 कारण का विश्लेषण १६६ अघ्यादश १७० हिन्दुओं का दरिद्र  
 बनना १७२ स्थायी सना १७२ बाजार का नियंत्रण १७२ राजस्व  
 नाति १७५ शासन का केंद्रांतरण १७६ विन्श-नीति विजय  
 याजना १७७ उत्तर की विजय गुजरान १७७ रणयम्भीर १७८  
 चित्तौड़ १७८ पदमिना की कहानी १७९ मानथा १८१ मारवाड  
 १८१ जात्रौर १८२ दक्षिण का विजय १८२ वारगन म उसकी  
 विफलता १८ दवगिरि की पुनर्विजय १८ तनगाना १८४  
 द्वारममुद्र का हीयसल राय १८४ पाटय राय १८४ दक्षिण पर  
 अंतिम आक्रमण १८५ मगाना का आक्रमण उत्तर पश्चिमासीमात  
 नाति १८५ अत्ताउद्दीन का अंतिम दिन तथा मृत्यु १८८ अत्ताउद्दीन  
 का मूल्यांकन १८८ कुतुबुद्दीन मुबारक (१३१६ १३२० ई)  
 सिंहासनारोहण १६१ पुरान अघ्यादशा का रद्द करना १६२ विनाह  
 दवगिरि तथा मद्रा की पुनर्विजय १६२ मुबारक का विरुद्ध  
 पटयत्र १६३ मुबारक का आचरण शासन म अवस्था १६५  
 मुबारक का हत्या १८४ मुबारक का मूल्यांकन १६५ नासिरुद्दीन  
 खसरखशाह (१५ अग्रत—५ सितम्बर १३२० ई) १६५ खलजा  
 अवस्था की दुबलताएँ १६८ वशावती वृक्ष १६६ ।

अघ्याय १४ तुगलक-वंश

२०—२५०

गियासुद्दीन तुगलकशाह (१३२२ १३२५ ई) प्रारम्भिक  
 जीवन २० गृह-नीति २०१ विन्श-नीति वारगन पर  
 आक्रमण २ वारगन पर द्वितीय आक्रमण २४ उत्कल पर  
 धावा २०४ वगान म विनाह २४ मंगल आक्रमण २५ गिया  
 सुद्दीन की मृत्यु २०५ मुहम्मद बिन तुगलक (१३२५ १३५१ ई)  
 प्रारम्भिक जीवन २०७ रायाराहण २०८ गृह-नीति  
 राजस्व-सुधार (१ ५६ ५७ ई) २८ दाभाव म कर २०८ कृषि  
 विभाग का निमाण २०६ राजधानी-परिवर्तन (१३२६ २७ ई)  
 २१० सांकेतिक मुद्रा का चयन (१ ५६ ० ई) २१२ धार्मिक  
 नीति २१ विन्श-नीति खुरासान विजय की याजना २१४  
 नगरवाट का विजय (१ ७ ६) २१५ कराज पर चर्चा (१ ३७  
 ८ ई) २१५, चान स सम्बन्ध २१५ मगाना का आक्रमण (१३२८

२८ इ) २१६ विद्रोह प्रारम्भिक विद्रोह २१६ वा ६ विद्रोह  
 २१७ विजयनगर क सिद्ध गज्य का नाव २१८ मुहम्मद का चंगि  
 तथा मूल्यावन २१८ क्या वह पागल था? २२० क्या मम  
 विराधी तत्त्वा का मिश्रण था? २२१ फौरोह तुगलक (१३५१  
 १३८८ ई) प्रारम्भिक जीवन २२४, मिहामनाराहण २२५ गृह  
 नीति शासन-व्यवस्था २२७ गजस्व-नीति २२८ सिवाई २२९  
 मावज्जिनिक निमाण-वाय २३० याय तथा जय परापरारिक काय  
 २३० विद्या की वृद्धि २३० धार्मिक नीति २३३ नाम प्रथा २३४  
 मना २३४ विद्या-नीति बगान २३५ पुरी पर चला २३६  
 नगरवाट का विजय २३६ मित्र की विजय २३६ विद्रोह का  
 स्मन २३७ अन्तिम दिन तथा मृत्यु २३७ फागज का व्यक्तित्व तथा  
 चंगि २४८ खानजगी मन्सूल २४१ परवती तुगलक मुल्तान  
 (१३८८ १४१४ ई) २४१ तिमूर का आक्रमण (१४०५ १४०६ ई)  
 २४१ तिमूर क रोदन क वाट भागत की शशा २४५ तुगलक-वध  
 क पतन क कारण २४७ बगावती-वृत्त २६८।

अध्याय १५ मय्यद-वश २५१—२५५

सिख्तौ (१४१४ १४२१ ई) २५१ मुबारकशाह (१४२१  
 १४३४ ई) २५२ मुहम्मदशाह (१४३४ १४४५ ई) २५३  
 अलाउद्दीन आलमशाह (१४४५ १४५० ई) २५४ बगावती-वश २५५।

अध्याय १६ लोदा-वश २५६—२७५

बहलोल लोदी (१४५१ १४८६ ई) प्रारम्भिक जीवन २५६  
 मिहामनाराहण २५७ गृह-नीति २५७ बहलोल का मूल्यावन २६१  
 सिख्तौ लोदी (१४८६ १५१७ ई) मिहामनाराहण २६२ गृह  
 नीति विद्रोह का स्मन २६२ रागवशाह का स्मन २६२  
 अमीरा का स्मन २६६ धार्मिक नीति २६५ विद्या-नीति विद्या  
 का विजय २६६ बगान म मशि २६६ धीनपुर तथा अन्य स्थाना  
 की विजय २६७ मृत्यु २६७ मिहामर का मूल्यावन २६७ इब्राहीम  
 लोदी (१५१७ १५२६ ई) गायारोहण २६८ विद्या-नीति  
 खातियर का स्मन २७० गणा मागा हाग श्वागम का पगजय  
 २७० गृह-नीति बगानवा क विद्या का दमन २७१ जमीनों का  
 स्मन २७२ श्वागम का मूल्यावन २७६ बगावती-वृत्त २७५।

अध्याय १७ प्रताय राज्य २७६—३०८

उत्ता भारत जोतपुर २७६ मानवा २७८ गुजगन २८०,  
 बगान २८२ काश्मीर २८५ उठामा २८७ कामन्द २८८

राजस्थान २८८ मेवाड़ २८९ मारवाड़ २९० आमेर २९० त्रिणी  
 भारत खानेश २९० बहमनी राज्य २९१ दक्षिण कर्णाट राज्य  
 बीजापुर २९६ गोनकुण्डा २९६ जहमनगर २९७ प्रीत २९७  
 वरार २९७ विजयनगर साम्राज्य उत्पत्ति २९७ मगध २९८  
 सनुव वंश २९९ तुनुव वंश २९९ तातीबोट का युद्ध (१२६५ ई)  
 २ १ अरबिदु वंश २०२ विजयनगर साम्राज्य की शासन-व्यवस्था  
 केंद्रीय सरकार ३०२ प्रांतीय सरकार ३०३ स्थानीय शासन  
 ३०३ वित्त ३०४ सेना ३०४ न्याय ३०४ धार्मिक महिष्णुता  
 २ ५ विजयनगर की शासन-व्यवस्था के त्वाप ५ सामाजिक  
 जीवन ३०५ कला और साहित्य ३०६ आर्थिक दशा ०७ ।

अध्याय १८ सल्तनत की शासन व्यवस्था ३०९—३३५

केंद्रीय सरकार सल्तनत साम्प्रदायिक राज्य ३०९ ताममात्र  
 का प्रभु खत्रीफा ३१० मुत्तान ३१० मन्त्रीगण ३१२ बजीर ३१२  
 दीवाने जारिज ३१३ दीवाने इशा ३१४ दीवाने रसानात ३१४  
 सदरुस-मुद्दर ३१५ मजलिसे-मदवत ३१५ अय विभाग ३१५ शाही  
 गृह प्रबन्धक ३१६ प्रांतीय शासन २१६ स्थानीय शासन ३१७  
 मना ३१८ वित्त २२ जजिया क्या है / ३२३ आय कर ३२४  
 भू राजस्व ३२४ न्याय तथा शान्ति ३२९ धार्मिक नीति ३ २ ।

अध्याय १९ उत्तर पश्चिमी सीमा नीति मंगोल आक्रमण ३३६—३४५

भारत के लिए वनानिक सीमा की समस्या २२६ वास्तविक  
 सीमा (१२०६ १२१७ ई) ३२६ प्लुतमिशन तथा मंगोल ३२७  
 सिंध म मगधर्ती के कार्य का परिणाम ३३८ मंगोल की अधीनता  
 म मुत्तान सिंध तथा पश्चिमी पंजाब ३४० दानवन की सीमा-नीति  
 ३४१ तिला पर मंगोल का आक्रमण रक्षा के लिए मन्त्रजिया का  
 प्रबन्ध ३४२ परवर्ती युग ३४३ मंगोल आक्रमण का प्रभाव ३४४ ।

अध्याय २० समाज तथा संस्कृति ३४६—३७३

मुस्लिम समाज शासक वर्ग ४६ भारतीय मुसलमान ३४७  
 मुस्लिम समाज म मुख्य वर्ग ४८ उनमा ४९ हिन्दुआ का दशा  
 ३५० आर्थिक दशा ३५४ साहित्य फार्सी साहित्य ५८ संस्कृत  
 तथा हिन्दी साहित्य ६० उर्दू भाषा ३६१ भक्ति आन्दोलन ६२  
 चरित बनार ३६६ स्थापत्य ६६ प्रांतीय स्थापत्य ६९  
 मुस्लिम ६९ बंगाल ६८ गुजरात ७ मानवा ७१ जौनपुर  
 ७१ काशी ७२ दक्षिण ७२ हिन्दू स्थापत्य ७२ ।

अध्याय २१ सल्तनत का मिहाबलोवन

३७४—४१६

हिंदुमन्तान का द्रुतगति से पटावान होना २७४ स्वाधीनता का रक्षा के लिए हमारे प्रयत्न ७६ भारत भूमि पर विदेशी उपनिवेशों का अस्तित्व क्या कायम रहा ? ५७७ राजवंश का बार बार परिवर्तन क्या हुआ ? ३७८ हमारे समाज पर तुर्की शासन का प्रभाव २८१ हिंदू मुसलमानों की आत्ममात क्या नहीं कर सक ? ३८४ ।

परिशिष्ट अ—दिल्ली व नामिन्द्रीन खुर्रमशाह की उत्पत्ति	३८७—३९२
परिशिष्ट ब—दिल्ली व मुतामा का तिथि-क्रम	३९३—३९४
परिशिष्ट ग—मुख्य प्रामाणिक ग्रन्थ	३९५—४०२





## सिन्धु पर अरब आक्रमण के समय हमारा देश

### राजनीतिक अवस्था

जहांगीर महान की मृत्यु (१६२७ ई पू) के बाद शताब्दियों तक हमारे देश में राजनीतिक एकता का अभाव था। हिमालय से कुमायूँ अतरीप तक समस्त देश इसका वास्तविक भी किसी एक हिन्दू राजा अथवा राजनीतिक शक्ति के अधीन नहीं रहा। सातवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में जिस समय मुहम्मद साहब अपने धर्म का प्रचार करने लगे और उनके उत्तराधिकारी पूरा देश में नियन्त्रण स्थापित करने लगे उस समय ही उत्तर-पश्चिमी भारत में एक विगत साम्राज्य की नींव पड़ी थी। परन्तु इस राज्य में सम्पूर्ण उत्तरी भारत भी शामिल नहीं था। बिष्णुचल पर्वत के दक्षिणी प्रदेश को जीत कर जैन राज्य में मित्राने की मांग की जा रही थी। वेवार हुई। इस महान साम्राज्य की ६४७ ई पू में मृत्यु के बाद उसके साम्राज्य के टुकड़े हो गए और उसके बाद देश के छोटे-छोटे राजाओं में प्रभुता के लिए युद्ध आरम्भ हो गए। इस प्रदेश में ५० वर्षों से अधिक समय तक राजनीतिक अवस्था फलीकरी रही। आठवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में यशोवर्मन के उत्थान तक इस स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया। दश के बड़े हुए भागों को भी पहलू की तरफ स्वतंत्र राजाओं ने आपस में बाँट लिया। इन राजाओं का मुख्य ध्येय मतिक यश प्राप्त करना और एक दूसरे पर चढ़ाई करना था।

समस्त देश में ऐसी कोई केंद्रात्मक सरकार नहीं थी जो पूरे देश के हित के लिए काम करती। सभी राज्य पूर्ण स्वतंत्र और प्रभुत्वमय के उत्तर-पूर्वी और उत्तर-पश्चिमी सीमाएँ छोटे-छोटे स्वतंत्र राज्यों के अधीन थीं और सगणित होकर अपने देश की सीमाओं की रक्षा करने का किसी को भी ध्यान नहीं था।

भौगोलिक और राजनीतिक दृष्टि से हमारा देश ४ भागों में विभक्त था (१) हिमालय के पहाड़ी राज्य (२) गंगा और सिन्धु के राज्य (३) दक्षिणी राज्य और (४) अरब प्रायद्वीप के राज्य। एक राज्य का दूसरे राज्य में सीमा विस्तार करने में रोकने का कोई साधन नहीं था और सीमा विस्तार

एक साधारण भी बान थी क्योंकि उम समय क राजाआ म प्राचीन दार्त्रिया क दिग्विजय का आश प्राप्त करन की भावना प्रबन था । परन्तु इम समय के बात यह आश कभी भी प्राप्त न हा सता ।

## हिमालय के पहाडी राज्य

### अफगानिस्तान

भाग्य क जनक उतार चटाव देवन क बात भी अफगानिस्तान चद्रगुप्त मीय के समय स त्मान देश का ही अग था । चद्रगुप्त न उमे ३०५ ई पू म मेल्यूक्स निक्टेर मे जीता था और प्रसिद्ध चीनी यात्री युवान-चांग क भ्रमण काल म कानुल की घाटी म एक क्षत्रिय राजा राय करता था जिमक वंश न नवा शताब्दी के अंत तक राय किया । तत्परांत उम वंश का स्थान तत्रियद द्वारा सस्थापित ब्राह्मण-वंश ने न लिया था । मुसलमान इतिहासकारा ने उम हिंदू राय को कानुल और जाबुल का राय कता है परन्तु उस हिंदूशाही राय भी कहा जाता था । जाठवी शताब्दी क प्रारम्भक कर्षों म जब सिध पर जरवा का आक्रमण हुआ इस राय के राजाओ क नाम और उनके राय की सीमाओ क पता नगान का हमार पाम काई साधन नही है परन्तु य निश्चित है कि उस राय के निवासी हिंदू अथवा बौद्ध ाना ही थे और वे साम्प्रतिक राजनीतिक और आर्थिक दृष्टि स भारतीय जनता के ही अग म ।

### काश्मीर

काश्मीर प्रारम्भ म अशाक कनिष्क और मिहिरकुत क साम्राज्या का हा अग था हृप के कान म यन् एक स्वतंत्र राय था और ७वा शताब्दी म यन् तुलभवद्वन द्वारा सस्थापित कारकोटा वंश के प्रथम श्रणी का शक्तिशाली राय बन गया था । तुलभवद्वन का पौत्र चद्रपील सिध के राजा दाहिर का समकालीन था जो ७१२ ई म अरवा के आक्रमण का शिकार बना । चद्रपील का उत्तराधिकारी उसका भाइ मुकतपीड तलिनाप्तिय हुआ (७२५-५५ ई ) । वह मन्वावाशी और शक्तिशाली शासक था । उसन कन्नौज क यशावमन का हगमा था और मानण्ड नामक स्थान पर एक विशाल मूय मन्दिर का निर्माण कराया था । उम मन्दिर को मिकन्दर न जा मूर्तिभजक क नाम स प्रसिद्ध है नष्ट कर लिया था । परन्तु यन् अब भा अपनी भग्नावस्था म एक विशाल भवन की भानि सत्ता हुआ समार का अपन निमाता के कता प्रम तथा धार्मिक प्रवृत्ति का परिचय दे रहा है ।

### नेपाल

अपनी ग्वात स्थिति क कारण नेपाल क पहाडी राय का हमार देश क इतिहास म कोई महत्वपूर्ण स्थान नही सता है परन्तु प्राचीन भारत का क

निम्नलिखित है एक अभिन्न अंग था। अनुश्रुतियाँ व अनुसार यह घाटी अशावक राज्य में सम्मिलित थी और वहाँ के तिब्बतियों का भी इस पर अधिकार रहा था। भाग्यीय तपोत्रियन समुद्रगुप्त के विस्तृत साम्राज्य का भी यह अवश्य ही एक अंग था क्योंकि उसने शासक न समुद्रगुप्त का आधिपत्य स्वीकार कर लिया था। ऐसा प्रतीत होता है कि गुप्त साम्राज्य के उत्तमभिन्न हान के पश्चात् (५वीं शताब्दी) स्वतंत्र हो गया और ७वाँ शताब्दी में जब तिब्बत एक शक्तिशाली राज्य बना तो यह उसकी अधीनता में चला गया। परन्तु नेपाल और भारत के सांस्कृतिक सम्बन्धों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। नेपाल में बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था जोर हमारे देश से विद्वानों तथा उपदेशकों का ज्ञान प्रदान बराबर ही होता रहा।

### आसाम

भारत की उत्तरी-पूर्वी सीमा पर आसाम का पहाड़ी प्रांत एक स्वतंत्र राज्य था जो बहूधा वंशों में उसके युद्ध हुआ करता था। ह्य के समय में आसाम में भास्करवर्धन का शासन था। वह एक महत्वाकांक्षी शासक था। मान्य पत्रों में कि ह्य ने उस अपना अधीनता में कर लिया था और पश्चिमी वंशों के शासकों के विरुद्ध युद्ध में उसका प्रयोग किया था परन्तु ह्य की मृत्यु के बाद आसाम स्वतंत्र हो गया और अपनी दूर्गम स्थिति के कारण हमारे देश के मध्य काल के इतिहास में उसका विशेष महत्त्व नहीं रहा।

### गंगा और सिन्धु का मगध

#### कन्नौज

चालीस वष में अधिक मध्य देश पर राज्य करने के पश्चात् ६४७ में ह्य की मृत्यु हो गयी और उसके विधान साम्राज्य उसने निराल उत्तराधिकारियों के हाथों में आया। उसकी मृत्यु के समय उसका साम्राज्य उत्तर पश्चिम में पूर्वी पंजाब से पूरव में कामरूप तक और उत्तर में हिमालय से दक्षिण में नर्मदा तक फैला हुआ था। उसके उत्तराधिकारी मगध कायम न रख सके क्योंकि कन्नौज दीर्घकाल तक इसकी राजधानी रह चुकने के कारण मगध नगरी का ध्रुव तारा बन चका था जोर उत्तरी भारत का प्रत्यक्ष महत्वाकांक्षी राजा मगध के जीवन में उस पर शासन करना चाहता था। ६७२ ई के लगभग मानवों और मगध का शासक आन्तिक्यमन इस मगध में विजया हुआ और उसने अश्वमेध यज्ञ किया परन्तु उसका उत्तराधिकारी सिद्ध हुआ और ८वाँ शताब्दी के आरम्भ में इस मगध के जा अपन को चन्द्रवशी कन्ता था कन्नौज पर शासन करने का पान था। वह सामन्ती और सपन शासक था। उसने कन्नौज का उसके प्राचीन गौरव के पर पर मुशाभित किया और मगध के शासनकाल में कन्नौज का

साम्राज्य एक बार फिर पूरब में बंगाल में पश्चिम में धाराश्वर और पूरबी पंजाब तक और उत्तर में हिमालय से दक्षिण में नर्मदा तक फैल गया। यशावमन ने पश्चिम में कुछ देशों से विशपकर चीन से नृत्य सम्बन्ध स्थापित किये। वह सिंध के राजा दाहिर का समकालीन था जो कश्मीर के तैमना नृत्य से युद्ध करते हुए मारा गया।

### सिंध

सिंध का राज्य तो काबुल और पश्चिमी पंजाब के हिन्दूशाही राज्य के दक्षिण पश्चिम में स्थित था बहुत समय तक स्वाधीन बना रहा। वहाँ एक शून् वंश ने लगभग १४० वर्ष तक शासन किया और युवान-याग के यात्रा काल में सिंध में एक शून् राजा शासन करता था। बाद में प्रभाकरवर्द्धन ने उस पर आक्रमण किया और उसका पुत्र हप ने उस पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। परन्तु बाद का मृत्यु के बाद वह फिर स्वतंत्र हो गया। अन्तिम शून् शासक मन्सा की मृत्यु पर उसका ब्राह्मण मंत्री चच ने गद्दी पर अपना अधिकार कर एक नये वंश की नाव पाली। चच के मरने पर उसका भाई चन्दा और चन्दा के मरने पर उसका (चच का) पुत्र दाहिर सिंध का शासक बना परन्तु इस वंश को केवल कुछ शतक शासन करने के बाद ही मुहम्मद बिन कासिम के आक्रमण का सामना करना पड़ा। इस राजवंश का जनता की सहानुभूति प्राप्त नहीं थी क्योंकि यन्ग का अधिकांश जनता बौद्ध धर्म की अनुयायी थी जिस पर यह ब्राह्मण शासक घोर अत्याचार करते थे।

### बंगाल

द्वितीय सदी की प्रारम्भिक शताब्दियों में बंगाल का भाग में विभक्त था जो एक दूसरे से स्वतंत्र थे। पश्चिमी और उत्तर पश्चिमी भागों को गौड़ कहते थे और उनके निवासी भी इसी नाम से जान जाते थे लेकिन पूरबी और मध्य भाग बंग कहलाते थे। यह दोनों प्रांत गुप्त और मौर्य साम्राज्यों के अंतर्गत रह चुके थे परन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि गुप्त साम्राज्य के पतन के बाद बंगाल स्वतंत्र हो गया था। गौड़ की गद्दी पर हप का समकालीन शशाक या जिमन कवन अस्पष्ट रूप से ही कन्नौज की अधानता स्वीकार की थी। शशाक की मृत्यु के बाद गौड़ पर अमाम के भास्करवर्द्धन का अधिकार हो गया जो हप का मित्र था। द्वावी जनता की प्रारम्भ में बंगाल पर कन्नौज के राजा यशावमन ने आक्रमण किया जिसका परिणामस्वरूप उस प्रांत में वर्षों तक अव्यवस्था फैली रहा परन्तु द्वावी जनता की प्रथम १० वर्षों में किसी समय यन्ग गणपति ने पान-वंश का नाव डाली और चंकि बह दंग और गौड़ दोनों पर ही अपना अधिकार करने में सफल हुआ जो उस समय में उस प्रांत में शांति और समृद्धि स्थापित हुए।

### मालवा

द्वितीय शताब्दी में मालवा जिसकी राजधानी उज्जैन था एक अत्यंत महत्वपूर्ण राज्य था। वहाँ पर प्रतिहार नामक राजपूत वंश का शासन था। प्रतिहारों का सुभद्र वंश की एक शाखा यथा मारवाड़ जाधपुर अर्थात् (उज्जैन) और मालवा में रहते थे। जयसिंह के जन्म से इस देश के भीतरी भाग का जानना चाहिए ता उज्जैन के प्रतिहारों ने उनका मुकाबला किया। ७२५ ई. में जयसिंह जयपुर में जयसिंह के नेतृत्व में प्रतिहारों को मालवा के पश्चिमी भाग का जीत लिया परन्तु नागभट्ट (७२५ ई. में) ने जयपुर का प्रशासन का आक्रमण कर दिया और उसका उत्तराधिकारी का शासनकाल में उज्जैन उत्तरा भारत का एक शक्तिशाली राज्य हो गया।

### दक्षिण

#### वाकाटक

तीसरी शताब्दी में दक्षिण भारत में दो शक्तिशाली राज्य थे—एक उपरान्त भाग में और दूसरा निचले भाग में। दूसरे का राजधानी वाकाटक अथवा जाधुनिक काजीवरम थी। पहले भाग में वाकाटक और दूसरे में पालव वंश का शासन था। चंद्रगुप्त विक्रमादित्य ने अपना पुत्र प्रभावता का विवाह उत्सव तीसरे के साथ करके वाकाटक वंश में सम्बन्ध स्थापित किया था और उत्सव के वंशज बहुत पीढ़ियाँ तक दक्षिण में शासन करते रहे।

#### पालव-वंश

वाकाटक का पालव राज्य वाकाटक राज्य के दक्षिण में स्थित था। तीसरी शताब्दी के मध्य में समुद्रगुप्त ने वहाँ के शासक विष्णुगोप का वध किया था किन्तु बाद में मुक्त कर दिया था। इस वंश में अनेक योग्य शासक हुए। छठी शताब्दी के उत्तरार्ध में सिंहविष्णु द्वारा जिसने चार दश का अपना राज्य में मिला लिया तथा दक्षिण भारत के अपने मंत्री पलासिया का पराजित किया जिनमें वका का राजा भी सम्मिलित था। परन्तु कुछ समय पश्चात् वातापी के चालुक्या और पालवों में भयंकर प्रतिस्पर्धा आरम्भ हो गयी जिसके परिणामस्वरूप द्वितीय शताब्दी के पूर्वार्ध में जब सिंध में अरबों का अपना विजय कर रहे थे वातापी के राजा विक्रमादित्य तीसरे ने पालवों का पराजित किया और उनकी राजधानी वाकाटकी पर अधिकार कर लिया। फिर भी पालव वंश किसी प्रकार द्वा सत्ता तक गिरता-पड़ता चलता रहा और उस शताब्दी के अन्त में उसका नाश हो गया।

#### सुदूर दक्षिण

अत्यन्त प्राचीनकाल से ही सुदूर दक्षिण में पाण्ड्य राज और चेर (चरल)

तीन राज्य थे। पाण्ड्य राज्य में आधुनिक मद्रास और तिरुवांची के जिन तथा त्रिचनपुर तथा त्रावनकोर राज्या के कुछ भाग चान राज्य में आधुनिक मद्रास राज्य का अधिकांश भाग मद्रास जिला और उमक पूरबी जिला तथा चेर अथवा करल राज्य में काचान और त्रावनकोर राज्या का अधिकांश भाग तथा मालाबार के जिन सम्मिलित थे। इन सब का पतनवा न जातकर समस्त दक्षिणी प्रायद्वीप पर अपना राजनतिक प्रभुत्व जमा रखा था।

### रामनयवस्था

#### राजत्व

७वीं और द्वा शताब्दिया में मद्रास प्रदेश का एक ही प्रकार की शासन व्यवस्था का पान था और वह था राजतन्त्र। बौद्धवादान प्राचीन गणतन्त्र का पूर्णतया नाप ही चका था। साधारणतया राजत्व वशानुगत था। राजा अपने उत्तराधिकारी का निर्दिष्ट कर होता था और बहुधा वह उसका सबसे बड़ा पुत्र होता था। परन्तु चुनाव से नाग नितान्त अपरिचित न था। बंगाल के पाण्ड्य वंश का संस्थापक गापान ७वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अपने प्रांत की प्रमुख राजनतिक शक्तियों द्वारा चना गया था और इसी समय दक्षिण भारत में काञ्ची के पल्लव वंश का राजा नन्दीवर्धन पल्लवर्धन भी इसी प्रकार चना गया था। आपत्तिकाल में राज्य का चुनाव एक प्रवर समिति का सौंप दिया जाता था जिसमें राज्य के प्रमुख सामंत या ब्राह्मण अथवा दाना ही रहते थे। इस प्रकार की प्रमुखा की समितियों द्वारा भी चुने गए अनेक राजाओं का उल्लेख जाता है जिनमें मुख्य कर्त्तव्य और धानशुकर का हृदयबदन था जिसे अपने भाई राज्यबदन की मृत्यु के पश्चात् रिक्त सिंहासन की पूर्ति के लिए चुना गया था। स्त्रियां को भी सिंहासन पर बैठने का अधिकार था और काश्मीर उन्नासा तथा दक्षिण भारत के कुछ भागों में स्त्रियां न भी समय-समय पर राज्य किया था।

#### राजा के अधिकार

इस काल के शासक निरंकुश थे। जनसाधारण का विश्वास था कि राजा पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि है अतः अत्यन्त नागा से शक्ति और बुद्धि में बड़ा है फिर भी तब अधिकार के सिद्धांत के जानकार उस समय भी थे। राजा के अधिकारों पर दो प्रकार के नियन्त्रण थे—एक तो सुसंस्थापित नियम तथा प्राचात परम्पराएँ और दूसरा जनता के विद्रोह का भय। वह कार्यपालिका के प्रमुख सना के सनापति और न्याय के सान समाना जाता था। परन्तु इन विम्बृत अधिकारों और बतौरों के उमक हाथ में कति हान पर भी वह अत्याचारी नही होता था क्योंकि उस पर परम्परागत राजधर्म का नियन्त्रण

रहता था जिम्का जय है कि राजा प्रजा का पिता है जन उस प्रजा की आर्थिक चहिक और नतिक भलाके लिए काय करना चाहिए ।

मन्त्री और उनक कृत्य

प्रत्यक राजा क कुछ मत्रा हुआ करत थ । इह वह स्वयं नियुक्त करता था और व उसक सबक समन जात थ । इनकी सहया निर्धारित न थी अतः सन्ध एकसी नही रहती था । परन्तु चकि मनु न ७ स ८ तव मन्त्री रचना उचित बताया है जत इस नियम का साधारणतया पालन किया जाता हागा । मन्त्री दा प्रकार क हुआ करत थ । पहन गापनीय सलाहकार जा राजा का विशय जाता पर परामश दत थ और मन्त्री कहलात थ । दूसरे सचिव कहलात थे और उनम युद्ध तथा शांति मन्त्री (सधि विग्रहिक) तथा मन्त्री (अक्ष पटनाधिकृत) सना सचिव (महाबलाधिकृत और महागणनायक) जय मन्त्री (अमात्य) और विदेश मन्त्री (सुमत) जादि हात थ । इनक अनिरिक राजगुरु जयवा राजपुरोहित भी हुआ करत थे जिनके अधिकार भी मन्त्रिया क हा समान हाते थ जोर धम का विभाग इनक अधीन रहता था । सनिका क असनिक पण ग्रहण करन पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध न था । कुछ मन्त्रपद पतृक हा गय थ परन्तु सभी नीति सूत्र राजा के हाथा म कद्रित हान क कारण मन्त्री का महत्व उसकी माग्यता चरित्र की दृष्टता, स्वामिभक्ति तथा राज विश्वास पर हा निर्भर रहता था उन विषया म जिनका सम्बन्ध नीति परिवर्तन स नहा था जोर जा दनिक राजकाज स सम्बन्धित हात थ मन्त्रिया को अपन अपन विभाग म पूण स्वतन्त्रता प्राप्त रही होगी ।

स्थानीय शासन

शासन की सुविधा को राय प्राप्त म विभक्त हुआ करत थ जिनक भिन्न भिन्न प्रशा म भिन्न भिन्न नाम होत थे जस उत्तर म भुक्ति और दक्षिण म मण्डल । इह कभी-कभी देश अथवा राष्ट्र भी कहत थ । प्रत्यक प्रात का एक शासक होता था जो उपरि क कहनाता था । प्रत्यक प्रात विशा (जिना) म बटा हाता था जिनका प्रबन्ध विणपति (जिला अधिकारी) करत थ । उपरि क और विणपति दोना की नियुक्ति राजा ही करता था परन्तु थ लाग अधिकतर राजवश और बड घराना के हुआ करत थ । शासन म जिला अधिकारिया की सघपति मुख्य तत्व (कायम्य) और जिला के प्रमुख नाग सहायता करत थे । कुछ भागा म विणपकर दक्षिण भारत म जिल ग्राम-सघा म बँटे हुए थ । हर सघ का एक मुखिया तथा शासन प्रबन्ध क लिए एक समिति हुआ करती थी । परन्तु हर जगह गाँव ही शासन की सयम छोटी इकाई था । प्रत्यक गाँव म एक मुखिया और पचायत हाती थी जिसम गाँव



क प्रमुग्न नाग सल्लनतत हुजा करत थ जीर गाँव की दगभान नागाय मन्डिर शि ता जाति क निए समितियाँ हाता था । मुग्निया क अनिरिक्त गाँव म एव अधिकारिण जववा अधिकारो भी होता था जिसना मुख्य ताम पचायत क कामा का निरीक्षण करना था । नगरा का शासन नगरपति क हाथ म ग्ना था जीर कही कहा उसकी सहायता क निए एक जनप्रिय समिति भी हाती था ।

### राजस्व

राजस्व पर वहत ध्यान दिया जाता था । प्रमुग्न राजनीतिन जीर विचारक कीर्तिक्य क समय स ही यह शासन क ना मुख्य विभागा म स एक था जीर दूसरी सना था । आय क मुग्न साधन चार व (१) भूमि कर— यह राजकीय भूमि स दिया जाता था जिस पर के 1य सरकार का सीधा शासन हाता था (२) अधीनस्थ राजाजा स कर (३) भूमि कर क अनिरिक्त अय कर जस जावकारी सिचाई-कर तथा चगी जा न्ना के घाटा सत्का जीर राय का सीमाआ पर वसून की जाता थी तथा (४) खाना की उपज पर कर । भूमि का उपज का ३ राय कर क रूप म वसूल किया जाता था जिस भाग कहत थ । दूसर कर किस दर स लिय जात थ यह नहीं कहा जा सवता । सम्भवत जाय कर की कोई व्यवस्था न्नी थी परंतु आपत्तिकान म ना एक नय कर नगा दिया जात थ । शासन सना तथा राजपरिवार ही खच क मुख्य विषय थ । आय-व्यय का न्वा अवश्य रखा जाता हागा चाह वह आज की भाति वज्ञानिक भन ही न रहा हा । आर्थिक दशा भी अवश्य हा दृष्ट रही हागा क्यकि दग समृद्धशाही था नाग सुखा थ और उ ह किसी प्रकार का कमी न थी । बौद्ध धम का अवनति हा रहा था और इस कान क अधिकाश शासक हिंदू धम क अनुयाया थ । परंतु क अय धर्मों क प्रति बहुत सहिष्णु थ और हिंदू बौद्ध और जन धर्मों का समान रूप स जाय्य देने थ । नागा म न कीर् धार्मिक विष्प ही था और न उन पर धार्मिक जत्याचार हात थ । जनसाधारण जीर उच्च वग क नाग जाध्यात्मिक जाशों स प्रभावित हात थ ।

### समाज जीर सस्कृति

हम उस काल क नागा क सामाजिक और साम्कृतिक जावन का स्पष्ट चित्र उम समय क अभिनया तथा चीनी अरब आदि विन्शा यात्रिया क न्ना स मिलता है । जानि प्रथा धार धार जटिल हाता जाती थी फिर भा विन्शी हिंदू हा सक्न थ और हमार समाज म पुन मिनकर वण-व्यवस्था म स्थान प्राप्त कर सकन थ । जानिया का अपन वनय-क्षत्रा म बाधन क जा प्रयत्न किय गय उनका का स्थायी बन नहीं आ । हम कान म कछ ब्राह्मण मनिक् हा गय कछ क्षत्रिय व्यापारिया की तरह रहन गय और कुछ वश्य और शूद्र

शक्तिशाली शासन था। यद्यपि लोग अपना जाति में ही विवाह करते थे परन्तु अंतरजातीय विवाह भी प्रचलित थे।

मध्य भारत में अधिकतर लोग शाकाहारी थे। वे न किसी जीव जन्तु का हत्या करते थे और न शराब पाने थे। वे प्याज और गहमून भी नहीं खाते थे। इस प्रांत के निवासी उत्तर पश्चिमी भारत के लोगों की पूज्यता शब्द नहीं समझते थे। लोग ठजाछूत को नहीं मानते थे और चाण्डाल लोग जब कभी राजार में अथवा उच्च वर्गों के लोगों के बीच में जाते थे तो वे उनकी बजाकर अपना जान का मूल्या दते थे। स्त्रियाँ बहुत कम पदा करती थीं। उच्च श्रेणी के स्त्रियाँ शासन और सामाजिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भाग लेती थीं। ऊंचे घरानों की नृत्यिकाओं का उच्च शिक्षा भी दी जाती थी। स्वयंवर का प्रथा भी प्रचलित थी। उच्च श्रेणी के लोगों में बहुपत्न्यत्व का रिवाज था परन्तु स्त्रियाँ का पुनर्विवाह को भी जाना नहीं था। शासन परिवारों में सती की प्रथा बहुत लोकप्रिय होनी जा रही थी।

दश में विशुद्ध मध्य देश में जावाण घना था। लोग समृद्धशाला और सुखी थे। उनकी जायिक शशा बहुत अच्छी थी। धन कुछ ही लोगों के बीच सघनता होता जा रहा था जा वास्तव में बहुत ही अमीर थे। वे लोग द्वारा सावजनिक संस्थाएँ स्थापित करना और निधना के कष्टों का दूर करना एक प्रकार का धार्मिक कर्तव्य माना जाता था। वे लोग सबके धर्मशालाएँ और अन्य सर्वोपयोगी इमारत बनवाते थे। जनसाधारण के उपयोग के लिए बगीचे बगान और नुएँ आदि खुदबान का भी रिवाज था। उस समय पानशालाएँ थी जहाँ यकिनिया का भोजन और निवास स्थान मुफ्त मिलता था। रागिया को चिकित्सा के लिए खराती सम्पत्ता देते थे। लोग अपना यायप्रियता और त्यागता के लिए प्रसिद्ध थे।

सात दश में पाठशालाएँ और विद्यालय थे। लोग सुशिक्षित थे। नालन्दा और वल्लभा के विश्वविद्यालय दश की प्रमुख शिक्षा-संस्थाएँ थीं। इनके अतिरिक्त काशा में विहार में (उत्तुपुर तथा विक्रमशिला) और उत्तर के दक्षिण भारत के धार्मिक स्थानों में भी शिक्षा-संस्थाएँ थीं। मालवा में धार नामक स्थान में संस्कृत का बहुत बड़ा विद्यालय था। ऐसा ही एक दूसरा विद्यालय अजमेर में भी था। ज्यानिय तथा अमर विद्यालय के लिए भी विद्यालय थे। वे तथा अन्य धार्मिक साहित्य पुराण और धर्म शास्त्रों के अतिरिक्त विज्ञान ज्यानिय और चिकित्सा शास्त्र आदि विषयों का भी शिक्षा इन संस्थाओं में दी जाती थी।

उपयुक्त विवरण से स्पष्ट है कि अरब आक्रमण के समय देश के लोगों की आर्थिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक दशा वास्तव में अच्छी थी। राज्या

की शासन व्यवस्था सुयोग्य था और नागा व हिन्दू का ध्यान रखा जाता था । परन्तु राजनैतिक एकता और दश प्रेम का अभाव शासनव म उम समय क भारतीय जीवन की मुख्य दुबलता था ।

#### BOOKS FOR FURTHER READING

- 1 RAY H C Dynastic History of Northern India
- 2 TRIPATHI R S History of Kanauj
- 3 RAI CHAUDHRY Political History of Ancient India
- 4 BHANDARKAR R C Early History of the Deccan
- 5 MAJUMDAR R C History of Bengal Vol I
- 6 DUBRUIL J Ancient History of the Deccan
- 7 MAJUMDAR RAI CHAUDHRY & DUTTA Advanced History of India

## सिन्ध तथा मुल्तान पर अरबों की विजय

[ ७११—७१२ ई ]

अरब विजय के समय सिन्ध की दशा

वर्तमान सिन्ध प्रांत की अपना आरंभ शताब्दी के हिंदू सिंधु राज्य का क्षेत्र अधिक विस्तृत था। वह उत्तर में काश्मीर तक पूरव में कन्नौज तक तथा दक्षिण में समुद्र तक फैला हुआ था। उसी उत्तर पश्चिमी सीमा में वर्तमान बलाचिस्तान का वर्तमान बड़ा भाग तथा मकरान का समुद्री तट भी सम्मिलित था। इसकी राजधानी जलार (वर्तमान रोहरी) था। मारा राज्य चार प्रांतों में बंटा हुआ था और प्रत्येक प्रांत एक अलग स्वतंत्र गवर्नर के अधिकार में था। स्वयं राजा के अधिकार में केवल राज्य का कर्त्तीय भाग ही था और प्रांतों का वास्तविक अधिकार गवर्नरों के हाथ में था। ये गवर्नर सामन्त राजा कहलाते थे। राजा गूढ़ जाति का था और बौद्ध मत का अनुयायी था।<sup>१</sup> सातवां शताब्दी के प्रारम्भ में फारस के राजा निमराज ने सिन्ध पर हमला किया और वहाँ का शासक शरियाज युद्ध में मारा गया। शरियाज के बेटे उमक का पुत्र माहमा राय द्वितीय गद्दी पर बैठे किन्तु उसका ब्राह्मण मन्त्री चंच उसका हत्या कर स्वयं गद्दी पर बैठ गया। इस अनाधिकारी राजा ने माहमा राय तृतीय का विधवा पत्नी के साथ विवाह किया और गवर्नर के विरोध का शान्त किया जिहान इस शासक मानना अस्वाकार कर लिया था। इन मकरान (वर्तमान बलाचिस्तान) के एक भाग का जीत कर उस प्रदेश के वास्तविक पर भी अपना अधिकार जमा लिया। चंच के बाद उसका भाई चंच गद्दी पर बैठे किन्तु उसकी शीघ्र ही मृत्यु हो गयी। अत्र उमक पुत्र दुराज तथा चंच के ज्येष्ठ पुत्र दाहिर के बीच गद्दी के लिए संध हुआ। दुराज हराकर शंभू में निकाल लिया गया और चंच के दाना पुत्र दाहिर और दाहिरसिया ने जो माहमी राय तृतीय की विधवा पत्नी में उत्पन्न हुए

<sup>१</sup> यासम वाटस वृत्त युवानव्यास का भारत-यात्रा जितने पृ० २५२  
द्वितीय एवं हाउमन जितने एक पृ० ४१० ११ ।

साम्राज्य का बनी ब्याटुरी म मुराजता वरता रहा त्रिन्तु अत म उमे पराजय का मह लेयना परा ।

कु आधुनिक विद्वाना विजयवर वृज्जन गग का लेमा मन प्रनीत जाता है कि अरबा तथा सिंध व मघप का मुख्य कारण यत् था कि सिंध व राजा ने अरबा व न्न जहाजा की क्षतिपूर्ति नहीं की थी जिन् सिंध के समुद्री गत म दूर कुठ समुद्री डाकुआ न तूट निया था और एम गत का घटना ने के लिए ही अरबा ने सिंध पर आक्रमण करना आरम्भ कर लिया था । परन्तु समवाचीन स्रोतो स प्राप्त उपयक्त योरो मे एम तथ्य का स्पष्ट पता नग जाना है कि शक्ति व प्राप्त करने न अरबा की आँवें हमारे समृद्ध बन्दरगाहा पर नग गयी था जीर ७१२ ई म जतिम सफतना पाने व पूव भी उहाने सिंध तथा ताबुन और जाबुल पर तनवार के बन स अधिकार करने के लिए अनेक असफल प्रयत्न किये ।

भारत के जीतन का तथ्य और सिंध की सफल विजय तो वास्तव म उनके उम विस्तृत आक्रमण की योजना का केवल एक अंग था जो उहाने अपन पगम्बर की मृत्यु व मौ वष व भीतर ही अपने राज्य व विस्तार व लिए बनायी थी । उहाने सीरिया मसोपोटामिया आर्मीनिया ईरान बलाचिस्तान ट्राम जात्रिमयाना अफीका का सम्पूर्ण उत्तरी समुद्रतट उत्तरी तथा पूरबी सिन् स्पेन पुतमान फ्राम का श्विणी भाग तथा अपनी जमभूमि अरब को अधीन कर अपने राज्य म मिला लिया था । एम प्रकार हम लेखने है कि अरबा के हृदय म राजनीतिक एक क्षेत्रीय विस्तार की उत्कट अभिनाया थी । सिंध पर भी वास्तव म उहाने एनी उद्देश्य मे आक्रमण किया था समुद्री डाकुआ की तूट ता केवल बन्तना मात्र था । उनके आक्रमण का एक बड़ा उद्देश्य आर्थिक ना था क्याकि व तूटपाट व सरन साधना स धन प्राप्त कर अपनी आर्थिक शशा मुद्दू बनाना चान्त थ । किन्तु उनकी प्रेरणा का मुख्य आधार धार्मिक जाण था जिसम वे अनुभव करन नग थे कि श्वर न उह ससार म इन्नाम का प्रचार करत जीर काफिरा का विनाश करन व लिए भजा है । नगभग सभी आधुनिक जगता न या तो एम धार्मिक तथ्य की उपेक्षा कर ता है जयवा एमकी ओर वहुन कम ध्यान लिया है । वास्तव म धव और नग्न मत्य ना यत् है कि अरबा न अपन विजित शशा म केवल अपन धम और समृद्धि का न प्रचार नहा किया अपितु प्राय वनी व सभी देश वागिया व धम और परम्पराजा का समूच नष्ट कर लिया । इस भाति सिंध पर अरबा व आक्रमण व अनेक उद्देश्य थ किन्तु धम का प्रचार उनका मूल उद्देश्य था ।

अरबा का सिंध पर आक्रमण करन का एक अवसर मिल गया था जयवा

या कहना चाहिए कि उन्होंने यह उद्देश्य ही लिया था कि खाना के निकट  
 लक्ष के समुद्रतट में दूर सिंधी समुद्री वायुओं से अरबों के कुछ उद्देश्यों को  
 नष्ट किया था। हम घटना का विभिन्न तथ्यों ने विभिन्न रूप से वर्णन किया  
 है किन्तु वे सभी रूप मनगढ़ान्त प्रतीत होते हैं। एक लेखक का कहना है कि  
 अरबों के राजा ने इराक के अरब गवर्नर हज्जज के पास अरब साम्राज्य के उन  
 अरब व्यापारियों की अनार कथियाँ को भजा था जिनका मृत्यु उसमें तेष में  
 हो गया था और जब वे हज्जज सामान के साथ सिंध के समुद्रतट पर पहुँच  
 तो सिंधी समुद्री वायुओं ने उन्हें लूट लिया। दूसरे लेखक का मत है कि अरबों  
 के राजा ने इस्लाम धर्म अपनाने पर (जो गतिशील दृष्टि से असंभव है)  
 मनीषा के लिए बन्धुत्व उपहार भेजे थे उन्हें वायुओं ने लूट लिया था। तीसरा  
 मत है कि खानाफा ने कुछ तामियों तथा अन्य वस्तुओं के लोभ के लिए  
 अपने गजबत भेजे थे किन्तु अरबों के निकट ये लूट लिये गए। इन तथ्यों का  
 वर्णन है कि हज्जज हम लूटपाट से बहुत क्रुद्ध हुआ और उसने अपराधियों  
 का दण्ड देने तथा हानि का पूर्ति करने के लिए सिंध के राजा दाहिर को  
 लिखा परन्तु दाहिर ने उत्तर भजा कि तुम्हारे मर्ग प्रजा नहीं है अनर्थ उन्हें  
 लण्ड देने में असमर्थ हूँ। हज्जज इस उत्तर में अत्यंत क्रुद्ध हुआ और उसने  
 दाहिर पर आक्रमण करने के लिए गलाफा वाहिन की आपा प्राप्त कर ली।  
 उपरुक्ता के मनापनित्व में एक सुदृढ़ सना भजी गयी किन्तु दाहिर ने उस  
 हगवर भौत के घाट उतार दिया। इसके बाद बुल के मनापनित्व में  
 आक्रमण किया गया किन्तु इस बार भी सना हरा ली गयी और सनापनि  
 मार जाया गया। उसके बाद १७वर्षीय मुहम्मद बिन कासिम नामक युवक  
 का जा महत्वाकांक्षी और माहुरी था सिंध के राजा का लण्ड देने के लिए  
 भजा गया।

### आक्रमणकारी सेना की शक्ति

मुहम्मद बिन कासिम ने पन्द्रह हजार सना लेकर प्रस्थान किया। उसमें  
 ६००० सारियन अस्त्रधारी थे जो खानाफा की सेना के सर्वोत्तम अंग माने  
 जाते थे ६०० ऊटों की सेना थी तथा ३००० सामान्य सैनिकों वाले सारथी ऊट  
 थे। चूंकि उन्हें भी युद्ध की शिक्षा दी गयी थी इसलिए उन्हें भी सेना का ही  
 अंग समझना चाहिए। महरान के पास मुहम्मद हारू के नेतृत्व में कुछ और  
 सनाए आकर उमम मिल गयी। उमम का तापमाना जिसमें पाँच पाँच फेंकन  
 वाली मशीनें थी समुद्र मार्ग से भजा गया था। वह देवल के पास आकर उमम  
 मिल गया। प्रत्येक सैनिक (सैनिक) का खजाना के लिए ५०० आत्मी जुगाय  
 जान थे। इस प्रकार उमम का तापमान का संख्या २५०० हुई। इसमें अरबों के

अग्रगामी तल को जाऊ दंत पर जा अतुन अख्तियारी क तद्वत्त म मिथ की सीमाआ पर मुहम्मद दिन कामिभ की मना म मम्मिनित्त हान क लिए भजा गया था अररा की आक्रमणकारी मना का मर्या २/ ००० २१ जाती है । प्रारम्भिक सफलताआ क फलस्वरूप म मना की मर्या बढ़ती गयी और ५ ००० तक पहुँच गयी । य मर्या ( १० ००० ) म समय थी जब मुहम्मद दिन कामिभ मिथ का विजय करन क वा म्भुतान की जा र वता । इमम क मतिक सम्मिनित नहा थ जा विभिन्न युद्धा म मार जा तुक थ अथवा मि थ क तद्वत्त पर अधिकार रखन क लिए छाड़ दिय गय थ ।

दूसरा जोर त्तरि क साधन जोर उमक शैश की कुन जनगम्या भी हतनी न थी कि व म्भुत क समान बनी मना भरती कर मरता । सभी अकाट्य प्रमाणा म सिद्ध है कि मुहम्मद की अरब मना की तुलना म मर्या तथा माजमना की दृष्टि म त्तरि की फीज वन्त घटिया थी ।

### देवल की विजय

मिथ का गुप्तचर विभाग या ता नितान अयोग्य था अथवा त्तरि अत्यधिक प्रमाणी शासक था जिससे उमन मिर पर महराने बात सकट का अनुभव नहा किया । व अपनी राजधानी अगेर म जो त्वत म १५ मीन दूर थी निष्क्रिय पडा रत्त जोर त्तरि मिथ क एक व म्भुत पर उमन आक्रमणकारी को अधिकार कर देने दिया । उसने आक्रमणकारी मना की प्रगति का राकन का वास्तविक प्रयत्न नही किया और न त्तरि की रक्षा क लिए ही कुमुक भेजी । त्तरि म उम समय २५ ००० अरब सेना क मुकाबल म देवल ४ ०० सतिक थ । मुहम्मद न नगर को जिसकी रक्षा एक पत्थर की मुद्दू लीवार करती थी घर दिया और उमके बनिश्ता ने समुत् की ओर म पत्थर बरमाना आरम्भ कर दिया । म्भुते मतिक अत्यन्त वीरता म त्तरि किन्तु शत्रु की सख्या उनम क्ती अधिक थी । म्भुते समय प्रमुख म्भुते क एक ब्राह्मण न भी त्तरि किया व अरवा म जा मिता और उह सूचना दी कि जब त्तरि व त्तरि यण्ण जिसक नीच तावीड बधा है म्भुते क शिखर पर फहराना रत्तगा तब तब नगर का न्ना जीता जा सकता । मुहम्मद क बनिश्ता न इण्ड पर पत्थर बरमाना शुरू कर दिया और कुछ प्रारम्भिक कर्तितान क बाद हा यण्ण मिर गया । म्भुते मे अररा क उम्मा का पार न रत्त जोर नगर की रत्ता करन बात मतिक उमम अवश्य म्भुते त्तरि हूण म्भुते । फिर भी उम्माने नयकर थावा किया किन्तु पाद म्भुते दिय गय । अररा को अपनी मर्या की अधिकता पर भगमा था म्भुते व गीतिया तगावर लीवार पर चल्त गय और त्वत्त पर अधिकार कर दिया । नगर निवासिया म्भुते म्भुते और मृत्यु म्भुते







किसी एक का चुन लन व लिय कहा गया । उहान मृत्यु का वरण लिया अन तीन दिन तक भयकर हत्याकाण्ड चलता रहा । १७ वष तथा उमम अधिक अवस्था के मभी पुष्पा का वध कर लिया गया और उनके वच्चा तथा स्त्रिया को दास बना लिया गया । मन्दि नष्ट किय गये और उनके स्थान पर मस्जिदें खडी कर दा गया । विजेताआ का विभिन्न प्रकार का बहमूय वस्तुएं लूट म मिली जिनम मनुष्य भी सम्मिलित थ । लूट क सामान का ३ भाग नियमा नुमार हज्जाज व द्वाग खनीफा के पास भज लिया गया । इस प्रकार पहला भारतीय नगर अरबा व हाया म आया । किन्तु इस पतन का कारण भारतीय मनिवा का कायरता न्था वलिय एक भारतीय नरेश का प्रमा और शत्रु-मेना की अधिकता थी ।

मुहम्मद न र्वन के लिए एक शामक नियुक्त किया और उमकी महायता क लिए ४००० मनिव छात्रवर व निम्न का आग बढ़ा । निम्न र्वन से ७५ मीन की दूरी पर उत्तर-पूर्व म एक महत्वपूर्ण नगर था और आधुनिक हैरगवाह क ठार लक्षिण म जाकर क निवट स्थित था । मान दिन की यात्रा क बाद मुहम्मद वहाँ जा पहुँचा और बिना युद्ध क ही उमका उम नगर पर अधिकार हा गया (७१२ इ क प्राग्मिक दिना म) । उस पार भी लालि न अकमण्यता का परिचय लिया और नगर निवासिया का उनके भाग्य पर छोड़ दिया । विजय स उल्लसित अरब सना सहवान का आर वग स र्नी और एक सप्ताह क घर क बाद उम पर भी उमका अधिकार हा गया । सहवान का शासक लालि का चचरा भाद दास्यग था । उमने बिना युद्ध किय र्नी नगर छोड़ दिया क्योंकि वहाँ क प्रमुख यकिनया न जा यापारी और पुराहित थ उमका साथ न्था लिया । उमक राज कुम्भ पर स्थित मीमम का राज आयी । जान ने जिनकी मर्या अरबा क मुवायन म बहून कम थी र्नी दिन तक युद्ध किया किन्तु अंत म उन् नगर छाटना पन् । मीमम स मुहम्मद निम्न की आर वापस लौटा क्योंकि सिंधु की प्रमुख धारा महरान का पार करके व लालि म युद्ध करना चाहता था जा ब्राह्मणाचार्य म मार्च लगाय पन् था । व र्नी महीना तक अरब सना का ल्नी क पश्चिमी किनारे पर पडा रन्ता पन् क्योंकि एक ता नावा की बमी थी और दूसर एक बामारी क फन जान क कारण उमक बहून-स घाते नष्ट हो गय थ । अत्र अरब म २००० घाडा की कुमुक और बामार पशुजा क लिए औषध आ गयी तत्र मुहम्मद न सम्पूर्ण सना के साथ ल्नी का पार किया जिनम उम अधिक प्रतिरोध का सामना न्था करना पन् ।

उमा प्रतीत र्नाता है कि लालि न एक समामान युद्ध पर ही अरामा कर र्ना था किन्तु अब उम उम मकट का अनुभव हुआ जिनम व अपनी

अज्ञमप्यता की नीति व कारण पग गया था। अरुन नगना का बन्ना है कि उमन ५० ०० सतिन "नटटे रिय जिनम मे अधिनार तरान ही भरती किय गय थ। जाग्रमणनारी वा गाग्रना रनन व तिए वह ब्राह्मणावा म रावर की आर प्रडा। राना ओर के स्वाउटा म कई दिन ता इण्टुट मयें होती रहा। अन म २ जून ७१० ई के दिन किरा युद्ध हुआ। हाथी पर सवार हाजर दाहिर ने स्वय गाय-मचावन किया माना "म प्रकार व" अपन चरित्र व कवन का घोना चान्ता था। वारतापूरन युद्ध करके उमन मनापति की मियत म न मनी किन्तु एक मतिक की हैसियत म अवश्य अपनी प्रतिष्ठा पुन स्थापित की। किन्तु दुर्भाग्य स उमक हाथी व एक आग्नय बाण (आग नगान वाता) नगा जिमम जाण्टे म जाग नग गयी। हाथी भागवर नग म जा गिरा और सना म काफी घबराहट फन गया। किमी प्रकार बीच धार म ने हाथी का नौगावर दान्ति न शत्र पर भयकर प्रहार किय और जरवा का भीषण सहार किया। किन्तु जमी दुर्ब की इच्छा थी उसक स्वय एक तीर नगा जीर वह हाथी स गिर पना। एक क्षण म ही उमन अपन को फिर मभाना और घोटे पर सवार हो गया। किन्तु शत्र न उस पर फिर घातक प्रहार किय जिमस उमकी सना भयभीत हाकर भाग खनी हुई।<sup>१</sup>

स दुग्नात नाटक के अन्तिम दृश्य स भारतीय देशभक्ता को कटाचिन कुछ सारत्वना मिन सके। दाहिर की विधवा रानीबाई व नेतृत्व म सिध की स्त्रिया न अपने पुरुषा के पापा का प्रायश्चित्त करन का प्रयत्न किया। रानी न रावर व दिन म वीरतापूर्वक युद्ध किया जीर उमक १५ ०० सतिको न घरा डाने वात जरवा पर पत्थरा और चत्रो का भयकर वर्षा की। शत्र का मम काफी घबराहट हुई। जब और जाग युद्ध चराना असम्भव हा गया तो राजपूत प्रथा के अनुसार राना ने अपनी माथी अय स्त्रिया के साथ जीहर कर लिया जिममे वे मन्चल विदेशिया<sup>१</sup> व हाथा म न पण जाय। रावर की भाति ब्राह्मणावा (शैरावा व उत्तर म) न भी अपना उवन कीति की रक्षा की। दाहिर की सना के बचे हुए सनिका न वहा मे अटूट सक्प के साथ युद्ध किया जीर उनम म ८ (दूमर कथन के अनुसार २ ० ०) मन रन किन्तु उहान अधिक नहा ता कम स कम उनन हा शत्रजा का अवश्य सार किया। दान्ति व पुत्र जयमिन् न जब देवा कि आग प्रतिरोध करना व्यय है ता चित्तूर म जाकर नरण नी। नगर पर मन्मन् का अधिकार हा गया। उमका काप नया अय मन्मूय मन्ना उमक हाय नगा जितम दाहि र

<sup>१</sup> चचनामा न्न स्त्रियण लण्ड डाउमन जिल्ल एक पृ० १७

<sup>१</sup> वग पृ० १७७

की दूसरी विधवा राना लाडी और उसकी दां कुमारा पुत्रिया स्यदेवी और परमालदेवी भी सम्मिलित था। आक्रमणकारी का दूसरा अभाष्ट सिंध की राजधानी आगर अथवा अलोर थी। दाहिर का एक अय पुत्र उसको रक्षा कर रहा था। उमर वीरता से नगर को बचाने का प्रयत्न किया और तभी छाडा जब आम युद्ध करना निश्चय हो गया। इस प्रकार सिंध की विजय पूर्ण हो गयी।

### मुल्तान का विजय

इस प्रकार सिंध में असाधारण सफलता प्राप्त करने के उपरान्त मुहम्मद ने ७१३ ई के प्राग्भ में मुल्तान की ओर कूच किया। आरार से आगे भाग में उसे हर जगह कठिन प्रतिरोध का सामना करना पड़ा। किन्तु उसका सेना की संख्या बहुत थी और अस्त्र शस्त्र भा अच्छे थे इसलिए उसे सफलता मिली। अनेक स्थानों पर अधिकार करना हुआ वह मुल्तान के फाटवा पर जा धमका। "अत्र तथा ब्राह्मणाद्या" की भूति इस प्राचीन नगर का पतन भी एक शत्रोही भगोड का गद्दाग के कारण हुआ जिसने शत्रु को उमर अल धारा का पता दे दिया जिससे नगर निवासियों को पानी मिलता था। अरबों ने जन मानस के भाग का काट दिया। अतः नगर को आत्मसमर्पण करना पड़ा जिसके उपरान्त वही पूरवत हुआ और और दाम बनाने का कार्य प्रारम्भ हुआ। यहाँ पर अरबों का अपना धर्म मिला कि उन्होंने मुल्तान का नाम स्वयं नगर रख दिया।

### सिंध के पतन के कारण

सिंध का पराजय के अनेक कारण थे। सबसे प्रथम प्रांत में आन्तरिक एकता का अभाव था और वह अरबों जैसे शक्तिशाली आक्रमणकारियों का मृदाबला करने के योग्य नहीं था। उसकी आबादी कम थी और विभिन्न तत्त्वों से मिलकर बनी थी। बहुमध्यक हिन्दुओं के अतिरिक्त बौद्धों की भी काफी संख्या थी और कुछ जैन भी थे। समाज के निम्न वर्गों के साथ व्यवहार किया जाता था। जात मूल तथा कुछ अय जातियों को उच्च वर्गों के लोग ही नहीं बल्कि राजा दरबारीगण तथा राजकर्मचारियों भा हय समर्थन थे और उन्हें अपमानित करने थे। उन्हें न तो जैन धर्म हुए छाडा पर मन्त्र ज्ञान का आशा थी और न अस्त्र शस्त्र धारण करने के अर्हते वस्त्र पहनने की। इन परिस्थितियों के कारण सामाजिक मुद्दता का जो राजनैतिक स्वाधानता की सर्वोत्तम मारुष्ठी है पूरा अभाव था। दूसरे राजा तथा उसकी सरकारों को प्रिय नहीं थी और युद्ध एवं गति दोनों स्थितियों में अयोग्य थी। मुहम्मद बिन कासिम के आक्रमण में एक पाडा पत्तन भी बच न जिसे लोग पूजा करते

थे अनियमित रूप से गद्दी पर अधिकार किया था। उमर पुत्र मन्त्रि ने भी जनता उतनी ही अप्रसन्न थी। वाग्द्वय म राजा तथा प्रजा म वन्त कम मगानु भूति थी। दाहिर के प्रातीय मूगार उगभग जद्ध-स्वन्त शामक थे जीर एमा प्रतीत होना है कि मकत के समय म भी उहान उमरों महयाग नहीं किया। इही वाग्ना म दाहिर की प्रजा न विणय रूप म बौद्धा तथा व्यापारिया न युद्ध म भाग लेने से इनकार किया और वन्त कि यह हमारा काम नहीं है। उनम स बहुता ने शत्रु को बहुमूय सूचनाए ली और अपने श्रेष्ठ तथा राजा के विरुद्ध उमसे जा मिन। श्री एम एन धर एम मत का विराध करते <sup>१२</sup>। उनका कहना है कि बौद्धा का जानबूझकर एम विषय म कथानक <sup>१२</sup> के धून पान का स्थान किया गया है। किन्तु बौद्धा क एगगह क निमित्त प्रमाण है और तथ्या का तब स अधिक मूल्य जाना चाहिए। बौद्धा की भांति कुछ हिन्दू भी व जिनके माथ पर एगगह क कन्क का टीका उगना चाहिए। इस विषय म देवल के मन्त्रि के पुजारी न निवज्जतापूर्वक उगहरण प्रस्तुत किया था। इस बात को बहुधा भुना किया जाता है कि यद्यपि हिन्दू अपने योग क प्रति सामाजिक अत्याचार करते थे फिर भी दीधकान स व धार्मिक सहिष्णता के जम्बून हो चुके व और दूमरे धर्मों और लोग क प्रति उहाने एक एमा दृष्टिकान विकसित कर लिया था जो सकीण राष्ट्रीयता की भावनाआ मे मुक्त था। उहाने एस बात पर विनकुन विचार नहीं किया कि इन्नाम के अनुयायी जो दूमरे धर्मों को झठा समझते है और भूतिपूजा का दमन करना अपना प्रथम कनय मानत हैं हमारे साथ कसा करनाव करे। जनानपूण अन्तर्राष्ट्रीयता की भावना तथा श्रेष्ठभक्ति क अभाव क कारण म्त्रिआ म एक एमी मनावृत्ति उत्पन्न हो गयी थी जिससे वे अपने श्रेष्ठामिया तथा विदेशिया म कोई अन्तर नहीं समझत थे और उनम स जा अमातुष्ट थे वे अपन श्रेष्ठ के शत्रुओ से जाकर मिन जात थे। निस्सन्देह विद्रोह तथा गद्दारी मिथ क पतन के मुख्य कारण थे। तासरे आज की भांति उम युग म भी मिथ आर्थिक दृष्टि म दरिद्र तथा अभावग्रस्त प्रान्त था। उमके क्षीण साधन इस योग्य न थे कि एक विशाल स्थायी सना रखी जा सकती और शक्तिशाली शत्रु क विरुद्ध युद्ध का तब कर्णन किया जा सकता। चौथ अरवा की आक्रमणकारी सना दाहिर की सेना क मुकाबल म मर्या तथा साजमन्जा की म्त्रि से कन्क अधिन शक्तिशाली थी यद्यपि माहम निर्भक्ता तथा मृयु को तुल समपना म्त्रि गुणा म वह भारतीय सना म अड़ी न थी। एवम म ४००० मिथी सनिका का सलीफा

<sup>१२</sup> एम एन धर एम एम एरर कौतवम् आव मिथ प्रासीडिगम आव ए एग्गिन हिन्दी कायम १६ ८ पृ ८४६ ८५७

की फौज के चुन हुए २२०० यादोआ का मुकाबला करना पना था। इस प्रकार उनमें एक और छह का अनुपात था। पाँचव एक शत्रुहीन शत्रु का मन्त्रवपूण भन्ना बता दिया था, फिर भी सिंधी सैनिक इतने जिना तक युद्ध में उठ रहे यह एक आश्चर्य का वान है। निरुन सम्मान और सीसम म मित्रावर भा जात्रमणकारी फौज के चौथाई सैनिक थे। जब रावत म जरब और सिंधा दना का आमता मामना हुआ उस समय जवश्य जना म मर्या की समानता थी यद्यपि उत्साह तथा साजसज्जा म अरब का अधिक बढ़ था य कयाकि जगातार विजया के कारण ये उत्साहित हा र्थ जोर उमी अनुपात म हमारे सैनिका का मनोबल भीण हा चना था। फिर भी वहा पर एसा विवट सधाम हुआ कि कुछ समय के लिए शत्रु का विजय की आशा न रही थी। अरवा के शूरत्व मुहम्मद विन कासिम की प्रखर प्रतिभा और भारतीय सन्निका की कायरता की जा कहानिया पम्पातपूण लखना न निखी है उनका आधुनिक वनानिक अनुमधाना न खणन कर दिया है। यहा यत् वात ध्यान देन माग्य है कि अरब मिय निवासिया से इससे पहल दा बाग पराजिन हा चक थे। उनकी अतिम मफलता के दा मुख्य कारण थे एक ता व सह्या और साजसजा की दृष्टि से वही अधिक शक्तिशाली थे और दूसरे हमारी ओर उचित नतृत्व का अभाव था। छोटे काफी पल्ल स सिंध शेष भारत से पृथक् था अत एक विशाल शत्रु यना द्वारा जात्रात हान पर भी बह शप भारत से सहामता की आशा न कर सका। उस युग म हमारा पक्ष अनेक छान छान राया म विभक्त था प्रत्येक अपन स्वार्थों म लिप्त था और काई कन्द्रीय सरकार जयवा जय एमा साधदेजिक मगठन न था जा बह्य आत्रमण से दग की सामाजो की रक्षा कर सकता। सातवें अरवा के इस माहमिक और जात्रमणकारा युद्ध के पीछे यह प्रेरणा काम कर रही थी कि शत्रु काकिरा का इस्नाम की नियामतें बहशने के लिए एक साधन की भांति हमारा उपयोग कर रहा है। किन्तु हमारे देशवासिया के मग्मुन काई एमा स्फुटियायक आश न था जो पक्ष के इतिहास के उस दवा सकेट के समय म उनका मनोबल को दृष्टता प्रदान कर सकता। अनात नीमन की कुटिल गति के कारण ये बठार तय्या का न समझ सक और न इस बात का अनुभव कर सक कि हमारा धर्म मसृति घर तथा परिवार सभा सकेट म हैं। अत म, दाहिर की अनानता, उसकी प्रारम्भिक निष्प्रियता नतृत्व का अभाव तथा मूयतापूण गलतिया का हम उसकी हार तथा सिंध का दामता के लिए उत्तरदायी ठहरा सकत हैं। सिंध तथा पजाब का सरकारा का यह अक्षम्य अपराध था कि उन्हने अरब का उस महान् शान्ति से सम्बन्ध नहा रखा जिमन मानवा शताब्दी म एक शक्तिशाली साम्राज्य का निमाण बिया था और जब अरवा

न सिंध की सीमाआ पर स्थित मर्रात (आधुनिक बलाचिस्तान) का जान लिया उ हाने अपनी सीमाआ की रक्षा का कार्य प्रथम नग्न किया। बाहिर न उगनी भी नहा उठायी और दबन निम्न सम्बान सीमम तथा तिचल सिंध के अय महत्त्वपूर्ण स्थाना पर जाग्रमणकारी का अधिरार कर उन किया। एक विचित्र जनान जथवा भ्रूयता क कारण वह रावर म आग्रमणकारी क आगमन की प्रतीत करता रहा और उमकी प्रगति का रकने का उमन कोई प्रयत्न नही किया। जब मुहम्मद घाग की बीमारी स शिथिल हारर महरान क दूसरे किनार पर महीना तक पना रहा उम समय भी बाहिर न उम पर आक्रमण नहा किया और बिना किसी अवरोध क उस नगी पार कर उन दा। उसन अपना सबस्व एक ही घमासान युद्ध क दांव पर नगा किया। सनापति और नता की हैसियत स उसन रणभय म अपन सनिका का उचित रूप स मचालन नहा किया और बमजार मार्चों पर बुभुक भजी वीक एक सिपाही की भांति वह स्वय युद्ध क पुरमुट म वून पना जिसका परिणाम यह हुआ कि सना के विभिन्न अगा स उमका सम्पक टूट गया। अपन पाप का प्रायश्चित्त उसन अपना जीवन दकर किया किंतु उसक वात् की पीन्या उस क्षमा नहा कर सकती कषाकि अपनी भ्रूयता क कारण उसन दश की दासता का माग प्रशस्त किया।

### सिंध मे जरवा की शासन व्यवस्था

#### आशिक धार्मिक सहिष्णुता की नीति

दबन की विजय के बाद मुहम्मद जिन कागिम के सामन सबसे पहला काम यह था कि नगर पर अधिकार कायम रखन क लिए समय क उपयुक्त किसी प्रकार की भद्दी भौडी शासन याजना बनायी जाय। उमन एक सनिक पना धिकारी नियुक्त किया और ४०० सिपाही उसकी अधीनता म काम करन क लिए छाड दिया। प्रत्येक जीत हुए नगर क लिए यही प्रबंध किया गया। नगरा की जनसह्या और सामरिक महत्व क अनुगार सनिका का सह्या अवश्य घटा बना नी जानी थी। नागा की सम्पति जन करन एक टूट ससाट म सना तथा युद्ध क यय क लिए पर्याप्त धन प्राप्त हा जाता था। इस आन्मि किस्म की शासन व्यवस्था का चनान क लिए प्रात की जनना के सक्रिय सह्याग का आवश्यकता न थी। उम कारण म तथा जिस उद्देश्य स यह जाग्रमण किया गया था उम ध्यान म रखत हुए मुहम्मद न प्रत्येक विजय के समय तथा सिंध की राजधानी आरार का जात समय माग म एक धर्मांध मुमन मान जमा पवहार किया। महत्या पुरपा की इसलिए नगमतापूर्वक हत्या की गयी कि उहान अपन पूवजा क धम का त्यागन स मना किया। सहत्या निर्दोष स्त्रियो

और वच्चा का उनकी सम्पत्ति और धर्म से बचित किया तथा दामता का बडिया म उह जगडा गया । हर जगह मन्दिर नष्ट किय गये और मूर्तियाँ ताडी गयी । मुहम्मद का प्रमुख हज्जाज जा नशस जाततायी था इम ववरतापूण अत्याचार से भी सन्तुष्ट नहा हुआ । उसने इस बात पर अप्रसन्नता प्रकट की कि इश्वर का काम करन मे शिथिलता लिखाया जा रहा थी और मुहम्मद का उमन जाग भजी कि काफिरा के साथ अधिक कठारता का व्यवहार किया जाय । इममे सन्तुष्ट नहा कि मुहम्मद ने अपन प्रमुख की आनाआ का बफातारा से पानन किया हागा । दाहिर का पराजय तथा मृत्यु के बाद जब सिब का सम्पूर्ण प्रान्त अरबा के अधीन हा गया तब मुहम्मद का तत्काल ही एक मुदुन और स्थायी शासन-व्यवस्था कायम करन का आवश्यकता अनुभव हुई । अब उस धार्मिक कट्टरता तथा राजनातिक बुद्धिमत्ता मे से किसी एक का अपना के लिए वाध्य हाना पडा । मुदुनी भर अरबा के लिए शासन सम्बन्धी सभी भार अपन ऊपर ले लना असम्भव था और न वे इस याग्य थे कि जनता से बलपूर्वक खती करवाकर उससे अपन लिए भाजन तथा राजस्व बसूल कर पान । पन्नता उनकी सख्या ही बहुत कम थी । दूसरे वे भारतीय शासन पद्धति राजस्व सम्बन्धी नियमा तथा याग के सिद्धान्ता से अपरिचित थे । तीसरे हिन्दुआ का अपन धर्म मे अगाध श्रद्धा थी और उह अपन धर्म एक ससृष्टि की श्रष्टता मे गहरा विश्वास था । वे विजताआ का शक्तिशाला बबरा मे अधिक अच्छान समझत थे । इन्नाम की अपना वे मृत्यु का अधिक पसन्द करत थे । चौथे हिन्दु भा अस्त्र शस्त्रा से नस्तीर्भानि मुमज्जित थे । उस युग मे साधारण जनता तथा शिक्षित सनिका के हृदयारा मे अधिक भय भी न था । यदि अरब लाग संगठित रूप से हिन्दुआ को मुसलमान बनान का प्रयत्न करत तो वे निरन्तर सघष मे फस जात और इमसे विजय का उद्देश्य ही नष्ट हो जाना । किन्तु इस्लाम के अनुसार, जसा कि मुमनमान शास्त्रकारा और कुरान के टीकाकारा ने उसकी व्याख्या की थी कबल यहूदा और इसाई ही धार्मिक सहिष्णुता के अधिकारा थे हिन्दु नही । इस्लामी कानून के अनुसार गर मुसलमाना के दावग थे । पहल मे यहूती और ईसाई थे । वे अह्दए किताने कहनात थे और ईश्वरीय पान के साक्षीदार समझ जात थे । इमलिए जडिया दन पर उह धार्मिक स्वतंत्रता मित्र सक्ता था । दूसरे वग मे वे लाग थे जिह् इश्वराम ग्रय नही प्राप्त था । इसलिए वे धार्मिक सहिष्णुता के अधिकारा नहा थे । हिन्दुआ का इमी काटि मे रखा गया था । उनके विषय मे मुसलमाना का यह नीति था कि या तो वे इस्लाम अगीकार करें अथवा मृत्यु का पण्डे भामें । यस स्थिति ने मुहम्मद त्रिन धार्मिक का दुविधा मे पन्न किया । ममम्या का व्यावहारिक हल महा था कि यहूतिया और इसाईया का भानि मिथ के हिन्दुआ



जोर बौद्धा का भी आगिर रूप में धार्मिक स्वतंत्रता नहीं जाय। मुहम्मद न यही मांग अपनाया। हिन्दुओं में जजिया दान का बहा गया और उसका बन्द में उन्हें अपने धर्म पर चलने तथा बिना अधिक प्रशसन के अपने धर्म की पूजा का अधिकार दे दिया गया। यही हिन्दुओं और ईसाइयों की भाँति उन्हें भी जिम्मे (रहित लोग) घोषित कर दिया गया। वास्तव में हिन्दुओं के साथ यह रियायत थी जोर इस्लामी विधान के प्रतिबन्ध थी। इसलिए कहा जाता है कि इस्लाम के इतिहास में इससे एक नया अध्याय आरम्भ किया। इस कारण से विविध धर्मों के लिये लिखत है कि अरबों की सिध विजय के समय से मुसलमानों की नीति का एक नया युग शुरू हुआ। मुहम्मद बिन कासिम का सिध के हिन्दुओं का आधिकारिक रूप में धार्मिक स्वतंत्रता दान वास्तव में एक महत्वपूर्ण कार्य था। बाद के भारतीय मुसलमान शासकों ने इसी नीति का अपने शासन का आधारभूत सिद्धान्त बनाया। किन्तु यह नहीं भूलना चाहिए कि मुहम्मद की नीति के पीछे कोई उदारता की भावनाएँ नहीं थी परन्तु परिस्थितियों ने उसे ऐसा करने का वाक्य कर दिया था क्योंकि न तो सब हिन्दुओं का मृत्यु दण्ड ही दिया जा सकता था और न उन सबका मुसलमान बनाना ही सम्भव था। इसके अनिश्चित यह भी स्मरण रखना चाहिए कि उन्हें उन लोगों के बराबर नागरिक अधिकार भी नहीं दिये गये थे जिन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया था। उन्हें जजिया दान पत्ता था जो एक धार्मिक कर था जोर जिसका जय था कि वे नीचे कक्षा के लोग थे। इसके अनिश्चित उन पर और भी अनेक प्रतिबन्ध लगाये गये थे। फिर भी मुहम्मद का हिन्दुओं का सहयोग प्राप्त करने तथा अपनी समस्या का हल निकालने में सफलता मिली।

**राजनीतिक विभाजन तथा उसकी सामाजिक व्यवस्था**

मुहम्मद बिन कासिम के उपयुक्त महत्वपूर्ण नियम से भारत में इस्लामी शासन पद्धति की आधारभूत नीति निश्चित हो गई। इसके बाद उसने शासन सम्बन्धी सामान्य सिद्धान्त निर्धारित किये। विजित प्रांत को उसने कई जिला (इकत) में विभक्त किया और प्रत्येक के ऊपर एक अरब सैनिक जफर नियुक्त किया। स्थानीय मामला के प्रबंध में जिनाधीश का काफी स्वतंत्रता था किन्तु आवश्यकता पत्न पर वे प्रांत के सूबदारों का सैनिक सहायता करते थे। अनुमान लगाया जाता है कि जिन के उप विभाजन हिन्दू पन्थि कारियों की अधीनता में पूर्ववत् वायम रहे हाग। सैनिकों तथा मुसलमान फौजों और विपना का जागीरें दे दी गयी। इस प्रकार समस्त प्रांत में अरबों के अनेक सैनिक उपनिवेश बसे गये। स्थानाय शासन विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों में पूनर्स्थापित किया के ही हाथा में रहा। पुराने सिद्धान्त तथा कानून

पूर्ववत् जारी रहें। अरबा न जा कुछ परिवर्तन किये व राजधानी तथा जिला व नगरा तक हा सीमित रहें।

### राजस्व प्रणाली

राजस्व व्यवस्था में विजताजा न उत्तरेलनाय परिवर्तन नहा किये। राजस्व विधारित तथा वसूल करने के जा नियम दाहिर के समय में प्रचलित थे अरबा न भी उहा का जारी रखा। कबल दो एक नये कर लगाय गये जिनमें जजिया सबसे अधिक महत्वपूर्ण था। भूमि-कर उपज का ३ से ४ तक लिया जाता था। इन दो के अतिरिक्त और भा कइ कर थे। उह वसूल करने का अधिकार सबसे अधिक वाली बोनन वाल ठकदारा का दे दिया जाता था।

### धाय

धाय-व्यवस्था में समुचित न था। न ता यायात्रया का क्रम ही मुसगटित था और न सब जगह एकस नियम ही थे। जिनाधीश अपने अधिकार-क्षेत्र में हान वाल अपराधा का छानबान किया करते थे और मामतगण अपनी जागीरा में मुकत्मा का फसला किया करते थे। सिंध का राजधाना में एक काजी रहता था और अन्य महत्वपूर्ण नगरा में छोटे काजी रहा करते थे जा इस्लाम के नियमा के अनुसार क्षगला का फसला किया करते थे चाहे एक पक्ष में बाइ हिंदू हा क्या न हा। हिंदुआ के लिए दण्ड विधान अत्यंत कठोर था। उगाहरण के लिए चारी के अपराध में उह जीवित जला दिया जाता था। अपने निजी क्षगला का निचटारा हिंदू स्वयं कर दिया करते थे। उनकी पचायतें थी जो विवाह विरासत सामाजिक तथा नतिक मामला में सम्बन्धित क्षगला का फसला करती थी।

### धार्मिक नीति

प्रारम्भ में अरबा न धार्मिक अत्याचार अवश्य किये किन्तु बाद में उहोंने आशिक सहिष्णुता की नीति को अपनाया। हिंदुआ का अपने मन्दिरा और घरों में अपने देवाआ को पूजा करने की स्वतंत्रता थी। किन्तु उहें जजिया कर देना पड़ता था। कुछ आधुनिक विधाना का मत है कि जजिया एक सनिक कर था जा हिंदुआ में सनिक सेवा के बदले में लिया जाता था। मुसलमान उमर इसलिए मुक्त थे कि वे राज्य की सनिक-सेवा करते थे। किन्तु यह मत भ्रमपूर्ण है क्योंकि यह कर सभा हिंदुआ का देना पड़ता था चाहे वे सनिक-सेवा करते हा अथवा न करते हा। निम्नमूलक जजिया एक धार्मिक कर था। गर मुसलमाना का तीन वर्गों में विभक्त किया गया था और प्रत्येक वर्ग के लिए जजिया की अलग दर थी—पहन के लिए ४८ ट्रिहम दमने के लिए २४ ट्रिहम और तीमरे के लिए १२ ट्रिहम।

## साधारण जनता की दुःखशा

जहाँ तब प्रजा के निम्न वर्गों का सम्बन्ध था अरबों का शासन प्रबन्ध दाहिर से अधिक अच्छा न था। जाटा मर जाति के प्रति जायदाद हाना या उसमें कोई परिवर्तन नहा हुआ। इन जातियों के लोग जब सूत्रार का अभिवादन करने जाते थे तो उन्हें अपने गाय कुत्ता न जाना पड़ता था। उन्हें अच्छे वस्त्र पहनने घाड़ पर चढ़ने तथा मिर और पर डबने की जाना न थी। उनके हाथों का दागा जाता था। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से अपमान उन्हें सहने पड़ते थे। हिन्दुओं का प्रत्येक भूखण्डमान यात्री का तान तिन तक भोजन कराना पड़ता था। इसलिए साधारण जनता अरबों के शासन में सन्तुष्ट नहीं रही होगी। फिर भी यह मानना पड़ेगा कि अरबों का शासन प्रबन्ध उन तुर्कों के प्रबन्ध से कहीं अधिक उत्तम था जिन्होंने ११वाँ शताब्दी में इस देश में अपना राज्य कायम किया।

## मुहम्मद बिन कासिम की मृत्यु

उन साधारण सफलताओं के बाद शाह ही यौवनमान में हासिल के विजय का दुःखद अन्त हुआ गया (७१५ अथवा ७१६ ई.)। मुहम्मद की मृत्यु के दो भिन्न कारण बतलाये जाते हैं। पहला एक रामाटिक कहानी में प्रतीत होता है। कहा जाता है कि दाहिर की पुत्रियाँ मूय देवी और परमान देवी जब खलीफा वाहिद के सम्मुख उपस्थित की गयीं तो उन्होंने उससे कहा कि मुहम्मद बिन कासिम ने आपके पास भोजन से पहले ही हम भ्रष्ट कर दिया है। इस पर खलीफा का बहुत क्रोध जाया। उसने जाना दा कि अपराधी को जीवित ही बचने की छान में मी कर मर सामने उपस्थित किया जाय। मुहम्मद ने शीघ्र ही इस जाना का पालन किया और तीन दिन के अन्दर उसके प्राण पखेरू उड़ गये। जब पिटारी खलीफा के सामने लायी गयी तो दाहिर की पुत्रियाँ ने यह समझकर कि हमने अपने पिता की मृत्यु का वज्राल ल लिया है सन्तोष का सास ली और खलीफा से कहा कि मुहम्मद निर्दोष था। यह सुनकर वाहिद आगबबूला हो गया और जाना दा कि उन राजकुमारियाँ का घाड़ा की पूछ से बाधकर तब तक घसीटा जाय तब तक कि ये मर न जाय। आधुनिक अनुसंधानों ने सिद्ध कर दिया है कि यह कहानी बाद के अरबों की मनगढ़त है। दूसरे कथन के अनुसार मुहम्मद की मृत्यु के राजनीतिक कारण थे। यही अधिक विश्वसनीय प्रतीत होता है। ७१५ ई. में खलीफा वाहिद की मृत्यु हो गया। उसका भाई सुनमान गद्दी पर बैठे। नया खलीफा हज्जाज का कट्टर शत्रु था। उसने उमर तथा उमर के परिवार का कठोर दण्ड दिया। मुहम्मद हज्जाज का पचरा भाई और मामा था। उस भाई से बरखास्त कर लिया गया

जीर बनी बनाकर ममापाटामिया भेज दिया गया। कहा जाता है कि वही यातनाएँ देकर उमराव बंद किया गया।

अरबों की सिंध में अंतिम जयपलता के कारण

सिंध और मुल्तान के प्रांत लगभग १५० वर्षों तक खलीफा के साम्राज्य के अंग रहे उमक बाद के स्वतंत्र हो गए। इस युग में ही अरबा के शासन का पतन आरम्भ हो गया था। शासन-व्यवस्था वसा ही अयोग्य और दुबल बनी रही जसी दाहिरे के समय में था। जब कभी बाह्य शक्तिशाली सूबदार आ जाता था तो कुछ समय के लिए शासन में जान आ जाती था और कभी-कभी पदामा हिंदू राजा पर एक-दो आक्रमण भी कर लिए जाते थे। उसके उपरांत फिर वही क्षिप्रता और निष्क्रियता आ जाती थी। ७१७ ई में उमर द्वितीय खलीफा हुआ। उसके समय में सिंध में इस्लाम का धुआधार प्रचार किया गया। जनक हिंदू सामन्तों का बतपूर्वक मुसलमान बनाया गया। दाहिरे के पुत्र जयसिंह को भी जो ब्राह्मणाचार्य का शासक था अपने पूर्वजा का धर्म छोड़कर इस्लाम अंगिकार करने पर बाध्य होना पड़ा। सूबदार जुनैद पराक्रमी व्यक्ति था। उसने बहुत-से आक्रमण किए। किंतु उसका उद्देश्य कबल सूटमार करना था। कानांतर में अरबा का प्रभाव क्षीण मान लगे और अपनी रक्षा के लिए उन्हें मुदूत बिन बनान पड़े। इनमें जयमहफूजा और ममूरा जैविक प्रसिद्ध थे जो ब्राह्मणाचार्य के उत्तर-पूरव में कुछ मील दूर पर स्थित थे। ७५० ई में दमिश्क में विद्रोह हुआ। उमय्यद-वंश का हटा दिया गया और आबामी न बगदाद में नयी खिलाफत की नींव डाली। इन दो वंशों के पारस्परिक द्वन्द्व का सिंध पर बुरा प्रभाव पड़ा। आबामी खलीफाओं ने सिंध में अपने-अपने भेजे और उमय्यद सूबदारों का वहाँ से मार भगाया। परिणाम यह हुआ कि दीर्घकाल तक एक तीव्र मधुप चंचलता रहा जिसमें अरबा की गिरती हुई प्रतिष्ठा का बुरा धक्का पहुँचाया। इसके उपरान्त सिंध के सूबदार और सामन्त लग-भग बद्ध स्वतंत्र शासक हो गए। ८७१ ई में सिंध में खिलाफत से सम्बन्ध तोड़कर अपने-अपने स्वतंत्र घोषित कर लिया यद्यपि नाम के लिए जब भी खलीफा का प्रभुत्व बना रहा। मुल्तान और ममूरा में दो स्थानीय सामन्तों ने स्वतंत्र राजा की स्थापना कर ली। मुल्तान में अरारत तक सिंध की घाटी का उपरी भाग सम्मिलित था और ममूरा में स्वयं सिंध। इन वंशों के शासकों ने सिंधियों को भी शासन-व्यवस्था में स्थान दिया और हिन्दुओं तथा बौद्धों के प्रति धार्मिक मरिच्छता की नीति अपनाया।

स्वर्गीय सनपून का मत है कि अरबा का सिंध विजय इस्लाम तथा भारत के इतिहास में एक साधारण घटना था। यह एक ऐसी विजय थी जिसका कोई गहरा परिणाम नहीं हुआ। भारतीय इतिहास के अनेक सरावों ने इस

मत का सही मान लिया है। उनका मतानुसार सिंध में अरबों का इतिहास बताता है कि उनका जग प्रयास का कार्य महत्त्वपूर्ण परिणाम नया हुआ। यद्यपि सिंध का प्रांत तुर्कों का विजय तब अरबों के हाथ में बना रहा किन्तु वहाँ से अब इस प्रांत का जानने का सगठित प्रयत्न न कर सकें समस्त भारत का ता जानने का प्रश्न नया नया उठता था। यहाँ पर हम यह नहीं भूलना चाहिए कि सत्तरवीं शताब्दी में अरबों का उज्ज्वल विजय प्राप्त हुई थी। प्रारम्भ में तीसरी शताब्दी में उन्हें सफलता मिली और ऐसा प्रतीत होता था कि जाग भी उनका प्रगति जारी रहगी किन्तु वह सिंध तथा मुल्तान का सीमाआस आग न बन सका। जहाँ तहाँ एक-दूसरे के धाक उठाने का प्रयत्न किया। इसी कारण इतिहासकारों ने सिंध विजय का एक साधारण घटना बतनाया है। जहाँ तक हमारा दशवासिया का सम्बन्ध था उठाने इस घटना से कोई सबक नहीं सीखा। सिंध से अरबों का भारत भ्रमण के लिए सगठित प्रयत्न करने की उठाने कार्य आवश्यकता ही नहीं समझी और न भावा आक्रमणों में अपनी उत्तर पश्चिमी सीमाआस की रक्षा करने के लिए ही उठाने मिनकर काय करने का प्रयत्न किया। तीन शताब्दियों बाद जब तुर्कों ने हमारे देश का सीमाआस का उत्खनन किया उस समय भी इस देश के नाग बाह्य जगत की घटनाओं के प्रति उत्तन ही उदासीन और असावधान थे जितने कि जाटवा शताब्दी में अरबों का आक्रमण के समय। इसीलिए कहा जाता है कि अरबों की सिंध विजय का हमारे देश के इतिहास में विशेष महत्त्व नहीं है। अरब सत्ता का जड़ इस देश में स्थायी रूप से न जम सका इसका इतिहासकारों ने अनेक कारण बतनाय है। उनका हमें दावों में विभक्त कर सकते हैं आन्तरिक जीव बाह्य। पहला कारण में सबसे महत्त्वपूर्ण खलीफा के साम्राज्य की आन्तरिक दुबलता थी। जसा कि हम पहले निरख आये हैं ७५० में अमिषक में एक विद्रोह हुआ जिसके परिणामस्वरूप उमय्यद वंश का पतन हो गया और अरबों का हाथ में साम्राज्य का बागडार आ गया। इस विद्रोह ने खलीफत का प्रतिष्ठा को बहुत ठस पहुँचाया। दाना वंश के पारस्परिक द्वन्द्व का प्रभाव सिंध पर भी पड़ा। इस विद्रोह के परिणामस्वरूप बगदाद में इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण एक और घाति हुई जिसने अरबों के चरित्र तथा जीवन प्रणाली का ही बर्तन किया। दूसरे खलीफा हाद अल रसाद के शासनकाल में अरबों को अपना प्राचीन शक्ति खो बड़े। इस्लाम में जो मौनिक और जावनप्रत तत्त्व थे उनसे उनका सम्पर्क टूट गया और वे विनासप्रिय हो गए। कुरान के उपदेश की शक्ति और अरब-जावन का साम्राज्य का छाँवर वे नीरस दार्शनिक चिन्तन में अधिक आनन्द न ले लगे। इसका नान्तर में उनका चरित्र का पतन हो

गया। न ता व महान मनिक बायो व दाय्य र् और न शामन व क्षत्र म हा ाहाने मौनिकता और माहम का परिचय लिया। तीसर मुम्निम जगत म राष्ट्रीयता की तरह दौन गयी जिमन इस्लामा मिलनन का एकता का उद्यम भिन्न वर लिया और उसम अनक गुट उठ वर हुए। धार्मिक क्षत्र म भी फूट उत्पन्न हो गयी। अनक विद्रोही सम्प्रदाया का उदय हुआ। चौथ धार्मिक उमाह व कारण अरब नाग मिथ का स्तनी मरुता मे जीतन म मफन हुए थ किन्तु विजय व उपगान जब इम प्रांत म उनकी स्थिति दृष्टा गया तो उनका धार्मिक जाण ठण्ण पर गया और एकता भा नष्ट ा गयी। मिनकर तथा अनुशामन म स्वर काम करन व थ याग्य न रह। पाँचवें महत्वाकांक्षा नुर्जे ने वनपूर्वक इस्लामा साम्राज्य की शक्ति हथिया ती और खनीफा का अपन हाथ की कठपुतली बना लिया। उसम भा अरवा व प्रभत्व को वृत्त घससा लगा। उन परिस्थितिया म अरब सामक मिथ की ओर अधिक ध्यान न ा सक। छठे इम आतङ्गिक उद्यन-पुथर व कारण जस्य वार मिथ म मता न भेज सक। उम कारण न ता मिथ पर हा व स्थायी रूप म अभिकार रग सब और न भारत व जय प्राता का जीवन का ही प्रयत्न पर सक।

बाह्य कारण म शक्तिशाली राजपूत राया का उत्थन करना आवश्यक है विशपकर उनका जा उत्तर-पूरव म स्थित थ। उन राया पर शासन करने वाल राजपूत-वंश अरवा मे वही अधिक शक्तिशाली थ और विन्शी आक्रमण कारिया व विरुद्ध एक एर इच भूमि व निण मघप करन का मसद्द थ। दूसर समस्त भारत म सिद्ध पुरोहित का एक शक्तिशाली वग था जिसका जनता पर बहूत प्रभाव था और जा विन्शी समृति तथा जीवन प्रणाना का कट्टर विरोधी था। इम पुरोहित वग व प्रभाव व कारण साधारण सिद्ध अपन का तथा अपनी समृति का अग्वा की समृति से वहा अधिक श्रुष्ठ समजन थ। उनकी दृष्टि म अरब नाग मरुत्त तथा ववर थ। तीसर आज का भीति उम युग म भी मिथ सम्भ्यत था और उमक आधिप साधन स्तन उपयाप्त थे रि शामन का यय चनाना भी कट्टिन था। इमनिण आधिक दृष्टि म वर एक अभावग्रस्त प्रांत था और खनाफा का उसम कोद आय ननी होनी थी। मिथ व जग्वा का अपन साधना पर नी निभर रना पन्ता था। पनी कारण था कि अपन समृद्धशाली पत्नीमिया व विरुद्ध व कुछ न कर सकते थ। उमक अतिरिक्त मिथ देश व एक महत्त्वहीन वान म स्थित है वहाँ स शप भाग्य म प्रवेश करना कट्टिन है। इमनिण वहाँ मे चनकर और उम आधार पनाकर ाप भारत का जीतना किमा भी विन्शा शक्ति व निण सम्भव नरी था।

## अरब विजय के प्रभाव

राजनैतिक दृष्टि से अरबों की मिथ विजय इस्लाम तथा भारत के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी। उसने आगा की भाषा बना परम्परागत गति विवाजा जीव रहन मरन पर भी कोर स्थायी प्रभाव नहीं डाला। वास्तव में अरबों ने अरबों को अथवा शासन मन्वरी या मास्त्रिन मन्दाआ के रूप में कोर लभ चिह्न बना जोर जिनका हम पर प्रभाव पड सकता अथवा जो उनके शासन की स्मृतिस्वरूप विद्यमान रहन। त्रिनु एम तस्वीर का एक दूसरा पहलू भी है कि यह ममयना गतत हागा कि अरबों की विजय ने हमारे शैशवासियों पर प्रभाव डाला ही नह। उसने हमारे शैश म इस्लाम का बीज बोया। प्रात की अत्यधिक जनता का अपना पतृक धम छाकर इस्लाम अगीकार करना पडा। इस प्रकार नय धम इस्लाम की जो सिद्धांतों तथा जीवन प्रणाली की दृष्टि से विदगी था हमारे शैश म स्थायी रूप से जन्म जम गया। वात में उत्तर पश्चिम से जा आक्रमणकारी जाय उहाने एम धम का सनायता जीव प्रोत्साहन दिया तथा भारतीय मुसलमानों की महानुभूति का अपने स्वार्थों को पूरा करने के लिए अनुचित लाभ उठाया। भाग्य निर्णायक घटनाओं का यह पन्ना ताता एसा लगता कि जिसके परिणाम स्वरूप हमारे देश का विभाजन हुआ जीव १९४७ ई. में पाकिस्तान की स्थापना हा गयी।

भारतीय धम एव सभृति का अरबों पर बहुत प्रभाव पडा। हिंदुओं की सभ्यता आशुनिक विचारों आदर्शों तथा मानसिक प्रतिभा ने उह स्तम्भित कर दिया। उन्होंने हम से बहुत कुछ सीखा विशयकर शासन बना ज्यातिप संगीत चित्रकला चिकित्सा तथा स्थापत्य<sup>१३</sup> के क्षेत्र में। उन्होंने हिंदू पण्डितों की सनायता से सभृति के कुछ ग्रंथों का अरबी में अनुवाद कराया जिनमें ब्रह्मसुत्र के ब्रह्म सिद्धांत तथा गण स्वार्थों अधिक प्रसिद्ध थे। अरबों ने भारतीय शिल्पियों और चित्रकारों का सम्मिष्ट बनाने तथा सजाने के लिए नौकर रखा। एम प्रकार हमारे देश के सम्पत्त में जान से अरब सभ्यता की वन्त उत्पत्ति हु। अरबों ने भारतीय ज्ञान का यूगप में पहूँचाया विशयकर एगन ज्यातिप तथा जका का<sup>१४</sup> जावरी जीव नवी शताब्दी में यूरोप में जा ज्ञान की ज्ञानि फना उसका मुख्य कारण अरबों का भारत में सम्पत्त था।

<sup>१३</sup> अरब बहना हुन लिपिया अनुवादन साचउ पृ १

<sup>१४</sup> हावना हुन आयन एन एन लिपिया पृ २५६

BOOKS FOR FURTHER READING

- 1 DAUD POTA Chachnamah (*Edited*)
- 2 ELLIOT & DOWSON History of India as told by its own  
Historians Vol I
- 3 MALLAT History of Sindh
- 4 NADVI SULAIMAN Arabs and India (*Hindi & Urdu Eds*)
- 5 AFI AMIR History of the Saracens
- 6 MAJUMDAR R C Arab Invasion of India
- 7 WOOLFLEY H Cambridge History of India Vol III



प्रतिरोध का सामना करना पड़ा और युद्ध में अंत अरब गति सुरी तर्क घायन हुए फिर भी सीस्तान के गवर्नर को हराकर वह युद्ध ता ब गया । परन्तु वहाँ से वह सदेड लिया गया और उम उम सब का ही गा नेना पना जा उमने जब तक प्राप्त किया था ।<sup>७</sup> ६५३ ई म अन जमीर न अदुर रहमान को सीस्तान का गवर्नर नियुक्त किया जा अभी जीतना धारी था । इस अफसर न घोर युद्ध करने के बाद सीस्तान के एक भाग पर अधिकार कर लिया और यहाँ के गवर्नर सत्रप को बीम तास त्रिहम नेन क तिल विवश किया । यह जूर के उम मतिर म गया जिमम मोने की मूर्ति थी और जिसरी आँवा म ताल नगे हुए थे । उसने मूर्ति का एक हाथ काटकर जान निवान निय और सत्रप स कहा मोना और रत्न रगो में ही केवल यह लिपिना चाहता था कि मूर्ति कुछ भी हानि नाभ नही पहुँचा सकती ।<sup>८</sup> इस सफलता के बाद अदुर रहमान न हनमत् पर बसे हुए बुस्त पर अपना अधिकार जमाया और फिर वहाँ से काबुल तक पहुँच गया । परन्तु उसक उत्तराधिकारी उमर का हिन्दुआ ने सदेड लिया और जारग पर पुन अपना अधिकार जमा लिया । मुआविया के राज्यकाल (६६१-६८० ई) म अदुर रहमान पुन सीस्तान का गवर्नर नियुक्त किया गया । उसन काबुल के राजा को पराजित कर नगर पर अधिकार कर लिया और काबुल के युस्त गया ररगज को न लिया । किन्तु उसक वापस जान ही काबुल तथा काबुल के राजाओ न अरबो को सदेड लिया और नये अरब गवर्नर को सधि करनी पनी जिसके अनुसार कुछ धन देकर उससे यह प्रतिज्ञा कराया गयी कि वह भविष्य म भारतीय सीमा पर कभी भी जाक्रमण नही करेगा । ६८३ ई म काबुल क अधिकारियो न समझीते की शर्तों का तात्पर जनु उबदा अन जियात् को जन म डान लिया । सीस्तान के गवर्नर याजिद अन जियात् न बन्ना नेन का प्रयत्न किया किन्तु उस जुनजाह की नडाइ म हराकर कत्त कर लिया गया और उसकी सना के बहुत स वीर कत्त कर लिय गय और बाकी सना सत्ने दी गयी । परिणाम यह हुआ कि सीस्तान अरबा क हाथ स फिर निकल गया और उह अनू उबदा का मुक्ति के लिए हिन्दुआ का पाँच तास त्रिहम दन पन । इतना हात हुए भी अरबा का विजयोत्साह किमी प्रकार भी नही घटा और कुछ दिन बाद ६८३ ई म ही उहान सीस्तान पर फिर अपन पर जमा निय । काबुल के हिन्दू राजा न अरबा को आग बदन म राकन के तिल जी जान से मुरावना

<sup>७</sup> बिनाटुरी सिताच पुतूह अन युनतान (हिंदी तथा मुरगोटन का जयजी अनुवा) जित ना पृ० १४१-१४

<sup>८</sup> वही पृ १४४

निया किंतु वह लड़ाई में मारा गया। फिर भी लड़ाई जारी रही क्योंकि उसका पुत्र ने लड़ाई को बन्द करना स्वीकार नहीं किया। ६६२ ई में सीस्तान का नया गवर्नर अट्टना देश के भीतरी भाग में प्रवेश भी कर गया परन्तु हिन्दुओं ने इसका मुकाबला किया और उस यह निश्चित प्रतिज्ञा करनी पड़ी कि जब तक वह सीस्तान का गवर्नर है तब तक रतबिन्द के देश के किसी भी भाग पर न तो वह हमला करेगा न जलायेगा और न उजाड़गा। यतीफा अट्टन मन्दि (६८१ ७०५ ई) ने इस मन्दि को नया माना और अट्टना को उसका पद में पृथक् कर दिया।<sup>६</sup>

इराक के गवर्नर अब हज्जाज के राज्यमान में (६८६ ७१२ ई) उबट्टना का सीस्तान भजा गया। वहाँ से वह काबुल के पास के पहाड़ी भाग का आग बन्ता गया किन्तु वहाँ के हिन्दुओं ने उसके भाग का गंदा किया और उस अपने तान पुत्रा को काबुल के राजा के पास बंधक के रूप में लोकर पीछे हटना पड़ा। इस अपमानजनक सन्धि के कारण अरबों में आन्दोलन हुआ और एक दल के सनापति सराह ने पुन युद्ध आरम्भ कर दिया। किन्तु उस युगी महान् गवर्नर बदन कर दिया गया और उसकी सना का पुस्त की ओर पीछे हटना पड़ा जिसमें बहुत से मन्दि बूख प्यास में मर गए। इस शौर्य में उबट्टना मर गया। इस अपमान का बदला देने के लिए अट्टना ने एक शक्तिशाली सेना एकत्रित की और इस अस्त्र शस्त्र से मुसलमानों को बर्बाद कर दिया और कुफा नगर पर विषय मुहक-कर लगाए गए। अट्टन रत्मान के नन्तर में ६६६ ई में इस काबुल के राजा का जीतने के लिए भेजा गया। किन्तु अट्टन रत्मान भी हिंदू राज्य की नहीं जाते मका और सूम्बार हज्जाज का काबुल के राजा के साथ मन्दि करना पड़ा जिसमें अनुमार हज्जाज ने ६ नाय लिहम कर के रूप में लना स्वीकार कर ७ वर्ष तक (एक दूसरे नायक के अनुमार ६ वर्ष तक) काबुल पर आक्रमण नहीं करने का वायदा किया और ७१० ई में काबुल के राजा का ६ नाय लिहम मिक्का के रूप में देने के लिए तैयार के यत्न से भी विवश किया। परन्तु ७१४ ई में हज्जाज की मृत्यु हो जाने पर काबुल के राजा ने बदनना अम्बीकार कर दिया और यतीफा मुत्मान के शासनकाल (७१५ ७१७ ई) में किसी प्रकार का भी कर नहीं दिया। अत्रामिन् राजघराने ने जिसने उमय्या बंध में ७४६ ई में यतीफा अट्टन मन्दि की यतीफाओं के पूर्व गोरख को प्राप्त करने का पुन प्रयत्न किया। यतीफा अट्टन मन्दि (७१४ ७३५ ई) में इस बंध का दूसरा शासन था। उसमें बाधान का जानकर काबुल से कर वसूल करने का भरमक प्रयत्न

रिया। यद्यपि अरबो न अर रम्यज पर अधिकार कर दिया किन्तु वे मीमान पर अपना पूण अधिकार न स्थापित कर सकें।<sup>१</sup> वे काबुल तथा जाबुल को भी जीतने का बराबर प्रयत्न करने रहे किन्तु इन प्रयत्नो म उन् विजय मफनता न मिली। इस प्रकार अफगानिस्तान के हिंदू शक्तिशाली विनाफत सौ मो बीस वर्ष तक चोहा त्त रहे जोर विजय विजया अरबो क बार बार आक्रमण करने पर भी उंहाने अपनी स्वतंत्रता का पूरी तरह प्राप्त कर दिया।

### अफगानिस्तान पर तुर्कों की विजय

म यज्ञान की सबसे बड़ी शक्ति जिस काम के करने म असमर्थ रही उने एक छान म राय के शासक त कर दियाया। यन् था याकूब इन नायक। याकूब न मीस्तान म तुर्को के रूप म अपना जीवन आरम्भ किया था और वन् बन् बन्ने पमिया तथा उसके आमपाम के उन राया म सफर-वश का मस्थापक हो गया जो काबुल तथा जाबुल नामक हिंदू राया के पश्चिम तथा पश्चिम पश्चिम म थे। उसकी इस सफलता के दो कारण थे—एक ता काबुल के प्रशासनाधिकारिया म मनभेत् और दूसरे काबुल के प्रति याकूब का विश्वासघात। ८७० ई म लगतोरमान नामक क्षत्रिय काबुल का अंतिम शासक हुआ। इस उल्य उपनाम कलन् नामक ब्राह्मण मंत्री ने गद्दी स उतार दिया और स्वयं गद्दी पर बठ गया। यद्यपि राजतरगिणी के उमक कलहन न कलन् की योग्यता तथा शक्ति की बहुत प्रशंसा की है किन्तु इस गद्दी ह्प ह्प एक वर्ष भी न हुआ था कि याकूब इन नायक ने इस हराकर काबुल क बाहर निरान दिया। जाबुल प्रदेश क आक्रमण वान म याकूब न हिंदू राजा के पाम मन्देश भेजा कि वह हिंदू राजा के सामन आत्मममपण करने का तयार है और उसकी इच्छा है कि उम सना क साथ स्वामिभक्ति प्रकट करने का अवसर दिया जाय परन्तु यदि सना को आत्मममपण करने का अवसर न दिया गया तो वन् छिन्नभिन्न होकर दाना क त्रिण घातक मिद्ध हागी। याकूब क सनिका न अपन घारा के पट के नीचे भान छिपा र्म थे और व स्वयं अपन वपन्ता क नीचे कबच पन्त हुए थे। ईश्वर की कृपा म हिंदू राजा की मना भाना को नगी दख पायी। याकूब न कपटपूण स्वामिभक्ति दियात हुए मिर युकाया और भाना निकानकर रमान (हिंदू राजा) की पीठ म भाव दिया जिसम राजा तुर्क नी मर गया। उसक गिरत ही याकूब क सनिक शत्रुता पर टूट पन् जोर उ्चान घमन्तिया क मिरा का तनवार म वान

<sup>१</sup> विनाटुरी जिन्ता पृ० १३८ १४४ अनियन्त एण्ड डाउमन्त जिन्ता दा (द्वितीय सम्करण) पृ ४ १४१८ परिनिष्ट ना ए—ए हिंदू निम्न आव कावन्

काटकर खून की नली उहा दी। विधर्मी राजा व मिर का भान का नाक पर दस्तकर भाग निकल और परिणामस्वरूप बना खतपात हुआ। याखूब का यह विजय एम घणित छल-कपट और विश्वासघात से प्राप्त हुआ जसा पहलुन कभी नही किया गया था।<sup>11</sup> इस भीषण विनाश के बाद लख्य के पर बाबुन से उग्र गय। उसने बाबुन का छाडकर उम्भण का अपना गजधानी बनाया। इसका वर्तमान नाम उण्ड है और जो सिन्धु नदी के उत्तरी तट पर बसा हुआ है। यह स्थान रावतफिन्नी जिन में अटल से १५ मील उत्तर में है। यह घटना<sup>12</sup> ८७० ई (२५६ खिजरी सवन) की है जिमके बाद अफगानिस्तान में हिंदू शासन समाप्त हो गया।<sup>13</sup>

### BOOKS FOR FURTHER READING

- 1 THOMAS WATTEBS On Yuan Chwang's Travels in India Vols I & II
- 2 AL BERUNI Kitab ul Hind translated into English by Chau Vols I & II
- 3 BEAL S Life of Hsuen Tsang
- 4 PHILIP K. HIRTI The Arabs
- 5 BILADURI Kitab Futuh ul Buldan
- 6 ELLIOT & DOWSON History of India etc Vol II
- 7 RAY H C Dynastic History of North in India Vol I

<sup>11</sup> इतिहास एण्ड डाउसन में नूस्दान मुहम्मद उफा का जमा उल हिवायत जिल्द नौ (द्वितीय संस्करण) पृ० १७६-१७७

<sup>12</sup> इतिहास एण्ड डाउसन जिल्द नौ (द्वितीय संस्करण) पृ० ४१६ एम ए बी गिब शून ए अरब कैंवकेस्ट इन सेंट्रल एशिया पृ० ११

<sup>13</sup> एच सा रे पहलु भारतनाथ दनिहामकार द्वारा जिहानि व्यवस्थित रूप से अफगानिस्तान के हिंदू राज्य का वर्णन किया है। (दक्षिण उत्तरा पुस्तक टायनरिन्क हिस्ट्री ऑफ इण्डिया जिल्द एक अध्याय नौ) किन्तु उनकी पुस्तक के प्रकाशन के बाद एनिहामिक राज्य में नाथ प्रगति हुई है अतः इस विषय का अध्ययन नये ढंग में करना चाहिए।

## मध्य युग के आरम्भ में हिन्दू राज्यों के पतन के कारण

भारत के उत्तर पश्चिमी हिन्दू राज्यों में मध्य एशिया के शक्तिशाली अरबों तथा तुर्कों का किस प्रकार सामना किया और उनके पतन के क्या कारण थे इन सब ऐतिहासिक तथ्यों का अध्ययन समुचित रीति से नहीं किया गया है। किसी भी आधुनिक इतिहासकार ने मनन और चिन्तन के आधार पर तथ्यों का विश्लेषण करते हुए इतिहास का ऐसा वैज्ञानिक अध्ययन नहीं किया है जिससे उन कारणों का ठीक पता लग जाय जिनसे उत्तर पश्चिम के मुसलमानों के द्वारा हमारी अन्तिम पराजय हुई और हमारी स्वतंत्रता नष्ट हो गयी। हम इस्लाम धर्मावलम्बियों के आक्रमण के ज्वार के अन्त समय तक रोक्ने में असमर्थ रहें थे अतः देखना न यह अनुमान लगा लिया है कि हमारा राजनीतिक सामाजिक तथा सैनिक संगठन इतना निष्कर्षमय होगा कि विदेशियों से सघर्ष में आने ही वह छिन्नभिन्न हो गया। आधुनिक यूरोपीय लक्षकों ने तो अपने मस्तिष्क की सारी शक्ति लगाकर यह सिद्धान्त बना लिया है कि हिन्दू जाति युद्ध कौशल में मध्य एशिया के अरबों तथा तुर्कों की अपेक्षा कहीं अधिक दृढ़ थी और अब भी है और उनकी सम्मति में मध्य-युग के हिन्दू राज्यों के पतन का यही मुख्य कारण था। उदाहरण के लिए तनपूर ने दिखाया है आक्रमणकारियों में संगठन तथा एकता थी और हिन्दुओं में फूट थी। आक्रमणकारी उत्तर के रहने वाले थे और हिन्दू दक्षिण के। आक्रमणकारों द्वारा बहादुर जाति के और अच्छी जलवायु के निवासी थे उनमें इस्लाम धर्म का ज्ञान था और धन एवं नूतनता का आनन्द था। यही हिन्दू तथा आक्रमणकारियों में भेद था।<sup>१</sup> एक अन्य मायता प्राप्त इतिहासकार विसेंट स्मिथ ने लिखा है कि आक्रमणकारी अच्छे यादों के बवाकि वे उत्तर के शीत प्रदान देश से आये थे मासाहारा थे तथा युद्ध-कला में दक्ष थे।<sup>२</sup> यह सब मत मध्य

<sup>१</sup> स्टोनर लनपूर वृत्त मध्यकालीन भारत

<sup>२</sup> था ए स्मिथ वृत्त द आक्सफोर्ड हिस्ट्री ऑफ इण्डिया

युग क पक्षपातपूर्ण मुसलमान इतिहासकारा के कथन पर आधारित है जिन्हान अपन महर्षिमिया का वीरता का वणन वन्त बना चढाकर किया है और अपन विधर्मिया का अयोग्य लिखाया है। उहान मुहम्मद गजनवी और मुहम्मद गारी क समय म हान बाल हिन्दुआ क पतन का ता अत्यन्त महत्व दिया है किन्तु उसक पहलू मिथ, अफगानिस्तान तथा पंजाब क हिन्दुआ न सात तान सौ बष तक जा मुकाबला किया उसका त्रिनकुन उपक्षा कर दी ह। परन्तु यह न भूत जाना चाहिए कि हिंदू तीन सौ पचास बष तक बार बार नय-नय तथा शक्तिमान शत्रुआ क साथ सघष करत रह ब अत एतन नम्ब सघष क बाट उनका नानिक तथा नानिक पतन हाना स्वाभाविक ही था। उपयुक्त मुरावीम कथन का थायापन ता हम बान स हा भलाभाति प्रतात हा जाना है कि जिन अरबा न सबप्रथम भारत क एक प्रांत मिथ का अपन अधान कर लिया था व एशिया, अफ्रीका तथा यूरोप क उन अनक दशा क भी विजता म जिनम मिस्र, उत्तर अफ्रीका पुनगान स्पन तथा फ्रांस का दक्षिण आधा भाग शामिल था जा अरबियर क उत्तर म शात कटिबंध पर स्थित ह और जहाँ क निवासा भी अरबा क समान हा मास अक्षी और युद्ध-कला म कुशल ह। ध्यान दन की बान यह भी है कि वन्हा अरबों न मध्य एशिया क मंगल उद्भव तथा तुर्क जसी बनी बना सूहवार जातिया का पूणतया जीत लिया था जिनक बगजवाँ तथा तमूर इत्यादि पूवज मन्तन सनापति थे जा सम्पूण एशिया म सबश्रेष्ठ यादा माने जाता था और जा युद्ध-वीरान धुडसवारी तथा सूहवारपन म अरबा स भी बनी-बडा था। लेकिन बाट म इहा पट दानित तुर्कों न इस्लाम धम अपनाकर अफगानिस्तान म काबुल तथा जाबुल एव पंजाब क उन हिंदू राज्या का मफनतापूवक जीत लिया था जिन्ह अरब भी नहा जीत सब ब इही तुर्कों की आठामान तुर्क नाम की शाखा न पन्द्रहवा शताब्दी म पूरबी रोमन साम्राज्य, उसका राजधाना कन्स्तान्टिनिया तथा पूरबी यूरोप क तमाम बाल्वन प्रायन्पीपा का जात लिया तथा आम्दिपा की राजधाना बियना तथा का आनकित कर लिया, उनका दा मौ बष म भा अधिक समय तक अग्नि-पूरबी यूरोप पर प्रभुत्व रहा और तीन मौ बष तक यूरोपाय जातिया क पूव प्रयत्न करने पर भा व यूरोप म नहा लिबात जा सक। परन्तु सालवी आठवी शताब्दी क उन विश्व विजताजा की मन्तान आज पुन छाने स इमरादत क मुट्टा भर महर्षिया की न्या पर निर्भर हा गयी है यद्यपि इमरादत उहा लाग म घिरा हुआ ह। जिन्हान पगम्बर मुहम्मद क सन्देश का तान महाद्वीप म पहुँचाया था। इनी भाति भारतवष म भा ना नाटे मराठ शाहजहाँ और जौरंगजब क समय म (मत्रहवा शताब्दी म) उत्तर भारत म कुछ समझ जान रह क ही बाट म गत्रलि लम्ब-नदग मुगला और सूहवार

पठाना क लिए एस भयानक बन गय कि जठारहवीं जीर उग्रीसवा जनाणा क गुनामजती मुतजा हुसन जस मुस्लिम इतिहासकारा का न कंत्रल उनक साहस की प्रशंसा हा करनी पची अपितु यह कहना पडा कि दस मराठे सनिक बास स भी अधिक हूष्ट पुष्ट पठाना क लिए बाफा ह । इसा प्रकार क अनक उगाहरण लिय जा सकन है जिनस यह स्पष्ट हो जाता है कि याद्वापन न ता शरीर की नम्नाइ चौडाइ पर ही निभर हाता है जीर न किसी वश विशप की सत्तान हान पर ही । वास्तव म भारतीय सनिक ता युग युगांतर स ही बना बीर रहा है प्रथम तथा द्वितीय विश्व वापी युद्ध म उसने एशिया अफ्रीका तथा यूरोप क अनक भागा म युद्ध किया है और कवन गौरव ही प्राप्त नही किया अपितु यूरोपीय सेनापतिया तथा प्रवक्ताआ को उसकी बीरता की भी प्रशंसा करनी पडी । जत यह स्पष्ट है कि राष्ट्र हित क लिए युद्ध करन वान उसक मय कासान पूवज भा किमी प्रकार स याग्यता म कम नहा रह हागे ।

दूसरा बात यह ह कि यन्त्रि विश्व इतिहास क समकालीन लखका क कथन पर दृष्टिपात किया जाय ता जात हागा कि विश्व का किसी भी जाति न अरब तथा तुर्कों क आक्रमण का इतना सम्बा दृढ जीर सफन मुकाबला नहा किया जितना म य युग के हिंदुआ न । एशिया अफ्रीका तथा यूरोप के जनक दशा न ता अरबा क आक्रमण के जाग कुठ वपों म ही घुटने टेक दिय थ किन्तु सिध ने ता पिचहत्तर वष बाद आत्मसमपण किया हिंदू अफगानिस्तान दा सौ बीस वष तक लटता रहा और पजाव एक सौ ठप्पन वष तक मुकाबला करता रहा । उगाहरण क लिए अरबा न सवप्रथम सारिया पर आक्रमण किया एक वष म (६३५-६३६ ई) ही इसना पतन हा गया इसका राजधाना दमिश्क क आत्मसमपण करत ही दूसर नगरा न भी तुरत ही विजता क सामन अपना सर खुदा लिया <sup>३</sup> इराक का पतन बिना युद्ध के <sup>४</sup> ही ६३७ ई म हा गया ६७ ई क कसिया क प्रमिद्ध युद्ध म विजय पाने के पांच वष म हा अरबा न सम्पूण फारस क विशात साम्राज्य का अपन राय म सम्मिलित कर लिया अथान फारस का पतन कवन दस साल <sup>५</sup> म ही हा गया जीर ६४३ ई म अरब सनिक भारत की सामा तक पहुँच गय । <sup>६</sup> उहान तूफानी आक्रमण कर जाठ वष क भीतर (६४२-६५० ई) मध्य एशिया का जीत लिया जा खूहवार तुक तुकमान उज्जवक तथा मगाता का निवास-स्थान था । अरबा न

३ फिनिप क टिप्पण कृत द अरस पृ ४६

४ वहा

५ वहा पृ ५

६ वहा

६३८ से ७०६ ई के भीतर उत्तरी अफ्रीका के सारे देशों का जानकर उन पर अधिकार जमा लिया। प्राचीन मिस्र का भी वही हान हुआ अर्थात् पहलू मिस्र सना का हराया फिर मिस्री नगरों का घरा डाला और तपश्चान जीन के नारे लगाय। अरबों ने बबीलान पर भी इसी प्रकार अधिकार जमाया और एतबजेण्डिया का भी एक ही वष में जीत लिया।<sup>१</sup> ७११ में मूसलमानों का रहन वाला तथा बबर जानि का सनापति ताराज अपनी मना सहित जिब्राल्टर के तट पर उतरा और उमा वष १६ जुलाई का स्पन के राजा राड्रिक का पराजित किया जिसके विषय में उसका बान कुछ भा पाल नहीं हुआ। इस निगाहके विजय के बाद मुसलमान स्पन में हाकर आग बरस ही चले गये।<sup>२</sup> और सान वष के बाद में समय में ही उहान (आइबेरियन) प्रायद्वीप पर विजय प्राप्त कर ली। यह प्रांत मध्यकाल के यूरोपीय प्रान्तों में सबसे बड़ा और सुन्दर प्रांत था जहाँ के कई मौ वष रहे।<sup>३</sup> लगभग चारह वष के फुटकर आक्रमणों में फ्रांस का दक्षिणी आधा भाग जीत लिया गया। अरबों का सबसे प्रथम प्रतिरोध टूअन तथा प्वायटम के मरान में किया गया जहाँ चार्ल्स मानस ने अक्टूबर ७३२ में मुसलमानों के सनापति अब्दुर रहमान का पराजित किया।

तीसरा बात यह है कि भारताया ने मुसलमान आक्रमणकारियों का एक सम्बन्धी अवधि तक सफलता के साथ जा मुकाबला किया वह अपना महत्त्व रक्षता है और प्रशंसा के योग्य है। अरबों और कुछ हद तक तुर्कों ने अपने विजित देशवासियों के धर्म सम्बन्धित तथा रहन-सहन के ढंग का बिलकुल नष्ट कर दिया था किन्तु वे न तो हम अपने में मिला सब और न हमारे धर्म और संस्कृति का नष्ट कर हमारे तथा हमारे पूर्वजों के पारस्परिक सम्बन्धों का ही विच्छिन्न कर सकें। सच बात तो यह है कि मुस्लिम आक्रमणकारियों के जावन पर जितना हम प्रभाव डाल सके उतना वे हमारे ऊपर नहीं डाल सके।<sup>४</sup> टाइम्स का यह कहना बिलकुल ठीक है कि 'इस्लाम पर हिंदू धर्म का जितना प्रभाव पड़ा उतना हिंदू धर्म पर इस्लाम का नहीं पड़ा, और यह आश्चर्य की बात है कि अब भी हिंदू धर्म निर्भीकता तथा आत्मविश्वास के साथ अपने धर्म पर उसी प्रकार अग्रसर है जस इन आक्रमणों के पहले चल रहा था।'<sup>५</sup>

<sup>१</sup> फिलिप के हिंदी कृत द अरब्स पृ० ५२

<sup>२</sup> वहाँ पृ० ६५

<sup>३</sup> वहाँ, पृ० ६७

<sup>४</sup> वही पृ० ७१

<sup>५</sup> टाइम्स कृत इण्डियन इस्लाम



चौधी बात यह है कि यद्यपि सिंध तथा हिंदू अफगानिस्तान व पतन व बाग पहन जरबा व तिए जीर फिर तुर्कों के लिए आक्रमण का द्वार बिन्दु बन चुक गया था फिर भी अरब सिंध जीर मुल्तान व अतिरिक्त हमार दश की एक इंच भूमि को भी वह स्थायी रूप से नहीं जीत सके थे। तुर्कों को ता पजाब पर अधिकार करने में डेढ़ सौ वर्ष (८७० ई १२६०) लग गये थे। मुहम्मद गारा के ११७५ ई में भारत पर प्रथम आक्रमण से १२१६ ई में अलाउद्दीन खलजी की मृत्यु तक तुर्कों का काश्मीर जामाम तथा उन्नीसा का छात्रक बनने शेष उत्तर भारत की विजय करने में ही डेढ़ सौ वर्ष लग गये और इतने समय में भी यह विजय पूर्ण नहीं हो सकी थी। दश में जहाँ-तहाँ स्वतंत्रता के लिए संघर्ष हात ही रहे थे। इस बात का ता सभी जानते हैं कि मध्य-युग में राजस्थान को पूर्णतः कभी नहीं जीता गया और सम्पूर्ण सल्तनत काल (१२०६-१५२६ ई) में गंगा यमुना के दोआब के जमान्तारा से कर वसूल करने के लिए प्रति वर्ष आक्रमण करना पड़ता था।<sup>१२</sup>

अतः हमारी पराजय के कारण कुछ जीर ही रहे होंगे। भारतीय इतिहास काग में मायता प्राप्त श्री जदुनाथ सरकार का कथन है कि देश का सबसे बड़ा शत्रु घर का भेदी होता है बाहर का नहीं। आन्तरिक कारणों का प्रभाव सबसे अधिक पड़ता है। तुर्गायवश सातवा शताब्दी में पहल उत्तर पश्चिमा भारत हिंदू अफगानिस्तान तथा सिंध सहित देश के शेष भाग से अलग हो गया था जिसका कारण यह था कि सिंध नदी के पार के भागों का इतिहासिक न असम्भ्य जानिया में बस दश मान रखा था।<sup>१३</sup> उन प्रदेशों में विशेषकर अफगानिस्तान में मिनी जुनी जानिया का एक बहुत बड़ा समूह रहता था जिसमें हिंदू धर्म हिंदू पारिवर्तन कुपाण और दूण सम्मिलित थे जो धीरे धीरे हिंदू धर्म का अपनाकर हिन्दुओं में घुल मिल गये थे। देश के अलग हुए इतिहास का यह सहन नहीं हुआ था। अतः दश के शेष भाग में इन लोगों के मामलों में कोई विशेष रचि नहीं थी। इन लोगों का भी अपने दशवासियों से किसी प्रकार की सहायता अथवा सहानुभूति की जाशा नहीं रहा थी और इन लोगों का अपने भुज बन का भरोसा कर शत्रुओं से अलग होना पड़ा था।

दूसरा कारण यह है कि मौर्य-सासनाय के समाप्त होने के बाद भारत में ऐसी कान् सगठित शक्ति और साधन नहीं रहे गये थे जो भारत की रक्षा करने

<sup>१२</sup> इतिहास में मिनाहज उम मिनाहज इन तबकान ए-नासिरा बरानी वृत्त 'तारीख-ए फीराजशाही' चर्चिपट एण्ड डाउसन जिल्द २६

<sup>१३</sup> सामन बाटम इन आन युवानियाग टुवलज इन इण्डिया जिल्द एक पृ० १८०

में मगध हात। कारण यह था कि हमारा उत्तर पश्चिम में साम्राज्य पर तथा दूर में सीमा पर छाट-छाट स्वनत्र राज्य बन गये थे। अतः यथासाध्य जब सम्पूर्ण देश की सीमाएं नहीं माना जाता था। सम्पूर्ण भारत का तावात दूर ग्री उत्तर भारत की भी कोई ऐसी क्राय शक्ति नहीं था जो सार प्रशासन के हित का ध्यान में रखकर काम कर सकता। मित्र वायुन तथा जाकुल के राजा वारं वारं इन देशों का जनता भी नष्टक था। अतएव धन जन की अपेक्षा शक्ति के हस्त में भाग्यवान् अपने युग के उस समय में साम्राज्य का सामना किया जा अत्यधिक शक्तिशाली तथा माधनसम्पन्न था। भारत के दूसरे राजा न केवल युद्ध में अपने युद्धों का-मा र्वि न लेकर बल्कि पश्चिमी की मा ही र्वि नों जिसका परिणाम यह था कि हिंदू अफगानिस्तान और सिंध अपने से बचने के लिए शक्ति का इन परिस्थितियों में एक अनिश्चित और नम्बा अवधि तक मुकाबला न कर सकें।

तामरा कारण यह है कि अर्थात् मगध के ब्राह्मणवाद के प्रतिश्रिया का भा अनुभव करना पडा। मगध का दृष्टि में रहते हुए हमका ताव परिणाम यह। ब्राह्मणवाद का पश्चात् प्रभाव यह था कि ब्राह्मण मंत्रों अपने क्षत्रिय तथा मूल राजाओं का गद्दा में हटकर स्वयं उसका मानिक बन गये। इसका प्रभाव यह हुआ कि राजनैतिक शक्ति के साथ-साथ शायन में अस्थिरता आ गया। ब्राह्मण लये जा करने के नाम में भी प्रसिद्ध है वायुन के लगतारमन क्षत्रिय राजा का मंत्र था। इमन राजा का गद्दा से उतारकर जल में डाल दिया और ८७० ई (२५६ हिजरा सवत) में स्वयं गद्दा पर बैठ गया। यह एक ऐसा नाजुक समय था जबकि मफरात याकुब बिन लायक के आक्रमण के कारण देश का पश्चिम का बड़ा भारा मुकाबला करना था।<sup>१५</sup> अतः अतएव का राज्य हस्त में हुए एक वर्ष में ही नष्ट हो गया कि वायुन न उस वायुन में मार भगाया और अफगानिस्तान जा उत्तर पश्चिम में भारत का पनाशिया तक अग रहा था, मन्त्र के लिए इसका हाथ से निकल गया। मिथ में इसी प्रकार का घटना घटा। जिस समय मिथ पर अरबा के आक्रमण का रण्य उसी समय ब्राह्मण मंत्रों के चचे न राजा माह्मा राय द्वितीय का गद्दी से उतारकर उमका बंध कर दिया और उमका विधवा रानी के साथ विवाह कर ७०० ई के उगमग वह स्वयं गद्दी का मालिक<sup>१६</sup> बन गया। चचे न जा राज्य हडपा उसका मूल्य उमके पुत्र दारि के चुकाना

<sup>१५</sup> अतः अतएव का कृति किताब उल हिन (साधक कृति अनुवाक) जिन् दा पृ० १० १०

<sup>१६</sup> चचनामा शिखर आर मा मजूमदार कृति कनासिक्ल एज पृ० १६५

पत्नी । ७१२ ई. में अरबों के सनापति मुहम्मद बिन कासिम ने उस हराएँ मार डाला और सिंध में हिंदू राज्य सत्ता के लिए समाप्त हो गया । उस अतिरिक्त कट्टरपथी हिंदू धर्म के बने जाने में सम्पूर्ण दश में बौद्ध हिंदुओं के विरुद्ध हो गए और सिंध में तो वे राजवंश से ही उन्नीयमान नहीं हुए बरन बहुत से लोग तो जात्रामय अरबों से ही मिले गए और अपने राजा तथा देश के विरुद्ध अरबों की पर्याप्त महायत्ना भी की ।<sup>१६</sup>

इसके अतिरिक्त एक बात और है कि धार्मिक कट्टरता तथा कमवाण्ड पद्धति सीधे सीधे निम्न हिंदुओं के आडम्बररहित जीवन के किसी प्रकार भी अनुकूल नहीं रहा । इन निम्नो ने अपने तथा अपने नये स्वामियों के बाव एक छोटा खाइ के अनुभव किया क्योंकि ये शासक जाग इन जागों के अपने से पूर्वक रखकर उस नीति के अपने रहें थे जो धर्म तथा समाज के लिए अत्यंत घातक था । सिंध के जाट तथा मदे इस नीति के ऐसे शिकार हुए कि बौद्धों के तरह वे भी बाहिर के विरुद्ध मुहम्मद बिन कासिम से जा मिले । ब्राह्मणों के कट्टरता के राजनैतिक परिणाम यह हुआ कि हमारा सामाजिक संगठन छिन्नभिन्न हो गया । यदि यह संगठन छिन्नभिन्न न होता तो हमारी राजनीतिक स्वतंत्रता सत्ता बना रहती ।

चौथा कारण यह प्रतीत होता है कि उत्तर भारत की सवसाधारण जनता के नैतिक पतन हो गया था और उसमें अभिचार के भावों बहुत बढ़े गए थे जिसके परिणामस्वरूप उनका युद्धकला के पतन हो गया था । कोणाक खजुराहो इत्यादि अय स्थानों में यहाँ तक कि पुरा चित्तौड़ तथा उज्जैनपुर आदि के मन्दिरों के बाहर भा जा जशलाल मूर्तियों लिखाया देती हैं वे उस समय की जनता के चारित्रिक अध पतन की साक्षात् ह । भय ही उनके आध्यात्मिक महत्त्व सिद्ध किया जाय तो भा उनसे अभिचार तथा नैतिक पतन का जाभास अवश्य मिले जाना है ।

पाँचवाँ कारण यह है कि उत्तरकाल में अफगानिस्तान तथा सिंध के हिंदुओं के विन्शी आक्रमणकारियों के साथ जो युद्ध हुआ उसमें हिंदुओं के दुर्भाग्यवश एक ही समय में दो भागों पर युद्ध करना पड़ा । जारम्भ में जब कपिशों अथवा कानुन अरबों के साथ युद्ध कर रहे थे तब काश्मार उसके साथ था । काश्मार के राजा ललितादित्य मुक्तापाण्ड (संगम ७१-७५ ई.) काबुल के शाही राजाओं के मित्र था क्योंकि उसका साम्राज्य पर भा अरबों के

<sup>१६</sup> ऐसा प्रतीत होता है कि यह आन्दोलन बहुत पतन गया था और उस युग में पूर्व ही अरबों जारम्भ हो गया था । एक नाम ब्राह्मण साहित्य या गुहिन राजा मानमारी से चित्तौड़ के गद्दी छीनकर छटा शताब्दी में स्वयं राजा बन गया था ।

आक्रमण हो रहा था। किन्तु तन्नितान्त्रिय के उत्तराधिकारियों विशेषकर शक-  
वमन ने इस बुद्धिमत्तापूर्ण नीति का याग कर लिया था जिसका परिणाम  
यह हुआ था कि काबुल के शासक का अपनी सीमा का काश्मीर के तादान  
तथा लानुप शासक से उचाने के लिए पश्चिमी मार्ग पर  
गमय समय पर उत्तराधिकारी

गद्गुआ का दूर

॥११॥ अब काश्मीर के विस्तार

भी तयानी पस्त ५॥

अतः यह भी बताना आवश्यक है कि युद्ध सम्बन्धी नीति तथा पतरावाजी  
में जो भी छोटी छोटी भूलें हुए वे भी किसी प्रकार से कम महत्त्वपूर्ण नहीं है  
क्याकि उन्नी के कारण अतः म देश के भाग्य का निणय हुआ। उत्साहरण के  
लिए अफगानिस्तान तथा सिन्ध सरकार ने अरबों की युद्ध सम्बन्धी महत्त्वा  
काभावा और उनकी तयारिया की जवहेरना की तथा समय पर उहाने देश का  
रक्षा का पर्याप्त प्रयत्न नहीं किया। य सत्र बात एसी है जिनकी किसी प्रकार  
भी उपेक्षा नहीं की जा सकती। तान्त्रि ने एक सूचना यह की कि उमने दखत  
तथा सिन्ध के दूसरे नगरों की रक्षा के लिए सना नहीं भेजी और शत्रु को यह  
अवसर दिया कि वह इन्हें बारी बारी में एक एक करके जीत ले। जिस समय  
मुस्लिम दिन कासिम घाटा की बीमारी के कारण शक्तिहीन हाकर ने प्रहीन तक  
सिन्धु नदी के किनारे पना रना था और जामने सामन की तयारी के लिए अपने  
को शक्तिहीन समझ रहा था उस समय भी तान्त्रि ने उस पर आक्रमण करने  
का कोई प्रयत्न नहीं किया और वह पना मानता रहा कि उस युत्तमगुलता  
तथा निणयामक युद्ध करना चाहिए।

जहाँ तक मामा य कारणों का सम्बन्ध है तब यह स्वीकार करना  
पड़ेगा कि यद्यपि अरब वीरता में हिन्दुओं से बढकर नहीं थे तथा भी वे युद्ध  
करना में अधिक दक्ष थे। इसका कारण यह था कि उनमें पूर्ण एतता था और  
उनका सामाजिक संगठन अच्छा था। इस्लाम धर्म ने जाति तथा वर्ण के भेद  
भावों को निमूल कर दिया था अतः मध्य एशिया के सभी इस्लाम धर्मावलम्बी  
संगठित होकर पूर्णतः एक हो गये थे। दूसरी बात यह है कि वे शराब नहीं  
पीने थे क्योंकि प्राचीन मुसलमान कुरान की शिक्षाओं का कडाई से पालन करने  
थे और कुरान में शराब पीने की मनाही है। परिणाम यह हुआ कि आक्रामक  
मना से अभूतपूर्व माहूम एत्र एषना का परिचय दिया। हिन्दू सना के  
लिए एसा करना सम्भव नहीं था क्योंकि वे जानि धर्म तथा सामाजिक रूढ़िया  
के पचड में पनी दृष्ट थी।

दूसरी बात यह है कि आक्रामक अच्छे युत्तमवार थे। अच्छे धार्मिक और  
रूपिपणा के कारण उनकी मना हमारा मना में कही अच्छी थी। तान्त्रि

म भी अरबी घोड़े की प्रशंगा की गद्द है जोर तुक्मान घाँस ता अरबी घाँस स भी अच्छे होने थे। बम्ब्रज मडिवियन सिन्ट्री म तिया है मध्य एशिया म तुक्मान घोड सबम अच्छ है। दुत गति परिश्रमशीलता मूय पूय बुद्धिमानी स्वामिभक्ति तथा भूमि क पहचानने म ये सब तन्ना म अच्छ मान जान है। तुक्मान घाँस तन्ना पतना और टुबना होता है त्मक पर तथा मत्न पतनी तथा तन्वी हानी है।

तुक्मान तूटमार का जाक्रमण करत समय एन घोडो पर सवार हाकर निज न रेगिस्तान म पाँच दिन म ६५० मीन तक पार कर तत थ।

वे एस प्रकार की शिक्षा असोम बजरा और रेगिस्ताना म हजारो बप मे ल रहे थ। तूटमार के तगानार जीवत के लिए अधिक म अधिक थशाक तथा कप्टा क सहने की आवश्यकता होती है और यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि घोडा तथा घुत्सवार म ये दोना गुण विद्यमान थे।<sup>१७</sup> तुर्कों की जमभूमि तुक्माना की जमभूमि से थोडी दूर दक्षिण म है। ये भी तगभग एन जमे ही दृष्ट-बट्टे तथा कप्ट सन्तन म कुशल थे और अरबी जयवा तुक्मानी घोरा पर चरत थ। सर जदुनाथ सरकार का कन्ना है कि तुक् अपने घोरा की तज चान तथा घोरा पर सवार हाकर जोरदार आक्रमण क लिए इतन प्रसिद्ध थ कि एशियाई जगत म किसी भी जाति के अच्छ वीर तथा सुमजित घुत्सवारा का तुक् सवार (तुर्की घुत्सवार) पुकारा जाता थ।<sup>१८</sup> एन आक्रमणकारिया क पास अनेक प्रकार क हथियार थे और एनके घनुप के दो टुकड होने थ जो एक घातु स जुड रत्ते थ। एनसे जा घातक बाण छूटत थ वे जस्मी स सी कम् तक की मार करत थे और कवच तथा ढाल को सरतता से वेध दते थे। एनके साथ साथ एनके पास लम्ब लम्बे भागे भी थे। तुर्की अमीर और उनके घाँस कवच पन्ने रत्त थ और घनुप बाण तथा भाला मे तत्त थ। एनक साथ एनके पास तन्वी और तज तनवारें भी होती थी।

तीसरा कारण यह था कि एक ता राजाआ का छोकर मिथ कावुन जावुन तथा पजाब क राजाआ म सेनापति के क गुण नहीं थ जा मुसतमान सेनापतिया मे थ। कारण यह था कि एन राजाआ की सेनाए छाटी थी और छाती सेनाआ क सेनापतिया म क गुण तन्ना आ सजते जा बनी सेना क सेनापतिया म शोत हैं। मच बात तो यह है कि एन राजाआ क पास धन शक्ति तथा जन शक्ति बहुत कम थी जत य बनी जोर अच्छी सेनाए नहा रख सकत थ।

चौथा कारण यह था कि हमार सेनाधिनागी तथा सेनापति सेना की

<sup>१७</sup> बम्ब्रज मडिवियन सिन्ट्री जियन एक पृ १

<sup>१८</sup> सिन्टान एण्ड (मण्ड एण्डिगन) ७ मार्च १९५४

पतरेराजी के इन सावना की उत्पत्ति वरत म असफत नू जो इस्लाम के जन्म व पव ही गणिया के दूसर नशा म उद्यत हा गय थे जीर जिह्म अन्वाम धर्मा पनम्पी जग्व जीर तुर्कों ने उत्पत्ति की चरममीमा तब पहुँचा दिया था । युद्ध सम्बन्ध चालवाजी यह थी कि पहन धनुष बाण स सुमजित तेज घुडमवार धुआंधार बाण वपा म शत्रु सेना म आतङ्ग भय तथा गन्वनी पना कर न तपश्चात एकबारगी घडसवार सेना शत्रु पर आक्रमण कर नै । आक्रमणकार अपनी मना के दस्ता का पाँच भागा म बाँटन थ अथवा त्रिण तल केन्द्र वाम तल के आग दस्तान तवन वाल मुरक्षा तन और कोतल तन । थ दल अद्ध चन्द्रावार म लड क्रिय जात थे । ये तन न ता आक्रमण करने के लिए समीप जात थ और न आमन सामन का हा आक्रमण करत थे । इनकी चान यह गता था कि व अपनी सेना की बडी दकडिया न भारतीय सेना का बाग ओर स घेर नन थे और उन पर तजी से बाण वपा करन नगत थ । भारतीय सेना एक लम्बी पक्ति म नथी हाता थी जीर दक्षिण तल केन्द्र तथा वाम तन म विभक्त हाता थी । शत्रु कवन तिन तवन के समय भारतीय सेना व तिनारे के भागा के आमपास एकपिन हाकर आक्रमण करत थ और भारतीय सेना म गडबडी हान पर तुर्की घुडमवार बाणा के चाल छा तन थ । तपश्चात आक्रमणकारी सेना व चन्द्रमारूपी तिनारे के दोना भाग भारतीय सेना के पिछन भाग को घेर लेते थे ।

पाँचवाँ कारण यह था कि राजपूता को अपनी तरवार की दक्षता का अभिमान था और वे युद्ध को एक तैल प्रतियोगिता समझते थ जिसम वे अपना बौधन तथा बीरता त्रियाने का प्रयन करत थे । किन्तु अरब तथा तुर्क सनिक विजय का उद्यम मानपर युद्ध करत थे और उनका विश्वास था कि युद्ध व समय निश्चित स निश्चित माधना को भी काम म नाना अनुचित नहा है । राजपूत न तो शत्रु की दुबलता का नाम उठाना चाहत थ और न हत-वपन का प्रयोग ही उचित समचन थ किन्तु अरब तथा तुर्क सनिक नत कामा म अत्यत कुशल थ ।

छठा कारण यह था कि महमूद गजनवी और मुहम्मद गारी दाना ने ली और गजनवी न ता गारी म जीर भी अधिन भारतीय जनता जीर सेना का अत्यधिक जातकित कर गमा हाताश कर त्रिया कि अन्त म उसका ननिक पना हा गया । उद्धान हमारे अन्त अद्ध नगर का बनी तजी म नष्टभ्रष्ट कर त्रिया और देग म जाग शगाकर तथा माग्वाण मचारन उम उजाड त्रिया । रग प्रकार के काम बाण त्रार निय गये अन जनता अत्यन्त भयभीत हो गयी जीर उसन महमूद की सेना को जजय ममय त्रिया । तेश का राजनीतिक और मनिक पतन अपनी चरममीमा पर पहुँच गया और त्राना न भ्रमवश समस्त त्रिया कि तुर्कों का मुनायना करना नय ही हागा । उग युग म नम प्रकार

की भावना न हमारे समाज का हताश कर दिया था। जतन में यही कटना हागा कि अरबों और तुर्क धार्मिक उत्साह से अत्यधिक प्रभावित थे। इस प्रभाव में वे यह विश्वास करने लगें थे कि ईश्वर ने उन्हें मूनिया को ताज्जुद इस्लाम का प्रचार करने के लिए बनाया है। हमारे देशवासियों के सामने अज्ञान की सुरक्षा के अनिश्चित और कोई आशंका नहीं थी। उनकी धार्मिक भावना ने ही उन्हें अज्ञान का मुकाबला करने के लिए भी प्रेरित किया था। अज्ञान के अज्ञान पर जाग्रत करने की भावना नहीं थी। केवल शारीरिक शक्ति और मना सम्बन्धी हथियार ही मना के लिए पर्याप्त नहीं हैं। मना का उत्साहित करने वाली भावना उतनी ही आवश्यक है जितनी कि अज्ञान शक्ति।

### BOOKS FOR FURTHER READING

- 1 LANE POOLE STANLEY Medieval India
- 2 SMITH V A The Oxford History of India
- 3 Hitti PHILIP K The Arabs
- 4 Titus Indian Islam
- 5 MAJUMDAR R C The Classical Age
- 6 Cambridge Medieval History Vol I
- 7 Hindustan Standard (Sunday Edition) 7th March 1954

# महमूद गज़नवी के आक्रमण के समय का भारत

## राजनीतिक अवस्था

गज़नवी-का क आक्रमण क समय भारत की राजनीतिक अशा अशा की मिक्र विजय क समय म एक पकार म उत्त भिन्न था । आठवा शताब्दी क प्रारम्भ म हमारे देश म का विदेशी उपनिवेश न था विदेशी मत्ता की स्थिति का ता प्रश्न भी नथे उत्ता था । पश्चिमी किनारे पर केवल कुछ ज़रद मौंगर रहन थ जिनका मुख्य पशा थापाठ था । एक विपरीत १०वा शताब्दी में हमारे देश म मुत्तान और ममूग क का विदेशी राज्य थ । उनके अनिश्चित उन राज्या का काफी जनता एता था जिन मुसलमान यता लिया गया था । दक्षिण भारत म भी विपरीत मानावार म ज़रदा क उपनिवेश थ । यहाँ क शासका न मुसलमान विदेशीयों की शर्तों जनता का मुसलमान यतान की भाषा से भी थी । जिन गागा न विदेशी घम जगाकार कर लिया था क विदेशी गग का उत्त-महत्त भी पसा करन जग थ और गज़नी तथा मध्य एशिया म शान कात जपन मुसलमान भाष्या क साथ उनका मत्तानुभूति थी । वास्तव म उनक लिए यत् स्वाभाविक भी था । मुत्तुवतमीन महमूद गज़नवी और उनके १५० वर्ष बाद महम्मद गागा म दृष्टि म भाग्यशाली थ कि भारतमाय जनता क एक जग की नतिव मत्तानुभूति प्राप्त थी ।

## मुत्तान और मिक्र के ज़रद राज्य

यहाँ पर उन अश्व गाया क इतिहास का बणन करन का आवश्यकता नहीं है । जनता काना पयात है कि उनम सम्पूर्ण आधुनिक मुत्तान और मिक्र मर्मितन थ और ८७१ म क खिलाफत म सम्प्रथ विदेशी करक पूण स्वतंत्र न गय थ । तन्तु उन देश म परन्ता जन क नात नववी स्थिति अधिक् दुःख न था । अन्तिम नाममात्र क विराय मत्ताफा का प्रभुत्व स्वीकार करन थ । वास्तव म यत् उनकी कूटनीतिक चान था । ममय ममय पर उन गाया क नाममात्र-जगों म पश्चिमतन लेन उत्त थ । प्राग्म्य म कर्मार्थी पाण मुत्तान म राज्य करन थ । फत्त शक्ति उनका शासन था । एक मक्ति म कुछ भाग्यशाली थी । मिक्र गाम म अर भी ज़रदा का भी शासन था । अरब्या का



राजनीतिक और धार्मिक नीति से परिचित हान पर भी पड़ोस के हिंदू राजा न केवल राजा का किसी प्रकार से सहायता नहीं। विचित्र बात यह था कि हर जगह अरबा तथा नये भारतीय मुगलमानों के साथ सहृदयता का बरताना किया जाता था और उन्हें अपने धर्म का पालन करने तथा नये राजा का मुगलमान बनाने का आता थी। इनके जीवन में वास्तव में उनका काफी महत्त्व था।

शेष भारत में ऐसी राजवंश शासन करने थे। इन राजाओं में निम्नलिखित प्रमुख थे

### हिंदूशाही राज्य

पहला महत्त्वपूर्ण हिंदू राज्य चित्तौर नहीं से हिंदूशुंग तक फैला हुआ था और काबुल उसमें सम्मिलित था। इस राजवंश में २०० वर्षों तक अकबर ही अरब आक्रमण का सफलतापूर्वक सामना किया था। किंतु अंत में उसके सामका को अफगानिस्तान (काबुल सहित) छान्ने पर बाध्य होना पड़ा और उदभण्डपुर जयवा बहल को उद्धान राजधानी बनाया। दसवीं शताब्दी में प्रसिद्ध जयपाल इस राज्य पर शासन करता था। वह वीर सैनिक तथा योग्य शासक था। उसके राज्य की स्थिति ऐसी थी कि गजनी में आने वाले आक्रमणकारी का पना प्रहार उसी को बनना पड़ा।

### काश्मीर

दूसरा महत्त्वपूर्ण राज्य काश्मीर का था। उसके उत्पन्न राजवंश की हिंदूशाही राज्य तथा कन्नौज के साम्राज्य में टकरा हो गयी। प्रसिद्ध राजा शंकरवर्धन ने काश्मीर राज्य की साम्राज्य का अनेक दशा में विस्तार किया परन्तु वह उरम (आधुनिक जजारा जिला) के राजा से युद्ध करता हुआ मारा गया। उसकी मृत्यु के उपरान्त राज्य में अराजकता फैल गयी। इसलिए काश्मीर के ब्राह्मणों ने अपना जाति के यशस्वर नामक यकिन को सिंहासन पर बैठा दिया। उसके वंश का थार समय पश्चात् ही अंत हो गया और पल्लवों ने उस नये वंश का नाश डाली। पल्लवों का उत्तराधिकारी उसका पुत्र क्षेमात्त था। उसके समय में राज्य की सम्पूर्ण शक्ति उसकी रानी सिंहा के हाथ में रही। अंत में उस पतिशाली स्त्री ने गरी पर अधिकार कर लिया और स्वयं शासिका बन बैठा। उसने १००० तक राज्य किया। उत्पन्न महाम राजसिंहासन पर बैठा। उसी उत्तर-वंश का स्थापना की। इस प्रकार जब महमूद गजनवी ने भारत के सिंध पर आक्रमण किया उस समय काश्मीर के शासन का बागडार एक स्था के हाथ में थी और दश की दशा अनि शोचनीय थी।

## कन्नौज

सम्राट के क्रीडा-स्थल कन्नौज के प्रसिद्ध नगर पर प्रतिहार नामक एक नये राजवंश का ८३६ ई के लगभग अधिकार हो गया था। प्रतिहार लोग अपने को रामायण के नायक श्री रामचन्द्र के अनुज वंशज मानते थे। किन्तु विद्वानों का मत है कि वे गुर्गा की सन्तान थे। कहा जाता है कि आठवीं शताब्दी में एक बार जब एक राष्ट्रकूट राजा ने कन्नौज में घुस कर उस समय पर प्रतिहार सामन्त ने उससे शरण ले ली थी तब उसने उसका उन्मूलन करने का प्रयाग हुआ। अन्ततः प्रतिहार वंश का प्रयाग हुआ। अन्ततः प्रतिहार वंश का प्रसिद्ध शासक हुआ। उसने सम्राट की उपाधि धारण की। उसका उत्तराधिकारी नागभद्र द्वितीय भी यशस्वी था। उसने कन्नौज के सम्राट को पराजित किया किन्तु राष्ट्रकूटों द्वारा उसे स्वयं हराया गया। कन्नौज और मध्य प्रदेश पर प्रतिहारों का प्रभुत्व कायम रहा। अपने उत्तर तथा मध्य प्रदेश के पहाड़ी राज्यास भी उनका मध्य चलता रहा जिनमें कन्नौज उनकी सफलता मिली और कन्नौज पराजय आगती पडा। मध्य प्रदेश के राष्ट्रकूट शासक इन्द्र तृतीय ने प्रतिहार राजा महिपाल को बुरी तरह हराया और उसे अपनी राजधानी कन्नौज में भी हार धाना पडा। किन्तु एक क्षण राजा ने उस पुनः पहाड़ी पर बसा लिया फिर भी प्रतिहारों की शक्ति का भारी धक्का लगा। अन्ततः वंश के शासक राजा की उपस्थिति के उत्तरी भाग तथा राजस्थान और मानवा के कुछ प्रदेशों पर राज्य करते रहे किन्तु उनकी सत्ता अन्ततः नष्ट हो गयी। बुन्देलखण्ड के अन्ततः गुजरात के चानुक्य और मानवा के परमार जातों ने उनका अधीनस्थ सामन्त थे स्वतन्त्र हो गये। प्रतिहार वंश का अन्तिम राजा राज्यपाल हुआ। वह दुर्बल शासक था। उसकी राजधानी कन्नौज पर महमूद गजनवी ने १०१८ ई में आक्रमण किया। अपने अत्युत्थ वंशजों में प्रतिहारों ने अन्ततः के विरुद्ध सफलतापूर्वक युद्ध करके उनका वंश की रक्षा की थी। किन्तु अन्ततः में उनकी शक्ति क्षीण हो गयी और ११वीं शताब्दी के प्रारम्भ में तुर्कों के आक्रमण के सामने वे न बच सके।

## बंगाल का पाल वंश

पाल वंश के शासक देवपाल ने ३६ वर्ष राज्य किया। ८३ तथा ८७८ ई के बीच विभागे समय उसकी मृत्यु हो गयी। उसके उत्तराधिकारी तुर्क हुए और उनके समय में बंगाल राज्य का राजा में पाल राजा तथा परवर्ती पाल राजाओं का कन्नौज के प्रतिहारों से मध्य प्रदेश में गया जिनके कारण बंगाल का भीषण आपत्तियाँ का सामना करना पडा। ११वीं शताब्दी के प्रथम चरण में यही महिपाल प्रथम ने राज्य किया जो महमूद गजनवी का समकालीन था।

उसन कुछ ह्ण तव अपने वश के वभव की पुा स्थापना की िन्तु बगाल के कुछ भाग पर शक्तिशाली सामन्ता न पन्त ही अस्विकार कर िया था और के नाममात्र की ही पात्र राजाआ का प्रभुत्व स्वीकार करन थ । िम समय उत्तर पश्चिमी भारत म महम्मू गजनवी ह्त्या और नूट का बाण्ण रच रहा था उमी समय बगान पर शक्तिशाली तामिन मन्गल राजद्र चीन का आक्रमण हुआ । उस युद्ध म बगाल की भीषण क्षति उठानी पनी िन्तु भाग्य से दूरस्थ होने क कारण वन् मन्मू गजनवी के आक्रमणा स मुक्त रन ।

### छोटे राज्य

उपयुक्त राज्या क ितिरिक्त उत्तरी भारत म अय कई छान छोटे राज्य थ िनम गुजरात क चानुक्य बुदेनखण्ड के चन्नेन और मानवा क परमार अधिक महत्त्वपूर्ण थ । पहन विसा समय के बन्नोज क अधीन न्नु चुक थ िन्तु बन्नोज क दुनन प्रतिनारा के शासनकाल म व स्वतन्त्र नो गय थ ।

### दक्षिण के राज्य

दक्षिण भारत के राजवशा म निरन्तर सघष चरता रहा ंमतिण वनी के निवामा अधिक उन्नति नहीं कर सके । ंमिण क पूर्ववर्ती चानुक्या और राष्ट्रकूटा म प्रभुता क िण शीघ्रकाल तक सघष हुआ । ७५३ ई म चानुक्या की पराजय हुई । राष्ट्रकूट नी अपने पन्ामी राज्या के विरुद्ध निरन्तर युद्ध करते रहे िमलिन ९७३ न् म उनका भी पतन हो गया । उनका स्थान परवर्ती चानुक्या ने न िया । ंमी प्रकार ९वी शताली क िनम वर्षों म प्रसिद्ध पत्तय वश का भी पराभव न् गया । ११वी शताली के प्रारम्भ म दक्षिण म दो प्रसिद्ध राज्य थ कयाणी का परवर्ती चानुक्य राज्य और तजौर का चोन राज्य । परवर्ती चानुक्य वश का मस्थापक लन िनाय था । वह बानापी क चानुक्या का वशधर हाने का ावा करता था । ंमन आधुनिक हैन्गराण्ण राज्य म स्थित कयाणी को अपनी राजधाना बनाया । उसक उत्तराधिकारी तजौर क चान राजाआ क विरुद्ध सघष क फम गये । चोन लोग ान्तिय क वशज थे । गमराजा के समय म उनका मन्व वन् गया । उसका पुत्र राजद्र चोन मन्ान् योद्धा और विजता हुआ । उमन उत्तरी तथा दक्षिणी भारत म अनक प्रन्त जान । उसकी गणना उस युग क मन्ान्तम भारतीय सामका म थी । िम समय ंमिण म चानुक्य और चान िनम सघष म रन थ । उनका भारत म मन्मू गजनवी वन् वन् मन्मू गजनवी का धून म िनता रहा था ।

### सामाजिक तथा धार्मिक दशा

अर्या का िण्य विजय क बाद तदनग      ० वर्षों तक ंमारा देश बाह्य

आक्रमण से मुक्त रहा। इस प्रकार दाघवाल तब विदगी आक्रमण के भय से मुक्त रहने के कारण हमारी जनता में यह भावना उत्पन्न हो गयी कि भारत भूमि का वास्तविकी शक्ति जागृत कर ही नहीं सकता। कहा जाता है कि निरंतर जागृकता ही स्वाधीनता का मूल है किन्तु उस युग में हमारे देश में इस भावना का जगभंग लाप हो चुका था। हमारे शासक सत्रिय त्रिपद्या में असावधान हो गये थे। उन्होंने उत्तर पश्चिमा साम्राज्य की विजय नहीं की और न उन पत्रनायक दशा की रक्षा का ही प्रबंध किया जिनमें हाकर विजया सनाप हमारे देश में प्रवेश कर सकता था। उसके अनिश्चित हमारे लोग न उस नवान रणनाति और युद्ध प्रणाली से भी सम्पन्न न हो सके जिसका विकास अन्य देशों में हो चुका था। यही नहीं राष्ट्रीय उत्साह तथा दशभक्ति की भावनाओं का भी हमारे देश में पूर्णतया लाप हो चुका था क्योंकि ये भावनाएँ तो सकट के ही समय में अधिक बलवती होती हैं। प्रादशिक दशभक्ति का तो बड़े युग में नहीं था। दश प्रेम की जो कुछ भावना या बह भी इस लिए जाना रही थी कि भ्रमवश लाग यत् समझते थे कि प्रायः आक्रमण से हम पूर्णतया रक्षित हैं। आठवाँ में ग्यारहवाँ शताब्दी तक के युग में विचारा का सकारणता हमारे दशवासिया के चरित्र का एक जग बन गयी थी। उनका विश्वास था कि हम सृष्टि का सर्वोत्तम जाति और इतर के चुन हुए नाग हैं और दूसरे लाग हमारे सम्पन्न में आन के योग्य नहीं हैं। जन वर्णा नामक प्रसिद्ध विद्वान महमूँ गजनवा के साथ हमारे देश में जाया था। उसने यहाँ रहकर सम्भृत भाषा सिद्ध धर्म तथा दशन का अध्ययन किया। वह आश्चर्य के साथ लिखता है कि सिद्धांतों की धारणा यह है कि हमारे जसा देश हमारा जसा जाति हमारे जसा राजा धर्म, ज्ञान और विज्ञान ससार में बड़ा नहीं है। वह यह भी लिखता है कि हिन्दुओं के पूर्वज इतने सर्वोत्तम विचारा के न थे जितने इस युग (११वीं शताब्दी) के लोग थे। उस यह दायकर भी बड़ा आश्चर्य हुआ था कि हिन्दू लोग यह नहीं चाहते कि जो चीज एक बार अपवित्र हो चुकी है उस पुनः शुद्ध करके अपना लिया जाय।

उस युग में हमारा देश शय ममार से लगभग पूर्णतया पृथक् था। यही कारण था कि हमारे दशवासिया का अन्य देशों से सम्पर्क टूट गया और वे बाह्य जग में हान का वा राजनानिक सामाजिक और साम्बृतिक घटनाओं से भी सवसा अतभिन्न रहे। अपने से भिन्न जातियों और ससृष्टि से सम्पर्क न रहने के कारण हमारी सम्यता गतिहीन हाकर सन्न गयी। वास्तविकता तो यह है कि इस युग में हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पतन के स्पष्ट लक्षण दिखायी देने लगे। इस युग के ससृष्टि गार्हिय में हम उतनी सजीवना और सुरक्षित नहीं पाते जितनी कि पाँचवीं और छठी शताब्दियों के सार्हिय में।

हमारी स्थापत्य विभवता तथा जय ललित कलाभा पर भी बुरा प्रभाव पड़ा। हमारा समाज गतिहीन हो गया जहाँ प्रचलित अधिभ्रष्ट कठोरता ही गम्य मंत्रियों का बंधन व नियमों का कठोरता से पालन करने पर बाध्य किया गया। उच्च वर्णों से विधवा विवाह की प्रथा पूणतया उठ गयी जोर ध्यान पान व सम्बन्ध में भा अनक प्रतिबंध लगा दिया गये। अतः का नगर से बाहर रहने व निए बाध्य किया गया।

धर्म समुचित व्यवहार और नतिक्रमों का भूत माना जाता है। किन्तु इस क्षेत्र में भी अधिपतन हुआ गया था। शकर महान्त न हिन्दू धर्म का पुनः संगठित किया था जोर उस एक मुद्दत दार्शनिक आधार पर स्थापित किया था किन्तु सामाजिक दोषों का व भी दूर नहीं कर सका। उस युग में वाममार्गी सम्प्रदायों की लोकप्रियता बढने लगी विशेषकर वगान तथा काश्मीर में। इनके अनुयायी गुराणान मासाहार अभिचार जाति दुःखमना में लिप्त हो गये। यथा पित्रा जोर मस्त रहा यही उनका सिद्धांत था। इस प्रकार के दूषित विचार शिक्षा संस्थाओं में भी प्रवेश कर गये विशेषकर विहार में विभ्रमशिक्षा व विश्व विद्यालय में। इस विश्वविद्यालय की एक घटना से ज्ञात होता है कि नतिक को हमारे समाज में सिग हू तक घर कर गया था। एक विद्यार्थी के पास शराब की एक बालन पकनी गयी। विद्यालय के अधिकारियों द्वारा पूछे जाने पर उसने बताया कि यह उस एक भिण्णा ने पी है। अधिकारियों ने उस विद्यार्थी के विरुद्ध अनुशासन की कार्यवाही करनी चाही किन्तु इस प्रश्न को लेकर विश्वविद्यालय में दाद न बन गये जोर एक सक्कट उपस्थित हो गया। जब एक उच्चतम शिक्षा केन्द्र में इस प्रकार का घटनाए हो सकती थी तो प्रमादमय तथा विनासपूर्ण जीवन जिताने वाला उच्च तथा मध्यम श्रेणियों के लोग का क्या दशा रहा होगा उसका भरी प्रकार अनुमान लगाया जा सकता है। हमारे देश में अनक बड बड मठ थे। किन्ती समय के शिभा तथा पवित्रता के उच्च केन्द्र माने जाते थे। अब वे भी विनास और प्रमाद के अड्ड बन गये। सायासिया का महत्त्व घट गया यद्यपि साधारण जनता की उनके प्रति श्रद्धा बना रहा। दशमशती प्रयाग युग का एक महान् टाप थी। प्रत्येक मन्दिर में देवता की सेवा के लिए अनक अविवाहित नविक्रिया रखी जाती थी। समस्त भ्रष्टाचार फना और बेश्यागमन मन्दिरों में एक सामान्य नियम बन गया। निहृष्ट काटि का अश्रुतता से पूण तांत्रिक साहित्य का सम युग में अधिक वृद्धि हुई। हमारे नतिक जावन पर समका दूषित प्रभाव पडा। इस काल में महान्तम विद्वानों के लिए भी अश्लाल ग्रन्थ रचना बुरा न माना जाता था। काश्मीर के राजा के एक भ्रष्टाने कुटिता मतम नाम का पुस्तक लिखी था। सस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान धर्मद्वे ने समय मत्रक (बेश्या का आत्मकथा) नामक

ग्रहण रचा। इस श्रवण में नाथियरा अपने जावन के विभिन्न क्षत्रों के अनुभवों का वर्णन करता है। वह एक दरबारा स्त्रा एन सामंत की रमल सटका पर घूमन वाली, कुटिला कपनी भिक्षुणी युवका का दृष्ट करन और धार्मिक म्याना की यात्रा करन वाली की हसियत से जीवन त्रिना चुका है। इस प्रकार का मंत्र चाजा न समाज के उच्च तथा मध्यम वर्गों के लोगों का भ्रष्ट कर दिया। मन्मथन माध्याग्न जनता प्रचलित साहित्य और वाममार्गी धर्म के दूषित प्रभाव से मुक्त रहा।

### आर्थिक जीवन

आर्थिक दृष्टि से यह समृद्ध था। खाना और सजा से उत्पन्न हान वाना सम्पत्ति अनके पीठिया से जमा होना चली आया था। यत्रियन न खुब धन संचिन कर दिया था और मंदिर ता उसके भण्डार थे। किन्तु आर्थिक दृष्टि से समाज के विभिन्न वर्गों में गहरा असमानता था। राजपरिवारा के सम्स्था सामन्ता तथा दरवागिया का जावन अत्यन्त समृद्ध तथा त्रिनामपूर्ण था। व्यापारी त्राग करारूपति थे और करारण रुपया के त्राग जाति में व्यग्र क्रिया करन थे। गाँवा के साधारण लोग दरिद्र थे यद्यपि अभाव पालित के भा न थे। वे मित्तमयी थे। उनके पास थोडा सामान होना था। फिर भी संचिन धन शक्ति तथा व्यापार के कारण साधारणतया दश का आर्थिक दशा अन्टा था। इसी अपार सम्पत्ति के त्राग न ही वामनव में महमूद गज़नवी का भारत पर आक्रमण करन का प्रेरित क्रिया। हमारे शासक यह नहा जानन थे कि दश के बाह्य आक्रमणा से बचाकर हम सम्पत्ति की रक्षा कम करें। राजनानिक ढाँचा अत्यन्त दुबल था। ह्यकालान सम्स्थाए अब ना बिलमान था किन्तु जिम भावना से वे कार्य करती थी, वह अत्र गिर चुकी थी। नौरशाहा भ्रष्ट था और जनता की शक्ति भी अनके दूषित प्रभावा के कारण क्षाण हो चका थी।

महमूद गज़नवी के समय के भारत का यह दशा था कि बाहर से शक्ति शानी लियाया दन पर भी वह नस माग्य न था कि अपने धर्म और स्वतंत्रता का रक्षा कर सकता।

### BOOKS FOR FURTHER READING

- 1 RAY H C *Dynastic History of Northern India Vol II*
- 2 MAJUMDAR R C. *History of Bengal Vol I*
- 3 TRIPATHI R S *History of Kanauj*
- 4 NILKANTHA SASTRI K A *The Cholas*
- 5 NILKANTHA SASTRI K A *The Landva Kingdom*
- 6 PANNIKAR K M *A Survey of Indian History*

## महमूद गजनवी

### तुर्कों का उत्थान

अपनी प्रारम्भिक विजया के बाद जून् अरब निवासा सिंध और मुल्तान के आगे अपने राज्य का विस्तार न कर सका था। वास्तव में नवा शताब्दी के मध्य में उनके शासन का महत्त्व जाता रहा। किंतु जिस काय का उद्धान आरम्भ किया उस तुर्कों ने पूरा किया। जिस युग के सम्बन्ध में हम लिख रहे हैं उससे ध्यान है पहले तुर्कों ने इस्लाम अंगीकार कर लिया था। उनमें उन उत्साह और मस्तिष्क की सकीणता का जाधिक्य था जो सर्वप्रथम किसी नये धर्म का अपना वातावरण में पाया जाता है। वे निर्भीक वीर तथा पराक्रमी थे और आगे चलने की प्रवृत्ति उनमें अत्यधिक बढ़ती थी। उनका दृष्टिकोण भी पूणतया भौतिकवादी था। इस्लाम ने उनकी अमाय महत्त्वावाक्षाओं का धार्मिकता का जामा पहना दिया था। अपने इन गुणों और दायों के कारण वे पूर्व में एक शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित करने के पूणतया योग्य थे।

### उनके प्रारम्भिक धावे सुबूतगीन

सर्वप्रथम जिन तुर्कों का भारत से सम्पर्क हुआ वे गजनी के राजवंश के थे। उनका उत्थान बहुत ही तजी से हुआ था। ६२२ ई. में अलप्तगाने नामक एक साहसा तुर्क नेता ने गजनी में एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की। प्रारम्भ में वह मुनाम था और सुरासान तथा बुगारा के समानी शासन के सामंत का हैसियत से कार्य करता था। उसके एक उत्तराधिकारी पिराने ने पजाब के हिन्दू राजा पर आक्रमण किया। वह राजा हिन्दूशाही-वंश का था और उसका विस्तृत राज्य चिनाब नदी से हिन्दूकुश पर्वत तक फैला हुआ था। कानुन भी उसमें सम्मिलित था। एक समय था जबकि सम्पूर्ण अफगानिस्तान पर हिन्दूशाही-वंश का अधिकार था। भौगोलिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से अफगानिस्तान भारत का ही भाग माना जाता था। राजनैतिक दृष्टि से भी वे अत्यन्त मीथ के समय से (तामरा शताब्दी = ९) भारत का एक प्रांत बना रहा यद्यपि वाच में कभी कभी यह सम्बन्ध टूट भी गया। कानुन और जानुन राज्य के शासन-वंश ने बड़ा भारत से अरब-आक्रमण का सामना किया किन्तु ६६४ ई. में अरबों

का मफाना मिला और इस राज्य के कुछ भाग पर उनका अधिकार हा गया। उमर १२००० निवामिया का उतान इस्नाम ग्रहण करने पर बाध्य किया। अपनी रक्षा के लिए शाहा राजाजा ने २०० वर्षों तक जरवा जोर तुर्कों के विरुद्ध वारतापूर्वक युद्ध किए। इसमें उन्हें सफलता भी मिली। गजनी के नये राज्य के शासक शाहा राज्य का अस्तित्व ही पूणतया मिटा देना चाहते थे क्योंकि उसकी उपस्थिति में उनके लिए भारत में प्रवेश करना अत्यंत कठिन था। यहाँ कारण था कि पिराइ का विष्णु-नीति का उसके उत्तराधिकारी सुबुक्तगीन ने भी अनुसरण किया। सुबुक्तगीन अल्पगीन का गुलाम तथा दामाद था और ६७७ ई में गजना के सिंहासन पर बैठे था। वह पराक्रमी तथा महत्वाकांक्षी शासक था। यद्यपि वह मध्य एशिया का राजनानि में बराबर उभा रहा फिर भी भारत के सीमाश्रम पर धाव मारने के लिए उसने समय निकाल लिया। पत्राब का राजा जयपाल सावधान था और वह इस उद्योगमान राज्य के अस्तित्व में उठ खड़े होने वाले सकेट का भतीजा नि समझता था। इसलिए उसने इस राज्य का पतनपन के पहले ही नष्ट कर देने का संकल्प किया। इस उद्देश्य से ६८६ ई में उसने एक विशाल सेना लेकर गजनी पर आक्रमण किया। दाना दला की शक्ति ममान था और उनमें से काइ भी पराजय स्वीकार करने के लिए तैयार न था। किन्तु दुभाग्य से एक नीपण सञ्जावात के कारण जयपाल का सेना छिन्नभिन्न हो गयी और उस सन्धि करने पर बाध्य होना पड़ा। उसने बहुत सा युद्ध का हजाना, ५० हाथी तथा अपनी कुछ भूमि सुबुक्तगीन को देने का वचन दिया। किन्तु लाहौर वापस आने पर उसने इन अपमानजनक शर्तों का पूरा करने से इनकार कर दिया। तब बगला जन का भावना से सुबुक्तगीन ने जयपाल के राज्य पर आक्रमण किया और लम्बान का लूटा। जयपाल ने अपनी सहायता के लिए अनेक भारतीय राजाओं का आमन्त्रित किया और एक विशाल सेना लेकर गजना पर चला गया। किन्तु हम धार भी युद्ध में सुबुक्तगीन का विजय हुई और लम्बान तथा पशावर तब उसका अधिकार हो गया।

### महमूद का सिंहासनारोहण

६६७ ई में सुबुक्तगीन का मृत्यु हो गया। मरने में पहले उसने अपने छोटे पुत्र इस्माइल का उत्तराधिकारी नियुक्त किया था। किन्तु उसके एक अन्य पुत्र महमूद ने इस्माइल का गृह युद्ध में पराजित कर गद्दी पर अधिपति कर लिया। महमूद का जन्म १ नवम्बर, ६७१ ई में हुआ था और ६६८ ई में सिंहासन पर बैठने के समय उसकी अवस्था २७ वर्ष की थी। उस समय उसके राज्य में अफगानिस्तान और खुरामान सम्मिलित थे। बगला के सतीषा अल-कान्दिर मुस्लाह ने महमूद के पद का मायता प्रदान का और उस



यमीन उल नौना तथा यमीन उल मिलाह की उपाधिया से विभूषित किया। इमानिए उमका वश यमीना के नाम से विख्यात है।

### महमूद का चरित्र

महमूद अत्यंत महत्वाकांक्षी युवक था। कहा जाता है कि जब खनीफा ने उसके पास मायता पत्र भेजा उम समय उसने प्रतिना की कि मैं प्रति वष भारत के काफिरों पर जाक्रमण करूंगा। उसने इस प्रण को निराह्न का प्रयत्न किया। महमूद का आदृति राजाओं की सी नहीं थी। उसका बदन बाल का जोर शरीर हृष्ट पुष्ट था किंतु देखने में वह कुरूप था। शूरत्व भी उसमें जसाधारण काटिका नहीं था फिर भी वह महान सनातन्यक जोर उतना ही अच्छा सैनिक था। वह बुद्धिमान तथा चतुर था और मनुष्या का परखन का रायाचित गुण उसमें विद्यमान था। साहस बुद्धिमत्ता और साधन सम्पन्नता उमके विशेष गुण थे। इमके अनिरिक्त वह अत्यंत बमठ जोर महत्वाकांक्षी था। राजनीति में वह दक्ष था और उसके स्वाभाविक हाव भाव भी शासक के सथे। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं था जिसके बिना उमका काय नहीं चल सकता था। अपने सम्पत्त में आन घान प्रत्येक व्यक्ति का वह अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए साधन मात्र समथता था। प्रायः हर हवीय का मन है कि जीवन के प्रति महमूद का दृष्टिकोण पूणतया सामारिक था और अधभक्तिपूर्वक मुस्लिम उनमा की आनाआ का पावन करने के लिए वह तयार न होता था। विद्वान रत्नक की यह भी धारणा है कि महमूद धर्मांध नहीं था। किन्तु उसका जीवन और कार्यों से स्पष्ट है कि इस्लाम में उमकी रुद्धा था और वह यह भी समथता था कि अकारण ही भारतीय काफिरों के राज्य पर आक्रमण करके मैं इस्लाम की सेवा कर रहा हूँ। उसका दरबारा इतिहासकार उतबा उसका भारत पर आक्रमण का जिहाद समझता था जिमका उद्देश्य इस्लाम का प्रचार और कुफ्र का मूनाच्छेदन करना था। अपना तारीय ए-यमीना में वह निखता है मुत्तान महमूद ने पहले मीजिस्तान पर आक्रमण करने का सक्थ किया किंतु बाद में उसने हिन्द के विरुद्ध जिहाद (धम युद्ध) करना ही अधिक अच्छा समथा। उतबी यह भी निखता है कि मुत्तान ने अपने मत्रिया की सभा बुनायी और उनसे कहा कि मुझे आशीवादा नहीं जिससे मैं धम का पण्डा ऊचा करके सत्कार का धन विस्तृत करने काय का प्रकाशित करने और याय का जना का दूत करने की अपना धम याजना में सफथता प्राप्त कर सकूँ। इन शब्दों से स्पष्ट है कि महमूद के समकालीन विद्वानों का विश्वास था कि भारत पर आक्रमण करने का नीति का उमका मुख्य उद्देश्य धम प्रचार था। उमके अनिरिक्त और भा कारण थे इसमें सन्देह नहीं। महमूद महत्वाकांक्षी था और अधिक से अधिक विस्तृत साम्राज्य पर शासन

करन की उसकी अभिलाषा थी। सभी पराक्रमी लोग की भांति वह भी धन का लाली था और उसने भारत की अपार धन सम्पत्ति का कहानिया सुन रखी थी। इनके अतिरिक्त महान यात्रा होना के लाल वह सैनिक यश का भी भूता था। वह यथाशक्ती था और पन्ना में स्थित एक शक्तिशाली तथा शत्रुतापूण हिन्दू राज्य के अस्तित्व में उसका स्वतन्त्रता और विश्वपकर आक्रमणकारी नाति को खतरा था इस बात का भी वह भतीभाति समझता था। इहा सब कारणों से सिंहासन पर बैठने के उपरांत शीघ्र ही उसने भारत के विरुद्ध आक्रमणकारी नीति जारी रखने का दृढ़ संकल्प कर लिया।

### महमूद के भारत पर आक्रमण

भारत पर महमूद ने कितने आक्रमण किये उन संख्या में इतिहासकारों के विभिन्न मत हैं। लखनवा का राय एक दूसरे के इतने विरुद्ध है कि उनका निश्चित सख्या निर्धारित करना कठिन है। वास्तव में इस विवाद में पन्ना इतना आवश्यक भी नहीं है। हम यहाँ सबसे अधिक महत्वपूर्ण आक्रमणों का उल्लेख करेंगे। सबसे पहला हमला १००० में हुआ और महमूद ने कुछ सीमांत किला पर अधिकार कर लिया। तत्पश्चात् उसने जयपाल के विरुद्ध युद्ध किया। जयपाल का महमूद के इतिहासकारों ने 'इश्वर का शत्रु' लिखा है। इस आक्रमण के समय सुल्तान ने अत्यधिक सावधानता से काम लिया और स्वयं सैन्य का निरीक्षण करके उसमें से १२००० सर्वोत्तम युद्धवार छीटे। २७ नवम्बर १००१ ई के दिन पश्चात् के निकट घाट सप्राप्त हुआ। महमूद ने अश्वाराहियों का सफलतापूर्वक संचालन किया और वीरनाथपूर्वक युद्ध करने पर भी जयपाल की पराजय हुई। जयपाल पुत्रों नातियों तथा अन्य सम्बंधियों और पदाधिकारियों सहित बड़े बंदी हुआ। उतवी लिखता है कि उन सब का जिनके चेहरे पर युद्ध के चिह्न स्पष्ट देख पड़ते थे मजदूर रस्सियों से बांधकर पापियों का भाँति सुल्तान के सम्मुख उपस्थित किया गया। ऐसा प्रतीत होता था माना बांधकर उन्हें नरक भेजा जा रहा है। उनमें से कुछ के हाथ बलपूर्वक पाछे बाँधे गये थे और कुछ का गदन पकड़कर घमा द्वारा धकेला गया था। महमूद के सैनिकों ने जयपाल के कण्ठ से मणियाँ का माला उतार ली थी जिसका मूल्य दो लाख निरहम था। इसी प्रकार उनके साथियों के आभूषण छीने लिये गये। विजनाथ का लूट में इतना धन मिला कि उसका हिसाब लगाना भी असम्भव है। जयपाल मुक्त कर दिया गया और उसके बन्धुओं में उसने महमूद का बहुत-सा धन तथा

१ मर इनका इतिहास जिन् २ परिशिष्ट डा पृ ४२४ ७६— महमूद के सत्रह आक्रमणों का वृत्त, जिनसे प्रायः सब सहमत हैं।

५० हाथा दन का वचन लिया। अपनी इस विनय क उपरांत महमूद जयपाल की राजधानी बहल (उदभण्डपुर आधुनिक उण्ड) तक जाग बढ़ा जीर माग क प्रदेश का उसन निदयतापूर्वक चूटा। विजय तिनक स विभूषित बह अपार धन लेकर गजनी को लौट गया। एक अपवित्र म्लच्छ क हाथा जयपाल का इतना अपमानित हाना पडा इसका वह सहन न कर सका और पश्चात्ताप स पीडित हाकर चिन्ता म उसन अपन का भस्म कर लिया। उसका पुत्र जानन्पाल १०२ ई म सिंहासन पर बठा। इन घार सबटा न जयपाल क मित्रा तथा अनुयायिया को अत्यधिक हतासाह कर लिया हागा। इसक विपरान विजय स महमूद तथा उसकी सनाजा का मनाबल बहुत बढ़ गया हागा और उनकी विजय पिपासा और भा अधिक तीव्र हा गयी हागी।

महमूद का दूसरा महत्वपूर्ण जात्रमण मुल्तान पर हुआ जहाँ पर करमाथा सम्प्रदाय का फतह दाऊद शामन करता था। करमाथी नाग शिया सम्प्रदाय क अनुयायी थ जीर कट्टर सुन्नी उनस घृणा करत थ। मुल्तान का विजय करन स पूव महमूद न पत्रम क बाय किनार पर स्थित भरा नगर पर जात्रमण किया। आनदपाल न उसका विराध किया किन्तु उस माग से धक्कन हुए महमूद १०६ ई म मुल्तान पर चला गया और उम पर अधिकार कर लिया। मुल्तान का महमूद न जयपाल क एक नाती सुखपाल क सुपुत्र कर लिया। जयपाल की पराजय क बाद सुखपाल का महमूद बंधक बनाकर गजनी न गया था और उस बन्धक मुसलमान बना लिया गया था। मुसलमान नाग उस नौशाशाह कहत थ। अबसर पाकर सुखपाल न इस्लाम त्याग लिया और महमूद क विरुद्ध विद्रोह का झण्डा खटा किया। किन्तु १०८ ई म मुल्तान न मुल्तान नौदकर विद्रोह का दबा लिया और सुखपाल तथा दाऊद का कत्ल कर लिया। इस प्रकार मुल्तान महमूद क विस्तृत साम्राज्य का जग बन गया।

जानन्पाल न दाऊद करमाथा का सहायता दा था उसस महमूद बहुत कुपित हुआ। उधर अफगानिस्तान क शासक क हाथा म मुल्तान क चन जान स आनन्पाल क राज्य पर दा आर स जात्रमण का भय उपस्थित हा गया था। उसनिए दाना प्रतिनिधिया म सघष हाना अवश्यम्भावा था। महमूद का विश्वास था कि पजाब पर पूणतया अधिकार किय बिना भारत म आग बलना जीर अपार धन चूटना असम्भव है। आनदपाल भी स्थिति का भलीभाति समझता था। उसन एक विशान सना एबत्रिन का। पत्न्या राजाआ न भी जा तुकों का बड़नी ई शक्ति का राकन क इच्छक थ उसकी सहायताथ सनाए भजा। इस सना का तब आनन्पाल न पशावर की जात्र कूच किया। महमूद न बहल क सामन क मन्तान म उसका मुवाबता किया (१०६ ई म लगभग) और उसका सनाजा पर भयकर प्रहार किया। भारतीय सना

सन विभक्त होकर भाग खड़ी हुई। मम्मू ने उसका खण्डा जीर कागला के पास नगरको के किन का घेर लिया। तान तिन क भयकर युद्ध के बाद नगर पर शत्रु का अधिकार हो गया। मम्मू को नूट म वान-सा घन मिला जिसम माना व जय वम्मूय वम्मूय नम्मिगत था। म नम्म मिघ स नगरकाट तक का समस्त प्रदेश गजनो मुल्तान के अधीन हो गया। मम्मू का प्रतिशमवार उतवी लिखता है कि नगरकाट की लट म त्तना घन मिला कि जितन भी ऊ मिन मके उन पर उम तान लिया गया फिर ना वच रहा जिम अफगना म वीर लिया गया। कथन सिक्का का मूल्य हो ७० ००० टिरहम था। ७ तान तिरहम क मूल्य का माना चाँदी भी मिला जिसका वजन ६०० मन था। मक अतिशक्ति मोती और मुत्तर वम्म भी अत्यधिक मात्रा म प्राप्त हुए। एतन मुत्तर कामल और जडाऊ वरुन मम्मू क ताना न कभा न म्म र। नूट म एक मफ्त चाँदी का घर भा मिला जिमकी वनायत घनी पुष्पा क घरा की मा थी और जा तान गज तम्मा जीर पदर गज चौडा था। उमक विभिन्न भागा का अलग अलग करके पुन पुववत जोन जा मवता था। एक रोमी कपडे का शामियाना भी था जिमकी तम्बा ६० गज जीर चौवाइ २० गज थी। व तन हुए दा मान जीर ना चाँदा क खम्भा पर मघा हुआ था।

इन पराजय के कारण त्रिदूसाही राज्य मकुचित होकर बहुत छोटा रह गया किन्तु बार राजा आनन्दपाल हतात्मा नही हुआ अपितु और भी अधिक दृत्ता क साथ उमन शत्रु का प्रतिरोध करने का मकल्प किया। उमन नमक की पहाडिया क छार पर स्थित नम्मन का अपनी राजधानी बना लिया। छोटी सी सना एवत्रित करके नमन की पत्नीया क क्षत्र म उतत अपनी स्थिति का दृढ करने का प्रयत्न किया। वही पर शक्तिपूर्वक उमकी मृत्यु ना गयी और उमरा पुत्र त्रिलोचनपाल गरी पर पठा। नय राजा का भा मम्मू न चन नम्म तन लिया और वह आगे बढ़ना हो गया। १०१४ ई म अफगानीत घर के बाद उमने नम्मन पर भी अधिकार कर लिया। इस घर म त्रिलोचनपाल के पुत्र भीमपाल न अनुन वीरगा का परिचय लिया। इस पराजय के उपरान्त त्रिलोचनपाल ने भागकर काश्मीर म शरण नी। महमू उपर भी उमका पीडा करता हुआ गया और उमकी तथा उमके मित्र काश्मीर नरेश क सनापति तग की सपुत्र गनाआ का उमन पराजित किया परन्तु मम्मू न काश्मीर म प्रवेश करना उचित नहा ममसा। त्रिलोचनपाल भी शरणार्थी की भाँति काश्मीर म अपन तिन नहा काटना चाँता था और जपन पुवजा क मम्म पत्राव पर शासन करने की उमकी आकाशा थी। मम्मिए नोत्तर वह फिर पुन्नी पत्राव म आ गया और निवालिक पत्नीडिया म पुन अपनी शक्ति की

स्थापना कर ली। उसने बुन्देलखण्ड व चम्पारण राजा विद्याधर का अपना मित्र बना लिया। उस काल में विद्याधर की उत्तरी भारत के शक्तिशाली साम्राज्य में गणना थी। महमूद ने उस सगठन को तोड़ने का उद्देश्य से १०१६ ई. में फिर भारत पर आक्रमण किया और रामगंगा व निरहट युद्ध में त्रिलोचनपात्र का पराजित किया। अत्र त्रिलोचनपात्र के पास बंबल नाममात्र का राज्य रह गया और उसका अनुयायियों में फूट पड़ गयी। उसमें से ही किमी ने १०२१-२२ ई. में उसकी सहायता कर ली। उसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र भीमपात्र हुआ जिसकी स्थिति एक माधारण सामंत की सा थी। १०२६ ई. में उसका भी मृत्यु हो गयी और उसके साथ ही उत्तर पश्चिमी भारत का शक्ति सम्पन्न तथा गौरवशाली सिद्धशाही राज्य भी पतन के गत में विलीन हो गया।

सिद्धशाही राज्य जिसको तुर्कों आक्रमण का प्रथम प्रहार सहना पड़ा था उसका पराभव में महमूद के लिए उत्तरी भारत में प्रवेश करना सरल हो गया। सबसे पहले उसने १००४ ई. में भद्रिण्डा के किले का घरा डाला जो उत्तर पश्चिम में गंगा की घाटी के माग में पत्ता था। स्थानीय राजा विजय राय ने अत्यन्त वीरता में किले की रक्षा की किन्तु महमूद की मजिद शक्ति के सामने वह न थिक सवा और किले पर शत्रु ने अधिकार कर लिया। नगर के उन सब निवासियों का जितना स्वराम जगीकार नहा किया तबवार के घाट उतार दिया गया। तबूट में अतुल्य धन महमूद के हाथ गया। उसने उपरांत उसमें सिद्धशाही राज्य के पार्श्व को घरेन का प्रयत्न किया जिससे उस आर से उसका यातायात के माग को तथा उसकी आक्रमणकारी सेना के विच्छाव को विना प्रवार का सबल उपस्थित न हो सके। इसलिए १०६६ ई. में उसने पत्तह टाऊन करमाथा में मुत्तान छीनने का सबल किया जिसका नाम पत्तह उतार कर चक है।

१०६६ ई. में महमूद ने बल्लभ के पास जानपान को लूटा और नगर काट पर अधिकार कर लिया। उसी वर्ष उसने आधुनिक अजमेर जिले में स्थित नागयनपुर का जान लिया। उस स्थान का व्यापारिक महत्व अधिक था क्योंकि मध्य एशिया तथा भारत के विभिन्न भागों में व्यापारिक वस्तुएं वहाँ एकत्रित होती थीं। ११४० ई. में धानेश्वर के पवित्र नगर को जहाँ चण्डिका का मन्दिर था जीवन के उद्देश्य में महमूद ने गजनी में प्रस्थान किया। माग में एक सिद्ध राजा ने उसका प्रतिरोध किया और उस भारी भविष्यवाणी की। किन्तु जब वह धानेश्वर पहुँचा तो उसे सन्नेयकर आश्चर्य हुआ कि नगर निवासियों ने अपना रक्षा के लिए बाई प्रयत्न नहीं किया। महमूद ने नगर का तबूट और चण्डिका का मूर्ति को गजनी भेज दिया जहाँ उस एक सावजनिक खोज में फँस गया।

१०१५ तथा १०२१ ई के बीच महमूद ने काश्मीर को जीतने का दावा प्रयत्न किया किन्तु दोबारा उस असफल होकर चोटना पना । अन्त में उसने उस सुन्दर घाटी की विजय का विचार ही त्याग दिया ।

हिन्दूशाही राज्य एक बाध की भाँति तुर्की आक्रमणों की राह को रोकने लगा था । उसके टूट जाने से समस्त उत्तरी भारत उसमें डब गया । अवसर का अत्यधिक लाभ उठाने के उद्देश्य से महमूद ने गंगा की घाटी की ओर बूचकिया और १०१८ ई में मथुरा के लिए पश्चान किया जा उत्तरी भारत का सबसे धनाढ्य नगर तथा समृद्धशाही नगर था । श्रीकृष्ण की जन्मभूमि होने के कारण वह हिन्दुओं का ब्रह्मेन्द्र था । नगर भव्यभाँति सुरक्षित तथा विशाल मन्दिरों से सुशोभित था किन्तु रक्षा सेना न पवित्र नगर तथा बलापूण मन्दिरों का बचाने का प्रयत्न नहीं किया । आक्रमणकारी सेना ने अनेक मन्दिरों को ध्वस्त कर दिया तथा उनकी युग युग से संचित सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया । मथुरा विना भय नगर था और घर्माघ मूमनमाना न किन्तु प्रकृत उसका मर्यादाश किया इसका अनुमान हम उसकी कला से लगा सकते हैं । वह लिखता है कि 'महमूद ने एक ऐसा नगर देखा जो यात्रियों तथा निमाण-बला की दृष्टि से आश्चर्यजनक था । ऐसा प्रतीत होता था मानो उसके भवन स्वयं के हैं । किन्तु नगर का सौन्दर्य शान्ति का ही दृष्टि का परिणाम था इसलिए काँ ब्रुद्धिमान यकित्तु उमके वणन को मुनकर विश्वास नहीं कर सकता था । उसके चारों ओर परथर के बने हुए एक हजार द्वार थे जिनका मन्दिरों की भाँति प्रयोग किया जाता था । उनके मध्य में एक सबसे ऊँचा मन्दिर था जिसके सौन्दर्य और मजाब का बणन करने में न किसी शब्द की लगनी समथ है और न किसी चित्रकार का क्लृप्तिका । उस पर मन को स्थिर करना और विचार करना भी कठिन है । मुनाम महमूद अपनी यात्रा के सम्मरण में स्वयं लिखता है कि यदि कोई यकित्तु उस जल भवन का निर्माण करना चाहता उस एक हजार दीवारों की गणना करके धनियाँ बस करनी पड़ेंगी और कुशन से कुशन शिपिया की महायता में भी वह २० वर्षों में पूरा नहीं होगा । उत्तरी के कथनानुसार इन मन्दिरों में मान की बहुमूल्य मूर्तियाँ थी । उनमें से कुछ पाँच-पाँच हाथ ऊँचा थी और एक में १०००० पीनाम के मूल्य की सात मणियाँ जड़ी हुई थी । एक अन्य मूर्ति में शङ्ख ठास नीचे मजडा हुआ था जिसका मूल्य ४०० मणियाँ था । आक्रमणकारियों का अन्त मूर्तियों के नाचे गंगा दुआ बन्धना धन मिला । एक मूर्ति के नीचे तो ४ लाख स्वण मणियाँ के मूल्य का काष मिला । अन्त में अन्य मूर्तियाँ भी चोरी की गयीं हान के कारण बहुमूल्य थी । महमूद ने समस्त नगर का धून म मिला लिया और उसका

कोना-कोना टूट गया। बलावन भी उस टूट गये जल्द ही बलात्कार का बाण्ड हुआ।

मथुरा में महमूद ने कन्नौज की ओर कूच किया जहाँ वह समय में उत्तरी भारत के अनेक सम्प्रदायों की राजधानी रह चुका था। वहाँ पर इस समय गुजर प्रतिहार वंश का अन्तिम शासन राज्यपाल शासन कर रहा था। महमूद के आगमन का समाचार सुनते ही वह भाग पड़ा हुआ। जात्रमणकारी ने नगर को घेर लिया और बिना युद्ध के ही उस पर अधिकार कर लिया।

कन्नौज को भी मथुरा का भाँति टूट गया जल्द ही वहाँ पर भी महमूद को टूट में अपना धन मिला। इसके बाद माग के कुछ छोटे-छोटे जिला को जीता हुआ महमूद गजनी को लौट गया।

सुसन्माना ने पवित्र मथुरा नगरी के मन्दिरों का जो अपवित्र और ध्वस्त किया उससे उत्तरी भारत के कुछ प्रमुख राजाओं की आत्मा को बनी ठेक लगी। इनमें बुदनाखण्ड के चन्द्र राजा का नाम अग्रगण्य है। उस शक्तिशाली राजा ने (उसको गण्ड कहता है और कोई विद्याधर) अपने देश और धर्म की रक्षा के लिए कुछ प्रमुख शासकों का एक सभ बनाया। उस सभ के सन्म्य कन्नौज के राज्यपाल से बहुत असन्तुष्ट थे क्योंकि वह बिना युद्ध किए ही अपनी राजधानी से भाग गया था। अतएव उन्होंने राज्यपाल पर जात्रमण किया और युद्ध में उसका लाना। उस पर क्रुपित होकर महमूद ने फिर भारत पर जात्रमण किया क्योंकि वह अपने विरुद्ध भारतीय नरेशों का सभ बना बनने सेना चाहता था।

११६० में महमूद गजनी से चला। माग में हिंदूशाली राजा जिनाचनपाल ने उसका मुकाबला किया किन्तु उसको पराजित हुआ महमूद पुनः लखण्ड की ओर चला। चन्द्र राजा ने शक्तिशाली मना देकर उसके माग का जबरदस्त करना चाहा किन्तु किसी अज्ञान कारण से रात्रि के समय वह रण-क्षेत्र से पलायन ही भाग पड़ा हुआ। अपनी विजय मना का लक्ष्य महमूद का भा उल्लास भरा गया था किन्तु गण्ड के भाग जान से उसका काम बन गया। उसने चन्द्रा के सम्पूर्ण राज्य का तुर्गे तरह लाना और अनुत्त नूट का धन लेकर ११२० में गजनी को लौट गया।

उसी वर्ष के अन्त में चन्द्रा की शक्ति का पूणतया नाश करने के उद्देश्य से महमूद फिर भारत आया। चन्द्रा के प्रसिद्ध गुरु कारिजग पट्टेचन से पत्र माग में उसने स्वादियर के विना का जानने का प्रयत्न किया क्योंकि वहाँ का राजा चन्द्रा का कर सामान था। परन्तु जिनाचना मुद्दु था कि महमूद उस पर अधिकार कर सके। उसने माग में अधिक विरम्य करना उचित नहीं समझा अतएव स्वादियर के सहायता राजा से संधि करके वह कारिजग





कोना-कोना टूट गया। बलावन म भी वय नूट गय तया जीर बनात्कार का बाण्ड हुआ।

मथरा म महमूद ने कन्नौज की जीर लूच लिया जो तय के समय मे उत्तरी भारत के अनब समाठी की राजधानी रह चका था। वहाँ पर इम समय गुजर प्रतिहार वग का जतिम शामन रायपाल शामन वर रग था। महमूद के जागमन का समाचार सुनत तय वर भाग खडा हुआ। जाग्रमणकारी ने नगर को घर लिया और त्रिना युद्ध व ही उम पर अधिकाय वर लिया।

कन्नौज को भी मथरा का भाति नूट तया हत्या-नाण्ड देखना पग। यहा भी महमूद को नूट म अपार धन मिला। इसके गान माग व कुछ छात्र किना का जीतता हुआ महमूद गजनी का लौट गया।

मुसलमाना न पवित्र मथुरा नगरी के मन्दिग का जो अपवित्र और ध्वस्त किया उमस उत्तरा भारत व कुछ प्रमुख राजाआ की जात्रा को बडी टेम रगी। इनम बुन्देलखण्ड के चन्देन राजा का नाम अप्रगण्य है। तम शक्तिशाली राजा न (उम रोर् गण्ड कहता है और कोई विद्याधर) अपन देश और धम की रक्षा व तिए कुछ प्रमुख शामका का एक सघ बनाया। तस सघ के सन्ध्य कन्नौज व रायपाल स वरत अमन्तुष्ट ध क्याकि वर बिना युद्ध किये ही अपनी राजधाना म भाग गया था। इमलिए उहाने रायपाल पर जाग्रमण किया और युद्ध म उम मार डारा। तग पर कुपित हाकर महमूद ने फि भारत पर आक्रमण किया क्याकि वर अपने विरुद्ध भारतीय नरशा का मानना बनन तेना चाहता था।

१०१६ ए म महमूद गजना म चना। माग म हिन्दूशाली राज त्रिनाचनपाल न उमका मुकाबला लिया किन्तु उमको हराता तया महमूद पुन्दलखण्ड की आर बना। चन्देन राजा न शक्तिशाली मना नकर उमक मा का अवरुद्ध करना चाहा किन्तु किमा अनात कारण म रात्रि के समय। रण-क्षेत्र स यकायक ही भाग खग हुआ। तनी विशान सना का तेग महमूद का भा त्तमा भग हा गया था किन्तु गण्ड के भाग जान स उसरा व बन गया। उमन चन्देन व सम्पूण राय का बुगी तरह नूट जीर अन्त का धन नकर १०२२ इ म गजना को लौट गया।

उमी वष व अत म चन्देन का शक्ति का पूणतया नाग करन के उ म महमूद फिर भारत जाया। चन्देन व प्रसिद्ध गन कानिजग पहुचन म। माग म उमस स्वार्थियर व फिर का अरुल वर प्रपल विद्या क्याकि वर राजा चन्देन का करत सामान था। परन्तु बिना तना मुदू था रि म उम पर अधिकाय न कर मरा। उमन माग म अधिक विरुद्ध करारा - तनी ममणा इमलिए स्वार्थियर व बछवाला राजा म मधि करव वर का





की ओर बढ़ा। कारिजर का घर लिया गया किन्तु सरलता में उम पर अधिहार न हो सका। घेरा लीचकान तक चरना रहा। महमूद गजना जौदन का च्छुव था द्वाविण उमन चरल राजा में सधि कर ली। राजा न कर क रूप में १० तथा मुल्तान का रता स्वीकार कर लिया। कहा जाता है कि उमन महमूद का प्रामा में एक कविता भी लिखी जिस मुनवर मुल्तान डाना प्रमन्न था कि उमन १५ दिन उम रताम क रूप में र लिया। उम मधि क परान्त लूत का धन लकर महमूद गजनी को लौटा गया।

भारत में महमूद का अन्तिम प्रसिद्ध आक्रमण मोमनाथ पर रजा जा कारियावाड क लट पर स्थित था। कहा जाता है कि मामनाथ क मन्दिर क पुजारिया न यह प्रथा मारी थी कि भगवान मामनाथ दूमर देवनाशा में अप्रमन्न र गया है जिसक कारणवश या शुशिकन महमूद यह लान और लून में ममथ रजा है। ब्राह्मणा क उम अहरार में प्रुद्ध हाकर ही महमूद न सामनाथ पर आक्रमण करन का सक्ल्प किया।

१७ अक्तूबर १०२४ में के दिन क एक विमान रता लकर गजनी में घन पना। कहा जाता है कि उम वनी रता का उमन पन्द कभी सचानन नहीं किया था। २० नवम्बर का वह मुल्तान पहुँचा। चूकि उम राजपूताना क उम मस्थान में म हाकर गुजरना था द्वाविण माग में उमने अत्यधिक मावधानी में काम लिया। प्रत्येक मतिक का अपन माय मान दिन क निग भोजन, पानी और चाग न चरन क लिए वास्य किया गया। इसके अतिरिक्त महमूद न सम्पूर्ण रता क निग पयास्त भाजन और पाना का प्रबन्ध किया निम ३०००० उता पर राना गया। जनवरी १०२५ में जय मुल्तान अन्तिमवा पहुँचा ता उम यह देवहार अत्यन्त आश्चर्य रजा कि राजा भीमन्व अपन अनुयायिया मन्ति राजधानी में भाग गया है। जो लोग पीछे रह गय थ उन्हें आक्रमणकारिया न हराया और लूट लिया। किन्तु नगर की जनता तथा मोमनाथ मन्दिर के पुजारी अपने स्थाना पर ही रह रं क्वाणि उनका विश्वास था कि भगवान सामनाथ की उपस्थिति क कारण हम लोग पूषतमा सुरगिन हैं। महमूद न बिना अधिक कर्नाई क स्थान पर अधिहार कर लिया और क्वाणाम की आता ली। ५०००० न भी अधिक श्री-पुण्य मोन के धार उता र लिया गय। मुल्तान न स्वय मोमनाथ का मूर्ति को लीकर उसक रता को गजनी पनना और मनीना भिजवा लिया। कर्ना क मतिवा में और मास मन्दिन की माथिया पर रता र लिया गय जिसमें नमाज क निग जान वान मुमनमान उम अपन परा क नीचे गे ल गये। उम मूर्ति की गणना ममार की महान् आचर्यातन वरनुआ में की जानी था। क मन्दिर क बाच में स्थित थी और नाच अथवा डपर स पिता किमी महार क मधी हुई था। किन्तु

की उसम अत्यधिक थढ़ा थी और मुसलमान जयवा काफिर जो भी उमे आकाश म स्थित ऐसता था जाश्चर्याचित हो जाता था । छत म चरमर पथर के जो टुकड़े गग हूण थे उंह महमूद न हटवा ढिया । तुग्त ही मूनि पृथ्वी पर गिर पनी और तोडकर उमे श्वार श्वार कर ढिया गया । क्या जाता है कि मन्दिर की चूट म २० ०००० नीनार त भी अधिक का घन आक्रमणकारिया का प्राप्त हुआ जिम नेकर मम्मूद मिथ के माग मे गजनी चोट गया । उमका अन्तिम आक्रमण मिथ के जाटा पर १०२७ ई म हुआ क्याकि सोमनाथ म पिठन वप गजनी को जाने ममय माग म जाटो ने उम बहुत क्षति पहुँचायी थी । इम आक्रमण के साथ साथ ही भारत म मम्मूद के कार्यों का इन्तिम भी समाप्त हो गया । १० ० ई म वन्द्य म ममार से चल यसा ।

### महमूद के कार्यों का मूल्यांकन

मम्मूद की गणना एशिया क महानतम मुसलमान शासक म है । वन्द्य विशाल साम्राज्य का स्वामी था जो अरब तथा कम्पियन सागर से गगा तक पना हुआ था और बगदाद क खनीफा के साम्राज्य से भी वही अधिक विस्तृत था । उसन स्वयं अपने वादरत से इम विशाल साम्राज्य का निर्माण किया था । अपने पिता म विरामन म उसे केवल गजनी और गुरामान के प्रात मिने थे । मम्मूद पूण स्वच्छाचारी शासक था । राज्य की सम्पूर्ण शक्ति उसी क हाथ म केन्द्रित थी । उसके मन्त्री उमने सेवक मात्र थे जिन्हें वह स्वयं अगनुमार नियुक्त और पदच्युत किया करता था । उमकी अज्ञा ही कानून थी । राज्य की कायपातिका व्यवस्थापिका तथा यायपातिका का वन्द्य प्रमुग था और वही स्वयं अपना महासनानायक था । उसकी शक्ति तथा अधिरार पर केन्द्रित हो ही अकृश थे—परम्परागत मुस्लिम कानून और मन्त्रि मन्त्रि का भय । किन्तु अपने राज्य म महमूद ने मफतनापूथर अपने कतया का गानन किया और ज्ञानि तथा व्यवस्था कायम रखी । अनी मफतनाओ क कारण उमकी गणना उम युग क मजानतम शासक म है और अमग नी य भी स्पष्ट है कि उसम दर्याल शासन सम्बन्धा याग्यता थी ।

महमूद की मन्त्रि तथा मजान मनानायक था । कहा जाता है कि उसम अगा मरण यकितगत पगत्रम न था किन्तु वन्द्य निर्भीक तथा मात्मी था । मजानायक की हैगित्त म मफतना उमकी अन्तिम प्राप्त हुई कि वन्द्य उपाय मामषा का अयन कुणतना म उपाय कर मरता था । साथ नी साथ प्राचीन व्यवस्था म उमन नवान जीवन पव ढिया । मानवीय चरित्र का वन्द्य अछा पारमी था । अपने अनुयायिया तथा गनिका क गुणा को वन्द्य भनीभाति मरणा था । यका कारण था कि अपनी याजनाओ का मफत बनान के लिए

वह प्रत्यक्ष न अपनी इच्छा और उसकी मायनानुसार वाय करवान म सफ़्त  
 ज्ञाना था। वास्तव म जम म नी उमम सफ़्त नना क शुभ विद्यमान थे। मनी  
 मना ममान तत्त्वा स मिलकर नहा वना था और मम त्रिमिध नम्नों तथा  
 धर्मों के साथ मन्मिनिन ध जम अरव अफ़ान तुव तथा हिंदू। किन्तु अपन  
 माय सनातायकत्व क कारण मम मम एगता के दृ मूत्र म दौध लिया था।

बमा-बमा मान लिया जाता है कि महमूँ न कवन सिद्धि क विद्य ही  
 जा अपनी अयधिन प्राचान और पथरायो ममाज-यवस्था क कारण अशक्त  
 और निरसाह हा चुक थे प्रसाधारण सनिक-कौशल का परिचय लिया और  
 मन्मिनिन उमक सनातायकत्व की अनिरजित भाषा म प्रणमा की जाती है।  
 किन्तु यह मत गतत है कयाकि अपन मय एशिया तथा इरान क मत्रा क  
 विद्य भी उम उननी नी अधिक सफ़्तता प्राप्त द थी जिनता कि भारत म।

ममूँ स्वय मुसमून तथा विद्वाना और कताकारा का मग्ग था। क  
 विज्ञान था और कविता म भी मका कुछ गति थी। गजनी का मम मुस  
 मना, मन्मिनिन विद्यातया और ममायिया म मशाभिन विद्या। माय तथा  
 विद्या विद्वाना का उमन अपन मग्गार म एकत्रिन किया जिनम क  
 मन्मिनिन तथा धार्मिक विषया पर दान विवा किया करता था। अत-अनी  
 किन्तीमी उमुरी तथा फग्गा उसन मग्गार क मवम अधिक म्मायमान गत  
 थ। मका मन्मिनिन प्रसिद्ध विद्वान उतनी था। ममूँ तथा उमक युग का  
 मन्मिनिन जानकारी क लिए म उमो की मायना के क्षणा है। ममूँ न  
 गजनी म एक विश्वविद्यालय की म्मापना की और म्मूण म्मिनिन जगन म  
 प्रतिभावान कताकारा का अपन मग्गार म आमन्त्रित किया।

अपन मग्ग म ममूँ जपना मायप्रियता के लिए भी अधिक विद्यान  
 था। एक विज्ञान न विद्या है कि महमूँ मायप्रिय नामक विद्या का प्रदा  
 और म्मातु स्वभाव तथा शुद्ध विद्या का द्यित था। क म्मू मुन्नी  
 मुसममान था और धार्मिक नियमा का कट्टरता म पालन करता था। वह मग्ग  
 यान का ना छ्यान मग्गता था कि मकी मुस्लिम प्रदा शुद्ध मुन्ना धम मे  
 विचरित न हान पाय। उमन धममन्मिनिन का म्मू लिया और कर्माया मन्मिनिन  
 मग्गार क विद्यातया पर धार्मिक म्मायारा भी किय।

अदीग म्मिनिन विद्यातया क प्राकेमर मुसमून मग्गार का मत है कि ममूँ  
 ममाय न था और भारत पर माग्गार म्मन धार्मिक म्मया का मग्ग नना  
 करन मग्ग क तावक म किय थ। विज्ञान प्राग्गार का मग्ग ना करता है कि  
 मग्गार मग्ग और आनतामापन का मग्गन नना करता है अत ममूँ  
 न मग्ग म मग्गतापूण मग्ग करन ता मग्गार का मग्गार ना किया था।  
 किन्तु ममूँ मग्ग म्मिनिन मुसममान मग्गार था जा अपन धम क नियमा पा

अत्यन्त मावधानी से पालन करता था और हम सम्बन्ध में उसके समकालीन मुसलमानों को किसी प्रकार का सन्देश नहीं था कि वह उस आश्रम मुस्लिम शासक मानते थे। उस युग के सभी मुसलमान हम विषय में एतन्त थे कि भारत पर आक्रमण करके मस्जिदें बनाने की सवाली नहीं थी थी कि उनमें उनके गौरव को उद्धृत किया था। जहाँ तक हम मन का सम्बन्ध है कि इस्लाम हम प्रसार के जातनापीपन और अत्याचारों का समर्थन नहीं करता है जो महमूद ने भारतवासियों पर किया था हम कबल एतन्त ही बातें याद रखती हैं और वह यह है कि इतिहास के विद्वानों को किसी धर्म के मनवादा में प्रयाजन नहीं है। उस ता कबल यह दंगना है कि उनका अनुयायियों के बापों और आचरण पर उसका क्या प्रभाव पड़ता है और यह एक निर्विवाद सत्य है कि महमूद के समय में तथा उसके बाद शताब्दियों तक जो लोग इस्लाम की व्याख्या करने के अधिकारी समझे जाते थे उनका यह स्पष्ट मत था कि गढ़ना का मुत्ताने कभी भी इस्लाम के कट्टर नियमों से विचलित नहीं हुआ था और भारत में अपने आचरण द्वारा उनमें इस्लाम का महत्व उच्च किया।

उस युग के भारतीय महमूद को शतान का अवतार मानते थे। उनकी दृष्टि में वह एक साम्राज्य डायू राजा की तुलना तथा कर्ना का निर्दयी नाशक था क्योंकि उसने हमारे दक्षिण मधुप्रदेश की नगरों को लूटा तथा अनेक मस्जिदों को जो कर्ना के आश्रयजनक आदेश थे ध्वस्त किया। वह सह्याद्रि निर्दोष स्त्रियों और बच्चों को लूट कर ले गया। जहाँ भी वह गया वहाँ अत्यन्त निर्यतनापूर्वक उनमें हत्याकाण्ड किया और हमारे सगुण देशवासियों का उनकी सहायके विरुद्ध मुसलमान बनाया। जो विजय अपने पीछे उज्जैन नगरों और गाँवों तथा निर्दोष मनुष्यों की लूट को छोड़ जाता है उस भावी पापियों कबल जातनापी शासन समझकर ही जान सक्ती है अन्य किसी प्रकार में नहीं।

शासन की हैसियत से भारत के इतिहास में महमूद का कोई स्थान नहीं है। सिद्धशाही राजवंश के पतन के बाद पंजाब का उमरो भौगालिक सन्निवृत्त तथा सामाजिक कारणों से अपने राज्य में मिनाया क्या कि हम प्रवेश पर अधिकार किया बिना उनका यानादान का भाग सुरक्षित नहीं रख सकता था और न वह निभयतनापूर्वक गंगा-यमुना के तटस्थों का पलायन कर सकता था। फिर भी हम मानना पड़ता कि महमूद ने भारत में तुर्कों मत्ता की नींव रखी क्योंकि हमने शिवी की भावा सल्तनत की स्थापना का भाग प्रशस्त किया। महमूद राजनैतिक नहीं था। हमकी शासन सम्बन्धी योग्यता का भाग अनिश्चित रूप से कहा गया है। प्रायः हमारे आरंभ का मत है कि अपना नाम के लिए वह स्वयंसेवक था। किन्तु वास्तव में हमने अपने राज्य में शांति और

व्यवस्था स्थापित करत व अतिरिक्त कुठ भा नहा लिया । उमक नाम स न ता जिमा स्थाया सम्बा का हा सम्बन्ध है और न किता राष्ट्र निमाण सम्बन्धा बाय का । जिमा व धन म उमन भाटा वान प्रयास अवश्य किया किन्तु साधारण जनता क हित व लिए नहा बल्कि एक सकुचिन वग क लिए जीर वट भा मन का अभिलाषा स । लतपून का यह मन उचित हा है— अपन पाछ उसन एक असम्बद्ध और अध्वस्थित साम्राज्य छाया । अपन जीवनकाल म ता उमन र्ण तत्परता जीर मावधानी स उमका गद्या का था किन्तु जस हा उमका आर्वि र्ण वट वह उन्नतिमित्र हान लगा । धन का जमाव तावच उमक जावन का सबम वण वनव था । इसम उमका बाय र्णता जीर क्यानि दाना का बाफा धक्का लगा । शाहनामा तिलक क लिए उमन फिरंगीया का प्रत्येक छत्र क लिए एक स्वण मुद्रा दन का वचन लिया था किन्तु वाण म दन स वनकार वण लिया । मृत्यु र्णया पर उमन गृह माचकर मिसकिया भग कि भी अपना सम्पूर्ण सम्पत्ति पाछ छाण जा रहा हू । य कहानिया अन्तरम मय मन र्ण न हा किन्तु वनस र्ण वान का स्पष्ट ज्ञान हाता है कि उमक जावन काल म तथा सत्ता मृत्यु क वाण दापकान तब साधारण जनता की उमक चरित्र क विषय म क्या धारणा था ।

उन सब बातों का वावजूद भी महमूद चरित्र का दृष्टि म ता नहा किन्तु भाग्यता का दृष्टि म अवश्य हा एक महान मुल्तान था और प्राप्तर हवाय का मन टाव ही ह कि अपन ममकाचीन जागा म बट चरित्र वन स नहा बनि यायता क कारण हा इतना उच्च पण प्राप्त कर सका ।

**महमूद का उत्तराधिकारी**

महमूद का साम्राज्य स्तना बटा था कि उसका उचित रूप म प्रवर्ध नहा किया जा सकता था और इस बात का वह स्वय भनीभाति समझता था । यानिअ अपनी मृत्यु स पहन उसन उमक दा भाग कर लिया । एक अपन बट ममूद का द लिया और दूसरा मुहम्मद का । किन्तु सिहासनाराहण फिर भा शान्तिपूवक न हा सका और जस ही उमकी आर्वि र्ण हू दाना भाषा म उत्तराधिकार क लिए मुद्ध आरम्भ हा गया । ममूद का विजय हुइ । उमन अपन भाई का अधा करक कारागार म डाल लिया और १०५० स १०६० ई तक १० वय राय किया । खनीफा न उम मुल्तान का उपाधि प्रदान का । यद्यपि ममूद पराजमा था फिर भा १०५० ई म सब क मुद्ध म मजबूत न उम पराजित किया जीर भागकर उसन लाहौर म शरण वा । महमूद क अन्तिम जिंदा म तथा ममूद क सम्पूर्ण शासनकाल म पत्राव का शासन नाशर क हाय म था और मुसलमान पन्नाधिकारिया क द्राण स्वाधपणता तथा अयाग्यता क कारण प्रान्त की शासन-व्यवस्था अस्तव्यस्त हा गया । किन्तु तिलक नामक



एक हिन्दू न मसूद की वफादारी व साथ सेवा का । उसका जन्म एक अत्यन्त साधारण परिवार में हुआ था किन्तु अपना योग्यता व कारण मसूद व समय में ही वह मन्त्रा व पद पर पहुँच गया था । परन्तु निरव की वफादारी व वावजूत भी जब मसूद त्हाौर पश्चा उस समय पञ्जाब की दशा सत्तापजनक नहीं थी । सल्जुक व त्थारा पराजित हान व कारण मसूद की सत्ता टिन्नभिन्न हा चका था । माग में उसके सनिका न विनाह कर लिया और उस गद्दी से उतारकर उसके अर्ध भाई मुहम्मद व हवाल कर लिया । मुहम्मद न मसूद का वध करवा लिया और स्वयं सुल्तान बन बठा । परन्तु कुछ समय बाद मसूद व पुत्र मादूद न कुछ प्रमुख सामन्तों की सहायता से अपना एक दल संगठित कर लिया मुहम्मद का पराजित किया और उसका तथा उसके पुत्र का वध कर दिया ।

मादूद दुबल शासक था । उसने १०४० से १०४६ ई तक राज्य किया । उसकी मृत्यु के बाद फिर उत्तराधिकार के लिए युद्ध हुआ और एक के बाद एक कई जयाग्य सुल्तान गजनी की गद्दी पर बठे । उन सबने थोड़े थोड़े समय तक शासन किया और उन्हें भी अपयश ही भागना पडा । पञ्जाब की कठिनाइयाँ के अतिरिक्त उन्हें सल्जुकों का उन्नीयमान शक्ति का भय बना रहना था । किन्तु गजनी के पतनशान राजवश का सबसे बडा सक्क गार के छान्से राज्य के कारण उपस्थित हुआ । गजनी और गार के इन दाना राजवशा में कौटुम्बिक प्रतिस्पर्धा चलता रहा और ११५५ ई में चरमसीमा पर पहुँच गयी । गार के अनाउद्दीन हुसैन ने गजनी पर आक्रमण किया उस धुरी तरह टूटा और पूणतया जाकर नष्ट कर लिया । अतएव उसका नाम जहाँ साज (विश्व का जनाने वाता) पद गया । उसने गजनी के सहस्राधिकारियों का वध कर लिया और स्त्रियाँ तथा बच्चों का दासता की श्रुतनाआ में जकड़ लिया । उसके द्वारा सभा अमरता का खान्दक नष्ट कर लिया गया वचन मसूद का समाधि वच रही । बारहवा शताब्दी के अन्तुय चरण में शहाबुद्दीन मुहम्मद गारा न मसूद के वध का नाश कर लिया ।

गजनीय शासन के अन्तगत पञ्जाब की दशा

मसूद ने पञ्जाब का अपने राज्य में मिलाकर उसका शासन एक सूबदार के मुफुद कर लिया । इस प्रकार सिंध और मुल्तान के बाद यह हमारे देश का तासरा प्रांत था जो उत्तर-पश्चिम से जान वान आक्रमणकारियों के हाथ में चना गया । मसूद पहला तुर्क था जिने हमारे एक प्रांत पर शासन किया और एक राजवश का स्थापना का । उसके उत्तराधिकारियों ने गजनी के पतन राज्य का खा दन के बाद त्हाौर में शरण ला और वहाँ ११८६ ई तक शासन किया जिमेके बाद उनके वध का नाश हा गया । मसूद के उत्तराधिकारियों

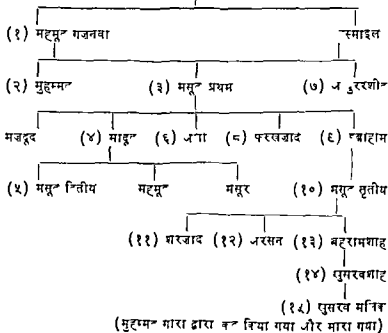
व समय में तुर्की पनाघिनारिया के द्राह और अयाग्यना के कारण पंजाब का शासन-व्यवस्था तिन प्रतिनिधि त्रिगणना गया। मूस्कार जरियारत न प्रान्त का आय का हा गवन कर लिया अतः महमूद ने उस गणना बुलाकर बल्ल करवा लिया। तब बाद अहमद नियारतगोन मूस्कार हुआ जिस यह भा पता न था कि ईमानतारा कन्त किम है और न शासन सम्बन्ध तथा सनिक विषया का हा अनुभव था। १०३२ में उसने राजा अबुन हसन से पगना कर लिया। लूटमार के उद्देश्य में उमन बनारस पर आक्रमण किया जहा बहुत-सा धन उसके हाथ लगा। नियालतगान के इन कामों और इस प्रकार के कुप्रबंध के ममाचार मुस्कार महमूद बहुत घबराया और उसके दण्ड दन के लिए उमन नितक नामक हिन्दू सनापति का भजा। नितक मुद्दर माग्य तथा शिक्षित सनिक था और महमूद के समय में ही उच्च पद पर पहुँच गया था। युद्ध में अहमद नियालतगान मारा गया। नितक ने उसका सिर काटकर महमूद के पास भज लिया। १०३६ ई में महमूद ने अपने पुत्र मादूद का नियालतगान के स्थान पर मूस्कार नियुक्त किया और १०२७ ई में महमूद स्वयं भारत जाया। १ जनवरी १०३६ ई का उमन हासी का घर लिया महमूद का सम्पत्ति में निर्णय जनता का वध किया और स्त्रिया तथा बच्चा का गुलाम बनाया। परन्तु १०६० ई में महमूद का सत्जूका के हाथों भयंकर तार खानी पडा तमनिए गजनी छात्रर वह लाहौर की ओर भागा। माग में उसके अनुयायियों ने निद्राह किया उस बंद कर लिया तथा उसके भाई मुहम्मद का गहा पर बिठता दिया।

उसके बाद मादूद शासक हुआ (१०६० ई)। उमन ताहार के सूबदार नामी का मारकर पंजाब पर अधिकार कर लिया। मादूद के शासनकाल में पंजाब गजना राज्य का अंग बना रहा किन्तु वहाँ का जनता का उसके शासन में तनिक भी श्रद्धा न था। १०४४ ई में तिल्ली के राजा महिपान ने गजनवा सूबदार से हाँमा धानश्वर और बागडा छीन लिये और उन स्थानों में पुन हिन्दू देवताओं का प्रतिष्ठित किया। उमन ताहौर का भा पर लिया किन्तु उस पर अधिकार किया बिना हा उस वापस लौटना पडा। १०४८ ई में मादूद ने अपने बेटे महमूद और ममूर को क्रमशः लाहौर और पशावर का सूबदार नियुक्त किया किन्तु शासन में भ्रष्टाचार और दुबलता प्रवृत्त बनी रहा। दिसम्बर १०४६ ई में मादूद का मृत्यु हो गयी। उसके बाद दाघकाल तक पन्थन और तरबारी उपन्थ चलते रहे। एक के बाद एक कई दुबल स्थान गजनी का गहा पर बटे किन्तु वे नाममात्र के शासक थे। उनमें से इबाहीम ने अवश्य शासितपूर्वक दाघकाल तक राज्य का उपभाग किया और ४२ वर्ष के शासन के बाद १०६६ ई में उसकी मृत्यु हो गयी। उसके पुत्र महमूद तृतीय

ने १७ वर्ष तक राज्य किया। उसकी मृत्यु (१११५ ई) के बाद उत्तराधिकार के लिए युद्ध छिड़ गया जिसमें सल्जूकान असना के विरुद्ध बहराम का साथ दिया। १११८ ई में असना पराजित हुआ और मारा गया। उसके पुत्र तथा उत्तराधिकारी खुसरवशाह का ११६० ई में गुज मुकमाना ने हराकर गजना की गद्दा पर अधिकार कर लिया। वह भागकर पंजाब आया क्योंकि वहाँ वह प्रायः ही अब गजनवी वंश के हाथों में रह गया था। उसकी मृत्यु के बाद (११६० ई) उसका पुत्र मलिक खुसरव पंजाब की गद्दा पर बठा जा कामना हृदय तथा विलासी शासक था। उसके समय में जिना के पनाधिकारी अह-स्वतंत्र शासक बन बढे। इसी समय गजनवी वंश के लिए एक नया सफट उपस्थित हा गया। मुहम्मद गोरी ने जा अपन भाई गियासुद्दान द्वारा गजनी का शासक नियुक्त किया गया था थाडा थाडा करके पंजाब का प्रदेश जीत लिया। ११८६ ई में उसने मलिक खुसरव का कद करके सम्पूर्ण पंजाब पर अधिकार कर लिया और खुसरव को उसकी मृत्यु (११९२ ई) तक कारागार में ही रखा।

वंशावली वृक्ष यामिनो वंश

सुबुक्तगीन



## BOOKS FOR FURTHER READING

- 1 HABIB MOHD Sultan Mahmud of Ghazni
- 2 NAZIM MOHD Life & Times of Sultan Mahmud of Ghazni
- 3 ELLIOT & DOWSON History of India etc Vol II
- 4 AL-BERUNI India
- 5 HAIG W (ed) Cambridge History of India Vol III

## मुहम्मद गोरी के आक्रमण के समय भारत की दशा

बारहवीं शताब्दी के अंतिम दशक में उत्तर पश्चिमी भारत में पञ्जाब मुल्तान और सिंध तीन विदशा राज्य थे।

गज़नवी शासन के अंतर्गत पञ्जाब

पञ्जाब का ग्यारहवीं शताब्दी के प्रथम चरण में महमूद ने जीतकर अपने राज्य में मिलाया था। तब से वह ११८६ ई तक गज़नवी साम्राज्य का अभिन्न अंग बना रहा। जसा कि हम पहले देख जाय है गुज तुर्कों ने खुसरव शाह का गज़नी से मार भगाया था और पञ्जाब में आकर उमन शरण ला था। उसके उत्तराधिकारिया ने भी गज़नी को पूणतया छोड़कर पञ्जाब का हा अपना घर बनाया। तबही उनकी राजधानी थी। इस प्रकार इस दश में सिंध के बाद पञ्जाब दूसरा मुस्लिम राज्य था। जिसमें उत्तर में पशावर तथा सियालकोट सम्मिलित थे उत्तर पूरब में उसकी सीमाएँ जम्मू के हिन्दू राज्य तक पहुँचती थी और पश्चिम तथा दक्षिण पश्चिम में उसकी सीमाएँ घटती जाती रहती थी। चौहान नरेश पृथ्वीराज प्रथम का मुसलमानों से बराबर युद्ध करना पड़ा और उसके उत्तराधिकारी अजमेराज का गज़नी के एक अधिकारी बहनीम ने १११२ ई में हराकर नागौर छोड़ दिया। परन्तु विग्रहराज तृतीय ने ११६७ ई में पञ्जाब में गज़नवी सुल्तान से हामी छोड़ दिया और उसके उत्तराधिकारी पृथ्वीराज द्वितीय ने तुर्कों आक्रमणों से रक्षा करने के लिए उसका किर्तव्य किया। कुछ वर्ष बाद पृथ्वीराज तृतीय ने भटिष्ठा पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार चौहान राज्य की सीमाएँ उत्तर में आधुनिक पीराजपुर तक फैल गयी। महमूद के उत्तराधिकारियों के समय में पञ्जाब के तुर्कों राज्य का पतन होने लगा। चारों ओर भ्रष्टाचार और अमान्यता का राज्य फैल गया। गज़नवी-वंश का अंतिम शासक मन्सूर खुसरव विनासी तथा निरक्षर था। उसने शासन की बागडार पूणतया अपने पन्नाधिकारियों के हाथ में छोड़ दी और वे स्वतंत्र बन बैठे परन्तु इस स्वाभाविक पतन के बाद जून भा के भी-केभा सुल्तान की मना का काट मनापनि पन्नाम के हिन्दू राज्यों पर आक्रमण करने लगा करता था और उन्हें बरबाद करके बहुमूल्य लूट ले

जाता था। किन्तु अशक्त तथा जजरित गज़नवी शासन में इस प्रकार के साहसा-यक्ति अपवाद थे सामान्य नहीं। वास्तव में ग़ाहौर के गज़नवी सुल्तान का मन्व ही राजपूतों के आक्रमण का भय बना रहता था।

**करमाथियों की अधीनता से मुल्तान**

मुल्तान का प्रांत मिथु घाटी के उत्तरी भाग में स्थित था जहाँ शिया सम्प्रदाय के अनुयायी करमाथा मुसलमान शासन करते थे। इस प्रांत की महमूद ने जीत लिया था किन्तु उसका मृत्यु के बाद करमाथा शासकों ने फिर अपने का स्वतंत्र कर लिया था। सम्भवतः उक्त भाग करमाथा राज्य में सम्मिलित था।

**सुघ्र शासन के अंतगत सिंध**

मुल्तान के दक्षिण में निचल सिंध का प्रदेश स्थित था। दबन उसका राजधाना था। महमूद ने इसका भी जीत लिया था। किन्तु उसका मृत्यु के बाद सुय नाम की स्थानाय जाति ने पुनः अपना स्वाधानता स्थापित कर ली थी। सुघ्र नाम मुसलमान थे किन्तु उनका उत्पत्ति के विषय में कुछ भाग नहीं है। करमाथियों का भाति वे भी शिया सम्प्रदाय के अनुयायी थे।

**राजपूतों उनके गुण दोष**

शय भारत में राजपूत राज्य करते थे। वे प्राचीन शत्रुियों के वंशज हान का दावा करते थे और सूर्य तथा चंद्र से अपना उत्पत्ति मानते थे। किन्तु इतिहासकारों का मत है कि राजपूत मिश्रित नस्ल के थे। उनकी नस्ल में प्राचीन शत्रुियों के अनिश्चित उन विदेशी आक्रमणकारियों का रक्त भी बहता था जो बानान्तर में हिन्दू समाज में विलीन हो गये थे। राजपूत शून्धीय थे और निर्भक्ता माहम तथा बाराचिन सम्मान का दृष्टि में उनका चरित्र तुर्कों से कहा ऊँचा था। उन्हें अपनी तनवार चतान की बला पर घमण्ड था और युद्ध उनके लिए एक मनोरंजन का माध्यम था। किन्तु जाति भक्ति का भावना ने उनमें इन गुणों का रक्त लिया था। उनके सामाजिक संगठन का आधार मुख्यतया सामन्तवाद था और सत्तिका यश की विषयों में जन्म जन्तों बलवन्तों था कि उनके अन्य सभी काम केवल इसी उद्देश्य में किये जाते थे। आगे चलकर मह ही उनके पतन का मुख्य कारण सिद्ध हुआ।

**अहिंसवाद के चालुख्य**

पश्चिमी भारत में सत्रस अधिक महत्वपूर्ण राजवंश अहिंसवाद के चालुख्य का था। उनके राज्य किर्गिया द्वारा शासित उत्तर-पश्चिमी प्रान्तों से मिना हुआ था। जयसिंह गिद्धराज (११०२-११४३ ई.) के समय में इस वंश का अधिक

उत्कष हुआ । उसन मानवा क परमार राय का अधिकाग भाग जानकर अपन राय म मिला लिया । चित्तौड क गुहिनीता का उमन पराजित किया और नाडीन तथा काठियावाड म गिरनार का जातकर अपना विजय का पूरा किया । अजमर क चौहाना स उमका सघष हा गया जिमक कारण चातुवया की शक्ति बहुत क्षीण हा गयी और उनका गणना त्नाय र्णी क राजवशा म हान गयी । धीर धार मानवा चित्तौड तथा पश्चिमा और दक्षिणी राजपूताना क अनक प्रदशा न पुन अपनी स्वाधानता स्थापित कर ली । कवन गुजरान और काठियावाड चातुवया क अधीन रह गय । मुहम्मद गारी क जात्रमण क समय मूनराज त्तीय चातुवय वश का शासक था ।

### अजमर क चौहान

राजपूता का दूसरा महत्वपूर्ण राय अजमर क चौहाना का था । एम वश की स्थापना एक सामन्त न की थी । ११वां शताब्दी म अजयपाल न अजमर का नीव डाली । अर्णोराज (११५२-११६४ ई क लगभग) क शासनकाल म कुछ समय क लिए चौहाना को चातुवया की अधीनता स्वीकार करनी पनी । किन्तु शीघ्र हा क फिर स्वाधीन हा गय और उत्तर पूरबी राजपूताना का जीतकर उहान अपना शक्ति का और भी अधिक बना लिया । धीमन्देव (धिग्रहराज तृतीय) न ११५१ ई म तामरो स लिली और कुछ समय उपरात गजनवी वश क लागा स हासी छीन ली । पृवीराज त्नाय इस वश का महत्वपूर्ण शासक हुआ । उसन ११६७ स ११६९ ई तक राय किया । उसी का पुत्र पृथ्वीराज तृतीय (११७०-११९२ ई) था जा रायपिथीरा क नाम स विख्यात है । उसन चन्देन राजा परमर्दी देव का हराकर महावा पर अधिकार कर लिया । किन्तु अपन पडासिया स उसका सम्बन्ध अच्छा न था ।

### कन्नौज के गहडवार

एस युग म सबसे अधिक महत्वपूर्ण राजपूत राजवश कन्नौज क गहडवारा का था । प्रारम्भ म गहडवार राय म कवन काशा (बनारस) कौशल (अवध) कौशिक (लाहाबा) तथा इन्द्रप्रस्थ (लिला प्रन्श) सम्मिलित थ । किन्तु गहडवार राजाभा न धार धार चारा त्तिशाआ म अपन राय का विस्तार प्रारम्भ किया । उनका एम विजय-जानि क कारण कन्नौज की गणना दश क सबसे ब राया म हान गया । गावित्चन्द्र एम वश का महान शासक हुआ । उसक समय म कन्नौज का पूरवा सामा पटना तक पनुच गया । उमका उत्तरा धिकारा विजयचन्द्र हुआ जिमन ११५५ स ११७० ई तक राय किया । उसन भा अपन पूवजा का आत्रमणकारा नीति जारी रली । मुहम्मद गारी का समकालीन जयचन्द्र एम वश का अन्तिम शासक हुआ ।

बन्धनवश के चन्देल तथा चेदि के पतनबुरा

तीसरे जय राजपूत वंश का उत्तम वर्णा आशयन न क्वाचि व शक्ति पाता हा तथा थ अपितु निरन्तर अपन पत्नीमिया के विरुद्ध युद्ध म रत र्त् । न चानिजर और मल्लाहा के चन्तेन तथा चन्दि के कनचुग थ । चन्ता न ११वा शताब्दी म मगर यमुना नज्वाब के दक्षिणी भाग पर अधिकार कर लिया था । बुन्देलखण्ड भाग उनके राज्य म सम्मिलित था । मन्तवमन उस वंश का विख्यात शासक र्जा । उनम मालवा के परमारा तथा गुजरात के मिद्धराज का पराजित किया । आधुनिक मध्य प्रन्त के जयपुर जिन म स्थित त्रिपुरा के कनचुरिया का भा उमम हूगमा । एमा प्रतीत हाता है कि नगभग १२वा शताब्दी के अन्त म कनचुगी चन्ता के अधानस्थ सामन्त ना गय । किन्तु जागे चन्तक चन्ता का भी महत्वाग द्वारा पराजित पाता पया । परमर्त्त न्द उस वंश का जन्मि मन्त्वपूण राजा र्जा । जन्मर के पृथ्वाराज द्वितीय न उस हगकर उनके राज्य का प्रन्त मा भाग चौहान राज्य म मित्ता लिया । हम युग के प्रारम्भ म चन्तल राज्य म मरावा चानिजर खजुगन्ता तथा जजयण सम्मिलित थ सम्भवत चामी भी उनके राज्य का एक अंग था । मानवा के परमारा का राजधानी धार था । अपन महानतम नामक भाज (१०१०-१०११ ई नगभग) के समय म व बहुत शक्तिपावी जोर प्रविद्ध ना गये थ । किन्तु १२वा शताब्दी म चन्ता भी अधपतन हा गया । मुल्म्मन् गागी के समय म हम वंश का नामक एक मन्त्वहान सामन्त था और गुजरात के चानुक्का के अधीन था ।

उत्तरी बंगाल के पान

पूर्वी भारत म पान और सन दो प्रविद्ध राजपूत राज्य थ । एक समय था जयकि पाल-शास्राय म सम्पूण बंगाल और बिहार सम्मिलित थ । किन्तु अत्र व्द वेग म अधपतन की जोर जा र्ता था । १०वा शताब्दी म हम वंश के एक राजा रामपाल ने उत्कल बनिग और कामरूप को जीतकर कुछ समय के त्रिण पुन अपने पूवजा का साम्राज्यपानी प्रतिष्ठा की स्थापना का । किन्तु नामका मृत्यु के बाद पानवशीय शासन पुन प्रमत्त म पॅम गय । ब्रह्मपुत्र की घाटी स्वतन्त्र ना गया । इमा समय त्रिणि बंगाल भा पान राज्य म पृथक् हा गया । चांग और छाट छाट सामन्तों ने गिर ग्याया और स्वतन्त्र रत बठे । कुमागपात (११२६-११००) मन्तपात (११००-११५० ई) आदि हम वंश के परवर्ती शासन अत्यन्त दुर्बल थ । उनके समय म बिहार पान-शास्राय मकुचित पातर छाटा-मा राज्य रह गया । बिहार उनके हाथ म निरत गया तथा इज्रागीराग म नय राजवम उठ गन् हुए । पान राज्य म केवन उत्तरी बंगाल रह गया ।



### बगान का सेन राज्य

पाल साम्राज्य के पतन में सबसे अधिक लाभ सेन वंश का हुआ। सेना के विषय में नोगा की यह धारणा थी कि वह अग्नि में आय था और ११वीं शताब्दी में उन्होंने पूरबी भारत में अपनी मत्ता की नाव डाली थी। १२ वंश के एक सम्पूर्ण विजयसेन (१०६७-१११६ ई.) ने पूरबी बगान पर अधिकार कर लिया। उसने कामरूप कनिंग और अग्नि बगान में निरंतर युद्ध किया जोर मन्त्वपूषण विजयें प्राप्त की। कहा जाता है कि उसने मिथिला (उत्तरी बिहार) के नायके का भी रगया। बगान सेन (११५६-११७० ई.) जोर नरमण सेन (११७-१२०० ई.) इस वंश के अन्तिम शासक हुए। उनके राज्य में उत्तर तथा पूरबी बगान मिथिला और पश्चिम में मिथिला में गंग का कुछ जिन सम्मिलित थे। नरमण सेन के समय में उनकी बढ़ावस्था तथा जानरिव पूर के कारण सेन राज्य बहुत बढ़ गया।

विद्वान् पृष्ठा में हम जो कुछ नियम चके हैं उनसे स्पष्ट है कि उत्तरी भारत अतक उाट छाटे राज्या में विभक्त था जिनका एक दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण व्यवहार था। प्रहृषा एक राज्य पर अनेक राजवंशों के गंग अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहते थे। १२ वंश निणय केवल तत्रवार स ही हा सकता था। अन्तिम १२ सम्पूर्ण युग में उत्तरी भारत के राजपूत राजा अपने पत्नीमिया में निरंतर युद्ध करत रहे। यही कारण था कि वे उत्तर पश्चिमी भारत में पञ्जाब मुत्तान सिंध आदि विन्शा राज्या में हानि वाली घटनाओं की ओर ध्यान न ले सके। ऐसी स्थिति में उनके लिए विशेषी आक्रमणकारियों के विरुद्ध संयुक्त हाना असम्भव था। जनता का विन्शिया के विरुद्ध संगठित होने का ता प्रश्न ही नथा उत्पन्न था क्योंकि उस युग में देश के जीवन में जनता का कोई मन्त्व न था। तुर्कों का पञ्जाब मुत्तान और सिंध में अर्ज म्थायी रूप में उठाने अपन पर जमा नियम मात्र भगान के लिए आपस में संगठित नाना भारतीय नरशा के लिए जोर भी अजिन कतिन था।

१२ वीं सामन-व्यवस्था का आर्थिक मास्वृत्तिक तथा सामाजिक जीवन में बाल भूत परिवर्तन नथा १२ वीं जोर एग बाद में भी १२ वीं दशा थी जा ११ वीं शताब्दी में थी जिगका १२ पत्त वणन कर चुक है। परन्तु वास्तव में १२ वीं मन्वना अब गनिमान नथा चकी था और अन्तिम अधपतन की आरंभ करनी था।<sup>१</sup>

<sup>१</sup> दक्षिण एंगी पुस्तक का पाँचवाँ अध्याय पृ० ६६-५५

**BOOKS FOR FURTHER READING**

- 1 RAY H C *Dynastic History of Northern India Vol II*
- 2 MAJUMDAR R C *History of Bengal Vol I*
- 3 TRIPATHI R S *History of Kanauj*
- 4 NILKANTH SASTRI *The Chola*
- 5 NILKANTH SASTRI *The Pandya Kingdom*
- 6 PANNIKAR K M *A Survey of Indian History*

## मुहम्मद गोरी

### गोर का प्रारम्भिक इतिहास

गोर का पत्थरी जिला गजनी तथा तिरात के बीच पहाडा में स्थित है। १०वीं शताब्दी में वह एक स्वतंत्र राज्य था। एक तार्जिक परिवार के लोग जिनके पूर्वज ईरान में आये थे वहाँ शासन करते थे। इतिहास में वे गमवनी वंग के नाम से विख्यात हैं। १००६ ई. में महमूद गजनी ने गोर के शासक मुहम्मद बिन मूरी को पराजित किया और उसे अपना वरस सामंत बना लिया। उस समय में गोर व शासक को गजनी की अधीनता में रहना पड़ा। किंतु महमूद की मृत्यु के बाद गानी का पतन आरम्भ हो गया। गोर राज्य ने इस स्थिति में लाभ उठाया। दाना राज्या के शासक वंशों में मध्य आरम्भ हो गया। गजनी व मुत्तान बहराम ने गोर के राजकुमार मनिब कुतुबुद्दीन हुसैन का बंधन कर लिया। इसमें कुपित होकर उसने के भाई सफुद्दीन मूरी ने गजनी पर आक्रमण किया और बहराम को पराजित किया। वगैरे बढ़ता गया और उसने एक पारिवारिक वंश का रूप धारण कर लिया। सफुद्दीन के छोटे भाई अनाउद्दीन हुसैन ने गजनी को पूणतया जनाकर राक कर दिया और जमा नि हम पहन निव चके है वह जहा सोज के नाम से विख्यात हुआ। अनाउद्दीन ने सल्जुक-वंश के अन्तिम सम्राट सजर में भी युद्ध किया। सजर उस समय अनेक कठिनाइयाँ से घिरा हुआ था इसलिए अनाउद्दीन नष्ट होने में बच गया। उसने बरमन तुर्किस्तान जर्म बुस्त तथा मुरगाव नदी की घाटी में स्थित गरजिस्तान का जीत लिया। अपने गामन के अन्तिम दिना में बरमन तुर्किस्तान और तिरात में उस हाथ धान पर। किंतु राज्य के अन्य भागों पर उसका अधिकार कायम रहा। ११६१ ई. में अनाउद्दीन की मृत्यु हो गया और उसके एक अन्य भाई सफुद्दीन गरी पर वंग। उसकी मृत्यु के उपरान्त उसका चचेरा भाई गियामुद्दीन गोर की मद्दा पर वंग। उसने गानी पर जो उसका पूर्वजों के हाथों में निरतन गया थी पुन अधिकार कर लिया और कुछ नये प्रदेशों का भी जीतकर अपने राज्य में मिला लिया परन्तु अपनी महत्वाकांक्षाओं के कारण वह ख्वारिज्म के शाह के विरुद्ध युद्ध में परा





गया। प्रारम्भ में गियासुद्दीन को कुछ सफलता मिली और खुरासान के पड़ोस के अनेक जिलों को भी उसने जीत लिया किन्तु अतः में अघखुत के युद्ध में उसकी पराजय हुई। उत्तर पश्चिम में उसने जो अनेक प्रदेश जीते थे उनमें सफल तिरात और बलख उसके अधिकार में रह गये। इस प्रकार हम देखते हैं कि गोर के शासन का उत्तर पश्चिम में अपनी आक्रमणकारी नाति में अधिक नाम नहीं हुआ। इसीलिए उहाँने भारत की ओर ध्यान दिया। गोर के सुल्तान गियासुद्दीन ने ११७३ ई. में अपने छोटे भाई शाहमुद्दीन उफ मुईजुद्दीन मुहम्मद का गजनी का सूत्रार नियुक्त किया। मुहम्मद ने अपने जड़े भाई के साथ अठ्ठा सन्बन्ध कायम रखा और पूरा रूप से उसके प्रति वफादार रहा। यद्यपि गजनी में वह स्वतन्त्र शासक की हैसियत से राज्य करता था फिर भी उसने मित्रता पर अपने भाई का नाम उत्कीर्ण कराया और उसके साथ वसा ही व्यवहार किया जसा कि एक अधीनस्थ राजा को अपने प्रभु के प्रति करना चाहिए। यही मुहम्मद गोरी भारत पर आक्रमण करने वाला तीसरा सुसज्जित नेता था।

### मुहम्मद के आक्रमणों के कारण

मुहम्मद गोरी महत्वाकांक्षी और साहसी व्यक्ति था। गजनी का शासक होने में नाना बहू अपने को पंजाब का यायाचित अधिकारी समझता था क्योंकि पंजाब गजनी-साम्राज्य का अंग रह चुका था। उसके परिवार तथा गजनीवा वंश में मधुप चल रहा था। इस तथ्य ने भी उस पंजाब पर आक्रमण करने के लिए उत्तजित किया क्योंकि उस समय पंजाब महमूद गजनी की पत्नी राजकुमारी शकुन्तला अथवा सुमरव मलिक के अधीन था। इसका अतिरिक्त स्वायत्तता के शाह के विरुद्ध भी गारा का दीघकात्त से युद्ध चल रहा था। अपने उस मुख्य शत्रु के विरुद्ध सफलता प्राप्त करने के लिए भी पंजाब पर आक्रमण करना गोर को एक अच्छा अवसर था। सुल्तान के वरमाधी तथा तानों के गजनीवा से नाना शत्रुओं से गारिया के पिछाव का भयानक सन्त उपस्थित हो सकता था इसलिए उनका नाश करना अभिवाञ्छनीय ही तथा अपिन्तु अति आवश्यक था। वह युग ऐसा था जिसमें मलिक यश को अधिपत मन्त्रव दिया जाता था इसलिए मुहम्मद गोर भी विजय तथा शक्ति की अभिवाञ्छा में उतावला हो रहा था। सभी महत्वाकांक्षी व्यक्तियों की भाँति वह भी एक वृत्त साम्राज्य का निर्माण करने धन और प्रतिष्ठा के लिये चाहता था। वह धार्मिक सुसज्जित था इसलिए भारत में मूर्ति-पूजा का नाश करने और वही व शत्रुओं का मुहम्मद का मन्त्र देन का वह अपना पवित्र कर्तव्य समझता था। किन्तु उसमें नहीं भूलना चाहिए कि मुहम्मद का दृष्टिकोण अतन्त धार्मिक नहीं था जितना कि राजनीतिक। इसलिए उसका मुख्य उद्देश्य

विजय थी न कि इस्लाम का प्रचार। दूसरा उद्देश्य वाछनीय था किन्तु उसकी पूर्ति विजय द्वारा मरतना स हो सकती थी।

### सिंध तथा मुल्तान की विजय

मुहम्मद गोरी का पन्ना आक्रमण ११७५ ई में मुल्तान पर हुआ। उस प्रात पर उस समय करमाथी नाग शासन करत थ जो इस्लाम नही माने जाते थे। मुहम्मद ने नगर पर अधिकार करके उस अपने मूकदार के मुफुद कर दिया। इसके उपरान्त वह ऊपरी सिंध में स्थित उच की ओर बढ़ा। एक कहानी प्रचलित है कि उच पर उस समय एक भट्टी राजपूत राज्य करता था उसकी रानी मुहम्मद के कुचक्रा में फस गयी उसने अपने पति को विप देकर मरवा डाला तथा किता आक्रमणकारी के हवान कर दिया। परन्तु जाधुनिक अनुसंधाना न इस कहानी को गन्त मिद्ध कर दिया है क्योंकि यह निश्चित है कि किसी भी भट्टी राजपूत न सिंध के किसी भी भाग पर कभी शासन नहीं किया और इस समय उच सम्भवत एक करमाथी मुसलमान के अधिकार में था। मुल्तान की भांति उच को भी मुहम्मद ने ११७५ ई में ही जीता और सम्भवत धोखे से। वह सम्पूर्ण सिंध को जीतकर अपने राज्य में मिताना चाहता था इसलिए ११८२ ई में उसने निचन सिंध पर आक्रमण किया और वल्ल के सुन्न शासक को अपनी अधीनता स्वीकार करने पर बाध्य किया।

### अहिलवाड में मुहम्मद की पराजय

मुहम्मद का दूसरा आक्रमण गुजरात के वधन राजा भीम द्वितीय की राजधानी अहिलवाड अथवा पाटन पर हुआ। अहिलवाड का शासक यद्यपि युवक ही था किन्तु वह वार तथा निर्भीक था और उसका पाम एक विशाल मना थी। ११७८ ई में उसने मुहम्मद को भयकर पराजय दी और अपने देश के बाहर खदेड़ा। इससे आक्रमणकारी इतना जातकित हुआ कि उसके दोम वष बाद तक उसने गुजरात पर आक्रमण करने का विचार भी नहीं किया।

### पञ्जाब विजय गजनवी-वश का अन्त

अब मुहम्मद न अनुभव किया कि सिंध तथा मुल्तान को आधार बनाकर भारत का जीतन का प्रयत्न करना एक भाराभूत था और चूकि भारत का सिंधु द्वार पञ्जाब था इसलिए उसने अब अपनी नानि बन्द न की और पञ्जाब में होकर इस देश के मध्य में सुमन का मकल्प किया। ११७६ ई में उसने पञ्जाब पर आक्रमण किया और उस गजनवी शासक सलीम दिया। दा वष बाद उसने ताणौर पर आक्रमण किया। गुमरव मन्त्रिक न आक्रमणकारी की सवा में बट्टमूल्य में

तथा अपने एक पुत्र का वधक के रूप में भेजा। उस मरत विजय न मुहम्मद की आक्रमणकारी महत्वाकांक्षा को और भी अधिक प्रात्माहृत किया। ११८५ ई. में उसने फिर पंजाब पर आक्रमण किया। ग्रामाण प्रत्याका नूटा और मियाँवाट के तिन पर अधिकार कर लिया। तिन की उमन मरमत करायी और अपने मन्त्रिक उमका रक्षा के तिन नियुक्त कर दिया। जब मुसरव मन्त्रिक का स्पष्ट हा गया कि आक्रमणकारा समस्त पंजाब को उमक दुबत हाया में छीनत पर तुना हुआ है इमतिण आमक्षा के लिए उस प्रयत्न करना ही पत्ता। उमन नमक की पत्ताडिओ के प्रत्या म रत्न वानी गोवाकर नाम की सिद्ध जाति में मिश्रता कर ली जिनकी जम्भू के राजा चक्रवर्त में शयुता थी। उनही मन्त्रायता से मुसरव न मियाँवाट का पग कित्तु मुहम्मद की मना न उम माग भगाया। ११८६ ई. में मुहम्मद स्वयं पंजाब आया और ताहौर का पग किया। उमन चक्रवर्ते में पत्तन ली मिश्रता कर ली थी। कहा जाता है कि इस सिद्ध राजा के निमन्त्रण पर हा मुहम्मद न पंजाब पर आक्रमण और मियाँवाट के तिन पर अधिकार किया था। यद्यपि जम्भू के नय राजा विजयवर्त न मुहम्मद की मन्त्रायता की फिर भी केवल मन्त्रिक-वल में ताहौर विजय करत का उस आशा न ली। उमतिण उमन कूत्नीति और उन से काम किया। उमन मुसरव को अपन धर्म में मुतावात के तिन बुताया और उमकी मुग्धा का जिम्मेदार अपने ऊपर न ली। किन्तु उमक माय विरवाम धान किया गया और उम वनी वनाकर गरजिम्नान भिजवा लिया गया जहाँ मुहम्मद की जानानुसार ११६० ई. में उमका वध कर लिया गया। उस प्रकार मुतान मिथ और ताहौर माग माध्याय के जग वन गय पंजाब में गजनवी शासन का अन्त हा गया और इम प्रान्त पर अधिकार ली जान में मुहम्मद के तिन भाग्य की विजय का माग गुन गया।

हिन्दुस्तान से उसका सम्पर्क

अब मुहम्मद के राज्य की सीमाएँ जजमर तथा सिन्धी के पगदमी राजा पृथ्वीराज के राज्य का लून गया। राजपूता को मुयुतगीन और मन्भू गजनवी के गमय में ही मुयतमान तुर्कों का बुद्ध अनुभव था गया था और वे अपन नय पत्नीसिया की आक्रमणकारा प्रवृत्ति का ११वाँ शताब्दी के सिद्ध राजाओं की अग्रगण्य अधिन जल्दा तर्क समस्त धर्म। किन्तु यह कहना गलत हागा कि मुयतमानों के सम्पर्क में आन में वे अधिक बुद्धिमान हा गय धर्म। वास्तव में वे भी उन्ही उम ताहौर में शासन करत वान पतनशील गजनवी-वर्ग के मात्सी गनापतिया के उम तुर्क धावा का सामना करना पत्ता था। तिन धावा न उम तुर्कों मन्त्र के प्रति गतग कर लिया था। कुछ राजपूत राजाओं न विपत्तय रघोज तथा जजमर के गामका न अपना मनाआ के उचित गगन



की आर भी ध्यान दिया और गजनविया के पञ्चास प्रांत व सीमांत जिला पर आक्रमण किया। चौहाना न हमी और भट्टिणा की जीत दिया था जिसका हम पहले ही उल्लेख कर चुके हैं। इस अनुभव को ध्यान में रखते हुए हम कह सकते हैं कि हम समय भारत के गणपूत राजा जिन्ही आक्रमणा ने प्रति उतत जमावधान न थे जितने कि उनके पूर्वज १३वीं शताब्दी में मुहम्मद गजनवी के धावा के समय थे।

### तराइन के युद्ध में मुहम्मद की पराजय

गोर में आने वाली आक्रमणकारी सेनाओं का प्रथम प्रहार अजमेर के चौहान नरेश को करना पड़ा। उसका राज्य अजमेर में तब तक स्थित था कि वह अपने देश का उत्तर पश्चिमी सीमाओं की सुरक्षा का उत्तरदायित्व उभरी पर था। उत्तर पश्चिम से आने वाले मुहम्मद आक्रमणा के विरुद्ध भारत के सिन्धु की रक्षा करने के लिए चौहाना ने भट्टिणा तब अपने राज्य के सीमांत नगरों का मुहम्मद की ओर की थी। मुहम्मद गौरी ने पहले आक्रमण भट्टिणा पर किया और ११८६ ई में उस पर विजय। ऐसा प्रतीत होता है कि पृथ्वीराज तैयार नहीं था और आक्रमण भी धीमे से किया गया था जो नगर की रक्षा करना को पराजित होकर हथियार डालने पर।

विजय की रक्षा के लिए मुहम्मद ने जिजाउद्दीन नामक सेनापति की अधीनता में सेना नियुक्त कर ली। किन्तु जैसे ही सुतान वापस जाने को तैयार हुआ पृथ्वीराज जिन्ही को छीनने के उद्देश्य से सेना तैयार कर चुका गया। कहा जाता है कि पृथ्वीराज की सेना में दो लाख अश्वारोही और सात हजार गधी थे। किन्तु यह कथन निश्चय ही अतिरिक्त है। वीर चौहान का सामना करने के लिए मुहम्मद को फिर मुहम्मद पना। ११९१ ई में भट्टिणा के पास तराइन गाँव के मैदान में आने सेनाओं में युद्ध हुआ। पृथ्वीराज के सेना ने सुतान पर भयंकर प्रहार किया और उसे बुरी तरह घायल। मुहम्मद के स्वयं गतरे घाव लगे और उसका एक सखी अफसर उग्र घाट पर विरानाकर युद्धक्षेत्र में भगा दिया गया। पृथ्वीराज ने पीठकर भट्टिणा का जिला पर विजय किन्तु सेनापति जिजाउद्दीन ने उसका छीनने में १३ महीने तक लड़ाई।

### तराइन के युद्ध में पृथ्वीराज की पराजय

भारत के हिन्दू राजाओं के साथ मुहम्मद की यह दूसरी पराजय थी। अन्तिम में भीमचन्द्र द्वितीय के साथ उस जागरूक सेनापति की उमंग भा अधिन अधमात उस हम पराजय के कारण समाप्त पड़ा। जो गजनी खोले

पर वह कभी सुख से नहीं साया और सबके चिन्ता तथा कर्ना में लिप्त रहा। इस हार का बदला लेने के लिए उसने भीषण तयारियाँ की और जब वह पूरी हो गया तो १ लाख और २० हजार चुनी हुई अश्वाराही सना का लेकर भारत की ओर चल पड़ा। नाहीर पहुँचकर उसने बिबाम उल मुल्क नामक अपने दूत को पृथ्वीराज के पास भेजा और उससे अपना अधिपतता स्वीकार करने का कहा। अपना तयारियाँ पूरा करने तथा पृथ्वीराज का धाये में डालने के उद्देश्य से मुहम्मद ने यह जान चली थी किन्तु चौहान नरेश आसानी से उसका काम चाल में नहीं जाया। वह तुरन्त ही भटिण्डा की ओर चल पड़ा और अथ राजपूत राजाओं का भी अपना सहायता के लिए आमंत्रित किया। सम्मिलित सना का लेकर जिसमें परिश्रमा के अनुसार पाँच लाख घुटसवार और तीन हजार हाथी थे (यह गणना विश्वय है अतिरिक्त हाथी) पृथ्वीराज ने तराइन के ही युद्धक्षेत्र में आम्रमणकारों का पुनः मुकाबला किया। मुहम्मद ने अपना सना का पाँच भागों में विभक्त किया। चार को उसने राजपूतों पर चारों ओर से आम्रमण करने का भेजा और एक का रिजव में रखा। मिनहाज उस सिराज लिखता है कि सुल्तान ने अपनी सना का योजनानुसार युद्ध के लिए रखा किया। उसके मुख्य अंग का जिसके पास यण्ड शामियान हाथी गति चली सभ्या में थे उसने पीछे रखा। युद्ध की याजना पूर्ण रूप से निश्चिन्त करके वह सावधानी से आगे बढ़ा। घुत्सवारा का जिनके पास भारी हथियार नहीं थे, उसने दस-दस हजार को चार टुकड़ियों में बाँटा और दाएँ-बाएँ तथा आगे पीछे चारों ओर से शत्रु पर आम्रमण करने के लिए भेज दिया। जब शत्रु ने आम्रमण के लिए अपनी सना दकट्टा की तब इन अश्वाराहा टुकड़ियों ने एक दूसरे की सहायता ली और पूरे जाय से उस पर धावा बाल दिया। इस रण-नीति में काफिरा की पराजय हुई सबशक्तिमान इश्वर ने हम विजयी बनाया और शत्रु सनाएँ भाग खड़ी हुए। राजपूतों ने जयन्त बारता से युद्ध किया किन्तु मुहम्मद की युद्ध-नीति के आगे वह जब चारों ओर के प्रहारों का झलत हुए थक गये तब संध्या समय मुहम्मद ने अपनी रिजव दुनियाँ का उन पर आम्रमण करने के लिए भेजा। इस अतिम प्रहार का राजपूत यादों न हो सका। पृथ्वीराज का सनापति ग्राडराव जिनमें तराइन के प्रथम युद्ध में गारी का पराजित किया था मारा गया और पृथ्वीराज का भी उत्साह भंग हो गया। पृथ्वीराज अपने हाथी का छाडकर एक घाट पर सवार हुआ और युद्धक्षेत्र से भागा किन्तु सरस्वती के पास पकड़ा गया और मुहम्मद पूर्णरूपेण विजयी हुआ।

पृथ्वीराज की कब्र और कब्र मृत्यु हुई इस सम्बन्ध में तक में अधिक मत है। मिनहाज उस सिराज के अनुसार तो उसका तुरन्त ही पकड़कर बंध कर

रिया गया था। किन्तु हमन निजामा का कथन है कि मुगलमान उस पक्कर अजमेर ल गय जहाँ कुछ समय बाद विनाह क अपगध म उसना बध कर रिया गया। यह दूसरा मत सही प्रतीत आता है क्योंकि पृथ्वीराज क कुछ सिक्क जब भा बिद्यमान ह जिन पर मस्जुत म हम्मीर खुदा हुआ है। इससे यही विजित हाना है कि पृथ्वीराज न मुहम्मद की अधानता स्वाकार कर ला थी और तराइन के तृतीय युद्ध क बाद भा वह कुछ समय तक जीवित रहा था। चदवरदाई का कथन है कि मुगलमान पृथ्वीराज का बंदा बनाकर गजनी न गय और वहाँ मुहम्मद गारी का मार डालन क अपराध म उसका बध किया गया परंतु तथा स इस कथन का पुष्टि नही होती।

तराइन के दूसरे युद्ध क परिणाम

तराइन का दूसरा युद्ध भारतीय इतिहास की एक युग परिवर्तनकारा घटना है। यह युद्ध निर्णायक सिद्ध हुआ और इसमें मुहम्मद गारा की भारत विजय निश्चित हो गयी। उसने चौहाना की सैनिक शक्ति को पूणतया भग कर रिया। तराइन की विजय क उपरान्त मुहम्मद न शाघ्र हा हासी कुहराम सरस्वता जादि सैनिक महत्त्व क स्थाना पर अधिभार कर लिया और उनकी रक्षा क लिए तुक सैनिक नियुक्त कर दिये। हमारे इतिहास म पहली बार मुहम्मद न हि दुस्तान क बीचोबीच एक विदेशी तुर्की राज्य की नीव डाल दी किन्तु उसने अनुभव किया कि पृथ्वीराज क सम्पूर्ण राज्य का शासनभार सीधा अपने ऊपर न आना अनुपयुक्त था अतः उसने पृथ्वीराज क एक पुत्र का अपने सामन्त की हैसियत स चौहाना का गद्दा पर बठा रिया। इसी प्रकार खाडराव क उत्तराधिकारी एक तामर राजकुमार का उसने दिल्ली का शासक स्वीकार कर लिया और दिल्ली क पास इन्द्रप्रस्थ म अपने सबसे अधिक विश्वसनाय नामक कुतुबुद्दीन ऐबक की अधीनता म एक तुक बना रण दा। सभी विजित स्थाना म हिन्दुओं क मन्दिर तोड गये और उनक स्थान पर मस्जिदें मनी का गया तथा मुस्लिम परम्परा के अनुसार सभी स्थाना म इस्लाम को राज्य धर्म धापित कर रिया गया। अजमेर म मुगलमाना न मन्दिरा को ध्वस्त किया और विग्रहराज चौहान गारा मस्थापित प्रसिद्ध विद्यालय का मस्जिद म परिवर्तित कर रिया।

यलदराहर मरठ तथा दिल्ली पर अधिकार

इस महत्वपूर्ण सफलता क बाद मुहम्मद गारा विजित स्थाना का एक का अधानता म छाडकर गजना का नोट गया। उसकी अनुपस्थिति म अजमेर म भयकर विनाह हुआ जिसमें चौहाना न अपना स्वाधीनता पुन प्राप्त करने तथा तुर्कों का मार भगान का प्रयत्न किया और जयचम नामक एक हिन्दू

सन्तार न हौसा म तुर्की सना को घेर लिया । एवक वहा पहुँचा विद्रोही का पराजित किया और वागड क पास मुद्ध म उसको मार डाला । इमक उपरांत एवक न धास स टोर राजपूता का हराकर उनसे बुलदशहर जधवा बरन छीन लिया । डार मरदाण चन्द्रसन ने वीरता स शत्रु का मुकाबला किया किन्तु उसका एक सम्बन्धी अजयपान एवक स जा मिना और उससे भारी रिश्वत लेकर अपन परिवार का नाश करन म शत्रु की सहायता का । इस विजय क बाद एवक ने मरठ पर अधिकार कर लिया और उसकी रक्षा क लिए तुर्की सनिक नियुक्त कर दिया । ११६३ ई म तोमर राजा का हटानर उसन लिहनी पर अधिकार कर दिया जिसका उसन बहाना यह किया कि राजा न तुर्की सनिको क प्रति शत्रुतापूर्ण व्यवहार किया था । उसी वप स लिहनी मुहम्मद गारा क भारतीय राज्य की राजधानी हा गया ।

### अजमर म दूसरा विद्रोह

भारतवामा तुर्की शासन का सन्न न कर सकत थ क्याकि वह विन्शा और मुस्लिम था जन पृथ्वाराज क एक भाई हरिराज न मुहम्मद गारा का अनुपस्थिति का लाभ उठाकर रणथम्भीर का पर लिया जहा एवक न तिवान पल मुल्क का अधीनता म एक तुर्की फौज रख दा था । कुछ चौहाना न पृथ्वाराज क पुत्र का ना जिसन तुर्की की अधीनता स्वाकार कर ली था, अजमर म मार भगाया । अन चौहाना का दमन करन क लिए एवक का स्वय जाना पया । उसन रणथम्भीर तथा अजमर को पुन जीत लिया और अपन स्वामी क सामन्त का पुन अजमर का गद्दी पर बिठला दिया । किन्तु वह वीर हरिराज का न हरा सका । इसी समय डोर राजपूता न विद्रोह किया जिसक कारण एवक न दूसरी बार यमुना का पार किया और ११६४ ई म अलीगढ पर अधिकार कर लिया ।

### कन्नौज क जयचन्द को पराजय

जिस समय एवक राजपूता क विद्रोहा का दमन करन म लगा हुआ था, मुहम्मद गारी अपनी सना लेकर फिर हिन्दुस्तान म जा पहुँचा । इय बार उसका उद्देश्य कन्नौज तथा बनारस क राजा जयचन्द को पराजित करना था । मुसलमान लखना न जयचन्द का उय समय का महानतम हिन्दू राजा कहा है । लिहनी की सना क साथ एवक भी मुहम्मद की सहायता क लिए पहुँच गया । इस सम्मिलित सना का लेकर गारा बनारस का आर बढ़ा । गन्धार नरम जयचन्द न उनका भारत क प्रभु ब क लिए पृथ्वीराज क विरुद्ध सपथ किया था और तुर्की आक्रमणकारों क विरुद्ध उसका सहायता नहा की थी । अन अब उस अकन ही सहना पया । उसक म्काउटा की शत्रु स छुटपुट

घण्टे हुए किन्तु वे पराजित हुए। तब जयचन्द न स्वयं आक्रमणकारी ब  
विरुद्ध कूच किया और कन्नौज तथा इटावा के बीच यमुना के किनारे चन्दवार<sup>१</sup>  
नामक स्थान पर उसका सामना किया। उसने शत्रु पर भयकर प्रहार किया।  
गारी घुटन टकन ही बाता था कि राजा की जीत में एक घातक तीर लगा  
और वह मारा गया जिससे कि दू सना में घबराहट फैल गयी। जयचन्द की  
मृत्यु से हमारी सना में जा भगदड़ मची उसका मुहम्मद न तुरन्त ही नाम  
उठाया और अपने सैनिकों को इकट्ठा करके उस सड़ दिया। यह घटना  
११६४ ई. की है। तराइन की भाँति चन्दवार की विजय से भी एक बड़ा  
राज्य मुहम्मद के साम्राज्य में सम्मिलित हो गया। विजयान न तुरन्त ही  
बनारस का आर कूच किया जो जयचन्द का प्रिय निवास-स्थान था। वहाँ  
एक भारी काँच उसका हाथ लगा जिस वह १४० ऊँचा पर लाकर ल गया।  
जयचन्द के राज्य के कुछ अन्य महत्वपूर्ण नगरों पर भी जहाँ गहलवारों के  
खजाने व मुसलमानों ने अधिकार कर लिया परन्तु राजधानी कन्नौज का वे  
११६८ ई. तक भी विजय नहीं कर पाये और जयचन्द के वंशज उसका राज्य  
के एक छोटें में भाग पर शासन करते रहे क्योंकि उस समय उसका जीवन  
याग्य मुहम्मद में शक्ति नहीं था। ऐसा प्रतीत होता है कि कन्नौज जीतने पर  
भी तुर्क उस पर बहुत दिना तक अधिकार न कायम रख सके और गहलवारों  
ने उस शासन ही फिर जीत लिया था।

### अजमेर में तीसरा विद्रोह

इस विजय के बाद मुहम्मद गज़नी का लौट गया। उसका अनुपस्थिति में  
यहाँ अनक विद्रोह हुए जिनका बुतुबुद्दीन का दमन करना पड़ा। उसमें पहला विद्रोह  
कान (अलाग) के निकट हुआ जिसका मुख्य कारण टार राजपूतों का प्रसन्न  
स्वातंत्र्य प्रेम था। काल के रक्षक तुर्कों सैनिकों की सहायनाथ स्वयं  
बुतुबुद्दीन का दिल्ली छोड़कर जाना पड़ा और विद्रोहियों का दमन करने में  
वह सफल हुआ। दूसरा विद्रोह अजमेर और उसके आसपास के प्रदेश में  
हुआ। राजपूतों ने विशपकर चौहानों ने राजस्थान से तुर्कों का भगाकर  
अपना दासता का अन्त करने के लिए यह तीसरा प्रयत्न किया। इस विद्रोह  
का कणधार पराक्रमी हरिराज था जो पहले दो बार अपनी वीरता का परिचय  
दे चुका था। उसने अजमेर से अपने भतीजे का मार भगाया और दिल्ली पर  
आक्रमण करने की तयारी करने लगा। दिना की आर कूच करने वाला  
राजपूत मना के राकन के लिए एवक ने स्वयं शीघ्र अजमेर का आर प्रस्थान

<sup>१</sup> जाधुनिक अनुसंधानों से ज्ञात होता है कि फाराजाबाद से दक्षिण का  
दूरा पर स्थित चन्दवार गाँव के पास यह युद्ध हुआ होगा।

रिया । राजपूत सना क सनापति गट्टराय न एवक द्वारा घिर जान क डर स पीछ हटकर जजमर क दृढ़ किल म शरण ली । हरिराज भी वहा पच गया । एवक न किल का घर लिया । कुछ दिना बाद भूख स मरन क डर स हरिराज चिता म जनकर भस्म हा गया । एवक न पुन जजमर म प्रवेश किया पृथ्वाराज क पुत्र का हटाकर उसक स्थान पर एक तुर्की सूत्रदार नियुक्त किया और पृथ्वाराज क पुत्र को रणधम्भौर का किला द लिया ।

**ग्वालियर क किले पर अधिकार**

११६५ ६६ इ म मुहम्मद न फिर भारत पर जात्रमण किया जोर जादा भटा राजपूता की राजधानी वयाना का घर लिया । राजा कुमारपाल न अगार क किल स शत्रु का मुकाबला किया किन्तु अंत म उस हथियार डानन पड । जात्रमणकारा न धगार और विजय मन्दिगढ क किला पर अधिकार कर लिया जोर उनका रक्षा क लिए बहाउद्दीन तुगरिल की अधीनता म तुर्की सनिक नियुक्त कर लिये । तुगरिल न सुल्तान काट म एम सनिक चौकी कायम की जिस आधार बनाकर वह मदानी प्रदेशा म सनिक कायबाहा कर सकता था । एम काय का पूरा करन क उपरांत मुहम्मद न ग्वालियर क किल का घरा डाला किन्तु कितना इतना मुद्द था कि बिना पीछकारनीन घर क उस जातना कठिन था । अपन सनिक यश का वहा पचा न लग जाय एस डर स मुहम्मद न ग्वालियर छाड दिया जोर राजा स सधि कर ली जिसक अनुसार राजा मुलक्षणपाल न सुल्तान की अधीनता स्वाकार कर ला । किन्तु मुहम्मद न शाघ्र हा एन शर्ती का उल्लंघन किया जोर थोड ही समय बाद किल पर अधिकार करन क लिए वयाना स तुगरिल का पुन भेज लिया । एम साहसा तुक न ग्वालियर क सभी यातायात के भाग काट दिय और पास क मदाना स उसका पूणतया सम्बन्ध बिच्छे कर लिया जिसक कारण किल म रस पडैचना मुश्किल हो गया । राजपूत डड बप तक युद्ध करन रह किन्तु अंत म कितना छान्न क लिए उह बाध्य हाता पडा जोर तुगरिल न उस पर अधिकार कर लिया ।

**राजस्थान म चौथा विद्रोह**

राजपूता क लिए कित्ती शासन क कडव घूट का निगलना मुश्किल था । ११६६ ई म चौथी बार उहान तुर्की हुकूमत का जुआ उतार फवन का प्रयत्न किया । इस बार म तथा चौहाना न श्रागणन किया । उहानि अन्तिन बाद क चालुय राजा का आमन्त्रित किया और उमक साथ तुर्की सत्ता का उगाड फवन क लिए एक सयुक्त मार्चा कायम किया । उहानि जजमर का तुक रणा-सना का घर लिया । अंत उसन एवक स सहायता क लिए जारदार अपील

की। एवम् प्रयुक्त जजमर गढ़ेचा। किन्तु राजपूता न उन पराजित किया और उसन भागवत् जजमर व किन म शरण ली। राजपूता न फिर किन का धर लिया। सौभाग्य स उभी समय गजनी स घुमुव जा गयी जोर राजपूता का घरा उठाना पडा। अब एवम् का बदला उन का जबसर मित्त। उनन गुज रात व चालुक्य राजपूता की राजधानी अहिलवा पर आक्रमण करन की याजना बनाया। चानुक्या न आवू पवत व पास एवम् व विरद्ध माचा स्या किया। चानाकी स एवम् न उह उस सामरिव महत्त्व व स्थान स नाच पानत म खीच लिया। वही पर दाना साजा म युद्ध हुआ जिसम एवम् न विजय हुई। इसका दा मुख्य कारण थ प्रथम उसका सनिका की गति इतनी क्षिप्र था कि सरनता स उह आवश्यकतानुसार विभिन्न लिशाजा म घुमाया जा सकता था जोर दूसर एवम् न युद्ध म सहसा-आक्रमण की नानि स काम लिया। इस विजय व बाद एवम् न अहिलवाड का जिस चानुक्य राजा भीम खाली कर गया था नूटा। परिश्रता व अनुसार उसन एक तुर्की अफसर का अहिलवाड का सून्दार नियुक्त किया। किन्तु यह कथन गलत है। यदि हम यह भी मान लें कि उसन किसा यकिन का नियुक्त किया था ता भा यह निश्चित है कि उस शीघ्र ही वह स्थान छाडकर भागना पना हागा क्यकि आवू महित समस्त चालुक्य राज्य १२४० ई तक चानुक्य राजाआ व अधिकार म रहा।

**बदेलखण्ड की विजय**

अगत तीन चार वर्षों म एवम् ने अनक छान् माटे आक्रमण किया। ११६७ ६८ ई म उसन राष्ट्रकूट राजपूता स बनाय छीन लिया। बनारस भा पहनी विजय व बाद तुर्कों व हाथ स निरन गया था। एवम् न उस फिर जाता। चदवार और कन्नौज पर भा उसन ११६७ ई म पुन अधिकार कर लिया जोर दूसर वर्ष उसन मानवा व एक भाग की रीट डाना किन्तु राजपूताना और मानवा म उस स्थायी सफलता नहीं मिली। इस समय तक तगभग समस्त मध्य भारत पर तुर्कों का अधिकार स्थापित हो चका था कवन एक महत्त्व पूण राजवंश शप था जा अभी तक स्वतंत्र था। यह बुन्देलखण्ड का चदखण्ड था। उसका राज्य की उत्तरा सीमाए तुर्की राज्य का छूती था। बनारस तथा गहवर राज्य व अन्य भागा की विजय व समय स ही साहसी तुक नता चान् राज्य की सामाआ पर धावा मारा करन व। १२०२ ३ ई म कुतुबुद्दीन एवम् न चदखण्ड राजा परमर्ग दव का सनिक राजधाना कानिजर पर आक्रमण कर लिया। चान् न अत्यन्त धार्मता और साहस व साथ युद्ध किया किन्तु शत्रु सना की अधिकता व कारण उह भागकर किन म शरण लनी पडी। घरा शीघ्रवान तक चलना रहा और परमर्ग दव उसस इतना परशान हुआ कि अन्त म वह तुर्कों का प्रभुत्व स्वीकार करन का तयार हो गया। किन्तु

ममनौन पर हस्ताक्षर होने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गयी उसका मुरयमन्त्री अजयदब ने प्रस्ताव वापस ले लिया जो युद्ध जारी रखा। उसके पास किले में काफी रसम था और पास के पहाड़ों शरना से उसे खूब पाना मिलत रहने का विश्वास था। तुर्कों ने सम्भवतः स्थानीय गुप्तचरों से चण्डा की शक्ति का पता लगा लिया और चालाकी से परत के बहाव का मार्ग बदल दिया। जब अजयदब ने देखा कि सैनिकों के लिए पाना का एकदम कमी हो गया है तो उसने मधिका का प्रायश्ना की और कालिजर का किला खाली कर दिया। इस प्रकार कालिजर महावा और लजुराहा पर तुर्कों का अधिकार हो गया जिनको उहाँने एक सैनिक किले के रूप में संगठित कर दिया।

**बिहार की विजय**

जिस समय कुतुबुद्दीन ऐबक मध्य हिन्दुस्तान के विचर हुए म्याना का जलन में व्यस्त था उसी समय उसका एक साधारण सनापति इस्लामाद्दीन मुहम्मद बिन बम्बिन्याग यज्जी ने इमारत दश के पूरव्या प्रान्तों का जलन की यात्रा बनाया। यह सनातनात्मक कुरूप और भद्दी आकृति का था। इसलिए वह अपनी याग्यता और महत्वाकांक्षा के उपयुक्त रूप में पा सका था। उसने श्रीभक्त आकृति के कारण गजनी और दिल्ली में तो उसका नाम नौकरी हो न मिल सका था। इसलिए वह अवध के हाकिम हिंसामुद्दीन जवुन बर के यहां भरती हो गया। वहां उसने याग्यता साहस और साधन सम्पन्नता का परिचय दिया जिसके फलस्वरूप भगवत और झूलती के गाँव उसे जागीर के रूप में मिल गये। इससे उसके पास धन साधन हो गये कि उसने अफगानिस्तान के पूरबी सीमांत इराक से जान बान अपनी ही भाँति के यज्जी साहसिकों की एक छोटी सी फौज तैयार कर ली जिस नगर उसने बिहार में कमानासा नगी के उम पार के प्रश्न पर धावे मारना आरम्भ कर दिया। कन्नौज तथा बनारस के महत्वाकांक्षी के पराभव के बाद यह प्रान्त दुबल हो गया था और उसकी शासन व्यवस्था पूणतया छिन्नभिन्न हो चुकी थी। इसलिए इस्लामाद्दीन जिसने धार धार धावे मारकर बहुत धन और यश कमा लिया था उस प्रश्न की सम्पत्ति का लूटने में लगे और भी अधिक सालावित हो उठा। एक बार वह इमो प्रकार लूटमार करता हुआ उददपुर (बिहार) तक पहुँच गया। उमने उसका लूटा और नष्ट कर दिया। उस नगर में एक विश्वविद्यालय था। उसकी रक्षा के लिए नियुक्त थाइ से सैनिकों को तुर्कों ने मार भगाया नगर निर्वामिया का जिनमें अधिकतर बौद्ध भिक्षु थे नसवार के घाट उतार दिया और नगर तथा उमने विशाल पुस्तकालय पर अपना अधिकार कर दिया। मुगलमाना ने पुस्तकालय का जला दिया अथवा नही यह निश्चयपूर्वक नहीं कहा जा सकता, किन्तु तुव साहसिकों के लिए जिह विघमों माहिय में रखा



न थी उन पुस्तका का बार्नू य नहा था । इमतिन यन् भा गम्भे ही सक्ता ह कि उहान उह भस्म क निया हा । एम विजय क उपरान इस्लियारहान आग वतना गया जीर विग्रमगिना जीर नालना क विद्या क पर अधिकार कर निया जीर उन्पुर म एक कित का निर्माण करामा । य घन्ताए १२०२ र की है ।

### बगाल की विजय

इत सफलताओ स इस्लियारहान का साहस इतना बत गया कि उसन बगान का भा जातन का सक्त्प किया । बगान पर उस समय मन-वश का राजा नदमण सन राय करता था । बगान का शासक वृद्ध नान क साथ-साथ प्रमाणी तथा कतय विमुक्त भी था । यद्यपि उमक राय का पश्चिमा सामाआ पर नगातार तुकों क आक्रमण हा रह थ फिर भी उसन अपन राय की रक्षा क लिए कोर् प्रमान नहा किया था और आक्रमणकारी तुकों म अपनी पश्चिमा सीमाआ की रक्षा की तो उसन जरा भी कोशिश नहा की थी । इस्लियारहान राजा लक्ष्मण सन क निकम्भपन म भनाभाति परिचित था और यह भी जानना था कि सनिक प्रवच क विषय म वह पूणतया असावधान था । इसलिये उस प्रश म उसन अपन भाग्य की परीक्षा करन का निश्चय किया । १२०४ ई म किमी समय वह अपनी सना नकर चन पना और दांती विहार म शारखण क जगला का तेजी स पार करता हुआ नटिया जा पहुँचा । नटिया बगान की दो राजधानिया म स एक था और राजा का निवास-स्थान भा वही था । इस्लियारहान इतना तेजी स जाग वता कि उसका सना पीछे छूट गया और कवन १८ सनिक उमक साथ नटिया तक पहुँच सक । तुक सनिका न फाटक क रक्षका का काट डाना और बलपूर्वक भीतर घुस गय । लक्ष्मण सन दापहर का भाजन करन बटा ही था कि फाटक पर हान वान शारगुन स वह बह घबरा गया और महन क पीछे क दरवाज स भाग खण हुआ । उसका भागना निणायक सिद्ध हुआ । राजा क सनिक नगर की रक्षा क लिए समय पर एकद न हो सक । तब तक इस्लियारहान की सना भा जा गया और बिना किसी विराध क उमन नगर पर अधिकार कर निया । सन्ध की भांति यहाँ भा तुकों न हत्या तथा नूट का काण रचा । नट म जपार सम्पत्ति उनक हाथ लग । एमक उपरान्त वह उत्तर का जाग बढा और गौ क पास नल नीला म जाकर जध गया । लक्ष्मण सन न पुरवा बगान म शरण ला और कुछ समय तक वहाँ शासन करता रहा ।

इस्लियारहान न सम्पूर्ण बगान पर अधिकार करन का प्रयत्न नहा किया । तिनन और चान का जातन का उमन जबस्य निश्चय किया किन्तु यह काय असम्भव था । अत माच १२०६ म अपना इस मूलना क कारण

जम बन्द शक्ति उगानी पया । उमकी मना भी पूणतया नष्ट न गयी । खनाट म जब बन्द गया गया उम समय तक वह जयमगल न चका या । वहा जयमगल खलजी नामक उमक एक सहायक न उमका धाम म पध कर दिया ।

**मुहम्मद घोरी की मृत्यु उसकी सफलताएँ**

कुतुबुद्दीन ग़वक का भारत क विजित प्रयत्न का गामतभाग सौघ कर मुहम्मद ग़ज़नी नोट गया क्याकि उधर उम अपन मध्य एशिया क प्रया म निवृत्तता था । मय एशिया म स्वागिर्म का शास उसका मुख्य शत्रु था जिमके विरुद्ध उस कुट्ट सफलता मिनी भी परन्तु यह स्वाया सिद्ध नया हूँ । करा गितालय (Qara khitais) की सहायता म स्वागिर्म का मना न १२०४ ई म जयसुत क युद्ध म मुहम्मद का भयकर पराजय ती जौर वह स्वय वनी कठिनाइ स अपन प्राण बचाकर अपनी राजधानी गांर पहुँच मका । अत म उम स्वागिर्म के शाह जयउद्दीन क साथ एक रक्षा मधि करन पर बाध्य नाना पया जिमक अनुसार उम हिरान और बतख को छात्रक मय एशिया क अपन मभी विजित प्रयत्न त्याग नन पया । मुहम्मद की जयसुत की पराजय का समाचार बनारस का नाति चांग और फत गया और युद्ध म उमक स्वय भी मारे जान की अपवाह उग ती गयी । असरा परिणाम यह हुआ कि पजाब की तुम्य जनता न उमक विरुद्ध आम विद्रोह का सण्डा खना कर दिया । मुहम्मद क एक अपमर एक एक ने मुत्तान क सूबेदार का मार डारा और वह स्वय वहाँ रा शासक बन बठा । उमके दम द्रोह तथा विश्वासघात न स्थिति और भी अश्वि खराब कर ती । खाकर तथा अय उम खन जानिया न जा ताहीर और गज़नी क बीच म निवाम करती थी मुने रूप स विद्रोह कर दिया और विनाय तथा खलम के दोषाव का बूटन गया । उम्तान ताहीर का ना जीवन का प्रयत्न किया । मरको पर विनाही छा गय और पजाब म गज़नी का राजस्य भजना कठिन हा गया । अत विनाहिया का दमन करन क विग मुहम्मद को फिर पजाब आना पया । उमन कुतुबुद्दीन को जाना बेजी कि तुम्त ही सतम क पास आरर मसे मिल । माग म विनाहिया न परन को पेर दिया जिल्लु वह उम पराना और खरता हुआ अपन स्वामी क पास जा पहुँचा । गवक का माघ परन मुहम्मद ताहीर जाया जीग स्थिति का टीक परने गज़नी के लिए प्रस्थाप कर गया । माग म जब बन्द समयक नामक स्थान पर पर डान १५ माच १२०६ ई क दिन मन्दा की नमान पन रहा था उम समय कुट्ट मिया तथा सिद्धु खाकर विनाहिया ने मरका पध कर दिया ।

उम मन्दा नहा कि मनिव यायना म मुहम्मद ग़ारा मन्सूर गज़ावी

की ममानता नहीं कर सकता है क्योंकि उसे अनजाने में भारतीय नरेशों द्वारा पराजित होना पड़ा था जबकि महमूद का मध्य विजय प्राप्त हुई थी। प्रभाव तथा बभव की दृष्टि से भी उसको महमूद के समान नहीं रखा जा सकता। किन्तु यावत्प्रागिक शासन-व्यवस्था रचनात्मक प्रतिभा तथा वास्तविक सफलताओं की दृष्टि से गजनी के उस प्रसिद्ध सुल्तान से मुहम्मद बही अधिक श्रेष्ठ था। महमूद की भांति उस भी यह समझन में देर न लगी कि भारत की राजनीतिक दशा विगड़ चकी है। किन्तु महमूद यहाँ के धन को नूटकर ही संतुष्ट हो गया था जबकि मुहम्मद ने उस देश के विस्मृत भाग का जानकर एक साम्राज्य का निर्माण किया। वह राज्य का भूखा था जिसमें वह अपने उत्तराधिकारियों को विरामत में देना चाहता था। अतः संक्षेप में हम कह सकते हैं कि महमूद की अपेक्षा मुहम्मद के उद्देश्य अधिक महान थे।

मुहम्मद में परिस्थितियों को समझने तथा उन पर अधिकार करने की योग्यता और अपने उद्देश्य की प्राप्ति के लिए दृढ़ संकल्प के साथ कार्य करने की जदमत क्षमता थी। यही उसकी सफलता के मुख्य कारण थे। उसमें धर्म का मात्रा अभाव नहीं था जो कभी भी अंतिम रूप में पराजय को स्वीकार करने के लिए वह तैयार नहीं होना था। उसने भरोसा कि यह समझ लिया था कि मध्य एशिया में खानिशाह नामक शासक प्रसिद्धि के विरुद्ध सफलता मिलना कठिन था क्योंकि उसने अपनी सम्पूर्ण शक्ति और योग्यता इस देश में पर जमाने के प्रयत्न में लगा ली। वह मानव चरित्र का अछूटा पात्रो था इसलिए अपने गुनाहों का उसने संरक्षण एवं प्राप्ति के लिए जोर लगाया भी अपने व्यवहार द्वारा उसको परत जोर विश्वास का उचित मिद्ध किया। यद्यपि उसने काइ पुत्र नहीं था किन्तु कुतुबुद्दीन आदि उसने गुलाम उसके साथ कार्यभार को सभाने को उद्यत थे। मुहम्मद कोरा सन्निह ही न था सरहृति से भी उसको प्रेम था। फखरुद्दीन राजी तथा नजामी उल्जी आदि मन्त्रि उसने दरबार में संरक्षण पाते थे। अतः मुहम्मद भारत में तुर्कों साम्राज्य का वास्तविक सम्हापक था।

### हमारी पराजय के कारण

विद्याधिया का महान ज्ञान की अवश्य जिनामा होगा कि ग्यारहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में महमूद गजनी और वारंवा के अन्त में मुहम्मद गारी के हाथों भारतवासियों का पराजय के क्या मुख्य कारण थे। परिष्कृत रूप में विसेट मिये जाति अयज स्तिनामकारा का मत है कि भारतीयों की पराजय इसलिए हुई कि उनकी तुलना में तुर्क लोग अधिक अद्भुत मन्त्रि थे क्योंकि वे तीन प्रदेशों के निवासी थे मान पाते थे जोर युद्ध प्रिय थे। इस मत में सम्भ्रिता नहीं है और इसके बाद राजनीतिक मन्त्रय विषय हुए हैं। हमारे देश का सम्पूर्ण इतिहास

हमारे मनिको की श्रेष्ठता का माक्षी है। दासता और पतन के युग में भी भागतीय सनिक विश्व व विभिन्न रणशत्रो में अपनी सनिक प्रतिभा का परिचय दे चक है। सभा जानत है कि प्रथम तथा द्वितीय विश्व युद्धों में भागतीय सनिका ने यूरोप, एशिया तथा अफ्रीका में सबत्र गौरव और यश प्राप्त किया है। अतः यह विश्वास नहीं किया जा सकता कि हमारा पूत्रज जो हमारी अपक्षा कही अतिक स्वतंत्र व और जो राष्ट्रिय हितों व विण युक्त वृत्त व सनिक दृष्टि से हम पीनी के लागो से घटिया वृत्त हंग। यथा पर हम मन की समीक्षा करना भी तय्यहीन है कि शीत जलवायु के निवासी जथवा मासाहारी अन्य जागा की अपक्षा अधिक अच्छ सनिक और योग्य ज्ञान ह। अतना हा कहना पर्याप्त है कि यह मन वज्ञानिक परीक्षण के सामने नया टिक सकता। हमने अतिरिक्त यह भी महा भ्रूयना चाहिण कि मन्मूद गजनवी जथवा मुहम्मद गोरी व समय व भारताय सनिक भ्रूणतया निरामिषभाजा नहा व और न आज है। इसलिए हम अपनी पराजय के कारण जयत्र ही करने पत्त। हम उह दो वर्गों में विभक्त कर सकते है—(१) सामान्य तथा (२) विशेष। सामान्य कारणों में देश की राजनीतिक फुल का प्रथम स्थान है। प्रत्येक राजा को अबेले ही युद्ध करना पत्त था मानो वह केवल अपने और अपने राज्य के लिए ही न रहा हो सम्पूर्ण देश के लिए नहीं। घोर सवट व समय में भी हमारे सामक मितकर अपनी सुरक्षा के लिए आक्रमणकारी के विरुद्ध युद्ध न कर सक। इसलिए राजनातिक एकता उचित संगठन और योग्य नतृत्व का अभाव हा हमारे शत्रुवाभिया की विवशता और पराजय व मुख्य सामान्य कारण व। इसके अतिरिक्त हमारा सनिक संगठन पुरान तथा पिछडे मिद्धाता पर आधारित था। न ता हमारी मनाजा का संगठन ही उचित था और न उनक अन्य शस्त्र हा समय के अनुकूल थ। अ य देना मरण-नीति का जा विकास हा चका था उनमें भी हमारे मनापति परिवर्तित न थ। यह दाप हमारे इतिहास के प्रत्येक युग में देसत को मिलता है जबकि हमारे देश के सनिक इस क्षेत्र में प्रगतिशील थे भारतीय जहाँ व तर्त वृत्त। इसलिए अल्प शस्त्रा तथा सपर-नीति दोना की दृष्टि से विशेषी हम में अधिक श्रेष्ठ थ। मुगल सम्राट बाबर न १५२६ ई में अपने सस्परणा में किया था कि भागताय मरना जानते है युद्ध करना नहा। व बार व और युद्धक्षेत्र में अपने प्राणा का अलग करन से नहीं डरत थे किन्तु उनमें शत्रु की तुल्यताया का नाम उगाकर युद्ध व त्रासपचा का प्रयोग करन की योग्यता न थी। राजपूता का अपनी तलवार चरान की बला पर घमण था और युद्ध का व रणशैल तथा धारणा के प्रश्नन के लिए एक दूर्नामण्य समय था। इसके विपरीत मुगल विजय व उद्दय से नरत थ और युद्ध में सत्र युद्ध उचित है वान

सिद्धान्त का अनुसरण करते थे। नीचे भारतीय जनता ने अपने नेताओं और सैनिकों का साथ देना दिया। हमें यह पता है कि वह उनका प्रति उत्साही भी किन्तु उसकी यह गलत धारणा थी कि युद्ध करना हमारा कर्तव्य नहीं है। सम्भवतः उसका यह भी विश्वास था कि दिल्ली के सिपाहियों पर कोई भी बड़े हमारे भाग्य में परिग्रहण करने से रहा। यदि सैनिकों के पीछे जनता दूसरी रक्षा पंक्ति का काम करने का उद्यत होती तो सम्भवतः राजपूत राजा एक ही युद्ध के बीच पर सवम्बन नगाकर चार चार शत्रु का प्रतिरोध करते रहते। चौथे महमूद गजनवी और मुहम्मद गारी खान ने विनापकर पत्तन ने मत्सा आक्रमण की नीति में काम किया जिससे हमारी जनता का उत्साह भंग हो गया और मनावन टूट गया। विद्यत गति में वे हमारे सैनिकों तथा सुल्तान नगरों पर बपट पत्तन और तलवार तथा अग्नि द्वारा रण का उद्धान उद्धान कर दिया। इस नीति का जगतिन बार प्रयाग किया गया और हमारी जनता अपनी भयभीत और जातकिन्तु भी गयी कि महमूद गजनवी की सेनाओं को वह जजय समझने लगी। इस प्रकार सैनिक तथा राजनीतिक दृष्टि से हम युग के भारतीयों का मनोबल चण हो गया और वे तुर्कों का प्रतिरोध करना कस्य समझने लगे। इस भावना के कारण हमारे समाज को बचवा सा मार गया। पाचवें तुर्क नाग महान धार्मिक तथा सैनिक उत्साह से अनुप्राणित थे जबकि सबके समय में भारतवासियों के मनोबल का दुर्दम्बन के लिए बार् उपयुक्त आदेश न था। शारीरिक शक्ति और अस्त्र शस्त्रों में भी किसी सेना की माजमाजा पूरी नहीं हो जाती और उत्साहबद्धक जाश उतना ही आवश्यक है जिनकी कि सैनिक शिक्षा तथा अस्त्र शस्त्र।

विनाप कारणों का हम यहाँ विस्तार में उल्लेख नहीं कर सकते। तुर्क आक्रमणकारी शत्रु की शक्ति का पूरा पता लगाते थे और उसकी प्रयत्नाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाने का प्रयत्न करते थे परन्तु हमारे राजाओं ने शत्रु के सैनिकों से लड़ने की बसजोरिया का जानने का कभी भी प्रयत्न नहीं किया। सुल्तानों का यह नियम था कि युद्ध में पत्तन के सत्त्व रणक्षेत्र की जांच पत्ता न करेते थे और लक्ष्य में भौगतिन स्थिति का ध्यान रखते थे। भारतीय नरेश सत्त्व मना का स्थिति वाम तथा मध्य पाशवों में विभक्त करते शत्रु पर सम्मुख में प्रहार करते थे। किन्तु तुरकों की मना में उपयोग तीन मार्गों के अतिरिक्त अग्रगामा तथा सुरगति का अन्य वास्तविकता भी होती थी। सुरगति अथवा गिजव वास्तविकता का पीछे हमारे रखा जाता था और जब हमारा सेनाएँ बचकर चकनाचर हो जाती थी तब सुल्तान उस युद्ध में चार होता था। हमें ना उत्साहण उपनय है कि तुर्क नाग उन नाजाबा और नष्टिया का दूषित कर देते थे जिनमें हमारे सैनिकों को पानी मिलता था।

कभी कभी व पानी के माता व माग का हा बल दते थे। शत्रु के रस के माग का वाक्कर उन भूना मागन के उद्देश्य से व जासपास के प्रदण का नहम-नहम कर लिया करते थे। किन्तु उस युग के किसी भी मुस्लिम नखक न इसका उरनेय नहीं किया है कि किमा भारताय नरेश न कभी भी इस प्रकार की रण नीति अपनायी थी।

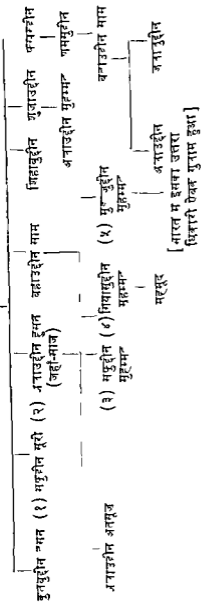
यही नया न्माग राजाआ न अनक सूखतापूण गनलिया का। सिध के राजा न्मागि का इस प्रकार की भूना का हम पहन नी उरनेय कर चक है। पजाब के जयपान तथा उत्तरी भारत के अय राजाआ न भी इसी प्रकार की गनलिया का। अपमान का न सह करने के कारण जयपान न अपन को चिता म ता न्माग कर लिया किन्तु उमस यह न हो सका कि शत्रु से लफने की नय रग न तमारिया करता। जिम युद्ध म वाणा का प्रयाग हाता था उमम हाधियो म भी हमारी सनाआ का नाभ की अपक्षा हानि ही अधिक हुई। वे घउराकर युद्ध से भाग खड गत थे। हमारे सनिका का मुख्य हथियार तनवार था जबकि तुक नोग तीर-कमान से युद्ध करत थे और हमार मन्-गति वान गटहुआ तथा पवताकार हाधिया म भा तुकों की निप्र गति वानी अशवागेनी सना कही अधिक थट थी।

### BOOKS FOR FURTHER READING

- 1 SIRAJ M *Tabqat-i-Nasiri translated into English by Roerisy*
- 2 ELLIOT & DONSON *History of India etc Vol II*
- 3 VAIDYA C V *Downfall of Hindu India*
- 4 OJHA G H *History of Rajputana (Hindi ed)*
- 5 HABIBULLAH *Foundation of Muslim Rule in India*

## बगवतली वृक्ष मस्जिद की वृक्ष

इ-कुदीर हसन



## कुतुबुद्दीन ऐबक तथा उसके उत्तराधिकारी

गुलाम-वश अनुपपुत्र नाम

मुहम्मद गोरी के कोई पुत्र न था अतः राजनीति में जनाउद्दीन उमका उत्तराधिकारी हुआ किन्तु शीघ्र ही महमूद बिन गियासुद्दीन ने उस अपदस्थ करके गद्दी पर अधिकार कर लिया। गोरी के भारतीय साम्राज्य का स्वामी उसका सबसे महत्वपूर्ण गुलाम कुतुबुद्दीन ऐबक हुआ जिसने एक नये राजवंश की नींव डाली जो गुलाम वंश के नाम से विख्यात है। इस नाम में शास्त्रिक विरोध तो है ही इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक दृष्टि से भी यह गलत है। १२०६ से १२६० ई तक के युग में दिल्ली पर एक नहीं बरत तीन वंशा ने शासन किया और इन वंशों के संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक, अलतुनमिश और बलबन एक ही पूंज की सत्तान में थे। केवल इन वंशों के संस्थापक ही अपने प्रारम्भिक जीवन में गुलाम रहे चूँके वे उनके जन्मस्थ नहीं। वे भी मुल्तान गाने के बहुत पहले से गुलाम नर्रा रहे थे और कुतुबुद्दीन की छोड़कर सत्रने गद्दी पर बठन के पूंज ही अपनी दामनी से मुक्ति प्राप्त कर ला थी।

भारत के प्रारम्भिक मुसलमान शासकों के मध्य में एक और भी लोकप्रिय गलत धारणा चली आ रही है। १२०६ से १२२६ ई तक के समस्त युग का भ्रमचक्र पठान युग कहा गया है। किन्तु १४५१ ई तक इन युग के सभी शासक तुर्क थे पठान अथवा अफगान नहीं। केवल एक वंश जिम्ने १४५१ से १४२६ ई तक दिल्ली पर राज्य किया पठान नस्ल का था। इसलिए इन युग को (१२०६-१४२६ ई) पठान युग कहना गलत है। 'मका मकद नाम दिल्ली सल्तनत का युग होता चाहिए।

कुतुबुद्दीन ऐबक (१२०६-१२१० ई)

प्रारम्भिक जीवन

भारत में तुर्की साम्राज्य के वास्तविक संस्थापक कुतुबुद्दीन ऐबक के माता पिता तुर्क थे और तुर्किस्तान के निवासी थे। बाल्यकाल में ही लोग उमरे पास घनाकर निशापुर नगर में जीए वहाँ के वात्री ने उमरे गरीब किया था। जब उमरे का स्वामी की मृत्यु हो गयी तो उमरे पुत्रा ने उस पिर बच लिया



था और अततो गत्वा वह मुहम्मद गोरी का गुनाम हो गया। निशापुर म काशी व पुत्रा व माय कुतुबुद्दीन ने साधारण लिगन पत्ने व अनिरिकन घोट की मवारी मोख ती और कुछ मनिन शिधा भी प्राप्त कर ती। गजनी म उमने अपने साहस मर्ना चात्र तत्र जोर विजयपर उतारना व कारण अपन नये स्वामी का भी यान जाकपिन कर लिया। उमन वन यनिष्ठा और स्वामि भक्ति का परिचय लिया जिसम प्रमन्न होकर मुहम्मद गोरी न उम अपनी सना की एक टुकडी का नायक बना लिया। इसक उपरांत वह अमनवता के अध्याम (अमीर जरबुर) व पत्र पर नियुक्त हुआ। तरात्न व त्तीय युद्ध के उपरान्त ११६० ई म मुहम्मद न उम अपन भारतीय साम्राज्य का शासक नियुक्त किया और अपनी अनुपस्थिति म राज-काज चराने का उस पूण अधिकार ले लिया। ऐवक न दिल्ली के निकट इन्प्रस्थ को अपनी राजधानी बनाया।

अपन स्वामी की अनुपस्थिति म कुतुबुद्दीन न ११६२ ई म अजमेर और मेरठ म विजय का दमन किया। तदुपरांत उसने दिल्ली पर अधिकार कर लिया जो आगे चलकर उस देश व तुर्की साम्राज्य की राजधानी बनी। ११६४ ई म उमन अजमेर के दूसरे विजय का दमन किया और फिर बग़ौज के गहवार का विरुद्ध युद्ध म अपने स्वामी को महयाग लिया। उस युद्ध म जिसम जयचक्र की पराजय और मृत्यु हुई एवक न महत्वपूर्ण भाग लिया। ११६५ ई म उमन काश्मिर (अनीगढ़) पर अधिकार कर लिया जोर वही से फिर चौहाना व तीमरे विद्रोह का दमन करन व लिए अजमेर गया। सीरन यात्रा व तौरान म उसन रणथम्भौर व प्रसिद्ध किन को जीत लिया। ११६६ ई म मन्ना न एवक को घर लिया किन्तु वन इस भयकर परिस्थिति स निश्चयन म मफन हुआ। तदुपरांत शीघ्र ही उसने अजिन्वाड की ओर बूच किया और उस तूटा तथा नष्टभ्रष्ट किया। ११६७ ई म एवक ने बन्नाय चत्वार और बग़ौज पर अधिकार कर लिया। एवक वान उमने राजपूताना म मनिक् कायवाणियां प्रारम्भ का जोर मिराण राय तथा मानवा के कुछ भाग का विजय कर लिया। किन्तु उमकी य विजय स्थायी सिद्ध नहीं हुई। १० ० ३ ई म एवक न बुन्देलखण्ड पर आक्रमण किया और चन्नेन राजा परमर्तो देव का श्रावर काजिजर मन्नावा और सजुरानो पर अधिकार कर लिया। उमन मन्नायन मनानायक खलियाग्नीन मुहम्मद शिन खलियाय गजनी न विजय तथा बगान व कुठ भागा का जान लिया जिसका हम पिछन पृष्ठा म उल्लेख कर चक है। एम प्रकार एम स्पष्ट है कि अपन स्वामी की मृत्यु म पहन तथा स्वयं मिन्नामन पर वन्नेन सपूव ही कुतुबुद्दीन तगभग समस्त उत्तरा भारत का स्वामी था और अपन स्वामी व मन्नायक सनापति और प्रतिनिधि का हैमियन म इस देश म काय कर रना था।





### मिह्रासनाराहण

एसा प्रतीत हाता है कि मुहम्मद गारा की भां यद् इच्छा थी कि बुतुबुदीन एवम् भारत म उसका उत्तराधिकारी बन वयाकि १२०६ इ म उमन उसे नियमित रूप स अपना प्रतिनिधि (वाइसराय) नियुक्त कर मन्िक की उपाधि स विभूषित किया था । जब मुहम्मद का मृत्यु का समाचार विदित हुआ तो तहौर क नागरिका न बुतुबुदीन का राज शक्ति धारण करने क लिए आमंत्रित किया । वह त्नी म तहौर पहुँचा और राय का वागडार अपने हाथ म न ली किन्तु उसका रायाभिषय मुहम्मद गोरी की मृत्यु क नीन महान बाद २४ जून १२०६ ए क दिन सम्पन्न हुआ । एसा प्रतीत हाता है कि बीच का यह समय बुतुबुदीन न अपने समय का शक्तिशाली दल बनाने म व्यय किया । वास्तव म सिहासन पर बैठने स पहन ही उमने चतुर वयाटिक नाति तारा अपनी स्थिति दृष्ट कर ती था । उमने अपनी पुत्रा का विवाह इस्तुनमिश बहन का नासिरुद्दीन कुबाचा तथा स्वयं अपना ताजुद्दीन एल्तौज का पुत्री क साथ कर लिया था । मिह्रासनाराहण क समय उमने मन्िक तथा गिफ्तमा गार की उपाधियाँ धारण की सुनान का नहा एसा जान जाना है कि उसने न ता अपने नाम क सिक्के जारी किये और न सुनाना पी पढाया । उमका कारण सम्भवत यह था कि कानुनी दृष्टि स वह उस समय तक भी सुयाम ही था । नियमानुसार दासता स मुक्ति उम १२०८ ई स प्राप्त नहीं प्राप्त हुई । किन्तु उसके स्वामी क उत्तराधिकारी गियासुद्दीन मुहम्मद गारी न उमके पास राज बिहू तथा ध्वज भज लिया था और सुल्तान की उपाधि प्राप्त की थी । जन कानुनी तोष कुछ भी रहा हो किन्तु वास्तविक रूप स बुतुबुदीन सम्पूर्ण भारत का सुतान हा गया था ।

सुनान की हैसियत स बुतुबुदीन क साथ

बुतुबुदीन न चार वर्ष शासन किया । इम काल म उमने कई नया विजयें नही प्राप्त की । उम इतना समय नहा मिला कि मुदूह शासन-व्यवस्था का स्थापना कर सक्ता । उसका शासन प्रबंध पूणतया मन्िक था और मना का महायता पर निर्भर था । राजधाना म एक शक्तिशाली सना क अनिश्चित उसने शिन्सान क सभा भागा म महत्वपूर्ण नगरा म रणा-ननाए नियुक्त का । स्पानीय शासन उसने भारताय पनाधिकारिया क हाया म काठ रता था और राजस्व सम्बन्धा पुरान नियमांि ना पूववत बन रत । राजधानी तथा प्रांतीय नगरा म शासन चरान क लिए मुगलमान पनाधिकारा नियुक्त किये गए । उनमे न अधिकतर मन्िक ही थ । सम्भवत एक काठा राजधाना म और एक एक प्रत्येक विजित प्रांत म रहा हागा । परन्तु याम व्यवस्था नही भीड़ी

और जयस्थित था। गद्यप म हम कह सकते हैं कि बुतुबुदीन म रचनात्मक प्रतिभा का अभाव था और उसने सुदृष्ट शासन व्यवस्था का नींव नहीं डाला।

बुतुबुदीन का सम्पूर्ण राज्यशासन विदेशी शक्तियों में हाँकी था। सबसे प्रथम उसने अपने मुख्य प्रतिद्वन्द्वी ताजुद्दीन एल्मोज और नामिस्द्दान बुराचा से निष्पत्ती प्राप्त की। शक्तिशाली राजा का शासन था और अपने मुल्तान का समानपनी समकालीन था। दूसरे वंश के सामन्त जिनका मुहम्मद गारी का समय में दमन किया गया था उसका मृत्यु का तात्पर्य उठाकर पुनः अपना स्वामी की स्वाधीनता प्राप्त करने का इच्छुक था। १२०६ ई. में चम्पन राजपूताने अपना राजधानी बानिजर का पुनः प्राप्त किया था। हरिश्चन्द्र का नृत्त्व में गद्दवारों ने फरसावात तथा बन्धु का प्रदशा में अपनी खाया दृष्ट शक्ति का बहुत कुछ पुनः प्राप्त कर लिया था और प्रतिहारों ने पुनः खानियर पर अधिकार कर लिया था। उधर खस्तियास्द्दान की मृत्यु का बाद बिहार और बंगाल में भी विद्रोह की आवाज़ें भङ्कन लगी थीं।

किन्तु दिल्ली के नये तुर्कों का सबसे बड़ा सङ्कट मध्य एशिया की ओर से था। खारिज्म का शाह का गजनी तथा दिल्ली पर दृष्टि थी। इसलिए बुतुबुदीन का सबसे पहला कार्य था खारिज्म का शाह को दिल्ली तथा गजनी पर अधिकार करने और राजपूतों का अपने राज्या का पुनः जीतने से रोकना तथा अपने प्रतिद्वन्द्वी बुराचा और एल्मोज का दमन करना। वह पूर्ण गम्भीरता के साथ इस कार्य में जुट गया। उत्तर पश्चिम से आने वाले सङ्कट का सामना करने के लिए उसने दिल्ली का छात्रक नहौर का अपना निवास स्थान बनाया और अपना शय जावन उसी नगर में किया। मुहम्मद गारी की मृत्यु के बाद ताजुद्दीन एल्मोज ने गजनी पर अधिकार कर लिया था किन्तु उसने उस नगर का छात्रक पर वापस हाना पना और भागकर वह पजाब की ओर जाया। एल्मोज ने सफलतापूर्वक उसका प्रतिरोध किया और पजाब में उसका पर नहीं जमने दिया। किन्तु उस डर था कि कहाँ गजनी की खाता गद्दी पर खारिज्म का शाह अधिकार न करे। उधर गजनी के नागरिकों ने भी बुतुबुदीन का आभार प्रत्यक्ष किया। इसलिए शाह को याचनाओं का विषय करने का उद्देश्य में १२०८ ई. में वह गजनी पश्चात् और उस पर अधिकार कर लिया। किन्तु उसके शासन से जनता सन्तुष्ट नहीं हुई अतः चानीस के बाद ही उस गजनी छात्रक पनी और एल्मोज ने पुनः गजनी पर अधिकार कर लिया। बुतुबुदीन ने एल्मोज के मुल्तान पर प्रभुत्व स्थापित करने के प्रयत्नों का सफलतापूर्वक प्रतिरोध किया और दिल्ली का मध्य एशिया की राजनीति में नहीं जमने दिया।

स्त्रियास्त्रीन खलजी का मृत्यु व बाद फिर जोर प्रगत का शिना स सम्ब ध टूटन का भय हा गया था और जलामानिखा नखनोना म स्वतंत्र शासक बन बठा था । किंतु स्थानात्त मयजा मरतारा न उम पककर कारागार म चल शिया और उसक स्थान पर मुहम्मद शरा का गयी पर शिना शिया । जलामानिखा किमा प्रसार क म भाग निवना और शिल्ला जा पहुँचा । उमर एवक का वगत व मामत म हस्तक्षप करन व तिए राजा कर लिया और कुतुबुद्दीन व प्रतिनिधि कमाउ मसी व प्रयना व कारण प्रडा कशिना व बाद खलजिया न एवक का प्रभत्व स्वतार कर लिया । जलामानिख वगत का सूचना नियोक्त हा गया और उसन शिल्ला मुस्लान का वापिक कर दन का वचन शिया ।

उत्तर-पश्चिमा प्रश्न तथा वगत का राजनिति म कुतुबुद्दीन इतना उतगा रण कि उम राजपूता न विरुद्ध जात्रमणकारी भाति जाग रखन का अवसर नहा मिला । १२१० ए म पाता मयत मभय घाड म गिरकर उमरी मृत्यु हा गया और लाटार म उम दफनाया गया । उसका कब्र पर एक अत्यन्त साधारण-सा ममारक रटा किया गया जा उत्तरी भारत क पहन स्वतंत्र तुर्की मुतान की प्रतिष्ठा क अनुरूप नहा है ।

उसका मूयाकन

कुतुबुद्दीन एन महान सनानायक था । वह प्रतिभाशाली मनिक था और हान तथा दरिद्र अवस्था स उठकर शक्ति तथा यश क शिखर पर पहुँच गया था । उसम उच्चकाटि का माहस और निर्भयिता था और वह उन योग्य तथा गविनशाला गुलामा म स था जिनक कारण मुहम्मद शारा का नागन म इतना सफलता प्राप्त हुई था । जसा कि उम पत्र उल्लग्न कर चुक है एवक न भारत म अपन स्वामा क लिए जनर नगर और राज्य जीत थ किन्तु अपन शासनकाल म वह वाइ विजय नहा प्राप्त कर सका । इमका मुख्य कारण उमका अय उल्लग्न था । योग्य सनानायक हान क अनिश्चित एवक का माश्रिय स भा अनुराग था । व म सुरक्षिपूण व्यक्ति था और हमन निजामा तथा फल मुतीर जस विद्वान् उसक दरवार म वात्रय पान थ जिहान अपन ग्रय उम समर्पित किय थ । म्यापय म भी उमका रवि था । उमर हिंदू मश्रिया का ताकर उनकी मामप्रा स न मस्जिदें बनवाया था—एक शिना म जा कुबन उन इस्लाम क नाम स विख्यात है और दूसरा अजमर म जिस दार्शनिक का शापना बहुत है ।

मुसलमान तसका न उसका उगारना का प्रयास का है । उनका कथन है कि व मास्लावना क नाम म प्रसिद्ध था । किन्तु वह हयाजा क तिए भा कनाम था और सागा ही यकिनया का उसन वध करवाया था । एसा प्रनात

हाना है कि उमन धार्मिक सहिष्णुता का उत्तर नीति का अनुसरण नहीं किया यद्यपि दो बार उमन पराजित हिंदू राजाओं के लिए मुहम्मद से संधि करार की थी। उसमें रचनात्मक प्रतिभा नहीं थी अतः उसने न तो शासन सम्बन्धी समस्याओं की ही स्थापना का जोर न कोई सुधार ही किया। परन्तु उसका सबसे बड़ी सफलता यह थी कि उसने गजना से सम्बन्ध विच्छेद करके भारत का उसके प्रभुत्व से मुक्त कर दिया।

### जारामशाह (१२१०-१२११ ई.)

कुतुबुद्दीन का मृत्यु भारत में तुर्की साम्राज्य की स्थापना के कुछ वर्ष बाद ही हुआ गया। इसीलिए उसके अनुयायियों में भारी घबराहट फैली। तहीर में उसके जफराने उसका पुत्र जारामशाह का गद्दी पर बिठाना दिया किन्तु दिल्ली के नागरिकों ने उमन के समर्थन नहीं किया क्योंकि वह दुबल तथा अयोग्य नवयुवक था। उनका विचार था कि तुर्की शासन के इस सख्तमय युग में राज्य की वागडार एक ऐसा व्यक्ति के हाथों में हानी चाहिए जो योग्य सैनिक तथा अनुभवी शासक हो। इसीलिए प्रमुख बाजी की सलाह से उमन कुतुबुद्दीन के दामाद बलबू के शासक इल्तुतमिश का राजमुकुट धारण करने के लिए आमंत्रित किया। किन्तु जारामशाह अपनी इच्छा से सिंहासन छानने के लिए उद्यत नहीं था अतएव वह इल्तुतमिश के विरुद्ध युद्ध के लिए तैयार हुआ गया। नासिरुद्दीन कुताबा ने जो कुतुबुद्दीन के समय में उमन का शासक था इल्तुतमिश जोर जारामशाह के इस पारस्परिक द्वन्द्व का लाभ उठाना चाहा। वह मुल्तान का जोर बढ़ा और उस पर अधिकार कर लिया। बगान के शासक जनामदात ने भी दिल्ली के प्रभुत्व का मानने से इनकार कर लिया। इस प्रकार जारामशाह के शासन में दिल्ली का नव-स्थापित तुर्की साम्राज्य चार स्वतंत्र राज्यों में विभक्त हो गया। तहीर के बागान जारामशाह का साथ दिया। उनकी सहायता से उमन इल्तुतमिश के विरुद्ध कूच किया जिसने दिल्ली में अपने का सुल्तान घोषित कर लिया था। किन्तु इस युद्ध में जारामशाह पराजित हुआ और सम्भवतः मार डाला गया। जारामशाह का जपयश पूर्ण शान्त बचन जाठ महान चला।

### BOOKS FOR FURTHER READING

- 1 ELLIOT & DOWSON History of India etc Vols II & III
- 2 VAIDYA C V Downfall of Hindu India
- 3 OJHA G H History of Rajasthan (Hind ed)
- 4 HANIBULLAH : Foundation of Muslim Rule in India
- 5 SIRAJ M Tabqat-i-Nasiri translated into English by Paterty

## इल्तुतमिश तथा उसके उत्तराधिकारी

इल्तुतमिश (१२११-१२२६ ई)

### प्रारम्भिक जीवन

इल्तुतमिश का पूरा नाम शम्स उल्-जान इल्तुतमिश था। वह मध्य एशिया के ख्वाराज वंश के तुर्क माना पिता से उत्पन्न हुआ था और बाल्यकाल में ही उसके इपानु भाई ने उसे दाम बनाकर बच लिया था। जमानुजान नामक एक ख्वाराज उम खगारकर गजना न गया। तत्पश्चात् वह खिलजा गया और दुबारा कुतुबुद्दीन के हाथ बच लिया गया। बाल्यकाल में ही इल्तुतमिश के तनाट पर हानहार चिह्न थे। अपने स्वामी कुतुबुद्दीन के विपरीत वह मुत्तर था। उसने सैनिक शिक्षा प्राप्त की थी तथा नियता पढ़ना भी सीखा था। कहा जाता है कि मुहम्मद गारी पर उसका बहुत प्रभाव पड़ा था इसलिए उसका सिफारिश करने हुए उसने कुतुबुद्दीन का निखा इल्तुतमिश के साथ अच्छा व्यवहार करना। किमा दिन वह ख्याति प्राप्त करेगा। इसके बाद इल्तुतमिश का उत्थान बड़ बग से हुआ। वह एक के बाद एक उच्च पद प्राप्त करता गया और अन्त में जमीर शिकार बन गया। खानिजर का विजय के बाद खानिजर का किता उस सौंप दिया गया और तत्पश्चात् वह बरन (कुलशर) का शासक नियुक्त हुआ। कुतुबुद्दीन ने अपना पुत्रा का विवाह भी उसके साथ कर लिया। उस ब्याप का सूत्रार नियुक्त किया और १२११ में वह मुल्तान के पद पर पहुँच गया।

### मिहामनारोहण

खिता की गण पर इल्तुतमिश का जन्म मिद्ध अधिकार नहीं था इसलिए कुछ सत्तका का मत है कि जिन अनियमित रूप में गरी हृष्य था था।<sup>१</sup> किंतु बाल्यक में यह मत गलत है। गरी हृष्यता का ता कोई प्रश्न ही नहीं उठता जबकि उस समय तक में का एक सयुक्त तुर्की साम्राज्य था ही नहीं,

<sup>१</sup> जार पा त्रिपाठी वृत्त गम आम्पकम आव मुन्निम एडमिनिस्ट्रेशन, पृ० २५



जीर जसा कि हम पहले बह जाय है हिन्दुस्तान जिस तुर्कों न हान ही म जाता था चार स्वतंत्र राय्या म विभक्त हा गया था—लाहौर बग्य लखनौती तथा मुत्तान जीर उच । इत्तुतमिश लिला क जफररा तथा सामता का उम्मीदवार था जीर लिला उस समय हिन्दुस्तान का प्रमुख नगर माना जाता था । इसक विपरीत जारामशाह का बवन लाहौर क एक दन का समयन प्राप्त था जा उतना महत्त्वपूर्ण नहा था जितना कि लिला का दल । इसक विपरीत इत्तुतमिश याग्य सनानायक था जीर व्यवहार-कुशल शासक की हैसियत स अच्छा हयानि प्राप्त कर चुका था । सिंहासन पर बठन क समय बह गुनाम भी नहा था कयाकि बहुत पहन कुतुबुद्दीन स बह मुक्ति पत्र प्राप्त कर चुका था । उसम यायता जीर कमनिष्ठा की जीर बह कुतुबुद्दीन स भी अधिक गम्भीर धार्मिक तथा सयमी था । इस्नामी कानून क अनुसार याग्यतम व्यक्ति ही राजसत्ता का अधिकारी माना जाता था जीर उसकी तुलना म जारामशाह दुबल तथा अयाग्य था । अत इन परिस्थितिया म लिला की गद्दी के लिए सबसे अधिक उपयुक्त व्यक्ति बह ही था ।

उसकी प्रारम्भिक कठिनाइयाँ

जिस समय इत्तुतमिश गद्दी पर बठा लिला का सल्तनत का अस्तित्व नगभग नष्ट हा चका था । उसक अधिकार म बवन लिल्ली बगामू तथा बनारस स नकर शिवानिक पहाडिया तक का प्रदेश था । पजाब उसका विरोधा था । कुवाचा मुत्तान का स्वामी था जीर उमन अपन राय्य को विस्तृत करक भटिण्डा कुहराम और सरस्वती भा उमम सम्मिलित कर निय थे । जारामशाह और इत्तुतमिश क पारस्परिक झगड का नाभ उठाकर उमन लाहौर पर भी अधिकार कर लिया था । बगान और बिहार भी लिल्ली स पृथक हा गय थे और लखनौती का अलीमर्दान स्वतंत्र शासक बन बठा था । राजपूत राजाआ न जिह् मुहम्मद गारी और कुतुबुद्दीन न पराजित किया था लिल्ली का कर भजना बन्द कर लिया जीर उसक प्रभुत्व का स्थापार करन स इनकार कर लिया था । जानोर तथा रणधम्भीर स्वतंत्र हा गय । अजमेर ग्वानियर और लाआब न भी तुर्कों साम्राज्य का जुआ उतार फका । ताजुद्दीन एल्तोज न पुन समस्त हिन्दुस्तान पर अपन प्रभुत्व का दावा किया । लिल्ली म भी कुचक्र चल रह थ । वहाँ क कुठ शाहा रणका न जारामशाह स मिलकर बिग्राह का शप्टा खण किया । इस प्रकार हम देखत है कि जिस समय इत्तुतमिश गद्दी पर बठा लिल्ली सल्तनत का दशा अस्थिर हा शाचनीय थी । एल्तोज से सघष

अपनी स्थिति का सर्वप्रथम समझकर इत्तुतमिश न कुटनीति म काम किया । बह यथासंभवानी था इसलिए उसन एल्तोज स जा समस्त हिन्दुस्तान

पर अपना प्रभुत्व स्थापित करना चाहता था और लिना मुल्तान का अपन अधिन संपन्नता या समथीता कर दिया। उमक एल्तोज का प्रभुता स्थापित करने का वक्तव्य किया और उसका भज हुए उस एल्तोज का राज बिद्व स्वकार कर दिया। चतुर कृतीति द्वारा उसने लिनी में जागमजात के दल का समन कर दिया और शाखा गणका का भा अपन नियंत्रण में कर दिया। आन्तरिक कठिनाइयाँ से मुक्ति पान पर उमक एल्तोज का जोर ध्यान दिया जिसमें बुलावा का तालीम निरानकर पञ्जाब के अधिकांश भाग पर आधिपत्य जमा दिया था। इल्तुतमिश का जोर था कि क्या स्वागिज्म का शास्त्र लिनुल्तान का गजनी का अधीनस्थ राज्य मालिक उम पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने का प्रयत्न न करे। उम राजन की मुल्तान का विषय चिन्ता था। इयतिहाज १२११ में स्वार्थिम के गाहू द्वारा पगजिन राज एल्तोज ने गजनी में भागकर शहर में शरण लेता इल्तुतमिश ने तुरत ही उमक बिद्व बूच किया और तगान के युद्धक्षेत्र में उम कराया। एल्तोज स्वयं बनी बनाकर बचाय भज दिया गया चर्च शीघ्र ही गजनी मृत्यु पा गया। उम प्रकार लिना का गजनी से सम्प्रब विच्छेद पूर्ण हो गया। मिद्वान्त का दृष्टि से तो महा किन्तु यथाथ में अज लिना भनवन प्रभुत्वमम्पन्न हो गया। उम समय तो शहीर का इल्तुतमिश ने नासिहदान बुलावा के हाथ में हो रहने दिया किन्तु दो वर्ष बाद (१२१७ ई) उस भा राजनर लिना राज्य में मिला लिया।

### मंगोल आक्रमण का भय

उस समय लिना का तबस्थापित तुर्की सन्तत के लिए मंगोलों के आक्रमण का भय उपस्थित हो गया। अपन महान यादो तमूजिन<sup>२</sup> के जो चगजगी के नाम से विख्यात है तनूब में मंगोल तानारा के पत्तार पर स्थित अपना जमभूमि में निवल पर जोर स्वार्थिम के साम्राज्य से उद्धान पूर्ण तथा नष्ट करके उम पर अधिवाह कर लिया। स्वार्थिम का शाह कम्पियन नर की जोर भाग गया और उमका युवराज जनातुद्दौन मंगोलों भागकर पञ्जाब का जोर आया। मंगोल लोग शीघ्र धमारनगरी पान हुए भा जतमन्त गृहवार थे। उन्होंने लिनुल्तानपुकर मंगोलों का पाठा किया। उमन भागकर पञ्जाब में शरण ले और मिघ्र मगर राजा के उपरी भाग पर आधिपत्य स्थापित कर लिया। उमने शक्तिशाली राजनर सामन्त में अपना पुत्र का

<sup>२</sup> चगजगी के जावन तथा उमका संपन्नता के लिए लिहित—माकन प्राहित कृत मंगोल एम्पायर पृ० २१२०। (तैज एचिन एण्ड अविन सन्तन गारा प्रकाशित)

विवाह कर लिया और उत्तर पश्चिमी पंजाब और मुल्तान की विजय याजना में उसकी सहायता प्राप्त की। ताक्परा की सहायता से मांगवर्नी न कुवाचा का मार भगाया और सिंध सागर राजा पर अधिकार कर लिया। उसने रावी तथा चिनाब के प्रदेश पर भी आक्रमण किया जोर सियावकोट जिले में स्थित पस्तूर का जीत लिया। ताक्परा ने वज्रवाहीर का जंगल और इल्तुतमिश के पास अपना दूत भेजकर उससे शरण मागी। इल्तुतमिश दुविधा में पड़ गया। एक शरणार्थी राजा का शरण न देना शिष्टाचार के विरुद्ध था किन्तु चंगेजखाने जैसे शक्तिशाली आक्रमणकारी का निमंत्रण देना भी बुद्धिमत्ता का साथ नहीं था क्योंकि मांगवर्नी का पीछा करते हुए मगोव १२२ ई में सिंध तक तो जा ही पहुँच था। इसमें अतिरिक्त इल्तुतमिश दिल्ली राज्य का मध्य एशिया का राजनाति में नया फसल देना चाहता था। इन सब चीजों का ध्यान में रखते हुए उसने मांगवर्नी का शरण देने से नम्रतापूर्वक इनकार कर लिया जोर उससे पंजाब छोड़ जाने का प्रायश्चित्त का। खारिजम के राजकुमार ने इस उत्तर का अपना जपमान समझा जोर वज्रवाहीर का भावना से दक्षिण-पूरबी पंजाब में इल्तुतमिश के राज्य पर आक्रमण करने की तयारी शुरू कर दी। इस पर दिल्ली मुल्तान भी आक्रमणकारी का मार भगाने के उद्देश्य से युद्ध के लिए तैयार हो गया। किन्तु अंत में मांगवर्नी ने इल्तुतमिश से टक्कर देना उचित नहीं समझा और कुवाचा से मुल्तान छीनने का प्रयत्न किया। इस प्रकार इल्तुतमिश की दूरदर्शितापूर्ण नीति के कारण एक मगाने से कट ज़िम्मे दिल्ली का जा घरा था टूट गया। चंगेजखाने एक तटस्थ राजा का सामना का उत्तम नहीं करना चाहता था इसलिए वह जफगानिस्तान से वापस लौट गया जोर दिल्ली राज्य एक भयंकर संकट में पड़ गया। यदि इल्तुतमिश ने इससे भिन्न नीति अपनायी होती तो दिल्ली सल्तनत आरम्भ में ही नष्ट हो गयी होती किन्तु हमसे दश के अवश्य लाभ हुआ होता क्योंकि मगाने का बौद्धिक और उनमें तथा भारतीय जनता में बहुत कुछ समानता था इसलिए कानांतर में वे भारतीय समाज में घन मित्र बन गये हैं जबकि तुर्कों के लिए यह कभी भी सम्भव नहीं हो सका।

**कुवाचा की पराजय तथा मृत्यु**

मगाने जफगानिस्तान से वापस लौट गये थे इसलिए मांगवर्नी भी तीन वर्षों में भारत में रहकर १२४ ई में वापस लौट गया जोर उससे पंजाब में होने समय तक टहरन का मुख्य परिणाम यह हुआ कि कुवाचा का शक्ति नष्ट हो गया। सिंध सागर राजा तथा मुल्तान के कुछ भाग पर तो खारिजम का सत्ता का प्रभाव ही अधिकार हो गया था। कुवाचा के राज्य के दक्षिण-पूरबी भाग का जा पहल दिल्ली राज्य का अंग रह चुका था अब इल्तुतमिश ने

मरनता मे जीत लिया जोर इस प्रकार भटिण्डा कुहराम मरस्वता तथा हाकरा क निवार का प्रश्न उसके अधिकार मे आ गया । मांगवर्नी क तीट जान क बात कवन मुल्तान और मिथ कुवाचा क हाथ मे रह गय त अत स्वाग्जम की सनाआ की गतिविधि क कारण कुवाचा की शक्ति पर जा प्रभाव पडा था उमका इन्दुतमिश पूरा नाम उठाना चाहता था । इमनिग मन उसके गाय पर दी शिक्षा न जात्रमण करन की याजना बनाया । पहन उमने ताहोर का जीतन का प्रबन्ध किया । तत्पश्चात् उसने १२२८ मे दा मनाए भजी एक लाहौर स मुल्तान पर और दूसरी जिल्ली स उच पर आत्र मण करन के लिए । कुवाचा घबरा गया जोर निचले मिथ मे स्थित भक्कर क किले मे जाकर शरण ली । तीन मन्त्रीन क धर क बात उच का पतन हा गया । कुवाचा चक्कर मे पड गया जोर सधि की बातचीत की । इन्दुतमिश न उसमे बिना शत क हथियार डानन का बहा बिन्दु इमके लिए बह तयार नही हुआ । तब जिल्ला का सनाआ न भक्कर पर नमकर प्रत्याग किया जिसस कुवाचा इतना आतन्त्रित हुआ कि निराश हाकर क सिन्दु मे कूट पडा और दूबक मर गया । यह घटना १२२८ ई की है । मुल्तान और उच का जीत कर जिल्ली राय मे मिला लिया गया और अजल क मुञ्ज शामक मिनानुद्दान चनीतर न इन्दुतमिश की अधानता स्वीकार कर ली । इम प्रकार मुल्तान और मिथ जिल्ली गाय क अभिन्न अंग हा गय ।

नय जीत त्प प्रदशा की तीन सूत्रा मे सगठित कर लिया गया—ताहोर मुल्तान और मिथ । लाहौर क प्रान्त मे सम्पूर्ण पजाब सम्मिलित नही था । उत्तर मे बियासवाट इन्दुतमिश के राय की सीमा थी मिथ सागर त्प्राय लोकपर ज्ञानि क अधिकार मे था और पश्चिम की जाग स्थित बनियान का प्रन्त जलानुद्दीन मांगवर्नी के महायक महुद्दीन कान्गु क हाथ मे । उपयकन तीना प्रांता के मूज्दारा का ममस्त पजाब जातकर जिल्ला राय मे मिलान की आता ली गयी । जत उहाते अनेक आत्रमण बिय और नमक का पन्त्या मे स्थित नन्तन क बिच पर अधिकार कर लिया । परन्तु सनिक कायवाहिया तथा सावधानी क बावजूद भा इन्दुतमिश दृढ़ता स पश्चिमी पजाब का जवन अधिकार मे नही रख सका ।

#### बगान की पुनर्स्थापना

बुदुदुदीन न बगाल पर जिल्ली का प्रभुत्व पुन स्थापित किया था । बिन्दु त्पका मृत्यु के पश्चात् मन्जी शामक अनीमन्त न अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर ता । वह अत्याचारी था इमनिग मन्त्रिमण न मर बिन्दु बिन्तु किया उमका बध कर लिया और बगान की गद्दी पर हुगामुद्दीन एवाज का अधिकार हा गया । उमने मुल्तान गियामुद्दीन की उपाधि धारण की ।

बिहार को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया और जाजनगर निरहुत बग तथा कामरूप के पड़ोसी राज्या में रर बसूत किया। इल्तुतमिश एक एस प्रांत की स्वतंत्रता नहीं महन कर करता था जो प्रारम्भ में दिल्ली मुल्तान के अधीन रह चुका था। जब जम ही मगाना का भय जाता रहा बस नी उसने बिहार को पुन जीतने के लिए मना भजी और १२२५ ई में मुल्तान मय युद्धक्षेत्र में उतरा। एवाज न बिना लट हा इल्तुतमिश का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया और युद्ध का हर्जाना तथा वार्षिक कर देने का बचन लिया। मुल्तान न मतिज जानी को बिहार का सूबेदार नियुक्त किया किंतु जम ही उसने पीठ केरी एवाज न पुन अपन का स्वाधीन कर लिया। बाय होकर इल्तुतमिश ने अपन पुन नासिरुद्दीन महमूद का जो अबध का शासक था एवाज का दण्ड दन के लिए भेजा। नासिरुद्दीन ने १२२६ ई में लख नौती का जीत लिया एवाज को युद्ध में हराया और उस मार डाला। इस प्रकार बगान पुन दिल्ली सल्तनत का प्रांत बन गया। किंतु नासिरुद्दीन की शीघ्र ही मृत्यु हो गयी लखनौती में पुन विनाह हुआ और बल्का खिलजी नामक एक यमिन उस प्रांत की गद्दी पर बठ गया। इसलिये इल्तुतमिश को १२२० ई में दूसरी बार लखनौती के विरुद्ध सना भेजनी पनी। बल्का युद्ध में हाग और मारा गया और बगान पुन दिल्ली राज्य में मिला लिया गया। इल्तुतमिश न अब बगान और बिहार का पृथक् करके उनके लिए अलग अलग सूबेदार नियुक्त कर लिये।

### राजस्थान का पुन स्वतंत्र होना

एक वकी मृत्यु के बाद के काल में हमारे देशवासियों ने विदेशियों की आगमता से अपन को मुक्त करने का जयन्त प्रयत्न किया। प्रत्येक स्थान पर राजपूताना न माहम से काम लिया और तुर्की सूबेदारों का मार भगान का भरमक प्रयत्न किया। चण्दा न काजिजर तथा अजयपुर पुन जीत लिये और प्रतिद्वारा न खानियर में मुस्लिम मना को भगानर किने पर पुन अधिकार कर लिया और नरवर तथा कामा का भी जीतकर अपन राज्य में मिला लिया। रणथम्भौर के चौहान शासक न भी तुर्की मनिवा का निवान लिया और जाधपुर तथा उमर जामपान के प्रदेश पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया। जानार के चौहाना न नानान मन्ौर नरमर रतनपुर माचार गधाधार मरा राममान तथा भीममन का जीत लिया और तरों का पराजित किया। उत्तर अन्वर्ग में जाटभट्टी राजपूताना न अपना स्वाधीनता का ह्यापना कर ता और जयमर बघाता और थगार न भी तुर्की मना से समाप्त करके अपने का पुन स्वतंत्र कर लिया।

राजपूताना में इन्दुतमिश की सैनिक कायवाहियाँ

द्वितीया राय का एक विन्मृत भाग उमक पृथक द्वा गया दसम सुल्तान के नामन में दुबलता जा गयी होगी किन्तु इन्दुतमिश परन अथवा उत्तराधिकारी का नाम पकित नहीं था। उमक म्याय हुए प्राता का पुन जीवन का दृष्ट सबरप किया। जस ही उमक मगान जात्रमण व अथ म मुक्ति मिली वस हा उमक पुनविजय का काय आरम्भ कर दिया। १२२९ ई म उमक सना देवर राजस्थान के मय म प्रवेश किया और रणधम्मौर को घर लिया तथा उम पर अधिकार करके म्या के लिए अपन सैनिक नियुक्त कर लिए। तदुपरांत उमक परमारा की राजधानी मन्तार पर आक्रमण किया और उम भी जानकर अपनी सना करी रग गी। १२२०-२६ ई म उमक जात्रो का घरा डाना। चौथान राजा अशमिह न प्रजल प्रतिरोध किया किन्तु अंत म उम हथियार गजने पड। उमक सुल्तान को वापिस कर देने का वचन लिया और उस जन पर जात्रो का राय उस लौटा लिया गया। इसक बाद वयाना और धमीर पर अधिकार कर दिया गया। फिर अजमेर की घारी जाया। यहा भी इन्दुतमिश को प्रतिरोध का सामना करना पया किन्तु अंत म अजमेर मांभर तथा उमक निरट रती जिला पर उमका अधिकार जा गया। जाधपुर म स्थित नाणो जा गहनवा सुल्तान बहराम के समय म गी तुर्कों के मया म था कुतबुद्दीन की मृत्यु के उपरांत स्वतंत्र द्वा गया था। इन्दुतमिश न उम पर पुन अधिकार कर दिया। १२२१ ई म ग्वाजियर का घरा डाना गया। प्रतिज्ञा राजा मानवबन स्व न पूरे एत वय नर बीगतापूर्वक युद्ध किया किन्तु अंत म उम भी पराजय स्वीकार करना पनी।

वयाना और ग्वाजियर के सुल्तान सैनिक तयमा का सुल्तान न कालिंजर जीवन के लिए भजा। अन्त राजा विनाकयवमन तुर्की सना का मुसालता नना कर मता और कालिंजर के सात्कर भाग गया। तुर्कों न उम लूटा किन्तु पनाम के अन्त न उम सना अमन किया कि व अधिक प्रगति न कर सक और भाग सडे हुए। उपरांत विजया न अतिरिक्त इन्दुतमिश न स्वय गुल्गोता की राजधानी नामला पर आक्रमण किया परन्तु वरा के राजा क्षत्रिगद न सुल्तान का पराजित किया और मार गगाथा। उमक इन्दुतमिश का भारा प्रति उठानी पनी। सुल्तान न मुजरात के चानुक्का पर भा आक्रमण किया किन्तु वरी भी उमक। सना का पराजित हाकर कोटाग पनी। १२३४ ई म उमक मानवा पर चढाई की निरमा और उज्जैन न लूटा तथा मलाकाड के प्राचीन मन्िर को ध्वस्त कर दिया किन्तु उम प्रता पर नामन करन वा न परमारा का भूमि सम्पत्ती भति नहीं उगानी पनी। कुछ आधुनिक इतिहासकारा न विपक्षर कवन हुए न इन्दुतमिश का मानवा विजय का श्रय दिया किन्तु म नरय

मे बहुत दूर है। उस प्रदेश पर सुल्तान न बेबन टूट की दृष्टि से धावा किया था विजय के उद्देश्य से नहीं।

### दोआब की पुनर्विजय

दोआब के लोग भी दिल्ली के तुर्कों शासक की दुबलताओं से लाभ उठाने में राजस्थान से पीछे नहीं रहते। जिस समय इल्तुतमिश तुर्कों का विद्रोह का समन करने में गया हुआ था उसी समय आधुनिक उत्तर प्रदेश के अनेक जिलों ने अपनी स्वाधीनता पुनः स्थापित कर ली। बंगाल, कन्नौज तथा बनारस में कुछ जिलों के हाथ में निकल गये कनेहर (आधुनिक रहतलण्ड) का प्रांत दिल्ली से पृथक हो गया और इन सब प्रदेशों से तुर्कों मन्तिको का हिट्टुआने मार भगाया। जहाँ ही इल्तुतमिश ने दिल्ली में अपना प्रभुत्व दृढ़ता से स्थापित कर लिया वहाँ ही उसने दोआब के हिट्टुआने के विद्रोह मन्तिको कायवाही प्रारम्भ कर ली। एक एक करके बंगाल, कन्नौज तथा बनारस जीत लिये गये। कनेहर तथा उसकी राजधानी अहिक्षत्र (आधुनिक आवला) पर भी सुल्तान का अधिकार हो गया। इसके उपरान्त उसने घाघरा के उत्तर में स्थित बहराइच पर आक्रमण करने के लिए मना भेजी। उस पर भी अधिकार हो गया। अबध में भी तुर्कों सत्ता का जुआ खतार फका था इसलिये उसे भी पुनः जीतना आवश्यक था। भयकर युद्ध के पश्चात् उस पर पुनः दिल्ली की सत्ता स्थापित की गयी किन्तु अबध के नये सूत्रार इल्तुतमिश के सबसे बड़े पुत्र नामिरद्दीन मन्मूट को स्थानीय जातियों के विद्रोह जिलहान अपने धर्म और स्वतंत्रता की रक्षा के लिए डटकर तुर्कों का मुकाबला किया निरन्तर युद्ध करना पड़ा। इन लोगों का नेता बनू (अथवा पिथ) नामक एक अत्यन्त धीर तथा मानवी यादवी था। उसने चारम्बार तुर्कों का पराजित किया और लगभग १२०

शत्रु मन्तिको मार डाला। पिथू की मृत्यु के बाद ही अन्तिम रूप में उस प्रांत पर दिल्ली का आधिपत्य स्थापित किया जा सका। चारम्बार तथा निरहुत पर भी सुल्तान ने आक्रमण किया किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि निरहुत पर वह अधिकार नहीं कर सका।

### इल्तुतमिश की मृत्यु

जब इल्तुतमिश बनियान पर आक्रमण करने के लिए जा रहा था तभी माग में वह बीमार पड़ गया। उसने अपना कायब्रम स्थगित कर लिया और रोगावस्था में ही दिल्ली कायब्रम चोटी गया। तबकीस नाम के रोग को अच्छा नला कर मर गया और अप्रैल १२६६ में उसकी मृत्यु हो गयी।

### उसका चरित्र तथा सफलताएँ

इल्तुतमिश वार किन्तु सावधान मन्तिको था। उसमें माहम बुद्धिमत्ता





सं बहुत दूर है। उस प्रदेश पर मुल्तान न केवल बूट की दृष्टि में घावा किया था विजय के उद्देश्य से नहीं।

### दोआब की पुनर्विजय

दोआब के रोग भी दिल्ली के तुर्की शासक की दुर्बलता का म लाभ उठाने में राजस्थान से पीछे नहीं रहता। जिस समय इल्तुतमिश तुर्की राजा के विनाह का उमन करने में लगा हुआ था उसी समय आधुनिक उत्तर प्रदेश के अनेक जिला ने अपनी स्वाधीनता पुन स्थापित कर ली। बंगालू कन्नौज तथा बनारस के कुछ जिन तुर्कों के हाथ से निकल गये कन्नौर (आधुनिक मन्सूर) का प्रांत दिल्ली से पृथक् हो गया और इन सब प्रदेशों से तुर्की सैनिकों का हिन्दुओं ने मार भगाया। जम ही इल्तुतमिश ने दिल्ली में अपना प्रभुत्व दृढ़ता से स्थापित कर लिया वस ही उमन दोआब के हिन्दुओं के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही प्रारम्भ कर ली। एक एक करके बंगालू कन्नौज तथा बनारस जीत लिये गये। कन्नौर तथा उसकी राजधानी अहिक्षन (आधुनिक आंवला) पर भी मुल्तान का अधिकार हो गया। इसके उपरांत उमने घाघरा के उत्तर में स्थित बन्नाइच पर आक्रमण करने का निण संना भेजी। उस पर भी अधिकार हो गया। अवध में भी तुर्की सत्ता का गुआ उतार फका था इसलिये उस भी पुन जीतना आवश्यक था। भयकर युद्ध के पश्चात् उस पर पुन दिल्ली की सत्ता स्थापित की गयी किन्तु अवध के नये सूराज इल्तुतमिश के सबसे बड़े पुत्र नामिरद्दीन मन्सूर का स्थानीय जातियां के विरुद्ध जिहान अपने धर्म और स्वतंत्रता की रक्षा के निण डटकर तुर्कों का मुकाबला किया निरन्तर युद्ध करना पना। इन जागों का नेता बत (अथवा पिय) नामक एक अत्यन्त वीर तथा मानस योद्धा था। उमने बारम्बार तुर्कों का पराजित किया और लगभग १२०० शत्रु सैनिक मार दाने। पिय की मृत्यु के बाद ही अन्तिम रूप में उम प्रां पर दिल्ली का आधिपत्य स्थापित किया जा सना। चत्वार तथा निरहृत ८ भी मुल्तान ने आक्रमण किया किन्तु उमा प्रतीत होता है कि निरहृत पर ह अधिकार नहीं कर सना।

### इल्तुतमिश की मृत्यु

जब इल्तुतमिश बनियास पर आक्रमण करने के निण जा रहा था त भाग में वह बीमार पना गया। उमने अपना कार्यक्रम स्मरित कर लिया रणावस्था में ही दिल्ली वापस लौट गया। हतास लाग उसका रोग का अ नहीं कर सके और अग्रत १२६० ई में उसकी मृत्यु हो गयी।

उसका चरित्र तथा सफलताएँ

इल्तुतमिश बार किन्तु गावधान सैनिक था। उमम साहस युद्ध





समय तथा दूरदर्शिता आदि महत्त्वपूर्ण गुण थे। वह योग्य तथा कुशल शासक भी था। जो व्यक्ति प्रारम्भ में गुलाम का गुनाम रह चुका था उसका लिए दिल्ली की गद्दी प्राप्त कर लेना और उस पर २५ वर्ष तक शासन करना काई माभारण बात नहीं थी। अपने स्वामा तथा पूवाधिकारी कुतुबुद्दीन की भाँति उस तक विशाल साम्राज्य की नतिक तथा नीतिक सहायता प्राप्त नहीं थी। उसकी सम्पूर्ण सफलताओं का श्रेय स्वयं उसी का था। उसने अपना जीवन जयपत हीनावस्था में प्रारम्भ किया था परन्तु उसने कुतुबुद्दीन के अधरे काय का पूरा विषय और उत्तरी भारत में शक्तिशाली तुर्की साम्राज्य की स्थापना की। उसने मुल्तान गारी द्वारा विजित प्रदेशों का पुन जीता जीर राजपूताना तथा जाधुनिक उत्तर प्रदेश के अधिकांश भाग को जीतकर अपने राज्य में सम्मिलित किया। मुल्तान और सिन्ध कुतुबुद्दीन के हाथ में निरन्तर चुक थे। इल्तुनमिश ने उन्हें पुन जीतकर दिल्ली सल्तनत का अंग बनाया। उसने तुर्की सल्तनत की विजया को नतिक प्रतिष्ठा प्राप्त की। उसने उमरी मगोना के आक्रमण से उस समय रक्षा की जबकि मध्य एशिया के बड़े बड़े राज्य उनका प्रसार से चकनाचूर होकर धराशायी हो गये थे। इसका अनिश्चित उमने अपने तुर्की प्रतिस्पर्धियों का उन्मत्त किया और उन पर अपना प्रभुत्व स्थापित किया। उसने एक मन्दिर राजतन्त्र का नाव डानी जा आग चलकर मन्त्रिणा के मृत्यु में निरकुशता की पराकाष्ठा का पट्टेच गया।

इल्तुनमिश पन्ना तुक मुल्तान था जिसने शुद्ध अरबी सिक्के जारी किए। उसके चाँदी के टका का वजन १७५ ग्रन था और उस पर अरबी भाषा में मध्य उच्चारण था। वह विद्वानों के गुणों की मगहता करता था और स्थापत्य में उस प्रेम था। उसने दिल्ली में प्रतिष्ठित कुतुबमीनार का निर्माण कराया। इल्तुनमिश धार्मिक मुसलमान था। वह नियमपूर्वक प्रतिदिन पाँच बार नमाज पढ़ता तथा अथ धार्मिक कृत्य किया करता था। शिया आदि अमनानता स्थापनी सम्प्रदायों के प्रति उसका व्यवहार सहिष्णुतापूर्ण न था। दिल्ली के स्थापनी शियाओं ने उसकी धार्मिक अत्याचारों की भाँति के विरुद्ध विद्रोह किया और उसकी हत्या का भी पन्थ्यत्र रचा किन्तु विद्रोह स्थापित नया और वहाँ मर्यादा में उनका वध कर दिया गया। हिन्दुओं के प्रति भी उसका व्यवहार समान अधिक अच्छा नया रहा होगा। तथापि उनका

१ उमा ननमा के मुख्य मन्दिरों की तथा उज्जैन के मगवात के उमा मन्दिर का नष्ट कर दिया था जिसके निर्माण में तीन सौ वर्ष नग थे। वह शिवमूर्तियों तथा अन्य प्रजावन्त राजाओं की अष्टधानु निर्मित मूर्तियों का भी अपने माथे चिन्नी न गया था। (नवरत्न मन्नामिरी—अनुवाक रवर्गी)

ने उसकी धार्मिकता तथा इस्लाम की भवा की प्रशंसा की है हमी स मिद हाता है कि उसने अपनी बहुसंख्यक हिन्दू जनता के प्रति धार्मिक अत्याचार की नीति जारी रखी होगी। वास्तव में उसने मुस्लिम उदमा का सतुप्त किया और उस राज्य की भवा कम्बायी। अस्तुतमिशन न शामन मस्याआ का निर्माण नहीं किया। वह रचनात्मक प्रतिभामम्पन्न राजनीतिज्ञ न था। कुतुबुद्दीन की भांति उमने भी प्राचान दशी सन्याआ को पूववन चरन लिया और केवल उच्च क्षेत्रों में ही उमने कुछ इस्लामी प्रणालियाँ और परिपाटियाँ को प्रचलित किया।

अस्तुतमिशन के तीन मुख्य काय ये—(१) नव स्थापित तुर्की राज्य को नष्ट होने में बचाना (२) उस बधानिक स्थिति प्रदान करना और (३) दिल्ली की गद्दी पर अपने पुत्रों का उत्तराधिकार निश्चित करके अपने वंश की स्थायी नींव डालना। फरवरी १२२६ ई में खनीफा अब मुस्तमीर खिल्लाह ने उस इस्लामी शासक की विनयत भजकर उसकी सत्ता का धार्मिक तथा राजनीतिक मान्यता प्रदान की। उपयुक्त ठास सफलताओं के कारण ही उमने दिल्ली सल्तनत का प्रथम सुल्तान कहा गया है और वास्तव में १२६ से १२६० ई तक दिल्ली की गद्दी पर बठन वाले तीन राजवंशों का शासक में अस्तुतमिशन का ही प्रथम स्थान है।

### अनुद्दीन फीरोजशाह (१२३६ ई)

अस्तुतमिशन का ज्येष्ठ पुत्र तासिरुद्दीन महमूद जा सुल्तान के पुत्रों में सबसे अधिक योग्य था अपने पिता का अत्यन्त सतुप्त छोड़कर १२२६ ई में मर गया। सुल्तान की दृष्टि में उमका दूसरा पुत्र फीरोज गद्दी पर बठन के योग्य नहीं था क्योंकि वह प्रमादी और उत्तरदायित्वहीन था तथा अपना अधिकतर समय शिक्र भोगों में नष्ट किया करता था। उमका दूसरे पुत्रों की अवस्था बतल कम था। अतएव उमने अपनी सबसे बड़ा पुत्र रजिया को जो चतुर साहसी एवं योग्य स्त्री थी अपना उत्तराधिकारिणी बनाने का निश्चय किया। किन्तु यह एक नया प्रयास था और मुस्लिम कानून की भावनाओं के विरुद्ध था। अतएव अनिश्चित सुल्तान के पुत्रों और उसका अनुयायियों ने भी उमका विरोध किया। किन्तु अस्तुतमिशन ने इन सब विरोधों का जवाब दिया और जमीरा तथा दरबारियों की भाँति स्थायित्व प्राप्त कर ली। रजिया का नाम चाँगी के सिक्के (रुका) पर मूँबाया गया किन्तु अस्तुतमिशन का मृत्यु के बाद उमने इस निणय को उलट दिया गया और उमका सबसे बड़ा जीवित पुत्र खनुद्दीन फीरोज का गद्दी पर बठाया गया। वह नवयुवक सुन हृदय का यक्ति था और उमकी माँ शाह नुरन कुचर रचा में अत्यन्त कुशल थी। अतएव दरबारियों तथा सरकारी

पदाधिकारिया म म अनक उसके अनुयायी हा गय । इल्तुतमिश की मृत्यु क समय उमन बड़ी चतुराई स काम लिया और अपन राज की सहायता स अपन पुत्र का राज्यभिषेक करा लिया । क्वचित् फीराज न भी अपने पिता की मति दीघकाल तक राज्य किया तात यत्न उमम समय तथा शासन सम्बन्धी मामला हाती । किन्तु सिंहासनारोहण क तुरन्त बाद ही उमन आमाम् प्रमाण तथा शान शौकत का जीवन आरम्भ कर लिया और राज्य की सम्पूर्ण शक्ति उसकी माँ न हाथ ली । शाह तुक्कन जा पहल रनिवास म एक दासा था अत्यन्त महत्वाकांक्षिणी स्त्री थी और राज्य की नीति पर उसका पूर्ण नियन्त्रण था । उसन अपना पत्निया तथा उनक पुत्रो पर अत्याचार किये । उधर फीरोज न अपने निजी आमोद प्रमोद म धन नष्ट किया और दिल्ली का जनता म सोन की बरकरा । परिणामस्वरूप इसके विरुद्ध प्रतिक्रिया जाग्मभ हुई । शीघ्र हा बाह्य तथा आन्तरिक सङ्घट उठ गइ इए । गजनी किरमान तथा बनियान के शासक सफ़्दीन हमन कादूग न मित्र तथा राज पर आक्रमण कर लिया । मन्बारी पदाधिकारिया का भी एक दल नये मुवतान के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ । स्वयं मुवतान क भाई गियामुद्दाल न जा अवध का सूत्रधार था खुदे रूप स विद्रोह किया । उसने बगाल म दिल्ली का जान बान राज्य-काय का छीन लिया और हिन्दुस्तान क अन्तर नगरा को पूटा । मुल्तान ताहौर हायी तथा बन्गाल क शासना न फीराज क विरुद्ध परस्पर एक समझौता कर लिया और उस गद्दी स उतारन क लिए दिल्ली की ओर चल पए । विद्रोहिया का सामना करन के लिए फीराज का भा राजधानी छाडकर भाग बगना पटा । उसकी अनुपस्थिति म रजिया न उसके तथा उसकी माता क विरुद्ध फत हुए जनता क असन्तोष का नाभ उठाया । गजवार का नमाज क समय यह लाल वस्त्र धारण करके जनता क सामने उपस्थित हुई और उसस पृथित शाह तुक्कन के विरुद्ध सहायता माँगी । उसन तागा का यह भी माग लिनाया कि इल्तुतमिश न उसे अपनी उत्तराधिकारिणी चुना था । सनिक पदाधिकारिया न भा दिल्ली का जनता का साथ लिया फीराज क सौटन म पहन ही रजिया का सिंहासन पर बसा लिया तथा शाह तुक्कन का कागजार म डाल लिया । १०३६ ई म फीराज को भी पकडकर कत्त कर लिया गया । वह कबल मात मन्दीन गम्य कर पाया ।

रजिया (१०३०-१२४० ई)

रजिया केवल नाममात्र क लिए नामर हुई । उस दिल्ली का जनता तथा बंधोरा का सम्पदन प्राप्त था किन्तु बन्गाल मुल्तान हागी और ताहौर क सूत्रधार जिनका हम चुनाव म बाद हाथ लगी था इसके निश्चित विरोधी थे । फीराज का बजाय निजामुद्दमुक जुन्दी भी उभर जा मिला । पश्चिमकारिया

न रजिया को राजधानी में धेरें दिया। यद्यपि इस गुट को पराजित करना उसकी शक्ति से परे था किन्तु उसने बड़ी कुशलता से बूटनीति का चयन किया और पन्ध्रकारिया में फूट डाल दी। विद्वान्नी मूल्तान परम्पर का पट और उनका मुट छिन्न भिन्न हो गया। जब रजिया ने उन पर जात्रमण किया और उनमें से दो को पकड़कर कत्ल कर दिया। बजीर अपनी प्राण रक्षा के लिए भाग खड़ा हुआ किन्तु सिरमौर की पहानिया में उमरी भी मृत्यु हो गया।

इस विजय से रजिया की प्रतिष्ठा बढ़ गयी और स्थिति दृढ़ हो गयी। उमर राय के उच्च पदा का पुनः वितरण किया और ख्वाजा मुहम्मद बुद्दीन का अपना बजीर नियुक्त किया। प्रान्तीय सूबेदारों के पदा पर भी उसने नये व्यक्ति नियुक्त किए। तख्तगीरी से देवर तक सम्पूर्ण हिन्दुस्तान ने उनकी अधीनता स्वीकार कर ली। बगान भी पुनः दिल्ली सल्तनत के अन्तर्गत आ गया। किन्तु रजिया की सफलता ही उसके पतन का मुख्य कारण सिद्ध हुई। उसने ताज का शक्ति को निरकुश बनाने का प्रयत्न किया। तुर्की अमीर जिहाने अपने को एक सैनिक विरादरी के रूप में संगठित कर लिया था और कुतुबुद्दीन के समय में ही राय की शक्ति पर एकाधिकार स्थापित कर रखा था। एक शक्तिशाली तथा निरकुश शासक को जो अपनी शक्ति को सर्वोच्च बनाने पर तुनी हुई थी सहन नहीं कर सकत था। वे ममझते थे कि हमारे पिता राय का काम नहीं चल सकता इसलिए वे सुल्तान को अपना केवल प्रमुख मात्र मानते थे। वे उस इस्ते उच्च पदा देने के लिए तयार नहो थे। इसके अतिरिक्त सनातना मुसलमान रजिया से इसलिए अप्रसन्न थे कि उसने रजिया की शासन तथा पदा को त्याग दिया था। वह पुरषों के वस्त्र पहनती जनता के सामने घोड़े पर सवार होती और खुद दरबार में राज-बाज करती थी। उसने अपने शासन को दृढ़ तथा शक्तिशाली बनाने का प्रयत्न किया। वह मध्य मचावन करती तथा युद्ध में भाग लेती थी। बड़े तुक यादों एक मंत्री के चाह वह रानी ही क्या न हो। इस प्रकार के आचरण का कतकपूर्ण मानत था। रजिया का जमानुद्दीन याकूत नामक एक हथोली अफसर पर जो घोड़ा का सर्वोच्च अधिपति था विशेष अनुराग था। सम्भवतः उगने जात्रपत्तरी से नीति को अपनाया था क्योंकि तुक अमीरों का राजनीय पदा पर जो एकाधिकार था उसमें वह तात्ना चाहती थी।

### रजिया का पतन

उपरोक्त कारणों से रजिया के विरुद्ध पन्ध्रकारिया आरम्भ हो गया। उसका पना दरबार तथा प्रान्तों के जमीरों की मदद थी। वे रजिया को अपसंस्थ करके अपने व्यक्ति का गद्दी पर बठाना चाहते थे जो खुद हो और उनकी शक्तिनुसार काम करे। पन्ध्रकारिया का प्रमुख नेता शम्शियाद्दीन जात्रनी

श्री जा अमार ए हाजिब क पत्र पर काय कर रहा था जोर भटिण्डा का शासक मलिक अल्लूनिमा तथा तानौर का सूबदार बखीरखाँ अथ मन्तवबुण व्यक्ति थे। पन्थनकारा रजिया का मलिक शकिन और मलिका का उमर प्रति भक्ति का भनाभानि जानन थे हमरिए थे उम दूर स्थान पर न जाकर समाप्त करना चाहत थे। उस याजना क अनुमार लाहौर क शासक बखीरखाँ न १७६० ई म विनाह का खण्डा खटा दिया। रानी गाधरी की विनाह का अमन करन बड़ा पहुँचा। बखीरखाँ पराजित हुआ जोर भाग खटा हुआ किन्तु विनाह सना पर मगारा का उपस्थिति क कारण उसका भागन का माग रहा हुआ था। इसलिये नौटकर उसन विनाह अथ अपन का राना क सुपुत्र कर दिया। अथ प्रकार विजयी हाकर रजिया गजधाना लौट आयी। किन्तु पन्थनकारिया न अपना याजना नहा छाना। रजिया क नौटन क पत्र लिख क जानर की दूसरा विनाह हुआ। उस वार भटिण्डा क सूबदार अल्लूनिमा न श्री अमार ए-हाजिब का पित्र था विनाह का खण्डा खटा दिया। अन्तु का अत्यधिक गर्मी का चिन्ता न करत हुए रजिया न विनाहिया क विरुद्ध बूझ किया। अथ वार पन्थनकारिया न बनी सावधानी स अपना जाल बिछाया था अथ अम हा रजिया भटिण्डा पहुँचा उनका कुछ एजण्टा न घाना क अथन याकन न गाना दा और पनडकर मार डाला। उस प्रकार राना का अथ बन्त टुटन हो गया वह बहुत घबरा गयी और पन्थनकारिया न उस पनडकर जन म दार दिया (अप्रत १७४० ई)। अनुनमिष क तामर पुत्र बन्गम का गद्दा पर बगकर पदधनकारी शिन्नी लौट आय। ताज क विरुद्ध युद्ध म उनका विजय हो गया।

बहराम क सिनासनाराहण क समय गनकाय पत्र का श्री विनरण अथा उमम अल्लूनिमा का अपना अल्लानुमार पत्र नहा मिला अलिये वह अमल्लुण्ड हो गया। उमन चन्ना तन क लिये नया याजना बनाया। अगस्त १७४० ई म उमन रजिया का भटिण्डा क चिन का जन म भुक्त करक उमम विवाह कर दिया और उसका साथ शिल्ला पर अधिकार करन क लिये चल पडा। किन्तु क बहराम का सना द्वारा पराजित हाकर भटिण्डा का जोर नौटन का बाध्य अथ। उनका सनिका न भा उनका साथ छाड दिया जोर १३ अक्टूबर १७४० ई क शिन्नी कुछ हिन्दू डाकुआ न बघल क पास उनका बध कर दिया।

रजिया क बापों का सूयाकन

रजिया हा कवन एमा मुसलमान स्त्रा था जो शिल्ला का गद्दा पर बठा। यद्यपि उमन कवन मात्र नान बघ राय किया फिर भी निम्नदह वह एक अथन सफल तथा असाधारण शक्तिवा था। वह वार बमठ माग्य सनिक तथा



सनातनायक थी। राजनीति में बुचक्रा तथा कूटनीति में वह अक्षय थी। उमर भारत में तुर्की सल्तनत की प्रतिष्ठा की पुनः स्थापना का ताज की शक्ति में बर्द्धि का जोर उस निरंकुश बनाने का प्रयत्न किया। वास्तव में वह दिल्ली की पहली तुर्क सुल्तान थी जिसने जमीरा और मन्जिका को अपनी आजा मानने पर बाध्य किया। कुतुबुद्दीन जमीरा में मुख्य जमीर था और इल्तुतमिश अपने समान जमीरा के सम्मुख गद्दी पर बैठने में झेंपता था। उस भाँति रजिया में पहले जोर बाद के इल्तुतमिश वंश के सभी सदस्य यक़ीनतव जोर चरित्र की दृष्टि से उससे वही अविनाश दुबल थे। इसलिए इल्तुतमिश के वंश में रजिया प्रथम तथा अन्तिम सुल्तान थी जिसने कबल अपनी याग्यता और चरित्र प्रसन्न से दिल्ली सल्तनत की राजनीति पर अधिकार रखा। तत्कालीन इतिहासकार मिर्जाजुद्दीन सिराज लिखता है कि वह महान शासिका बुद्धिमान इमानदार उत्तम शिक्षा का पोषण पाय करने वाली प्रजापात्रक तथा युद्धप्रिय थी। उसमें वे सभी प्रशंसनीय गुण थे जो एक राजा में होने चाहिए। परन्तु अन्त में वह सत्ताप के साथ वह उसके चरित्र के विषय में निष्पत्ता है य सब श्रेष्ठ गुण उसमें किस काम के थे ?

सामान्यतया यह विश्वास चला जाता है कि रजिया का पतन इसलिए हुआ कि वह स्त्री थी क्योंकि तुर्क अमीर स्त्री के शासन में रहना पसन्द नहीं करते थे। किन्तु उसके पतन का मुख्य कारण तुर्की सैनिक जमीरा का बलवती महत्वाकांक्षा भाँ था। वे सुल्तान को अपने हाथों की कठपुतली बनाकर राज्य की शक्ति पर अपना एकाधिकार कायम रखना चाहते थे किन्तु रजियाने प्रारम्भ से ही उसके विरुद्ध नीति का अनुसरण किया। उमर सम्पूर्ण शक्ति का अपने हाथों में केंद्रित करके अपने का सर्वशक्तिमान बनाने का प्रयत्न किया। उसके स्त्री होना तो उसके असामयिक अन्त का कबल गौण कारण हाँ था।

### मुईजुद्दीन बहरामशाह (१२६०-१२६२ ई)

नया सुल्तान इल्तुतमिश का तामरा पुत्र था। उसमें निश्चित शन पर गद्दी पर बठाया गया था कि वह तुर्क जमीरा और मन्जिका का पूरणरूप में राजशक्ति का उपभाग करने तथा और स्वयं कबल राज्य मात्र ही करेगा शासन नगा। तुर्क जमीरा का उमर नाश्व ए मुमानिनात का नियुक्त करने का भा अधिकार दे दिया जा उसी समय नया स्थापित किया गया था। अतः इल्तुतमिश की एतगीन नामक यक़ीनत उस उच्च पद पर नियुक्त किया गया। मुत्ताजुद्दीन बहार के पद पर काय करता रहा किन्तु अब इस पद का महत्त्व गौण रह गया था। उस भाँति राज्य में तुर्क सैनिक अमीरा का प्रभुत्व पूरण हाँ गया।

नाइब-ए-एतमान ने मुल्तान की बहुत कुछ शक्ति हड़प ली। उसने मुल्तान के कुछ विभागों का भी छान लिया। जैसे अपने फाटक पर नीबू के बजवाना और अपने यहाँ हाथी रखना। उमर बहराम की एक बहन से विवाह कर लिया और उस प्रकार वह मुल्तान से भी अधिक शक्तिशाली तथा महत्त्वपूर्ण हो गया। अपने विभागों पर हान वाले जात्रमणों का बहराम सहन न कर सका। इसलिए उसने नाइब का उसी के दरबार में बंध करवा लिया। किन्तु मुल्तान की विजय क्षणिक सिद्ध हुई। यद्यपि नाइब के पक्ष पर विमान्य यक़िन का नदी नियुक्त किया गया किन्तु बरख़्तीन शकर ने जा जमाएँ हाजिब के पक्ष पर बाय बर रहा था और ख़ानीस के नाम से विद्वान तुक अमारा के मन्त्र का प्रभावशाली सन्स्य था। वह सब अधिकार हाथ में ले जाकर नाइब के साथ में था। अतः मुल्तान में भी ईर्ष्या करने लगा। बजौर पहल हाँ में शकर के विरुद्ध था। दाना ने मयुक्त रूप से जमीर ए हाजिब का विरोध किया। उधर अमीर ए हाजिब भी मुल्तान का गद्दी से उतारने के लिए पक्षपात रख रहा था जिसकी सूचना बजौर ने मुल्तान का ली। मुल्तान ने शकर का बर्खास्त करके बरख़्तीन में निर्वासित कर लिया किन्तु शकर जिना मुल्तान की आजा के ही दरबार में लौट गया। इसलिए पक्षपात उमका बंध कर लिया गया। तुन जमीर जा एतगीन के बंध के कारण पहल से ही मुल्तान से अप्रमत्त थे जब और भी अधिक भयभीत हो गए। तुक उमका भी मुल्तान के विरोध थे क्योंकि उनमें में एक का उमकी जानानुसार बंध कर लिया गया था। बजौर मुहज़बुद्दीन का मुल्तान से अलग जिनायतें था। इस प्रकार एक सबक्यापों पड़भत्र रचा गया। दस मसय १२४१ ई में मंगोलों ने पंजाब पर आक्रमण किया और लाहौर का धर लिया। नगर की रक्षा के लिए एक सना भेजी गया। बजौर भी उमके साथ गया किन्तु माग में उसने अफ़सरा का बतानिया कि मुल्तान ने तुह गिरफ्तार करके बंध करने का गुप्त आजा भेजी है। मन्त्रिगण बाध से प्रवृत्तित हान तग और मुल्तान से बरखा तन का प्रण करके ब उम पद-युत करने के लिए माग से ही लौट आय। दिल्ली के नागरिकों ने निर्मोह हाकर मुद्ध किया किन्तु मना के सामने बने न्दिक मर द्यरे न्ति हा नगर पर विनाहिया का अधिकार हो गया और म १२४० ई में बहराम का पक्षपात करल कर लिया गया।

जनाउद्दौन समूत्शाह (१२४०-१२४६ ई)

मुल्तान में तुक अमीरों का प्रमुख पूर्णरूप से स्थापित हो गया और मुल्तान का फिर उनका पराजित हाना पना। विजया अमारा ने अपने में हा विभी सन्स्य का गद्दी पर बठा लिया हाना किन्तु पारस्यगिक सन्स्य के कारण वे अपने में स याध्यतम यक़िन के गुणा का ने परम सब थे। परिणाम

स्वरूप उहान इल्तुतमिश क पीत्र तथा खनुद्दीन फाराजशाह क पुत्र अलाउद्दीन मसूदशाह का पस शन पर गद्दी पर बठाया कि वह अपने पूवाधिकारों द्वारा किये गये समझौते की शर्तों का पालन करेगा जोर राज्य की समस्त शक्ति चालीस क सुपुत्र करके स्वयं बचन सुल्तान की उपाधि का उपभोग करेगा। नाइब का पद पुन स्थापित किया गया जोर उस पर गार क एक शरणार्थी मंत्रिक कुतुबुद्दीन हमन का नियुक्त किया गया। राज्य क शप पत्र पर चालीस के सन्ध्या का एकाधिकार कायम हा गया। दरबार म बजौर मुहाजबुद्दीन का आधिपत्य था जोर जा अधिकार पहले नाइब क हाथा म थे उनका भी उपयोग वही करता था। नाइब क पत्र का महत्व बन्त घट गया। शीघ्र ही बजौर तथा तुक जमारो म झगडा हा गया। मुहाजबुद्दीन अपस्थ कर लिया गया जोर उसक स्थान पर नजमुद्दीन अबू बक्र नाम का व्यक्ति नियुक्त किया गया। अमीर ए हाजिब का पद बलबन का मित्रा जा आग चक्कर कुछ ही वर्षों म दिल्ली का सुल्तान बन बठा। यद्यपि अमीर म बलबन नीचा बक्षा का था किन्तु अपनी योग्यता जोर चरित्र बन क कारण दल मे उसी का प्रभत्व था। धीरे धीरे उसन नगभग सम्पूर्ण शक्ति हथिया ती और जमारों का ध्यान पारस्परिक झगडा स हटाकर राजपूता तथा मगाला क विरुद्ध आक्रमणों की जार आकृष्ट किया। अपनी पस नीति म उस पतनी सफलता मित्री कि तुर्कों सल्तनत की प्रतिष्ठा कुछ अशा म पुन स्थापित हा गयी और मसूद का शासनकाल अपक्षाहून शान्ति स बाता जार चार वर्ष तक चला।

फिर भी आन्तरिक पथ्या जोर बनह का पूणरूप स जन्त नही हुआ। बिनाहा तथा फूट क कारण राज्य म अ पवस्था रहा। बगाल क सूत्रार तुगनखा न दिल्ली क प्रभत्व का मानने स इनकार कर लिया। उसन बिहार को भी अपने राज्य म मित्रा लिया और अवध पर आक्रमण किया। मुल्तान और उच भा दिल्ली स पृथक हा गये। १२४५ ई म सफुद्दीन हमन बानुम न मुल्तान पर आक्रमण किया और उस पर अधिकार कर लिया। मगाल भा उत्तरी पंजाब पर चप आय। उहान उच का भी धरन का प्रयत्न किया किन्तु दिल्ली से उसकी रक्षा क निण एक मना पड़ेच गया पसनिण उह बपस नीटना पना।

यद्यपि स्थिति सन्तापजनक नहा थी फिर भी उसम कुछ सुधार हा रहा था और राजधानी म धार धीरे बनबन का प्रभाव जोर महत्व बन् रहा था। किन्तु स्वयं बनबन न इल्तुतमिश क एक जय पुत्र नासिरुद्दीन मसूद स मित्र कर सुल्तान क विरुद्ध पन्थन रचा। पन्थन का परिणाम यह हुआ कि मसूद गद्दा स प्ताग लिया गया और नजू १२४६ ई म नासिरुद्दीन महसूद का राज्याभिषेक हा गया।

नामिरुहीन महमूद (१२४६-१२६५ ई)

मिहान्तनारोहण तथा चरित्र

नामिरुहीन महमूद १० जून १२४६ ई. के दिन लिबाना का शहर पर  
 बना। उसका मिहान्तनारोहण के समय में मुल्तान तथा जमारा में शक्ति के  
 लिए जा सघप चले रहा था वह समाप्त हो गया। उसमें तुर्कों जमारा का  
 विजय हुआ। नामिरुहीन महमूद ने समझौते का शर्तों का प्रस्ताव का साथ  
 पानत किया और स्वयं समस्त शक्ति चालाम के नेता बनने का साथ था।  
 तथा मुल्तान स्वभाव से ही महत्वाकांक्षा से रहित भीरु तथा नम्र था। वह  
 कबल राज्य के बाह्य रूप से ही मनुष्य का वास्तविक मत्ता उमन जमीरा  
 के हाथ में छाल रही था। वह धार्मिक प्रवृत्ति का व्यक्ति था। अनेक  
 कारणों से उमका हम स्वाभाविक धार्मिकता में और भी अधिक वृद्धि हो गया।  
 हम अपने पूजाधिकारियों के भाग्य का जिह्म अमारा के हाथों अनेक दुःख  
 भागने पर ही भलाभाँति स्मरण था। हमके अतिरिक्त हिन्दू सामंत अपना  
 पाया वह शक्ति का पुनः प्राप्त करने का प्रयत्न कर रहे थे। हमारा राज्य में  
 आन्तरिक अशांति थी और मगाना के जात्रमणा का भय भी महत्त्व बना रहना  
 था। हम मुल्तान का साम्राज्य तथा पवित्रता के सम्बन्ध में अनेक विचारधारा  
 प्रचारित है। कहा जाता है कि उमका रानी स्वयं अपने हाथों में भाजन  
 बनाया करती थी। एक बार रमाधन में उसकी उरगिनियों जल गया। उसने  
 मुल्तान में विनायक का और एक नौकराना रखने के लिए कहा। नामिरुहीन  
 ने उसका प्रार्थना का स्वाकार नया किया और कहा कि मैं कबल राज्य का  
 दुस्ती है और राज्य के धन का अपने मुख के लिए व्यय नहीं कर सकता।  
 निस्सन्देह में कहानियों अतिरिक्त है। यह असम्भव है कि मुल्तान का पला के  
 लिए जा बनने की पुत्रा था वह नौकराना न रहा हो। हम यह भी जान  
 है कि उमके अनेक स्त्रियों और लामियों था। हम और हम प्रकार का अर्थ  
 विचारधारा में कबल अन्तर्गत है मृत्यु का प्रश्न प्रस्तावित होना है कि नामिरुहीन  
 महमूद का निरावे का जीवन पमल नहीं था और वह अपना अधिपत्य समय  
 मुल्तान का प्रतिनिधियों बनाने और दानादि उत्तार कार्यों में व्यस्त करता था।  
 वास्तव में हमके अतिरिक्त वह और कुछ कर भी नया करना था क्योंकि उन  
 परिस्थितियों में मुल्तान का भाँति करना उसके लिए असम्भव था। यह तथ्य  
 कि उसने कबल में मित्ररूप अपने भोजन तथा हितों मसूदा के विरुद्ध पत्र  
 किया गिद्ध करना है कि वह सामाजिक महत्वाकांक्षा से सवया मुक्त नया  
 था। किन्तु वह अन्तर्गत बुद्धिमान था कि अपना दुःखनाश तथा सम्भव और  
 असम्भव के नया का भलीभाँति समझना था। इस समझदारी तथा अपने

स्वाभाविक चरित्र के कारण हा वह बीम वय तक राज्य कर मवा जोर १२६५ ई म उसकी मृत्यु हा गया ।

**बलबन—वाम्त्विक नामक (१२८६ १२८७ ई)**

नामिरुद्दीन महमूद का मिह्रासन पर बठान का प्रथम बलबन का हा था इसलिए सुल्तान न सम्पूर्ण शक्ति चाहतास के उस नता के हाथा म सौंप दी । एसा प्रतीत हाता हे कि जब बख नाममात्र का वजीर बना रहा जोर बलबन के पक्ष म सम्मिलित हा गया । सबसे अधिक महत्वपूर्ण पद बलबन के सम्बन्धिया का मिन । उसका अनुज करनूला जमीर ए हाजिब के पद पर नियुक्त हुआ । गहौर तथा भटिष्ण का सूब्तारी उसके चचेरे भाइ शरखा का मिनता । बलबन जा सुल्तान के राज्याभिषेक के दिन से ही प्रधानमन्त्री का कार्य करता जाया था १२४६ ई म नाइब ए मुमानिकात नियुक्त किया गया । उसा दिन उसने अपना पुत्री का विवाह सुल्तान के साथ कर लिया जिससे उसकी स्थिति और भी अधिक दृढ हा गयी और अ य तक अमीरा से वह बहुत ऊचा उठ गया । इस प्रकार राजशक्ति पर बलबन का एकाधिकार स्थापित हा गया और उसका उपयोग उसने अपने-अपने सम्बन्धिया तथा दश म तुर्की सल्तनत की नाव दृढ करन के लिए किया ।

**बलबन का क्षणिक पराभव रायहन का प्रधानमन्त्री होना (१२५३ ई)**

बलबन के उत्क्षेप के कारण तथा इसलिए कि उसने अनतिक्रम से अपनी शक्ति का उपयोग किया राय म उसके विरुद्ध एक दल खना हा गया जिसका नेता इमामुद्दीन रायहन था जा हिंदू से मुसलमान हा गया था । बलबन के निरकुशतापूर्ण आचरण से नामिरुद्दीन महमूद भी अप्रसन्न था इसलिए वह भी पन्थानकारिया के दल म सम्मिलित हा गया और बलबन तथा उसके भाइ का अपरस्थ करन के लिए उसने जाना जारी कर दी । उहे दरबार छाकर अपने-अपने प्राता म जाना का जाना दे दी गयी । राजकीय पदा का पुन वितरण किया गया । रायहन प्रधानमन्त्री बना । बखार का पद जुनानी का मिला । इतिहासकार मिनहाज काजी के पद से पृथक् कर लिया गया और उसके स्थान पर शमसुद्दीन नियुक्त हुआ । बलबन के चचेरे भाइ शरखा से भटिष्ण और मुल्तान की सूब्तारी छीन ना गयी और वे प्रान्त जसनाखा का सौंप लिये गये । इस प्रकार राय के महत्वपूर्ण पद पर रायहन के उम्मीद वारा का अधिकार हा गया । हम मानते राजशक्ति ह्मपन के लिए रायहन का निर्वाह की गयी है । उस धर्मयुत हिंदू शक्ति ह्मपन वाता पडयंत्रकारा आदि नामा से पुकारा गया है । किन्तु सत्य यह है कि वह उनना ही भना मुसलमान था जितना कि कान तुक । वह न ता आततायी सुटरा था और

न गुण्डा। वह कुशल राजनातिन था अतः जहकारा बलवन तथा उसका दल  
 का विरुद्ध सुल्तान का असन्तोष का नाभ उठाकर उसने राजशक्ति पर अपना  
 अधिकार स्थापित कर लिया। वह भारतीय मुसलमानों का लाल का नेता या  
 जिनका सहायता तभी से बत रही थी जोर जा अत्र तत्कालीन राजनीति में भाग  
 लेने लगे थे। त्रिंशी तुक तथा उनके साथ भारतीय मुसलमानों का भी बस  
 ही शत्रु था जिनके हिन्दुओं का। वे यह नहीं सहने कर सकते थे कि का  
 भारतीय मुसलमान राज्य का महत्वपूर्ण पद पर पहुँच सकें। इसलिए तत्कालीन  
 लालका ने रायहन का चरित्र जोर १२५३ ई. के परिवर्तन का एक अशिष्ट शब्द  
 में निम्न की है।

### बलवन की पुनर्नियुक्ति (१२५४ ई.)

यद्यपि निम्न वर्गों का नाश रायहन का शासन से सन्तुष्ट था फिर भी वह  
 अधिक समय तक न टिक सका। दरबार तथा प्रान्ता का तुक जमीर यह नहीं  
 सहने कर सकते थे कि एक भारतीय मुसलमान राज्य का वास्तविक प्रमुख बन  
 बैठे। बलवन का नृत्य में एकत्रित होकर उन्होंने उनका विरुद्ध काम करने का  
 निश्चय किया। १२५४ ई. में उनकी मधुक्त सेनाओं ने राजधानी की ओर  
 बढ़ किया। सुल्तान ने भा दिल्ली से निकलकर समाना का निश्चय सेम गाड़  
 दिया। दाना दला में युद्ध होने ही वाला था कि महमूद का साहस टूट गया और  
 वापस होकर उसने बिद्राहिया का प्रस्ताव का मानकर रायहन का पदच्युत कर  
 दिया। तत्नुसार रायहन का बन्धु भोज किया गया और कुछ समय बाद फिर  
 बहगइच। बलवन फिर नायब का पद पर नियुक्त कर दिया गया और उस  
 महत्वपूर्ण पद पर अपने उम्मीदवार नियुक्त करने का आज्ञा दे दी गयी।  
 इतिहासकार मिनहाज का पुन काजी का पद मिल गया। जब तुर अमीरा  
 का प्रभुत्व निर्विकार स्थापित हो गया और महमूद का शासन का अंत तक  
 कायम रहा।

### बलवन द्वारा बिद्राहिया का दमन

अब बलवन ने ताज की शक्ति का सुमगठित करने का नाति का पुन  
 अपनाया। उसने बिद्राहिया का दमन करने तथा प्रान्ता का सन्तनन का प्रभुत्व  
 पुन स्वीकार करने पर बाध्य करने का सक्त्प किया। कुछ समय से बगाल  
 की लड़ा अस्मदयस्त थी। सूबदार तुगनगी ने लिखा का सत्ता का स्वाकार  
 करना बत कर दिया और स्वतन्त्र शासक की भाँति व्यवहार करने लगा।  
 उसने अवध पर भी आक्रमण कर दिया। बलवन का शासक हो बगाल का  
 राजनीति में हस्तक्षेप करने का अवसर मिल गया क्योंकि उदीमा में आजनगर  
 का राजा द्वारा पराजित होने पर तुगनगी ने लिखा सुल्तान से सहायता का लिए

प्राथम्यता का। उसकी सहायता के लिए बनारस ने तमूरगणों के नवतृत्व में एक सना भजनी किन्तु तमूर का उसने तुगन का लक्ष्य देखकर उससे बगाल का सूबा छोड़ने के लिए भी जाना दी और उस काम में सफलता मिली। मुआवज के रूप में तुगन का जवध की जागीर दे दी गयी। किन्तु शाह्र हा १२४६ ई में उसकी मृत्यु हो गयी। इसके उपरान्त भी बगाल ने दिल्ली सुल्तान का बहुत कष्ट पहुँचाया। १२५५ ई में तुगन के एक उत्तराधिकारी युजुमन ए-तुगरिनखाने ने सुल्तान का उपाधि धारण कर 'जा' जपन नाम के सिक्के जारी किये और धुतवा पट्टाया। किन्तु १२५७ ई के लगभग उसने कामरूप पर आक्रमण किया जिसमें वह मारा गया। इसके उपरान्त बगाल पर पुनः दिल्ली का सत्ता स्थापित हो गयी।

तीन चार वर्ष के भीतर ही फिर बगाल में उपद्रव खड़ा हो गया। कर्ण के सूबदार जसलाखा ने नखनौता पर अधिकार कर लिया और स्वतंत्र रूप से बगाल में शासन करने लगा। नासिरुद्दीन महमूद के शासन के अन्त तक बगाल स्वतंत्र हो बना रहा।

उत्तर पश्चिम में भी बनारस का विद्रोह सूबदारों का सामना करना पड़ा। उस प्रदेश में दिल्ली का सत्ता पूर्ण रूप में स्थापित नहीं हो पायी थी। इसके तीन कारण थे—(१) बनियानों में सफुद्दीन कानूग की उपस्थिति जो महत्त्वाकांक्षी शासक था और सुल्तान एवं सिद्ध तक अपने राज्य का विस्तार करना चाहता था (२) मगोता का निरन्तर दबाव और (३) स्थानीय पन्नाधिकारियों का द्राह्म जाँदिल्ला तथा इरान के मगोता के कुचक्रों में भाग लेकर अपने भाग्य का निर्माण करना चाहते थे। १२४६ ई में सफुद्दीन कानूग ने मुल्तान पर अधिकार कर लिया। किन्तु शाह्र ही उससे उसका छोटना पड़ा। कुछ वर्ष उपरान्त मुल्तान तथा उच्च के सूबदार कश्गूसाने दिल्ली के प्रभुत्व से अपने को मुक्त करके ईरान के शासक हुतागू का अधीनता स्वीकार कर ली। उसने जवध के सूबदार कुतबगखा से संधि कर ली और दाना न मिलकर दिल्ली पर अधिकार करने का प्रयत्न किया। किन्तु बनारस की जागरूकता तथा क्रियाशीलता के कारण उनकी यह योजना विफल रही। दिल्ली सुल्तान तथा हुतागू के बीच एक समझौता हो गया। हुतागू ने अपना एक राजदूत दिल्ली भजा और सुल्तान का यह आश्वासन दिया कि मैं भारत का उत्तर पश्चिम साम्राज्य का सन्तुषण नहीं करूँगा। किन्तु पञ्जाब में उपद्रव जारी रहे। १२५४ ई में जालौर पर भी मगोता का अधिकार हो गया। अब पञ्जाब का बचन तिमूर-शूरव का छाया में भाग दिल्ली सल्तनत के अंतर्गत रह गया और उत्तर पश्चिम का शेष प्रदेश मगोता के प्रभाव-क्षेत्र में चला गया। सिद्ध तथा सुल्तान भी बिना प्रचार दिल्ली सल्तनत के अंग बन रहे।

अनक सिद्ध सामंत अपनी लायी हुई स्वाधीनता पुन स्थापित करन का प्रयत्न कर रह थे । उनका प्रतिरोध करना बनवन के सामन सबसे कठिन काम था । उनसे पहले तोआय क विरोधिया का अभिनय किया । इस कार्य में उस महीना लग गये और विक्रम युद्ध करना पड़ा । यमुना की उपजाऊ घाटी में उसने एक प्रसिद्ध सामंत को पराजित किया जिमको मिनहाज ने अपनी ब मलकी बना है जोर एच सी गये ने चणेल बश का ब्रलोक्य वर्मा बताया है । (Dynastic History Vol II pp 720-30) । अनक पुष्पा का बध कर दिया गया और स्थिया तथा बच्चा को गुनाम देना दिया गया । उसके उपरान्त उसने दिल्ली के दक्षिण में मवात की गन्ता के उपद्रवा को पुचान का कार्य अपने ऊपर लिया । यहाँ पर भी उसने अपनी स्वाभाविक पाशविकता का परिचय दिया । रणयम्भोर पर उसने अनेक जाक्रमण किये और अंत में उसे पुन जीत लिया । १२४७ ई में उसने कानिजर क चणन राजा क विरोध का देवाया । १२४९ ई में उसने ग्वानियर के सिद्ध राजा पर चढ़ाई की सिन्धु मालवा और मध्य भारत में तुर्की सत्ता पुन स्थापित करन का अभिनय प्रयत्न रहा किया ।

### नासिद्दीन महमूद की मृत्यु

नासिद्दीन महमूद क अंतिम दिना क मरघ में हम जानकारी उपलब्ध नहा है । इस युग के इतिहास क लिए प्रथम श्रेणी का प्रामाणिक ग्रंथ नबकान ए नासिरी है किन्तु बर सहा १२६० ई क मध्य में समाप्त हा जाता है और त्रियाउरीन बरती अपनी तारीख ए फीराजशाही बनवन क मिहामनागण क बप में प्रारम्भ करता है । ऐसा प्रतात जाता है कि मुन्तान नासिद्दीन महमूद के अंतिम पांच बप भी शांतिपूर्वक बीते किन्तु १२६५ ई में उसकी आकस्मिक मृत्यु हा गयी । उसका बौद्ध पुत्र न था । इसलिये बनवन उसका उत्तराधिकारी बना ।

### बगावती युद्ध इत्तुतमिग परिवार

#### महमूदान इत्तुतमिग

- |               |                   |           |                |                            |
|---------------|-------------------|-----------|----------------|----------------------------|
| (१) नासिद्दीन | (२) ग्वानुदीन     | (३) रजिया | (४) मुन्तान    | (६) नासिद्दीन पुत्रा       |
|               | फीराज             |           | बहराम          | महमूद का बानी गयी          |
|               | (५) अनाउरीन महमूद |           | (७) बहराम उरीन |                            |
|               |                   |           | बनवन           |                            |
|               |                   |           |                | (मिहामन पर अधिपार कर दिया) |



## BOOKS FOR FURTHER READING

- 1 SIRAJ M *Tabqat-i-Nasiri translated by Raverty*
- 2 OJHA G H *History of Rajputana (Hindi ed)*
- 3 HABIBULAH *Foundations of Muslim Rule in India*
- 4 ELLIOT & DOWSON *History of India etc Vol II & III*

## बलवन तथा उसके उत्तराधिकारी

बलवन (१२६५-१२८७ ई.)

### प्रारम्भिक जीवन

बलवन का मूल नाम बहाउद्दीन था। इल्तुतमिश की भाँति वह भी इल्बारी कुब का और उमका पिता १०००० परिवारों का खान था। विशोरावस्था में बलवन का मंगल पक्ष लगे और राजता में जाकर उहाँ ने उम बसरा के एक स्वामी जमानुद्दीन नामक व्यक्ति के हाथों बच लिया। स्वामी उसे लिली लाया जहाँ इल्तुतमिश ने उसे खरी लिया। बहाउद्दीन ने हानहार के नाम से उसे इल्तुतमिश ने उसे चानीस गुलामों के प्रसिद्ध बनवा कर मर्यादा बना दिया। अपनी बुद्धि योग्यता तथा स्वामिभक्ति के कारण उसने उन्नति का और रजिया के शासनकाल में अमीर शिकार के पद पर पहुँच गया। रजिया के विरुद्ध पडोश रचने वाले अमीरों को उसने सहयोग दिया और रानी को अपराध करने में उनकी सहायता की। रजिया के शासन के मुत्तान बहामन ने उम पत्रों के गुप्तगोप्य जिले में खानी की जागरूकी और शासन ही हाँसी का जिला भी उसमें सम्मिलित कर दिया गया। बलवन के बुद्धिमत्तापूर्ण शासन के कारण जिले की जनता की भौतिक तथा मर्यादा मुधार हुआ। १२६६ ई. में उसने मंगोला के विरुद्ध एक मना भेजा और उहाँ उच का घरा उठान पर बाध्य किया। सम्भवतः मंगोलों का अपराध करने तथा नासिद्दीन को गद्दी पर विमान के लिए बनी उत्तराया था क्योंकि १२४६ ई. में वह नये मुल्तान का प्रमुख परामर्शदाता नियुक्त हुआ। कुछ वर्षों बाद उसने अपनी पुत्री का विवाह मुल्तान के गाय करके उममें सम्मिलित जा लिया। मुल्तान ने उम उन्नतियों की आधार प्रदान की और नासिद्दीन मुम्बिनवात नियुक्त किया। उमके विरुद्ध गायन के बुद्धि के विपक्ष में जान स उसकी स्थिति और भी अधिक दृष्टि में गयी और भ्रम का लिली गलनन में मर्यादा अधिन मर्यादपूर्ण यज्ञित हो गया।

नासिद्दीन के नासिद्दीन के रूप में बलवन ने जो कार्य किए उनका नाम पहल ही जान कर चुक है। उमने समस्त राजशासन रूप से लिली उमका उपयोग उमने नासिद्दीन के हितों के लिए किया। नासिद्दीन की हैमियत में उमने शासन व्यवस्था

म तथीन जीवन फूर लिया और विके-नीकरण की शक्तिया को रोका । अपनी मोधी हुई स्वतंत्रता तथा राज्य का पुन प्राप्त करने का प्रयत्न करने का जिदुआ का उमने मफनतापूर्वक प्रतिरोध किया और मगाता को दिल्ली की ओर उतन स राका । नाथ की शैमियन म वास्तव म उमन दिल्ली मस्तनत की महान सेवाए का ।

### राजारोहण

इनवतूता इमामी जाति परवर्ती नेयका का मत है कि गद्दी हचपने की इच्छा स बनवन न नामिरहीन महमूद को विप देकर मरवा डाना था किन्तु आधुनिक अनुसंधाना न इम कहानी को निराधार सिद्ध कर लिया है । यद्यपि राज्य की वास्तविक प्रभुत्व शक्ति बनवन के हाथा म थी और नामिरहीन के कोई पुत्र नहीं था किन्तु वृद्धावस्था और मिहामन पर बठन की मन्त्रवाकाशा के कारण जसा कि उसके पुत्र युगरायाँ न सकेत किया है उमन नवयुवक मुतान को विप नेकर मरवा डाना । कुछ भी रहा हा १२६५ ई म नामिरहीन महमूद की मृत्यु क बाद बनवन जिसका राजसत्ता पर पहने से ही अधिकार था गियासुद्दीन बनवन क नाम म सिहासन पर बठा ।

### ताज की प्रतिष्ठा की पुन स्थापना

#### बलवन का राजत्व सम्बन्धी सिद्धांत

ताज की प्रतिष्ठा की पुन स्थापना करना बनवन के सामने तात्कालिक काम था । तीघ राजनीतिक अनुभव ने उस मिया लिया था कि तुर्की अमीरा की शक्ति का नाश किये जिना मुलान न तो राजशक्ति का ही उपभाग कर सकता है और न अपनी प्रजा का सम्मान प्राप्त ही बन सकता है । वह स्वय अपना आखी से देख चका था कि तुर्की सत्तिक अमीरा के कारण मुतान की स्थिति गिर कर एक साधारण सामन्त की सी रू गयी थी । इतिहासकार बरनी दिखता है कि नामिरहीन के अन्तिम जिना म मुतान की प्रतिष्ठा पूण तथा नष्ट हा चकी थी । प्रजा के हृदय म न उमका भय था न उसने प्रति उठा । सरकार का भय जो मुशामन का जाघार और राज्य क यश तथा वभव का स्रोत है योगा क हृदय स जाता रू था और देश दुःशा का निवार था । बनवन न हम दुःशा का अन्त तथा ताज की शक्ति और प्रतिष्ठा की वद्धि करन का मन्थन किया त्रिमम प्रजा क हृदय म जानक कायम हा मर । राजत्व क सम्बन्ध म बनवन का सिद्धांत राजाआ क श्वी अधिकार क सिद्धांत क सदृश था । अपन पुत्र युगरायाँ क समभ उमने इन शक्त म अपन सिद्धांत की पार्या की राजा का हृदय श्वरीय वृषा का विशय भण्डार होता है और हम दृष्टि म बा भी मनुष्य उमकी ममानता नहीं कर सकता ।

एक दूसरे अवसर पर उसने राजा के यकित्तव की पवित्रता पर जोर दिया। उमका विश्वास था कि राज शक्ति स्वभाव से ही निरकुश है। उसका यह भाविक्रम था कि प्रजा में आजापालन करवाने तथा राज्य को सुगन्धित करने के लिए यह आवश्यक है कि मुल्तान पूर्णरूपेण निरकुश हो। निरकुश शासक के रूप में सफलता प्राप्त करने के लिए उमने अपनी निजा प्रतिष्ठा में वृद्धि करने का विशेष प्रयत्न किया। अपने उमने पौराणिक तुर्की वीर वृत्तों के अफामीयाक का वंशज बनलाया जानबूझकर गवात निवास करने लगा और एक विप प्रवार का गम्भीरता उमने धारण कर ली। सिद्दागत पर बन्त ही उमने मर्यादा तथा आमोत्प्रिय योग का साथ त्याग दिया। उमके व्यवहार में अत्यधिक गम्भीरता आ गया और सामान्य लोग से वार्तालाप करना भी उसने बन्द कर दिया। अपने दरबार की रम्मा का उमने रानी आन्ध पर राजत का प्रयत्न किया और दरबार में मन्त्र एशिया के मन्त्रजक तथा ह्वागिबमी मुल्ताना के राज का शिष्टाचार प्रचलित किया। उमने रम्मे तथा भयानक लोगों का अपना दरबार नियुक्त किया जो मदद नहीं तथा चमचमाती नद वनवारों त्रिये उसका आमपाम रख रहते थे। दरबार में मुल्तान का अभिवादन करने के लिए उमने मिजना और पवाम का नियम जारी किया। दरबारी वस्त्र की तत्क भन्व बनाने के लिए उमने प्रान्तवप रंगाना योहार नौराज का मताना आरम्भ किया। दरबारिया तथा सरकारी पदाधिकारिया के लिए उमने मन्त्रपात का नियम कर दिया उनका लिए विशेष प्रवार की पाशा निश्चित की और एक रस्म निर्धारित किये जिनमें ननिन भी विचरित हान की किसी को जाना नहा थी। दरबार में हमने तथा मुस्कराने पर भी प्रति बन्त लगा दिया गया। बनवन स्वयं सावजनिक स्थाता में उम नियमों का मन्त्रन बढोगता सपादन करता था। सामान्य योग का ता वान ही क्या नाची बना के अमीरा में भा मिलना और वातचीन करना वह पसन्द नहीं करता था। नाची जानि के नागा से उम घृणा थी। सिन्हा के एक जावारी न मुल्तान में मुत्तावान करने की आना मागकर अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति उस अर्पित करने की उता प्रवट का किन्तु बनवन ने उसमें मिनता स्वीकार नहीं किया। अपने जम्ठ पुत्र सुवराज मुम्भक की मृगु का ममाचार मुनकर भी वह विचरित नहीं हुआ और शासन सम्भली ननिन काय प्रववत करना रन्त पदधि अपन निवास कदा में नाकर बन्त विनय रिलगनर रोना था। इस शरर कडा नियम तथा रम्मा द्वारा बलबन न सिद्दागत की प्रतिष्ठा की पुन स्थापना की। उम युग में सिन्ही मन्तनन ही प्रथम धना का मुन्निम राज्य था जो मगाचों के मन्तानाशी श्राध के वावजूत अशुण्य बना रन्त। इसमें बनवन की प्रतिष्ठा में और भी अधिन वृद्धि रन्त।

## ‘चालीस के मण्डल का नाश

यस्य ने अनुभव किया कि सुतान की निरबुधता के माग म सरमे बड़ी याथा तुर्की अमीर थ जिनरा ननुत्व चानीस क मण्डल के हाया म था । प्रमुग तुर्की अमीरा के एस मण्डल न मुत्तान का अपने हाथा की बठपुतनी बना लिया था और सल्तनत की सभी महत्वपूर्ण जामीरें तथा पर आपस म बाँट निय थे । इस मण्डल का प्रादुर्भाव इत्तुतमिश क समय म हुआ था और इसके सभी सत्स्य प्रारम्भ म उस सुतान क गुनाम थ । इत्तुतमिश तो अपनी प्रतिष्ठा कायम रखन तथा चात्रास पर नियन्त्रण रखन म सफल रग किन्तु उसकी मृत्यु के उपरांत सुताना तथा चालीस क बीच तीव्र सघष चना जिसम चानीस की विजय हुई और उमक सदस्या न इत्तुतमिश के उत्तराधिकारिया को अपनी इच्छानुसार नाच नचाया । बलबन न गद्दी का अपन तथा अपने बशजा क लिए सुरक्षित बनाने क इतु एम मण्डल का नष्ट करन का सकल्प किया । सबप्रथम उसने निम्नकाटि क तुर्कों को महत्वपूर्ण पदा पर नियुक्त किया और इस प्रकार उहे चानीस के समकक्ष बना लिया । तदुपरांत उमन उसक सत्स्या का दमन करन तथा प्रजा की दृष्टि म उनका महत्व गिराने के लिए साधारण अपराधो के लिए भी उह कठोर दण्ड दिये । बन्धू क गवन्तर मलिक बकबक न जो एक प्रमुख अमीर तथा चानीस का एक सत्स्य था अपने एक नौकर का इतना पिटवाया कि उसकी मृत्यु हा गयी । जब उसके विरुद्ध बलबन स शिकायत की गयी ता सुतान न आना दी कि उस जनता के मामले काडा स पीटा जाय । एक जय जमीर हैयातखान न जो अवध का शासक था शराब के नश म एक जादमी का बध कर लिया । बलबन ने आज्ञा दी कि हैयातखा के ५० कोट लगाय जाय और तदुपरांत उसे मृत पुरुष की विधवा क मुपुट कर लिया जाय । हैयातखान न २ ० टका देकर किसी प्रकार मुक्ति प्राप्त कर नी किन्तु इतना लजित हुआ कि मृत्युपयन अपन घर स बाहर नहीं निकला । अवध के शासक अमीनगवाँ को जो बगान के शासक तुगरिल बग द्वारा पराजित होकर भाग आया था बलबन न अयोध्या के फाटक पर नटकवा लिया । कहा जाता है कि बलबन न जपन चचरे भाई शरखाँ को जो चालीस का याग्य तथा प्रमुख सत्स्य था और भ्रष्टिण्य भटनर समाना तथा गुनाम का सूवेदार था विष देकर मरवा डाला था क्याकि मुल्तान उमकी योग्यता और महत्वाकाक्षा क कारण उससे डाह रगता था । उसकी मृत्यु के बाद कोई एसा विराधी नहीं रह गया जो बलबन की पूर्ण निरबुधता के माग म काँटा सिद्ध हो सकता । एम प्रकार मुल्तान न कपटपूर्ण तथा बबर तरीका म चानीस के मण्डल का नाश कर लिया और उसके जो सत्स्य मरने तथा पत्न्युत होने मे बध रहे उनका उमने कठोरता मे दमन कर लिया ।

गुप्तचर विभाग का सगठन

वनवन अपनी निरकुश नीति को कार्यान्वित करने में इसलिए सफल हुआ कि राजधानी तथा प्रांता में होने वाली घटनाओं और जमीरा तथा सरकारी पदाधिकारियों की जाकाक्षापूर्ण योजनाओं के सम्बन्ध में उस सही ममाचार शीघ्रता से प्राप्त हो जाते थे। वनवन की शासन-व्यवस्था सुचारु रूप से चल मरी इसका मुख्य श्रेय उसके गुप्तचर विभाग को था जिसके सगठन में उसने अपना अधिक समय तथा धन व्यय किया। उसने प्रत्येक सरकारी विभाग प्रत्येक प्रांत और यहाँ तक कि प्रत्येक जिले में गुप्त सवादाता नियुक्त कर लिये। सवादाताओं के चरित्र तथा राजभक्ति की वह बड़ी मावधानी से छान चीन करता था। उसने उन्हें अत्यन्त वनन दिये और गवनरा तथा मनानायकों की अधीनता से उन्हें मुक्त रखा। उन्हें प्रतिदिन मुल्तान के पास महत्त्वपूर्ण घटनाओं का समाचार भजना पड़ता था। यदि कोई सवादाता अपने कृत्य का उचित रूप से पालन न करता था तो उस एसा पण्डित लिया जाता था जो दूसरे के लिए उदाहरण का काम करे। वनयू के सवादाता का जिसने मलिक बकबक के सम्बन्ध में मुल्तान का उचित समाचार नहीं भजा था नगर के फाटक पर लटका लिया गया था। इस प्रकार सुसगठित गुप्तचर-व्यवस्था वनवन के निरकुश शासन का मुख्य आधार बन गयी।

वनवन की निरकुशता का मुख्य आधारस्तम्भ उसकी शक्तिशाली सेना था। उसने पुनः सगठन की ओर उसने यथोचित ध्यान दिया। बुतुतुहीन एकर क समय में तुर्कों मिपाटिया को मलिक सवा के बन्धन में नही बल्कि भूमि-कर का कुछ भाग लिया जाता था। उनमें से कुछ को व प्रदेण जागीर रूप में दे दिया जाते थे जिन्हें जीतकर मिली सन्तान में नही मिलाया जाता था जिन्म के स्वयं उन्हें जीतने का प्रयत्न करें। दनुतमिश ने भी सनिक मवा के बन्धन में जागीरें प्रदान करने की पुरानी नीति का ही अनुकरण किया। इन सनिकों के उत्तराधिकारी भी उन जागारा का उपभोग करने एवं यद्यपि उनमें से अनेक एम थे जो सनिक मवा का पालन न करत थे और अनेक ऐसे थे जो कभी-कभी राज्य की सनिक मवा करत थे। वे ममसत थे कि हमारी भूमि पर ना हमारा जन्मिद्ध अधिकार है। वनवन ने इस प्रकार व जागीरदारों के इन्तिम की जान करवायी जिन्म पाल हुआ कि अधिनतर भूमि वृद्ध पुण्या के अधिकार में थी जो राज्य की किसी भी रूप में सवा नही करत थे। मुल्तान में आया निवासी कि वृद्ध जाया और विधवाओं से भूमि घापस न ली जाय और उन्हें नरक पेशान दे ली जाय। जो नाग जवान तथा सनिक मवा के याग्य थे उनकी जागीरें उनके अधिनतर में रहने दी गयी किन्तु उनका गाँवा स भूमि

वर समूह करने का काम केन्द्रीय सरकार ने अपने ऊपर ले लिया और जागीर दारा को नया नियम देने का नियम बना लिया गया। सुल्तान की इन आज्ञाओं का विरुद्ध जागीरदारों ने जोरदार आवाज उठायी। वे दिल्ली के दूतों को नवाब पदमती के पास पत्रों के जवाब देने का मित्र या और उमर के मामलों में सुल्तान से सिफारिश करने की प्रार्थना की। कातवान के अनुमति विनय करने पर नवाब ने वृद्ध जागीरदारों के सम्मुख अपनी आज्ञा रद्द कर दी क्योंकि सुल्तान के इस मुद्धार का अधिक प्रभाव नहीं था। सिफारिशों को भी मन्त्रि-सेवा के बदन में भूमि देने की पुरानी नीति जारी रही। नवाब सन्धि-नाम अपने स्थान पर विरायत सिपाही भेज दिया करते हैं जिनके पास अस्त्र-शस्त्रादि भी समुचित नहीं हात थे। यह प्रथा अग्रहण बन्द हो गयी।

नवाब ने इमाद उल-मुल्क को जो अत्यन्त योग्य तथा सज्जद अफसर था सना मन्त्री (नीवान ए आरिफ) के पद पर नियुक्त किया और सेना का सम्पूर्ण प्रबंध उसी का सौंप दिया। उसका वित्त मन्त्री के नियंत्रण में भी मुक्त कर दिया गया। इमाद ने सन्धि की भरती, वेतन तथा साजस-जाज के सम्बन्ध में विशेष रक्षित काम किया। उमर मन्त्रि-अनुशासन स्थापित किया और अपनी बुद्धिमत्तापूर्ण तथा ईमानदारी की नीति द्वारा सेना का अत्यन्त बखशाती बना दिया। नवाब ने सन्धि-संगठन में क्रांतिकारी परिवर्तन नहीं किये किन्तु उमर की जागरूकता तथा कठोरता और सेना मन्त्री के योग्यता के प्रति अत्यधिक ध्यान के कारण सना की योग्यता तथा मनावन में बहुत उन्नति हुई। सल्तनत की शक्ति वास्तव में उसी पर निर्भर थी।

### विद्रोहों का दमन

मध्यकालीन भारत के इतिहास के विद्यार्थी बहूधा के मन्त्र-पूण तथ्यको भूत जाते हैं कि बुतुतुहीन ऐवक से नकर बनूबाद की मृत्यु तक सम्पूर्ण तथा कथित गुनाह शासनवाक में तुर्की सुल्तान के देश में नय प्रशासकों की जीवन-अपन राय में नया मित्रा सब और उनका समय और शक्ति उन इनाका की पुनर्विजय में ही खर्च हो गयी जिन्हें मुहम्मद गौरी ने जीता था किन्तु जो उसके उत्तराधिकारियों के हाथ से निकल गया था। जब नवाब गद्दी पर बैठा तो उमर मन्त्रिय भी वही पुराना प्रथम उपस्थित था कि सिद्ध राजाओं में नये प्रवेशों को जीतकर दिल्ली सल्तनत में मित्राया जाय अथवा नहीं। उमर कुछ मित्रा ने उस विजय-नामि का अनुसरण करने को ही मनाहती किन्तु सुल्तान यथाथवाती था इसलिए उमर अनुभव लिया कि ऐसा करने से भयकर मकट के उपस्थित शान की आज्ञा के मंगला के लिए दिल्ली पर आक्रमण का माग्यन जायगा और आन्तरिक अवस्था की शक्तियाँ उठ गयी हानी। इसलिए उमरने नवीन प्रेशा का न जीतने का निणय किया। उमरने पुराना को

हा पुनर्विनय करना तथा शिखा मल्लनन व अधिकार में जा कुठ था उसका मुमगठिन करना हा अधिक उचित समथा ।

यह काय भी दु साध्य था । हिन्दुस्तान व अधिकतर भागा में हमार दग धामिया न तुर्की सत्ता का जुड़ा उनार फका और तुका शासका तथा मनिवा का अपन यहाँ स स्रष्ट शिया । उहान तुर्की प्रस्था का उटना तथा नष्ट भष्ट करना आरम्भ किया जिसस न ता सता हा सब जीर न तुक पनाधिकारी गगान ही बसून कर सके । दाआय तथा अवध में निरन्तर विद्रोह हाता रहा । बनहर (आधुनिक रहनसण) में मुल्तान व सनिक तनिन भी भूमि-कर नपा बसून कर पान थ । राजपूता का उटमार व कारण थातायात व माग मुरशिन नहा रह थ । बगाल अमराहा पटियाली तथा यम्पिल में विनाहा राजपूता व गठ थ जहाँ स निकलकर व तुर्की पर अत्याचार करत किमाना का कृपि करन में राबत यात्रिया का उटन तथा फिर अपन स्थाना का नीर जान । शिखा व निकटवर्ती प्रदेश में टाकुआ का भरमार था । व शिखा का जनता का लगभग प्रतिनिधि सून थ । उनक अय व कारण मयाह का नमाज व उप रात नगर व फाटक बू कर दिव जान थ । बगाल शिखर राजस्थान जाति दूरवर्ती प्रस्था में इसस भी अधिक खराब शशा था । उस युग व हमार दश भक्त नताजा न लूट तथा नाश का नीति का अनुसरण किया जिसमें तुर्की का दश में अपनी सत्ता सुदूढ तथा मुमगठिन करन का अवसर न मिल सक । किन्तु दुभाग्य में प्रथम शशा व नतृत्व व जनाक व कारण व मयुक्त हाकर पर्याप्त सनिक शक्ति न सञ्चित कर सक जिसमें व तुर्की का शशा स मार भगान में मफन हा सकत ।

विनाहा का दमन करन का काय अत्यन्त दु साध्य था फिर भी बलवन न अपना सकल्प नहा त्यागा । अपन राज्यागोहण व प्रथम वप में हा उमन विना हिया तथा डाकुआ का दमन करन शिखा व निकटवर्ती प्रस्था का मुगठिन बना शिया । उसन उनका कठार दण्ड शि वना का साफ करवाया और शिखा व समाप घामीण शशा में चार दुगा का निमाण कराया तथा उमम रुपय अफगान मनिन नियुक्त किय । दूसरे वप उमन दाआय तथा अवध में सनिक कायबाहा आरम्भ की । समस्त प्रस्था का उमन जनक सनिक शशा में विभक्त किया और जगला का माफ करन तथा स्वाधानता प्रेमा हिन्दू डाकुआ तथा मामन्ता व गिराहा व विरुद्ध निमम मधय चलान व लिए कमठ तथा माग्य पनाधिकारी नियुक्त किय । आजपुर पटियाला यम्पिल तथा जनाता में उमन सनिक चौकिया स्थापित का जीर उमम जड-खबर अफगान मनिन रग । नरुपरान्त बलवा न बनहर का आर कृच किया । यहाँ उमन अपन मनिवा का गाँवा पर आक्रमण करन मकाना का जलान तथा सम्पूर्ण पुरग जनता का



करन करन की आज्ञा दी। निर्दोष स्त्रिया तथा बच्चा का तुल्य दास बनाकर ल गया। इन सब तरिका से सुल्तान न तागा व हृदय में आतंक कायम किया और ममूत प्रश्न का उज्ज्वल कर दिया। प्रत्येक जगत् तथा गाव में मनुष्या का ताशा का सन्तान हुआ छोड़ दिया गया। यान्-बहुत लाग जा यत्र-त्र छिप रह व भी भय व कारण पूणतया दब गये। इतिहासकार बरना निरन्तर है कि इनके उपरान्त फिर कभी कतहर निवामिया न मिर नहीं उठाया और वह प्रश्न याधिया किसानता तथा सरकारी पन्नाधिकारिया के लिए पूणतया सुराि त ही गया।

राजपूताना तथा बुन्देलखण्ड में भी विद्रोह का दमन करन के लिए सनाए भेजी गयी किन्तु उन प्रदेशों में उह कवन आशिर सफलता ही प्राप्त हो सकी। बंगाल की पुनर्विजय

बंगाल न पूर्व सुल्ताना की भांति बलवन का भी अत्यधिक कष्ट दिया। उत्तर-पश्चिमी सीमाओं पर मंगला के सम्भावित आक्रमण तथा सुल्तान की वृद्धावस्था से प्रास्ताहित होकर बंगाल के सूबदार तुगरिलखा ने जिसने बंगाल के शासन के प्रथम वर्ष में दिल्ली का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया था १२७६ ई में विद्रोह का यन्त्र खड़ा किया। उसने सुल्तान की उपाधि धारण की अपन नाम के सिक्के जारी किये तथा खुतबा पढाया। विद्रोह का दमन करने के लिए बंगाल ने अवध के शासक अमीनखा को भेजा। किन्तु अमीनखा की पराजय हुई। इस पर बंगाल का इतना क्रोध आया कि उसने उसका अवध के फाटक पर गटकवा दिया। इनके उपरान्त तिमिति के नेतृत्व में सुल्तान ने दूसरी सना भेजी। उसकी भी वहा दशा हुई जो उसके पूर्वाधिकारी अमीनखा की हुई थी। एक तीसरी सना भी इसा प्रकार पराजित होकर लौट आयी। अब बलवन का धीरज जाता रहा और उसने स्वयं बंगाल के लिए कूच करन का तयारिया शुरू कर दी। न ता नाम फौज तथा अपन त्रितीय पुत्र बुगराखा का साथ लेकर वह लखनौती के निकट जा पहुँचा। तुगरिलखा राजधानी छाँटकर पूरबी बंगाल की ओर भागा। बंगाल न विद्रोही का पीछा किया और ढाका के समाप मुनारगाँव पहुँच गया। ढाका से आगे बहुत दूर पर तुगरिलखा वक्तार द्वारा पकड़ा गया और पूरबी बंगाल के हाजानगर में उसका बंधन किया गया। अब सुल्तान लौटकर लखनौती आया और वहाँ तुगरिलख के अनुयायियों को उसने बँटार दण्ड दिया। इतिहासकार बरनी लिखता है कि मुख्य बाजार के दाना जाँर एक-एक मीन नम्बी सड़क पर एक लूटा की पानि गाना गयी और उन पर तुगरिलख के साधिया के शरार का ठाका गया। दसन बाना न एसा भयकर दृश्य कभी नहीं दखा था और बहुत से नाग ता जातक तथा घृणा से मूर्च्छित हो गये। इस प्रकार अपनी प्रतिशाप की प्यास का तृप्त

करके बनवन न बुगराखाँ का बगाल का सूत्रार नियुक्त किया जोर उस दिल्ली का प्रति वफादार रहने की सलाह दी। उसने अपने पुत्र सक्त में जा कहता है उस समझा और हम वान का मत भूता कि यदि हिन्दू सिध मानवा गुजरात लखनौती अथवा मुनागाव के सूत्रार विद्रोही हाकर लिता के विरुद्ध तलवार उठायेगे तो उन्हें उनका स्त्रिया पुत्रो और अनुयायिया का भा कहा दण्ड मितगा जा तुगरिल तथा उसका माथिया का मिला है। जल म जल उस विश्वास हा गया कि बगाल म विद्रोह नही हागा तब वह लिता लौट गया। इसका उपरात लिता की सना के भगाडा का भी जा तुगरिल स जाकर मिल गय थ किन्तु जा जब गया बना लिय गय थ मुल्तान न तुगरिल के साथिया का भाति हा दण्ड देने का सक्तप किया। किन्तु एक काजी के अनुनय विनय करने पर उसने अपनी याजना म कुछ परिवर्तन कर लिया। अपराधिया म जा साधारण काटि के ताग थ उह क्षमा कर लिया गया उनस जा ऊची कथा के थ उह जल्पकाव के लिए दण्ड लिया गया जोर जा उनम भी अधिक उच्च शणा के थ उह कारागार म डाल लिया गया। किन्तु उनम जा अप्फर थ उह भसा पर विटाकर लिता की सत्वा पर धुमाया गया।

### मगोल आक्रमण

हम पहले लिख जाय हैं कि सततन का उत्तर पश्चिमी सीमाजा पर मगाला के आक्रमण का मदक भय बना रहता था और इसलिए बनवन विजय के हनु आक्रमणकारी नाति का अनुसरण नहा कर सक्ता था। मगाल ताग उत्तर पश्चिमी सीमाजा पर जा धमक जोर लाहौर पर उहाने अपना प्रभाव स्थापित कर लिया। उस लिशा म केवन सिध और मुल्तान लिता के अधा नम्य शासका के अधिकार म रह गय थ और उन प्राता पर भा उत्तर पश्चिम स आक्रमण का भय बना रहता था। सततन का उत्तर पश्चिमी सीमाजा का मुदुद बनान के लिए बनवन न एक दुग टुसला का निमाण कराया जोर बलिष्ठ अप्फान सनिक उमका रथा के लिए नियुक्त किया। उस समस्त प्रश्न को उसने अपने चकर भाइ शरमाँ के मुपु किया। परसाँ पराक्रमे यादा था। उसकी निर्भीकता न मगाला के हृदय म आतक स्थापित कर लिया जोर साक्कर जसा उद्दण्ड जातियाँ भी उसम अत्यन्त भयभात ग गया। १२७० ई के लगभग उसकी मृत्यु न एक याग्य सीमा रक्षक उठ गया। अब बनवन न सम्पूर्ण सीमान्त प्रश्न का दा भागा म विभक्त किया। मुनम तथा समाना के प्रान्त को उसने अपने छात्र पुत्र बुगराखाँ तथा मुल्तान सिध जोर लाहौर का चेष्ट पुत्र मुहम्मदसाँ का सौप लिया। शाहजादा मुहम्मद याग्य सनिक तथा गुलान शासक था। साहित्य म उसकी विनाय रचि थी। भारत के दो महानतम

फारसी बधि अमीर बुगराव तथा अमार हमन ने अपना साहित्यिक जीवन उमीर के दरबार में प्रारम्भ किया। उसने उस युग के महानतम फारसी बधि शत साप्ती का भाग अपने दरबार में जामात किया किन्तु वृद्धावस्था के कारण बधि ने अत्यन्त नम्रतापूर्वक इस सम्मान का स्वीकार करने में असमर्थता प्रकट की। मुहम्मद ने मंगोलों की प्रगति का रोकने के लिए ठास काय बधि फिर भी उहाने उत्तरी पंजाब का चूटा जीर गनज का पार कर दिया। मुहम्मद तथा बुगरावों ने अपना संयुक्त सनाए भजा ज्ञान आश्रमकारिया का पराजित किया और मार भगाया। किन्तु १२६६ ई में मंगोल पुनः भारत में आ गये और इस बार उहाने युद्ध में मुहम्मद का मार डाला। उस समय बनबन की अवस्था में बधि से अधिक हो चुका था। ज्येष्ठ पुत्र का मृत्यु के समाचार ने उस पूणतया भूमिशात कर दिया तथापि यद्यपि सुल्तान उत्तर पश्चिमी सीमाओं की रक्षा के काम की ओर ध्यान देता रहा। उसने साहीर पर पुनः अधिकार कर लिया किन्तु मंगोलों के विरुद्ध उस इससे अधिक सफलता नहीं मिला और दिल्ली की सत्ता साहीर के उस पार नहीं बढ़ सकी। रावी के पश्चिम का प्रश्न भाग मंगोलों के ही अधिकार में बना रहा।

### बनबन की मृत्यु

शाहजादा मुहम्मद की मृत्यु का हम उल्लेख कर चुके हैं। बनबन के वंश का सम्पूर्ण आशा उसी पर की द्रित थी। उत्तराधिकार के लिए उसका पहले ही नाम निर्देशित कर दिया गया था। उसकी मृत्यु ने बनबन पर घातक प्रहार किया परन्तु यह समाचार सुनकर भाग बनबन अविचलित रूप से राज्याय बत या का पालन करता रहा यद्यपि रात्रि के समय अपने निवास-बंश में वह विनय प्रिनत्वकर राया करता था। वास्तव में इस वंशाघात से वह कभी सभल नहीं सका। अपना अन्त निकट समझकर उसने तृतीय पुत्र बुगराव का बुलाया और रणनावस्था में अपने साथ रत्न का बंधा। किन्तु बुगरावों उत्तर दायित्वहीन यकिन था और पिता के बंधार स्वभाव में डरता था। इसलिए वह चुपके से तम्बनीती का गिसक गया। तब बनबन ने मुहम्मद के पुत्र बुगुराव का अपना उत्तराधिकारी चुना जिसके उपरान्त कुछ ही दिनों के भीतर उसका देहांत हो गया (लगभग १२६७ ई के मध्य में)।

### बनबन का मूयाकन

लगभग चात्तीस वर्ष तक दिल्ली सल्तनत का यागडार बनबन के हाथों में रहा। पहले सुल्तान के नायब और फिर सुल्तान के रूप में उसने राज काज चनाया। इस सम्पूर्ण युग में उसका एक ही मुख्य उद्देश्य था—हिन्दुस्तान में नव स्थापित तुर्कों सल्तनत का सुसंगठित करना। इसमें सन्देह नहीं कि इस





काय में उस महान सफलता प्राप्त हुई। उमर आंतरिक शांति की पुनः स्थापना का और सततता की उत्तर परिश्रमों साम्राज्य की रक्षा के लिए समुचित प्रबंध करके उसका मगोना के जाग्रमणा से बचाया। उमरने पड़ामी हिंदू शासकों की भूमि का जीतन का प्रयत्न नहीं किया। इसलिए नहीं कि वह उनकी स्वाधीनता अपहरण करना अनुचित समझता था बल्कि इसलिए कि उस विश्वास था—और उमरका यह विश्वास ठीक ही था—कि नये प्रशासक का जीतन के हेतु आक्रमणकारी युद्ध चलाने से सुखवस्था नष्ट हो जायगा और इस देश में तुर्कों के सीमित साधना तथा जनसंख्या पर आवश्यकता से अधिक दायर पड़ेगा। बलवन के पूवाधिकारियों के शासनकाल में ताज की प्रतिष्ठा गिर चुकी थी उसका उमर पुनरुत्थान किया। उसने बड़े बड़े तुर्क साम्राज्य का शक्ति का कुचलकर इस देश में तुर्कों का शासन का एक नया रूप दिया। निस्संदेह वह योग्य तथा बठार शासन और सफल सुनान था।

उमरने निष्पत्ता से तथा सवय आतंक स्थापित करके अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त की। अपने शत्रुओं का उसने जाण्ड न्ये व आवश्यकता में अधिक कठोर निदयतापूर्ण और महा तक कि बबर के किन्तु यह मानना पडगा कि उमर पाद उसका मतभेद अपने हार्मिक उद्देश्य का प्राप्त करना था। वनवन पक्का सुन्नी मुसलमान था। इस्लाम द्वारा निर्धारित कृत्यों का वह बनी सावधाना में पालन करता था।

मन्चरिय मुस्लिम धर्माधीशा के समग्र में उसकी अत्रिक रुचि थी। कहा जाता है कि वह सदैव उहाँ के साथ भाजन करता और उनसे मुस्लिम कानून तथा धर्म पर बातलाप किया करता था। वह धर्म था तथा अपना बड़े सत्यक प्रजा के प्रति उमरका व्यवहार असहिष्णुतापूर्ण था। मानवाचित महानुभूति का उसमें पूर्ण अभाव था इसीलिए अवस्था में जयवा निग के लिए उमरके हृदय में सम्मान नहीं था। वनवन विद्या तथा शिक्षा का पापक था। उसने मध्य एशिया के अनन राजकुमारों तथा विद्वानों का अपने यहाँ शरण दी। ये लोग मगोना के चगुन में बचन के लिए अपने देश से भागकर आय थे। मुस्लान न उनसे निवाह के लिए समुचित भत्ता तथा गजधानी में पृथक निवास-गृहों का प्रबंध किया। बलवन का दरबार इस्लामी विद्या तथा मस्जिदों का केंद्र था। उस स्थापत्य से विद्ये प्रेम था। तिल्ला के पूर्व मुस्लानों का भाँति उसमें भी रचनात्मक प्रतिभा का प्रभाव था। उसमें व्यवस्था कायम करने का शक्ति था नया चाजा का आविष्कार करने का नहीं। उसने नया शासन सम्बन्धी अथवा मन्त्रि सम्घाओं का जन्म नहीं दिया किन्तु उमरकी निरन्तर जागृकता तथा दत्तचित्तता के कारण पुराना सम्घाओं में अधिक सुधार रूप में काय किया। उसका राजस्व सम्बन्धी सिद्धान्त राजाओं

नृपथी अभिचार क गिद्धा ग मितता कुसता था जीर विशद निरकुशवा उगता ।।।।। का आचार सम्भ था । तुर्की नरुत की श्रेष्ठता म उसका विश्वास था । गर-नुकी का जामा म स्याता दाता उग पम न था जीर भारताय मुसत माता का गजराय पम पर नियुक्त करा क वन गवथा विरुद्ध था । एत अपगर न जमराय जिन क कायालय म तव भारताय मुसतमान का वन र पम पर नियुक्त करा सिया था । द्रगक निर बचवन न उस वन डाटा पत्रवार । गाधारण लाग का वट पृणा का दृष्टि म स्यता था जीर निम्न कुता म उत्तम ध्यविनया म वात करना भी वन अपना प्रतिष्ठा क विरुद्ध समयता था । अपन स्वभाव शिशा तथा विश्वास सभा की दृष्टि स वट साधारण लाग क दृष्टिवाण का समझन तथा उनक प्रति सहानुभूति स्थान क जयोग्य था ।

बचवन न तुर्की सल्तनत की रक्षा का सुप्रबन्ध किया जीर उस नया जीवन प्रदान किया यकी उगता सबग महान काय था । उसन ताज की प्रतिष्ठा का पुनरुत्थान किया यह उसकी दूसरी सफलता थी । राय म सबत्र पूण शान्ति जीर यवस्था का स्थापना करना उसका अय महत्वपूर्ण काय था । उस युग म तुर्की सल्तनत का जिन कठिनाइया और सबटा का सामना करना पण उनका दरसन हए यह मानना पडगा कि बचवन की उपयुक्त सफलताए साधारण काटि का न थी । तथाकथिन गुनाम सुल्ताना म श्लुतमिश क बाद उसका दूसरा स्थान है ।

ककुबाद (१२८७-१२९० ई )

बचवन न अपनी मृत्यु स पहल कसुसरव का उत्तराधिकारी नियुक्त किया था किन्तु उसके जमीरा न जिनका नता दिल्ली का कोनवान फखरुद्दीन था उस हटाकर बुगराली क पुत्र ककुबाद का सिंहासन पर बिठाया ।

रायाराहण क समय ककुबाद की अवस्था बबल सत्रह बय की थी । उसका पानन पापण उसक दादा बलवन के सरक्षण म हुआ था जो आचार विचार क सम्बन्ध म जत्यन्त कट्टर था । उस न किसी सुत्रा का मुस दरसन दिया गया था और न शराब का स्वाद ही लेन की आना दी गयी थी । अब वह सब प्रतिबन्धा स मुक्त हा गया और एक विशाल राय का स्वामी बन गया कसलिए उसका नवा हुई वासनाए उमर पटा और वह शराब स्त्री प्रसंग तथा तटक भङ्ग क जीवन म लिप्त हा गया । उसक दरवारिया न भी उसका अनुसरण किया यवाकि पूब-मुल्तान द्वारा नगाय गय प्रतिबन्धा म वे ऊब गय थ । एस जवान अनुभवहान तथा आमोद प्रिय सल्तान क लिए शासन यवस्था की उपेक्षा करना स्वाभाविक ही था । राय की शक्ति दिल्ली क कोनवान क दामाद निजामुद्दीन नामक एक चरित्रहीन कुचक्रा क हाथा म चला गयी । ककुबाद उसक हाथा की कठपुतली बन गया । इस परिवर्तन का लाभ

उठाकर मगाला व अपन नती तैमूरगी व नवृत्व म पजाव पर आक्रमण किया और समाना तक वर आय। भाग्य से मनित्र बकबक न उह ताहोर क निकट पराजित किया और उनम से लगभग एक हजार का वन्दा बनाकर तिला ल जाया जहा उनका वरन कर दिया गया। राज्य क भीतर मरुत्वाकाया यकिनिया न बानून तथा यकम्या का उपस्था करना आरम्भ कर दिया और निजामुद्दौल न स्वयं गद्दी प्राप्त करन क उद्देश्य से अपन मभा योग्य प्रतिनिधिया का अपन माग से हटान का प्रयत्न किया।

बकुबाद का पिता युगराखौ बलवन के समय म ही बगान की सूबदारो करता जाया था। जत्र उसन तिला क ये ममाचार सुन ता एक शक्तिशाली सना तवर वह राजधानी का आर चन पया। कहा जाता है कि अपन दुवन पुत्र क हाथा म गद्दी छान नता उसका मुख्य उद्देश्य था। किन्तु एक अय लराक का कहना है कि वह बकुबाद का उचित सलाह दना चाहता था तिमसे वह आमात्र प्रिय जीवन त्यागकर राजराज की आर ध्यान देन योग। उसका उद्देश्य कुछ भा रण हा १२८८ म वह अयाध्या क निकट घाघरा क विनार आ डटा। बकुबाद न भा एक उनता हा बनी मना तकर उसके विरुद्ध बूच किया। निजामुद्दौल न पिता और पुत्र का मित्रन से रावन का भरसन प्रयत्न किया और बकुबाद को उसन युद्ध क त्रिण भन्काया। किन्तु बलवन क समय क कुछ स्वामिभक्तन सबका क प्रभाव क कारण जन म पिता-पुत्र म समझौता हा गया। यत्र निश्चय हुआ कि युगराखा तिला सुतान का जा बगान क शासक का प्रभु था अभिवादन करगा। युगराखा बकुबाद का अभिवादन करन क त्रिण राजा हा गया। जब यह रम समाप्त हा गया ता बकुबाद का हृदय इविन हा गया। वत्र अपन पिता क चरणा पर गिर पया और उस न जाकर उसन गद्दी पर त्रिठाया। कुछ दिन क माथ माथ रह। विदाइ क समय युगराखा न अपन पुत्र का अपना लग वन्दन तथा निजामुद्दीन जसे सनाहरार म पिण हणन का सनाह हा। इस नैट क उपरान्त क अपन अपन स्थाना का लोत्र गय। बकुबाद न थार ही समय क त्रिण पिता का सलाह क अनुसार काम किया। कुछ दिन क त्रिण उसन भाग विनाम म मुख माट दिया और निजामुद्दीन का विण दरर मरवा डाला। तत्परांत वत्र पुन बूबवन प्रमात्र तथा इन्द्रिय-मुग्धा म निपत हा गया। निजामुद्दीन की मृत्यु क बाद जतानुद्दीन फीराउ नामक एक स्वजो अमीर का सुलतान न बुलन्दशहर का जागीर प्राप्त का और अपनी सना का सनापति नियुक्त किया। हम नियुक्ति क कारण त्रिवागिया म पूत्र पह गया।

तुर्की अमीर जा स्वतंत्रिया का गन्तुव भमशन थ जतानुद्दीन क मत्र थ। इमक कुछ ही समय बाद बकुबाद का तबका मार गया। इगलिए तुर्की अमीर



१ उमर पुत्र का जा अभी शिशु ही था शमसुद्दौल कयूमस का नाम से सिंहासन पर बिठा लिया। उद्दौल तुर्की का संगठित करके जलालुद्दीन का बंध करने का प्रयत्न किया। किन्तु जलालुद्दीन पहल से गावधान था इसलिए उमर उतकी याजना पूरा हान से पूव ही दिल्ली पर अधिकार कर लिया। कबुवा का बंध करवाकर वह स्वयं नय मुल्तान का सरक्षक बन बठा। यह प्रबंध अम्घायी था और चन नहीं सकता था जन जलालुद्दीन न कयूमस का बंध करवा लिया जोर स्वयं मात्र १२६० में सिंहासन पर बठ गया। इस प्रकार तथानवित गुनाम-बश का अन्त हो गया।

#### BOOKS FOR FURTHER READING

- 1 BARANI JIA UD DIN    Farikh ; Firozshahi
- 2 SIRAJ MINHAJ UD DIN    Tab'jat ; Na 121
- 3 OJHA G H    History of Rajputana (Hindi ed)
- 4 HABIBULLAH    Foundations of Muslim Rule in India
- 5 LLLIOT & Dowson    History of India etc Vols II & III

## तथाकथित गुलाम सुल्तानों की शासन-व्यवस्था

### राज्य विस्तार

सामान्यतया लोग नहीं जानते हैं कि हिन्दुस्तान में मुहम्मद गौरी द्वारा स्थापित राज्य का विस्तार उसके उत्तराधिकारी गुलाम सुल्तानों के शासन काल में उतना ही बना रहा। यदि कोई परिवर्तन हुआ भी तो उसके फलस्वरूप वह मिकुल ही गया उसमें वृद्धि नहीं हुई। मुहम्मद गौरी तथा सुल्तान होने से पहले कुतुबुद्दीन ऐबक ने जितनी भूमि जीत ली थी उसमें नयाभूमि गुलाम सुल्तानों में से कोई भी उल्लेखनीय वृद्धि नहीं कर सका। मरतनत के अंतगत यमन वान सिद्ध शासकों ने बाग़मर इम युग में तुर्की प्रभुत्व का जुआ उतार फेंकने का प्रयत्न किया। मिनहाजुद्दीन मिर्जा द्वारा रचित तबक़ाते-नामिरी का मरसरी दृष्टि से निरीक्षण करने में भी पाता होता है कि सुल्तानों का प्रतिबंध विनाही हिन्दुओं तथा विराधी किमानों का धमकाने के लिए सखि पात्राएँ करनी पड़ती थी। तबभग प्रत्येक सुल्तान को एक ही प्रेण जनक वार जीतना पड़ता था। इन परिस्थितियों में गुलाम सुल्तानों के सामने समस्या यह थी कि अपने पूर्वाधिकारियों से प्राप्त राज्य की रक्षा बस की जाय जात्रमणवारी युद्धों का ये प्रेण जीवन का ता प्रश्न ही नहीं उठता था। प्रत्येक शासनकाल में मरतनत की सीमाएँ घटती पड़ती रहती थी। सामान्यतया उत्तरी सीमाएँ उत्तर में सिमान्त की तरफ़ तर पहुँचती थी और दक्षिण में एक रती मदी रेखा बग़ान में सिध तक जानी थी जिसके अंतगत उत्तरी बग़ान उत्तरी विहार बुंदेलखण्ड का कुछ भाग ग्वालियर रणथम्भौर अजमेर तथा नागपुर आ जात थे और जा जमनगर के उत्तरी भाग में होती र्दी जाग घनकर सिध को गुजरात में जाग करती थी। पूरु में ढाका के पश्चिम तक आधा बग़ान द्दिनी मल्लनत का अग था। उत्तर पश्चिमी सीमा साधारणतया सप्तम तक पहुँचती थी किन्तु कभी-कभी मिकुलर याम तक भी र् जाती थी। र्धा लातौर सिध और सुल्तान मल्लनत के जागत तन रह। नमर या प्धािया का प्रश्न जम्मू तथा काश्मीर और पजाब के उत्तर पूरबी तथा उत्तर-पश्चिमा कोन द्दिनी राज्य की सीमाओं के चारु थ। न सीमाओं के नीतर भी अनेक स्वतंत्र सिद्ध सामंत राज्य करत थ मुख्यतया सिमान्त की

तराई तोआर व उत्तरी भाग राजस्थान तथा बुन्देलखण्ड में। इन्हीं हिन्दी मुल्तान व भी पूणतया विजय रहा पर पाये थे। अमीराण अपन राज्य की सीमाओं के भीतर भी गुजाम गुजान विरपुत्र सत्ता का उपभाग नहीं कर पाते थे।

### राज्य का रूप

अपने सभी अमीराणों के साथ ही भाँति भारत में तुर्की सत्तान्त भी साम्य प्रायिक आधार पर टिकी हुई थी। बुगान तथा मुस्लिम शास्त्रकारों द्वारा प्रतिपादित अमीराणों के नियम उमक मुख्य आधार थे। बुगान के नियम धार्मिक थे और शरा बहनात थे। इस्लाम राज धर्म था और सिद्धान्त की दृष्टि में राज्य व भी साधन उसके प्रचार के लिए उपन्यथ थे। किन्तु व्यवहार में इन सिद्धान्तों में अनेक रूप भेद हो गये थे। भारत जैसे देश में ये रूप भू-अवस्थाभावी थे क्योंकि यहाँ की बहुसंख्यक जनता गर मुस्लिम थी और यहाँ की राजनीतिक परिस्थितियाँ भी उमस बहुत भिन्न थीं जिमकी कल्पना मुस्लिम शास्त्रकारों ने की थी।

शुद्ध अमीराणों के सिद्धान्त के अनुसार मुस्लिम राज्य का वास्तविक राजा एश्वर माना जाता है। साधारण राजा तो उसका प्रतिनिधि मात्र है और बुगान द्वारा जो उमकी इच्छा प्रकट होती है उमको वह कार्यान्वित करता है। राज्य की प्रमुख शक्ति उस व्यक्ति व हाथ में रहती थी जिमको मिलल अथवा अश की ममस्त मुस्लिम जनता निर्वाचित करती थी। किन्तु इस सिद्धान्त का अर्थ में भी सफलतापूर्वक कार्यान्वित नहीं किया जा सका। भारत में तो वह एक त्कोमना मात्र रह गया। प्रारम्भ में जो तुर्क हमारे देश में आए उनमें उत्तराधिकार का कार्य निश्चित नियम नहीं था और न कोई ऐसी सवमाय प्रणाली थी जिमके अनुसार विवादाग्रस्त उत्तराधिकार के प्रश्न को हल किया जा सकता। १३वीं शताब्दी में सामा यतया यह नियम था कि नया मुल्तान स्वर्गीय मुल्तान के परिवार व वंशे हुए सदस्या में से चना जाता था। वंश योग्यता स्वर्गीय मुल्तान की इच्छा तथा अमीराणों का समर्थन—चुनाव में मुख्य तथा यही तत्त्व निर्णायक सिद्ध होते थे। किन्तु वास्तव में शक्तिशाली अमीराणों की इच्छा पर ही चुनाव निर्भर रहता था। स्मरण रखने की बात यह है कि छोटी व अमीराण मन्त्र राज्य के अन्तों का नहीं अपितु अपने व्यक्तिगत स्वाधा का ध्यान रखते थे।

हिन्दी सल्तनत सनिक राज्य था और जनता की इच्छा पर न्याय व शक्ति पर आधारित था। उमकी ममस्त भूमि पर शक्तिशाली तुर्की सनिका का अधिकार था। देश के भीतर सामरिक मन्त्र व स्थाना पर रक्षा-मनाए नियुक्त कर दी गयी थी। सीमाओं पर अनेक किलों का निर्माण किया गया

या और उनमें तुर्की सैनिक रसे जाते थे। यह सैनिक चौबिया का काम करते थे। विदेशी लोगों के कारण सरकार के खेद दो ही बाय थे—समान वसूल करना तथा शांति और व्यवस्था कायम रखना। जनता के हितों से उम का पयाजन न था।

प्रारम्भ में शासन की तुर्की मूलतः में मुसलमान और विशेषकर तुर्क मुसलमान ही नागरिक मान जाते थे। राज्य की बहुसंख्यक हिन्दू जनता को नागरिकता के अधिकार नहीं प्राप्त थे। शर मुसलमान जिम्मी कहलाते थे। जब तुर्कों ने इमारतों को जीता तो शर मुस्लिम विजिता की भाँति उतहाने भी हमारी जनता से तीन चांजा में से एक को चुनने को कहा—इस्लाम अंगीकार करना अथवा मृत्यु अथवा जजिया देकर दलित प्रजा की भाँति जीवन बिनाना। विजित जनता में से बहुसंख्यक जागा न जजिया देना स्वीकार कर लिया इसलिए उन्हीं जीवित रहने की आशा मिल गयी। जिम्मिया पर अनक निर्बोधताएँ लगायी गयी। राज्य की लोकरीया नागरिक अधिकारों काय तथा कर के सम्बन्ध में उनके साथ मुसलमानों के सदृश व्यवहार नहीं किया गया। उनका जो कानूनी कानून के संरक्षक माने जाते थे विजित लोगों के सदृश न थे। वे हिन्दुओं का पूर्णरूपण मुसलमानों का दृष्टिसे बनाकर रखना चाहते थे। जो मुत्तान विशेष रूप से उनका के चंगुल में हाते थे वे अपनी प्रजा पर धार्मिक अत्याचार करने तथा मूर्ति-पूजा का नाश करने के लिए उद्योग के साथ प्रयत्न करते थे। किन्तु साधारण समय में यह अपराध था नियम नहीं। यद्यपि ऐसा नहीं प्रतीत होता कि कभी सरकार का जार में हिन्दुओं का पूर्णरूपण मूर्ति-पूजा करने का प्रयत्न किया गया हो। तथापि देश की बहुसंख्यक जनता तुर्कों के विदेशी शासन में सुखा नहीं थी। हाँ जहाँ तक कुराणों तथा हाँ मन्त्री हुसैन जाति जाधुनिश मुस्लिम इतिहासकारों ने यह मिद्व कर्म का प्रयोग किया है कि तुर्क मुसलमानों ने शर मुस्लिम जनता पर कर्ष प्रतियोग नहीं लगाय और उनका शासन में हिन्दू अपने पूरे राजाओं के शासन में भी अस्ति सुनी और प्रगत थे। किन्तु उनका नर विश्वमनीय नहीं है और उनकी जातो बना करना निरर्थक था। एनिनामिन दृष्टि में यह कर्तना भी शरत होगा कि तुर्को मुसलमानों ने हम शर के जागा का मुसलमान बनाकर अपने उद-म्यापित राज्य में धार्मिक एतना स्वाधिकार करने का प्रयत्न नहीं किया।

गनाफा में सम्बन्ध

प्रारम्भ में मुसलमानों का विश्वास था कि सिनापत ही सबसे मुस्लिम राज्य है और गनाफा उनका धार्मिक तथा नैतिक प्रमृग है। किन्तु १६वाँ शताब्दी में सिनापत शिशुनिश हो गयी और अनन्य स्वतन्त्र मुस्लिम राज्य अथवा राज्य उत्पन्न हुए। फिर भी अपनी सुविधा के लिए वे नए स्वतन्त्र

मुस्लिम राज्य कम से कम सिद्धान्त रूप में खलीफा का अपना धार्मिक तथा राजनीतिक नेता अथवा प्रमुख स्वीकार करने थे। अपने सिक्का तथा सुननाम खलीफा का नाम जानते थे। १२५८ ई. में मंगोल नया बौद्ध शासन खलीफा का बंधन बरकगान पर अपना आधिपत्य स्थापित कर दिया किन्तु उमर गान भी सिद्धान्त रूप में खलीफा का प्रभुत्व स्वीकार रहा। अन्तिम खलीफा का एक चाचा ने भागकर मिस्र में शरण ली। वहाँ के सुल्तान ने उसे अपना आध्यात्मिक प्रमुख मान लिया। इस प्रकार यह मिथ्या सिद्धान्त १६वीं शताब्दी तक चलना रहा जबकि अन्तिम नाममात्र खलीफा ने सिद्धान्त रूप में अपने अगिहार कुम्तुनुनिया के सुल्तान सुनमान द्वितीय का अर्पित कर दिया।

महमूद गजनवी का बगदाद के अन्तर्गत खलीफा ने सुल्तान की उपाधि प्रदान की थी। महम्मद गारा ने अपने सिक्का पर खलीफा का नाम उत्कीर्ण करवाया था। सिन्धुस्तान के प्रारम्भिक तुर्की सुल्तानों का भी हिन उसी मथा कि शासक उह खलीफा गारा नामनिर्देशित समझें। वे खलीफा शासक की कृपित एतता की परम्परा की उपेक्षा करना उचित नहीं समझते थे। अलतुमिश लिन्दी का पटना तुक सुल्तान था जिसने खलीफा से सुल्तान की खिलत प्राप्त की। उसने अपने सिक्का पर बगदाद के खलीफा का नाम खुदाया। तथाकथित गुनाम-वश के सम्पूर्ण युग में अलतुमिश ने किसी भी उत्तराधिकारी को हम प्रकार इस्लामी शासक प्रमुख से खिलत नहीं प्राप्त हुई। फिर भी हम वश के सभी शासक सिद्धान्त रूप में अपने खलीफा का नाइब मानते रहे और धमा करना एक फजान बन गया था।

### के द्वितीय सरकार

#### सुल्तान

यावहारिक रूप से लिन्दी का सुल्तान सम्पूर्ण प्रभुत्वसम्पन्न शासक था और उस पर किसी बाह्य शक्ति अथवा सत्ता का नियन्त्रण नहीं था। वह पूर्ण रूपेण निरकुश था। शासक की कायपालिका का वह उच्चतम प्रमुख था। वही शासक का सान समझा जाता था और कानून की व्यवस्था करने का सर्वोच्च अधिकार उसी को प्राप्त था। हम प्रकार वह शासक की सम्पूर्ण जनता का दौकिक प्रमुख तथा शासक और मुस्लिम सम्प्रदाय का धार्मिक प्रमुख था। उसकी शक्तियाँ अनेक तथा असौम्य थी किन्तु यावहारिक दृष्टि में वे सीमाबद्ध थी क्यकि उस उतमा की सना सुननी पन्ती थी और जनता के विरोध का सत्त्व भय बना रहना था। देश के अन्तर्विन्द तथा परम्परामत नियमा का सम्मान करना भी आवश्यक था। मय परिस्थितियाँ के अन्तिम विचारेण से हम हम

परिणाम पर पहुँचने है कि मुल्तान की वास्तविक शक्ति उमक सैनिक बल पर निर्भर थी। यदि उसके हाथों में पर्याप्त शक्ति होती तो वह उपयुक्त सभी विचारों का उत्तरधन करने अपनी इच्छानुसार शासन कर सकता था। किन्तु इस प्रकार के मुल्तान बहुत कम होते थे। इस सम्पूर्ण युग में बरचन ही एक ऐसा व्यक्ति था। शायद अभी यहाँ तक कि इन्तुतमिण भी अमीरा की राय तथा जीए उनकी इच्छानुसार कार्य करता था।

मन्त्री

मिर्ली मुल्ताना की शासन व्यवस्था में योजना का संवर्धन अभाव था। केन्द्रीय सरकार का निर्माण तथा विकास उठपटौंग तक ही हुआ था। राजधानी में चार महत्त्वपूर्ण मन्त्री थे—बजीर आरिजे मुमात्तिक दीवाने इशा तथा दीवाने रसासात। बजीर को हम मुख्यमन्त्री कह सकते हैं। राजस्व तथा वित्त विभाग उसके अधीन थे। उसके अतिरिक्त वह अन्य मन्त्रियों के काम का भी निरीक्षण करता था। बजीर मुख्यतया असैनिक पदाधिकारी था किन्तु कभी कभी उस समय सचिवान भी करना पड़ता था। सैनिक बतन सम्बन्धी कार्यालय का भी वह नियंत्रण करता था। उमकी सहायताय एक नाइब नाना था और एक विशाल सचिवालय था जिसमें जनक सचिव और दर्जना बन्दक तथा लम्बा कार काम करते थे। महानवाबदार (मुख्यके मुमात्तिक) तथा महानेगा परी तकी (मुख्यवर्षी ए मुमात्तिक) अन्य मुख्य पदाधिकारी थे। सना मन्त्री दूसरा महत्त्वपूर्ण मन्त्री था। सैनिकों की भर्ती उमकी गणना रखना तथा उनकी माजमजा और योग्यता आदि सम्बन्धी विषयों का प्रबंध उमके हाथों में था। उसके अतिरिक्त वह सना का बतन सम्बन्धी सर्वोच्च अधिकारी था। सैनिकों तथा उसके अस्त्र शस्त्रों का निरीक्षण करना और यह देखना कि वे सामान्यता से अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं अथवा नहीं—यह भी उमका मुख्य कर्तव्य था। तीसरा मन्त्री दीवाने इशा था जिसका काम शाही घावणात्रा और पया के प्रारूप (मसविद) तयार करना था। उमके अधीन भी अनेक सचिव तथा बन्दक कार्य करते थे। वह मुल्तान के साथ जाता तथा उमके सम्पूर्ण कार्यों का अभिलेख तयार किया करता था। चौथा मन्त्री दीवाने रसासात था। एसा प्रतीत होता है कि विन्धी तथा कूटनीतिक पत्रव्यवहार का कार्य उमके हाथों में था। वा राजदूत विन्धी का भ्रम जान जयवा करने में आत थे उनमें सम्भव लगता उमका मुख्य कार्य था।

इन अतिरिक्त राज्य में अन्य पदाधिकारी भी थे जिनका शासन-व्यवस्था

१ Auditor General

२ Record

म अत्यधिक महत्त्व था। मंत्रिया ने यान्त्री का स्थान था। पहला बरी मुमासिफ (मुख्य गवाहना) था जिमके अधीन अनक सवाहना तथा गुल्बर् गाय बन्ध। दूसरा बाजी मुमानिक (राय का प्रमुख यायाधीन) था। यह पनाधिकारी यायगानिका का प्रमुख था और धम का विभाग भी उसी के अधीन था। दूसरे विभाग के अध्यक्ष की हैसियत से वह सब जहाँ अथवा म उम मुदूर कहता था।

इसके अनिश्चित राजधानी में और भी अनक पनाधिकारी थे जिनका सम्बन्ध मुख्यतया मुल्तान के घरेलू प्रबंध से था किन्तु मंत्रिया की अपना उनका पना नीचा माना जाता था। इनमें सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण बकीर था। उस हम शाही महारा का मुख्य प्रबंधक कह सकते हैं। इस हैसियत से उसका मुल्तान से निकट सम्पर्क हाता था और उस पर उसका प्रभाव भी काफी रहता था। उसके बाद जमीर हाजिब का स्थान था। वह दरवारी शिष्टाचार के नियमों का लागू करता तथा मुल्तान और निम्नकोटि के पदाधिकारियों तथा जनता के बीच मध्यस्थ का काम करता था। इसी पनाधिकारी के द्वारा मुल्तान साधारण योग्य म मुताबात करके उह सम्मानित करता था। सरे जादार अ य पनाधिकारी था। वह मुल्तान के अगर्क्षका का नायक था। अमीरेआखूर (घाडा का अध्यक्ष) तथा शास्त्रेपीना (हाथिया का अध्यक्ष) अय महत्त्वपूर्ण अफसर थे।

कुछ मुल्ताना के समय में नाइब मुमानिकात का एक नया पद स्थापित किया गया था। वह मुल्तान का नाइब था और बजीर से भी अधिक शक्तिया का उपभाग करता था। किन्तु साधारण समय में नाइब नहीं हुआ करता था और यदि हाता भी था जसा कि बलबन के शासनकाल में था तो उसके हाथ में अधिक शक्ति नहीं हाती थी। केवल के ही अधिकार उसके हाथ में होने थे जो मुल्तान उस दे देता था।

केन्द्रीय सरकार के मंत्रिया की नियुक्ति मुल्तान स्वय करता था और वे उसके सबक नात थे। वे केवल उमी के प्रति उत्तरदायी थे। अपने विभागों में भी उच्चतम मत्ता उनके हाथा में नहीं थी। यदि मुल्तान अपवयम्ब अपना अमीरा के हाथ की बठपुतनी होता था तो अवश्य वे मनमानी कर सकते थे। परन्तु बलबन जैसे शक्तिशाली मुल्तान को वे प्रभावित नहीं कर सकत थे और साधारण योरे की याता में भी उह मुल्तान की कृपाओं का कार्यान्वित करना पना था।

### प्रातीय शासन

गुलाम मुल्ताना की सरकार समान तत्त्वा से बना हुआ मुदूर सगन्त नहीं

थी कि वह विकेन्द्रकरण के सिद्धांत पर आधारित थी। राज्य का शासन अत्यन्त शिथिल था और अनेक सैनिक क्षेत्रों में भिन्न-भिन्न बना था। जाकार जनसंख्या जघवा आय की दृष्टि से भी अत्यन्त कम समान नहीं था। प्रत्येक क्षेत्र के अन्तर्गत कुछ भूमि हाती थी जिस पर स्वतन्त्रता बहूत थी। यूरोपीय राज्यकारण इतना शासन का अनुवादन सैनिक जागीर किया है परन्तु हम स्वतन्त्रता का प्रान्त (मुवा) बहूत सक्त है यद्यपि यह नामकरण पूर्णतया शुद्ध नहीं है। स्वतन्त्रता के शासिका का मुक्ती बहूत था। 'यावहारिक' दृष्टि से मुक्ती अपन क्षेत्र के शासन के और उच्च विस्तृत अधिकार भिन्न नहीं था। स्वतन्त्रता का शासन व्यवस्था समान सिद्धांतों पर आधारित नहीं थी। राजनीतिक जघवा सैनिक अधिकारों का दृष्टि से भी स्वतन्त्र एक दूसरे में भिन्न था। अपन क्षेत्र के शासन चयाने में मुक्ती स्वतन्त्र था। केवल स्थानीय परम्पराओं का उस पर नियंत्रण हाता था। वह अपन पदाधिकारियों का नियुक्ति करना राजस्व वसूल करना शासन का यत्न चलाता तथा वही हर्ष आय का राज्य सरकार के पास भेज देता था। सिद्धांत रूप से केन्द्रीय सरकार उनका हिसाब का जांच कर सकती थी किन्तु व्यवहार में वह पूर्ण स्वतन्त्र था। उसका मुख्य कार्य अपन क्षेत्र में शांति तथा व्यवस्था कायम रखना और राजानों का कार्यान्वित करना था। जब कभी मुल्तान उससे माग करता था तो उस उसकी सेवा के लिए सैनिक दूकानियाँ भेजती था। मुक्ती का भाग वनन मिलता था जो प्रान्त की आय में से देखा जाता था। उनका पास अपनी एक मना तथा पदाधिकारियों का स्तर होता था। वे युग में मंगवर, अमरोहा सम्भन ब्यायू वगन (बुलगाहर) काठ (अतीगड) अवध बहा मानिकपुर बयाना भवानियर नागौर, हांसी मुल्तान उच्च नाहौर, ममाना मुनम कुहराम भिष्ण और मरहिन मुख्य स्वतन्त्र थे। दिल्ली के अधीनस्थ जिन राजाओं के राज्य इन स्वतन्त्रता का भीमाओं के भीतर स्थित हाता थे उनसे कर वसूल करना भी इतना मुक्तियों का काम था। य सामान्य के हिन्दू शासक थे जिन्हें मुल्तानों ने अपना कर देना दिया था। उच्च स्वराज (भूमि-कर) तथा जग्गिया देना पन्ना था। वे स्थानीय मुल्तान का प्रभुत्व स्वीकार करते थे किन्तु अपन राज्यों के आन्तरिक प्रबंध के लिए स्वतन्त्र थे।

### शासका भूमि

स्वतन्त्रता के अनिश्चित भी विस्तृत भेद थे जिनमें अनेक जित्त सम्मिलित होते थे और जिनका प्रबंध केन्द्रीय सरकार करती थी न कि मुक्ती। ये क्षेत्र मानसा कहाने थे। यूरोपीय नेम्का ने उन्हें 'राजभूमि' कहा है किन्तु

1 Crown land



उनका शब्द नाम गिजय क्षत्र ' हाता चाण्डि अर्थात् य क्षत्र जा जागीर क रूप म तहा न्दिय गये थ बल्कि जिनस कर्णीय राजस्व विभाग सीधा राजस्व वसून करता था । इन क्षत्रा के निम्नान अपन गाँवा क मुगिया द्वारा साध सरकार का सगान न थ ।

सेना

शासन का सबसे अधिक महत्वपूर्ण विभाग सेना थी क्योंकि मुल्तान की शक्ति उमी क बल और सुयोग्यता पर निर्भर थी । किन्तु आशय की बात यह है कि राजधानी म एमी फौज न थी जिम हम स्थायी सेना का नाम दे सकें । मुल्तान की सेवा के लिए कुछ अग्रक्षक अवश्य होते थ जो सर जांगार नामक पन्नाधिकारी की अधीनता म काय करत थ किन्तु युद्ध क लिए मुल्तान को प्रान्तीय गवर्नरा अथवा मुकिया द्वारा भेजी गयी सेनाओं पर ही निर्भर रहना पड़ता था । हमका कारण यह प्रतीत होता है कि जब तुर्क लोग भारत म आय उस समय वे सभी 'डाक्' फौज क सन्त्य थ । जब यहाँ उहाने विस्तृत प्रदेश जीत लिया और उस पर शासन करने लगे तो उह इम बात की आवश्यकता प्रतीत हुई कि समाज को पशो के आधार पर विभक्त किया जाय । इस प्रकार पेशवर सन्तिका का एक नया बग उत्पन्न हो गया । प्रारम्भ म आक्रमणकारी के मभी अनुयायी सन्तिका थ इसलिये स्थायी सेना की आवश्यकता प्रतीत नथी हुई । जब आक्रमणकारी शासक बन गया तब भी यही व्यवस्था कायम रही । सल्तनत के विस्तार के साथ मुल्तान के अग्रक्षक की संख्या भी बढ़ती गयी और कालांतर म वे एक विशाल स्थायी सेना के रूप विदु बन गय । यद्यपि यह सेना स्थायी नहीं थी किन्तु उसका प्रबन्ध सेना मन्त्री (आरिज मुमानिक) को सौंप दिया गया जो उसकी भरती सुयोग्यता तथा वेतन के लिए उत्तरदायी था । अश्वारोही तथा पन्नाति सेना के मुख्य अंग थे । सिपाहिया तथा सन्तिका पदाधिकारिया म स अधिकतर गुनाम थे जैसे मुइडी गुनाम (मुइजुद्दीन मुहम्मद गोरी के गुनाम) कुतुबी गुलाम (कुतुबुद्दीन एबक के गुनाम) तथा शम्सी गुनाम (शम्सुद्दीन इल्तुतमिश के गुनाम) । उनमें से अधिकतर अश्वारोही थे और बड़े काम के मन्तिका समझ जाते थे । उन न्तियों कान्तिक सन्तिका शिक्षण कवायद और मन्तिका अनुशासन आदि का सबका जभाव था इसलिये सेना की सुयोग्यता अधिकतर तीवाने आरिज और मुल्तान की कायक्षमता और दत्तचित्तता पर निर्भर थी ।

केर्णीय सेना क अतिरिक्त प्रांतीय सूचनार भी मुल्तान की भांति अपनी सेनाएं रखत थे । प्रांतीय सेना सूचनार की निजी फौज समझी जाती थी और

उसकी भरती, अनुशासन बतलाने और सम्बन्ध में वह स्वतन्त्र होता था। किन्तु मुल्तान की सेवा के लिए उस एक निश्चित सन्ध्या में सना रखनी पत्नी थी, इसलिए उस पर कुछ हद तक आरिज मुमालिक का नियन्त्रण अवश्य रहता होगा।

इसके अनिश्चित प्रकार के जोर सैनिक होते थे जिन्हें हम विशेष रंगरूट कह सकते हैं। उनमें भी दो भेद थे। पहले वे जो विशेष अवसरों पर दंगे हिंदू गजाआ के विरुद्ध जिहाद के लिए भरती किए जाते थे। उन्हें शरा के अनुसार लूट का एक भाग मिलता था। लूट का दूसरा भाग तो उन्हें मिलना था और दूसरे मुल्तान को मिलता था। दूसरे स्वयं सबके हाथ में जो अपनी इच्छा से सना में सम्मिलित हो जाते थे और स्वयं अपने दृष्टिकोण तथा घाड लाते थे।

मुल्तान सना का महासेनापति होता था। प्रान्त में मुक्ती अपनी फौजों के सेनापति होते थे। दीवान आरिज अथवा आरिज मुमालिक का सेनापति का काम नहीं करना पड़ता था यद्यपि वह कभी-कभी आक्रमण के लिए सैनिकों को छोड़ता था। इस युग में केवल रजिया के शासनकाल में एक बार एक सेनापति नियुक्त किया गया था। यह एक अस्थायी व्यवस्था थी जो रजिया की मृत्यु के बाद यह पद समाप्त कर लिया गया था। सैनिकों का बतलान बहुधा जागारा के रूप में दिया जाता था और कभी-कभी नकद भी। यह निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता कि फौज का सेनापति ही अपना तथा अपने सैनिकों का बतलान लेता था अथवा सैनिकों का अलग-अलग बतलान दिया जाता था। सम्भवतः पहला प्रणाली प्रचलित रहा होगा।

सैनिक संगठन सुव्यवस्थित नहीं था। यदि दिल्ली मुल्तान की सना भारतीय नरेशों की सेनाओं की तुलना में अधिक सुव्यवस्थित थी तो इसका कारण उनमें संगठन अथवा शिक्षण की श्रेष्ठता नहीं थी किन्तु उसमें धार्मिक सुदृढ़ता भावुकता की भावना तथा एकता का आधिपत्य था क्योंकि मुसलमान लोग इस दंग में परदेशी थे। यही उनकी श्रेष्ठता का मुख्य आधार था।

\* वित्त सम्बन्धी व्यवस्था

दिल्ली सन्तानत की आम में पाँच मुख्य साधन थे जिनका शरियत में विधान है—(१) सराज (२) जज (३) जजिया (४) रम्म और (५) जकान। इनके अनिश्चित आम्नी के कुछ अन्य साधन भी थे जिनमें सेना में होने वाली आय पृथ्वी में गडा हुआ धन आयान तथा आयकारी कर। सराज भूमि-कर था जो हिंदू सामन्तों तथा किसानों से बसूल किया जाता

था। मनी का उपज तथा राज्य कर का अनुपात सख्त एकसा न था। वास्तव में एमा प्रतीत होता है कि गराज की दर अनुमान से अथवा पुराने हिंदू युग के राजस्व-नगा<sup>१</sup> के आधार पर निश्चिन्ता की जाती थी। उधर भी एक प्रकार का भूमि कर था। यह उग भूमि में वसूल किया जाता था जो मुसलमानों के अधिपति में होती थी और प्राकृतिक साधना द्वारा साची जाती थी। साधारणतया यह उपज का दशांश होता था इसीलिए इस उधर कहते थे। जब अधिक सख्या में घर मुसलमानों ने इस्लाम अंगीकार कर लिया तो इस पुरानी दर (दशांश) से हानि होने लगा इसलिये भूमि कर में कुछ परिवर्तन करना आवश्यक हो गया।

जजिया नामक कर जिम्मिया अथवा घर मुसलमानों से वसूल किया जाता था। यह कर के आधार पर समस्त हिंदू जनता का तीन वर्गों में विभक्त किया गया था। पहले वर्ग के लोग ४८ त्रिहम दूसरे के २४ त्रिहम तथा तीसरे के १७ त्रिहम की दर से जजिया अदा करते थे। स्त्रियाँ बच्चे साधू तथा भियारी इस कर से मुक्त थे। काफिरों के विरुद्ध युद्ध में जो लूट का धन प्राप्त होता था उसका १/५ राज्य-कोष में जमा होता था और उम्स बहाना था। १/५ सनिका में बाँट दिया जाता था। जकात नाम का कर मुसलमानों पर लगाया जाता था और आय का १/५ की दर से वसूल होता था। उस मुसलमानों के खर्च के लिए कुछ निश्चित कार्यों पर व्यय किया जाता था जैसे मस्जिदों की मरम्मत धार्मिक मस्थाओं का सञ्चालन जेमा की पशन तथा अन्य धार्मिक कृत्य। बाहर से आने वाले माल पर खगी वसूल का जाती थी। मुस्लिम व्यापारियों के लिए इसकी दर २ १/२ प्रतिशत तथा घर मुसलमानों के लिए ५ प्रतिशत थी। इसके अनिश्चित घाटा सखा तथा पुता पर भी एक से दूसरे स्थान का जाने वाली व्यापारिक वस्तुओं पर अनेक प्रकार के कर लगाए जाते थे। शरियत के अनुसार पृथ्वी में मिले हुए धन तथा खानों पर भी मुल्तान का ही अधिकार होता था।

एक साधना से मुल्तान का प्रतिवर्ष भारी आय होती थी। किन्तु एसा प्रतीत होता है कि मुल्तान की आय का सबसे अधिक लाभप्रद साधन हिंदू प्राप्ता की नट थी जिसमें लाखों रुपये का माल उस मिलता था। हमारे पास जानकारी के ऐसे साधन नहीं हैं जिनसे हम इस युग में मुल्तान का वगभग आय का भी अनुमान लगा सकें किन्तु जसा कि हम जानते हैं प्रत्यक्ष मुल्तान के शासनकाल में धन संचित होता रहा। इससे स्पष्ट है कि राज्य की भारी आय रही होगी।

उस युग में मुत्ताना के निजी व्यवसाय के लिए राजकीय व्यय में से पृथक् धन नहीं लिया जाता था। मिट्टान रूप में न महा किन्तु व्यवहार में अवश्य राज्य का सम्पूर्ण आय पर उम्मी का अधिकार होता था और वह राज्य के हित के लिए अपनी निजी अथवा पारिवारिक आवश्यकताओं पर व्यय कर सकता था।

### राज्य व्यवस्था

मुत्तान राज्य का शासन समस्त होता था। वह समुचित राज्य-व्यवस्था का प्रबंध नहीं करता था बरन स्वयं मुक्त्मा का मुत्तान था तथा उनका फसला करता था। उस प्रकार मुत्तान राज्य में अपना मुत्तान का भाग सर्वोच्च पायाधीश था। किन्तु कभी-कभी वह मूल रूप में भाग मुक्त्मा की सुनवाई करता था। जिन मुक्त्मा का सम्बन्ध धार्मिक इलाका से होता था उनका फसला करने में वह मदद तथा मुक्ती की सहायता देता था और शेष मुक्त्मा का नियम वह बाजी की सहायता से करता था। मुत्तान के बाद दूसरा उच्चतम पायाधिकार मुख्य बाजी या जिसकी नियुक्ति मुत्तान की करता था। इतिहासकार मित्तल उम मिर्जा ने शीघ्रकाल तक उस पर काय किया था। वह राजधानी में रहता तथा मुक्त्मा का फसला करता था। मुख्य बाजी राज्य का मद भी था और इस हैमियन में वह जहाँ कहलाना था। मुख्य बाजी की हैमियन से वह प्राप्ता के निम्न पायाधिका का निरीक्षण तथा नियंत्रण किया करता और उनका अत्यायन से बचायी हुई अपीने मुत्तान था।

प्राप्ता तथा महत्वपूर्ण नगरों में भाग बाजा रहता था। उनका नियुक्ति मुख्य बाजी करता था। टाटव अथवा अमार टाट नाम का एक अर्थ पदाधिकारी भा था जिसकी हम आधुनिक मिटी मजिस्ट्रेट से तुलना कर सकते हैं। जिन मुक्त्मा का सम्बन्ध कवन हिन्दुओं से होता था उनका फसला सामान्यतया पचायने करती था किन्तु जिनमें हिन्दू और मुसलमान दोनों सम्मिलित होते थे उनका नियम बाजी करता था। कानवाहनगर में पुत्रिम विभाग का अध्यक्ष होता था। पुत्रिम पदाधिकारी हान के अनिरिकन सक्ता एवं और भी काम था। वह मुक्त्मा का प्रारम्भिक छानबीन करके उनका बाजी के सुपुत्र करता था। लण्ड विधि अत्यन्त कठोर थी। धानता तथा अगस्त्य का लण्ड सामान्य था। गुनाम मुत्ताना ने ग्रामीण जनता के जीवन में यूननतम हस्तक्षेप करने का नाति का अनुसर्ण किया। राज्य की आर स गाँवों में राज्य का कोई प्रबन्ध नहीं था। नाग अपनी निजी पचायता पर ही निर्भर रहता था।

## समाज तथा सभृति

शामन वग म विभिन्न ढकीला व तुन थ । उनक अतिरिक्त ईगनी अफ गान अरय थानि अय विनेशी भी थ । तुकी म उचनकी भावना का प्राबल्य था । व नस्त की शुद्धता तथा श्रष्टना व मिद्वान का मानन थ इसानिए उहान भारतीय मुगलमाना का जिनकी सट्या ढठ रही थी राय की शामन व्यवस्था म स्थान नही ढिया । किन्तु इग भावना व हान हुए भी विभिन्न ढगना का बहुत कुछ मल मिनाप हुआ । जिसर परिणामस्वरुप १ वा शताब्दी म भारतीय मुस्लिम जनना वणसकर हाती गयी । भारतीय मुसलमाना मध्य एशिया व शरणाधिमा तथा मगाला म जिहान इस्लाम अगाकार कर ढिया था विवाह सम्बन्ध हान ढग जिसक फलस्वरुप इस देश म मुगलमाना की विभिन्न नरुना का विनयन हा गया ।

मोठ तौर पर १३वीं शताब्दी का मुस्लिम समाज दो वर्गों म विभक्त था— मनिक् तथा बुद्धिजीवी । तुकी का स्थान पन्नी काटि म था और दूसरे वग म धार्मिक तथा साहित्यिक ढोग सम्मिलित थ जा अधिकतर गर तुक थ । राय म धर्मोपदेशका तथा अध्यापका का काम उहा क हाथा म था । मुस्लिम सामन्त वग म तुकी रक्न का प्राधाय था । वह वग एन सीन्नी की भांति था जिसम अनक कक्षाओं क ढोग थ और जिसके शिखर पर अमीरा मनिक् तथा खाना का स्थान था ।

उनुगर्मा का पन् सर्वोच्च था जीर एन समय म एक ही उलुगर्मा हाता था । गुनाभा का भी नीचे स ऊच पदा पर पहुँचने का अधिकार था और वे भी अमीर तथा मनिक् हा सकत थ । उनम स बलबल का छोडकर कोई भी खान व पन् पर नहा पहुँच सका । मुस्लिम समाज मुख्यतया नगरा म केन्द्रित था । सनिक् तथा कमचारिया क अतिरिक्त उसम व्यापारा दस्तकार दुकानगर कनक तथा भिखारी भी रह हाग । अ य प्रभावशाली वग गुनामो का था । उनम स अधिकतर गर मुसलमान माता पिता की सत्तान थे किन्तु उह गुलाम बनाकर बच ढिया गया और मुसलमान बना लिया गया था । अपन मुस्लिम स्वामिया क घरा म हा उनका पानन पापण हुआ था । मुस्लिम जनसख्या म सुन्निया का बाहुल्य था । शिया ढोग अधिकतर मुत्तान और सिध म पाय जान थ । किन्तु उनम स अनेक दिल्ली तथा तुकी सल्तनत के अय नगरा म भी रहत थ । इन दोना सम्प्रदाया के अनुयायिया म पारस्परिक सहानुभूति नही थी । वास्तव म सुन्नी ढोग जिनक हाय म राजशक्ति थी शियाओ स घृणा करत थे । इस युग म शियाओ न अनक बार राजशक्ति पर अधिकार करने का प्रयत्न ढिया किन्तु नित्यतापूर्वक उह कुचन ढिया गया । एक तीसरा धार्मिक वग भी था जिसके सन्स्य मूपी कहनाते थ । व मुस्लिम रहस्यवादी और शिक्षित थे । वे

एवम् स माधा सम्पत्क स्थापित करन स विरवास करत थ । व पवित्रता तथा दरिद्रता का जीवन विनात जीर नगर निवासिमा व मभाज स दूर रहत थ । सूफी मता व अनक अनुयायी थ जिह व सूफी क्रियाआ म दाम्भित करत थ । विभित्या और मुत्तरावित्या उनक दा महत्वपूर्ण मध थ । पहन की स्थापना मुत्तान विरनी न अजमर म और दूरर का भाउदान जकारिया न मुत्तान में का था । व दाना मत थ और उनक अनक अनुयायी थ जिनक कारण वना मर्या म नागा न अपनी व्छानुमार व्त्ताम अगीकार कर लिया था ।

एश की वाम्भयन जनता हिंदू थी । जसा कि हम पहन निरत आय हैं हिंदू जिम्मा कहताता था और उस जजिया नामक विाप कर दना पन्ता था । उम अनक नियोग्यताएँ भुगतनी पडती थी और नागरिकता व पूव अधि कार उम प्राप्त नथ व । मुमनमान नाग उमक धम व अस्तित्व का बुरा समझत गूग भी उस मन्त करत थ<sup>६</sup> । हिंदूआ म स अनक भूमि व स्वामा थ और ममृदशाला व । एम बात व नी प्रमाण उपलब्ध है कि कुछ हिंदू व्यापारा तथा माहूकार मुमनमान अमीरा का ऋण लिया करत थ परन्तु उम युग का राजनीति पर उनका का प्रभाव नहीं था । अप्रत्यक्ष रूप स भते हा व उम कुछ प्रभावित करत रह हा क्याकि नरसता न उनका म्मत अधवा भूलाच्छान भी नहा किया जा सकता था । अधिकतर कारजार उद्योग धंधे तथा व्यापार उहा व हाया म थ । उनम स बहुत स कृपि-काय करत थ । अधिकतर हिंदू गाँवा म म्त्त थ म्त्तिया अपमम्त्तक शासन-वग म्त्तका बहुत कम सम्पत्क रहता था ।

एम युग म हिंदू व तथा व्त्ताम का एन-दूमर व अनुयायिया पर कुछ प्रभाव पन्त नगा था । व्त्ताम अगीकार कर लन बात हिंदूआ म ना उनका कुछ आने तथा म्त्त म्त्त का म्त्त शप रह जाना था । धुकि मुमनमान होन म पन्त व्त्त म्थानीय तथा जानीय व्त्तनाआ का पूजा लिया करता था म्त्तिया तथा धम स्वाकार कर लन पर भी वह फकाग तथा समाधिया का पूजा का आर मरनता म धुक् जाना था । सूफी मत म अनक एम तन्व थ जिह जाना धर्मो व अनुयायी स्वीकार कर सकत थ । फिर नी हिंदूआ तथा मुमनमाना के बुद्धिजाविया म विगा प्रकार का धार्मिक अधवा सांस्कृतिक म्त्तक नहीं स्थापित हा सका ।

तुक मागत्रा म स कुछ विद्या प्रेमा भा थ और अपन यत्नी धर्माधिकारिया रनिहागकारा तथा विद्वाना का स्थान लिया करत थ । वनवन व दरवार का विापकर अनर मार्त्तियर म्त्त मुजाभित करत थ । इम युग का साहित्यिक

<sup>६</sup> म्त्तिया—व्त्तामा शासन म म्त्त मुमनमाना की म्त्ता जानन व लिए म्त्त जन्ताय मरवार की पुस्तक हिन्दूी आव औरगजब खण्ड ३ पृष्ठ २५१ २५७ और २६२ २६४ ।

विभूतियां म उताम ग्यात अगीर गुगरय तथा सिन्धी व जमीर हमत का था । व ताता फारमा म अपनी गलाए वरत थ और उनव प्रया का भारत व याहर भी गगम्मात अध्ययत गया जाता था । तरहवा शताब्दी म इतिहास धम तथा आख्यात व क्षेत्र म अनव महत्वपूर्ण ग्रंथा की रचना हुई । यातव बालिवाभा की शिक्षा का भी कुछ प्रवर्ध था । प्रत्यय मुस्लिम वस्ता म दा शिशा-नाख्याए हाती था—एत मस्जिद स तगा हुआ मरतव जीर दूसरा मरमा या विद्यापाठ । कुछ सुस्ताना न सिन्धी म विद्यालय का स्थापना की और उह बहुत सा लान दिया । कहा जाता है कि इन्तुमिश न एक विद्यालय सिन्धा म और एत मुतान म बनवाया था । स्थापत्य तथा सखन कना वन दा विषयो का विषय रूप स परिशीलन किया जाता था । तुकों का भवन बनवान का बहुत शौन था और अपन साथ मध्य एशिया म व स्थापत्य व इस्लामी आग तथा शतिया ताय थ । हम पहन लिख जाय है कि बुतुतुद्दान एबक इन्तुमिश तथा बलवन न अनव भवना का विशयतर मस्जिद का निर्माण कराया था । यद्यपि मनानना मुसलमाना व तिए सगीन का निपध था फिर भी इम कला की पूण उपक्षा नहा की गयी हागी । कुछ आधुनिक मुस्लिम इतिहासकारा न सिन्धी सतनन को सांस्कृतिक राय कहा है किन्तु यह दावा अतिरजित है । यत् कि कुछ शामक माहिय व प्रेमी थ भी तो व अपनी बहुमस्यक जनता व तिए रवन विषामु तथा अत्याचारा ही थ और उस युग म यत् वाम्त्विक सस्कृति थी भी ता वह दरबार तथा राजधानी तक ही सीमित थी । सांस्कृतिक कार्यो म ममाज व कुछ विषय वर्गों का ही हाथ था और साधारण जनता उसस बहुत दूर थी । वाम्त्व म त्रिली सलनन सनिक राय था । दश पर जाधिपत्य कायम रखने व तिए उसन सामरिक महत्व व अनक स्थाना पर बनशाला रक्षा सेनाए छाण रखी थी । उसक कवन दा काय थ—कानून तथा व्यवस्था कायम रखना और राजस्व वसून करना । वहे साधारण जनता की सांस्कृतिक नतिक शारीरिक और भौनिक समृद्धि का चिन्ता नही करती थी । इम प्रकार का राय सांस्कृतिक राय कहनान का अधिकारी नही हो सकता । नगभग पचासी वष तक टिक रहन पर भी वह निश्चय रूप से भारत भूमि पर विदेशी राय था ।

#### BOOKS FOR FURTHER READING

- 1 BARANI *Zia ud Din Tarikh-i-Firozshahi*
- 2 SIRAJ MINHAJ UD DIN *Tabqat-i-Nasiri*
- 3 OJHA G H *History of Rajputana*
- 4 HABIBULLAH *Foundations of Muslim Rule in India*
- 5 ELLIOT & DOWSON *History of India etc Vols II & III*

## म्वलजी साम्राज्यवाद

जलालुद्दीन फीराज खलजी (१२६०-१२६८ ई)

### प्रारम्भिक जीवन

मलिक फीराज खलजी का जन्म था। उसका पूर्वज तुर्किस्तान के आदि निवासी थे। अपना निवास-स्थान छोड़कर वह हनुमन्त का घाटा तथा लखनऊ के प्रान्त में जिस गंगमौर अथवा उरण प्रान्त कहते हैं २०० वर्ष से अधिक निवास कर चुके थे और उहाँने अपना नाम कुछ गीतियाँ तथा रहने-मरने के लिये अपना दिया था। मलिक भारत के तुर्कों अथवा भ्रमवश उहाँने अपना समझते थे। फीराज के परिवार के लोग आकर भारत में बसे गये थे और उहाँने दिल्ली के तुर्क सुल्तानों के यहाँ नौकरी करनी थी। फीराज सर जागर अथवा गाहा अथवा अथवा के प्रमुख के उच्च पद पर पहुँच गया था और आगे चलकर ममाना का सूत्रार नियुक्त कर दिया गया था। वह एक अत्यन्त योग्य मलिक था। समाना के सामान सूत्र के शासक के पद पर काम करते हुए उमने मंगोल जासूसकारियों के विरुद्ध अनेक युद्ध किए और मार भगाया। इस प्रकार उमने अपने मलिक तथा शासक का हैमियन में अच्छी स्थिति प्राप्त कर ली। परिणामस्वरूप उमने शासकों की उपाधि प्राप्त की गयी। मलिक तुजाका की मृत्यु के उपरांत बकुबाद में उस सना-मन्त्री के उच्च पद पर नियुक्त कर दिया। मिला दरबार में मन्त्री हान के अनिश्चित फीरोज समस्त हिन्दुस्तान में खिले हुए विज्ञान खलजी का प्रमुख भी था। इस कबीले के कुछ लोग इतिहासकारों के बलिहार खलजी के समय में बगान पर शासन कर चुके थे। मन्त्रि-पद पर नियुक्त हान के समय फीराज मन्त्री में सम्भवतः सर्वसे अधिक शक्तिशाली और अनुभवा तुर्क अमीर था।

### राज्यारोहण

जसा कि हम पता लगाते हैं कि सना मन्त्री मलिक फीराज तथा मन्त्री के कट्टर तुर्कों अथवा के पद में पाठ्यपत्रिक महानुभूति का मन्त्र्या अभाव था। तुर्कों दल के नेता मलिक खलजी (कहलन) तथा मलिक सुर्गल थे। वे बमानुमार अथवा-शासक तथा बगबक के पद पर काम करते थे और मन्त्री दरबार की उच्चतम मन्त्री उहाँ के हाथ में था। इन में तुर्कों अथवा



त फीराज तथा अय गन्तुर्नी पनाधिकारिया त पिण्ड शुभार राज मत्ता पर तुर्को क एकाधिपत्य का पुन रघाणा करन की याजना बनायी। म्ब पणिनाम स्वरूप ाना दत्ता म गघप छि गया जिमम फीराज की विजय हुई। कउन का वध कर िया गया और उमर समयका का पूणतया म्मन करक मन्िक फाराज शिग सुत्तान वयूमम का सरक्षन बन वग। उमका दूसरा क्म वकुबा तथा वयूमस ाना का वध करर राज शक्ति ह्म्तगन रर लना था। म्ब उपरान जून १२६० ई म फीराज वकुबा द्वारा वनवाय हुए किना मरी क म्मन म मिहासन पर वठा और सुल्तान जसालदीन फाराज की उपाधि धारण का।

उसको सामाजिक अप्रियता

नया सुत्तान सत्तर वष का बूढा था। यद्यपि जनानुदीन अनुभवी तथा मफल सनानायक की दृष्टि स सुयश प्राप्त कर चुका था और वकुबा क म्पूण शासनकाल म उसन राय की उत्तर पश्चिमी सीमाआ की रक्षा का यी फिर भी िल्नी की जनता तथा अमीर उसस प्रसन्न नहीं थ। तुर्को म उसकी अप्रियता का मुख्य कारण यह था कि भ्रमवश वे तत्रत्रिया को गर तुर समझत थ और म्मनिए उह अपन समान राज मत्ता का अधिकारी नहीं मानत थ। तगभग ८४ वष तक इनद्वारा मुक िल्नी क सिहामन पर राय कर चुक थ इसनिए उनकी तथा जनता की दृष्टि म यह अनुचित था कि िल्नी का मुकुट एसा यक्ति धारण करे जो उनका नस्त का नहीं था। तीसरे जनानुदीन फीराज बूढा हो चुका था इसनिए वृद्धावस्था की कछ दुवनाए उसम विद्यमान थी। म्ब अतिरिक्त तग उस उदार तथा कामन हृदय व्यक्ति समझत थ। उसम नप सलभ प्रताप तथा शिष्टता का भी अभाव था। चौथ फीराज स्वय न सही किंतु उसक अनुयायी विशपकर खलत्री युवक अत्यधिक महत्वाकाक्षी थ इसनिए तग उह मदेह की दृष्टि म देखत थ। इही कारण स नया सल्तान अप्रिय था और इसीनिए िल्नी म बलवग क महन म अपना रायाभिषेक करने का उसम साहस नहीं हुआ। अभिषेक के निए उसन किनामरा म वकुबा क अपूण महन का अधिक पसन् किया। वह एक वष तक उसी म रहा और अपने दरबारिया तथा अनुयायिया का उसी क निकट अपने निवास गृह बनवान की आना दी। उसने स्वय वकुबा के मल का पूरा करवाया। कुछ ही समय म किनोखरी िल्ली के निकट एक महत्वपूर्ण नगर बन गया। फीरोज वढ जमारा म ही अप्रिय नहीं था अपितु उसक कुछ उद्योगी तथा चपन अनुयायी भा उसकी उदारता तथा दुव तता का पसन् नहीं करत थ। बूँ सुल्तान न शासन व्यवस्था म यूननम हस्तक्षेप करने की नाति का अनुसरण किया और पुरान पनाधिकारिया का

अपन पत्नी तथा वेतनादि लाभा का पूरवत उपभाग करन दिया। इमतिए जवान खलजी योद्धा जा शक्ति प्रतिष्ठा तथा लाभ क उच्चतम पत्र प्राप्त करन क इच्छा क उसकी इम नीति स ठक गय। उनम स कुछ ता उस बुद्धिहीन मठियाया हुआ तथा मिहामन क लिए अमाभ्य ममझन लग। व उस अपरम्य करक अपन म म किसी को गद्दी पर बिगाने की इच्छा करन लग और उसका भनीजा तथा तामा अनाउदान इन असन्तुष्ट लोगा क पत्र का नेता बन गया।

**गृह-नीति**

फीरोज राज्य क पनाधिकारिया स अधिक उलट पत्र करने की नीति का पशपाती नही था। उनम तुर्की अमीरा को उनके उन पत्रो पर स्वायी कर दिया जा उह पिछल सुल्तान के शासनकाल म मिल हुए थ। बलघन के भनीजे मलिक छजू का जा अपने बश म अकता ही रह गया था। फीरोज ने कया मानिकपुर क सूरेणार क पत्र पर पूरवत रहन दिया। मतिक फारसीन का उमम शिली का कोतवान बना रहने दिया। अपन पुत्रा का उमन उच्च पत्रो पर नियुक्त किया। मत्रम बडे नडक महमूद का उमन खानपाना दूसर का अकनीया तथा तीमर का कद्रवा की उपाधिया स विभूषित किया। सुतान का छात्रा मार्क यशायवा बनाया गया और सना मत्रा (जार्जिजे-मुमानिक) क पत्र पर नियुक्त किया गया। एमी प्रकार अपन भनीजा अनाउदान तथा अलमम बग का सुतान क उच्च पत्र प्रदान किया और अपन एक निवट मम्बधी मतिक अहमद चप को अमीर हाजिब क पद पर नियुक्त किया।

फीरोज की आंतरिक नीति दूमरा को प्रसन्न रखने के सिद्धान्त पर आधारित था। उनम शांति तथा उदारता म काम लिया और जहाँ तक सम्भव हो सका बिना खतपात क शासन करन का प्रयत्न किया। उस इन बात की चिन्ता रहती थी कि पुरान अमीरा अथवा दिल्ली क नागरिका म उमकी किसी प्रकार से टक्कर न हो जाय।

यही कारण था कि तममग एक बष तक उमन पुराने नगर को अपना निवास स्थान नही बनाया। अन्त म जब कोतवान फगदहान क नतृत्व म शिली क नागरिका न उन आमत्रित किया ता भी कय बतवन क नाय कित क सामने उतर पडा और मिहामन-गृह म प्रवेश करन स पत्र रा पत्र। वद मिहामन पर नहा बटा और बोला कि एक साधारण सामान तथा त्रबाग की हैमियन म मैं अनेक बार इमक नामन रात्रा हुआ था।

फीरोज क शासन क दूमरे बष म कया मानिकपुर क सूरेणार मतिक छजू ने बिगान का शण्डा गटा किया और सुल्तान की उपाधि धारण की। अवध का सूरेणार हाजिमगा भी उमन जा मिला। उनका मयुक्त मेनाआ न शिली

की ओर खूब किया। फीरोज उन्हीं गानों के लिए आगे बढ़ा। उसके पुत्र अकलीतों के उत्तर में उमरी गाँव के एक अग्रगामी हस्ते ने बन्धु के निकट विन्हाहिया को पराजित किया। मन्तिक छजू गिरफ्तार करके मुल्तान के मामल उपस्थित किया गया। एक बुद्धिमान बन्धी को बड़ियाँ पत्तन हूए दखकर फीरोज ने पना। उसने छजू तथा उसके अनुयायियों का मुक्त करने की आज्ञा दी और तत्पश्चात् मन्टिरा शारा उनका मनारजन किया। उसने मन्तिक छजू के अनुयायियों की हसतिण गुन रूप से प्रशंसा की कि वे अपने स्वर्गीय स्वामी बनबन के एकमात्र उत्तराधिकारियों के प्रति वफादार थे। जवान सलजी पनाधिकारियों ने जिनका नेता स्पष्टवादी अहमद चप था इस प्रकार की भूमतापूर्ण बातों का विरोध किया और कहा कि ऐसा करने से विन्हाहिया को प्राप्ताह्न मिलता है। फीरोज ने उत्तर दिया कि क्षणभंगुर राज्य के लिए मैं एक भी मुसलमान का बंधन करना पसन्द नहीं करता। मन्तिक छजू को अकलीतों के जिस मुल्तान का सूबदार नियुक्त कर दिया गया था सुपुत्र कर दिया गया और कहा मन्तिकपुर की सूबदारी सुल्तान के भतीजे असाउद्दीन को मिल गयी।

फीरोज की उदार नीति कभी-कभी सीमा का उल्लंघन कर जाती थी। एक बार दिल्ली में अनेक ठग तथा डाकू गिरफ्तार कर लिये गए। उनमें से एक ने भ्रष्ट बतौर दिया जिससे उसके गिरोह के लगभग एक हजार व्यक्ति पकड़े गए। फीरोज ने इस गिरोह का कोई दण्ड नही दिया। उसने उन्हें नावा में बिठाकर बगान भिजवा दिया जहाँ उसकी आज्ञानुसार वे मुक्त कर लिये गए। फीरोज के उत्तर नीति में विचलित होने का एक उदाहरण अवश्य मिलता है। नोगा का विश्वास था कि सिद्दी मौला नामक एक धार्मिक नेता जो पाकपटन (अजुद्दान) के शय फरीदुद्दीन गजशकर का शिष्य था सिन्धी का मित्रासन प्राप्त करने का इच्छुक था। उसके शिष्यों की संख्या बहुत बढ़ी थी जिनके सत्कार के लिए वह अपरिमित धन खर्च किया करता था। कुछ नोगा ने स्वर्गीय सुल्तान नासिरुद्दीन महमूद की पुत्री का विवाह सिद्दी मौला से करके उसे सिद्दासन पर बिठाने का पत्रपत्र रचा। फीरोज के कुछ दरबारी अमीर भी इस पत्रपत्र में सम्मिलित हो गए। सुल्तान ने सिद्दी मौला तथा उसके शिष्यों को गिरफ्तार करवाकर अपने सम्मुख बुलाया। सिद्दी मौला से वाद विवाद के बीच सुल्तान अपने से दारुण हा गया और अपने सम्मुख ही उसने उसका बंधन करवा दिया। एक धर्मांध मुसलमान ने तो इस सम्प्रदाय का विरोधी था सिद्दी मौला का हारे से अनेक बार बाटा और एक सजा उसके शरीर में भोक्त दिया। अंत में उसके शरीर का हाथी के परा के नीचे रौंटा गया। हम फकीर की मृत्यु के उपरांत एक भयंकर आंधी आयी तथा अनापूर्ति

के कारण दुर्भिक्ष पड़ गया। लोगो ने समझा कि स्वर्गीय फकीर ने मुत्तान को शाप दे दिया है इसलिए य मय दुष्घटनाएँ हुई हैं। दुर्भिक्ष धाम्निध म इतना भयंकर था कि अन्न का भाव एक जीनन प्रति सत्र तक पहुँच गया और बन्धु मन्धा म नाशो न यमुना में डूबकर प्राण त्याग दिया।

### विदेश-नीति

फारुख सलजी ने विजय के उद्देश्य से युद्ध नहीं किया। अमन कवन का आक्रमण किया जिनमें उम अधिक सफलता नहीं मिली। पन्ना आक्रमण १७६० में मणयम्भोर पर किया गया जिमका सञ्चालन स्वयं मुल्तान ने किया। किन्तु चौहान शासक ने कठिन प्रतिरोध दिया। अपन का हम काय के लिए यादव ने ममयकर फीरोज ने धम उठा लिया और शिवाजी को मन्धा म उगन यह कहकर अपन को माग्ना दी कि मैं मुसलमान के मिर के प्रत्यक्ष दात का मणयम्भोर जम मक्का किना से भी अधिक मूयवान ममयता न। हम आक्रमण से मुल्तान का एक ही नाम हुआ कि उमका ज्ञान के किन्तु पर अधिकार हो गया जहाँ उमन मन्दिरो का धर्म किया तथा मृतिया का नाश। दूसरा आक्रमण मन्दावर पर किया गया ता पहलु शिल्पा मन्तनन के अधीन रह चुका था किन्तु जिम राजपूता ने पुन उठन दिया था। १७६२ में हम पर पुन शिल्पी का अधिकार हो गया। फीरोज के शासनकाय म का और आक्रमण किया गया किन्तु उतका सञ्चालन मुत्तान ने तथा खिन उसका भनाज अनाउदान न किया। १७६२ में अनाउदान न मानवा पर आक्रमण किया और भिलसा का किला जीत दिया किन्तु सम्भवत उम म्यानाय शासक के हाथ म ही रहन दिया गया। वहाँ पर उसे अपार धनराशि नूत्र म मिली। बन्धु पर उमन शिवा के शक्तिशाली मय स्वगिरी तथा उमक अनुच धन के सम्बन्ध म कानियाँ मुती जिनम शिवा का जीनन की उमरी मन्दावाभा प्रवृत्ति हो उठी। मालवा म लोहन पर अनाउदान का बन्धु के जतिरिवन अवध की भा मूवगारा मिल गयी। १७६४ में अनाउद्दीन ने स्वगिरी के राजा रामचन्द्र स्व पर आक्रमण किया और हम पराजित किया। दवगिरी म बन्धु अपार धन नूटकर नासा जिमम महारा पौत्र माना चाँगा माना मन तथा एक महय रणमी उपड के धान मम्मिलित थे।

### नवान मुसलमान

फारुख के साम्राज्य म शिल्पा मन्तनन का मगाता के आक्रमण का भी मामला बन्धा पडा। १७६० ई म मन्दाव के एक पौत्र के ननुष म डड नाग मन्दाव ना ने पनाइ पर आक्रमण किया और मुनम तक धड आयी। हम अन्नगर पर फारुख ने तादना म काम किया और धम न आक्रमणकारी के विपु

प्रम्यात करक उम भयकर पराजय नी । मगाता न पीराज स मधि कर ना  
 ओर उमा उनरी सनाआ वा शातिपूयक सौट जाने की आना न नी ।  
 चमेजगा क एव वशज उतगू न पीराज क यहाँ नीरगी कर ना जीर इस्लाम  
 अमीकार करक दिल्ली म ही रहा गया । मुल्तान न अपनी एक पुत्री का  
 विवाह भी उमाव गाय कर दिया । यह तथा उसक अनुयायी नय मुमनमाना  
 के नाम म विख्यात हुए ।

### जलालुद्दीन की मृत्यु

अलाउद्दीन की अनुपस्थिति म मुल्तान क कुछ पनाधिकारिया न उसम  
 कहा कि अलाउद्दीन एक अत्यधिक महत्वाकाशी नवयुवक है जीर मिहासन  
 हस्तगत करने की अभिलाषा रखता है । किन्तु अलाउद्दीन क छोटे भाई  
 उतुगलान की मीठी मीठी बातों के कारण मुल्तान का उसम (अलाउद्दीन म)  
 और भा अधिक विश्वास बट गया था । अतएव उसन कहा कि अलाउद्दीन के  
 अत्यधिक महत्वाकाशी होने का कोई कारण नहीं हो सकता क्योंकि मैं उम  
 अपन पुत्र की भाँति समझता हूँ और उसक लिए सब कुछ करने का उद्यत हूँ ।  
 उतुगलान न मुल्तान का विश्वास दिनाया कि अलाउद्दीन देवगिरि स जा अपार  
 धनराशि लाया है उस आपको जपित करना चाहता है किन्तु दिल्ली आने और  
 जायक सम्मुख उपस्थित हाने का उसे साहम नहीं हाना क्याकि आपसे उसने  
 देवगिरि पर आक्रमण करने की आज्ञा नहीं दी थी । जलालुद्दीन न अपन  
 पनाधिकारिया की मलाह की उपेक्षा की और अपन भतीज तथा दामाद स  
 मिलन क लिए कृपा की ओर चल पडा । दिल्ली स प्रस्थान करके उसने नाव  
 द्वारा यात्रा की और उसकी मना अहमद चप की अधीनता म स्थल माग स  
 रवाना हुई । अलाउद्दीन गया पार करक मानिकपुर पहुँचा । अपनी सेना को  
 उसन तयार रखा और बड़ी सावधानी स मुल्तान के लिए जान बिछाया और  
 उसम उस फमान के लिए अपन भाइ को भेजा । उतुगलान मुल्तान की सेवा म  
 उपस्थित हुआ और उसस प्रार्थना की कि कृपा कर अपनी सना का नती पार  
 करके पूरबी किनारे पर पहुँचने की आज्ञा न दीजिए क्याकि अलाउद्दीन अब भी  
 बहुत भयभीत है और वही ऐसा न हा कि वह जात्म हत्या कर न अथवा भाग  
 खडा हा । दरवारिया न इसका विरोध किया और कहा कि अलाउद्दीन स्वयं  
 मुल्तान स मिलन नहीं आया है और उसने अपनी सेना युद्ध के रूप म खीनी कर  
 रखी है । उतुगलान न उत्तर दिया कि वन दावत की तयारियों म गया हुआ  
 है । इसक अतिरिक्त वह देवगिरि स प्राप्त नूट क माल को मुल्तान की भेंट  
 करना चाहता है इसका भी उसे ममुचित प्रबंध करना है । सनाए इस रूप में  
 इसलिये खी है कि व मुल्तान का उसकी प्रतिष्ठा के अनुरूप स्वागत कर सकें ।  
 इस उत्तर स जलालुद्दीन सतुष्ट हा गया और चाडे स निशस्त्र सनिवा को

सक अपने भाज स मितन चल पया । अताउहीन न आग बत्कर मुल्तान क सम्मुख जपन का नतमस्तक किया । जलातुहीन न उम प्रेमपूवक उतावर हृदय स मगा किया और उमका हाथ पकटकर मधुर सम्भाषण करन गत उम नाव का द्वार न चला । अलाउद्दीन न मुल्तान मदीम नामक अपने एक अनुयायी का मकन किया और उमन मुल्तान पर न प्रहार किया । घायन होकर जनातुहीन नाव का जाग भागा और विलनाया टुट अताउद्दीन ! मून यत् क्या किया ?" उमी समय अताउद्दीन क एक दूसर अनुयायी न पीछे स आकर मुल्तान का मिर धर स प्रलग कर दिया । मुल्तान क मक्का का नगर क धार उतार दिया गया । १८ जुना १०८६ क दिन अताउद्दीन न राजछद्र धारण करके अपने का मुल्तान धावित कर दिया । जनातुहीन क मिर को भान स छटकर अताउद्दीन क अधीनस्थ बना मानिकपुर तथा अबध क सूरा स धुमाया गया ।

### जलातुहीन फीरोज का मूल्यांकन

जनातुहीन शिवा का प्रथम तुर्की मुल्तान का जिमन उतार निरकुशवा क आत्म का अपने मामन रखा । यद्यपि वह स्वय मफन मनानायक था और एक शक्तिशाली मना उमक अधिकार स था फिर भी उमन सनिकवाणी नानि का जिमन पिछनी एक शताब्दी भर उमक पूवाधिकारिया का अनुप्राणित किया था त्याग दिया । अपना उतार नानि द्वारा बह दरवार तथा राज्य क मयता पूण यमिनया और वगैरे का सन्नुष्ट रखना चाहता था । उसन वनवन-वश क बनयाया तुर्की अपमरा का अपने महत्त्वपूर्ण पया पर पूववन रहने दिया । उमन जानपूवकर एमा नम्रता प्रशिन की कि अपना मवनाश कर दिया । जमा कि हम पहन निय आय है वनवन के महन क चौक स मुल्तान घोर पर सवार नही हुआ । पुरान सिहासन पर बठन स भी उसन इमतिग बनवार कर दिया कि पहन मक्क क रूप स वह उमक सम्मुख मडा हो चुका था । उमतिग उमन अपने निय एक नय सिहासन का निमाण करामा । यह विरवास करता कति है कि एम व्यक्ति स जा जीवन भर सनिक तथा मनानायक रह चुका था मरमाव स ही इतना नम्रता हागा । स्पष्ट है कि यह उमकी नानि थी । जनातुहीन न हिन्दू मामना क शिष्ट काइ उल्लापनीय सनिक कायवाही नया थी । सम्भवत उमका विरवास था कि मगहन स राज्य का अधिन गिन हागा । कुचवा तथा कयूमम क तीन वष क शासनगत स शिवा का शासन-पदमथा लिप्रमिष्ट न गयी था । उमका मुपागन क गिग अत्यधिक दत्तवित्त शकर काय करन का आवश्यकता था । मुल्तान पर हम कायरता का आगप नही लगा सकन बवाकि उमन मल्लनत की उत्तर-पश्चिमा मामात्रा का मफनतापूवक रगा का था और मपाता की भयकर पगजद कर उम गधि करन तथा

सिन्धी में शांतिपूर्ण ढंग पर बाध्य किया था। उमरा रायमान किसी भी दृष्टि से मृत्युपूर्ण नहीं था सिन्धु पर मानना पड़ा कि सिन्धी सल्तनत के इतिहास में जलानुद्दीन ही पहला मुल्तान था जिनमें जनमत का प्रसन्न करने तथा मुगलमानों में तात्कालिक गर-नुज तथा भारतीय प्रगथ उनमें एकता तथा समन्वय स्थापित करने का प्रयत्न किया। कुछ इतिहासकारों का मत है कि यदि उमरा और अधिन राय किया जाता तो उसकी अतिशय उत्तार नाति के कारण सल्तनत का अवश्य क्षानि पहुँचती। मन्त्रिण व इग परिणाम पर पहुँचे हैं कि वह उमरा युग में रायलण्ड धारण करने का योग्य नहीं था। किन्तु वह मन धर्मपूर्ण है क्योंकि जलानुद्दीन मरधा उत्तार नहीं था। अपने पूर्वाधिकारियों की भाँति वह भी अपनी बहुसंख्यक हिन्दू जनता का धर्म के प्रति असहिष्णु था। जसा कि हम पत्र उल्लेख कर चुके हैं धर्म में उमरा मन्त्रियों को नष्ट तथा अपवित्र किया और भूतिया को तोला। वह एक मुगलमान मन को भी दण्ड दे सकता था यदि उसे विश्वास हा जाता था कि उसका राय का हानि हानि की सम्भावना है। यह दुभाग्य की बात है कि बरनी ने उसके शासनकाल की उही घटनाओं को चुन लिया है जिनमें उमरा के चरित्र पर बुरा प्रकाश पड़ता है।

बरनी का प्रयत्न ही जलानुद्दीन का शासनकाल के लिए एकमात्र प्रामाणिक इतिहास प्रयत्न है किन्तु वह इतिहासकार जलानुद्दीन तथा अय सभी सन्निया के विरुद्ध द्वेषभाव रखता था। सत्य तो यह है कि मुल्तान अतिशय उत्तार नहीं थी बल्कि विभिन्न प्रतिस्पर्द्धी राजा में सतुलन कायम रखना चाहता था। सामान्यतः यह दखा जाता है कि विभिन्न राज उत्तार शासक से उसकी उत्तारता तथा निष्पक्षता के कारण अप्रसन्न रहने हैं। एक दा उत्तारहरणा का छोड़कर जबकि जलानुद्दीन ने चारा का उनसे फिर चारी न करने की प्रतिज्ञा लेकर छोड़ दिया उसके शासन का इतिहास बताता है कि वह यह जानता था कि क्या बठार होने की आवश्यकता है और क्या नहीं।

अलाउद्दीन खलजी (१२९६-१३१६ ई.)

प्रारम्भिक जीवन

अलाउद्दीन जलानुद्दीन का भतीजा तथा नामात्त था। वह एक अत्यधिक उदासी तथा उत्साही सैनिक था और सामान्य व्यवहार बुद्धि तथा यथायथान्ति उमरा प्रचुर मात्रा में विद्यमान था। वह महत्वाकांक्षी था और प्रारम्भ में ही अपनी माँ की महत्ता के उक्षण प्रकट कर चका था। १२९० ई. में अपने चाचा के सिंहासनारोहण का अवसर पर उसे जमीरे-नुजक का पत्र मिला और कुछ ही समय उपरांत वह कान्यावात के निकट बड़ा मानिकपुर का सूबदार नियुक्त कर लिया गया। मन्त्रिक छत्रू का अनुयायी उसका चतुर्निक प्रकट हा

गये। शक्ति तथा धन प्राप्त करने की महत्त्वाकांक्षा रखने वाले खलजी सन्निव भा अलाउद्दीन का जब्त करने अनुकूल नता मानते थे और उनका विश्वास था कि उसे सिन्धी का सिंहासन प्राप्त करने का प्रयत्न करने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है और उसे पान पर वह हमारे उसाह तथा चारणा के लिए पुष्कृत करगा। इस प्रकार के अमानुष रागा न जो बूटे सुल्तान जलालुद्दीन की उदार नीति में अप्रसन्न थे अलाउद्दीन का सिंहासन ब हुनु करने के लिए मन्त्रवाया। किन्तु अलाउद्दीन चतुर था और किसी प्रकार की दण्डवाजा नहीं करना चाहता था। वह प्रत्या करने के लिए उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा करता रहा। उसके पहला तथा अधिष्ठ आवश्यक थाय था अपने अनुयायियों की संख्या बढ़ाना और अपने साम्राम पर्यो हुई योग्यता तथा स्वाभिभवित के लोगों को एकत्र करना। उसके भाइ ने प्रचार में उसके प्रतिनिधित्व किया तथा उसके हितों की रक्षा की और उसी के द्वारा अलाउद्दीन ने अपने चाचा सुल्तान का प्रसन्न रखा। उसने मानवा पर आक्रमण करने के लिए सुल्तान की आज्ञा प्राप्त कर ली। १२६२ ई में उसने मानवा में प्रवेश किया और मिलसा के नगर का जीतकर चत-मा धन तथा बहुमूल्य वस्तुएं चुराए लाया। लूट का एक भाग उसने सुल्तान के पास भिजवा दिया जिसमें प्रसन्न होकर जलालुद्दीन ने उसे बड़ा के अतिरिक्त अवध का भा सूत्रार बना दिया। हम प्रकार अलाउद्दीन अपने चाचा के भा प्राप्ता पर प्रामन करता था।

मानवा में अनाउद्दीन को जो सफलता प्राप्त हुई उसमें उसके विजय विषामा और भी अधिक ताद्र हा गया। मिलसा में उसने शक्ति के साथ स्वगिरि की समृद्धि और धन की वृद्धियाँ सुनी जिसमें उसके हृदय में शक्ति भारत का विजय करने का उत्कर्ष प्रवर्धित होना लगी। उसने अपने चाचा में अपने सन्निव की संख्या बढ़ाने की आज्ञा प्राप्त कर ली। किन्तु स्वगिरि पर आक्रमण करने की अपनी याजना का उसने सुल्तान में छिपाकर रखा। उस समय विध्याचन पवता के शक्ति में ही समृद्धशाही गाय था—पश्चिम में स्वगिरि और पूरव में तैलगाना। अलाउद्दीन ने पहल पर आक्रमण करने का मन्त्र किया। उसने इस याजना के लिए सावधानी में तयारियाँ की और अपने नादेव अनाउद्दीन मुक को कर्षा में नियुक्त करके १२६४ ई में आर श्जार अश्वागही मला लकर शक्ति के लिए प्रयत्न किया। माग में बड़ा चतुरता में उसने यह अपवाह बनाया कि मैं सिन्धी का एक शरणार्थी अमीर हूँ और दक्षिणी तैलगाना में स्थित राजमन्त्री में शरण तथा नौकरी का तताश में जा रहा हूँ। इसलिये माग में विमान उस पर मन्त्र नहीं किया और न उसका विराध किया। मन्त्रा के स्वगिरि की उत्तरी मामा पर जा पमवा। यादव राजा रामचन्द्र स्व जा उस समय स्वगिरि पर



शासन करता था आक्रमणकारी का शक्य विस्मृत रह गया। उसकी सेना का अधिकांश भाग उमका पुत्र शक्य अपन साथ तीस यात्रा के लिए ले गया था। रामचंद्र देव ने जल्दी से आनीत हजार सैनिक इकट्ठे किए और देवगिरि के बाहर मीन की दूरी पर स्थित समूचा न मदान में आक्रमणकारी का मुकाबला किया। किन्तु अनाउहीन की सेना ने जा मर्या में उमरी सेना में कभी अधिक थी उम पराजित करके किन के भीतर शरण लेने पर बाध्य किया। अलाउद्दीन ने किन का घर लिया और जफवाह फता दी कि मरी सेना किनी से आ रही बीस हजार अशवारानी सेना की बेवत एक अग्रगामी टुकड़ी है। इस समाचार में आनक्तिन शक्य रामचंद्र देव ने मधि करना स्वीकार कर लिया जोर आक्रमणकारी का १४०० पौंड मोना और बहुत-से बहुमूल्य मोनी तथा अन्य वस्तुएं भेंट का। जब अनाउद्दीन प्रस्थान करने की तयारियां कर रहा था उमी समय राजा का पुत्र शक्य तीसयात्रा से जोर आया और अपन पिता की सलाह के विरुद्ध उमने आक्रमणकारी पर हमला कर दिया। अलाउद्दीन ने अपनी सेना का न भागा में विभक्त किया। एक का उमने नगर की देखभाल के लिए छात्र किया जिसमें रामचंद्र देव अपन पुत्र की सहायता के लिए न पहुँच सके जोर दूसरे भाग का लेकर उसने शक्यदेव से लड़ने की तयारी की। उसकी पराजय निश्चिंत हा थी कि मलिक नसगत की अधीनता में दूसरा भाग नगर की सीमा से चकर उसकी सहायता के लिए पहुँच गया। शक्य ने समझा कि यह किनी में आन वाली सेना है जिसके विषय में अनाउद्दीन शकी मार रहा था। इस विचार में उसके हाथ पाँव फूट गये और उसकी पराजय हुई। अनाउद्दीन ने एक बार फिर देवगिरि के दुश का घर लिया। कुछ दिन युद्ध करने के उपरान्त रामचंद्र देव को पता लगा कि रक्षा सेना के लिए जा रसत के बारे इकट्ठे किए गए हैं उनमें अनाज की जगह नमक भरा है अतः उस सधि करने पर बाध्य होना पड़ा। अनाउद्दीन ने अब उस पर पहुँचे से भी अधिक बठोर शर्तें थोपी। उमने रामचंद्र मणिकपुत्र का प्रात छोड़ दिया और युद्ध की क्षतिपूर्ति के लिए १७२५ पौंड मोना २० पौंड मोनी ५८ पौंड अन्य रत्न २८२५ पौंड चाँदी तथा १० रेशम के थान वसूल किए। इस भारी तूट की सम्पत्ति को लेकर अलाउद्दीन काना को लौट गया।

पश्चिमी भारत पर यह पन्ना तुर्की आक्रमण था। अनाउद्दीन की सफलता वास्तव में अधिक महत्वपूर्ण थी। देवगिरि तथा काना में कई सौ मीन का अंतर था बीच का समस्त प्रदेश अपरिचित था और काना की जनता का व्यवहार शत्रुतापूर्ण था। इस आक्रमण की सफलता ने मिट्ट कर दिया कि अनाउद्दीन एक उच्चकाटि का प्रतिभाशाली सैनिक ही नहीं था अपितु उममें अदभुत साहस सगठन शक्ति तथा साधनसम्पन्नता भी थी।

इस जमाधारण विजय से अनाउद्दान का मिर फिर गया। जब वह तिल्ला के सिंहासन का हस्तगत करने की आकांक्षा करने लगा। उसका अनुयायी हम सम्बन्ध में प्रयत्न करने के लिए उस उत्तजित कर रहे थे। उसका पारिवारिक कठिनाइयाँ भी उसी कारण सक्त कर रनी थी। अपनी पत्नी से जा सुतान की पुत्री थी उसकी नहा पगती थी। वह तथा उसका माता परिवार में उसका विरुद्ध कुचक्र चलाया करती थी और उद्दान उसकी निजी जावन का भी दूमर बना रखा था। इन पारिवारिक कठिनाइयाँ ने उस शीघ्रानिशाघ्न इस सम्बन्ध में निणय करने पर त्राय किया। जमा कि हम पट्टे तिव्र जाय है उसने अपन चाचा का धान से जान में पाँसकर कत्तक निकट १८ जुलाई १२८६ ई उसकी प्रारम्भिक कठिनाइयाँ

तिल्ली की गद्दी प्राप्त करने के लिए अनाउद्दान ने तुर्क में अपन हाथ रग यह आरम्भ सत्य है। हम जाशा थी कि सिंहासन पूरा की मज हागा किन्तु कुछ समय के लिए ता वास्तव में वह काटा की शय्या सिद्ध हुआ। चारा बार में उस कठिनाइयाँ ने घर किया। वह एक अपहरणकर्ता था और अपन महानतम उपकारी चाचा की हत्या का अपराध उसका मिर पर था। इसलिए सभी भय तथा विचारवान लोग उससे घृणा करने लगे। उसके अतिरिक्त स्वर्गीय सुतान के अमीर तथा अनुयायी (जाजलानी अमीर कहलाते थे) अपन स्वाभाविक हत्यार का शमा नहा कर मकत थे। जलानुगीन के बगजा का सबसे अधिक शक्तिशाली समर्थक अहमद चप था जिसकी गणना उस समय तुर्की सल्तनत के निर्भिकतम याददाता में की जाता था। तीसरे तिल्ली बहुत दूर थी और हिट्टुम्तान का प्रभुत्व उमा यकिन के हाथ में समझा जाता था जिसका राजधानी के सिंहासन पर अतिकार हुआ था। विधवा रानी मलिकजहाँ के विचारानुसार सिंहासन का रिक्त रखने से सबट उपस्थित हा सकता है इसलिए उसने शीघ्र ही उसकी पुत्री का जायाजन किया और अपन तृतीय पुत्र बद्रताँ का रनुनुद्दीन इब्राहिम के नाम में सिंहासन पर बठाकर सुतान घोषित कर दिया।

यदि नये सुल्तान इब्राहिम का उचित समयने प्राप्त होता तो वह अलाउद्दीन का भयकर प्रतिद्वन्द्वी सिद्ध हो सकता था। उसके अतिरिक्त शक्तिशाली हिन्दू गामन भी जिन्हें तुर्कों प्रभुत्व का जुआ असह्य हो रहा था उससे मुक्त होने के लिए अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। उधर तिल्ली सल्तनत के उत्तर-पश्चिमी प्रभाग पर मगान प्रहार कर रहे थे। यन्त्रिण परिस्थिति भयकर शिवायी पगती थी और यदि अलाउद्दीन से कम साहम वाला कोई व्यक्ति हाजा तो उसका हृदय अवश्य टूट गया होता।

### बिहारी पर अधिकार

अलाउद्दीन ने शक्ति तथा दुर्ग मन्त्रालय व साव जनक रजिनादया का सामना किया जगा कि इन्तुमिशन न अपन शासन व प्रारम्भ म किया था । उमन अपनी प्रारम्भिक हिचकिराहट तथा भागकर बगान म शरण लेन का इच्छा को त्यागकर अविनम्य शिनी पर प्रहार करन की नीति को अपनाया । जब उम यह शुभ समाचार मिला कि जनाबुदीन व बगजा व समयका म फूट प गयी है तो उसका सख्त जोर भी अधिक दृढ हा गया । जलालुद्दीन व यण तम जीवित पुत्र जकलागी न अपन अनुज व मिहासनाराहण का विरोध किया जोर उस मुत्तान स्वाकार नहा किया तथा मुत्तान म उपासन पन रहा । जनाली पग व अनक लोग वहाँ जाकर उमस मिल गय । इस फूट स प्रोत्साहित होकर अलाउद्दीन तिल्ली की आर वण और माग म उसन दक्षिण का धन जनता म बाटकर उस प्रसन्न किया । उसकी सना की सट्या बटकर विशान हा गयी । उसक आगमन का समाचार सुनकर ब्राहीम शिनी स निकल और बदायू व निकट दोना प्रतिशिया म मुठभड हा गयी ।

अलाउद्दीन न बिना युद्ध के ही अपन शत्रु पर विजय प्राप्त की क्यकि ब्राहीम के अधिकतर सनिक तथा अनुयायी उस छोकर अलाउद्दीन स जा मिल । इस प्रकार ६० हजार जश्वाराही तथा ६० हजार पल सना कर अलाउद्दीन तिल्ली की जोर बढा । ब्राहीम अपनी माता तथा अनुयायिया व साथ मुल्तान की जोर भाग गया अलाउद्दीन ने तिल्ली म प्रवेश किया और ३ अक्टूबर १२६६ ई का बलरन व नाव किने म उसका नियमानसार रायाभिषक हुआ ।

नय मुत्तान ने सबप्रथम जनता का प्रसन्न करन का प्रयत्न किया जिमम वह उमक घृणित अपराध का भून जाय । देवगिरि स प्राप्त नकद धन को उसन पाना की भानि बहाया । कहा जाता है कि कण मानिकपुर स तिल्ली तक व माग म प्रत्येक मजिन पर वह अपन सभ व सामन एक बलिश्ना रखवाकर उसक तारा छोट छोट सोन तथा चाँदी के सिक्के नोणा म बधरा करता था । तिल्ली म भी कुछ शिना तक उसन यही नियम जारी रखा । जनता की स्मरण शक्ति दुबल हाती है यह एक नाक प्रसिद्ध बात है । वह अलाउद्दीन के विश्वासधान तथा वृत्तधनना का भून गयी और बहुत-स नोग उसकी अपव्ययता पूण उगारता की प्रशसा करन लग । नगभग सभी महत्वपूण अपार और पलाधिकारा विगत का भूनकर उसके पा म हो गय । सोने के नाभ स आट्ट हुए इन साहसिका की सहायता स इब्राहीम तथा उसके समयका का दमन करना अलाउद्दीन का दूसरा मुख्य बाप था । उलुगखा तथा हिजाबुद्दीन की अधीनता म चालीस हजार सेना अकलीखा इब्राहीम तथा उसकी माता का

दमन करने के लिए मुस्लिमान नज़ा गया। मन निर्विबाध नगर पर अधिकार करके राजकुमारों का बन्दा बना दिया। अकता अज्ञाहान अहमद चप तथा जनानुमान के नामों से नुवा मंगल का अघा कर दिया गया और विधवा राजा मन्दिबदहा का कारागार में डाल दिया गया। उस प्रकार चतुर कृटनीति गरा अपने प्रतिद्विन्दिमा तथा उन समयका का अपने भाग से हटाकर नया मुस्लिमान अज्ञाहान मिहामन प बना।

अज्ञा उस मफतता के कारण मुस्लिमान के लिए उन अमारा तथा पनाधि कागिया का लुट दना सम्भव ही नका या मान के नाम से रकुनुमान इज्ञाहाम का छात्रक उमस जा मित थ। अज्ञाहान का विश्वास था कि एक लाग या एक स्वाभा का छात्रक दूमर से मिल सकत विश्वमनीय जग ही सकत बनाएव उन्हें एक मिलना चाहिए। इसी नाति के अनुसार मन कुठ का मृत्यु एक निया कुठ का अघा करवा दिया और शय का कारागार में डाल दिया। एक पुश तथा स्त्रिया का सम्पत्ति का अपहरण करके उह भिगारी बना दिया गया। विश्वासपातिया में पन्न नाम उठाना और फिर उह दण दना अज्ञाहान का एक मिडान्त था।

#### उसका राज्य सम्बन्धी सिद्धान्त

जम से अज्ञाउहीन की स्थिति दृढ़ हो गयी उसने बलबन के राजत्व मन्बशा सिद्धान्त की पुनःस्थापना का मकल्प किया। बनबन का भाति वह भी राजा के प्रताप में विश्वास करना था और उस पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि मानता था। उसका दृढ़ विश्वास था कि मुस्लिमान का अय सभी मनुष्या में अधिक वृद्धि जाती है इसीलिए उसकी इच्छा ही कानून जाना चाहिए। वह इस सिद्धान्त का मानता था कि राजा का कोई सम्बन्धी नहीं होता और राज्य के सभा निवाना उनके सबके अथवा प्रजा हात हैं। उसने राज्य की नाति निर्धारित करने में किसी व्यक्ति अथवा दन विशेष द्वारा प्रभावित न होने का निश्चय किया। १ वा गताली भर तिली मुस्लिमान दो बगों के प्रभाव में रहे—एक अमार और दूसरे उतमा। अज्ञाउहीन यह सहन करे का तैयार न था कि पुराने अमोर फिर राज्य में अपनी शक्ति का स्थापना करे न। वह नहा चाहता था कि वह उसरी नीति का प्रभावित करे। वह उह अपना सबके बनाकर रखना चाहता था जिससे अपनी इच्छानुसार वह उनको नियुक्त और पञ्चुन कर सके। उसने उह इतना जातकित किया कि किसी दरबारी में पना भी साहम न रहा कि वह उस किसी प्रकार की सहायद मकता अथवा किमा रिआयत के लिए उसमें प्रायना कर सकता। उसका पुराना मित्र तली का बातवाल अना उन मुल्क से एक पना यविया था जो मुस्लिमान का गताह दन का साहम कर सकता था। जहाँ तक दूसरे बग उतमा का सम्बन्ध था, तिली

गन्तारा के अतिहास में अलाउद्दीन ने पहला बार धारणा का कि मैं उह राय की नीति निर्धारित करने की आशा नही दूंगा। उमन बहा कि धर्माधिकारिया का अपना में अधि अछी तरह जानता हू कि राय की भनाई के लिए क्या आवश्यक और लाभप्रद है। उसन द्वा शासन में अपनी नीति का व्याख्या का में नही जानता कि क्या कानून की दृष्टि में उचित है और क्या अनुचित में राय की भनाई जयवा अवसर विशेष के लिए जा उपयुक्त समझता हू उमी के करने की जाना न्ना हू अतिम राय के तिन मरा क्या हागा यह में नही जानता। इस प्रकार अलाउद्दीन दिल्ली का पहला मुल्तान था जिसने धर्म पर राय का नियंत्रण स्थापित किया और एस तत्त्वा का जन्म रिया जिनम कम रा कम सद्धान्तिन राय असाम्प्रदायिक आधार पर सत्ता हा सकता। तुर्भाष्यवश उसके उत्तराधिकारिया न एस नीति का अनुमरण न। किया इसलिये उसकी मृत्यु के तुरन्त बाद भारत की तुर्कों सल्तनत पुन एक साम्प्रदायिक सस्था बन गयी। यद्यपि इस प्रकार अलाउद्दीन ने उन्मा को शासन व्यवस्था में हस्तक्षेप करने से राका किन्तु भारतीय नरशा तथा जनता के विरुद्ध युद्धा में उसके मुसलमाना का धमाघना का अवश्य लाभ उठाया। वास्तव में उस जब कभी मुस्लिम जनमत के समथन अथवा उसके सनिक सह याग का आवश्यकता हाती थी तब वह उनकी धार्मिक भावनाओं को अत्यधिक उत्तजित कर लिया करता था। अलाउद्दीन ने इस्लाम को कभी नही त्यागा। मुस्लिम कानून में उसका आस्था कम नही हुई और न उसके विरुद्ध ही उसने कभी काय किया। असल में वह उतना ही अच्छा मुसलमान बना रहा जितना कि दिल्ली की गद्दी पर बठन वाल उसके पूर्वाधिकारियों में से कोई हा सकता था।

अलाउद्दीन ने अपना सत्ता की जड़ मजबूत करने के लिए खलीफा के नाम का सहारा लेना आवश्यक नहीं समझा। उसने कभी खलीफा से अधिकार-पत्र की प्राधना नहीं की। फिर भी उसने सत्त्व अपने का खलीफा का नाइब (यामीन उस खिलाफत नासिरी अमीर उन मुसलिन) कहा। ऐसा करने में उसका उद्देश्य खलीफा के प्रति राजनीतिक प्रमुख के रूप में सम्मान प्रकट करना नहीं था वह बवल सद्धान्तिक दृष्टि से खिलाफत की परम्परा को जीवित रखना चाहता था।

जहाँ तक हिन्दुओं का सम्बन्ध था वह अपने का उस जय में उनके शासक नहीं समझता था जिसमें कि मुसलमाना का और न उनका भनाई के लिए अपने का जिम्मेदार मानता था। हिन्दुओं का दमन करने की उसके नीति क्षणिक आवश्यकता परिणाम नहीं अपितु निश्चित विचारधारा का एक अंग थी। राय में हिन्दुओं का क्या स्थिति हानी चाहिए इस विषय में उस



गंगातीर में  
 की नीति  
 का अर्थ  
 आवश्यक  
 में नहीं

राज्य का  
 उगी क क  
 नहीं जान  
 धर्म पर  
 जिनमें क  
 सकता ।

५ किया इस  
 साम्प्रदायि  
 शासन यह  
 क विरुद्ध  
 वास्तव में  
 याग का  
 उत्तजित  
 मुक्तिम ।  
 उसने क  
 जितना कि  
 मवता थ  
 अत्र

का सहार  
 की प्राथ  
 (यामीन  
 उसका  
 करना  
 जीवित  
 जह

शासन  
 लिए अ  
 नीति द  
 अग धी

बयाना व काजा मुगामुंन का सनाह ना । काजा न उत्तर निया 'शरा म हिंदुआ का खराज गुजर (कर न्त वाला) कहा गया है और जब का माल का अपमर उनस चांटा मांग ना उनका कनय है कि बिना पूठनाठ व और बनी नझना व साथ उम साना न जीर यति अफमर उनक मुह म धून फेंके ता उम नत व लिए बिना बिबिचाहट न्ह अपन मह खान दना चाहिए । इस प्रकार व अपमानजनक कार्यो म जिम्मी न्नाम व प्रति अपना आजा पालन वा भावना का प्रश्नन करता न और नसस धम का यश बढ़ता ह । न्खर न स्वय उह अपमानित करन का आजा ती है पगम्बर न हम उनका बध करन न्ह लटन तथा वना बनान का आश निया है । महान इमाम अबूहनीफा जम अधिकारी न जिमक धम का हम अनुसरण करन है हिंदुआ पर जजिया लगान की अनुमति ती ह । जय न्नामी धर्माधाशा व अनुमार हिंदुआ क लिए नियम है कि व मृयु जववा न्नाम म स एक का वरण करें । अलाउद्दीन न काजी की सनाह का ह्दय स स्वागत निया । वह अपन राज्य की बहुमध्यक हिंदू जनता क प्रति न्मी नीति का अनुसरण करना आमा था इसलिए काजी का गय मुनकर उस प्रसन्नता हुई ।

### गृह नीति

विगोहों का दमन उनक कारणों का विश्लेषण

अलाउद्दीन व शासनकाल व प्रारम्भिक निया म विद्रोहो व कारण जगानि रहा । पहला विद्रोह उन मगाचा का हुआ जा जवानुद्दीन फाराज व समय स भागन म घस गय थ जीर नय मुसलमान कहलात थ । १२६६ न म व गुजरान व आक्रमण म नसरतगों व साथ गय परन्तु आक्रमण का सफलता व बाव जब सना वापस लौट रही थी उम समय माग म नट व माल व बखवार म जगतुष्ट हाकर न्नाम विद्रोह कर निया और अलाउद्दीन व एक भनीर तथा नसरतगों व एक भाई का मार डारा । नसरतगों न उन पर आक्रमण करन की आजा ना और एक बडा सफ्या म न्नाका बध कर निया गया । उनम म कुछ न भागवर रणयम्भौर व गणा हम्मीरख व मही गण ता । अलाउद्दीन न निला म उपस्थित उनका स्त्रिया और बच्चा का वरन करवाकर उनस बन्ना लिया । दूसरा विद्रोह जवनगों न निया जा मुन्नान व मा का पुत्र था । जब मुन्नान रणयम्भौर का जा रहा था ता माग म निला ए व निकर कुछ निया क लिए निवार का आन नत क लिए टहर गया । गिहार व तौरान म एक बार मुन्नान बिनकुन अकनार र गया ता जवनगों न अपन गनिका का उस पर आक्रमण करन की आमा द दी । अलाउद्दीन न बारनगुवक अपनी रसा की और तब तब अगस्त्य दत्त व कुछ मिपाही आ



गये। किन्तु अन्ततया यह गमनाहार कि गुलान मारा जा चुका है सना म चौतखर उगरी मृयु का धापणा कर दी और उगक निवास पर अधिकार करत क उद्देश्य स उसम प्रयत्न करन का प्रयत्न किया। तत्र तत्र सुल्तान जा अपन अगरेधारा का सामयिक सहायता क कारण बच गया था अपन सम म चौतखर पहुँचा। अन्ततया तथा उसक साथिया का वध कर दिया गया। इमक उपरान्त तीसरा मगस भी अधिक भयकर विनाह हुआ। जत्र सुल्तान रणयम्भीर का धरा डान हुए था उस समय उसक दा भानजा—अमार उमर जीर मगुली न बनायू तथा अवध म विनाह का गण्डा रण किया। किन्तु प्राता क स्वामिभक्त मूजारा त उह पराजित करक बन्दी बना लिया। चौथा विनाह सुल्तान की राजधाना दिल्ली म ही हुआ। राजा मोला नामक एक विगेही अफसर न गुण्डा का एक फौज इकट्ठी करक तमारी नामक कानवाल का मार डाला। अपना म सफरता का लाभ उठान क उद्देश्य स उसन सिरा क कानवान अयाज का वध करन का भा प्रयत्न किया। लेकिन इसम उस सफरता नहा मिली। उसन अपन एक उम्मीदवार का दिल्ली क सिंहासन पर बठा दिया और राय की शक्ति हस्तगत करन का प्रयत्न किया। किन्तु मनिव हमीदुद्दीन नामक एक स्वामिभक्त अफसर न विद्राही का हराया और मार डाला। य विनाह एक क बाद एक कुछ ही वर्षों म हुए इसनिए सुल्तान का विश्वास हो गया कि शासन व्यवस्था म कुछ मोनिक दाप है। अपन मित्रा की सलाह स उसन परिस्थिति का गम्भार अध्ययन किया और इस परिणाम पर पहुँचा कि विनाहा क चार मुख्य कारण है—(१) गुप्तचर विभाग की अयोग्यता जिसक कारण सुल्तान का अपन पदाधिकारिया तथा जनता क कायों क विषय म उचित सूचना नहा मिल पाती थी (२) मद्यपान का सामान्य रिवाज जिसस सागा म भावचार की भावना उत्पन्न हाती था और विद्राह तथा पडयान करन क लिए उत्तजना मिनता थी (३) अमारा म सामाजिक मन मिनार तथा परस्पर विवाह सम्बन्ध जिसस उह सुल्तान क विरुद्ध संगठन हान का अवसर मिलता था और (४) कुछ प्रमुख नागा क अधिकार म अत्यधिक धन का संग्रह जिसस उह साचन तथा विगेह रचन क लिए अवकाश मिनता था।

### अध्यादेश<sup>१</sup>

विद्राहा क कारणा का विश्लेषण करन क उपरान्त अलाउद्दीन न उनकी पुनरावृत्ति को रोकन क लिए कठम उठाया। उसन चार महत्वपूर्ण अध्यादेश

जारी किया। पहले का उत्पन्न धर्मिया<sup>२</sup> तथा माफी की भूमि का जन्म करना था। बड़े सी परिवार एस थ जा माफी का भूमि का उपभाग करत आय थ। कुछ क अधिकार म ता स्मरणानोत समय स भूमि चती जायी थी। एस प्रकार उदागहीन यकिनया का एक एमा बग उत्पन्न हा गया था जिस बिना परिश्रम क ही जीविका उपलब्ध हा जाती थी। अलाउद्दीन के नियमान इस बग पर कर प्रहार किया। अपनी भूमि क लिए उह कर दन का बाप किया गया और कर बमूल करन वान पनाधिकारिया का उनस प्रत्येक यहाँ स अधिक स अधिक धन बमूल करने की जाना गी गयी। सुल्तान की दृष्टि स यकिनगत सम्पत्ति पर किय गय इस जात्रमण क अच्छे परिणाम हुए। बरना लिखता है कि बं अमारा उच्च पनाधिकारिया तथा चाटी क व्यापारिया का छाटकर अय लागा क घरा म साना दानन का भा न मिलता था। एक अय अध्यादेश द्वारा सुल्तान न गुप्तचर विभाग का पुनसगठन किया। गुप्तचरों की एक विशाल सना का निर्माण किया गया। अमारा तथा पनाधिकारिया क घरा दफतरा नगरा और यहाँ तक कि महत्वपूर्ण गाँवा म भा सवात्ता तथा गुप्तचर नियुक्त कर िय गय। उह सुल्तान क मुनन याग्य तथा लाभप्र सभा घटनाजा की रिपाट भजन का आज्ञा गी गयी। एस अध्यादेश का यह परिणाम हुआ कि अमीरा पनाधिकारिया तथा साधारण जनता का गप गप उठाना बंद हा गया और सुल्तान क श्राध क भय स व अत्यधिक जातकित हा गय क्याकि अय उमक पाम उनक कामा का ही नहीं बल्कि विचारा और याजनाआ तक की सूचना पहुँचन लगी। तीमर अध्यादेश द्वारा मरिा तथा अय भादक द्रवा का उपयोग निषिद्ध कर िया गया। सुल्तान न स्वयं मद्यपान त्याग दिया और अपन मरिा-यात्रा का जनना क सम्मुख एक नाकीम डग स तुटवा िया। जिल्ली म मरिा का पूण बहिष्कार कर िया गया और उसका प्रवज राकन क िण नगर का सामाआ पर कण पहग बग िया गया। नियम भग करन घाता का बठार दण्ड िया जाता था किन्तु लागा न मद्यपान नहा त्यागा। उहाँन चारी म शराब साना प्रारम्भ कर िया। कुछ ता अपना हुक् (उत्कण्ठा) शान करन क िए बाम-य-वाम मान तक की यात्रा करन थ। अन्त म अलाउद्दीन न अनुभव किया कि कानून द्वारा लोग का समयी नहा बनाया जा सकता इमलिए उसन अध्यादेश का कुछ निधिल कर िया और घरा म निजा रूप म गगब बनान तथा पीन का जाना गी किन्तु उमरी बिक्री तथा शराब की दावता का पूववो नियम रहा। बाध अध्यादेश द्वारा सुल्तान न अमारा क सामाजिक सम्मलता पर परम्पर विवाह मध्यमा पर प्रतिबन्ध लगा िया। इस नियम

<sup>२</sup> Endowments

का कठोरता से लागू किया गया। इस प्रकार जमीरा के सामाजिक सम्बन्धों तथा मुहम्मद गालिबिया का अन्त हुआ गया।

### हिन्दुओं का दरिद्र बनना

इस अध्याय में अतिरिक्त मुल्तान के हिन्दुओं का दमन करने तथा अपने अत्याचारपूर्ण शासन के विरुद्ध उनके विद्रोहों का रोकने के लिए विशेष नियम जारी किये। उगने तथा कठोरता से राजस्व में वृद्धि की और उपज का आधा भूमि कर के रूप में निश्चित किया। भूमि-कर के अतिरिक्त उसने चरागाहों पर भी भेडा और बकरियाँ पर भी कर लगाये। जजिया वट्टि शल्क<sup>3</sup> तथा जाबकारी कर पूर्ववत् बन रहे। परिणाम यह हुआ कि हिन्दुओं का जो किसी रूप में भूमि पर ही निर्भर था भारी हानि पहुँची और वे धार दरिद्र हो गये। उन पर कड़ी निगाह रखी जाती थी और यदि वे किसी कर से बचने का प्रयत्न करने थे तो कठोर दण्ड मिलता था। उस समय तक मुकद्दम खुत चौधरी आदि राजस्व विभाग के उच्च हिन्दू पदाधिकारियों के साथ भूमि-कर की दर तथा राजस्व की वसूली के सम्बन्ध में काफी रिआयत की जाती थी। जनाउद्दीन ने यह रिआयत छीन ली और वशानुगत कर निर्धारण करने तथा राजस्व वसूल करने वाले पदाधिकारियों का बिना किसी विशेष बतन के काम करने पर बाध्य किया। वित्त मंत्री शराफ काई तथा उसके अधीन काम करने वाले मुसलमान पदाधिकारियों ने इन नियमों का कठोरता से साथ लागू किया। जनता अक्सर से उनकी कठोरता के कारण घृणा करने लगी। सर वृद्धन हंग निरखत है सम्पूर्ण राज्य में हिन्दू दुख और दरिद्रता में डूब गये। यदि कोई ऐसा वग था जिसका दशा दूसरा से अधिक दयनीय थी तो वह वशानुगत कर निर्धारित करने तथा वसूल करने वाले पदाधिकारियों का था जिसका पहल समाज में सबसे अधिक सम्मान था। तत्कालीन इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी इन नियमों के परिणामों का सारांश इस प्रकार देता है चौधरी खुत और मुकद्दम इस याग्य न रहे गये थे कि घाड़ पर चढ़ सकत हथियार बांध सकत अच्छे वस्त्र पहन सकत अथवा पान का शौक कर सकत। गरीबी के कारण उनकी स्त्रियाँ जो पड़ोसी मुसलमानों के घरों में नौकरानियों की भाँति काम करना पड़ता था।

### स्थायी सेना

उपयुक्त नियमों का लागू करने अपने राजस्व सम्बन्धी सिद्धांतों का कार्यान्वित करने अपनी विजय को महत्वाकांक्षा सन्तुष्ट करने तथा देश का

<sup>3</sup> Custom Duty

मगोलों के निरन्तर आक्रमणों से बचाने के लिए अनाउदीन को एक शक्तिशाली सेना रखने की आवश्यकता थी। राजनीतिक निरकुशवादी का जो आत्म-उत्साह हीन से अपन सम्मुख रखा उसका पूर्ण उच्चकाटिक के मन्त्रिक बन के बिना असम्भव थी। सभी उद्देश्य के ध्यान में रखते हुए अनाउदीन ने मध्य-सुधार की आरंभ ध्यान दिया। वह प्रथम सिन्धी मुत्तान था जिसे म्याया मना की सीधे द्वारा जो मन्त्र राजधानी में सेवा के लिए तैयार रखी थी। फौज का भरोसा साधा मना मन्त्र द्वारा ही जानी था। गुजराती कोष में उसने नए वेतन मिलना था। एक मन्त्रिक का वेतन २३४ रुका प्रति वर्ष था और एक अतिरिक्त घाणा रखने वाले को ७८ रुका अधिक मिलने थे। मन्त्रिका का धार्मिक श्रियाए तथा अन्य सामग्री राज्य के खर्च में ही जाना थी। अनाउदीन का दूर करने तथा मन्त्रिक नियंत्रण के समय अथवा युद्धक्षेत्र में प्रतिनिधि भेजने की प्रथा का रिकने के लिए अनाउदीन के मना मन्त्री के रजिस्टर में प्रथम मन्त्रिक की इतिहास (आइतिहास का वर्णन) नियंत्रण की परिभाषा जारी की। मन्त्रिक सांग अच्छे घाणा के ध्यान पर बुरे रखकर राज्य का धारणा दिया करते थे इनको रिकने के लिए घाणा का शासन का नियम प्रचलित किया गया। ये नियम पूर्णतया नए नए थे। भारत तथा अन्य जगहों में पहले में इनका प्रचार था। परिणाम के अनुसार कर्नाट मना में ४७५००० अश्वागण थे। बिना तैयारी के लखन न पत्तन मना की मर्यादा नहीं है किन्तु वह घुमसवार फौज से कहीं अधिक रहा जागा। मना के सगठन साम्राज्य तथा अनुशासन की आरंभ मुत्तान स्वयं बहुत ध्यान देता था।

### शासन का नियंत्रण

सन्धी विनाश सेना का राज्य के शासन पर अत्यधिक बल था जो बिना बाध में रहता असम्भव था। किन्तु सन्धी बन्धी मना एक अनिर्वास आक्षेपकता भी थी। अनाउदीन के राजशासन का समन तथा विनाश का उन्मूलन ही नया करना था यदि उस मना में भी जाना था जो प्रतिवर्ष राज्य की उत्तर पश्चिमी सीमाओं पर धारणा मारने करते थे। इनके अतिरिक्त सम्पूर्ण भारत का विजय करने की भी हमारा महत्वाकांक्षा था। इतिहास में अपनी शक्तिशाली सेना का व्यय घटाने का प्रथम शासन पर बाध्य जाना पड़ा। इस उद्देश्य के पूर्ण करने के लिए सन्धी राज कर्ण तथा जीवन के अन्य आवश्यक वस्तुओं का मूल्य घटाकर उन्हें सन्धी मना के रूप में दिया कि एक मन्त्रिक नाममात्र के वेतन में आगम में जीवन निर्वाह के मकतब था। उमने राज कर्ण तथा अन्य वस्तुओं का मूल्य साधारण बाजार की दर में बरतने के लिए किया। मन्त्रिक शासना भूमि में भी और जहाँ तक सम्भव हो सकता था अधीनस्थ शासना के भूमि में भी राज्य के पत्र के

रूप में बसूत करती थी और इस प्रकार उगा विशाल अन्न राशि जमा कर  
 ली। उन व्यापारियों के अतिरिक्त जिन्हें मन्तव्य परमिट प्राप्त अधिकार दे  
 दिया जाता था अथवा किसी व्यक्ति को हिमाचल में मीठा नाज खरीदने का  
 आना नहीं थी। शिन्धी के अन्न व्यापारियों को शहाने मन्त्री नामक पदाधिकारी  
 के दफ्तर में अपना नाम दिखाना पड़ता था। जिस व्यापारियों के पास अपनी  
 पर्याप्त पूंजी तथा हाथी थी उन्हें राज्य की आर में अग्रिम धन दिया जाता  
 था। उन्हें निश्चिन्त रूप पर सामान खरीदना पड़ता था और नियम में विचलित  
 होने की किसी को आना नहीं थी। यदि कोई व्यापारी इन आनाओं का पालन  
 नहीं करता था और सौदा तोड़ में बम देता था तो उसके शरीर में उनका ही  
 माम काट दिया जाता था। प्रत्येक प्रकार की सट्टेबाजी तथा चोरबाजारी  
 का बढोतरता सख्त मन किया गया। दोआब के पदाधिकारियों को इस बात की  
 लिखित गारण्टी देनी पड़ती थी कि हम किसी का नाज चोरी में जमा न करने  
 दोगे। शिन्धी प्रकार व्यापारियों को नाज तथा अन्य वस्तुएँ जमा करके रखन  
 का अधिकार नहीं था बल्कि माँग जान पर उन्हें व चीजें बेचनी पड़ती थी।  
 प्रमुख व्यक्ति अमीरो पदाधिकारियों तथा अन्य धनी व्यक्तियों को बाजार  
 में बहुमूल्य वस्तुएँ खरीदने में पहल शहाने मन्त्री के दफ्तर में परमिट देना  
 पड़ता था। शीवान रियासत तथा शहाने मन्त्री नामक दो पदाधिकारी मराठ  
 अन्न नामक एक यायाधीश तथा अनेक अन्य अधीनस्थ अफसरों की सहायता  
 में इन नियमों को बढोतरतापूर्वक कार्यान्वित कराने थे। वे बढोतर ईमानदारी से  
 तथा नियमानुसार अपना कर्तव्य का पालन करते और नियमों का उल्लंघन  
 करने वाला का सख्त प्ण्ड देते थे। इन सुधारों के परिणामस्वरूप राज कर्षण तथा  
 अन्य वस्तुएँ बहुत सस्ती हो गयीं। घोड़ों अथवा पशुओं नौकरानियों तथा  
 गुलामों का भी मूल्य बहुत गिर गया। अनाउद्दीन के सम्पूर्ण शासनकाल में  
 खान महल का खर्च कम तथा अन्नभाग स्थिर रहा। आधुनिक इतिहासकारों ने  
 अनाउद्दीन की उमकी आर्थिक नीति की सफलता के लिए भूरि भूरि प्रशंसा  
 की है। ये नियम सम्पूर्ण साम्राज्य में लागू किये गये थे अथवा केवल शिन्धी  
 और उससे निकटवर्ती प्रदेश तक ही सीमित थे। हम विषय में लेखकों में मतभेद  
 है। दूसरा मत यह प्रतीत होता है। सम्पूर्ण देश में इन नियमों को प्रचलित  
 करना असम्भव था फिर भी अनाउद्दीन को इस बात का श्रय है कि उसने  
 हम कठिन समस्या को हल करने का प्रयत्न किया। दक्षिण भारत में प्रायः  
 धन के अपाययत्नापूर्ण वितरण में मुगल का मूल्य गिर गया था और चीजों की  
 कीमतें बढ़ गयी थीं। यह मुगल प्रसार शिन्धी तथा उसके समीपवर्ती क्षेत्रों तक  
 ही सीमित था। इन सुधारों से मुल्तान का उद्देश्य—मुगल प्रसार रोकना तथा  
 खान महल का खर्च कम करना—पूरा हो गया।

### राजस्व-नीति

अलाउद्दीन की राजस्व नीति का नियंत्रण तथा रहन-सहन का खर्च कम करने में भी सन्तोष नया हुआ। साथ ही साथ वह अपने आर्थिक माघना में भी अभिवृद्धि करना चाहता था। अतः उसने अपने राजस्व विभाग के सुधार की आरम्भ कर दिया। उसके पूर्व अधिकांश राजस्व नानि विधायक करने का प्रयत्न नहीं किया था। अतः अलाउद्दीन ने चली आया पुराने व्यवस्था में भी सन्तोष कर दिया था। किन्तु अलाउद्दीन एक मात्र सामन-सुधारक था। वह बवल शासन में शक्ति तथा सुधारना में नया नाना खान्दा या रजिस्टर के माघना का प्राप्ति करने तथा अपने राजस्व में अधिकतम वृद्धि करने के लिए मौलिक परिवर्तन करने का भा इच्छुक था। उस उद्देश्य में उसने एक नियमावली प्रचलित की जिसमें अलाउद्दीन की राजस्व-व्यवस्था का स्थापना कर दिया। उसमें मुसलमान माफीदारों तथा धार्मिक व्यक्तियों की भूमि (राज्य द्वारा ली गयी सम्पत्ति) के नाम पर दारात (पैशन) तथा बकफ (धर्मस्व) आदि के रूप में मिली हुई भूमि जल कर ली। यह विज्ञापन करना कि राजस्व न उस प्रकार की सभी भूमि जल करके अपने अधिकार में कर ली गयी। सम्भवतः उपयुक्त विवरण की अधिकतर भूमि छीन ली गयी थी किन्तु कुछ भाग पूर्ववत् अपने अधिकारों का उपयोग करने में बचाया अलाउद्दीन के उत्तराधिकारियों के शासन के प्रारम्भिक वर्षों में इसमें नया के अस्तित्व के प्रमाण मिलते हैं। दूसरे नियम के अनुसार मुसलमान न मुकदम सुन तथा चौधरा आदि किन्तु पराधिकारियों का न विधेयाधिकारों में बचिप कर दिया जिनका वे अनेक पीढ़ियों में उपभाग करते आये थे। राजस्व विभाग के न भीत वर्गों के पराधिकारियों को उनके वनना कि पूर्ववत् मिलने रहे किन्तु अन्य भूमि में सम्बन्धित भागों का नानि उन्हें भी भूमि मरान तथा चरगागा पर कर लने परत थे। उस प्रकार भूमि-कर के सम्बन्ध में हिन्दुओं जयवा समसमानता विधी के पास भा विधेय अधिकार नया लने लिये गये। राज्य के न अल्पतम वृद्धि करना मुसलमानों का तासरा मुख्य सुधार था। उपर्युक्त का ५० प्रतिशत के अन्तर्गत के रूप में निश्चित किया। अथवा अतिरिक्त जना कि उस परत के अन्तर्गत कर चुक है उसमें सराना चरगागा तथा आयान विधान पर भी कर लगाये। हिन्दुओं का अथवा अतिरिक्त जड़िया भी नया परत था। जिनका भूमि पर मना जना है और अथवा बया वानविधेय पर है पर निश्चित करने के उद्देश्य में मुसलमानों न भूमि की नाप करवाया। यह अथवा चौथा सुधार था। भूमि का नाप कराना किन्तु अलाउद्दीन राजस्व-व्यवस्था

५ यह समसमानता में उपर्युक्त का एक चौपाई भूमि-कर के रूप में जना था।

की एक विशेषता थी और कुछ नशी राग्या म य एम युग म भी प्रचलित रही किन्तु अलाउद्दीन के पूर्वाधिकारियों म म विमान भी एम परिपाटी का अनुसरण नहीं किया था। उम पुनर्जीवित करने का श्रेय इस प्रसिद्ध सन्त शासक को ही था। भूमि का बंटवारा करने से पहले उमन पत्रकारियों व अभिलेखों म पत्रा नगाया कि राग्य के प्रत्येक गाँव म कितनी मनी के योग्य भूमि है और उमम कितना नगान आता है। उपयुक्त नियमों का कार्यान्वयन कराने के लिए उसने योग्य तथा इमानदार राजस्व प्राधिकारों नियुक्त किए। इतिहासकार जियाउद्दीन बरनी लिखता है कि राजस्व निर्धारित तथा वसूल करने की दृष्टि म सम्पूर्ण राग्य एक गाँव की भाँति समझा जाता था किन्तु बरनी न जो कुछ लिखा है उमसे एसा प्रतीत होता है कि अलाउद्दीन के राग्य के सब प्रांतों म नाग की परिपाटी तही प्रचलित की गयी थी। वह कुछ ही भाग तक सीमित थी। इन मुद्दों का परिणाम यह हुआ कि राग्य की आय म पर्याप्त वृद्धि हा गयी और उमका राग्य विमाना भूमिधरा यापारियों आदि जनता के सभी वर्गों पर पडा परन्तु अलाउद्दीन की इच्छा एनी हा अथवा न रही हो राजस्व का मुख्य भार हिन्दुओं पर ही पडा क्योंकि उनसे स बहुतरफे लाभ थे जिनका भूमि म घनिष्ठ सम्बन्ध था।

अलाउद्दीन सन्तों का वेतन व बन्दन म जागीर एन के पक्ष म नहीं था। फिर भी उमके समय म अनेक व्यक्ति इकना का उपभोग करते रहे क्योंकि एम प्रयास का पूणतया नष्ट करना असम्भव था विशेषकर नवविजित प्रदेशों म। शासन का केन्द्रिकरण

अलाउद्दीन का विधान सन्तों की महायता से राग्य के सभी स्वेच्छाकारी तत्वों का एमन करने और सम्पूर्ण सत्ता को अपने हाथों म केन्द्रित करने म सफलता मिली। यद्यपि एन मुत्ताना की भाँति अलाउद्दीन के समय म भी मन्त्री थे किन्तु वास्तव म काम के चुनचुण्ड तथा प्रशासक फडरिक् मन्त्रियों की भाँति मुत्तान स्वयं अपना प्रधानमन्त्री था। उसके मन्त्रियों की स्थिति मन्त्रियों तथा बन्दों की मी थी जो उमरी आलाआ का पालन करते और शासन का एनिक काम चलाते थे। वह अपनी इच्छानुसार उनकी मनाहें चलाया किन्तु उम मानने के लिए वह राघ्य नहीं था। प्रांतों के सूचना अथवा मुक्तियों भी पहले म अधिक बन्तीय सरकार के नियंत्रण म थे। उसके गुणवत्ता विभाग का विवाम पूणता का पहुँच गया था और अमीर तथा दरबारी इतने भयभीत और आतंकित हा गये थे कि वे परम्पर विचार विनिमय करने अथवा जाँच म बाधक बनने से भाँ डरते थे। इतिहासकार बरनी लिखता है कि वे सत्ता म अपने विचार प्रकट करते थे। एक आर मुत्तान न पुराने अमीरों का एमन किया किन्तु दूसरी आर उमने योग्य तथा स्वामिभक्त साधारण लोगों को

महत्वपूर्ण परन्तु उवा उठाया। साम्राज्य भर में भी यकित्त एसा न था जा मुल्तान व ममकनान का तावा कर सरता। सभी लोग का म्थित्त उमक मामता तथा नीकरा अथवा प्रजाजना की माता गया। उमक शासन तान व निरकुशवा परावाटा का पक्ष गया जमा कि भारत न युगा न तथा दमा था।

### विजय-नीति

#### विजय योजना

अलाउद्दीन की गणना सिता व मिथामन पर बठन वान उन शासका म है जा अत्यधिक महत्वासाभा हूण है। जे उम विद्रोहिया तथा बाह्य आक्रमण कारिया के विरुद्ध कु मफनता प्राप्त ता गया ता वह मिक्तर म्थान का अनु करण करने तथा मममन विश्व की जीतन का स्वप्न म्थन लगा। वन एक नय धम की नी स्थापना करना चाहता था। उसक म्थानतार तथा अनुभवो त्रपारा तिल्लो व वातवान अता उन मुल्क न उम तथा धम म्थ्यापिन करन का योजना मागन तथा विश्व विजय व वाय म सतान तान म पूव सम्पूण भारत का जीतन व दुम्तर विल्लु अभिवाठनीय वाय की पूरा करन की सताती। अलाउद्दीन न दम मराह का म्थीकार कर तिया और सिता मल्लनन की सामाजा व बाहर स्थित म्थनत्र हिंदू शाया का जीतन की एक विधान याजना तमार का। म्थान उसको बाह्य नानि वा एक ही मुख्य उद्देश्य था— भारत म तिमो म्थनत्र हिंदू शाय का अस्तित्व शय न तनना। अपन पनामी शाया पर आक्रमण करन स पहन उमन तिमो यकित्त कारण अथवा वहां की प्रताभा करना आवश्यक तथा मममा। उमक अधिकतर युद्ध मममन दश की विजय व दू मरूप का पूरा करन व तिम उड गया थ क्माकि सिंदू राजाजा न उमर विरुद्ध बाई मम वाय तथा तिय थ तिनम उन पर आक्रमण करन का म्थ वाक बहाना मिल सरता। उमकी विजया का ह्म ता वयो म विभवा व मरन है—(१) उत्तर का विजय तथा (२) दक्षिण का विजय।

#### उत्तर की विजय

##### गुजरात

१२९९ ई म म्थन उतुलगा तथा नमरागी की अधीनता म म्थ मना गुजरात विजय करन व तिम म्थी। म्थन म्थुद्दीनशा राय की राजधाना अहमदाबाद (आधुनिक वाग्न) था। उम पर तुरी आक्रमणकारिया न बाग वार वाय तिय थ किन्तु व उम कभी विजय न कर पाय थ। म्थन ममय यथन म्थना वण म्थ पर शासन करता था। सिता का म्थना न अहमदाबाद का पर तिया और उमको ह्मनपन कर तिय। वण की गनी क्मनावा आक्रमण



कागिया के अधिकार में आ गयी। तब राजा कण अपनी पुत्री देवसदबी को लेकर भाग लिया और तैयगिरि के राजा रामचन्द्र देव के यहाँ शरण ली। उसके समस्त राज्य पर आक्रमण कागिया ने अधिकार कर लिया। नमरतखी को सम्मान में काफ़ूर नामक एक सिद्ध राजा जिसे उमर खू के मान के साथ दिल्ली भेज दिया। यही राजा जाग नगर अनाउद्दीन के प्रधान मन्त्री के पद पर पहुँचा। खू के मान के बटवारे के प्रश्न पर नये मुसलमान (भारत में बसे हुए मंगोल) ने विनाश करके विजयवाली के विजयामव में विघ्न डाल दिया। किन्तु उनका निदयतापूर्वक नष्ट कर दिया गया और उनका वगभग नाश हो गया।

### रणधम्भौर

अनाउद्दीन का दूसरा आक्रमण रणधम्भौर के किले पर हुआ जो पहले राजस्थान में मुसलमानों की सन्निधि चौकी रह चुका था। किन्तु इस समय उस पर पृथ्वीराज चौहान द्वितीय का वंशज हम्मीरदेव राज्य करता था। इस आक्रमण के दो कारण थे प्रथम एक किले की पुनर्जीवना का पट्टा दिल्ली सल्तनत का जग रह चुका था। दिल्ली मुल्तान का पवित्र कतब था। दूसरे हम्मीरदेव ने कुछ विरोध नये मुसलमानों का अपने यहाँ शरण ली थी और उसके इस दुस्साहस के कारण उस दण्ड देने अनाउद्दीन अभिवाञ्छनीय समझता था। अतः उलुगखाँ और नमरतखी को हम्मीरदेव के विरुद्ध भेजा गया। उन्होंने वन पर अधिकार करके रणधम्भौर की घर लिया किन्तु पराजित हुए। नमरतखी मारा गया और वन की राजपूता ने पुनर्जीवित किया। तब अनाउद्दीन का स्वयं रणधम्भौर के लिए प्रस्थान करना पड़ा। पूरे एक वर्ष तक घरा चला फिर भी विजय की कोई आशा नहीं प्रतीत हुई। तब अनाउद्दीन ने छत्र से काम लिया। हम्मीरदेव के प्रधानमन्त्री रनमल को उससे तोड़ दिया और उसकी सहायता से घरे का सफलतापूर्वक अन्त हो गया। घरा डानन बाना ने किले की दीवारों पर चढ़कर उस पर अधिकार कर लिया (जुलाई १३१६ ई.)। हम्मीरदेव उसका परिवार तथा बच्चे हुए रक्षा सन्निधि की तत्वार के घाट उतार दिया गया। रनमल का भी मुल्तान की आना से बंध कर दिया गया और इन प्रकार उस स्वामिद्वेष का उचित मूय चुकाना पडा। विजयी होकर अनाउद्दीन दिल्ली लौट गया।

### चित्तौड़

मवाँ के गुजिनीना का भारतीय शासक म प्रमुख स्थान था। अतः उन्हें अल्लुतमिश में राजा देना पड़ा था किन्तु अपने राज्य पर उस मुल्तान के आक्रमण की उपाय विफल कर दिया था। १३०३ ई के प्रारम्भ में

अनाउद्दीन ने चित्तौड़ को जीतने का मकल्प किया और २८ जनवरी को चित्तौड़ पर चढ़कर उस घेर लिया। कहा जाता है कि उसका मुख्य उद्देश्य राणा रतनसिंह की अनुपम रानी पद्मिनी का प्राप्त करना था जो उस समय समस्त भारत में सबसे अधिक सुन्दर तथा गुणवत्ता स्त्री समझी जाती थी। परन्तु गीरीशंकर हीरानन्द ओझा तथा डा. के. एम. तान आदि आधुनिक इतिहासकारों ने इस कहानी को वास्तविकता की गती नहीं मानकर अस्वीकार किया है। यद्यपि अनाउद्दीन की गमस्त भावना का एक राष्ट्र-वन्दन का महत्वाकांक्षा तथा यह तथ्य कि मेवाड़ का स्वतंत्र रहने से एक भव्यता का पूरा होना असम्भव था चित्तौड़ पर आक्रमण करने का पर्याप्त कारण था। फिर भी जसा कि हम आगे देखेंगे एक घात के प्रमाण उपलब्ध है कि चित्तौड़ मुत्तान रूपवत्ता पद्मिनी का प्राप्त करना चाहता था। उसने चित्तौड़ की घेरकर निकटवर्ती चित्तौड़ी नामक पहाड़ी पर अपना सफेद शामियाना गाड़ दिया। किन्तु चित्तौड़ का हस्तगत करने के सब प्रयत्न विफल रहे और घरा लगभग पाँच महीने तक चलता रहा। वीर राजपूतों ने इतना कठिन प्रतिरोध किया कि शत्रुओं का भी उनकी प्रशंसा करनी पड़ी। किन्तु अपने मकदम अधिक बलवान्ता का प्रयत्न के विरुद्ध युद्ध जारी रखना निरर्थक था इसलिए अन्त में राणा रतनसिंह का वाच्य आदेश हुआ कि राजपूतों को छोड़कर (२६ अगस्त १३०६ ई.) और शत्रुओं ने अपने सम्मान की रक्षा के लिए भीषण जोरों पर चलाया। शत्रु हाथ अनाउद्दीन ने वीर राजपूतों का सहार की जाना दे दी। अमीर खुमरव जिमन यह दृश्य अपनी आँखों से देखा था चिन्तित है कि कबल एक दिन में ०००० राजपूत मार गये थे। विजय के उपरान्त अनाउद्दीन ने चित्तौड़ का नाम शिखरवाड़ा रखा और अपने पुत्र शिखरवाड़ा का उसका शासक नियुक्त कर चित्तौड़ का जीत गया।

राजपूतों ने नए शासन को निरन्तर बल पहुँचाया इसलिए पतञ्जी नाग अधिक समय तक चित्तौड़ पर अधिकार न रख सका। १३११ ई. में शिखरवाड़ा ने अपना पद त्याग दिया और अनाउद्दीन ने वाच्य हाथों अपने मित्र मालदेव का उसके स्थान पर नियुक्त किया। उसे आशा थी कि मानस्य गुहिनोता पर नियंत्रण रण सज्जा और चित्तौड़ को बर देना सज्जा। परन्तु अनाउद्दीन की मृत्यु के उपरान्त शासक ही गुहिनोत राजवंश की एक छोटी शाखा के प्रमुख राजा इम्मीर ने मानस्य का मार भगाया और अपने पूर्वजा के राज्य तथा अपनी राजधानी चित्तौड़ पर पुनः अधिकार कर लिया।

#### पद्मिनी की कहानी

कहा जाता है जब पद्मिनी का प्राप्त करने की अपनी यात्रा में अनाउद्दीन का गणपति नहीं मिला तो वह घेरा उठाकर सीटने का गजों ही गया

किन्तु शत यह थी कि रताशित एत एण म उग पद्मिना के सुन्दर मुग  
 वा प्रतिविम्ब भर शिगता थे । परन्तु जब राता कित्त ब बाहर मुल्तान को उमर  
 गमा तत्र पहुँचान गया ता उसा घाग स उग गिरगतार कर्वा किया किनु  
 पत्मिनी घडी चतुर्गर्ग अपना पति ता शत्रुआ ब चतुन म मुक्त वगत  
 म मपन हुम् । जमा कि हम पत्त उतय कर तब है जाधुनिक इतिहास  
 पाग न हम कहाती वा जननितागिर कर्कर अमीरार किया है । हम  
 अस्वीकार कर्न ब कारण हम प्रसार है—(१) अमीर सुमरव न जो  
 अलाउद्दीन के साथ चित्तौड़ गया था और पर ब समय कर्ता उपस्थित था  
 इस विषय म कुछ गती लिखा है (२) अय तत्कालीन लखवा ने भी  
 इसवा उल्लेख नहीं किया है और (३) बहानी मजिब मुहम्मद जायमी  
 की शिमी हुइ है जिसन अपना पदमावन १५४० ई म किया था और  
 सभी परवर्ती लखवा न उसी का अनुकरण किया है । य तक अमीर  
 सुमरव ब ग्रथा के उचन अध्ययन पर अतिनिम्बित हैं और युक्तिमयन  
 नहा है । अमीर सुमरव अवश्य इस घटना की आर मकेत करता है जबकि  
 वह अलाउद्दीन की सुनमान मे तुनना करता है सबा को चित्तौड़ ब कित्त  
 के भीतर बताना है और अपनी उपमा उस हुम् हुम् पत्नी से लेता है  
 जिसन सूधापिया के राजा सुनमान को सबा की सुन्दर रानी<sup>५</sup> विनाशिम  
 वा समाचार लिया था ।<sup>६</sup> सुमरव के वृत्तांत से स्पष्ट है कि चित्तौड़ ब  
 कित्ते पर अधिकार करने से पहले अलाउद्दीन उसके (सुमरव) माय एव  
 वार उसके भीतर अवश्य गया था—उम कित्त म जिसने भीतर पत्नी भी  
 उडकर नहीं पहुँच सकने थ । राना अलाउद्दीन के नेमो म आया और उमन  
 तभी समपण किया तब मुल्तान कित्त के भीतर से थापम चोटा । राना के  
 इधियार डान देन क उपगत निराश अलाउद्दीन की आनानुमार २००००  
 राजपूतो का वध किया गया ।<sup>७</sup> उपयक्त वृत्तांत की उचित समीक्षा करने  
 मे कर्तानी की मुख्य घटनाए स्पष्ट हा जाती हैं । सुमरव रग्बारी किये था  
 हमनिण उमन जो कुछ लिखा है उसम अधिक लिखना उमके लिए अमम्भव

\* श्री श्रीनथ पाण्डे न अपने मध्यकालीन भारत (शिमी सस्करण) म  
 प्राचीनतर लेखका के पक्ष म तक देने का प्रयत्न किया है । उन्होंने सबा  
 की रानी की तुनना निर्जीव नक्षमी स की है । किन्तु वे श्वीव की उम  
 टिप्पणी का भून जात हैं जिसम उक्तान बताया है कि कवि का अभिप्राय  
 गायक सुन्दरी पदमिनी मे है ।

५ देविए हबीब द्वारा अनूदित सुमरव का साराण उत पत्र पृ० ४८ ।

७ वही पृ ४६ ।

था। जसा कि हम विद्विन् हे उमन अनक अप्रिय सत्या का उन्नय नहा किया है जिनम अलाउद्दीन द्वारा अपन चाचा जलालुद्दीन का वध मगाता के हाथा मुल्तान की पराजय तथा उसका गारा तिला का घरा बत्यापि मुख्य ह। आमा के एम लान तथा जय नयवा का यह वयन वि यह कहाना बबल जायमा का मनगत्त वा गनत है। समय ता यह है कि जायमा न प्रम-बान्य का रचना का जोर उसका कथानक सुसरक के खडाए उस फनू से लिया। पन्थावन म वर्णित प्रेम कहाना के पार का अनक घटनाए कल्पित है किन्तु काय का मुख्य कथानक सत्य प्रतात हाना है। अलाउद्दीन पन्थिना का प्राप्त करन का इच्छुक था कामुक सुल्तान का राना का प्रतिप्रिय विवलाया गद्या था और उमन उमक पनि का बन्ना कर लिया था म घटनाए सम्भवत एतिहासिक मय पर आधागित ह। एसा प्रतात हाना है कि राना का गिरफ्तारा के उपरान्त स्त्रिया न जीहर कर दिया राजपूत याडा मगजा पर टूट पर जोर राना का उद्धान मुक्त कर दिया। किन्तु अन्त म उनम से प्रयक काट डाना गया तथा किता और गाय अलाउद्दीन के अधिकार म आ गय।

#### मासवा

१२०५ इ म अलाउद्दीन न मालवा के प्राप्त का जा राजस्थान से लगा हुआ है जोर जिमका अधिकांश भाग पहूत ही तिला सन्ननन के जन्नगन वा चका था जातन के उद्देश्य से आन उन मुक्त मुल्ताना का जागीर तथा उन्न पर आक्रमण करन भजा। आन उन मुक्त न ६ दिसम्बर १२०५ के राजा हरन के विरुद्ध भयकर युद्ध किया और उम परास्त किया। एम विजय के परिणामस्वरूप उज्जैन माण्डू धार तथा चन्दरा पर तिला मना का अधिपार हा गया। इन स्थाना का प्रयय करन के लिए अलाउद्दीन न एर सुन्दार निमुक्त किया। जागीर के बनगव न भा आमममपण कर दिया और मुल्तान की अधिपता स्वाकार कर सा।

#### मारवाड

१३०८ के म जयवा उमक नगभग सुल्तान न मारवाड का विजय करन का याजना बनाया क्याकि राजस्थान म कहा एक प्रता था जिमन उम समय तक सुर्को का विजय-याजना का विपत कर दिया था। तिला सना म उम प्रता के मयम अधिक गक्तिशानी दुम निवाना का घर दिया। परा शपवान तक चन्ता रहा फिर भा मफनता का का आमा तिलायी नगी ना। तय अलाउद्दीन का धारज टूट गया वह स्वयं म स्थान पर जा पुरवा और इतनी तादता म घर का सचासन किया कि मारवाड के राजा

धीनतन्त्र का बाध्य होकर संधि करना पड़ा। उम गुलता व सम्पूर्ण उपस्थित हो कर आगा भी गयी जोर उमरा तिला उमक अधिकार म रहा किया गया किन्तु उमक राज्य का छोकर दिल्ली व अमीरा म बांध किया गया।

जासोर

मद्यि १०५ ई म राजा बनरत्न न मुल्तान की अधीनता स्वीकार कर सीधी किन्तु उमन अपना जिद्दा पर समय नया रना और शमा बघारी कि में हर समय युद्धक्षेत्र म जलाउद्दीन का सामना करन क लिए उद्यत ह। उमग गुलता का क्राध भन्क उम और राजा का नाचा स्थितन क उद्देश्य स उसन अपन मन्ना की एक नौकराना गुनबिहिसन की अध्याता म उमक विरुद्ध एक सना भन्नी। उस स्त्रा न जासोर का घर तिया। बनरत्न पर इतना भारा दबाव पना कि वह आत्मसमर्पण करन हा का था कि गुनबिहिसन की मृत्यु हा गया। राजपूता न उसक पुत्र का पराजित किया और मार डाला। किन्तु जब कमानुद्दीन गुग क नवृत्व म कुछ कुमुक जासोर पहुँच गया तब दिल्ली की सना न राजा का परास्त किया उम तथा उसक सम्बन्धिया का तनवार क घाट उतार किया और जासोर का दिल्ली सल्तनत म सम्मिलित कर तिया।

अब उत्तरी भारत का विजय पूण हा गया जोर काश्मीर नेपाल आसाम तथा उत्तरी पश्चिमा पजाब के कुछ भाग का छोडकर समस्त दश जनाउद्दीन क साम्राज्य के अंतगत आ गया।

### दक्षिण की विजय

जनाउद्दीन न दक्षिण का भी जीतन का सक्ल्प किया। वह पहला दिल्ली सुल्तान था जिसन विजयाचन पवना का पार करके दक्षिणा प्रायण्य का जीतन का प्रयत्न किया। १२६४ ई म देवगिरि क राजा रामचन्द्र के विरुद्ध उसन जा सफलता प्राप्त की थी उसना हम पहन उल्लस कर चक है। उस समय दक्षिण भारत म चार शक्तिशाली राज्य थ (१) पश्चिम म देवगिरि का राज्य जिसम महाराष्ट्र सम्मिलित था और देवगिरि (आधुनिक दौलताबाद) जिसकी राजधानी थी (२) पूरव म तलगाना का कावतीय राज्य जिसकी राजधानी वारगल थी (३) कृष्णा नदी के दक्षिण म स्थित होयसल राज्य जिसम आधुनिक मयूर तथा कुछ अन्य जिन सम्मिलित थ और जिसकी राजधानी द्वारसमुद्र थी और (४) मुद्दूर दक्षिण का पाण्य राज्य जिसकी राजधानी मदुरा थी। जनाउद्दीन उत्तरा भारत का जीतकर उस पर सीधा शासन करना चाहता था। किन्तु दक्षिण क सम्बन्ध म उसकी नीति इसस भिन्न था। वह कवल यह चाहता था

वि दक्षिण क शासक उमकी अधानता रबीकार करें और वापिस कर भज ।  
अधानता स्वीकार करन का शत्रु पर वह उनक राज्य उनक अधिकार म  
छाड़न का उद्यत था । उसका मुख्य उद्देश्य उस प्रान्त म अधिकाधिक धन  
कमूल करना था ।

बारगल म उसका विपत्तता

१२६४ म दक्खिणि क यादव राज्य का अलाउद्दीन न अपन अधान करके  
उमक राजा का सामन्त बना लिया था और उसस बहुत सा धन कमूल किया  
था । १३०० इ म उमक दक्षिण क दूसरे राज्य तेलंगाना का बूटन तथा  
अधान करन क लिए नयसतर्वा क भनाय तथा उत्तगधिकार छान्न का भजा ।  
मना न बगान तथा उड़ीसा म जाकर अभियान करके बारगल पर आक्रमण  
किया किन्तु वाकनोय राजा प्रतापरस्तब न उस पराजित करके अपवस्थित  
रूप स पोछे लौटन पर बाध्य किया ।

दक्खिणि की पुनर्विजय

राजा रामचन्द्रव न १ ६६ म कनिचपुर का प्रांत अलाउद्दीन का  
द दिया था किन्तु तीन वर्ष म उसन उमका राजस्व नया चवाया था ।  
मलिक उमका दमन करन क लिए १३०६ ७ म एक सना सन्तान क नात्र  
मलिक क ननुव म भजी गयी । नात्र का गुजरात क राजा कणव की पुत्रा  
दवलवी का भा लान का आता दा गया क्याकि उसका माता जा उम समय  
मिला क रनिवास म थी उसस भिनता चाहती थी । कणव न जा बगाना क  
छान्नेम राज्य का स्वामी बन बैठा था रामचन्द्रव क सयस ब पुत्र शवव  
म अपनी पुत्रा का विवाह करन का प्रवच कर लिया था । जिस समय लाग  
दवलवी का दक्खिणि की शार ल जा र्थ माग म वह गुजरात क गवर्नर  
असपत्नी क हाथा म पन गया जा दक्खिणि क आक्रमण म मलिक कापुर का  
महायता करने जा रहा था । दवलवी का लिला भज लिया गया और  
अलाउद्दीन क सवम बेट पुत्र निज्यामी न विवाह कर लिया गया । इसक  
उपरात असपत्नी न कणव का हाथा और दक्खिणि म मरण उन क  
लिए बाध्य किया । मलिक कापुर न एलितपुर पर अधिकार करन प्रवच  
क लिए एक नुर्ही भूजग निरुक्त कर लिया । तपगल उमक स्वय  
दक्खिणि पर आक्रमण किया । रामचन्द्रव को आमसमपण करना पडा । य  
लिया गया और मुल्तान का अपार धन भेंट किया । अलाउद्दीन न उम  
राजगयन का उपाधि प्रदान की उमका राज्य उमक अधिकार म रहन  
लिया और मक अनिश्चित नवगागे का जिना भा निजा जागार कर म  
उप द लिया ।

## सल्लाह

१०३ ई. में सल्लाह का आक्रमण की शक्ति का जसाउद्दीन ने हथ में गटप रखा था और वह शीघ्रानिशीघ्र उग्र मनक का धान का चिन्ता म था। १०८ ई. में उग्रान् म काय का पूरा करत के लिए मन्त्रि काफूर का भाग। कावनीय काय की राजधाना वारगन न। मुन्द् शीवारा स धिरा हुई था जिनम स बाहरा मिट्टी की जीर भीतरी पथर का बनी हुई थी। उग्र राजा प्रतापस्तेव शिनाय पर जिसन १३०५ ई. में छजू का पराम्प किया था महमा आक्रमण किया गया। काफूर न वारगन का घरकर भातर की रक्षक सना का भागी धानि पट्टेचायी। जन राजा न समपण कर लिया ५०० हाथा ७००० घान तथा भारा मह्या म नक घन जीर रल युद्ध धानि का पूनि के लिए आक्रमणवारा का भेंट किय जीर बापिक कर दन का बचन लिया।

## द्वारसमुद्र का हीयसल राय

इसके उपरांत जनाउद्दान ने दक्षिण के तासर शक्तिशाला राय का जीतने की योजना बनाया। १२१ ई. में मन्त्रि काफूर तथा ख्वाजा हाजी का एक विशाल सना के साथ बिया के उस पार भजा। काफूर देवगिरि पट्टेचा जहा १२६१० ई. में रामचन्द्र के स्थान पर शकरदेव राजा हा गया था। शिना के माग का सुरक्षित रखा के लिए उसने गोलावरी नदी पर स्थित जलन में एक रक्षा सना स्थापित की। यह सावधानी इसलिए की गयी कि काफूर को शकरदेव की वफादारी में सन्देह था। देवगिरि से उसने 'द्वारसमुद्र' की ओर प्रस्थान किया। उसकी गति इतनी तीव्र थी कि हीयसल राजा बीर वरनात का उसके जाने के पूर्व सूचना भी न मिल सका और वह सहमा धिर गया। युद्ध में उसका पराजय हुए और उसकी राजधानी पर आक्रमणकारियों का अधिकार हो गया। काफूर ने नगर के मन्दिरा को लूटा। हीयसल राजा का बाघ्य हाकर युद्ध का भारी ज्ञाना चकाना पडा तथा शिल्ली मुल्तान की अधीनता स्वीकार करनी पनी।

## पाडय राय

द्वारसमुद्र में काफूर ने पाडय राय के लिए प्रस्थान किया जा दक्षिणी प्रायद्वीप के अन्तिम छोर पर स्थित था। राजसिंहासन के लिए बीर पाण्य तथा मुन्द् पाण्य नामक दो भाइयों में संघर्ष चल रहा था। मुन्द् पाडय अपने भाई बीर पाडय द्वारा पराजित हाकर शिल्ली चला गया था और जनाउद्दीन से उसने अपना सिंहासन प्राप्त करने के लिए प्रार्थना की थी। यही कारण था कि काफूर ने एक अपरिचित देश में प्रवेश करने का साहस किया।

वह मदुरा पहुँचा जिस गजा वीर पाडय छाँकर चला गया था। काफूर न नगर का नूटा जोर मुख्य मस्जिद का नष्ट कर दिया। तदुपरांत वह पूरव म समुन्दत की जोर बना। पम्बान के द्वीप पर स्थित रामेश्वरम पहुँचकर उमन विशाल मन्दिर का ध्वस्त कर दिया उसका स्थान पर एक मस्जिद का निमाण कराया जोर जलाउद्दीन का नाम पर उसका नाम रखा। इन विजया का उपरांत वह १२११ ई म दिल्ली लौट गया जोर अपन साथ अपार नूट का मात्र ल गया जिसम ३२१ हाथी २० ००० घाड तथा २७५० पाड साना सम्मिलित था जिसका मूल्य दस कराड टका था। इसका अतिरिक्त रत्ना का पिठारिया भी मिला। इसमें पहल दिल्ली म इतना लूट का माल बाइ नही लाया था।

### दक्षिण पर अन्तिम आक्रमण

देवगिरि का शकरदेव दशभक्त तथा बमठ शासक था और तुर्कों का प्रभुत्व का जुआ उनार फौज की चिन्ता म रहता था। काफूर का दिल्ली लौट जान का उपरांत उसने नियमित वार्षिक कर नही चलाया। इसलिए १३१५ ई म मुल्तान न शकरदेव को दण्ड देने का लिए भेजा। इस आक्रमण का अय कारण भी था। वारंगल के प्रतापस्वरुव न मुल्तान को लिगा था कि मरी राजधानी दिल्ली बहुत दूर है इसलिए कृपा करके किसी पन्नाधिकार का कर लन का लिए यही भेज दीजिए। काफूर देवगिरि पहुँचा। शकरदेव युद्ध म हारा और मारा गया। देवगिरि स वह गुनवर्गा पहुँचा जोर उस पर अधिकार कर लिया। उसन कृष्णा तथा तुंगभद्रा नदिया का बीच का प्रदेश पर अधिकार कर लिया जोर रायचूर तथा मुगलन म रक्षा-सन्ताने स्थापित की। अय उसन पश्चिम का जोर मुन्बेर ल्भोन तथा चीन का बदरगाहा का हस्तगत कर लिया। इसका बाद उसन वीर बल्लान तृतीय हीयसन का राय पर आक्रमण किया। इन विजया का उपरांत बहुमूल्य नूट का सामान लेकर काफूर दिल्ली का लौट गया।

अय प्रकार दक्षिण की विजय पूरा हा गया और लगभग समस्त दक्षिणी भारत पर दिल्ली का प्रभुत्व स्थापित हा गया किन्तु दक्षिणा भारत का दिल्ली सम्मानन म सम्मिलित नहा किया गया। कवन कुछ महत्वपूर्ण नगरा म रक्षा का लिए तुर्कों मनाएँ रण दी गया।

### मगोलो के आक्रमण उत्तर पश्चिमी सामान्त नीति

जलाउद्दीन का शासनकाल म मगोलो का आक्रमण का कारण अत्यधिक अमानि रण। उनका पञ्जान मुल्तान और सिन्ध का हा नहा बन्कि दिल्ली तथा गंगा यमुना का उपजाऊ प्रदेश तब के लिए सबट उपस्थित हा गया।



स्मरण रगना चाहिए कि गलता की साम्राज्य पर निरंतर हानि वाला मगान आक्रमणों का कारण बलबान पनागा हिन्दू राजाओं का विजय करन की नीति का अनुसरण नहीं कर पाया था। किन्तु अनाउदान बलबान से कहा अभिमान था तथा साहसी था। वह मगानों का मङ्गलतापूर्वक राय सवा जीर साथ ही साथ भारत की साम्राज्य का भीतर आक्रमणकार युद्धों की नाति जारी रख सका। कहा जाता है कि उसने एक दर्जन से अधिक आक्रमणों का विफल किया। मगानों ने उसके शासन का आरम्भ से ही उस कष्ट देना आरम्भ कर लिया था और १०८८ तक यह सदैव विद्यमान रहा। इस प्रकार अलाउद्दीन का बचन सात वर्ष से कुछ अधिक इस मजद से छटकारा रहा।

मगानों का पहला आक्रमण १२६६ ई. में हुआ जबकि अलाउद्दीन का गद्दा पर बैठ कुछ महीने ही हुए थे। अपने अभिन्न मित्र जफरखा को उसने उनके विरुद्ध भेजा। उसने जानघर से निकट आक्रमणकारियों का मुकाबला किया उन्हें भयकर पराजय दी तथा उनका भीषण संहार किया। दूसरा आक्रमण १२६७ ई. में हुआ। इस बार मगानों ने सोनी के किनारे पर अधिकार कर लिया। किन्तु जफरखा ने जिस पर उत्तर पश्चिमी सीमाओं की रक्षा का भार था आक्रमणकारियों का पराजित किया अल्पकालीन घर से उपरान्त किनारे पर पुनः अधिकार कर लिया और मगानों ने उसके १७० अनुयायियों तथा उनकी स्त्रियों और बच्चा सहित बंदा बनाकर दिल्ली भेज दिया। १२६६ ई. में अपने नेता कुतुबुद्दीन खाना की अध्यक्षता में जिसके अधीन दादा राय सेना था मगानों पुनः भारत में आक्रमण करे। इस बार वे नूतन भारत नहीं बल्कि विजय के उद्देश्य से जायें थे। उन्होंने माग से नागा का कष्ट नहीं पहुँचाया और दिल्ली के निकट पहुँचकर घरा डालने की तयारियाँ आरम्भ कर दीं। सुतान से तब यह घोर संकट था। राजधानी की रक्षा के लिए क्या उपाय किया जाय इस सम्बन्ध में उसने अपने मित्र अनाउदान से परामर्श किया। कातिकान ने आक्रमणकारियों पर एकदम हमला करने और उनसे समयानुसार यथाचित व्यवहार करने की सलाह दी किन्तु अनाउदान ने इस सलाह का मानने से इंकार किया और दूसरे किनारे से ही मगानों पर आक्रमण कर दिया। शाही सेना का अग्रगामी दल का नेतृत्व जफरखा ने किया और शत्रु का हराकर उसके निदयतापूर्वक संहार। किन्तु मगानों ने उस सेना के मुख्य भाग से पृथक् करके घरे लिया और मार डाला। फिर भी आक्रमणकारियों का साहस टूट गया और वे अपने देश का भाग गये। जफरखा का वीरता का मगानों सेना पर इतना स्थायी प्रभाव पड़ा कि वे अपने धर्म हुए पाना का पानी पिलाते समय कहते थे कि क्या तुमने जफरखा का दस दिया है जो प्यास बुझाने में डरते हैं। किन्तु अलाउद्दीन का जफरखा जसे पराक्रमी

सनातनायक का तिघन भी अधिक नहीं था क्योंकि यह उम अधिक मन्त्वा काभा हान क कारण सतरनाक समझता था ।

मगाला का चौथा आक्रमण उम समय हुआ जब अलाउद्दीन चित्तौड़ का घरा डान हुए था और उसकी एक मना तलगाना म भारा पराजय भुगत चुका था । एक मगान मना न जिसम १२००० याडा थ अपने नना तागा क नतृत्व म सिन्धी क निकट पहुँचकर मम गाड स्थि । व इतना तार गति स आय थ कि प्राताय सूत्रार अपना सनाए नकर सिन्धी न पहुँच सक । अलाउद्दीन का सारा क दुग म शरण नना पना और वहा वहा दा महान तन धिरा पडा रहा । मगाला न जासपास क प्रश का नूटा और सिन्धी का गतिया तक धाव मार । किन्तु भाग्यवश नान महान क सधप क उपरान्त मगाल वापस चल गय क्याकि उन् नियमपूर्वक घरा डानकर नगरा पर अधिकार करन की कना का अनुभव नहा था ।

विशाल मगान सनाए निविराध सिन्धी तक पहुँच चुका था यह दग्वर अलाउद्दीन न माननन की सीमाआ की रना के लिए मफन उपाय स्थि जिसम मविष्य म राजधानी पर मगाला क आक्रमण न हा सकें । उमन पजाब मुल्तान और सिंध म नय दुगों का निमाण कराया तथा पुराना का मरम्मत कराया । उनका रना क लिए शक्तिशाली सनाए रखी । स्वक अतिरिक्त उमन एक विशय मना नियुक्त की जिसका मुख्य काम सामा की रक्षा करना था । सामान प्रश म एक सूत्रार नियुक्त स्थि जा सामा रना क नाम स प्रसिद्ध हुआ ।

उपयुक्त उपाया क वाचनू चगजला क एक वंशज अलाउद्दीन क नतृत्व म एक मगाल मना न पजाब पर आक्रमण किया और सामा रना का स वचना तथा माग क प्रदेश का जवाना और नूटता हुई अमराहा तक जा पहुँचा । मलिक कापूर तथा गाजी मलिक का आक्रमणकारिया का प्रतिरोध करन क लिए भजा गया उन्ने मगाला का माग म घर स्थि जबकि नू का धन स्थि हुए क वापस जा रहे थ । मगाला की पराजय हुए और उनक मना बन्धी बना स्थि गई । दा सबप्रमुख ननाआ का हाथिया क परा म कुचनर मार गना गया । अ य रानिया का भा वध करक उनका लार्शे भीरा क दुग का दागारा म चिन दी गया । इस घटना क उपरान्त गाजी मलिक नामक अनुभवक सनातनायक का १३०५ ई म पजाब का सूत्रार नियुक्त किया गया । अलाउद्दीन के सम्पूर्ण शासनकाल म उमन मफनतापूर्वक सामाना का रक्षा का । १३०६ ई म मगाला न फिर आक्रमण स्थि । मुल्तान क निकट सिंधु का पार करक व मदक की नीति माग क प्रश का सूटन हुए सिन्धी म का आर भई । गाठा मलिक न मफनतापूर्वक उनक माग का अवगध किया और हमना करक उनम स बहूता का मार डाला । अपने नना कबक क माघ पचास हजार

मगान बन्नी ब्याप गय । उता यध कर रिया गया और उनको म्रिया तथा ब गी रा दागा क रूप म धर रिया गया ।

मगाना का अंतिम जाग्रमण १ ०७ ८ ई म हुआ । उनकी सना का नता र्कबालम नामक एक व्यक्ति था । वह तिथु का पार करके अधिक आग न धर पाया था कि लिखा रा मना न उम पगर हराया जोर माग डाता । एा बडी मर्या म जाग्रमणकारी बन्नी ब्याप र लिखा भज रिय गय जहा उनका वध कर रिया गया । १३०८ ई क बान फिर मगाना न जनाउदान क राय म विधा डानन का साहम नहा किया जोर कुतुबुदान मुबारक क समय तब दश उनक जाग्रमण स मुक्त रहा ।

**अलाउद्दीन क अंतिम दिन तथा मृत्यु**

अलाउद्दीन क अंतिम दिन सकेट तथा निराशा म बान । कतिन परिश्रम तथा अत्यधिक विनासिता क कारण उसका स्वास्थ्य बिगन गया और रण शय्या की शरण रनी पटी । उसका स्त्रा तथा पुत्रा न उसकी तनिक भी चिन्ता नहा का जोर उसक राग न पहन स भी अधिक भीषण रूप धारण कर लिया । रानी न जिसकी पन्न अलाउद्दीन न उपक्षा की था अपना समय मरता म सामान प्रमोद म रिताया जोर उसक सबसे बड पुत्र विजयलॉ का अपन भाग विनास स हा जवकाश नहा मितता था । एसा दशा म निराश सलतान न काफूर का दक्षिण स जोर अजपला का गुजरात स बुनाया तथा अपनी स्त्री जोर पुत्रा क व्यवहार की उनस शिकायत की । जब काफूर न दसा कि सुरतान का अंतिम समय निकट जा पहुँचा है तो उसन अपन प्रतिनिधियों का माग स हटान तथा सिहासन पर स्वय अधिकार करन क लिए पडयत्र रचा । उसन मुलतान का विश्वास दिना रिया कि विजयलॉ रानी तथा अजपलॉ आपक जीवन का अंत करन क लिए बुचत्र रच रह है । एसलिए विजयलॉ का ग्वानियर क किन म जोर रानी का पुरानी दिल्ली म बन्नी बनाकर रख रिया गया आर अजपलॉ का वध कर दिया गया । इन अत्याचारपूण तरीका का परिणाम बहुत बुरा हुआ । अजपलॉ क सनिका ने गुजरात म बिगाह कर दिया । चित्तौड क राणा न मुस्लिम सेना का मार भगाया और अपनी राजधानी पाकर पुन अधिवार कर रिया । दक्कन म शकरदेव के उत्तराधिकारी हरपातक न अपन का स्वतंत्र घोषित करके तुर्की सनाआ का अपन राय क बाहर खण्ड रिया । इन बिगाहा क समाचारा न अलाउद्दीन की दशा और भा अधिक सराव कर दी और २ जनवरी १३१६ ई का उसका मृत्यु हा गया ।

**अलाउद्दीन का मूल्यांकन**

अलाउद्दीन क चरित्र तथा सफलताआ क सम्बन्ध म इतिहासकारा क परस्पर विरोधी मत है । एर्नॉस्टन क अनुसार उसका शासनकाल गौरवपूर्ण

था और जनक मूखतापूण तथा धूर्त नियमा व वावजूत वह एक मफत गामन था और उमन अपना गकिनया का उचित रूप स प्रयाग किया । उमक विपगत वा म म्मिय अन्विस्मिन क निणय वा अनिणय एतर मानता है । उमक मतानुमार तथ्या म यत वान सिद्ध नहा गती कि उमन अपना गकिनया का उपयाग यायपूवक किया तथा उमरा शासन गौरवगानी था । उमका कथन है कि जनाउदान वास्तव म वरर अत्याचारी था उमक हृदय म याय व निग तनिक भी म्यान नहा था और यद्यपि उमक राज्यवान म गुजगत का विजय हृद तथा अनक मफल आत्रमण निय गय फिर भी उमका शासन उज्जापूण था ।

उम वान का सभी स्वाकार वरत है कि अलाउद्दीन अयधिन बीर मनिव तथा मफत मनानायक था । मत्त्वाकाक्षा शक्ति दुःखमनीय माहम तथा माधन मम्पन्नता उमक मौनिक गुण थ । उमम अपन अधीनम्य गागा स अत्यन्त वफा गरी के माय मवा तथा अपन हिता की रक्षा करवान की योग्यता थी । उमक अनिश्चित वह मुयाग्य गामक तथा राजनीतिन था । उसम उच्चकारि की मौनिकता थी । उम अपन पूवाधिकारिया स प्राप्त मस्याजा का कवल मचानन वरन म नीमताप नही होता था वह उनम मुधार वरन वा उच्छुक रहता था । उसन अपन तथा अपन राज्य क लाभ क लिए नया मस्याजा का नी जम लिया । उम शिवा का पहना तुरी मुतान था जिमन एक शक्तिशाली स्थायी मता की गाव गता और उमम विद्यमान प्रजाचार का मूनाच्छेदन किया । उमका भागन वा पहना तुरी मुतान हान कायश प्राप्त है जिमन राजस्व मम्बया नियमा तथा अनियमा म मुधार किया और भूमि-कर निश्चित वरन स पहन भूमि की नाप वरन का परिपाटा जारी की । वशानुगत राजस्व प्रदाधिकारिया तथा माफीगार क विाप अधिकारा को छीनकर राजस्व प्रशासन की अनुसार गागा म द्राति वरन वाता भी वह पहना व्यक्ति था । उमम पूव अथवा उमक वात गन क गम्पूण मध्ययुगीन इतिहास म अय किमा एक व्यक्ति का उदाहरण नही है जिमने बाजार का नियन्त्रण एतनी मफततापूर्वक किया था और जिमका वर व्ययम्या एतनी सुमगतिन रही था । वना पहना पुव विजता था जिमने विद्या पवता व उम और वरम गता । उमन ममम्ल शक्ति भागन का विजय करव उम शिवा क ताज क मम्पुग ननमन्त किया । उम प्रकार उगा उगमम गम्पूण भारतीय उपमहादीप का राजनीतिक एकता प्रदान की । उमन प्रान्त पर कालीय सरवार का पन्न म अधिक कटाग नियन्त्रण स्थापित करव मन्तना म कुल गीमा तक शासन मम्बधी एकता स्थापित की और उम प्रकार वरवन गग आरम्भ निय गय मगता-वाय का पूरा किया । उमम एता बुद्धि और गाम था कि उतमा का उमन राज-वाज म इम्नोप महा वरन लिया और एत घापना की कि राजनीतिन तथा शासन मम्बधी विषया म नीतिर

विपारा को ही प्राधान्य मिलना चाहिए। शिल्पी व सिलासन पर बरने वान उमक सभी पूर्वाधिकारी उस प्रकार की नीति से मबधा अपरिचित थे।

अनाउदीन का हम उस उमक का पटना तुर्की साम्राज्य निर्माता कह सकते हैं। उस शासन की अधीनता में तुर्की साम्राज्यवादी अपनी पगलाप्ला पर पहुँच गया। बलवन मन्त्रि उमक सभी पूर्वाधिकारी उमक थे कि उनमें शिल्पी मन्त्रित की मगाना व मन्त्र जाग्रमणा से रखा करना तथा उमक भीतर आक्रमणकारी नीति का जारी करना इन दोनों कार्यों का माय-माय सम्पादन करने का साहस न था किन्तु उमक उस उमक काम का सफलतापूर्वक पूरा किया। उस मन्त्री शासक की कवन यह सफलता ही पयाप्त है जिसके कारण उमक १३वीं शताब्दी के अपने सभी पूर्वाधिकारियों से कन् उच्च स्थान मिलना चाहिए। इसलिए उमक भारत का पहला तुर्की साम्राज्य कहना मबधा उचित है उससे सम्पूर्ण शासनकाल में देश में पूरा शांति और व्यवस्था रखा। बूट मार का मबधा अन्त कर दिया गया था। चाय पतना बठार था कि चारी और डकनी जिनका पहल देश में वानवाना था अब सुनने को भी न मिलती थी। यानी राजमार्गों पर निश्चित हाकर मान थे और व्यापारी बाग पूरा सुरक्षा के साथ अपना मान बगान के समुद्र से काबुल तक और तबगाना से काश्मीर तक न जा सकते थे।

स्वयं निरन्तर होने हुए भी अनाउदीन विद्या तथा ज्ञान-बलाआ का सरलक था। प्रथम श्रेणी के कवि तथा विद्वान उमके दरबार की शाखा बढ़ाने थे जिनमें जमीर खुसरव तथा अमीर हुसैन देहलवी जसे साहित्यिक रत्न सम्मिलित थे। स्थापत्य में उस विशेष प्रेम था। अनाई दरवाजा नाम की उमकी इमारत जो शिल्पी की कुतुबी मस्जिद का परिवर्द्धित रूप है बला ममता के मतानुसार प्रारम्भिक तुर्की स्थापत्य का सुन्दरतम तथा सर्वोत्कृष्ट नमूना है। उमक मन्त्रि तथा मस्जिद का भी निर्माण कराया जिनमें मीरी का किता तथा हजारमम्मा मन्त्र अधिक उल्लेखनीय है।

किन्तु उमक चरित्र तथा यकितव का दूसरा पहलू भी है। वह पूरा रूप में भना न था। उमक कुछ गम्भीर दोष थे। उमका यकितव जीवन अतिशय स्वाभाविक तथा अस्वाभाविक यानि सम्बन्धी भ्रष्टाचार से दूषित था। वह स्वभाव में ही स्वाधपरायण था और उसके हृदय में तो मन्त्री सम्बन्ध के लिए आदर था और न अपनी मन्तान के लिए प्रेम। उमक देन में वह अधिक कर तथा बबर था। बलवन न कवन उन हिन्दुओं का ही निन्दनापूर्वक मन्त्र किया था जिनमें अपनी रक्षा के हेतु उमका विरोध किया था किन्तु अनाउदीन ने मुमनमाना का भी नहीं छाना। जयन्त माधारण अपराधा के लिए वह अग भग तथा मृत्यु-दण्ड दिया करता था। विद्वानों तथा जय योगी के पापा का

प्रतिशोध वह उनकी निर्णय मंत्रिया और बच्चा से लिया करता था। अनाउद्दीन रक्तपात तथा युद्ध के सिद्धांत का उपासक था। मांस में माधन का अधीनत्व सिद्ध होना है कि सिद्धांत में विश्वास करने के कारण उसकी तुलना जमान राम के अत्यंत विस्माक से की जा सकती है। अचिंत जयवा अनुचित उपाया में अपने उद्देश्य की प्राप्ति के अतिरिक्त उमरा अथवा मिद्धांत न था। वह नितान्त क्रूर और नतिकता में रहित था। कुतुबुद्दीन जाधुनिक ताना उमकी मरणा का नाति कि विरा उस नापी मला उद्देश्य वयाकि उनका मत है कि जिस विश्वासघात और सघात के युग में वह रह रहा था उसमें कुछ भीमा तक युगता का आवश्यकता थी। किंतु इस दृष्टिकोण का उचित रहना बर्तित है। वर्तमान युग अथवा हमारे इतिहास के अथ किसी भी युग की भांति उस समय में भारत की अविशाल जनता भालोभावी तथा निर्णय या और उसमें विरोह की शक्ति का सबया अभाव था। किन्तु यह था कि निर्णय के मुलान विरोधी शासक के अतिरिक्त साधारण जनता का प्रेम जयवा मरभावना प्राप्त करना उनका कभी उद्देश्य नहीं रहा। अनाउद्दीन के काय में सबम वया था यह था कि उनका शासन-व्यवस्था में स्यासित्व का अभाव था वयाकि वह पाण्डित्य बल पर अवलम्बित था न कि जनता का मरभावना पर।

यदि अनाउद्दीन के कायों तथा मरभावनाओं की निष्पक्ष दृष्टिकोण से समीक्षा की जाय तो कहना पडेगा कि निर्णय के मरभावना शासक में हमारा उच्च स्थान है। निर्णय शासन के सम्पूर्ण युग में निर्विवाद वह योग्यतम मुतान था। रचनात्मक प्रतिभा तथा विचारों का विशालता का ध्यान में रखते हुए मुहम्मद तुगलक का मर युग का समा मुल्लान था जिसकी तुलना अनाउद्दीन परवी से की जा सकती है। किंतु मुहम्मद तुगलक का नाशनाग विपननाओं का सामना करना था जबकि अनाउद्दीन को अपनी प्रत्येक योजना में सफलता मिली।

कुतुबुद्दीन मुबारक (१२१६-१२००)

सिद्दासनारोहण

मरिच काफूर के प्रभाव के कारण अनाउद्दीन ने अपने भव्य बड़े पुत्र सिद्दासों का उत्तराधिकार में अचिंत करके अपने अल्पवयस्क पुत्र गिनातुद्दीन मर का उत्तराधिकारी नियुक्त किया था। मुतान की मृत्यु के उपरान्त मर का पुत्र के वाक के काफूर ने सिद्दासन पर विराया जोर स्वयं अतिभावक के रूप में राज्य का वास्तविक शासक बन गया। सिद्दासों तथा उनके छोटे भाई गिनातुद्दीन का उमर अथा करता दिया। मर का काफूर ने अनाउद्दीन की विधवा से विवाह करके उसके मर जब उद्देश्य तथा सम्पत्ति की लाला और मर कारागार में दान दिया। अनाउद्दीन के तीसरे पुत्र

की हत्या करवायी थी या अनाउद्दीन जीर सम्भवतः बनचन न भी ऐसा ही किया था। दयनीय बात तो यह है कि मध्ययुगीन भारत के आधुनिक लखना ने भी बरनी द्वारा की गयी खुसरो की उमर बटु निष्ठा का स्वीकार कर लिया है जिम्बवा परवर्ती सत्ता का न अनुकरण किया है।

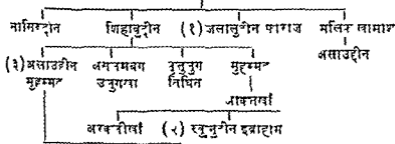
**खलजो-व्यवस्था की दुःखसताएँ**

जिस साम्राज्य का अनाउद्दीन ने निर्माण किया था वह दुबल नींव पर अवलम्बित था इसलिए अपने संस्थापक के उपरांत अधिक जितना तक नष्ट टिक सका। उसकी अंतिम विफलता के कारणों का ममल्ल सकना अधिक कठिन नहीं है। जिन तत्त्वों ने उसके निर्माण में योग दिया था उनमें से कुछ ऐसे थे जो अन्ततः उसकी सुदृढ़ता एवं स्थायित्व के लिए घातक सिद्ध हुए जोर का नाश करने में उसके पतन के लिए जिम्मेवार बन। सम्पूर्ण व्यवस्था मुल्तान की प्रतिभा पर निर्भर थी जोर व्यक्तिगत प्रतिभा सीमित होती है। अलाउद्दीन प्रतिभाशाली था किंतु उसमें मानवीय गुणों का अभाव था। अवस्था के बदलने के साथ उसमें परिश्रम करने तथा धकावट का सहन करने की योग्यता कम जाती गयी। वह विश्राम प्रिय हो गया जोर अपने अधीनस्थ पदाधिकारियों के कामों का निरीक्षण करने की उसमें क्षमता नहीं रही परिणामस्वरूप यह कुप्रबंध करने योग्य और उसके मृत्यु से पहले ही विद्रोह हान लग। दूसरे खलजो साम्राज्यवादी सैनिक बल पर आधारित था जनता की अनुमति पर नहीं। शक्ति के उपासकों में अत्याचारी हान की प्रवृत्ति अधिक बलवती हो जाती है और वे जन हित की चिन्ता न करके यश के पीछे दौड़ने लगते हैं। अनाउद्दीन के साम्राज्य में भी यही नियम चरितार्थ हुआ और समय की गति के साथ उसका शासन भी दिन प्रतिदिन अधिक अप्रिय होता गया। तुर्कों अमार जिन्हें शक्ति और प्रतिष्ठा से वंचित कर लिया गया था उससे नाराज हो गए। हिंदू सामंती का भी वे प्रतिबंध तथा अपमान असह्य हो रहे थे जो उन पर थापे गये थे। नये मुसलमान कह जाने वाले लोगों ने उसके विरुद्ध निरंतर पड़ोस और कुचक्र रचे। वे अमीर भी अप्रसन्न हो गए जिनके हाथों में कुछ शक्ति जोर प्रतिष्ठा थी क्योंकि निम्न कुलोत्पन्न व्यक्तियों का पद तथा सम्मान देकर उनके समक्ष कर लिया गया था। गुप्तचर विभाग की कठोरता के कारण उच्च तथा मध्य वर्गों के लोगों की राय के प्रति सहानुभूति जाती रहा। व्यापारी तथा दूकानदार बाजार के कठिन नियंत्रण के कारण असंतुष्ट थे। इस प्रकार जनता के सभी वर्ग निरक्षुण शासन से तंग आ गये थे और उससे उलटने के अवसर की प्रतीक्षा कर रहे थे। अनाउद्दीन ने अपना व्यवस्था का स्थायित्व प्रदान करने के लिए अपने पुत्रों तथा उत्तराधिकारियों को उचित शिक्षा नहीं दी। विद्वानों तथा उसके भाई दुबल निबले और इन्सि

मुग़ा म त्रिप्त रहने के कारण अपने पिता द्वारा निर्मित साम्राज्य का अक्षुण्ण रूप में बचाव नहीं था। जनता के सीमांत में अनाउद्दीन के प्रिय मलिक काफ़ूर ने जिसका दरबार में प्रभुत्व था उसका परिवार के सदस्यों में द्वेष उत्पन्न कर दिया और राजवंश में फूट उत्पन्न कर दी। राजकाय मत्ता के दुबल हाथों में महत्वाकांक्षी व्यक्ति का विनाश करने का अवसर मिल गया। अश्लेष राजस्थान तथा साम्राज्य के अन्य भागों में विद्रोह हुए। यद्यपि अनाउद्दीन के उत्तराधिकारी का बग़ावत के अन्त में मरने में सफलता मिली किन्तु जनता का प्रसन्न करने के लिए उस अपने पिता के समय के अनक अश्लेष नियमों का रद्द करना पड़ा और चार वर्ष उपरान्त जब उसकी मृत्यु कर दी गयी तो सम्पूर्ण व्यवस्था क्षण भर में धराशायी हो गया।

वशावली वक्ष सलजी वंश

यादृशशाही



विजयता गालीगी (५) बुलुनुद्दीन मुबारक (६) शिहाबुद्दीन उमर

(६) नामिस्वीन सुमरव (मुबारक का मत्ता)  
 [गियामुद्दीन तुग़तक द्वारा अलग किया गया]

BOOKS FOR FURTHER READING

- 1 BANARSI ZIA UD DIN Tarikh-i-Istozabahi
- 2 ELLIOT & DOWSON History of India etc Vol III
- 3 WARRI History of Ala ud din
- 4 HAIC WOOLSELEY Cambridge History of India Vol III
- 5 KHUSRAV AMIR Khazain ul Iutuh (मुहम्मद हबाब द्वारा अनुवाहित)
- 6 LAL, K S History of the Khaljis



## तुगलक नश

गियासुद्दीन तुगलकशाह (१२२०-१३२५ ई.)

### प्रारम्भिक जीवन

गाजी तुगलक का जन्म एक निम्न कुल में हुआ था। उसका पिता बलबन का एक तुर्की गुलाम था और माना पजाब की एक जाटनी। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने अपना जीवन एक साधारण सैनिक के रूप में प्रारम्भ किया था किन्तु बलबल अपना धारणा तथा परिश्रम के कारण वह महत्त्वपूर्ण पद पर पहुँच गया। १३०५ ई. में वह पजाब का सूभार नियुक्त हुआ और पिलातपुर उसका राजधाना था। उस मंगोलों के आक्रमण के विरुद्ध उत्तर पश्चिमी सीमाजा के रक्षा के भार सापा गया था। कहा जाता है कि उसने उनसे धार आक्रमणवारियाँ से टक्कर ना जीर उह पराजित किया। इसीलिए वह मलिक उल गाजी के नाम से विख्यात हुआ। अलाउद्दीन के शासनकाल के अन्तिम दिना में उसकी गणना राज्य के गिन चन शक्तिशाली अमारों में हीन गयी। कुतुबुद्दीन मुबारकशाह के शासनकाल में वह जपन पद पर पूर्ववत् कायम रहा। सिंहासन पर बैठने के समय खुमरव ने भी उस प्रसन्न करने का प्रयत्न किया और पजाब के सूभदार के पद पर स्थायी कर दिया किन्तु वह तथा उसका पुत्र जूनान्वा अत्यधिक महत्त्वाकांक्षी थे। महत्त्वाकांक्षा तथा १ वा शताब्दी के तुर्कों की सी अपनी जातीय और धार्मिक कट्टरता से अनुप्राणित होकर उसने खुसरव के विरुद्ध विद्रोह सगठित किया और अन्त में उस हारकर मार डाला। तदुपरान्त एक विजता के रूप में उसने दिल्ली में प्रवेश किया। कहा जाता है कि उसने इस बात की जाँच करवायी कि अलाउद्दीन के वंश का काल यकित जीवित ता नहा है जिस में दिल्ली के सिंहासन पर विठला द। यह कहना तो कठिन है कि उसने यह जाँच करवायी से करवाया थी अथवा जनता का सहानुभूति प्राप्त करने के लिए यह कृत्य किया था। कुछ भी हो प सितम्बर १२०८ का वह गियासुद्दीन तुगलकशाह गाजा के नाम से सिंहासन पर बैठा। वह दिल्ली का पहला मुल्तान था जिसने अपने नाम के साथ गाजी (काफिरा के वध करने वाला) शब्द जोड़ा।

गद्द-नीति

अमीरा तथा जनता का प्रसन्न करना सुल्तान का पहला नाय था । वह शूद्र तुर्कों नस्ल का था इसलिये बच हुए तुर्कों अमीरा तथा पत्राधिकारिया पर अपना सत्ता कामम करने म उस अधिक कठिनाई नही हुई । उसने उन खलजी लखिया व विवाह का प्रबन्ध किया जा अपा वग की पराजय व वाच बच रहा था । एक कुशन राजनीतिन की भाति उसने मुमग्व का ममथन करन वान अमीरा व विरुद्ध काइ कायवाहा नही का और उह अपन पत्नी पर स्थापा कर लिया । पूव सुल्तान व बहुर पत्नीपानिया व साथ उसने कठोर बरताव किया जोर उनक पद तथा जागीर छीन ला । जिन नागा की भूमि अलाउद्दीन खलजी न छीन नी थी उह वह फिर वापस द ददा गया । उसने उस राज काय का पुत्र प्राप्त करन का प्रयत्न किया जिस सुमरख न जुटा लिया था अथवा जिस उसक पराभव व बाद अवस्था व जिना म नूट लिया गया था । किन्तु इस सम्बन्ध म उसने उन नागा व कठिन विराध का सामना करना पत्ता जिह उसक (राजकाय व) अपायनापूर्ण विवरण स अधिन लाभ हुआ था । सुसरख न लिननी व प्रभुय शरया का भारा रकम द टाली था उनम स कुछ न उह लीटा दिया किन्तु शरय निजामुद्दीन जोरिया न जिस पीव लाग न्वा प्राप्त न्वा थ नौदान म नकार कर लिया और कहा कि मैंन यह धन नान कर लिया है । हम पर सुल्तान का अत्यधिक शक जाया किन्तु वह विवश था क्योंकि शरा धार्मिक यमिन था और जनता व सभी वर्गों म सवप्रिय था । गियामुद्दीन न यह बहुर उस अपराधा मिद्ध करन का प्रयत्न किया कि वह हर्षोमात्पूण गीत गाता तथा फकीरा की भाति नाचता ह । बहुर सुभा नाम भक्ति व इस रूप का धम विरुद्ध मानत थ किन्तु सुल्तान का अपनी इस नीति म सफलता ननी मिना क्योंकि जिन १२ धर्माधिकारिया स इस सम्बन्ध म उसने सलाह ला उहान भक्ति व इस रूप का अनुचित नही टरामा । दूसरे लाग व विषय म उसही नीति सफल हुई जोर सुसरख शाह द्वारा नुदाय गय बहुर-स धन का उसने पुन प्राप्त कर लिया ।

गियामुद्दीन न कृषि का प्रान्नाहन दन तथा क्रिमाना व हितो की रक्षा करन की नीति का अनुसरण किया । उसने आना जारा की कि नीवान विजारत का एक बय म किसी इतना व राजस्व म १/१० और १/१० म अधिन वृद्धि नहा करना चाहिए । उसकी हित्यमन थी कि बगौती धीर धार बई यर्षों म का जानी चाहिए । राजस्व भूमि की नाय करन व उपरात निर्धारित नहा क्रिया जाना था जया कि जयादान व ममय म नियम था । उसने भूमि की पत्तान करान का परिणामा त्याग नी क्याकि अपमरा व हाय म काम गहन व कारण उसका मन्नापत्रनक काम नहा हाना था और उसक लिए अनक विायता की

राजस्व का प्रयोग भी। राजस्व का प्रयोग पर मुद्रा का आना निश्चयी विभूमि कर का प्रयोग का स्वयं विचारित करना था। इसका तात्पर्य था पुराना बगई और माल की प्रथा का पुनः प्रथमिक करना। राजस्व वसूल करने का नया विचार था। मसूमा की दुर्लभ पर कमीशन नही दिया जाता था बल्कि १०० भूमि दानी जाती थी जिसे पर विमा प्रसार का प्रयोग नहीं लगता था। इसका अर्थित उ। विमा का प्रयोग का शक्य वसूल करने का भा जाता था। उग विषय म भा गियासुद्दीन न असाउदीन की वपानिक प्रथा का त्याग किया और उग पुरानी व्यवस्था की पुनः स्थापना का जा चलजी शान्त स पर प्रथमिक था। उग उपरान्त उमन कृषि क क्षेत्र को वपान क लिए विषय था। उगका विषय था कि राज्य का मांग अत्यधिक बढान स विमा निराम हापर विचार का पर वाध्य हा जात हैं। उमलिए राजस्व बढान का मर्तोम उपाय लगान म बढोता करना नहा बल्कि कृषि क क्षेत्र का विस्तृत करना है। इस नाति क परिणाम अत्य हा। बहुत सी बजर भूमि का कृषि क योग्य बनाया गया और कृषि क क्षेत्र म वृद्धि हुई। अनक ऊजड गाव पिर घग गय। मिचार्क क विण नहरें खानी गयी और वाग लगाय गय।

राजस्व व्यवस्था म सुधार करने क उपरान्त गियासुद्दीन न मातामात क माधना म उपनि करने का प्रयत्न किया। सार्के साफ करवायी गया तथा जनता का मुक्ति क लिए जिना पुला और नहरा का निमाण कराया गया। याना यान व्यवस्था का ममुन्नत बनान और विशपकर स्मरणातीत समय स चली आयी डाक-व्यवस्था का पूण रूप म सुसगठित करने का प्रय गियासुद्दीन का है। उसक समय म तथा उसक बहुत पहल भी हरवार तथा घुडसवार समाचार ल जाया करने क आ राज्य भर म कु मीन का दूरी पर नियुक्त किय जाते थ। पहल क सान अधवा आठ मीन की दूरी पर रहते थ। समाचार सौ मीन प्रति दिन (१२ घण्ट) की रपनार स चलते थ।

कुतुबुद्दीन मुबारक तथा सुसख क दुबल शासन म याय विभाग भा अस्तव्यस्त हो गया था गियासुद्दीन न उसम भी सुधार किया। राजकीय ऋण वसूल करने के लिए शारीरक यातनाए दन की प्रथा का उसन बंद कर दिया किन्तु चोरो राजस्व न देने वाला और राजकीय धन का गवन करने वाला के लिए यह दण्ड विधान प्रववत जारी रहा।

हिन्दुओं के प्रति गियासुद्दीन का व्यवहार प्रशस्तनीय नही था। जनाउद्दीन न उन पर जो प्रतिबंध लगाय थे उनम से कुछ को उसन कायम रखा। उसन नियम जारा किया कि हिन्दुओं को धन एकत्र करने की आज्ञा नही होनी चाहिए। उमीलिए उनके पास अपने परिश्रम की कमाई मे स केवल जनता ही छाडा जाता था जो उनके सामान्य सुख स रहने के लिए पयाप्त था।

शियासुद्दीन बरनी लिखता है कि मुल्तान न हिन्दुओं पर अधिक कर इम्निए नहा लगाया कि वह उन्हें निराश हाकर अपनी भूमि तथा यवमाय छांकर भागन पर बा य नहा करना चाहता था । उसक शासनकाल म दश की बहुत सभ्यक जनता मुखी नहा थी ।

अपन तिजी जावन म गियासुद्दीन कट्टर सुना मुमलमान था । अपन धर्म क नियमा म उस आस्था थी और उनका वह बड़ी भावधानी म दानन करता था । वह मनानती इस्लाम क पापक क रूप म सिंहासन पर बठा था म्मलिन उमक लिए धर्मांध मुसलमान जमा आचरण करना स्वाभाविक ही था । उसन शराब क बन्दन तथा बिक्री पर प्रतिबंध लगाया और मुस्लिम जनता पर क्यारता स इस्लाम क नियमा को लागू करन का प्रयत्न किया । कदाचित अय धमावलम्बिया पर उसन धर्म क नाम पर अधिक अत्याचार नही किया किन्तु अपनी मतिन यात्राजा क समय उसन मूनिया तथा मन्त्रि का अवश्य विध्वंस किया ।

### विदेश नीति

#### वारगल पर आक्रमण

शियासुद्दीन तुगलक एक महान् साम्राज्यवाणी था । सुसरव क शासनकाल म जिन राजा न दिल्ली प्रभुत्व स अपन का मुक्त कर दिया था उनका पुन स्मन करना गियासुद्दीन की विदेश-नीति का मुख्य उद्देश्य था । किन्तु उस उनकी पुनर्बिजय स ही सत्ताप न था । वह उन्हें जीतकर सीधे दिल्ली क शासन क अन्तगन लाना चाहता था । वारगल क राजा प्रतापरुद्रेव स दिल्ली स सम्बंध विच्छेद कर लिया था । १३२१ ई म सुल्तान न अपन पुत्र जूनालों का क्रिम अय उतुगलौ की उपाधि मिल चुकी थी उसका स्मन करन क लिए भेजा । उतुगलौ न वारगल का घरकर राजा का इतना परेशान किया कि उम बाध्य हाकर संधि की बातचीत करनी पडी । उतुगलौ बिना किसी शत क उसका आत्ममर्षण चाहता था इसनिए उसन संधि प्रस्ताव का अम्बीकार कर लिया । तब प्रतापरुद्रेव न त्रिगशाजनित साहस क आवश म जाकर धरा शानत वाला क यातायात क माग बाट दिम जिसक परिणामस्वरूप दिल्ली स सभाकार मिनना बन्द हा गया और यह अफवाज फल गयी कि दिल्ली म गियासुद्दीन की मृत्यु हा गया है । दमिश्क क शकजाता कवि उवल आनि अपन मित्रा का मलाह म शाहजादा न धरा उठा दिया और मिहामन पर अधिकार करन क हत समय पर पहुँचन क लिए दिल्ली का प्रस्थान कर लिया । तलगाना क राजा तथा प्रजा न भी माग म उस बहुत कष्ट पहुँचाय । इम प्रकार शाहजादा का स्मरण पर प्रथम जाग्रमण विफल रहा ।

गिर गया जगम शाहजादे का काई हाथ गया। इसका विपरीत ही ईश्वरी प्रसाद तथा सुख के देव का मत है कि यह सब शाहजादा का मावधानी में रहे यह एक पदपत्र का परिणाम था। दूसरा मत गरी प्रतीत होता है क्योंकि यह प्रसिद्ध अफीरी यात्री काबूल का वचन पर अत्यन्त प्रिय है और इन्तवतूता का यह सूत्रा का अनुवृत्ति में मिली थी जो उमर समय में म उपस्थित था किन्तु अमारा व सामन पर व निग हाथिया के नाथ जान म पत्र व शाहजादा जूनारों व वचन म नमाज पढ़न चना गया था।

गिहामन पर बटा व समय गियामुद्दीन तुगलक एक अनुभवी सनिक तथा गुनजा हुआ गानायन था। वह स्वामिभक्त पदाधिकारी तथा सफर सीमा ग्धन की हैगियत म भी स्याति प्राप्त कर चका था। उमम व सभी गुण विद्यमान थे जो एक शासक में हान चाहिए। उमन राज्य म शांति तथा व्यवस्था कायम की और चोरी डकती तथा नूटमार का अन्त किया। अपनी उदार नीति का उमन पुरान अमीरा को प्रसन्न कर लिया और सुसरव व द्विनिमित्त समथका का अपन पत्र म कर लिया। वह दिल्ली का पहला सुल्तान था जिमन कृपरा का स्थिति व सम्बन्ध म सही दृष्टिकोण अपनाया। उमका विश्वास था कि राज्य की समृद्धि कृपका का भर्त्सा पर निर्भर होती है। इसी लिए उमन आजा जारी की कि राजस्व-पदाधिकारियों को भूमि-कर की दर म बढ़ोती न करके कृषि व क्षेत्र का बतान का प्रयत्न करना चाहिए। राजस्व विभाग के मुकद्दम गुन चौधरी आदि पदाधिकारियों के सम्बन्ध म उसने बीच का माग अपनाया। यही कारण था कि उसका शासनकाल म कुछ सीमा तक जनता की भौतिक समृद्धि हुई।

राज्य शासन व सम्बन्ध म भी तुगलकशाह मावधान था। वह दिन म सुबह शाम का वार दरवार किया करता था और उमने सल्लनत की प्रतिष्ठा का कायम रखने का भी प्रयत्न किया। वह सनिक प्रभुत्व की नीति म विश्वास करता था। कुछ आधुनिक लेखकों ने उस उदार तथा दयालु शासक कहा है किन्तु यह उसके चरित्र का सही मूल्यांकन नहीं है। वह अपने दरबारियों तथा पुरान मित्रों और सहयोगियों के प्रति उदार और दयालु था तथा सिंघामन पर बठन व उपरान भी उनके प्रति उसका व्यवहार म कोई परिवर्तन नहीं हुआ। किन्तु साधारण जनता विशेषकर हिन्दुओं के प्रति उसका व्यवहार बहुत बठोर था। अपन हिन्दू पदाधिकारियों के विरुद्ध उमन जाग्रमणकारी युद्ध-नीति का अनुसरण किया।

गियामुद्दीन ने सनिक सगठन की ओर विशेष ध्यान दिया। सनिक मशीन को उमने उचित रूप म रखने का प्रयत्न किया तथा सिपाहियों की हलिया रखने और घोडा को दागने आदि अलाउद्दीन के सुधारों का भी पूर्ववत् कायम

गया। वह कट्टर सुन्नी मुसलमान था यद्यपि अपना बहुसंख्यक प्रजा के धर्म के प्रति उम महानुभूति नहीं थी।

गियामुद्दीन को एमारता का बड़ा शौक था। अपने शासन के प्रारम्भ में ही उसने एक विशाल दुर्ग की नींव डाली जो तुगलकगढ़ के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उसके घरे के भीतर उसने अपने महल तथा जय मारुत बनवायी। मरुत मरुत महल सुनहरी ईटा का बना हुआ था जो धूप में इतनी तेजी से बमकती थी कि उन पर किसी की दृष्टि नहीं टिक सकती थी। उन्नतवर्तता सिधना है कि सुल्तान के कोप-गृह में एक होज था जिसमें पिघना हुआ साना उड़ने दिया गया था और उसकी एक ठोम शिना बन गयी थी। सुल्तान बिया का सरभक था और अनेक कवि तथा विद्वान उसके दरवार में जाशय पात थे।

### मुहम्मद बिन तुगलक (१३२५-१३५१ ई.)

#### प्रारम्भिक जीवन

एक मीमान शासक का सबसे बड़ा पुत्र होने के नाते फयरहीन मुहम्मद जूनारों का पालन-पोषण एक सनिक का भाति हुआ था। माल्यवान में ही उसने एम पक्ष में ब्याति प्राप्त कर ली होगी। युवावस्था में उसने एक विद्वान के रूप में अपनी याग्यता का परिचय दिया जिससे स्पष्ट है कि बचपन में उसने अपनी ही साहित्यिक शिक्षा दी गयी होगी और वह एक अमान प्रौढ बालक रहा होगा। मुसरवशाह के शासनकाल में घोरा के अध्यक्ष के रूप में उसने एमना महत्वपूर्ण पद धारण किया। वह अत्यधिक महत्वाकांक्षी युवक था और समझता था कि इल्ही का मिहामन प्राप्त करना सम्भव है। अपने इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उसने अपने मरक्षक मुसरव के विरुद्ध जिम्ने उस प्रमत्त करने का प्रयत्न किया था एक आन्दोलन मडा किया। एमा प्रतीत होता है कि राजा तुगलक ने अपने अधिन बनुत तथा महत्वाकांक्षी पुत्र की मनाह तथा उमके द्वारा आरम्भ की हुई याजना के अनुसार ही काय किया था। १३२० ई. में अपने पिता के सुल्तान हा जान पर जूनारों का मुअयसर मिला। उस युवराज धारित किया गया तथा उतुगलक का उपाधि प्रदान की गयी। १३२१ ई. में उमने वारगन पर चणई की जिममें उस कद विफतना मुगलनी पला। एम वष उपरान्त पुन उम प्रतापरणव का दमन करने के लिए मत्रा गया। एम वार उम वारगन के राजा को पराजित करने तथा चणई बनाकर मान में मपनता मिली। १३५१ ई. में प्रारम्भ में उमने अपने पिता का वध करवा दिया क्योंकि सम्भवत वह अधिन प्रतीगा न करके ममय में पला एम अपने उद्देश्य की पूर्ति करना चाहता था। एम वार वष पहन एमने अपने पिता की मृत्यु की अपवाह में विश्वास करने अपना राज्याभिषेक लयलम

नीटो की आगा न थी। तब ही मुगल हुकूमत की नींव रखी गई। दिल्ली के राजा आगिा न थी म ही मुगल हुकूमत की नींव रखी और अनेक वर्षों तक अपनी मजदूरी और यश के प्राप्ति करती चली गयी।

साकेतिक मुद्रा का प्रयोग (१३२६-१३३० ई.)

भारतीय मुद्रा का इतिहास में मुहम्मद तुगलक का शासन का महत्वपूर्ण स्थान है। उस मुद्रा का नाम था कागजा का मुद्रा मया है। उसने सम्पूर्ण मुद्रा प्रणाली में सुधार किया चतुर्थ भागुआ व आपसित मूल्य निश्चित किया और आग प्रवार के नये मितने जारी किया। इन मिकका म म अनक कनापूण जिजादना तथा चनायत के लिए प्रगिद्ध था। साकेतिक मुद्रा का जारी करना नम धन में उमका मयम अधिा महत्वपूर्ण प्रयोग था। पीतन तथा तावे के मितने बनाने व अनक वारण था। प्रथम राजकाप में बहुमूल्य धातुआ का अभाव था कयाकि मुद्रा रिपोना और मर्चनि शासन सम्बन्धी प्रयोगा के कारण वह मानी नो चका था। दूसरे दुर्भिक्ष तथा नोआव म फठोर करनीति के कारण मुल्तान की जाय म वस्त कमी हो गयी थी। तीसरे भारत के दूरस्थ प्रांता तथा कुछ शाह्य देशा को जीतने के उद्देश्य में वह अपन राजस्व म वडि करना चाहता था। चौथे मुहम्मद को नये प्रयोगा का बहुत शौर था और व भारतीय मुद्रा का इतिहास में एक नया अध्याय प्रारम्भ करना चाहता था। पाँचवें नम विषय में उसे चीनी तथा ईरानी शासकों से प्रेरणा मिली थी जिन्होंने १३वीं शताब्दी में अपने देशों में साकेतिक मुद्रा जारी की थी।

उपरोक्त कारणों से मुहम्मद ने एक अध्यादेश जारी किया जिसके अनुसार ताँबे के सिक्कों को कानूनी मुद्रा घोषित कर लिया गया और मूल्य की दृष्टि से उन्हें सोने तथा चाँदी के समकक्ष रख लिया गया। उसने आदेश दिया कि लोग सभी व्यवहारों में इन सिक्कों का सोने चाँदी के सिक्कों की भाँति प्रयोग करें। तब उसने टकसान पर राज्य का एकाधिकार कायम रखने के लिए कोई उपाय नहीं किया। उन दिनों राजकीय व्यवसाय में लगे हुए सिक्के बावट जिजादना आदि की दृष्टि से ऐसे नहीं माने जाते थे कि साधारण लोग सरकारी से उतका अनुकरण न कर सकें। मुल्तान में जारी सिक्कों के चलने को रोकने का प्रयत्न नहीं किया मसलण गर सरकारी लोग भी तावे व सिक्के बनाने लगे। एक कट्टर मुसलमान की भाषा में बरती कहता है कि प्रत्येक हिंदू का घर टकसाल धन गया था। यह विश्वास करने का कोई कारण नहीं है कि जिस प्रभाव में हिंदू फस गये थे उससे मुसलमान बच सके हाँ। नागा ने सोने और चाँदी के सिक्कों को लिपाकर रखना प्रारम्भ कर लिया और राज-कर नये सिक्कों के रूप में देन लग। विदेशी व्यापारी दश में भारतीय वस्तुओं को खरीदते समय साकेतिक मुद्रा का प्रयोग किया करते थे तब

अपना भाग बचत समय नय सिक्का का स्वाकार नही करते थे। "यापार चीपट हा गया। हर प्रकार के कारखाने में राधाए पन्त लगा और मान तथा चाँदी के सिक्के दुर्लभ हो गए। परिणाम यह हुआ कि चारा चार भयंकर अव्यवस्था पत्र गयी और सुल्तान अपनी याजना का अपना आँखा के सामने हा चयनाचूर हान देकर धक्का गया। उस साबनिक मुद्रा का वापस पत्र का वाय हाना पना। अन्त आना निकाली कि लाग राज वाप स पातल और ताँबे के सिक्का के अन्त में मान और चाँदी के सिक्के त जाय। इस प्रकार गर-मरकारा लाग न राय का ठगा और उसका हानि पट्टीचाकर अघाधुच धन कमा लिया।

सुल्तान का इस याजना की विफलता का कारण जनता का पिछलापन पभाव और अनान नही था यद्यपि वह इस सुधार के महत्त्व का न समझ गया। वास्तव में सुल्तान गर मरकारो व्यक्तिगत द्वारा जाला सिक्का के बनन तथा वाजार में उनके चलन का राकन में सफल न हो सका इसालिए उस पम याजना के सम्बन्ध में भयंकर निगणा का सामना करना पडा। सुल्तान की यह भूत थी कि वह अपन युग का परिस्थितिमा तथा कमिया का न समझ सका। अन्तिए याजना का विफलता का मुख्य उत्तरदायित्व उसी पर था।

धार्मिक नीति

अपन पूर्वाधिकार जसाउद्दान खलजा के उठाहरण का सामने रखकर मुहम्मद तुगलक ने शरा का उपशा का आर बुद्धि का राजनानिक जाचरण का आधार बनाने का प्रयत्न किया। उसने निश्चय किया कि राजनानिक तथा शासन सम्बन्धी विषया में लौकिक विचारा का ही प्राधान्य हाना चाहिए। इस कारण उनका उलमा से सघप हो गया जिन्होंने जसाउद्दीन के शासनमान का छन्दर सन्व राय की नाति का प्रभावित किया था। किन्तु वास्तव में सुल्तान शरा का चुनौती नही देना चाहता था। वह सभी महत्त्वपूर्ण विषया में उलमा से परामर्श किया करता था यद्यपि उसका सन्नाह का स्वाकार तथा करता था जब वह बुद्धिमगत तथा अवसर विनाय के अनुकूल हाना थी। "याय शासन में उनका का एकाधिकार था दगा उद् सुल्तान ने बचिन कर लिया। जब कभी बाजिया का निणय उस दापपूर्ण प्रनात हाना वह उम नोटा देता था। उनका के अनिश्चित कुछ अय सागा का ना उमने "याय सम्बन्धी पना पर निरुक्त किया। यदि उनका के विरुद्ध अगावन राजद्रोह अथवा धार्मिक सम्घात्रा के घन का सुबन करन का अपराध सिद्ध हो जाता तो वह उद् कठार पण्ड होता था। शय और गय का नून के प्रभाव से मुक्त न थे। अन्त नाति का परिणाम यह आ कि राजनानिक तथा शासन सम्बन्धी विषया में उनका के प्रभुत्व का अन्त हो गया। किन्तु इस कारण सुल्तान का मुस्लिम धर्माधिकारिया के वाप का भाजन बनना पडा।



बसयन की भाँति मुहम्मद भी विश्वास करता था कि मुत्तान ईश्वर का छाया है। उमर सिकका पर जल मुत्तान जिस्मी अ साह (ईश्वर का छाया मुत्तान) चुना रहता था। अपन मिक्का द्वारा उमर जनता का मुत्तान क प्रताप का महत्व समझाना का प्रयत्न किया। उमर कुछ मिक्का पर इस प्रकार क छंद मितन है प्रभुत्व का अधिकारी प्रत्येक व्यक्ति नहीं जाता वह तो चुन हुए व्यक्ति को प्रताप दिया जाता है जो मुत्तान का जाया का पावन करता है वह मक्क रूप म ईश्वर की आभा मानता है मुत्तान ईश्वर की छाया है ईश्वर मुत्तान का समर्थक है आदि। हर प्रकार स उसन खलीफा क नाम का उल्लेख करना बर्न कर दिया यद्यपि उमर स्वयं खलीफा का उपाधि नहीं धारण की।

अपनी मायप्रियता उदारता तथा व्यक्तिगत यात्रना क बावजूद मुत्तान तिन प्रतिनिधि जनता म अप्रिय हाता गया। उमर साचा कि मैन मुस्लिम शरा की उपशा की है सम्भवत यही जनता क अमत्ताप का कारण है। इसलिए अपन शासनकाल क अन्तिम तिन म उसन खलीफा क प्रति अपना नीति बर्न दी। उसन मिल्क क खलीफा स अपन पद क लिए मायना प्राप्त करने हेतु प्रार्थना का। उसन सिकका म स अपना नाम ह्वाकर उसक स्थान पर खलीफा का नाम चुनवाया। समस्त राजानाए मुत्तान क नयी बर्न खलीफा क नाम स जारी का। १२४० ई म उसन मिल्क क खलीफा के बशर गियामुद्दीन मुहम्मद का जिसकी स्थिति एक भिखारी की सी थी आमन्त्रित किया उसक प्रति जत्यधिक नम्रता और सम्मान का व्यवहार किया तथा बहुमूल्य वस्तुए उस भेंटस्वरूप अर्पित का। किन्तु इनका करन पर भी मुहम्मद अपनी खापी हुई नोकप्रियता की पुन स्थापना न कर सका इसस उस बहुत चिन्ता हुई किन्तु विवश था।

प्रकृति स ही मुहम्मद का स्वभाव उदार तथा दृष्टिकाण विस्तृत था। अपनी बहुसह्यक प्रजा क धर्म क प्रति उसका व्यवहार असहिष्णुतापूर्ण नहीं था उसन कुछ हिन्दुआ का भी महत्त्वपूर्ण पदों पर नियुक्त किया। तत्कालीन मुस्लिम इतिहासकारों न लिखना क सिंहासन पर बठन वाल मुहम्मद क पूर्वाधिकारियों की उनकी हिन्दुआ क प्रति धार्मिक अत्याचार की नीति क लिए मुक्त-कण्ठ स प्रशंसा की है। उन्होंने गर मुसलमाना क प्रति इस नीति के सम्बन्ध म कुछ भी नहीं कहा है केवल उस उसकी उदारता क लिए दापी ठहराया है।

### विदेश नीति

पुरासान विजय की योजना

मुहम्मद तुगलक भी अनाउद्दीन की भाँति भारत की सीमाओं क बाहर क देशों का जीतने की महत्वाकांक्षा रखता था। अपन शासनकाल के प्रारम्भ म

हा उमर खुरामान एगक तथा टाम आक्मियाना का जीवन का याजना बनाया। इस याजना का कारण यह था कि कुछ खुरामाना अमार मुल्तान का अपययतापूर्ण उत्पत्ता म आकृष्ट हाकर उमक खुरार म आ गय थ उत्तान उम खुरामान का विजय क लिए उत्तजित किया। तीन नाम मन्तर खुरार की एक विशान सना एकत्र की गयी और एक वय का बनन अग्रिम रूप म उम राजवाय काय म लिया गया। किन्तु याजना कायाबिन न की जा सका और मना बलाम्न करना पना क्याकि मुल्तान न अनुभव किया कि राज्य क आधिक साधना पर अत्यधिक बाय डान बिना मना बना मना का रखना जमम्भव है। खुरामान तथा भारत क बाच स्थित वय म खुरार विमान पवना का पार करना तथा माय क प्रस्था का शत्रुनापूर्ण जनता म युद्ध करना सरन काय न था। इसक अनिरिक्त अर खुरामान का राजनानि स्थिति भा पहन स मुघर गया थी एमलिए याजना त्यागना पना।

नगरकोट की विजय (१३३७ ई)

खुरार क कागना जिन म एक पहाडा पर स्थित नगरकाट का बिना मट्टू गजनवा क समय स तुक मनाआ का चनीता दता जाया था। अनाउदान वसती न नगभग ममन्त भारत का जीन लिया था किन्तु य खुरार एक हिन्दू राजा क हा हाया म बना रहा। १३३७ म मुहम्मद तुगलक न उस पर आक्रमण किया। राजा न वीरतापूर्वक प्रतिरोध किया किन्तु जन म उस ममपण करना पना और किला उस वापस लौटा लिया गया।

बराजल पर चढ़ाई (१३३७-३८ ई)

हिमानय क राया का जभा तक तुक नागा न विजय नहा कर पाया था मुहम्मद उन पर भी अपना प्रभुत्व स्थापित करन का इच्छुक था। एमलिए उसन किला स दस मजिन की दूरा पर कुमायू की पहाडिया म स्थित बराजल राय पर आक्रमण किया। किला का विशान सना न हिन्दूआ क इस गढ पर धावा बाना किन्तु पवताय भूमि तथा अत्यधिक वपा क कारण उम भापण सति उटानी पना। बाध्य हाकर मुल्तान को लौटना पना किन्तु उम राजा स युद्ध क हर्जान क रूप म भारा रकम वसूल करन म मपनता मिला। कुछ आपुनिक सत्वका क मतानुसार बराजल का आक्रमण खान तथा पश्चिमा जिनन विजय का असफल याजना थी। यह मत गनन है और किसा नी तत्कालान तरक न मुहम्मद की चीन का जानन की इच्छा का उल्लेख नहा किया है। चीन स सम्बन्ध

एनिया क कुछ दशा क साय विशपकर खान म मुहम्मद तुगलक का मित्रनापूर्ण सम्बन्ध था। १४१६ म चीनी सन्नाट ताणन डिमूर न अपना

एक राजदूत दिल्ली भेजकर मुहम्मद से हिमालय प्रश्न के कुछ बौद्ध मठों का जांचोद्वार कराने की आज्ञा मांगी। हिमालय के इन मठों का कराजत के आक्रमण के समय मुहम्मद के मंत्रियों ने घबराकर दे दिया था। दिल्ली मुल्तान ने भी इस वस्तु का अपना राजदूत बनाकर चीन के मंगोल सम्राट के दरबार में भेजा जिसने जुलाई १३४२ ई. में चीन के लिए प्रस्थान किया और १६७ ई. में भारत लौट आया। मठों के सम्बन्ध में मुहम्मद ने उत्तर दिया कि इस्लामी नियमों के अनुसार उनके पुनर्निर्माण का तब तक आदेश नहीं दिया जा सकता जब तक जजिया अदा नहीं किया जाय।

### मंगोलों के आक्रमण (१३२८-२६ ई.)

मुहम्मद के दिल्ली से दीनतावाद राजधानी उठाते जान के उपरांत सल्तनत को उत्तर पश्चिम साम्राज्य पर मंगोलों ने लगातार कई आक्रमण किये। मंगोल नेता तमो शिरा एक शक्तिशाली सेना लेकर भारत की साम्राज्य के भीतर घुस आया और मुल्तान तथा लाहौर से लेकर दिल्ली तक के समस्त प्रदेश का लूट डंगल मचाया। सुल्तान आक्रमणकारों का मुकाबला करने के लिए सचेत नहीं था। उसने साम्राज्य की उपेक्षा कर रखी थी। आक्रमणकारी का प्रतिरोध करने के लिए कोई वृक्ष सीमा रक्षक नहीं था। ऐसा प्रतीत होता है कि सुल्तान ने मंगोल नेता को घूस देकर लौटा दिया। यह नीति बुद्धिमत्तापूर्ण नहीं थी। इसने मुहम्मद के शासन की दुर्बलताओं को लोचनीय कर दिया और यह भावना पैदा की कि बलबल तथा अनाउद्दीन की प्रतिरोध का नीति त्याग देना ही है।

जिनके विद्रोहों ने भी मुहम्मद तुगलक के शासनकाल की शान्ति का भंग किया। इनका हमला काठियावाड़ में रक्तसक्त है

(अ) प्रारम्भिक विद्रोह तथा (ब) बालक विद्रोह।

### प्रारम्भिक विद्रोह

प्रारम्भिक विद्रोह मुहम्मद तुगलक की गृह-नीति की विफलता के कारण नहीं हुए उनका मुख्य कारण कुछ प्रभावशाली जमींदारों की महत्वाकांक्षापूर्ण योजनाएँ थीं। पहला विद्रोह सुल्तान के चचेरे भाई अनाउद्दीन गुसस्य ने किया जो गुलबर्गा के निकट सागर का सूबदार था। १३२७ ई. में वह पराजित हुआ और उसकी जायत खान सिचवा ला गयी। दूसरा विद्रोह कानून (पूना के निकट आधुनिक सिंहगढ़) के हिन्दू सामन्तों का हुआ। वह पराजित हुआ और उसने दिल्ली की अधीनता स्वीकार कर ली। तीसरा विद्रोह सुल्तान के सूबदार बहराम आरिफा ने किया जिसके अधिकार में सुल्तान के अतिरिक्त उच्च तथा सिद्ध भाग थे। वह भी हारा तथा बतल कर दिया गया।

बाद क विगाह

बाद क विगाह जिनका सत्या अधिन था सुल्तान का वर वदान का अत्याचारपूण नानि तथा उसका द्वारा जनता का न्यि गय वर दण्डा क कारण हुए । कुछ क कारण राजधाना-परिवतन तथा मुगल-मुघार थ जिनस मुहम्मद बदन अग्रिम हा गया था और महत्वाकांक्षी लागा का मुल्तान का कठिनाइया स नाम उगत क निए प्रात्मान मिली था ।

(१) १३५० म सयद जनालुद्दान अहमन न माबर (मदरा क निरट कर्तो प्रण) म विगाह किया । यद्यपि मुहम्मद स्वय दक्षिणा भाग्न गया किन्तु विगाह का दमन न हा सका और माबर स्वतन्त्र हा गया ।

(२) लाहौर का सूफार अमार हुनाजू दमरा शक्तिशाला अमार था जिनत विगाह किया किन्तु उसकी पराजय हुन और भाग गया ।

(३) लीलतागढ़ क सूफार क पुत्र मतिव हुशय न १५६० म विगाह किया किन्तु बाद म उमन अधियार टान न्यि और सुल्तान न उस दमा कर निया ।

(४) बगान क शामक न भा सुल्तान का अधिमता स नाम उठाया । सुल्तान न एव सना भजा जिसत बगाल क शिवायदान का हुगया और मार दाता (१५०० ई) । कुछ समय बाद उस प्रांत क कतिपय शक्तिशाला अपारा म पारम्परिक द्वन्द्व उर गटा हुआ । उनम स एक जनी मुबारक न शिवा सुल्तान स सहायता का प्रायना का किन्तु उस का सहायता न मिला एमनिए उमन अपन का सत्तानीती का सत्तान धापित कर निया । उस प्रकार बगान भा शिवा ग पृथक हा गया ।

(५) एक उपरात निहाम मा नामक बन्ध क सूफार न विगाह किया । किन्तु १३३७ ई म वह भा हारा और उसका जावित राज मिचवा ली गया ।

(६) १३३८ ई म बाद क सूफार नसरतली का बारा आया । उमन भा हारकर गमपण कर निया और उसकी जागीर जय कर ला गयी ।

(७) १५५६ ई म गुनबर्गा म जनीगाह न विगाह किया । वह पराजित हुआ और गजना का निर्वासित कर निया गया ।

(८) अबध क सूफार आदन उन मुल्क सुल्ताना का विगाह सयस भयकर हुआ । आदन उन मुल्क की गणना चाटी क अमीरा और पनाधिकारिया म था । वह असाउदान मन्जी क समय स महत्त्वपूर्ण पना पर काय कर चुका था और अपन समय क निहाम म उमर महत्त्वपूर्ण काय किया था । वह अन्धकारि कर शिवा तथा इनामी शास्त्रा और कानून का पणित था । भाग खनकर उमन मुल्तान महक अथवा इनाम महक नामक एक पुन्डक तिसी

जिगम फीराज गुगलत की शासन-व्यवस्था का अच्छा यणन है। वह उन गिन पुन महत्त्वपूर्ण व्यक्तियों में ग था जो तनदार तथा खपा दाना व धनी थ। १४०६ ई में मुहम्मद उम अयष त शोलनाग का स्थानांतरित कर दिया। अर्धन उस मुल न गमना कि मग यह स्थानांतरण मर नाश व माग न पता वरत है इसलिये उमन जिहाद कर दिया। किन्तु वह हाग जीर बनी बना दिया गया। उम जपत्स्थ वरक अपमानित किया गया। किन्तु सल्तान का विश्वास था कि वह हृदय में पूर्ण विद्रोह नग है इसलिये उमका जीवन रहन दिया।

(६) शाहू अफगान एक अय विद्रोह था जिसन मुस्लान व सूदर का मार डाला और नगर पर अधिकार कर दिया। मुहम्मद स्वयं उस दण दन व लिए गया। शाहू पहाग का आर भाग गया।

(१०) इसक बाद का विद्रोह मुनम तथा समाना में हुआ। सल्तान सना नकर उन स्थाना पर पहुँचा जीर जाट तथा भट्टी राजपूत पण्डा सामन्ता को परास्त किया। उस सफरना व बाद वह विद्रोही नेताओं का दिल्ली न गया और बलपूर्वक उन्हें मुसलमान बना लिया। विजयनगर व हिंदू राय की नींव

(११) दशरूपी विद्रोह न दक्षिण व हिंदुजा का भी अपना स्वाधानता की पुन स्थापना करन का अवसर दिया। १३२६ ई में हरिहर नामक एक साहसिक हिंदू न विजयनगर राय की नींव डाली। उसन कृष्णनायक को जिसन दिल्ली व विरुद्ध १३४३ ४४ ई में विद्रोह किया गुप्त रूप से सहायता दी। उस विद्रोह का दमन न किया जा सका और दक्षिण भारत का एक विस्तृत प्रदेश हिंदुओं का हाथ में चला गया।

(१२) १३४५ ई में स्थानाय पणाधिकारियों व कठार व्यवहार तथा नूट खमोट व कारण दवगिर की जनता न विद्रोह का पण्डा खग किया। इतिहासकार परिष्ता लिखता है कि चारा तिशाओ में विद्रोह की जाग फन गयी जिसक परिणामस्वरूप देश वरवाद तथा उजड हा गया।

(१३) अय महत्त्वपूर्ण विद्रोह विदेशी अमीरों का हुआ जो अमीरों सागह कहलात थ और जो कुछ विश्वाधिकारों का उपभाग करत आय थ। इन विदेशी अमीरों न राज्य व धन का गवन कर दिया दूसर विद्रोहियों का सहायता दा और दक्षिण व अराजकताग्रस्त प्रदेशों में लूटमार आरम्भ कर दी। मुहम्मद न मालवा व सूददार अजीज खुमर को विद्रोही अमीरों का दण्ड दन की आना भजी। अजीज न धास से उनमें से अनक का वध करवा दिया। इससे गुजरात व विद्रोही अमीरों में भी असंतोष फल गया और उहाँन भी विद्रोह का पण्डा खडा कर दिया। उहाँन अजीज का पकाकर मार डाला।

मुहम्मद का स्वयं उपद्रवग्रस्त क्षेत्र के लिए प्रस्थान करना पड़ा। दमाई के निवृत्त मन विनाहिया का परास्त किया। इसका वातावरण मुल्तान का एक और सफलता प्राप्त हुई जिमके फारस्वरूप अमार सागाह का दमन कर लिया गया।

(१४) देवगिरि के विदशा अमाग का भी अपना भाग्य अधिकारमय रूप से लगा। उन्होंने विनाह करके देवगिरि पर अधिकार कर लिया। वहाँ से बहार खानदान तथा मालवा में भी उपद्रव फैल गया। विनाह का मन करने के लिए सल्तान का स्वयं देवगिरि जाना पड़ा। इसी बीच में गुजरात में भी विनाह हो गया और मुल्तान को उस आर भी प्रस्थान करना पड़ा। इससे देवगिरि के विनाहिया का अवसर मिल गया। उन्होंने दिल्ली के प्रभुत्व का जुआ उतार फेंका और बहमनी राज्य की नींव डाला।

(१५) गुजरात का विद्रोह दुर्लभनीय सिद्ध हुआ। बिल्कुल सल्तान ने तागा नामक विनाहा का खण्ड किया और उस सिंध में खट्टा नामक स्थान में शरण देने पर बाध्य किया। मुहम्मद शासन-व्यवस्था का पुनःसंगठन करने तथा गिरिलार (आधुनिक जूनागढ़) का जीतने के लिए तीन वर्ष तक गुजरात में ठहरा। तदुपरांत वह तागी का दण्ड देने के उद्देश्य से सिंध का आर बढ़ा और वहाँ पहुँचकर बीमार हो गया। २० मार्च १२५१ ई. का उसका देहात हो गया। इतिहासकार बन्धुना के शासन में मुल्तान का उसका प्रजा से तथा प्रजा का मुल्तान से मुक्ति मिल गया।

मुहम्मद का चरित्र तथा मूल्यांकन

हमारे मध्ययुगीन इतिहास में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं हुआ है जिसका चरित्र इतना मनोरंजक तथा विवादास्पद हो जितना कि मुहम्मद बिन तुगलक का। बरनी तथा इब्नबतूता आदि सुल्तान के निवृत्त सम्पर्क में जाने वाले तत्कालीन लेखकों ने उमर के व्यक्तिगत गुणों तथा दाया के सम्बन्ध में विराधी मत व्यक्त किये हैं। आधुनिक यूरोपीय इतिहासकारों ने भी उमर के चरित्र तथा सफलताओं के विषय में विनाश विराधी निष्कर्ष किये हैं। एनफिस्टन का इसमें सन्देह है कि "उसमें कुछ अज्ञान में पागलपन विद्यमान नहीं था। हैबन एडवर्ड टामस और यी ए स्मिथ ने एनफिस्टन के मत का जसा का तमा स्वीकार कर लिया है। उनके विपरीत गार्डिनर ब्राउन ने उमर के चरित्र का उच्च चित्रण किया है और उस पागल रक्त पिपासु तथा कल्पना जगत में उड़ने वाला हान के आराधक से मुक्त कर दिया है। इस सुल्तान के राज्य काल पर जो प्रसिद्ध विद्वानों द्वारा रचित जा सक्य उपलब्ध हैं तथापि विवादास्पद माने जाते हैं और अब भी उमर का तथा विचारका के सम्बन्ध में इस विषय में मश्रूय है।

मुहम्मद के शक्ति के निजी पक्ष का ध्यान में रगन हुए हम कहना पता है कि उसमें सभी वास्तविक गुण विद्यमान थे। उगवा बुद्धि कुशाग्र स्मरण शक्ति आश्चर्यजनक तथा गान पिपासा अगम था। यह हनुविद्या दर्शन गणिता ज्यामिति भौतिक विज्ञान तथा फार्मा सांख्य और वायु का गम्भीर विज्ञान था। आत्म प्रकाश का कला के ज्ञाना स्था—निश्चय तथा यासा में दश ज्ञान के अनिश्चित यह उतराति का नयाविन भा था। मुत्तल कला ललित कलाओं और विशेषकर संगीत में उस अधिा प्रेम था। विद्या और कलाओं का यह पापक तथा विद्वाना के सत्सग का प्रेमी था।

मुहम्मद के निजी जीवन का नित्य स्तर बहुत उचा था। अपन युग के साम्राज्य व्यवस्था में वह सबका मुक्त था। स्वभाव में ही यह अत्यधिक नम्र था। नबतूता तथा बरना दाना नगवान मुस्तान की उत्तरता का भूरि भूरि प्रशंसा का है और उनका कथन है कि दान भेंट पुरस्कार जाति दान में मुत्तान मुक्त हस्त था। एसा प्रतीत होता है कि अपन सम्बन्धियों में उस अनुराग था और वह सहूल्य मित्र था। अपन चचेरे भाई फाराज के प्रति उसका प्रेम तथा बरना और जय मित्रा के प्रति उसकी सम्मान का भावना इसमें स्पष्ट प्रमाण है। यद्यपि उसके विरुद्ध धार्मिकता का आरोप लगाया गया है किन्तु नबतूता के ग्रन्थ के अध्ययन में स्पष्ट है कि मुहम्मद का नतिकता में विश्वास था और अपन धर्म के प्रति उसमें भक्ति था। इस्लाम द्वारा निर्धारित प्रतिदिन पाँच बार नमाज पढ़ना तथा राजा आदि के सम्बन्ध में वह अत्यधिक सावधान तथा नियमबद्ध था। स्वभाव तथा आत्म से मुहम्मद परिश्रमी था। शासन सम्बन्धी चीरों का चाजा के सम्बन्ध में उसकी लगन तथा अध्यवसाय एक बहावत दान गया था। एक सनिक की भानि उसका पालन पापण हुआ था। एक अनुभवा सनातायक के रूप में उसने अनक मुड लड थे।

सनिक जीवन से उस विशेष प्रेम था और सभी इतिहासकारों ने एकमत हाकर इस विषय में उसकी प्रशंसा की है।

जसा कि उस जस गम्भीर विद्वान तथा विभिन्न विषयों में रुचि रखने वाला व्यक्ति से आशा की जा सकती थी मुहम्मद स्वभाव से ही उदार तथा निष्पक्ष था। इस्लाम में भक्ति रखने के वाकजूबद असहिष्ण नहीं था और विभिन्न धर्मों तथा स्थितियों के व्यक्तियों के गुणा का मराहना करने के लिए उद्यत रहता था।

किन्तु कहना पता कि एक शासक का दृष्टि से वह नितांत असफल रहा। अपन छ वास वर्ष के दीर्घ शासनकाल में उस काई सफलता नहीं मिली। उत्तराधिकार में उस एक विशाल साम्राज्य मिला था जिसमें नगभग

मदन्त रक्षी भारत तथा रक्षिण मम्मिलित थ । किन्तु उमकी मृत्यु क पूर्व  
 ग शिरी मन्तन का आकार वन्त कुछ मिश्रु गया था । रक्षिण स्वतन्त्र  
 ग र्णा और बगान न ना शिरी म जपना मम्मन्त तां विधा । जिम  
 ममर मृन्त न उम आ घेग मिध भी मक तथा म निवना जा र्णा था ।  
 जो शान अर भा शिरी साभ्राय के अन्तगत व र्णम विद्राह तथा अन्तद्र  
 चर र्ण थ । मन्तक तथा मेतानायक के रूप म र्णमन जा स्थानि प्राप्त र्ण ना  
 था परागा र ममय र्णमन भा उमका साथ नली र्णिया । भाग्न का भीमाजा  
 क शहर क र्णा का जीतन की उमकी इच्छा थी किन्तु मिहामनाराणा क  
 ममय र्ण जा कुछ मिना था उमका भी अधिकार व्ण मा र्णा । गामन का  
 नय मांघ में दानना तथा राजस्व-व्यवस्था और मृन्त का र्णानिक आधार पर  
 मग करना—य मृग्धमन् की महत्त्वाकांक्षाण था । उमकी एक मन्ता अग्नि  
 नापा य्ण थी कि गजपानी मायाय क कद्र म स्थित हा । य मव यात्रनाण  
 निरन्तर निद्र र्ण । यही नली र्णक विरुद्ध भयकर प्रतिर्रिया र्ण जोर उन  
 जनता क धपार काप का भाजन जनता पन्त । अपना मृत्यु मे र्णत पद्दत  
 र्णमन अपना अमपन्नता स्वीकार का । र्णित्यासकार र्णना म र्णमन क्ण  
 में लोगा का विनाह और विर्रवामघात क मन्त पर र्णत र्णा ह । माघारण  
 म नाधारण धृष्णतापूण काय क निण में अपराधिया को मृत्यु-र्ण मेना ह ।  
 में मृत्युपयत र्णमा करता र्णैगा अथवा र्ण तव जय तव रि नाग विनाह  
 और धृष्णता छांर र्णमानागी का व्यवहार नहा करन र्णगत । भग बाई  
 र्णमा बन्तार नहा है जो भर द्वारा विय ज्ञान वाते र्णतपान का राकन के निण  
 नियम बना मक । में लागो को र्णमनिण र्ण देता हूँ कि व मव एक माप मने  
 र्ण और विराधी र्ण मय हूँ । मैंने उह वन्त-मा धन वांण है किन्तु र्णना  
 व्यक्ताग मित्रतापूण और बफारारी का नहा हुआ है । इम मववा र्णमवे  
 मिवाय और क्या अय हा मवता है कि य्ण एक एक आत्मी का अपना दृग्ण  
 गात्रर र्ण र्णा है जा अपना विर्रवता का भनाभांति ममपन्ता है । कुछ  
 आधुनिक मग्धवा का मत है कि जपना गामन मग्धधी विर्रवताआ क निण  
 मग्धमन् र्णम विर्रमन्तार न्ण था उम अमपन्नता र्णमनिण मिना कि परिग्धनिपी  
 र्णम विर्रुध थीं लोग पिन्ते र्ण तथा अरिक्की थ और उममा उमक विर्रुध  
 र्ण मर थ क्याकि र्णमने उ्ण गग्ण क कापीं में र्णतशाप न र्णत र्णिया  
 का और आपा-रपन क निण र्णुठ र्णिया था । उपमन्त नर्को म कृष्ण न्ण  
 है किन्तु मुग्धमन् की विर्रवता का मुख्य र्णतत्वाविच र्णमर चरित्र क र्णया  
 तथा कर्मिया पर गा । उमम मनुष्य र्ण्यावर्णिक निणय र्णित तथा मामा-य  
 बुद्धि का अभाव था । र्णमनाम्ना की र्णिभात्रा का र्ण पर र्णर्रिण अभाव था  
 और र्णमन ज्ञान का आधार पुन्तर्को थी न कि र्ण्यावर्णिक जीवा का अनुभव ।



मातृवीर्य चरित्र को पर्यगन व गुण गुणभ गुण का उगम गयथा अभाव था और उ उगम दूगम म विश्वास उगप्र करन तथा अपन मन्थोदियो म अच्छे मन्थेथ गगा की ही शक्ति थी । उच्च सिद्धांत का प्रतिपादन करना तथा काल्पित याजनाए बनाना उगगा एक व्यगन था । अपनी याजनाओं के श्योरे की बात। पर यत् कभी मातृधानी म विचार न्था करता था । कायज पर ता उगवी याजनाए राम हानी थी किन्तु जब उच्च कार्यान्वित किया जाता था ता व निष्पन्न सिद्ध गानी थी । मुग्धम म मनुष्या मन्थ्याओ और यहाँ तक कि अपनी उच्च याजनाओ व मन्थेथ म भी धीरज म काम मने की शक्ति न्थी थी । स्वभाव म ही उगम अध्यवगाय की कमी था और याजना व पूरा हान म पन्थ थी उम छात्र बन्ता था । इसम मन्थे न्हा नि उमम जन् यात्री अत्यधिक मात्रा म विद्यमान थी । उग्र स्वभाव का हाने व कारण व शीघ्र ही उत्तजित हो जाता था । एक बार ब्रह्म हा जान पर व अपने मन्थिष्क का मनुनन म्वा बठना था और ममम्मा व दूमरे पन्तू का देखने का प्रयत्न न्ही करता था लण्ड नेत समय व विवक म काम न्ही गता था और भीषण अपराधा के त्रिण नी न्ही वन्ति अत्यन्त माधारण अपराध के त्रिण भी वह मृत्यु लण्ड ने दना था ।

भातुर हान के कारण वह मोवा करता था कि भरी उगारता के बावजूद योग जगण ही मर विरुद्ध हो गय हैं मन्थिए उन् लण्ड मितना चाहिए । उमकी विफलता व यही मुख्य कारण थ । यदि जनता पिछ्नी हुई थी तो एक धनुर तथा व्यवहार-कुशल शामक की भांति उसे यह चाहिए था कि वह अपने सुधारा के मन्थेथ म उम साथ नेकर चरता । जाविर ऐसे सुधारे से क्या लाभ था जो समय के बहुत आगे थे और जिह वही जनता न्ही ममझ सक्ती थी जिसकी भनाई करना उमका उद्देश्य था । मामाथ रूप स परिस्थितियाँ उमके विरुद्ध न्हा थी । जिम समय वह मिहासन पर बठा प्रजा ने उत्तरा हात्तिक स्वागत किया किन्तु जब उसन हठपूर्वक अवात व समय म दाआव म व वढाना आन्ति अपनी मूखतापूण योजनाओ का कार्यान्वित किया ता जनता के त्रिण उसका विरोध करना स्वाभाविक नी था । यह कहन का कोई अर्थ न्ही कि उमका दुर्भाग्य उसकी विफलता का कारण था और इसलिए उसे अभागा शासक कहना चाहिए ।

क्या वह पागल था ?

एन्फिस्टन पहना इतिहासकार था जिसका विश्वास था कि मुग्धम म पागलपन का कुछ अंश विद्यमान था । पर्यवर्ती यूरोपीय इतिहासकारो ने भी उमके मत का समर्थन किया है । किन्तु बरनी तथा न्बनूगा आन्ति तत्कालीन गवको के प्रथा के निरीक्षण से ऐसा कोई प्रमाण न्ही मिलता जिससे सिद्ध

ग मर कि मुल्तान म बिमा प्रहार का पागलपन था । मम्भवत एताकिस्टन तथा अय यूरोपाय तबका को बग्नी और अन्तर्जना क म्म कथन म भ्रम हो गया कि मुल्तान क महन क मामन म्ब कुछ लामें पनी लिखायी अता था । मुहम्मद साधारण अपराधा क लिए मृत्यु अण्ड इस्लाम तथा लिया करता था कि वह पापन था बन्कि इस्लामे कि उमम साधारण तथा भीषण अपराधा म अन्तर ममसन की विरक युद्धि नती था । अमकी मन्तिया का कारण उमका पापनन तथा बन्कि मनुलन का जभाव था । मुल्तान क प्रति याय करन की दृष्टि मयहू जी स्मरण रखना आवश्यक अ कि मय युग म यूरोप तथा अशिया क मभी अमा म मृत्युअण्ड मामाय रूप म प्रचलितथा । यह कहना भा गनन है कि मुहम्मद का म्मनपान म आनन् जाता था । अयक विरुद्ध म्म आगप उग्नी न मगाया था वह अमा क दल का म्मय था जा मुल्तान क प्रति विाप द्वप नाक रखन थ क्याकि उसन उहें उनक विभापाधिकारा म बचित कर लिया था और अपराधा तथा अन्वार क लिए अण्ड लिया था ।

नाम्निकता का आरोप भी निराधार है । बग्नी लिखना अ कि मुल्तान की अन्तम म आस्था नहा रती थी और उमका आचरण उमक मिदाना क प्रतिकृत था किन्तु इन्वतूता का कहता अ कि मल्तान अतिक नमाज तथा इन्तम शारा निर्धारित अय कृत्या के म्मव्य म अयधिक मावधान था । व्म अपन धम क मिदानता शिशाआ और व्यावहारिक नियमा का म्मय हो कटा तथा क माय पावन नही बग्ना था बन्कि अम विचरित हान बाना और यहाँ तक कि नियमानुसार दनिर नमाज न पन्न बाला का भी अण्ड लिया जाता था । मय यह है कि अपने प्रारम्भिक जीवन म मुहम्मद का म्मन् न पर लिया था और उमका व्यवहार एक म्मन्वाणी का सा था । किन्तु मिन्तमन पर बगन क कुछ अिता उपगत उमका सन्दह जाता रता और वह एक कट्टर म्मन् मुसलमान की तरह जीवन बितान तथा था ।

मुहम्मद क विरुद्ध एक और भी आरोप है कि वह बल्पना-जगत म अण्ड करता था । म्म कथन म कुछ मलय अवश्य है कि उन इवाइ किन बनान का शोक था और वह म्मी याजनाए तथा किया करता था जा व्यवहार म अमफन मिद हाता था किन्तु य्म नो तथा भूतना चाणिक कि उमक मुग्ग गत्रव आनि म्मव्य रगम बान अनक मुघार गम रचनात्मक और व्यावहारिक थ । व्म मुघार म ना उमकी गजनातिक मूहमन्तिया का शतक भी मिलती थी इस्लाम मुहम्मद आन्तवाता था और कपता जगन म अण्ड बाना भी । क्या उमक विरोधी तत्त्वों का मिषण था ?

हा इस्वीप्रगात् का कथन है कि उरर म अण्ड पर भी इम प्रतीत हाता है कि मुहम्मद विरोधी तत्त्वों का आन्वपत्रन थाग था किन्तु वाग्मव म वह

तेसा गी था। डॉ. मन्नी हुमा गय सिद्ध करन ता प्रयत्न रिया है कि यद्यपि मुहम्मद म विराधी गुण विद्यमान थ किन्तु वे उसक जीवन क विभिन्न गाना म प्रकट हथ थ और उते निग स्पष्ट कारण भी विद्यमान थ। इमनिग डॉ हुमा क्त्त है कि उम विराधी गत्ता का मिथण गी कहा जा मरता। एम प्रय का उक्त उपयक्त विज्ञान शिनामरारा क मत म सम्मन नहा है और उमरा विज्ञान है कि मुहम्मद म विराधी गुण विद्यमान थ और उनरा प्रायः एत ही समय म और गाय-गाय जाया और य गुण जीवनपयल उनर चरित्र था जग का र्त्त। डा हुमा न सिद्ध रिया है कि अपने जामन पान के प्रारम्भिक शिना म मत्तान म्नेहवाती था किन्तु जग चक्कर घाम्म म धामिग हा गया था। एमका अध यत् हुआ कि जहाँ तय घम का म्म्य थ था उम पर एक् ही समय म गाय माथ धामिग तथा अधामिग होने का आरोप गगाया जा मरता है। किन्तु जग तक मुहम्मद क गुणा का म्म्य थ है डा हुमा न मौन धारण कर रिया है। मुहम्मद नम्र था और साथ ही साथ अत्यधिक अक्वारी भी श्मीनिग बरनी क्त्ता है कि मत्तान को यह सुनता पमद नहा था कि पृथ्वी अथवा स्वग का एक् एसा भाग भी है जिस पर आपना अधिगार नही है। कभी कभी वक् एतना विनम्र और सयमी था कि एतवतूता न नमता का भी उसक चरित्र की मयम मन्त्वपूण विगपता ममता। साधारणतया वह अत्यधिक उत्तार था किन्तु कभी कभी वह पूण रूप म मरीण ह्म्य हो जाता था। एतवतूता न अनेक एम उत्तारण गिये हैं जिनमे मुहम्मद की कानून तथा गाय क प्रति रद्धा प्रकट होती है। कभी-कभी वह गायानय म अपराधी की भाति उपस्थित होता एक् साधारण नागरिक जमा गवत्तार करता और गायानीक के हाथा एक् स्वीकार करता। इमके विपरीत मामाश्लया वह साधारण अपराधा के लिए मृत्यु तथा अग विच्छे का वर दण्ड दिया करता था। साधारणतया वह वक् दयानु था किन्तु कभी कभी जब उमकी क्रोधामिग प्रवृत्तित हान लगती थी तब वह एक् अत्यधिक क्रूर तथा अत्याचारी मनुष्य की भाति गवत्तार करता था। श्मीनिग हम इम परिणाम पर पहुँचे बिना नही रह सकत कि मुहम्मद बिन तुगनक के चरित्र म विराधी गुणा का मत था।

फीरोज तुगनक (१३५१-१३८८ ई.)

प्रारम्भिक जीवन

फीराज का गम १०६ ई म हुआ था। वह सुल्तान गियामद्दीन तुगलक के छोट भाई राजक का पुत्र था। उमरी माता आधुनिक पूरबी पञ्जाब के हिंगार जिते म स्थित अबोहर के भट्टी राजपूत राजा रतमन की पुत्री थी।

यह विवाह बलपूर्वक किया गया था। कहा जाता है जब गाज़ी तुगलक फिरोज़पुर का सूबदार था उस समय उसने इस राजपूत लड़की को मौलाना तथा आरूपण के विषय में सुना और उसका विवाह अपने छात्र भाइयों के करने के लिए उनसे परामर्श किया किन्तु अन्वारी राजपूत ने यह प्रस्ताव ठुकरा दिया। तब गाज़ी मन्तिके नदमन से काम लिया और नदमन तथा उसकी प्रजा को थोड़े मकड़ में डाल दिया। लड़की ने अपने पिता से रजा लिखि कर लिये जाने में परिवार इस अवश्यम्भावी नाश से बच सका तथा इस प्रस्तावित विवाह में कोई आपत्ति नहीं है। फीरोज़ लम्बी विवाह से उत्पन्न हुआ था। पूर्ण वयस्क होने पर फीरोज़ को शासन-कारिता तथा मुदद विद्या की शिक्षा दी गयी किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि इनमें से किसी में भी फीरोज़ निपुणता नहीं प्राप्त कर सका। मुहम्मद तुगलक का अपने हम चचेरे भाई से प्रेम था इसलिए उसे उसने राज्य-शासन में मन्त्वपूर्ण स्थान दिया। कहा जाता है कि वह फीरोज़ को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहता था।

#### मिहानारोहण

जिस समय २० मार्च १३५१ ई. को मुहम्मद की मृत्यु हुई फीरोज़ यहाँ में शाही भूमि में उपस्थित था। शाही फौज का उसका शत्रु तागी तथा उन विरायतों के टटटू मगाना न जित् मुहम्मद ने मन्त्रायक मन्दिवा के रूप में भरती कर लिया था धार कष्ट पहुँचाया इसलिए अपने का अराजकता की दशा में देखकर उसने एक नेता बनने का संकल्प किया ताकि कठिनाइयाँ के कारण राज्य नष्ट भ्रष्ट न हो जाय। चूकि मुहम्मद की लच्छा फीरोज़ को अपना उत्तराधिकारी मानना था थी इसलिए सब लोगों की दृष्टि उसी पर पड़ी। किन्तु एक छाटा मांस का नाम भी था जो मुत्तान के एक अल्पवयस्क भानज के पक्ष में था। उसने एक बारर के साथ का इसलिये समझन किया कि फीरोज़ की अपंगा का मुत्तान का अधिकारिता का सम्बन्धी था। किन्तु अमीरा ने उत्तर दिया कि हम एक प्रौढ़ व्यक्ति को चाहते हैं जो हम का कठिनाइयाँ से निवारण करे। उत्तान फीरोज़ में मुकुट धारण करने की प्रार्थना की। गन्तप्रिय तथा धार्मिक प्रवृत्ति का हान के कारण उसने प्रस्ताव अस्वीकार कर लिया। तब अमीरा गया और उसका नाम लिखकर उस पर परामर्श डाला। अन्त में उसने उनकी आपना को स्वीकार कर लिया। २० मार्च १३५१ ई. का यज्ञ के निरन्तर लोकोत्तम में उसका राज्याभिषेक हुआ।

नये मुत्तान ने तना में व्यवस्था कायम की उस मनु में बचाया और फिरोज़ के लिए प्रस्थान किया। यह गिरफ्त को लान भी न पाया था कि उस समाचार मित्रा कि स्वर्गीय मुत्तान के नाइय राजा-गर्जनी के एक लड़के का मुहम्मद तुगलक का पुत्र तथा उत्तराधिकारी घोषित करने के लिए गिरफ्तार

घटा दिया है। मता के मुल्तान फट्टूरा पर फीरोज न अमीरा तथा इस्लामी विधिना न परामश किया। अमीरा न यत् मानन न इनकार किया कि स्वर्गीय मुल्तान का कार्य पुत्र जीवित है। विधिना न फसता दिया कि स्वाजा ए-जहाँ का उम्मीदवार अणवयस्य जाने क कारण हिन्दी का मुल्तान हान का अधिकारी नहीं है। स्वामा कानून क अनुगार प्रभुत्व वशानुगत अधिकार नया माना जाता इस्लाम कानूनी दृष्टि न उस चर का मिहामन पर अधिकार या अथवा नहीं यत् प्रश्न ही उत्पना अनावश्यक है। इसके अनिश्चित समय की माँग था कि राजमता शक्तिशाली पुरुष के हाथ म हो। अमीराने स्वाजा ए-जहाँ क उम्मीदवार का पक्ष लूब गया। मन्त्री न समरण पर दिया और उमकी पुगानी स्वामिभक्तिपूण सेवाओ का विचार करके मुल्तान न उस क्षमा कर दिया। उस अपनी जागीर ममाना का जान की आना मित गयी किन्तु अमीरा तथा मेना क पदाधिकारिया के भ्रवाने पर गुनम तथा ममाना के मूदेनार शरफा क अनुयायिया न उमका वध कर दिया। फीरोज निष्कटक एक विशान साम्राज्य का स्वामा बन गया।

फीरोज का रायारोहण विधाना म एक विवाह का विषय है। सर वूल्डने हंग का मत है कि स्वाजा ए-जहाँ ने जिस लडके को गद्दी पर बिगया था वह मुहम्मद का कपिन नहीं बल्कि औरम पुत्र था। इसलिये फीरोज का मिहासनागेहण नियम विरुद्ध था और हम उसे मिहासन-अपकरण कह सकते हैं। दूसरे इतिहासकार इस मत को स्वीकार नहीं करते और उनका कथन है कि एमा कोई प्रमाण उपलब्ध नहा है जिससे मिड जा सके कि वह लडका मुहम्मद का औरम पुत्र था। यदि उस मुहम्मद का औरम पुत्र भी मान दिया जाय तो भी फीरोज का रायारोहण नियम विरुद्ध नहीं था। इस्लामी कानून क अनुगार प्रभुत्व किसी एक व्यक्ति अथवा वग विशय का एकाधिकार नहीं है। उसका पात्र तो वही हाना है जिसम गद्दी पर अधिकार रखन की योग्यता और सामर्थ्य हानी है। दूसरे शब्दा म हम कह सकते हैं कि मुस्लिम सिंहासन का अधिकार वशानुगत अधिकार का विषय नहीं है। यद्यपि यह मानना पड़ेगा कि मरतनन म पुत्र का उत्तराधिकार कुछ हद तक एक नियम बन गया था फिर भी उत्तराधिकारी के चुनाव म योग्यता तथा निवाचको—मुख्य अमीरा उमेमा तथा स्वर्गीय मुल्तान—की सहा ही निर्णायक तत्व माने जाते थे। फीरोज का विधिवत चुनाव किया गया था। वह योग्य भी था और जना कि वरती निश्चिता है मुहम्मद न भी उसी का अपना उत्तराधिकारी निर्णेजित किया था। इस प्रकार वह सभी शर्तों को पूरा करता है इसलिये हम उसे अपहरणकर्ता नहीं कह सकते और न यही कहा जा सकता है कि उसका रायारोहण विधि विरुद्ध था। डा रामप्रसाद त्रिपाठी का कथन है

कि फ़ीरोज़ ने मिहसिनाराहण न निवाचन के मिहनात की जिसका मन्तव्य धार धीरे धरे था पुन स्थापना की और साथ ही साथ पुत्र का शासनाधिकार न बचिन भा नहीं किया। हम उदाहरण न याग्यता को मन्तव्य दिया न कि मुल्तान से निकट सम्बन्ध को। इसके अतिरिक्त हम नो नप मिहाना का प्रतिपादन हुआ। पहला यह मुल्तान एसी माता से उत्पन्न था जो अपने विवाह से पहले गर मुस्लिम रहे चकी थी तो हम वार्त्त आपतिजनक बात नहा थी दूसरा यह आवश्यक नहा कि मुल्तान प्रमिद्ध मतिव रहै चका हो।

### गह नीति

शासन-व्यवस्था

अमन १३५१ ई के अन्त में फ़ीरोज़ ने निर्विरोध राजधानी में प्रवेश किया। हमन मतिव मक़बूल का अपना प्रधानमन्त्री नियुक्त किया और उस कानून की उपाधि से निभूषित किया। नया प्रधानमन्त्री तनगाना का एक शास्त्र था और कुछ ही समय पश्चिम मुसलमान हो गया था। वह एक अत्यन्त योग्य शासक था और उसका स्वामिभक्ति से फ़ीरोज़ को अत्यधिक नाम हुआ। मन्त्रप्रथम फ़ीरोज़ ने प्रजा को प्रसन्न करने का प्रयत्न किया हमन तब उमन सम्पूर्ण राजकीय ऋण चुका दिया और स्वाजा ग जर्न द्वारा अन्त गम्भीरता की स्थिति दूर करने के लिए राजकीय में से कुछ लिये गये पन का भा पुन प्राप्त करने का प्रयत्न नहा किया। एक दृष्टि से मुल्तान नाग्यगर्भी था जिन्ही की जनता का विशेषकर कट्टर मुन्त्री बग का वह विश्वासपात्र था। जनता की सहायता में वह न्याय तथा व्यवस्था में सुधार करने और प्रजा का शान्ति तथा सुख प्राप्त करने में समय ही मका हमन के शासन के अन्तिम दिना के उपद्रवों के कारण राज्य में इन चीजों का सम्बन्ध अभाव था। फ़ीरोज़ अपने का राज्य का दृष्टी तथा जनता की नाराज के लिए जिम्मेदार समझता था। उमन साम्प्रदायिक राज-व्यवस्था के विद्वान की पुन स्थापना की और अपने का जनता के मुस्लिम बग का सम्बन्ध शासक समझता तथा उम युग में उमका भौतिक तथा नतिक समृद्धि के लिए जो कुछ सम्भव था मकता था किया। उमन मन्त्र इन्तामी शासक के शासन पर यथामुम्भव पत्रचन का प्रयत्न किया। इन प्रकार फ़ीरोज़ ने दूसरे रूप में अपना जीवन बिताया तथा काय किया—पश्चिम राज्य की शासना जनता के लौकिक शासक के रूप में और दूसरे मुस्लिम जनता के लौकिक तथा धार्मिक शासक की हैसियत में और उमने कुछ हद तक प्रजा की नैतिक उन्नति करने तथा गुनी शासन की प्रतिष्ठा और मन्तव्य बढ़ाने में प्रयत्न किया।

बठा दिया है। मंगल के मुताबक फीरोज ने अमीरा तथा स्वामी विधिविध मंगलक किया। अमीरा ने यह मानन म इनकार किया कि स्वर्गीय मुल्तान का वारि पुत्र जीवित है। विधिविध न फसला दिया कि स्वाजा-ए-जरी का उम्मीदार अल्पवयस्क होने के कारण तिनी का मुताबक का अधिकारी नहीं है। स्वामी कानून के अनुगार प्रभु वशानुगत अधिकार न माना जाता। इतिहास कानूनी दृष्टि न उम लक्ष्य का मिहामन पर अधिकार था अथवा नहीं यह प्रश्न ही उठाना जनावश्यक है। उनके अनिश्चित समय ही मांग था कि राजगता शक्तिशाली पुरुष के हाथ म हो। इतिहास स्वाजा-ए-जरी के उम्मीदार का पक्ष डूब गया। मंत्री न समझ कर दिया और उमका पुगनी स्वामिभक्तिपूण मेवाआ का विचार करके मुताबक ने उमे क्षमा कर दिया। उस अपनी जागीर ममाना का जान की आशा मिन गयी किन्तु अमीरा तथा सेना के पदाधिकारियों के भक्ताने पर गुनम तथा ममाना के सूत्रार शक्तियों के अनुपाधिया न उसका बध कर दिया। फीरोज निष्कटक एक विशाल साम्राज्य का स्वामी बन गया।

फीरोज का रायारोहण विधान म एक विचार का विषय है। सर वूडर ह्य का मत है कि स्वाजा-ए-जरी न जिम नडके को गद्दी पर बिगाया था वह मुहम्मद का कल्पित नहा बलिन औरम पुत्र था। इतिहास फीरोज का मिहामनारोहण नियम विरुद्ध था और हम उम सिहासन-अपहरण कह सकते हैं। दूसरे इतिहासकार म मत को स्वीकार नहीं करत और उनका कथन है कि एमा कोई प्रमाण उपलब्ध नहा है जिमसे सिद्ध हा सके कि वह सडवा मुहम्मद का औरम पुत्र था। यदि उस मुहम्मद का औरम पुत्र भी मान दिया जाय तो भी फीरोज का रायारोहण नियम विरुद्ध नहीं था। इस्लामी कानून के अनुगार प्रभु व किमी एव यकिन अथवा बग विशय का एकाधिकार नहीं है। उमका पात्र तो बनी होता है जिमम गद्दी पर अधिकार रखने की योग्यता और सामर्थ्य होती है। दूसरे शब्द म हम कह सकते हैं कि मुस्लिम सिहासन का अधिकार वशानुगत अधिकार का विषय नहीं है। यद्यपि यह मानना पड़ेगा कि मल्लनत म पुत्र का उत्तराधिकार कुछ हद तक एक नियम बन गया था फिर भी उत्तराधिकारी के चुनाव म याग्यता तथा निर्वाचका—मुख्य अमीरा उमका तथा स्वर्गीय मुल्तान—की इच्छा ही निर्णायक तत्व माने जाने थे। फीरोज का विधिवत् चुनाव किया गया था। बल योग्य भी था और जमा कि धरती निपता है मुहम्मद न भी उसी का अपना उत्तराधिकारी निर्दिशित किया था। इस प्रकार बल सभी शर्तों को पूरा करता है इतिहास हम उमे अपहरणकर्ता नहीं कह सकते और न यही कहा जा सकता है कि उसका रायारोहण विधि विरुद्ध था। डा रामप्रसाद त्रिपाठी का कथन है

कि फाराज व सिहामनारोहण न निवाचन क सिद्धांत की जिम्का महत्व को धीरे धरे था पुन स्थापना की और साथ ही साथ पुत्र का शासना विहार म बचिन भा नहा किया । इस उन्नाहरण न योग्यता का मन्व सिा न कि मुल्तान स निकट सम्बंध को । इसक अनिखित इसत नो नय सिद्धांत का प्रतिपादन हुआ । पहला, यकि मुल्तान एसी माता स उत्पन्न पा जा जपने विवाह स पन्न गर मुस्लिम रह चुकी थी तो इसम कोई शान्तिजनक वान नही थी दूसरा यह आवश्यक नही कि मुल्तान प्रसिद्ध नितक र चुका हो ।

### गह नीति

शासन-व्यवस्था

जगन् १३५१ इ के अत म फीराज ने निर्विरोध राजधाना म प्रवेश किया । उमन नितक मक्बूर को अपना प्रधानमंत्री नियुक्त किया और उस पानवर्ही का उपाधि से अभूषित किया । नया प्रधानमंत्री तरगाना का एक शासक था और कु था समय पन्न मुसलमान हो गया था । वह एक अत्यंत शय्य शासक था और उसका स्वामिभक्ति स फीराज का अत्यधिक लाभ हुआ । सर्वप्रथम फीराज न प्रजा का प्रमत्त वरन का प्रयत्न किया एक तिा उमन सम्पूर्ण राजसीय श्रृण चुका लिया और स्वाजा ए-जहाँ द्वारा जने सम्पीठार की स्थिति दृ करने के लिए राजकाप म से नुटा स्थि गय इन का भा पुन प्राप्त वरन का प्रयत्न नहा किया । एक दृष्टि स मुल्तान सम्पत्तौ था, सिन्धी की जनता का विषयपर कट्टर मुन्नी वग का वह विश्वासपात्र था । जनता की सहायता म वह याय तथा व्यवस्था म मुधार करने और प्रजा का शान्ति तथा सुखता प्रदान करने म समय हो मवा, मन्म व शासन व अतिम सिा व उपन्थो के कारण शय्य म इन चीजा का मन्जनक अभाव था । फीराज अपन का राज्य का दृष्टो तथा जनता की मनाई क लिए जिम्मदार ममज्ञता था । उसा साम्प्रदायिक राज-व्यवस्था क सिद्धांत का पुन स्थापना की और अपन को जनता क मुस्लिम वग का साम्प्रदायिक शासक समझा तथा उम युग म उमका भौतिक तथा नतिक ममृदि क लिए जा कु सम्भव हो मरता था किया । उमन मच्च मन्तामी शासक क आन पर यथासम्भव पद्वेचन का प्रयत्न किया । इग प्रकार फीरोज न दूसर रूय म अपना जीवन बिताया तथा काय किया—पहन शय्य की सम्पूर्ण जनता क लोकिव शासक क रूप म और दूसर मुस्लिम जनता क भौतिक तथा धार्मिक शासक की हैगिया म और उमे कुछ हद तक प्रजा की भौतिक उन्नति वरन तथा मुन्नी मन्ताम की प्रतिष्ठा और महत्व वदान म मरपता मिली ।



मुग़ल पीराज का दूसरा काय सिन्धी गानान को दुबलता तथा अनिश्चयता का उगम म म उगना था जिमम य उगम पूर्वोधिकारी का शासन का अन्तिम सिन्धी म गिर गयी थी। यह अमाधारण मति सफ़तता का गया सिन्धी यगाय मिथ राजस्थान आदि गया र गया हूए प्रान्त की पुनर्विजय के बिना सम्भव था। फीरोज म उच्चोक्ति की मति प्रतिभा तथा रोज़-शाय कायम करने की शक्ति का अभाव था यमिथ सिन्धी तथा राजस्थान का पुनर्विजय के बिचार न ही उमना हूय रूत गया। यगाय गया मिथ को सिन्धी मल्लनत का अन्तगत जाने का उमन सिन्धिम प्रयत्न किया किन्तु उमम उम सफ़तता नही मिन्धी। उमन ताज की शक्ति तथा प्रतिष्ठा म वृद्धि करने का कोई प्रयत्न नहीं किया। वास्तव म व शान्ति प्रिय यवित था। उमने अपनी शक्ति का मुख्यतया जनता की आर्थिक उन्नति के काय म लगाया। राजस्व विभाग का छोटकर उमने शामन-व्यवस्था म कोर्ट मुधार नही किये किन्तु अपने शीघ्र राज्यमान म शामन-व्यवस्था को शांतिपूर्वक तथा निर्विघ्न रूप म चरान का प्रयत्न किया। उमन योग्य मन्त्री नियुक्त किये सरकार का कायभार उह मौया और उह अपना विश्वास तथा समर्थन प्रदान किया। शामक के रूप म उसकी सफ़तता का यही रस्य था।

### राजस्व-नीति

राज्य के राजस्व सम्बन्धी विषयों की ओर फीरोज ने अधिक ध्यान दिया। उमन पैसा सि वित्त तथा राजस्व व्यवस्था अराजकतापूर्ण दशा म है। लट यमोट बुप्रबन्ध तथा दुर्भिक्ष का कारण प्रजा का अत्यधिक कष्ट महन करता पडा था। जनता का घावा का भग्न तथा उसम विश्वास उत्पन्न करने के उद्देश्य से उसने स्वर्गीय सुल्तान गारा लिये गये तकावी ऋण को रद्द कर दिया। उमन पन्नाधिकारियों के वेतन बढ़ाय। राजस्व विभाग के पन्नाधिकारी प्रांतीय सूबदार जब मुग़लान के दरबार म अपने इनाका की आय यय का हिमाय देने जान थे ता उन पर अनुचित शारीरिक श्राव डाना जाता था। फीरोज ने इस घृणित प्रथा को भी यत्न कर दिया। राज्य की सम्भावित आय व्यय का चिट्ठा तयार करना फीरोज का अय महत्त्वपूर्ण काय था। उमन सरकारी आय का आनुमातिक विवरण तयार करवाया। यह काय स्वाजा सिन्धामुहिन नामक एक अनुभवी राजस्व पन्नाधिकारी के सुपुत्र किया गया। उमने प्रांता का दौरा करके राजस्व-अभिलेखों का निरीक्षण किया और छट चप का कठिन परिश्रम के उपरांत राज्य की खासता भूमि का राजस्व छट करार और पचासी लाख टका निश्चित किया। इन आंकड़ों म परिवर्तन नहीं हुआ और फीरोज के सम्पूर्ण राज्यमान म सीधे राज्य का शासन के अन्तगत

भूमि में इनका ही साथ हानी रहा। भूमि की नाप तथा उपज के आधार पर अनुमान नहीं लगाया गया था। उसका आधार अन्त्याज म्यानाय जामकारा तथा राजस्व विभाग का पुराना अनुभव था। फीराज ने भूमि का नाप के आधार पर राजस्व निरधारित करने का धार्मिक प्रणाली त्याग दी। इस आधारभूत पर वह बाबरू लम्बा स्थायी रूप में भूमि-कर निश्चित करना फीराज का एक महान सफलता था और उसके लिए उस श्रेय मिलना चाहिए।

मुल्तान में चौदास बख्तखानों का हत्या किया गया मवान तथा बख्तखान भी सम्मिलित थे जिनसे प्रजा की विशेष छुड़ा था। जहाँ तक नू राजस्व का सम्बन्ध था उसने राज्य का भाग घटा था। किसानों के धार्मिक बाज्र का हटका करने के लिए उसने एक और कार्य किया—सूकरा का अपना नियुक्ति के समय तथा प्रति वर्ष में कुठ घन राय का पत्ता पत्ता था जिसका बाज्र वास्तव में जनता पर हा पत्ता था। फीराज ने इस हानिनिवारक प्रथा का अन्त कर दिया। कुगन के नियम के अनुसार मुल्तान में कब्र चार कर लगाए—फीराज लम्बे ज़िन्दा और जवान। फीराज भूमि-कर था। लम्बे युद्ध में प्राप्त लूट के घन के १/३ भाग का कहत था। अनाउद्दीन तथा मुहम्मद तुगलक नू के घन का १/३ भाग तक हथप लिया करते थे और बचत १/३ सन्ना के लिए छात्र था। फीराज ने मुल्ताना प्रथा के अनुसार कब्र १/३ भाग किया और १/३ मन्तिका के लिए छात्र किया। गर मुसलमानों में ज़िन्दा वसूल करने में फीराज काफी बहादुरता में काम करता था। पूर्व-मुल्ताना के समय में ब्राह्मणों को ली ज़िन्दा से मुक्त करने में अथवा किया प्रकार उगम बच जाया करने के फीराज ने उनसे भी ज़िन्दा वसूल करके उसका व्यापकता का अधिधन बनाया। ज़रत २३ प्रतिशत का कर में मुसलमानों से वसूल किया जाता था और कुठ निश्चित धार्मिक कृपा में व्यय किया जाता था। इन चार करों के धार्मिक आग उल्लेख मुल्तान में उल्लेख की स्वाकृति से मिचान-कर भी लगाया जा उन किसानों का दत्ता पड़ता था जो अपने गन्ना की मिचान के लिए कारकारा नहीं में पानी लेते थे। इसका दर उपज का १/३ था। अफगानों को राजस्व वसूल करने याता का निश्चित धन में अधिक वसूल करने का हथप लिया था। जो इन आत्माओं का उल्लेख करने में उन्हें स्पष्ट किया जाता था। राजस्व पन्नाधिकारिया तथा वसूल करने याता का जागार तथा नन्ना के रूप में समुचित धन दिया जाता था जिनके व जनता का बख्त न हुआ।

मुल्तान में आन्तरिक व्यापार का सुकन करने के लिए गंग पर में व अन्तर्गत का हत्या किया जिनसे धानुधा के आने जाने में बाधा पत्ता था और जनता का

ध्यापारित समृद्धि का धना लगता था। इस बुद्धिमत्तापूर्ण नीति से पत्तनशासन ध्यापार का पुरारथा हुआ।

राजस्व-व्यवस्था की आर पीगढ़ न जा ध्यान लिया उससे उसकी आय में पर्याप्त वृद्धि हुई। इस वृद्धि के कई कारण थे—(१) पट्टन में अती सता तथा उन्नत पगनें (२) मिनाई-नर और ( ) बाग। फीराज का बाग का बहुत शोक था। उसने शिली के आगपास पना के १२०० बाग सगवाय जिनसे एक लाख अस्सी हजार की बायिक आय हाता थी। इससे शिली का लाघ-समस्या भा हन हा गयी।

उपयवन सुधारा के फलस्वरूप कृषि का विस्तार तथा ध्यापार की उन्नति हुई जनता का समृद्धि बना तथा राज्य की आय में वृद्धि हुई। अनाज कपा तथा जीवन का आवश्यकता का जय वस्तुएं बहुत सस्ती हा गया। तबतान नसका का कथन है कि राज्य में न कहीं ऊज गीव था और न कोई कृषि याग्य भूमि एसा था जा बिना जुता पना रहा हा। इस कथन में अनिशयातिन हा सतना है कि तु मम संह नहा कि विमान कठिन परिश्रम करत थे और उनक खतो में पहन अनन वर्षा का अपक्षा कही अधिक उपज हाती थी। शम्स शिराज अफीक निम्नलिखित शाला में फीराज के नाभगयन राजस्व-सुधारा के परिणामा का उल्लेख करना है— उनक (जनता के) घर अत सम्पत्ति घाना तथा फनीचर स भर पड थे प्रत्यक यकिन के पास प्रचुर मात्रा में साना तथा चांती थी कोई स्त्री एसी न थी जिसके पास आभूषण न हा और न कोई घर ऐसा था जिसमें जल्द पलंग और दीवान न हा। धन खूब था और सभी लाग जाराम से रहत थे। इस युग में राज्य का आर्थिक विवाचियापन का सामना नहीं करना पडा। दाआव से अस्सी लाख टका की आय हाती थी और दिल्ली का राजस्व छह कराड पचासी लाख टका तक पहुँचता था।

फीरोज की राजस्व नीति में तान मुख्य दोष थे। भूमि को ठेक पर देने की प्रथा का विस्तार पहला दोष था। यह प्रथा इस समस्त युग में चला आयी थी यद्यपि अलाउद्दीन खानजी तथा मुहम्मद तुगलक न इसका समाप्त करने का प्रयत्न किया था क्याकि वे भूमि का राज्य द्वारा सीधा प्रबंध पसन्द करत थे। परन्तु इसके विपरीत फीरोज न इस व्यवस्था का बहुत प्रोत्साहन लिया। राजस्व वसूल करने का काम ऊची से ऊची बोती बोलने वाले ठेकेदारों को द दिया गया था वे किसानों से अधिक से अधिक धन खसोटन का प्रयत्न करत थे। दूसरा दोष जागीरदारी प्रथा थी। अलाउद्दीन खानजी तथा मुहम्मद तुगलक दोना सनिक तथा असनिक पदाधिकारिया का जागार देने के विरुद्ध थे। फीराज न सेनापतियों सनिका और असनिक पदाधिकारिया का भी जागीरों के रूप में वेतन देने का नियम बना दिया। जागीरों के पट्टे कुछ बड़ा

राज्य के राजस्व वसूल करने वाला का उच्च दिया जात था। उस राज्य का हानि तथा जनता का कष्ट होता था और जागीरदारों का भी अपना भूमि का जो अधिकार मित्रता चाहिए था उसमें कम मित्रता था। तीसरा दाव था कि फाराज न जजिया व विस्तार में वृद्धि की और उसका अधिक बढाव न वसूल किया। जजिया एक धार्मिक कर था और गर मुसलमानों को दिया जाता था इसलिए वह कम ही बहुत अप्रिय था। किन्तु चूँकि फाराज धर्म व विषय में अधिक कट्टर था इसलिए उसने उस जोर भा अधिक बढाव न वसूल किया। उस यह बात नाति विन्द्य मानूस पत्नी था कि ब्राह्मण जो हुन व आधारस्तम्भ हैं उस कर से मुक्त रहें। इसलिए मानस व इतिहास में प्रथम बार उसने ब्राह्मणों पर भी जजिया लगाया।

निर्वाह

दृष्टि का प्रास्ताविक दान व उद्देश्य से मुस्लिमों ने सिवाय व लिए अनक नहरों का निर्माण कराया। उसका आना से उस प्रकार का पाँच नहरें स्थापना। सबसे महत्वपूर्ण नहर वह था जिसके द्वारा समुद्र का पानी हिमालय तक पहुँचना था। उसका लम्बाई १५० मान था। दूसरी नहर जो ६६ मान लम्बा था मत्तलज से घग्घर तक जाती थी। तीसरा माडवा तथा मिरमौर का प्रायः व निष्कर्ष में आरम्भ कर हागा तक पहुँचना था। चौथी घग्घर से नवस्थापित नगर फाराजाबाद तथा पाँचवा समुद्र से फाराजाबाद का आना था। इनमें से कुछ व भग्नावशेष आज भी विद्यमान हैं। फाराज ने निर्वाह तथा यात्रियों को सुविधा व लिए १५० कुएँ खुदाये। दो सबसे बड़े नहरें १६० मान व विस्तृत प्रदेश का सावती थी। कवन दाआब में ही ५२ नमा बस्तियाँ बस गयी। नहरों से साच हुए प्रदेशों में गहूँ गन्ना मसूर आदि उत्तम फसलें बाया जान गयी। फल भी उत्पन्न किया जात था।

सावजनिक निर्माण-कार्य

फाराज ने सावजनिक उपयोगिता का अनक वस्तुओं का निर्माण कराया। कहा जाता है कि उसने २०० नगरों का स्थापना का किन्तु इस मस्या का हम सही तरीके से जान सकत यदि हममें हम उन गाँवों का भी न सम्मिलित कर लें जो पहले ऊँच अथवा नष्टभष्ट हा चुन थे किन्तु जो मुस्लिमों की दृष्टि का प्रास्ताविक दान की उदार नीति व कारण पुन बस गये थे। उसने फाराजाबाद सिन्धी व काश्गार फाराजशाह पन्हाबाद हिमालय जौनपुर और फाराजपुर (बंगाल व निष्कर्ष) आदि महत्वपूर्ण नगरों की स्थापना का। उसने चार मस्जिदों की भी महत्ता का भी बाबिल-नगरों पाँच जनागरी पाँच मस्जिदों का भी बसा हम स्नानागारा दस मस्जिदों और ली पुना का निर्माण



य। इस प्रकार सनिक सवा वशानुगत हा गयी और याम्यता तथा शारीरिक क्षमता क मिद्वान का कोई स्थान नहा रहा। तासर जस्ती अथवा नर हज़ार अश्वाराहिया का छाडकर जा राजधाना म रहत अ शप मना अमारा गरा जुटाया गयी दुकटिया स मिलकर बना था। मना क एस जग पर कंगाय सरकार का उचित नियंत्रण नहा रह पाता था क्याकि सनिका को भरती तरकारी और अनुशासन सनामन्त्री क सरक्षण म न हाकर जमीरा क हा शया म था। सनिक-सगठन दुबल हा गया और शक्ति का साधन नहा रहा।

### विदेश नीति

फाराज का विशेष-मानि दुबल तथा अस्थिर थी। उसन दक्षिण का जा मुम्मत् तुगलक क शासनकाल क अन्तिम तिना म तिल्ली म सम्बन्ध ताटकर पूण रूप म स्वतंत्र हो गया था पुन जीतन का प्रयत्न नहा किया। उन उसक मराह्वारा न बहमनी राज्य का जीतन क निग उम पर श्वाव डाना ना उमन यह कहकर टान किया कि मैं मुमन्तमाना का रक्त बहान क मवथा बिन्दू हू। यद्यपि राजस्थान क सम्प्रथ म उस इस प्रकार का कोई विचार नहा था फिर भा उमन मवाक मारवाट तथा अय राया पर पुन तिल्ली का प्रभुत्व स्थापित करन को च्छा नहा प्रकृत की। बगाल का जीतन का क्षाण प्रयत्न करन म भा उम कत्रपूण विफलता हाथ लगी। वास्तव म उमक जाक्रमणा न उमका सनिक प्रतिभा क अभाव का प्रदर्शित कर दिया और मल्लनन को उसस काइ लाभ नहा हुआ।

### बगाल

बगाल १२३८ ई म हा स्वतंत्र हा गया था और १३५२ ई तक हाजा इतियास न जा अपन का शममुद्दान इतियासशाह कहता था उम मममन प्रान्त का अपन अधीन कर लिया था। तत्परात उसन तिल्ली सल्लनन क शशिणी पूरवा भाग का जीतन क उद्देश्य म तिन्दुत पर जाक्रमण किया। इस जाक्रमण का फीरोज़ महन नहा कर सवा और ७० ००० अश्वाराही तथा एक विमान पन्न मना लकर उसन १२५३ ई म बगाल पर हमला कर दिया। इतियास अपना राजधानी पौटुआ का छाडकर भाग गया और स्वतंत्रता म जाकर शरण ना किन्तु फीरोज़ उम हमनगन न कर मवा। वर्षाकाल क आगमन क भय म मुन्नान ने युद्ध बन्द कर दिया और तिल्ली क लिए वापस लौट गया। भाग म इतियास न आक्रमण किया किन्तु पराजित हुआ और मना गुरदापूर्वक राजधाना का चोर गयी।

बगाल पर अपना अधिकार मिड करन क निग फाराज न पूरवा बगाल क स्वर्गीय मुन्नान क एक दामान जफरखी की सहायता करन क बहान १३५६ ई

इसी प्रकार मुन्शीयों और मन्सूबियों के ऊपर भी धार्मिक ज्याचार किये गये। मूकियों का भी उमर नहीं छाटा।

एक शासक के राज्य में मिस्र के नाममात्र के गलीफा के लिए अर्पित श्रद्धा का शासक अनिवाय था। गानाना में उमर के चार मायना-पुत्र तथा मानमूक के वंश प्राप्त किये। दिल्ली गानतन के अन्तिम म प्रथम बार फीरोज ने अपन का गलीफा का नाम घोषित किया। गलीफा का नाम मिस्र में उत्कीर्ण कराया गया और गुन्या में मन्तान के नाम के साथ उन्म किये गया।

### दास प्रथा

फैरोज का शासक का बहुत शोक था इसलिए उमर शासनमान में दास प्रथा को बन्द प्रातगाहन मिला। उमर मूरारों तथा अ य पन्नाधिकारियों का राज्य के सब भागों में अपन पाम गुनामा का भजन के लिए स्थायी आश्रम जारी किया। इन गुलामों की मह्यता एक नाम अम्मा हजार तक पहुँच गया और उनमें से चारों तरफ़ शाही महल में मुत्तान की सेवा के लिए भरता किये गये। उनमें ऊपर एक अलग जफर नियुक्त किया गया और उमर सहायता के लिए जनक अधीनस्थ पन्नाधिकारी तथा बन्धु रख किये गये। इन विभाग के यय के लिए एक भारी खर्च निश्चिन्त का और अधिकार गुनामा का विभिन्न प्रांतों में नियुक्त किया तथा उनकी शि शा और राजगार का अच्छा प्रबंध किया। किन्तु यह प्रथा अधिक हानिकारक सिद्ध हुई। उमर की भाँति गुनामा ने भी शासन में हस्तक्षेप करना प्रारम्भ कर लिया। दास प्रथा दिल्ली सल्तनत के छिन्नभिन्न हान का एक मुख्य कारण सिद्ध हुई।

### सेना

सेना का संगठन सामंता आधार पर किया गया था। ऐसा प्रतीत होता है कि जलाउद्दीन खजजा द्वारा सस्थापित स्थायी सेना छिन्नभिन्न हो चकी थी और उसका स्थान जमीरा तथा प्रांतीय सरकारों द्वारा जुटाये गये सैनिकों ने ले लिया था किन्तु पुराने शाही जगरक्षक पूर्ववत् बन रहे। सैनिकों को मामा-यतया जागारा के रूप में बतल दिया जाता था। कुछ थोड़े से अनियमित सिपाहियों का राजकाय से नबद वेतन मिलता था। बहुसंख्यक सैनिकों का वेतन के बल में विभिन्न प्रदेशों के राजस्व के भाग सौंप किये जाते थे जिनका हस्तांतरण ही संकता था। इन भागों का दिल्ली में पेशवर लोग जिहाई मूल्य पर खरान लेते थे और फिर उन्हें जिना में सैनिकों को आध मूल्य पर बचते थे। इस प्रथा से बन्धु भ्रष्टाचार फला और सैनिक अनुशासन को भारी धक्का लगा। दूसरा दोष इस नियम के कारण यह था कि सैनिकों के बूढ़े हाँ जान पर उनके पुत्र, दामाद अथवा गुनाम उनके उत्तराधिकारी बन सकते

य। म प्रवार सनिक सवा वशानुगन हा गयी थीर याग्यता तथा शाराखि समता व मिद्वान वा काई स्थान नहा रहा। नीसर अस्ती अथवा नव्व हनार अश्वाराहिया का छाडकर जा राजधानी म रहत थ शप सना जमीरा द्वारा जुटायी गया दुक्निया स मिनकर वनी थी। सना के इस जग पर कर्तीय सरकार का उचित नियंत्रण नही रह पाता था क्याकि सनिका का भरता तरेकी और अनुशासन सनामन्त्रा क सरक्षण म न हानर जमीरा व ही हाया म था। सनिक मगठन दुवल ्या गया और शक्ति का साधन नही रहा।

### विदेश नीति

पाराज का विदेश-नीति दुवल तथा अस्थिर थी। उसन दक्षिण का जा मन्मन् तुगनक व शासनकाल क अन्तिम दिना म दिल्ली म सम्बन्ध तान्तर पूण रूप म स्वतन्त्र हो गया था पुन जीतन का प्रयत्न नही किया। जब उमके सनाहकारा न बहमनी राज्य का जानन के त्रिए उम पर दगाव डाना ता उसन यह कहकर टान दिया कि मैं मुसलमाना का रक्त वन्तन क मवथा विरुद्ध हू। यत्पि राजस्थान क सम्बन्ध म उसे इस प्रकार का कोई विचार नहा था फिर भा उमन मवा मारवा तथा अय गाया पर पुन दिल्ली का प्रभुत्व स्थापित करन का इच्छा नही प्रकट की। बगान का जीतन का क्षाण प्रयत्न करन म भा उम कर्तव्यपूर्ण विफलता हाय गयी। वास्तव म उसक आज्ञमणा न उसकी सनिक प्रतिभा क जभाव का प्रदर्शित कर लिया और सत्तनत का उमस काई लाभ नही हुआ।

### बगाल

बगाल १२३८ ई म ही स्वतन्त्र हा गया था और १३५२ ई तक हाजी इतियास न जा अपन का शमसुद्दीन इतियासशाह कहता था उम समस्त प्रान्त का अपन अधान कर लिया था। तदुपरांत उसन दिल्ली सल्तनत क दक्षिणी पूरवा भाग का जीतन क उद्देश्य स तिरहुत पर आक्रमण किया। इन आक्रमण का पीराज महन नही कर सका और ७० ००० अश्वारोही तथा एक विशाल पन्त सना लेकर उमन १२५३ ई म बगान पर हमला कर लिया। इतियास अपना राजधानी पाँजा का छाडकर भाग गया और इक्नान म जाकर शरण ला त्रितु पीराज उम हम्नगन न कर सरा। वर्षाकाल के आगमन क भय म मुल्तान न मुड धर कर लिया और दिल्ली क त्रिए वापस लौट गया। माग म इतियास न आक्रमण किया त्रितु पगाजित हुआ और सना सुरक्षापूर्वक राजधानी को लौट गयी।

बगाल पर अपना अधिकार सिद्ध करन क लिए पाराज न पूरवी बगान क स्वर्गीय मुल्तान क एक नामा जपरगा की गहापना करन क बहान १३५६ ई



म उग्र रात्रि पर पुनः आक्रमण किया। शिवाग क उत्तमधिराज गिरफ्तार किया गया और अपना पिता का भीति भाग्य ही दुःखिता म शरण गया। फाराज का उमकी दामता स्वीकार करती गयी और अपना उन्शय पूरा किया गया किन्तु ही शिवाग का भाग्य लौटता गया।

### पुरो पर घड़ाई

बगान म लौटा म समय माग म कुछ समय के लिए फाराज जोनपुर म ठहर गया और यही म उमा जाजनगर क विरह प्रस्थान किया। उसका उद्देश्य पुरो क प्रतिष्ठ जगन्नाथ मन्दिर पर आक्रमण करना था। जाजनगर का राजा भाग गया। धमाध गुलतान न मन्दिर का अपवित्र किया आर मूर्ति का मसुदा म फिखवा दिया। बाग म राजा न समपण कर दिया और बास हाथा कर क रूप म भट करना स्वाकार कर दिया। तत्परात मुत्तान शिवाग चोट गया।

### नगरकाट का विजय

१०६० ई म मुत्तान न नगरकाट पर आक्रमण किया जो मुहम्मद गुलतक क शासनकाल क अन्तिम वर्षों म दिल्ली की अधीनता स मुक्त हो गया था। इन् महाान क घर क उपरान्त राजा न समपण कर दिया और मुत्तान न सम्मानपूर्वक उसका स्वागत किया। तूट क मास म उस १२०० सस्कृत क श्राव्य भी उपनयन हुए जिनम स कुछ का उसका आज्ञा स फारमा म अनुवाद किया गया।

### शिवाग की विजय

१२६१ ई म फाराज न ६००० घुडसवार असह्य पदत ४६० हाथा तथा जनक नावा का तकर शिवाग पर आक्रमण किया। वहा क राजा जाम बावनियां न उतनी ही शक्तिशाली सना लकर उसका मुकाबला किया। युद्ध म शिवाग का सना का भीषण क्षति उठानी पया और कुमुद क लिए गुजरात की ओर चोटना पया। किन्तु मागदशका न उस कच्छ क रन म फमा दिया जहाँ स बहु छह महाान क बाग निकल सका। मुत्तान तथा उसारी सना का काई समाचार न मिलन क कारण उन महीना म दिल्ली म बनी शिवाग रही। १२६३ ई म फीरोज न दिल्ली स अपन प्रधानमन्त्री सानजरी मकरून द्वारा भजा गया जतिरिक्त सना की सहायता स पुन धट्टा पर आक्रमण किया। जाम न कर दना स्वाकार कर लिया और मुत्तान अपना राजधानी का चोट गया।

फीरोज क शासनकाल म दश मगाया क आक्रमणा स पणतया मुक्त रहा। उनक कवन दा साधारण घाव हुए बताय जाने है जिनको बिना अधिक कठिनाई क पीछ खदम दिया गया।

विगोत्रो का वसन

पीगोत्र के शासनकाल के प्राग्भिक वर्षों में उसकी चचेरी पुत्र  
 मन्मथ की पुत्री सुभाबन्ध्या ने उसके जीवन का अन्त करने के लिए एक  
 पत्थर रखा जो विष बन गया। अगले चत्तर भी पुत्र विनाश में अपने शासन  
 की शक्ति का भंग किया। पहला विनाश गुजरात में हुआ। वन का सूत्रार  
 अफगान अपना घन वसूत लेकर गया जिनके पर उस प्रांत के राजसूय का  
 ठका उस किया गया था। अतः उमन विनाश का अर्थ खड़ा कर दिया  
 किन्तु वह पगाजित हुआ और मारा गया और उमका मिर अगार में भेज  
 दिया गया। दूसरा विनाश १३७७ में हुआ म हुजा अनी विना तनवार  
 की महायता में राजसूय वसूल करना असम्भव हो गया था। उसका भी अन्त  
 कर दिया गया। तीसरा विद्रोह कतहर के राजा मन्थ न किया और दो  
 मन्थ का बंध बन दिया। अफगाही को लष्क लेन का लक्षा में १२८० में  
 पीगोत्र ने स्वयं कतहर के लिए प्रस्थान किया। लष्क बंमारू की पत्नीपिया का  
 मार भाग गया अतः प्रजा मुल्तान के आघ का निवार बनी और उसने  
 अपने बन्धुओं की आजा दे दी। लष्की की मना द्वारा जनता पर अघ  
 अत्याचार किये गए, महारा निरपराध मार मारे गए और २,००० का बनी  
 बनार बनपुवन मुसलमान बना दिया गया। प्रांत के लिए पीगोत्र ने एक  
 अफगान सूत्रार नियुक्त किया और अगले पाँच वर्ष तक प्रतिवर्ष एक बार  
 लष्क की यात्रा करके उस अफगान के स्वरचित काम का पूरा किया।  
 इतिहासकार के शब्दों में इस मन्थका परिणाम यह हुआ कि स्वयं मृत मन्थ  
 की अत्याचार उत्कर मुल्तान में अत्याचारों का अन्त बन्ध के लिए प्रायना  
 करने लगी।

अन्तिम दिन तथा मृत्यु

पीगोत्र के अन्तिम दिन हुए तथा कल्याण में बसे। जुलाई १३७४ में  
 उसका पुत्र फनेरगी की तिम अपने अपना उत्तराधिकारी बना था मृत्यु हो  
 गयी थी। तिम मुल्तान का भीषण आघात पहुँचा था। वह भी यह वन पूरा  
 था परा था मार के कारण उसकी शक्ति तथा निष्प बुद्धि शीघ्र खेत लगी।  
 अब उमन अपर दूसरे पुत्र जफरगी का उत्तराधिकारी नियुक्त किया किन्तु  
 शत्रु ही उसकी भी मृत्यु हो गयी। अपने या मुल्तान में अगले तीसरे पुत्र  
 मन्मथगी का पुत्रा किन्तु उस विधिपूर्वक उत्तराधिकारी नहीं नियुक्त किया।  
 प्रधानमंत्री मानजरी मन्थुन की पुत्र मन्थ पर मृत्यु हो गयी थी और  
 उसका पुत्र मानेजरी प्रधानमंत्री हुआ था। मन्थ की मन्थ शक्ति अब उगी  
 न हस्तगत कर ली। प्रधानमंत्री ने पत्थर बनना आरम्भ कर दिया और  
 पीगोत्र की मन्थायी कि मुगलक जफरगी तथा अन्य अगीरा त निवार

गिहागन हस्तगत करन का प्रयत्न कर रहा है। धीमे-मे आकर गुल्लान ने गानजही का युवराज व समर्थकों का स्थान ले लिया था। परिणाम यह हुआ कि जयपुरी का गिहागन करन प्रमानमंत्री व परमवती यथावत् रण किया गया। किन्तु शाहजाना मुहम्मद मंत्री का भय बनाकर किमा प्रसार गुल्लान व महान म धुम गया और गिना व घटना पर गिरकर कहा कि गानजही विश्वासघाती है और राजपरिवार का नाश करके स्वयं जयपुर लिये गिहागन का माग प्रगस्त करना चाहता है। फीरोज न राजकुमार को गानेजही का स्थान लेने की आज्ञा देती और अत्यंत घमंदाज बन गया। किन्तु गानजही पीछे बगैर म भाग गया और मवान म जाकर शरण ली। अब शाहजाना मुहम्मद शामन म हाथ बटान तथा शाही उपाधिया का धारण करन गया। अगस्त १३८७ म उमे विधिवत युवराज घोषित कर दिया गया। युवराज न गानजही को मरवा डाना और राज्य की सम्पूर्ण शक्ति हस्तगत कर ली। किन्तु वह राजकाज म ध्यान न देकर आमोद प्रमोद म निप्त हो गया। शामन व्यवस्था शिथिल पन गयी और अराजकता हा गया। कुछ शान्ति अमीरा न मुहम्मद की उत्तरदायित्व की भावना को जापन करन का प्रयत्न किया किन्तु बाइ परिणाम नहा रहा। निराश होकर उत्तान उमकी सत्ता के विरुद्ध विद्रोह समर्थित किया। मुहम्मद को राज्य छोड़कर युद्ध करना पया। उमकी विजय होने ही वाली थी कि अमीरा न गुल्लान का ले जाकर युद्धक्षेत्र म गला कर दिया। फीरोज को मय-मचापन करत दख मुहम्मद की सना व पर उखड गय और बहु स्वयं पराजित होकर जीवन रक्षा के लिए भाग गया। अब मुल्लान ने अपने नाती गियामुद्दीन तुगलकशाह को जो स्वर्गीय फतहवा का पुत्र था अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया और उमे शान्ति उपाधि प्रदान की। २० मितम्बर १ ८८ ई का नगभग अस्सी वष की अवस्था म चूने मुल्लान की मृत्यु हा गयी।

### फीरोज का व्यक्तित्व तथा चरित्र

फीरोज के व्यक्तित्व तथा चरित्र के सम्बन्ध म इतिहासकारों के विभिन्न मत है। बरनी तथा शम्स सिराज अफीफ आदि उसके समकालीन लेखकों न उसकी बहुत प्रशंसा की है और लिखा है कि मुल्लान नामिरानी महमूद व बाद वह मरसे अधिक शायप्रिय श्यानु तथा उदार शासक था। हिस्ट्री आव इण्डिया एंड टोल्ल बाइ इटम ओन इस्टोरियस के लेखक हेनरी रिचर्ड तथा हिस्ट्री आव इण्डिया व रचयिता एन्फिस्टन न फीरोज को सलतनत युग का अवसर कहा है। वी ए स्मिथ का उनसे गम्भीर मत भेद है और वह लिखता है कि फीरोज की अवसर से तुलना करना भूलता

३। हा इस्वीप्रसाद का कथन है कि फीरोज म उस विज्ञान हृद्य तथा किन्ती मस्तिष्क वान मझाट (अकबर) का प्रतिभा का जनाश नी नया था त्रिमन मावजनिव हिता क उच्च मच म मभी सम्प्रदाया और धर्मों क प्रति शाति सम्भावना तथा महिष्णुता का मन्त्र लिया। मर बूझन ये का विचारपूण मर है कि अकबर म पहले भारत म मुस्लिम शासन के इतिहास म फागज क राज्यशासन क माय एन उत्पन्न राज्य युग का अवमान जाता है। वास्तव म सत्य एम था जना उग्र मता क बीच म ही मिलना।

एम बात म मभा लगक एकमत है कि फारोज म मस्तिष्क के नयी तिन हृद्य क अनक गुण विद्यमान थ। जहाँ तक उसक विश्वासमा और मिदाला का सम्प्रथ था वह ईमानदार तथा मरवा था और वास्तव म अपनी प्रजा का शिषी था। मर पन्ने जयवा वाट क शिनी के किमी मुनात न जपनी प्रजा की भौतिक समृद्धि के लिए जतना काय नहीं किया जिनना कि उमन। उमरी राजस्व नीति के कारण कृषि की उत्तति और वृद्धिजनना का आगम तथा सुख मिला। उमन आपार का उमुक्त करन क लिए उम युग म जा कुछ सम्भव न मका किया जियके परिणाम स्वयं वस्तुओं का मूय घुन मन्ता हा गया। हा रामप्रसाद त्रिपाठी रियन है कि जनना किमी शासन क विषय म उम भौतिक समृद्धि क आधार पर निणय लेती है जिसे वह देय मन्त्री है तथा अनुभव कर मक्ती है। मरिण यह आश्चय की बात नहीं कि सत्कामीन तथा आधुनिक शिषामकारा ने फागज क सम्प्रथ म अत्यत मुदर निणय लिया है।

मुनात के अगणित दान-कार्यों के कारण उमरी मवप्रियता म अधिक बृद्धि हुई। गोजगार का अन्तर ज्ञान विभाग पाठशाळा तथा विज्ञानम जिनके लिए राज्य की ओर से धर्मस्व प्रदान किय गये थे विज्ञाना तथा धार्मिक योगा की जीवन निवा के लिए शिष गये भक्त तथा शायद्वीर्यो मात्रिया के लिए जुगाय गये आगम तथा सुविधाए मरवागी नीकरा के प्रति आपाण व्यवहार—म मव चीजा न मिलकर जनता क हृद्य म य भावना उत्पन्न कर ती कि मुन्तान वास्तव म हमारा मरघष है। पूव पुर्वी मुनाता ने जनता क हिन के लिए हम प्रकार के काय नहीं रिय थ। एम बात पर मर एन की जरूरत नह। कि मुन्तान जिन तुंगलक क शासनशासन क कल्प तथा मुना के उपरात इस प्रकार क कार्यों की अत्यधिक आवश्यकता थी। एम समय पर नयी विजयें प्राप्त करने कानून तथा व्यवस्था कायम करने और राजस्व वगून परन तक ही शासन क काय भीमित थ। फीरोज न जन शिष क लिए राज्य क कार्यों के क्षेत्र का विस्तार किया इगक लिए उम श्रय मिला चाहिए।

हा गया। उगरी मृत्यु के माघ १३२० ई. में गियागुरीन तुगलक द्वारा स्थापित तुगलक-वंश का अंत हुआ गया।

अब अमीरा ने अपना नाम मुल्तान नामक एक व्यक्ति का मिहामत के लिए पुत्रा किन्तु उगरी मुल्तान की उपाधि नहीं धारण की। उस व्यवस्था कायम करने तथा विनाही प्राप्ति का दमन करने में गफनता नहीं मिल सकता थी जबकि फीराज के उत्तराधिकारी जिन्हें मुकुटधारी शासक होने का गोख प्राप्त था दम काय में विफल हो चुके थे। माघ १४१४ ई. में मुल्तान के गियागरी ने दोलतली का दिल्ली में धर लिया और कुछ महीना के प्रतिरोध में बाद में समझौता करने पर बाध्य किया और बन्दी बनाकर तिसार भेज दिया। २८ मई १४१४ ई. का गियागरी दिल्ली का मुल्तान हुआ और तयानिधन साम्य-वंश का नाव डाला।

तिमूर के चने जान के बाद अब स्वतंत्र राज्य के इतिहास का विस्तार में यहाँ बणन करने का आवश्यकता नहीं है। यह हम पहले ही लिख चुके हैं कि मलिक उस शक उपाधिकारा खवाजाजहा जौनपुर में एक स्वतंत्र शासन के रूप में राज्य करता था। इस नवस्थापित राज्य में जौनपुर बिहार का कुछ भाग पूरा अवध तथा कन्नौज तक का प्रवेश सम्मिलित था। आक्रमणकारी के चने जान के उपरांत जौनपुर के शासक ने दिल्ली का अपने नियंत्रण में लाने के उद्देश्य से उसके विरुद्ध आक्रमणकारी युद्ध किया। बगान मुहम्मद बिन तुगलक के समय से ही स्वतंत्र हो गया था। फीराज ने पुनः उस पर प्रभुत्व स्थापित करने के लिए दो आक्रमण किये थे किन्तु सफल नहीं हुआ था। गुजरात जा कुछ वर्ष पहले तक दिल्ली सल्तनत का एक प्रांत रह चुका था अब मुजफ्फरशाह की अधीनता में एक पूर्ण स्वतंत्र राज्य बन गया था। मालवा भी किसी के प्रभुत्व में नहीं था। उसके शासक तिलावरखी ने मुल्तान की उपाधि नहीं धारण की किन्तु व्यवहार में वह पूर्ण राजसत्ता का उपभोग करता था। पंजाब मुल्तान और सिंध तिलावरखी के हाथों में थे जिस तिमूर ने उन प्रांतों पर अपना सूत्रार नियुक्त किया था। समाना का प्रांत भी गालिबखी की अधीनता में एक छोटा-सा राज्य बन गया था। भरतपुर के निकट बयाना पर शम्सखा औहशी शासन करता था। कानपी और महाबा मुहम्मदखी के अधिकार में थे। गंगा और यमुना के उपजाऊ दानाव में बिनाह हा रहे थे। खानियर भी एक हिंदू राजा के अधीन स्वतंत्र राज्य बन गया था। मवान के प्रवेश का जिसमें गुर्दाव अलवर और भरतपुर सम्मिलित थे कोई स्वामी नहीं था। कभी उस पर एक का अधिकार हा जाता था और कभी दूसरे का। दक्षिण में विजयनगर के विशाल राज्य का जिसकी स्थापना मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल के

बाद बंदी म हूँ था, एक पूण स्वतंत्र राज्य का पत्र प्राप्त था। तत्पश्चात्  
 एक दूसरा हिंदू राज्य स्थापित हो चुका था। इसका अनिश्चित दिनांक भारत  
 में प्रसिद्ध कम्पना राज्य था। सान्ना भी दिल्ली से सम्बन्ध तत्पश्चात् एक  
 स्वतंत्र राज्य बन गया था। इस प्रकार निम्नलिखित सत्तनन की छिन्न  
 निम्न हानि की प्रक्रिया का पूरा किया जिसका प्रारम्भ मुहम्मद बिन तुगलक के  
 शासनकाल के अन्तिम दिनांक में हो गया था।

**छिन्न-वंश के पतन के कारण**

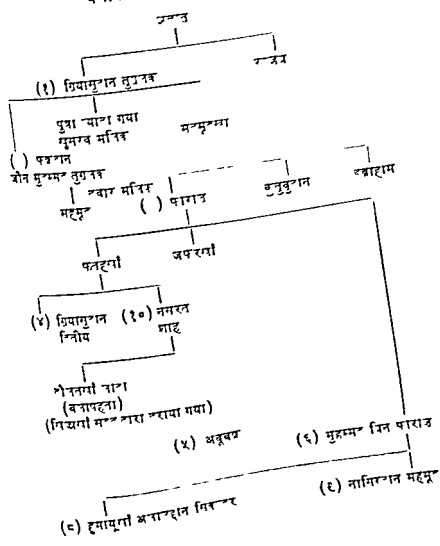
जिस समय मुहम्मद बिन तुगलक सिंहासन पर बैठा उस समय उदात्त  
 आसाम नया और काश्मीर का छाडकर तमिल प्रदेश भारत में उप महात्मा  
 सिंहा सत्तनन के अन्तर्गत था। किन्तु इस वंश के अन्तिम शासक नामिस्तान  
 मन्सूर के शासनकाल में वह सिन्धुद्वार एक छोटा-सा राज्य रह गया जिसके  
 सिन्धु और प्रविष्टा का अनुमान उस युग का प्रचलित कहावत से लगाया  
 जा सकता है जगत के स्वामी का शासन दिल्ली में पानम नक फना हुआ  
 है (पानम सिंहा से लगभग सात मील का दूरी पर स्थित आधुनिक हवाई  
 अड्डा है)। और जसा कि हमें दखल चुके हैं यह सकुबिन राज्य भा १४१६ में  
 म तुगलक राजवंश के ह्रास से निकल गया।

तुगलक-शासन के पतन तथा नाश के अनेक कारण थे। सबसे प्रथम  
 मुहम्मद तुगलक का चरित्र तथा नाति सत्तनन के सिक्खन के लिए बहुत कुछ  
 जिम्मेदार थे। उसका काल्पनिक याजनाजा अत्यन्त बठार लुब्धा तथा उमत्त  
 विजयनीति के कारण अनेक प्रान्तीय सूबेदारों ने अनुभव किया कि सिंहा तथा  
 स्वतंत्रता पर ही हमारा सुरक्षा अवलम्बित है। इसी भावना के परिणामस्वरूप  
 सिन्धु में विजयनगर तथा बहमना राज्या का स्थापना हुआ बगान सिंहा से  
 पृथक हो गया और सिन्धु भा लगभग स्वतंत्र बन बैठा। जो प्रान्त मल्लनन के  
 अन्तर्गत रहे रहे थे उनमें भी अमत्ताप तथा विशाह का जाग नभवन उगा।  
 और, यद्यपि पाराठ ने अपने पूर्वाधिकारों द्वारा किये गये जनता के धावा का  
 चरन का प्रयत्न किया किन्तु उसका उत्तारता धार्मिक अमर्शानुना सामन्ता  
 राज्या का पुनर्स्थापना तथा सैनिक अनुशासन और गुणवत्ता का नष्ट करने  
 का नाति ने राजमत्ता का जग या स्वाधत्ता के सिन्हा और शासन-उपवस्था का  
 अन्ता सुत्र बनना सिन्हा कि उममपुन जावन डानना अगम्भव हो गया। नागर  
 पाराठ तुगलक का अवस्था आवश्यकता से अधिक है। उसका ही पुत्र जो  
 पदोत्तथापूर्वक राज्य का प्रवचन कर सकते थे उससे पत्र ही भर गये। अनेक  
 अनिश्चित सूत्र मुन्नात ने अपने उत्तगाधिकारियों का सिन्हा का उचित प्रवचन  
 का किया जिसका परिणाम यह हुआ कि तुगलक वंश में काग लया अन्त्य न  
 रका जिनमें भविष्य में सफ्त शासक हान के लक्षण सिन्हाया दन। और सिन्हा

क पूष गुप्तता का भाँति गुप्तता की राज्य व्यवस्था का अन्त निरकुशा  
 क मित्रा त पर आधारित थी और तथा ता गुप्ताद रूप म तत्र तकती थी जब  
 ता रि शागा गुप्त माय तथा परिण यत रणो या न व्यक्ति क हाथा म त्तन ।  
 टगक पिपरीत यि शागा रुरम हाता ता उमरा रुरतना शागा क मभा  
 विभागा म प्रतिविम्बित हाता थी । तगत्र तग क परवनी गुप्तान अद्याय  
 तथा महत्त्वहीन थ और भाग विभाग म विष्ण र्णन क कारण शक्तिशाला  
 अमीरा क हाथा की कटपुत्रो बत गय थ । उनम स रिगा म इतनी राजनातिर  
 मू मशगिना तथा बुद्धि नहा थी कि वह एक उपयुक्त व्यक्ति ता अपना प्रधान  
 मत्री बनकर उत पूष किरााम तथा समयत प्रदान करता । माय्य सचानक  
 क अभाव क कारण ररवार म प्रतिस्पर्डी गुट उठ गड हए और गुप्त-बुद्ध ठि  
 गय । पाँचवें दरबारी अमारा का चरित्र भा उतना ही पतिव हा चका था  
 जिनता रि मुल्ताना का । इसतिण उनम प्रथम श्रणा की माय्यता क यक्ति  
 का मिनता हा असम्भव सा गी गया था । तुरी शसन क प्रारम्भिक युग म  
 ताग प्रथा क कारण ताव महापुरुष उत्पन्न हुए थ किन्तु फाराज क समय म  
 इस प्रथा का पतनी तजी स पना हुआ रि उसक तथा उसके उत्तराधिकारिया  
 क गुप्तता म कुतुबुदीन एयक कस्तुनिश अथवा बनवन जमा काई यक्ति  
 न निकल सका । छठे तिल्ली सत्तनत शक्ति तथा सनिन सगठन की सुमाय्यता  
 पर आधारित थी । मुहम्मद फीराज तथा उमके उत्तराधिकारिया के समय म  
 तिल्ली की सना शक्ति का साधन नहा रही और इसतिण वह जनता पर राज  
 शक्ति का आतक नही कायम रख सनी । सातवें सरकार पुलिस सरकार थी  
 और उसके मुख्य काम कानून तथा यबस्था कायम रखना और राजस्व बसूत  
 करना थ जब वह पन दा कतया का भा सत्तापजनक पावन न कर सना  
 तब उसक अस्तित्व का काई प्रयाजन ही नही रहा । आठवें दक्षिण तिसका  
 जनाउद्दीन रलजा क समय म प्रथम बार विजय विधा गया था सलतनत का  
 एक उपत्वशस्त भाग रहा । उस पर सतजी विजता जसा प्रतिभाशाला यक्ति  
 ही नियन्त्रण रख सक्ता था । किन्तु दुःख शासका क समय म दक्षिण म अनक  
 विन्नेट ए और तिल्ली स उसके पृथक हो जान स उत्तरी भारत पर भी उसका  
 बुरा प्रभाव पना । अन्त म यत्रपि हिंदू दा सौ बष तक दक्षिण म विदशी  
 शासन क अतगत रह चुके थ किन्तु उहीन अपनी स्वाधानता का पुन स्थापित  
 करन का प्रयत्न नहा त्यागा था । उत्तरी भारत म भी कुछ एस भाग थ जिन  
 पर तुक दृष्टता स अपना प्रभुत्व कायम त कर सक थ रणथम्भोर का ही  
 जीतन म डड सौ बष स अधिक तग गय थ । दाश्राव का प्रन्थ यद्यपि तिल्ली  
 क निरुट स्थित था किन्तु उसका भी कभी दमन न हा सका था । तुगत्र तागा  
 की दुबलता स साभ उठाकर राजस्थान स्वतंत्र हा गया । ग्वालियर तथा अय

राजा न भा लिया क प्रभाव का पुत्रा जना फेला । मन्त्रक समस्त तन्वा  
 क मविद प्रभाव क बावजूक यदि मन्त्रक-पुत्र का जमानता न सिद्धा मन्त्रक  
 विन सिधौ नक सिद्धा मन्त्रक जिनक बावन न्य जना ना द्य तक मन्त्रक  
 बावन का बात हाता ।

### वर्गावली क तुलना





## BOOKS FOR FURTHER READING

- 1 ELLIOT & DOWSON History of India etc Vol III
- 2 IRA AD ISHWARI A History of Qaraunah Turks in India Vol I
- 3 HUSAIN MAHDI Rise and Fall of Muhammad Bin Tughluq
- 4 TRIPATHI R I Some Aspects of Muslim Administration
- 5 HAIR WOOLFLEY Cambridge History of India Vol III
- 6 AIYANGAR K S South India and Her Muhammadan Invaders

## सैय्यद वंश

विजयवा (१६१६-१६२९ ई)

विजयवा तथाकथित सैय्यद-वंश का प्रथम तथा प्रथमतः शासक था। पगार मूहम्मद का वंशज हान का उसका दादा सदास्पद था जोर बुगारा के शत जनानुदीन का मायता पर निर्भर था। किंतु इतना निश्चित प्रतीत होता है कि उसके पूर्वज अरब से जाय थे। विजयवा ने मुल्तान की उपाधि नहा धारण की और अरब आग की उपाधि से सन्तान किया। उसने निम्न के वन्य पुत्र तथा उत्तराधिकारी शाह ख के प्रतिनिधि के रूप में शासन करने का बहाना किया और कहा जाता है कि नियमपूर्वक उस वापिस कर भजता रहा। उसने खुन्वा मुगल शासक के नाम में पलाया किंतु सिक्का में अपने मुगलक पूर्वाधिकारिया का नाम ही खुन्वाता रहा। उसके सिंहासन पर बैठने में पञ्जाब मुल्तान तथा सिंध फिरे लिली सन्तत के अग बने गये। राज्य का विस्तार अब नगभग दूना हो गया।

विजयवा का अपन शासनकाल में कोई महत्वपूर्ण सफलता नही मिला। उसने इटाया कतहर कन्नौज पटियाली और कम्पिन का पुन जातन का सपन किया किंतु अधिक सफलता न प्राप्त कर सका। नगभग प्रत्येक वर्ष बह चूट और राजस्व वसूल करने के लिए सैनिक यात्रा करना और कुछ चूट का मान नकर नोट आता। राज्य के जिना में सनिका की सहायता के बिना राजस्व नही वसूल हो पाता था। उसके मंत्री ताज उन मुल्तान न अव्यवस्था का सपन करने में उसका महत्वाग किया किंतु उस महत्वपूर्ण सफलता नही मिला। लिली तथा गुजरात जोर लिली तथा जौनपुर में प्रतिद्वन्द्विता आरम्भ हो गया और इन दोनों नवस्थापित राज्या के शासक न लिली का जानकर अपने राज्या में मित्रान का प्रयत्न किया। पञ्जाब में एक छलिया न अपन का सारगवा बननामा और हाशियापुर के विक्ट उपर्य किया। उत्तर-पूर्वी पञ्जाब में गोकर्ग-नता जमरय न अधिक उपर्य सचाया। सवात के बहानुर धारि न भी मिर उठया। दाआब के सामन निरन्तर विनाह करत रहे और जब तक उनके विप्लव तलवार का प्रयोग नहीं किया गया उहनि सना राज्वा नही लिया। विजयवा ने इन आय दिन हान पात विदाहा का दमन करने के

दिया तथा उगाता सामान भी न दिया। इस सामयिक सहायता के लिए बहाना था कि राजा की उपाधि प्रदान की गयी और मुहम्मद ने उस लक्ष्मी मरतार पर प्रेमपूर्वक अपना पुत्र बहादुर पुरारा।

दुर्भाग्यवश लक्ष्मी समय दिल्ली की राजनीति में एक नया चक्र चल पड़ा। बहाना लक्ष्मी स्वयं दिल्ली का मित्रगण हस्तगत करने की आकांक्षा रखता था। जगन्मय गान्धर्व ने भी उसकी महत्वाकांक्षा को प्रोत्साहन दिया क्योंकि वह स्वयं अपना काम बनाना चाहता था। अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए बहाना ने अफगानों की एक विजय मना करनी करना प्रारम्भ किया। एक भारी सेना लेकर उसने दिल्ली पर आक्रमण किया किन्तु उस हस्तगत करने में सफल न हो सका। फिर भी मध्य-राज्य का पतन कुछ ही दिनों की बात थी। इस जगह नौग सुल्तान की अवना कर रहे थे। राजस्व वसूल नहीं हो रहा था और सबम वला सबक यह था कि राज्य का शक्तिशाली मरतार बहाना बड़ी उत्सुकता से मल्तनत पर घातक प्रहार करने के लिए उपयुक्त अवसर की प्रतीक्षा कर रहा था। इसी सबकपूर्ण परिस्थिति में १४४५ ई. में मुहम्मद की मृत्यु हो गयी। वह अपने पूर्वाधिकारियों से अधिक शक्तिशाली सिद्ध हुआ।

### अलाउद्दीन आलमशाह (१४४५-१४५० ई.)

अब मलिक और अमीरों ने मुहम्मद के पुत्र का अलाउद्दीन आलमशाह के नाम से सिंहासन पर बिठाया। नया सुल्तान अपने पिता से भी अधिक अयोग्य निकला। बहाना नदी न दिल्ली सरकार की दुबलता से अधिक से अधिक लाभ उठाने का प्रयत्न किया। उसके भाग्य से नया सुल्तान तथा उसके वजीर हमीदशाह में खगडा छिड़ गया। सुल्तान हमीदशाह का वध करना चाहता था क्योंकि हमीदशाह ने बहाना का दिल्ली आमंत्रित किया और साक्षात् कि यह अफगान अमीर मरे हाथ की बठपुत्रों को बंधन और उसे पूर्ववत् शासन का संचालन करने देगा। किन्तु बल्लोचणमा यत्नित नहीं था कि अजय किसी व्यक्ति का राज शक्ति में हिस्सा देता। उसने बुद्धिमत् नीति से दिल्ली पर अधिकार कर लिया और हमीदशाह को अपने माम से हटा दिया। अलाउद्दीन आलमशाह नीच प्रकृति का शासक था उसने सम्पूर्ण राज्य बल्लोचण को सौंप दिया और स्वयं बल्लोचण में जाकर रहने लगा। बहाना ने खुदवा तथा मिकला से आलमशाह का नाम हटवा दिया और १६ अप्रैल १४५१ ई. को अपने का सुल्तान घोषित कर दिया। अलाउद्दीन एक साधारण अमीर की भांति बल्लोचण में जीवन बिताता रहा और बल्लोचण कुछ वर्ष उपरान्त उसकी मृत्यु हो गयी।

वगावली वृक्ष सय्यद वंश  
मलिक सुतेमान

(१) खिज्जरा सय्यद

(२) मुहम्मद बिन मुबारकशाह

फरीद

(३) मुहम्मदशाह

(४) अलाउद्दीन जावमशाह

(बहलोल खान खानापरना)

### BOOKS FOR FURTHER READING

- 1 SAJJIDATI YAHYA BIN AHMAD Tarikh-i-Mubarakshahi
- 2 ELIOT & DENISON History of India etc Vol III
- 3 HAIR WOOLSELEY Cambridge History of India Vol III

## लोदी-वश

वहतोन नानी ( १६११-१६८८ )

### प्रारम्भिक जीवन

शिरिनी के प्रथम पतन राय का मस्यूपन वहतोन नानी अफगानिस्तान के गिनजाई कबील की मन्त्वपूण शाखा नानी के शाहूमेन नामक बुदुम्ब से उत्पन्न हुआ था। उसका दादा मन्विक बहराम फाराज तुगनक के समय में मुल्तान में आकर बस गया था और उस प्रान्त के सूबदार मन्विक मर्तान के यहाँ नौकरी कर रहा था। उसके पाँच पुत्र थे जिनमें मन्विक मुल्तान शाह तथा मन्विक काता नामक दो नें कुछ हयानि प्राप्त कर ली थी। वहतोन मन्विक काता का पुत्र था जो जसरथ सोकपर को हराकर स्वतन्त्र सरदार बन गया था। वहतोन के चाचा मुल्तान शाह का खिजगी न १४१६ ई में सरहिन्द का सूबदार नियुक्त किया था और इस्लामिया की उपाधि प्रदान की थी। उस पञ्जाब के अफगाना का अपन नतुत्व में संगठित करके भी पर्याप्त सफलता मिली। अपना मृत्यु में पहले उसने अपने पुत्र कुतुबखान को छात्रक रत्नान का अपना उत्तराधिकारा घोषित किया। उसकी मृत्यु के उपरान्त वहतोन सरहिन्द का सूबदार नियुक्त हो गया। बाद में उसे ताहौर का भी अपनी सूबेदारी में सम्मिलित करने की आज्ञा मिल गयी। वह चतुर तथा मन्त्वानाम्नी पन्थाधिकारी था इसलिए उसने अपनी सेना की मस्यु बनायी और शीघ्र ही मस्यु राय में प्रथम श्रेणी का सूबदार बन गया। जब मानवा के मन्मू खन्जी ने शिरिनी को आक्रान्त किया तो वहतोन शीघ्र ही अपने स्वामी मुहम्मदशाह की सहायता के लिए पहुँचा। इस सेवा के पुरस्कारस्वरूप उसे गानेजहाँ की उपाधि मिली। किन्तु उस अफगान नेता का एक प्राण की सूबेदारी में सन्तोष नहीं हुआ। शिरिनी की गद्दी पर अभियार करने की उसका मन्त्वकाक्षा थी। जब अनाउद्दीन आलमशाह ने अपन मन्त्री हमीद में बगल कर लिया और उसको हत्या करने का प्रयत्न किया तो वहतोन को अपनी अभिगाथा पूरी करने का अवसर मिल गया। क्रोध के आवेश में आकर हमीद ने वहतोन का शिरिनी बुनाया और शाही सना का भार अपन ऊपर लेने को कहा। सुल्तान पन्

ग क्याप को भाग गया था इसलिए दरबार का शक्ति अफगान नता न  
 प्लान कर ता ।

मिनामवारोहण

बन्तल सम्पूर्ण प्रभुत्व का आकाशी था इसलिए वजीर हमीर का वह  
 रात्रि में भाग नहा ना चाहता था । किन्तु मामन मन्त्रान का काय अभी  
 व मन्त्रा क थाया म था अत गुन रूप म उसम क्षमता करन म वहनाल क  
 लि क्वर उत्पन्न हा सकता था । मन्त्रिण अपनी शक्ति तालुपता को तृप्त करन  
 क गिण चात्रा अफगान न शक्ति-सच म काम लिया । उनन अपन अनुयायिया  
 का त्रिम म शन प्रनिगल अफगान ये हमीर के सम्मुख अनाडिया जया बर्ताव  
 करन का मन्त्रा नी । बन्तान न स्वयं हमीरों क प्रति अत्यन्त सावधानी  
 पून तत्रता तथा चादुकागितापूण भ्रातृभाव का प्रणयन किया । उसन उस  
 विवाम लिया लिया कि मरी कर्त्त मन्त्रवाकाक्षा नहीं है और मैं मन्त्रापति क  
 म म मन्त्रा ह । उसकी इन वाता तथा अफगान मन्त्रिण के अनाडिया  
 म आकर्षण क कारण हमीरों का म आ गया और उसने वह तो न तथा  
 म्भर अनुयायिया का प्रतिनिधि गुन दरबार एह म आने की आता द दो ।  
 एर तिन अपन अनुयायिया के मात्र बन्तो न वजीर का अभिवादन करन गया ।  
 मन्त्रान क समय वहनाल क चचेरे मर्त्त कुतुबियां न जजीरों निकालकर प्रधान  
 मन्त्री क थाया म धारा जार कम ना और कहा कि राय की भलाई मी म  
 है कि आप कुछ तिन विश्राम कर नें । हमीर क हृदय का आघात पहुँचा और  
 मने म विश्रामघातपूण आकर्षण का कारण जानना चाहा । कुतुबियां न उत्तर  
 म्भि कि अफगाना का आप म विश्राम नहा है और आपन अपन स्वामी के  
 शी गह किया था । वजीर को वारागार म डालन क उपरात बन्तल न  
 अनाडिनी ज्ञानमशाह का तिला चौदन क तिल मिया । किन्तु भीर मय्य  
 मन्त्रान का डर था कि तिली म मरा जावन सबट म पड जायगा इसलिए  
 मने म निमन्त्रण को म्बीवार नया किया और उत्तर दिया कि भरे पिना  
 आपका अपना गुन कहतर पुकारा करते थ इसलिए आप मेरे वहे भाइ क  
 मर्त्त है । वास्तव म भी बन्तो न अनाडिनी का हृदय म आमंत्रित नहा  
 किया था । अर उमा १६ अग्रन १४५१ म् का अपना रा-माभिपक करा  
 दिया और अपन नाम म गुनबा पदुबामा ।

पत्र-लोति

बन्तो न वर मन्त्रनीतिन था और ज्ञानी मिति की दुय तनात्रा का मया  
 मर्त्त ममपता था उसकी शक्ति पूणतया उमक अफगान प्रनुयायिया पर निभर  
 थी मन्त्रिण उमा उ मन्त्रा क मन्त्रा प्रयण किया । मने म्भर

हिन्दी साहित्य का अफगान अमीरात में भी फैला था। वह गिहागन पर नया बसाया गया था कि उसका नामो तक का ही था पर धरती का और अमीरात को भी उन पर भरोसा साध दिया गया। अफगानिस्तान दूध पान के लिए उमने खुद हाथा भर पुस्तकार आदि बहिन गता का विनामनात बनने का प्रयत्न किया। अफगानिस्तान विनामनात में उमने अफगाना का आसक्ति किया उह व-व- भू भाग तामीरा के रूप में प्रजात विष और अफगानिस्तान के प्रमुख यन्त्रियों का पनापति का उमने यत्न किया।

राज्य में जागरित व्यवस्था स्थापित करने तथा उन अमीरात और सूबदारों का रूप ही के लिए जिन्दा। उमने गता को स्वागत नया किया था बहिनोत त कठार गनिशवाही नीति का अनुसरण करने का निणय किया। जिन्नेरें सूबदारों का आसक्ति करने के उद्देश्य में वह अन्त वार आमपास के जिलों में स्वयं गता पत्र गया। मवग पान उमने अहमदशाही मवाती पर जाक्रमण किया जो मवान नामक प्रदेश पर शासन करता था जिसमें आधुनिक गुन्गाव और अतवर के जिन तथा भरतपुर और आगरा जिन्दा के कुछ भाग सम्मिलित थे। भयभीत हुए अहमदशाही ने समर्पण कर दिया। मुल्तान ने उसके छह जिन छानकर जिन्दी में मिता दिया। उसके उपरान्त मुल्तान ने सम्भल के दरियावाली के विन्द कृत किया किन्तु उमने पूव गेहपूण आचरण के बावजूद बहिनोत ने उमने साध उपारता का वर्ताव किया। दरियावाली ने समर्पण कर दिया और उमने भी मान परगन छीन लिए गये। इसका बाद बहिनोत ने काइत (आधुनिक अलीगढ़) के रमासी का दमन किया किन्तु उसके प्रदेश उमने अधिार में ही रहने लिये। सरीट के सूदार सुवारक्यों और मनपुरा तथा भागात्र के राजा प्रतापसिंह को भी उनके अधिृत प्रदेशों पर स्थायी कर दिया गया। इसके उपरान्त बहिनोत ने हुमनाली अफगान के पुत्र कुतुबशाही पर जाक्रमण किया। अन्त में उसने भी वाध्य होकर दिल्ली का प्रभुत्व स्वीकार कर लिया और मुल्तान का मिज्जा किया हमने रेवाली की जागीर उसके हाथा में रहने ली गयी। दाआब से राजस्व वसूल करने में बन्नाल को कुछ कर्त्तार हुई अन्त में वह बगवा बन्वार तथा आब जिला में व्यवस्था वाध्य करने में सफल हुआ। मुल्तान और सरहिन्द में भी कुछ उपन्व हुए किन्तु उह भी दबा दिया गया। हम प्रकार अपनी कठार नीति के कारण मुल्तान को दिल्ली के छोट में राज्य में व्यवस्था और अनुशासन स्थापित करने में सफलता मिली।

तारीखे सनातीन अफगाना के तख्त अहमद यादगर का कहना है कि बहिनोत ने चित्तौड़ पर जाक्रमण किया और राणा को पराजित किया किन्तु यह असम्भव प्रतीत होता है क्योंकि मवाड और दिल्ली के बीच में अनेक रक्तत्र राज्य थे जिनका लोनी मुल्तान दमन नहीं कर सका था। इसके

अतिरिक्त घातक व वधन का अर्थ किमा विश्वमनीय नगक न ममयन नया किया है। वन्नात यथाथवाणी राजनानिग था वसत्रिण वह भनामिति मन्ना या कि त्तिना सन्तनन व र्साय हूए प्राता की पुनत्रिजय जमम्भव है। दन कारण था कि उमन जपन न शक्तिशाता पन्मिया पर जात्रमण नया किया जा फीराज तुग्रवक व समय म त्तिनी का अधानना म ग्ग चक र।

किन्तु वन्नात जौनपुर व राय का पराजित वग्ग त्तिना मन्नात म नितात का व्गक था। शरीं वश व मन्मूशात् न मय्यव-वग व अतिम न्नात अलाठान की पुत्री म विवात् वग किया था। वन् घमण्णा म्थी अपन त्तिना का वन्ना रना चान्ना था। मन्नात उमन अपन पति का त्तिना पर अत्रमण करन तथा वही म वहलाल का मार भगान व त्तिण उनजिन किया। एव अतिरिक्त वन्नात व दरवार व कुञ्ज विद्राणा अमीग न भी मन्मूशाह का आमन्त्रित किया। इहा कारण म मुत्तान मन्मू शरीं न एक ताव मत्तर त्त्राग अवारोही तथा एक हजार चार मी त्थिया की विशान मना उकर त्तिनी पर आक्रमण किया। वन्नात उम ममय मरिन्ना पर हमना करन पन्ना था किन्तु आक्रमणकारी व आगमन का समाचार मुनकर वह शाघ हा गन्नाना का लोठ आया। माग म शरीं मना की एक टुकन्ना ने फतहवां व नृव म म्मका मुवावना किया। जम हा गना मनाथा का आमना-मामना हूए गहनान व चचरे भात् वुनुवगां लाणा न शर्की मना व मनापति म्थियागी राणी का मन्मू का पन् त्यागन तथा अपनी विराग्ग वाता व शिष्ट न गन्न व त्तिण पुमलाया। दरियागी न उमका मन्ना व अनुमार ती एव त्तिना जिमम फन्नां की गक्ति व्गुन कम हो गया। फन्नां पराजित न्ना और मारा गया। मन्मू शर्की की अपनी विनय योजना त्यागकर नौरा गीन्ना पन्ना। यन् मुद्ध त्तिनी तथा जौनपुर व बाच हान वात अन्त पदा म म प्रथम था। कुछ ममय उपगन्त मन्मूशात् शरीं की गनी न द्दिग न त्तिनी का ह्मनगन करन व त्तिण प्रेरित किया। मन्नात उमन गन्ना का आर प्रस्थान किया। मन्ना शक्न व त्तिण वन्नात न एर रना नया। अन्त म गना पन्ना म एक मधि ग गयी तिमक अनुमार यन् निवय एव त्तिना गामक जपन पूवाधिनारिया न प्राप्त भूमि पर अधिकार म्थी एव वन्नात जौनपुर व उन त्थिया का लोठ न जा म्मना पिन्ना मुद्ध म परन्ति व। मन्मू न जौनगाह का अपना नौरा म वगन्ना करन हा वचन त्तिना। किन्तु किमा भा पन् न इम ना र की शर्ती का पूग नया किया। वन्नात वन्नात पर अधिार करन हा प्रयत्न किया जा उन म्म मधि व जनुगाग त्तिना का किन्तु जौनपुर व मुत्तान न उगरा प्रतिराध किया। अन्त मपथ एव प्रतिशय नया। मुद्ध म वुनुवगां लाणी वन्नी बना किया गया किन्तु



दूगने कि त मन्ना की मृत्यु हो गयी और जौनपुर में रहलो न पुन मधि कर गी । किन्तु उमम मृत्युकी को वापस करना की शक्त नहीं थी । इसलिए शिवजी मन्ना का पुत्र जौनपुर पर आक्रमण करना पडा । शिवजी मन्ना ने शर्मा राजा का क लक मन्ना जमानगी का निरक्षण कर लिया । शर्मा राजा जौनपुर में लक शक्ति हुई त्रिमर तन्मन्ना हुमनशाह ने वर्ण का मित्रमन मन्ना कर लिया । अथ पार वष क मिला गया पार म मन्ना स्थानित न गयी और कपणगी तथा जमानगी मन्ना मन्ना कि म मन्ना शीघ्र ही फिर शक्ति भंग हो गयी क्योंकि मन्ना मन्ना कि शिवजी पर आक्रमण कर लिया और चत्वार क शक्ति प्रमगान मन्ना का पराजय किया । उमम मन्ना का अपन राज्य में मिला लिया । यहना न क अध्यात्म्य मामन अन्मन्ना मन्ना की और वयना का मन्ना मन्ना जौनपुर क मामन से जा मिला । इस समय चत्वार मुन्ना पर आक्रमण करत गया हुआ था । शिवजी मन्ना चित्तजनक मन्नाका को मुन्ना कर राजधानी में नौटन पर बाध्य हुआ और हुमनशाह से मधि कर ला । शर्मा उपरान्त शीघ्र ही हुमनशाह ने फिर शिवजी पर आक्रमण कर लिया और शर्मा क कुछ प्रमन पर अधिभार कर लिया । आरम्भ में उम कुछ मन्ना मिला किन्तु शिवजी मन्ना क प्रतिरोध के कारण उस मधि करने के लिए शक्ती प्राप्त पडा । मन्ना मन्ना मन्ना का बोध की भीमा निश्चित की गयी । ममज्ञान क उपरान्त जौनपुर की सत्ता जस ही पीछे नौटी बस हो चत्वार न घामे में उस पर आक्रमण कर लिया और उमका सामान तथा वाप मन्ना किया । मन्ना की वेगम मन्ना जहाँ भी उमक अधिभार में आ गयी । उमम वाराचिन मन्ना की इतनी भावना थी कि उमम वेगम क माय मन्ना पूण व्यवहार किया और जौनपुर वापस भेज दिया । पुन दोना मन्ना म ममज्ञान हो गया किन्तु इस बार हुमनशाह ने उमकी मन्ना का उत्तपन किया मन्ना क पराजित हुआ और मन्ना मन्ना के राजा के मन्ना शरण देने पर बाध्य हुआ । मन्ना मन्ना से कुमुक मन्ना शिवजी की ओर बढ़ा किन्तु चत्वार न उम भयकर पराजय की ।

मन्ना मन्नाका न यहना न को जौनपुर पर आक्रमण करन के लिए प्रात्मान्ति किया । हुमन ने उमका मुन्ना मन्ना किया और अनन वर्णों तक मन्ना चन्ता मन्ना । अनन म हुमन की पराजय हुई चत्वार न उमक मन्ना को शिवजी मन्ना मन्ना म मिला किया और अपन पुत्र बारबकशाह का जौनपुर के सिंहासन पर बिठा दिया । चत्वार की यह मन्ना बड़ी सफन्ता थी । हुमनशाह क विरुद्ध सफन्ता प्राप्त करने क कारण उसकी प्रतिष्ठा में बहुत बढि हुई और कानपी धौनपुर वाची और अन्नापुर के शासक को अपना प्रभुत्व स्वीकार करने पर बाध्य करन में भी उसे सफन्ता प्राप्त हुई ।

सब उपरान्त बहाल न स्वालियर पर आक्रमण किया। स्वालियर व राजा मारनिह का जसों लाख टका मुल्तान की भेंट करन पड। स्वालियर स शीत समय माग म ही बहाल बीमार पड गया और जनाला क निकट सन् १४८६ की जुलाई क मध्य म उसका देहात हा गया।

**बहाल का मूल्यांकन**

बहाल एक वीर तथा निर्भय यादवा जीर मफल सनानायक था। उसम स्वयं सामान्य बुद्धि यथाथवाञ्छिता जीर बुद्धिमत्ता पयाप्त मात्रा म विद्यमान था। इसलिए उसन अपन समय की सम्भावनाओं का भलाभाति समझा जीर अपना योग्यता तथा साधना क अनुस्य काय करन का सक्त्व किया। उसन सिना सन्ततन क दक्षिण बंगाल राजस्थान जीर मालवा जाति प्राता का जीवन का स्वप्न नहा देगा। उसरा सत्रम अधिक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य दाजारा निकटवर्ती जिला और जीनपुर पर सिनी का नियंत्रण पुन स्थापित करना था। शासन-प्रवस्था का पुन मगटन करन क लिए उस समय नहा सिना। किन्तु मजिद नवा तथा शासक नाना रूप म बह अपन उन मभा पूवाधिकारिया स बहा अधिक याग्य था जा फीराज की मृत्यु स नकर जनाउदान जानमशाह तन सिनी क सिंहासन पर बठे थ। वह मनीर्भाति समयता था रि मर अफगन अमीर तथा अनुयायी जा जातीय एक यक्षिमत स्वतंत्रता का उपभाग करन जाय न तुकों क प्रभुत्व सम्बन्धी मिद्धात की पुन स्थापना सन्त न कर सकग। इसलिए बहाल न कभी भी मुल्ताना क स हाव भाव नहा लिया और उसन एक साबानिक घोषणा की कि मैं अपन का बदन अमारा का अमार समानता हू। वह सिंहासन पर नही बठा और न उसन अमीरा का दरबार म सड रहन पर ही वाध्य किया। अपन प्रमुख अमीरा का बह अपन कानन पर ही गिठाना था। यदि कभी कोई उच्च श्रेणी का अमीर उसस अग्रगन्त हो जाता ता वह स्वयं उसक घर जाता और उस शान करन का यथा माय प्रयत्न करता। कभा-कभी ता वह अग्रस्तन अमीर क सामन अपनी तनकार सानकर रम दना था। वह अपना पगला तन उतारकर अमाग क सम्मुख रम दना जीर कहता कि यदि आप मुन अयाग्य ममनत है ता सिना अय व्यक्ति का अपना मुल्तान चुन जाजिए। अपन मुनीध शासनकान म उस प्रती इम नानि म पयाप्त सफरता सिना और उसक शक्तिशाली अफगान बन्ध्यापिया न उस कभी कष्ट नहा लिया।

इस सांग मुन्तान का हृदय दयानु था। कहा जाता है कि उसन कभा सिना मिथारा अथवा निधन व्यक्ति का अपन पाठक स निराश नहा जान लिया। सिना क प्रति उगम वीराचित सम्मान की भावना थी। जीनपुर क मुन्तान हुपनशाह का बगम उसक अधिकार म आ गया थी किन्तु उगन उसक

साथ शिष्टता एवं आदर का व्यवहार किया और शक्तिशाली रक्षक के साथ उम्र अपने पति के पास वापस भेज दिया। अपनी बुद्धि के अनुगार वह समान दृष्टि से काम किया करता था। यद्यपि वह नान स्वयं शिक्षित नहीं था किन्तु वह विज्ञान तथा शिक्षित व्यक्तियों का संरक्षण किया करता था। धर्म में उमरका अनुगम था किन्तु अपने पुत्र तथा उत्तराधिकारी सिक्न्दर की भाँति वह धर्मांध नहीं था।

वह नान का दा मुख्य सफरनाए मित्री। सत्रप्रथम उसने दिल्ली सल्तनत का प्रतिष्ठा तथा सात का जा परवर्ना तुगलक तथा सय्यद मुल्ताना के समय में बहून नीची गिर चुका था पुनरुत्थान किया। जौनपुर राज्य का विजय तथा उस दिल्ली सल्तनत में मित्राना उसकी दूसरी मुख्य सफरना थी। इन सफरनाजा के बावजूद दिल्ली सल्तनत के इतिहास में वह नान का अधिक उच्च स्थान नहीं है। उस हम साधारण काटि का सफर मुत्तान कह सकते हैं।

सिक्न्दर लादी (१४८८-१५१७ ई.)

### सिंहासनारोहण

बहलान का मृत्यु के बाद उत्तराधिकार के प्रश्न का लेकर उसका मुख्य जमीरा के दा दन बन गया। एक दन उसका तीसरे पुत्र निजामखान का ना जनता में सिक्न्दरशाह के नाम से विख्यात था सिंहासन पर बिठाना चाहता था किन्तु दूसरा दन जो अधिक शक्तिशाली था निजाम का मुल्तान बनाने के इस्तिाए विरुद्ध था कि उसकी माता एक सुनार की पुत्री थी। इस दन के नाग स्वर्गीय मुल्तान के सयम बेट पुत्र बाराकशाह के समथक थे जा उस समय जौनपुर का शासक था। जब वह नान मृत्यु शय्या पर पड़ा हुआ था तो उहान उस निजाम का दिल्ली में बुनाने के लिए पुसनाया गया कि उह डर था कि पिता का मृत्यु हान पर वह कहीं सिंहासन न हस्तगत करे न। किन्तु किसी न किसी बहान निजाम न बनने से चाने से इनकार कर दिया। निजाम की मा अपने पति के साथ क्षम में ही था। उसने अपने पुत्र के अधिकार का समथन किया किन्तु बहलाल के चचेरे भाए पसार्गा ने उस गानियाँ दा जोर जशिष्टता पूण शाना में कहा कि एक सुनार माता का पुत्र दिल्ली की गद्दी के लिए नहीं चुना जा सकता। ईसाया के इस प्रवार के अभए व्यवहार के कारण बहु सरथक दन के कुछ मन्स्य भी उस विधवा के साथ सहानुभूति लिखाने लगे। परिणाम यह हुआ कि खानखाना न ऐसा चान चली कि अधिकतर पगान अमीर निजामखान के समथक हो गये और १७ जुलाई १४८६ ई. को सिक्न्दर शाह के नाम से उस मुल्तान धापित कर दिया गया।

## गह-नीति

### सिक्ख का दमन

सिक्ख का अपन चुनाव का आचिन्त सिद्ध करना था। था ११ समय में अपना नाति चरित्र धार मुद्दु नामन-व्यवस्था के द्वारा अपन सिखा दिया कि उसका चुनाव उचित था और सिखा के सिहासुन के पूर्ण के लिए वहना के पुत्रा म बहु सवन अर्थात् साम्य ११। उसका पन्ना काय अपन प्रतिनिधियों का दमन और अपन अनुपायियों का शक्ति का वृद्धि करके आन्तरिक व्यवस्था स्थापित करना था। उसका चाचा आन्तरिक भा मिश्रणन के लिए सम्मानदार था और सत्ता तथा चल्तवार में अपना स्वाधानता का स्थापना करने का उपाय किया था। सिक्ख न सत्ता में उन घर किया और पगाजित करके ग वही में बना दिया। आन्तरिक न स्थापना के पक्ष में था जो अपन प्रथम धरा के नागा में था जिन्होंने सिक्ख के उत्तराधिकार का विराप किया था। सिक्ख न प्रथम वर्ग का नाति में काम किया और आन्तरिक का स्थापना में प्रयत्न करके अपन पक्ष में सिखा किया तथा सत्ता का मूल्यांकन निरुक्त कर दिया। एक उपरांत उसने स्थापना का पट्टियां के निकट युद्ध में पगाजित किया। युद्ध के बाद ही सिखा बाट स्थापना का मूद्य था गया। सिक्ख का चचरा भा आन्तरिक हृमाय भा गया के लिए सम्मानदार था उस भा सत्ता न सत्ता और उसमें कानपा का छानकर मुम्भार्षी नागा के मुद्दु कर दिया। दूसरे बाद उसने दूरम विराधा तानागर्षी नागा का पराजित किया किन्तु स्थापक क्षात्र का जागर उसके अधिकार में रत्न था। इन प्रकार सिहासनाराहण के एक वर्ष के भीतर ही सिक्ख अपन विरायियों का कुचनत अथवा उद्धृ तात करन में सफल हुआ और अपना शक्ति का उसमें मद्दु कर दिया।

### बारबराह का दमन

१५ सत्ता के म उत्पन्न सत्ता का सिक्ख अनामीति समझना था। स्थापक व अपन वर भाई जीनपुर के मुन्तान बारबराह का समझना बुझा कर अपन अधान करन का सत्ता था। उसने जीनपुर का एक शक्ति-भूत बना जो सिहा का सत्ता में विपन्न रहा। सम्भवत सिक्ख साचना था कि मैंने अपन ना के उत्तम जन्म सिद्ध अधिकार में उचित कर दिया है स्थापक मुझ उसका समझना सत्ता चाहिए। किन्तु जीनपुर के भूतभूत मुन्तान हृमनाह न सिमन सिहा म परण ना था और जो समझना था कि दाना सत्ता के पारम्परिक सपण में मुझ अपना सत्ता पुन प्राप्त करने का अवसर दिन आगया बारबराह का नश्वामा जिनके कारण सत्ता अपन भा सिक्ख में समझना करन से इनकार कर दिया इसलिए सिक्ख न युद्ध का उपायियों

आरम्भ कर दी। उमा बारबकशाह का जा अपनी सात लेकर बन्न आया था पराजित किया। उमा हाथ क बाण बारबकशाह बन्धु क विन्तु यान भी मित्रदर न उस पर किया जोर जामगमपण करन किया। मित्रदर इतना उमा निबन्ता कि उमन अपन भाई का पुन क लिए जोनपुर का मुल्तान बना दिया। विन्तु उसक राज्य का उम म विभवन करके अपन अनुयायिया म बोट दिया और बारबकशाह तथा मदन म भी गुप्तचर नियुक्त कर दिया। कुछ समय उपरांत हुस भटकान पर जोनपुर राज्य क जमादारा न भयंकर विपत्ति किया। वा स्थिति का वाक्य म न कर सवा और उमा जोनपुर का छात्रर लह निकट दरवाबाण म शरण गी। मित्रदर न तत्परता स काम लिया और का बुचनकर पुन दूसरी बार बारबकशाह का अपन अधीनस्थ सामंत। जोनपुर क सिहामन पर बिगा दिया। विन्तु बारबकशाह एक नितांत शासक निबन्ता इसलिए मित्रदर न उस हटाकर कारागार म डाला कि जोनपुर म अपना सूबदार नियुक्त कर दिया।

#### अमीरों का दमन

जोनपुर का दमन तथा अपन पतृक राज्य पर निरकुश सत्ता करन के उपरांत सिक्दर अफगान अमीरा को उचित नियंत्रण एव अनु म नाने क काम म जुट गया। मुल्तान राज्य व्यवस्था म मोनिवर्षा करन का इच्छक नही था किन्तु वह अपन अमीरा की विरोधी भावना परिचित था इसलिए वह उनरी बयकिनक प्रवृत्तिया तथा जातीय स्वत का नियंत्रित करना चाहता था जिसस क भारत म पठान जाति क साम उत्पन्न म योग दे सन। उसने अपन सूबदारा तथा अन्य पदाधिकारिया जाय-व्यय क हिसाब की उचित जांच पर जाय दिया। उसने हिसाब म गड़ करन चाहा तथा गन्न करन चाहा का कठोर दण्ड दिया। अपन मुख्य अमीर मुबारकशाह नादी का जिस जोनपुर का राजस्व वसूल करन के लिए नियु किया गया था सल्तान न कठोर दण्ड दिया और राज्य का जा धन उतारन कर दिया था उस राजबाप म जमा करन पर बाध्य किया। इसके अनिश्च सिक्दर न अपन अमीरा का दरबार म और उसके बाहर सल्तान प्रति उचित सम्मान प्रबट करन क लिए बाध्य किया। वह उनक क्तिमा म प्रवार क अशिष्ट अथवा असम्मानपूर्ण आचरण का सहन न कर सकता था। एक बार जोनपुर म चौगान खान समय कुछ अमीर सल्तान क सामन ही खुन रूप म लड़ पड़। यह दृशकर सल्तान आगवज्जना हो गया और एक अमीर क उमन अपन ही सामन को लगवाय और दूसरा क साथ अत्यन्त कठोरता का व्यवहार किया। अमीरा न भी बाला लन क उद्देश्य स सिक्दर का पण्डित



आरु  
 आया  
 सिन्धु  
 रिपा  
 व नि  
 म कि  
 तथा ३  
 भटवा  
 स्थिति  
 निवट  
 म। कु  
 जौनपु  
 शासक  
 जौनपु  
 अमौर

वरन  
 म ला  
 वरन  
 परिचि  
 का नि  
 उत्कप  
 जाय  
 वरन  
 मुबार  
 किया  
 व र ि  
 मिक्द  
 प्रति -  
 प्रवार  
 एक ब  
 रूप म  
 उसन  
 यवहा

कब उमर भाग्य पत्रहस्ता का सिंहासन पर बिठान के लिए पटवर्ण किया किन्तु पटवर्ण का समय से पूर्व ही भाग्य सुन गया जोर मुल्तान ने वार्डम अमारा का शरबार से निवामित कर दिया। इस प्रकार मिर्जापुर का अपना काल नाति द्वारा अफगान अमारा पर उचित नियंत्रण स्थापित करने में सफलता मिली। गजमत्ता की पूर्ति के रूप में उसका सम्मान ही नहीं हुआ कि बन्दू मूवण तथा जागीरदार उमका जानाश्रा का सम्भ्रवण निराधाय बन गये। जब मिर्जापुर निजी अमारा के लिए परमान जाग्य करना था तो कौ अमारा उस छत्र माल चतुपर उचित सम्भ्र के साथ स्वाकार करना था।

शासक के रूप में मिर्जापुर की सफलता का अधिक प्रयत्न उमका उत्कृष्ट गुणवत्ता-पवस्था का था जिस उसने अनाउद्दीन खलजा के शासन पर सगर्जित किया था। मुल्तान ने प्रत्यक्ष स्थान पर यथा तत्र कि अमारा के घरा में भाग्य विवमताय गुणवत्ता एक सवात्ताता का नियुक्त किया। उम ताजा से ताजी घनाजा का पना जच्छी जानकारी था कि ताज उमम अतीविक शक्तिया का श्राप्य करने लग गये। ताजा का विश्वास था कि मुल्तान का जिन्दा शारा समाचार प्राप्त होना है। अनुशासन के विषय में ही मुल्तान कटार तथा था अपितु वह सम्तामा मिदाल्ला के अनुसार याय करने में भी निष्पत्त था। यह प्रयत्न शरण था जिससे उम कानून तथा पवस्था के लिए ताजा के हृदय में सम्मान स्थापित करने में सफलता मिली। मिर्जापुर का शासनकाय भीतिव ममृदि के लिए भी प्रसिद्ध था जोर अमारा प्रयत्न कुछ हद तक मुल्तान का ही था। उमने नाज पर से चगी हटाया और प्रयत्न अमल व्यापारिक नियंत्रण दूर कर दिया जिससे नाज अपना तथा आवश्यकता का प्रयत्न सम्भ्र गन्ता हो गया। धार्मिक नीति

मिर्जापुर का धार्मिक नीति एक धर्माध्य मुसलमान का सा था। जब कौ गजकुमार था तभी अपना धार्मिक कट्टरता का परिचय दे चला था। उमने सिन्धु का मानवक के पवित्र तलाक में स्नान करने से राक्षसा घाटा जोर मुल्तान गान पर मन्त्रिण जोर मूतिया का नष्ट करने तथा अन्त स्थान पर मन्त्रिद गान करने का नाति का अनुसरण किया। अन्त नगरकाय के कतामुता मन्त्रि का पवित्र मूति का नाश होना और उमके हृदय के गाना का दृष्टि जिसमें वे उनका उपयोग साम तापन के घाटा के रूप में कर मने। अन्त मथुरा मन्त्रि अन्त नरवर चन्द्रा अन्त स्थाना में मन्त्रि का शिवध किया। शोधन नामक एक हिन्दू का उमने मन्त्रि कहने के अपराध में मृत्पुत्र किया कि हिन्दू धर्म उनका ही मन्त्रा है जिसका कि श्रवण। मिर्जापुर ने सिन्धु का ममुना के घाटा पर स्नान करने का आग्रह नहीं था और नाहया को उनका दाइया बनाने में राजा। पेशवा की भीति उमने भा



हिन्दुओं का इस्लाम स्वीकार करना व लिये पुगगाया। इस प्रकार का नीति म  
गुनात का जानना व एक विज्ञान वग का मत्तानुभूति का प्रतीक जनवाय था।

### त्रिंश नीति

#### बिहार की विजय

अपन पिता व विपरीत सिक्न्दर एक उत्पथित महत्वाकांक्षा यक्ति था  
इसलिए उसने शिला की तुरी सलतनत व साथ हुए अधिक स अधिक प्राता  
का पुन जाति का याजना बताया। अपन भाई बारबनशाह का दमन करन  
तथा जौनपुर का शिली राज्य म मिलात व कारण उसका बिहार व प्रात स  
राज्य हा गया जा उस समय बगान का एक भाग था। जौनपुर व कुछ  
जमादारा का भूतपूर्व सुल्तान हुसैनशाह स जा उस समय बिहार म रह रहा  
था घनिष्ठ सम्बन्ध था। सिक्न्दर इन जमींदारा की शक्ति का पूणतया  
पुचलना चाहता था इसलिए उसने फामाऊ (इलाहाबाद व निकट) व भात  
राजा पर जा विद्रोही जमादारा का नता था आक्रमण किया। सुल्तान व  
स्वय प्रयत्न करन व बाबजू भी राजा का पूणरूप स दमन नहा किया जा  
सका। यही नहीं १४६४ ई व आक्रमण म सुल्तान की सना को भारी क्षति  
उठाना पडा और उसका घाटा की एक बडी सख्या नष्ट हा गयी। बिनाही  
राजा का ही हुसैनशाह स साठ गाँठ थी इसलिए उहान उस जौनपुर पर  
आक्रमण करन तथा सिक्न्दर स उठन व लिए आमन्त्रित किया और लिखा  
कि सुल्तान की सना व घाडे नष्ट हा चुक है और उसम प्रतिरोध करन की  
शक्ति नहा है। इस निमन्त्रण का स्वीकार करत हुए हुसैनशाह एक विशाल  
सना उकर बिहार स जा गया। सिक्न्दर उसका माग का राकन व लिए जाग  
बढा और बनारस व निकट भयकर युद्ध हुआ जिसम हुसैनशाह पराजित हुआ  
और भाग गया। सिक्न्दर न भागत हुए शत्रु का पीछा किया और बिहार पर  
अधिकार करके उस शिली राज्य म मिला लिया। उसने बिहार म कुछ शिला  
तक निवास किया और तिरहुत पर आक्रमण किया। वहाँ व राजा न सुल्तान  
की अधीनता स्वीकार कर ली और कर दन का वचन दिया।

#### बगान की संधि

बगान का सुल्तान अलाउद्दीन हुसैनशाह बिहार पर उस आक्रमण को सहन  
न कर सका क्योंकि जौनपुर के हुसैन को वह अपना अधीनस्थ सामंत और  
बिहार का अपन राज्य का भाग समझता था। उसने अपन पुत्र दानियान का  
शिली सना की प्रगति का राकन व लिए भजा। दिल्ली सना न भी महमूद  
शाही और मुबारकवा लाहानी व नरुत्व म नरन की तयारी की किन्तु अन्त  
म सिक्न्दर तथा अलाउद्दीन हुसैन दोनों ही बिना लड समझीता करन व

लिए तयार हो गए। राजा पन्ना ने एक-दूसरे के राज्य पर आक्रमण न करने का वचन लिया और वगान के मुल्तान ने मिर्जापुर के शत्रुजा का उरण न करने का वायदा किया। इस प्रकार मिर्जापुर के राज्य की पूरबी सीमा बान का पश्चिमा हू तक पहुँच गया।

धौनपुर तथा अय स्थानों की विजय

मिर्जापुर धौलपुर तथा ग्वालियर का भा जानने का महत्वाकांक्षा रखता था। १५०० ई में बन्नि तथा दाधकातान युद्ध के उपरान्त मुल्तान का राजा विनायक देव के हाथों से धौनपुर छानने में सफलता मिली। किन्तु ग्वालियर का विजय मिर्जापुर का साम्यता तथा शक्ति से परे था। कभी कभी उसने नगठार मानसिंह पर जो उस मुहुद्ध किन्तु तथा निवृटवर्ती प्रश पर शासन करता था आक्रमण किया। १५०४ ई में मिर्जापुर ने आगरा का जो उस समय तक बघाना के अधीन एक छाटा सा गाँव था अपनी राजधानी बनाया। वह उस एक मनिह छावना तथा धौनपुर ग्वालियर और मानवा के विरुद्ध बनिह बायबाहा के लिए आधार बनाना चाहता था। कभी कभी परिश्रम के फलस्वरूप मुल्तान ने मन्त उतगिर नरवर जी के चरण पर भी शिरी का प्रभुत्व स्थापित कर लिया किन्तु वह ग्वालियर को जानकर शिवा मल्लनत से न मित्रा मत्रा। मानवा को जीतने का भी मुल्तान की अभिनाया था किन्तु उस ममृदमाला राज्य पर अविरार करने में उसे सफलता नहीं मिली। १५१० ई में उसने नागीर का हस्तगत कर लिया। यद्यपि ये सन्निव सफलताएँ बराबरी करने वाला नहीं था फिर भी इनमें विजया के रूप में मिर्जापुर की प्रतिष्ठा में पर्याप्त वृद्धि हुई।

मृत्यु

अपने शासनकाल के अन्तिम दिनों मुल्तान ने ग्वालियर धौनपुर नरवर तथा गजस्थान का साम्राज्य पर स्थित अय हिंदू राजाओं के विरुद्ध आक्रमण बारा मुद्धा में विनायक। निरन्तर सन्निव जावन न गवा स्वास्थ्य नष्ट कर लिया। मानवा पर आक्रमण करने के चक्षुष्य में वह बघाना गया और वहाँ से सोरठर बाजार पर गया और हर प्रकार का सम्भव चिकित्सा के बावजूद भी १ नवम्बर १५१७ ई का उसकी मृत्यु हो गया।

मिर्जापुर का मूर्त्यावन

मिर्जापुर राजा-वश का मन्तानतम मुल्तान था। मध्यराजाने चिकित्साकारों

१ १५०६ ई में नरवर तथा पद्मावती का पान हुआ। पद्मावती कीया मनाक्षी में नाग राजा का प्रसिद्ध राजधानी थी। १५१२ ई में राजी मन्तान सफलता नहीं पाई पर एक गुण बनवाया था।

न उमरा अतिशय प्रशंसा का है और लिखा है कि यह यूनु न माय्य याव प्रिय उमाय तथा शरर ग डरन वासा गु तान था । आपुनिर सगना न भा उताक मा का गमथा किया है किनु उसन शागनताय का महत्वपूर्ण घटनाआ शागत सम्बन्धी श्पौर री बाना गया नीति की आजाचनात्मक पग ता करन स ग्गट हा जायगा कि मिस्टर क चरित्र तथा यकित्व क दा पहनु थ । निम्नान्त वह माय्य शागक था किनु जपना धार्मिक अ याचारा का नाति क कारण उमन गाय की बहुसम्बन्ध जनना का सत्पानुभूति ता था थी और अपन अछ शासन प्रबन्ध क प्रभाव का नष्ट कर दिया था ।

सिस्टर दानी की आदृति गजाआ जया था । उसका क नम्बा तथा शरीर सुन्दर और मुडोत था । तारीय गऊना का तसक अन्तना लिखना है कि बाल्यकाल म सिस्टर इनना गुन्दर था कि शय तसन नामक प्रसिद्ध मुस्लिम मौनवी उमस प्रेम करन गगा किनु शाहजाण का उमका जाना जाना पमन् नही था इसलिये एक दिन उमन बचपूवक उमक मिर का जाग क पास ल जाकर उसकी दाती का जना दिया । उसकी चाल-चान तथा दनिक आचरण भी प्रभावात्पादक था । अत्यधिक शिक्षित हाने के कारण उस साहित्य तथा कविता स प्रेम था । हिन्दू माता स उत्पन्न हाने क कारण वह अपन सहधर्मिया का यह दिखाना चाहता था कि मैं पक्का मुसलमान हूँ और जिहा भी दृष्टि स उन नागा स नाचा नही हू जा शद्ध अफगान रकन स उत्पन्न ह । अपन धम म उस पूण श्रद्धा थी यद्यपि प्रतिदिन पाँच बार नमाज पन्न क सम्बन्ध म वह नियमबद्ध रहा था । अपन पूवाधिकारिया क विपरीत और सामान्य इस्लामा परिपाटा क विरुद्ध वह अपनी दाती बनाया करता था । उस शराब का शौक था किनु वह खुन रूप स रहा पिया करता था । सिक् दर बहुत हा उद्यमा पुर्तीला और कमठ था । अपना सम्पूर्ण शामनकान उसने निरन्तर मुद्धा म बिताया । कहना न हागा कि वह अच्छा याद्धा तथा सफल सनातायक था ।

पूवात्य परिपाटी क अनुसार सिक्दर प्रचुर मात्रा म दान दिया करता था । मुहम्मद क जन्म तथा मृत्यु की जयन्ती मुहरम शब वरात तथा ईद जादि मुस्लिम त्योहारा क अवसर पर कच्चा तथा पका हुआ भाजन बाँटा जाता था और बहुत सा धन दान म खय किया जाता था । उनमा मुस्लिम विद्वाना तथा दरिद्र का छात्रवृत्तियाँ एक जावन निर्वाह क लिए भत्त पिय जात थ । फीरोज तुगलक की भाति वह भी मुस्लिम विधवाआ की लक्ष्मिया की शाश्विा क लिए दहज का प्रबन्ध किया करता था ।

उस युग की परिस्थितिया का ध्यान म रखत हुए हम कह सकन है कि सिक्दर का सफलताए असाधारण था । उसक पिता न बराबर बानो म प्रमुख की स्थिति से ही सत्तोप किया था किनु सिक्दर का राजस्व सम्बन्धी

का... जमाने को अपना तुर्की तथा सिन्धु निदालों में उचित सिद्धता  
वृत्ता था। यका यह विचार उचित ही था कि अपना राजस्व निदाल  
नाम में बायाकर तथा सिद्धा जा सकना काकि मान जमानिसमान तथा  
है। एना विचार में मन राज्य प्रभुव व प्रभाव का समाप्त करने का प्रयत्न  
रिवा जोर बन ना जोनपुर क मुल्तान बालकगा पर पूरा नियंत्रण  
स्थापित किया। मन जमान जमाने की अतिवाग्य प्रवृत्तियों का मन  
रिवा और — गान नाग जमान सिद्धावों का प्रांच बन पर बाध्य किया।  
बन जमान अमान का ना मुल्तान क प्रति सम्मान प्रस्तुत करती  
नका आनाका का पावन करने पर बाध्य किया गया। का जमान विनत  
है — पर पर करा न था उक्त लिए मुल्तान का आनाका का अन्वयन  
करना सम्भव था था। यका तथा किमा में मुल्तान क फयाना का अपना  
करने पर का साहस नहीं था बल्कि फयाना का उचित सम्म क साथ —  
स्थापित करना पना था। मन प्रकार सिद्धा गामद-व्यवस्था में अति तथा  
बान फवन में सफर हा सका। मन्तव तथा नाज की प्रतिष्ठा की पुन  
स्थापना की जा परवर्ती सुगठका क समय में उक्त नीची लिए गया था।

रिवा का विजय मुल्तान का मुख्य सफलता था। मनक प्रतिष्ठित उमन  
धीनपर नरवर चन्गी तथा स्वादिष्ट क कुठ भाग का भा विजय किया।

सिद्धा विद्या का पापक था। मनक चन्द्रिक विद्या जमा करने था।  
नका आनाजुमान मन्तव क एक आयुर्वेद ग्रन्थ का फारसी में अनुवाद करवाया  
नका विमला नाम फरग सिद्धा की रमा गया। उमन ममान का प्रामादने  
रिवा और अतक मन्त्रिणा का विभाग करवाया। मन आगगा का अपना  
गठमाना बनाया जोर मन आगगा मन्त्रिणा तथा मगया में मुशावित  
रिवा। सिद्धा में मन अपन रिवा का सम्भव उपवाया।

गाम क रूप में सिद्धा व क्षत्रिय पर मन्तव था कतक मकी  
पमापना थी। मन्त्रिणा धाराओं व शोगत में सिद्धा मन्त्रिणा का विचरम करना  
और नरक स्थापित मन्त्रिणा मना करना गमा एक नियम बना रिवा था। सिद्धा  
मम का सुगतत तथा अन्तम का अन्वयन करने के लिए उमन हन ममय प्रयत्न  
रिवा। उमरी स्थिरता में सिद्धा मन्तव अन्तम क प्रचार का अना हा  
मन्त्रिय मापन वा मयी जिनता कि पीराज सुगतत के समय में था। मन्त्रिणा  
मम क गान है कि उमका धार्मिक नीति मृगतारूप थी और मन उमरी  
सिद्धा प्रमा अपमम था लयी तथा स्वयं उमकी मगा व। उहें गामगा था लयी।

आगोस तीर्थ (१११३-११२० ई)

गामपारक्षण

सिद्धा की मृगु क उपगत अणगा अमान न स्वसम्मति में मम

पुत्र इब्राहीम का गिरागन पर गिराया (२१ जनवरी १५१७ ई.)। उमर इब्राहीमजाह की उपाधि धारण की।

### दिल्ली की नीति

#### ग्यातियर का दमन

इब्राहीम की दिल्ली नीति का मुख्य उद्देश्य अपने पिता द्वारा प्रारम्भ किया गया विजय के राय का पूरण करना था। उमर गिरागन का ग्यातियर का विजय करने का नीति का कार्यान्वित करना का मकसद किया। ग्यातियर ने अनेक बार पूर मुल्तान का शक्ति का चनोता था। उमर ग्यातियर का नामक न इब्राहीम के भाई राजाओं का शरण करने युद्ध का एक बहाना उपस्थित कर दिया था। इसके अनिश्चित बार मानसिंह का जिम्मा सफलतापूर्वक मिर्जापुर का प्रतिराध किया था मृत्यु हो चकी थी और उमरका पुत्र विजयमाजीत उमरका उत्तराधिकारी हुआ था। याग्यता तथा राजनीतिक बुद्धिमत्ता की दृष्टि में वह अपने पिता की तुलना में उदृत ही निम्नकोटि का व्यक्ति था। ग्यातियर का घरने के लिए इब्राहीम ने आजम हुमायूँ शरवानी का तीस हजार घुडमवार तथा तीन सौ हाथियों की फौज के साथ भेजा। हम कश्मिर काय में उसका महयाग करने के लिए जागरा से एक अय मना भी भेजी गयी। आजम हुमायूँ उमर दरबारार जिन के घरने के काय में वह उल्माह के साथ जुट गया। उमरका रायवाहिया के परिणामस्वरूप एक महत्त्वपूर्ण बाहरी दुग पर दिल्ली सना का अधिकार हा गया। घरने का काय मत्तापजनक तराक में चरता रण और अन्त में जिन के रक्षका का हथियार खानन पड। विजयमाजीत दिल्ली सुल्तान का अधीनस्थ मामत हा गया। इब्राहीम की यह महानतम सफलता थी।

#### राणा सागा द्वारा इब्राहीम की पराजय

इब्राहीम अपने पिता की विजय-नीति को पूरण करने का इच्छुक था इसलिए उसने राजस्थान के प्रमुख राय मेवाड़ पर आक्रमण किया। मेवाड़ पर उस समय पराक्रमी राणा सगामसिंह अथवा सागा शासन करता था। उमरको पराक्रम किये जिना सुल्तान को मध्यभारत में अपना प्रभुत्व स्थापित करने की आशा तथा थी इसलिए उमरने किया मकसद की अय मना में एक शक्तिशाली मना भेजी। उसके साथ हुसनखा जरवरुण किया खानेखाना करमाजी और किया मामूफ जस विख्यात अफगान सेनानायक भी भेजे गये। आक्रमणकारी सना में तीस हजार अश्वारोही और सान सौ हाथी थे। जस ही वह मेवाड़ की सीमा पर पहुँची राणा ने उमरका मुसलमान किया और मेवाड़ के वतमान जिन अस्ति में स्थित बकरोत के निकट उम परास्त किया। युद्ध में दिल्ली सेना का भयकर सहार हुआ। किया मकसद तथा

नर सनित घबराकर भाग खड हुए किन्तु राजपूता न घटाली (बूटा की लम्बा पर) क निकट उन पर आक्रमण किया और शोनी सभ्या म उह मर दाता ।<sup>१</sup>

### गह नीति

जनातों क विरोह का दमन

ब्राह्म क गामनकाल म विभिन्न राजा की पारम्परिक प्रतिनिधिता क कारण जागि रना । उमक मिश्रमनाराहण क गत्त शात्र हा स्वार्थी अमारा क गत्त न गत्त क विभाजन की नीति का समर्थन किया और ब्राह्म क बाद जनातों का जौनपुर क मिश्रसन पर विग्न म उह सफलता भी मिल गया । अमोरा के श्वाक म वाय होकर मुल्तान न विभाजन का स्वीकार किया था इमनिण जनातों जौनपुर म अपनी सत्ता स्थापित भा न कर पाता था कि ब्राह्म पश्चात्ताप करन गया और उसके प्रभावशाली अमीर मानकों लोनी न राय विभाजन की मूलतापूर्ण नानि की बत्तर गत्त म निना की और जनातों का वापस बुनान पर जोर लिया । ब्राह्मीम न ए काम हैवान्तों क मुपु किया । हैवान्तों सभ्या वज्ञाकर जनातों का मिना योगन म सफल नहा हुआ इमनिण उमन कूत्नीति म काम लिया । अन्ती चतुर नानि गारा उमन जनातों के बत्तन म अनुयायिया का जपनी सर का निया । उहान जनातों का जौनपुर छाकर बालपी जान का बाल्य किया जौ उमन अपन को स्वतंत्र घोषित कर लिया और मुल्तान का सति घोषण की । उमन आजम हुमायूँ शत्रुवानी का जा उम समय मुल्तान ब्राह्म की आर म कानिजर को घर हुआ था अपन पण म कर लिया । अपना सनात्रा का समुक्त करव जनातों और आजम हुमायूँ शत्रुवानी न श्रवण पर आक्रमण किया । ब्राह्मीम का स्वय विद्रोहिया का उमन करव क विग्न जाना पया । किन्तु भीभाग्य म आजम उमाय न जनातों का साथ पा लिया और ब्राह्मीम क पण म मिल गया । उम प्रकार परित्यक्त हान पर जनातों आगरा का जोर बत्त जोर बत्तों का ग्ना-मना पर आक्रमण किया । ब्राह्म न सनित जात्रम का कुमुद शत्रु आगरा भजा । सनित जात्रम न जनातों का प्रमुद गम्भीरी शवा त्यागन पर राजी कर लिया और बालपी का उमा क अधिकार म उम नेत्र का बत्तन लिया । किन्तु ब्राह्म न इन शत्रों का मानन म इन्हार किया और अपन भाग का प्रारम्भ न उमन करन का मत्तन किया । सनित जनातों का आगरा सानिदर क शत्रु क शत्रु

<sup>१</sup> बाबर ने अपनी आत्मरक्षा (Memoirs) में इब्राहीम की पराजय का उल्लेख किया है ।

करण लनी पत्नी । श्राहीम त अपने भाई का गिरफ्तार करने तथा हि  
अधिकांश करने व श्राहीम म ग्वालियर पर आक्रमण करना आ  
गमना । किन्तु जग ही यह निश्चय पट्टेन जनातगाँ ग्वालियर म माना  
भाग गया । तिन ता धरा चत र्ना था श्राहीम मय मानवा व मुन  
दुःखकार म तम जाकर जनातगाँ ग्वालियर व गौरी राय री आर  
गया । किन्तु गौरी त उम गिरफ्तार कर लिया और श्राहीम जनात  
पाम भेज दिया । मुत्तान न उम श्राहीम म वर करके ग्वालियर की आन  
किन्तु उम ग्वालियर जान मयय माग म नी उमना वध कर दिया गया ।  
श्राहीम अपने राय का निर्विवाह पामक बन गया और उमक विरुद्ध वृ  
रचने वाता वाई प्रतिशस्त्री नहा रहा ।

### जमीरो का दमन

जनातगाँ व विद्रोह का दमन करने तथा राय पर अपना निरंकुश श  
स्थापित करने म श्राहीम का जो गफ्तता मिनी उमस उमका मिरफिर ग  
वह निरंकुश तथा स्वच्छाचारी शासक की भाँति आचरण और वाय क  
गया । तुर्की प्रभुत्व गिद्वान स अनुप्राणित श्राहीम उमन मूखतापूर्ण घोषणा,  
कि राजा का वाई सम्बन्धी नती हाता सभी नाग राजा के अधीनम्य माम  
जयना प्रजा होन है । उसन अफगाना परम्परा को त्यागकर अमीरा  
श्राहीम म अपने श्राया का कधी व रूप म सीने पर रखकर नम्र भाव स  
नेने पर वा य किया । अफगान अमीरा पर नी उसन कठोर दरवारी र  
तामू रिया । जमीर नाग जो मुत्तान को अपने म मे ही एक ममजन के जम्ह  
व और जा वहनात और कभा कभी मिक्तर क साथ वातीन पर वरत थ  
अपमान का न म मवे । मुत्तान के यवहार के विरुद्ध उहाने रोष प्रक  
किया और कुछ प्रमुख अफगान अमीरा न उसकी घटता और अहकार के कारण  
विरोह का लक्ष्य बना कर दिया । आजम हुमायू जनातगाँ स जा मिना ध  
और फिर उम छोकर मुत्तान म मधि कर ती थी इस सबका हम पहन उल्लस  
कर चके हैं । श्राहीम अपने प्रति उमके वस अस्थायी रोह का न भूत सका ।  
उसन आजम हुमायू और उसके पुत्र पतेरगा को ग्वालियर स बुनाया और  
कारागार म डाल दिया । मिक्तर के समय के प्रमुख अमीर मियाँ भोरा का  
उमन पहन ही कर कर लिया था । उसके वम अयायपूर्ण यवहार मे उत्तजित  
होकर आजम हुमायू व एक दूगरे पुत्र श्वाहामवाँ ने विरोह कर दिया । अपनी  
पिता की फौज का मनापतित्व लेकर उसन आगरा व मून्तार जहमत्गाँ पर  
आक्रमण किया । मुत्तान का भी वम विरोह का दमन करन व लिए अपनी सेना  
एकत्रित करनी पत्नी । उमी मयय आजम हुमायू नोती नाम के दो अय अफगान  
जमीर मुत्तान का पक्ष त्यागकर उमनऊ म अपनी जागीरा म चके गये और







राजसूय की तयारियाँ करन लग। इन २१ विद्वान्त्रिया व विद्व  
 का सत्ता मुत्तान न भरी बह पराजित हुई और भागी क्षत्रि उठार पाठ  
 कीन पर बाध्य हु। मुत्तान का अर्थ अमार। पर मन्त्र हा गया इमनि  
 कुलका उमन उहे बेनावना नी कि यति तुम हम विद्राह का न स्वा मक  
 न मन्त्र माय भा विधीहिया जमा बर्ताव किया जायगा। इमक उपगत व  
 म्भ पचास हजार भना लकर युद्धक्षत्र म उत्तरा। विद्राही अमार न एक  
 विगत सत्ता एत्र कर नी जिमम चानीस उत्रा घुम्भवार पत्ता का एक  
 का म्भ्या और पाच मो हाथा मम्मिनित थ। शत्रु राजू इवारी नाम क एक  
 धामर उक्ति न स्तभप करन तथा गान्धिमय रातचीन द्वारा वग्न ना  
 विगत का प्रयत्न किया किन्तु बह अमफल रहा। विद्राह नतात्रा न आजम  
 हुगर्भ इरवानी की रिहाई की मांग की किन्तु मुत्तान उस पर गजी न  
 हु। परिणामस्वरूप भयङ्कर युद्ध हुआ। मन्त्रजान अफगना नामक शत्रु का  
 रविता ब्रह्म यात्रार न शब्दा म युद्ध का वणन करता है— ताशा क  
 र पर न गण गय और युद्धक्षेत्र उनम एक गया पृथ्वा पर पठ ना निग  
 ना म्भ्या कल्पनातान थी। मन्त्रान म रवन का न्त्रिया बहन तथा और म्भक  
 का शपकार तत्र जय कभा हिन्दुस्तान म काई भयङ्कर युद्ध हुआ ना तांग  
 का क्त य कि किमी भा युद्ध की तुनना हम युद्ध म तहा का जा सवनी।  
 इनम भाइ न भा और पिता न पुत्र क विरुद्ध युद्ध किया घनुप-बाण अत्र  
 पर नि गय और नाता तनवारा चाबुत्रा और वरछा न नर-मन्त्र हुआ।  
 दान म उवाहीम की विजय हुई। उमन विद्रोहिया का परागत किया।  
 इनादगा माग गया और मन्त्रजानी उत्रा बना दिया गया। जा साग  
 मुत्तान क प्रति वफादार रहे उ उमन विद्रोहिया की आगीरें छीनकर दा  
 और पुरस्कृत किया।

इम मन्त्रजान न ब्राह्मण का पत्न म नी अधिक धन तथा शिया और  
 मय अमाग का उत्र न क निग प्रामात्ति किया। शुभांग्य न आजम  
 हुगर्भ मन्त्रजानी तथा कुछ अर्थ अमीर काशगा म हा मर गय जिमम साग  
 का शप और रिहाई की चाना धधका तगी। विन्त्र म मृग्यार श्रियास्यै  
 मन्त्रनी मातृनी लाली सिदी हुगा कर्माता तथा जय अमीरा न विन्त्र  
 करि पा।

राजनी म पर म्भ कर्मात्री क वध का आता शत्रु मन्त्रान न एक  
 का मन्त्राशूण काय किया। म्भम विद्रोहिया का विन्त्राम हा गया कि त्रय  
 म्भ उवाहाम मन्त्रमन पर वता है उमाग त्रीवन तथा मन्त्रान मुर्ति न नही  
 म्भ मन्त्र। इमनिग मन्त्रान मुत्तान की अपन्थ करन क म्भय म्भ। इगा  
 मन्त्र विद्रोहिया क ना श्रियास्यै लाली की मृपु हा म्भ। किन्तु एक पुत्र

बहादुरशाह ने जा विहार का राजाशाह का मुल्तान का नाम से अपने का मुल्तान घोषित कर दिया। अतः इन्हाही उग्रर शाह के नाम पर प्रसिद्ध हो गया और उग्ररी भाग की मर्यादा का नाम पुनर्गठन हो गया। उग्रर विहार में पत्तन मर्यादा तक का समस्त प्रदेश पर अधिकार कर दिया। गाजीपुर का मूलान नामिन्हा भी उग्रर का मिला।

पञ्जाब के मूलान शीतलाना नामी भी विदेश पर गया। उसका पुत्र गाजीशाह दिल्ली में विहार भाग और अपने पिता को मूलाना की किस्मिन्हालीम विहार के विहार का ख्यात म मर्यादा हुआ तो जायदा भी जाहौर में बसित कर लेगा। लगी भय के कारण शीतलाना ने अपने को स्वतंत्र कर लिया और वायुन के राजा वायन म वातचीत आरम्भ कर ली और उसे भारत पर आक्रमण करने तथा इन्हालीम का मिनामनायुत करने के लिए आमन्त्रित किया। वायन स्वयं भारत का जीवन का लक्ष्य था इमतिहा उमने लक्ष्य प्रस्ताव का स्वीकार कर दिया। सम्भवतः शीतलाना नामी मर्यादा था कि वायन जायदा लक्ष का नूतन नाम चना जायदा और मुग पञ्जाब में अपनी शक्ति की स्थापना करने का अवसर मिला जायदा किन्तु उसकी यह भूत थी। उसी समय आनमला नामक एक अफगान अमीर जो इन्हालीम का चाचा था मूलान में आया। वह भी दिल्ली का मिहासन स्तगत करने की अभिप्राय रखता था हम उद्देश्य से उसने भी वायन से वातचीत आरम्भ कर दी। हम सबसे परिणामस्वरूप २१ अप्रैल १५२६ ई के पानीपत का प्रसिद्ध युद्ध हुआ जिममें इन्हालीम नामी हारा जीर मारा गया। उसकी मृत्यु के साथ दिल्ली सल्तनत का भी अवसान हो गया।

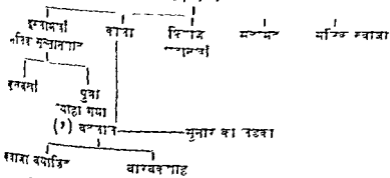
### इन्हालीम का मूलानावन

यद्यपि इन्हालीम शीतली म योग्यता तथा बुद्धि का पूरा अभाव नहीं था फिर भी उसे दुर्लभ विषयों का भोगनी पड़ी। वह वीर तथा निर्भीक घोड़ा जीर एक मर्यादा सनानायक था। वह दमानदार तथा परिश्रमी था। मययुगीन इतिहासकारों के सक्षिप्त वृत्तांत में स्पष्ट है कि उसका निजी जीवन अत्यंत था जीर उसने उत्साह के साथ अपने राजकाज में मग्न किया था। उसका माय शासन उतना ही योग्य था जितना उसने किसी भी पूर्वानिहारी का किन्तु स्वयं अफगान होते हुए भी वह अफगान जानि के चरित्र तथा भावनाओं से अपरिचित था। मूलानावश उमने अपने पिता तथा पितामह की बुद्धिमत्तापूर्ण नीति त्याग दी जीर अपने उन अमीरों पर कठोर अनुशासन तथा प्रवारी शिष्टाचार थापन का प्रयत्न किया जो कट्टर लोकतन्त्रवादी थे और जो मुल्तान का वेदक अमीरों का अमीर समझते थे। उसकी वास्तविक मुल्तान यन्त्रे तथा अपनी जायदा का उत्थान करवा जाना को धृष्टतापूर्वक दण्ड देने की

मनि न ह्ये विनाग वना टिया । स्य प्रान्त एत एतन मन्त्रन का नीर  
 का भावना विग और प्रान्त प्रान्त एत विन्त्रन म एत धाम ।

बगावती वय नापी-दग

एतान्त उता



- (२) निनाम मुनाक आनमवा यावृत्वा फलमवा मूनावा जनामवा
- { रुमान्त मन्त्रन एत मन्त्रु  
 [वाकर एत पराजित]

BOOKS FOR FURTHER READING

1. THOMAS EDWARD The Chronicle of the Pathan King of Delhi
2. DORN History of the Afghan
3. FELLIOT & DOWSON History of India etc Vol IV
4. HAIC WOOLSELEY Cambride History of India Vol III

## प्रान्तीय राज्य

### उत्तरी भाग

#### जौनपुर

फीरोज़ तुगलक की मृत्यु के पश्चात् कुतुब की कर्षों के भीतर दिल्ली मन्तव के कुतुब प्राता ने अपनी स्वाधीनता की स्थापना कर ली और नये राजवशा की भाव टानी। मरप्रथम एमा बरन वाता म जौनपुर एक था। जौनपुर नगर की स्थापना फीरोज़ तुगलक ने ही की थी और अपने चचेरे भाई जनामों उपनाम मुहम्मद बिन तुगलक के नाम पर उसका नाम रखा था। मलिक सरवर नामक एक हिजरा जिसे मुल्तान उस शक की उपाधि मिली हुई थी जौनपुर का अन्तिम सूबदार था जिसने तिमूर के आक्रमण में उत्पन्न हुई जाय यस्था के वात में दिल्ली के प्रभत्व से अपने को मुक्त कर लिया था और घास्नविर मुल्तान बन बठा था। उसने सुतान की उपाधि नहीं धारण की किन्तु पावहारिक दृष्टि से उसने स्वतन्त्र शासक की भाँति ही वाय किया। उसका वश उसकी उपाधि के नाम पर शर्की बन्नाता है। सरवर का मुक ने लवध तथा अलीगढ़ तक लआय के प्रलेण पर अपना अधिकार कर लिया। निरहृत जोर बिहार पर भी उसने अपना प्रभत्व स्थापित कर लिया। १६६ ई म उसकी मृत्यु हो गयी जोर उसका उत्तक पुत्र मलिक करनफूत उत्तराधिकारी हुआ। उसने मुबारकशाह की उपाधि धारण की। इस प्रकार यह यमिन ही शर्की वश का पन्ना शासक था जिसने मुल्तान की उपाधि धारण की अपने नाम के मिकक जारी लिये और खुनवा पढ़वाया। उसके शासा वात में दिल्ली के मल्लू एकपान ने जौनपुर को पुन जीतने के उद्देश्य से आक्रमण किया किन्तु असफल रहा। एम प्रसार १४०१ ई म दिल्ली तथा जौनपुर के बीच शत्रुता का बीज बो लिया गया जिसके कारण दाना राजवशा में दीघकान तक सघप चला। १४०२ ई म मुबारकशाह की मृत्यु हो गयी जोर उसका अनुज सिहासन पर बठा जा इतिहास में ब्राहीमशाह के नाम से प्रसिद्ध है।

ब्राहीम शर्की वश का मन्तवतम नामक था। उसने लगभग ४ वर्ष तक राज्य किया। वह मुसम्बत सुतान तथा बिद्या का सरक्षक था। उसने

पालाशा तथा विद्यालया का स्थापना की ओर राजकाय से उच्च उन्नत धर्म प्रदान किया। उसने देश के विभिन्न भागों से विद्वानों तथा धर्मशास्त्रियों का आमंत्रण किया और उन्हें निवास के लिए भत्त तथा हथ प्रचार से राज्य का आर से संरक्षण किया। इसका परिणाम यह हुआ कि इस्लामी धर्मशास्त्रों का नून तथा अर्थ विषयों पर अनेक ग्रंथ लिखे गये। जौनपुर नगर का उमन जनेक स्मारकों विनाशक मस्जिदों से सुशोभित किया जिसमें प्रसिद्ध जटाना मस्जिद अत्यधिक सुन्दर है। उसके संरक्षण में जौनपुर में म्यापत्य का एक नयी नदी का विकास हुआ जो शर्की शली के नाम से प्रसिद्ध है। जौनपुर की मस्जिदों दखन में सुन्दर हैं उनमें सामान्य प्रकार की मीनारों नहीं हैं और उन पर सिद्ध स्थापत्य का प्रभाव दाख पड़ता है। इब्राहिम का सगात तथा अर्थ जौनपुर-कलाशा से भी प्रम था। उच्चदासि के मास्कुतिक कार्यों के कारण इस मन्तान के समय में जौनपुर भारत के शाराज के नाम से विद्वान हुआ।

इब्राहिम के शासनकाल में दिल्ली तथा जौनपुर के पारस्परिक सम्बन्धों में बढ़ोत्तरी आयी। मल्लू के अत्याचारों से उन्नत के त्रिण जब महमूद तुगलक भाग के जौनपुर पहुँचा तो इब्राहिम ने उसके साथ ऐसा व्यवहार नहीं किया जगा कि एक मुन्तान के साथ करना चाहिए था। जत महमूद ने जौनपुर राज्य के कन्नौज त्रिण पर बलपूर्वक अधिकार करके उसे अपमान का व्यवहार किया। इसके उपरान्त इब्राहिम का खिन्नता से जा दिल्ली का सुल्तान बन बठा था मरफ हा गया। १४०७ ई में इब्राहिम ने महमूद का कन्नौज से मार भगान का प्रयत्न किया। इब्राहिम की बाह्य नीति महत्वाकांक्षायुक्त तथा आक्रमणकारी थी। उमन बगान पर आक्रमण किया किन्तु उस जीवन में मरफ नहीं हुआ। १४१६ ई में उसका मृत्यु हुआ और महमूदशाह उसका उत्तराधिकारी हुआ। इस मुन्तान ने चुनार के जिले का विजय किया किन्तु बालपी पर अधिकार करने में वह सफल नहीं हुआ। उमन दिल्ली पर आक्रमण किया किन्तु वहनास लानी ने उसे परास्त किया। १४२७ ई में उसकी मृत्यु हुआ। अब उमका पुत्र भिक्खन मुहम्मदशाह के नाम से सिंहासन पर बठा। वह सिद्धांतज्ञान शासक था। उसने अपना जमारा में गगना मात्र न किया और उमका वध करके उसके बाद हुगलशाह का सिंहासन पर विरा किया। हुगलशाह शर्की वंश का जन्मिण मुन्तान था। उमन समय में सिद्धा तथा जौनपुर की प्रतिनिधिता पराराणा का पट्टेच गयी और एक दासकालीन मुद्ध आक्रमण हुआ गया। १४२८ ई में हुगलशाह ने वहनास लानी से संधि कर ली जो पार थप तक चली। इस बीच में उमन निरन्तर के जमानारों के विनाश का दमन किया और सूट के उद्देश्य से उगागा पर आक्रमण करके वनी के राजा से एक भारी रकम मुद्ध के हरजान के रूप में वगूनी की। १४६६ ई में

उसने ग्वालियर पर आक्रमण किया। यद्यपि वह दिल्ली का विजय न कर सका किन्तु राजा मानसिंह का युद्ध-शक्ति-पूर्ति का रूप में बहूत सा धन जोनपुर के गुजरात का भेजा गया। इसी बीच दिल्ली तथा जोनपुर के बीच में पुनः मध्य आरम्भ हो गया। बहलोल खान ने हुसैनशाह का पराजित करके बिहार में शरण लेने पर बाध्य किया। उसने सम्पूर्ण जोनपुर पर अधिकार करके अपने ज्येष्ठ पुत्र बाराकशाह का वहाँ का गिहासन पर बिठा दिया। बिहार में बैठ कर हुसैनशाह ने दिल्ली गुजरात के विरुद्ध निरन्तर युद्ध चलाये और जोनपुर राज्य के जमींदारों का उससे विरुद्ध बिगाह करने का भयनाया। यद्यपि कारण था कि बहलोल के उत्तराधिकारी गिहास खान का कतार नाति अपनाता पडा और जोनपुर का स्थायी रूप से दिल्ली सामन्तन में मिलाना पया। १५०० ई. में बिहार में ही निर्वासित का दशा में हुसैनशाह की मृत्यु हो गयी और उसके साथ शर्की राजवंश का भी अन्त हुआ गया। शर्की वंश ने लगभग पचासी वर्ष तक जोनपुर में शासन किया। इस वंश के शासनकाल में राज्य की भौतिक समृद्धि हुई और सांस्कृतिक कार्यों का प्रासाहन मिला। देश के प्रांतीय राज्या में जोनपुर ने उच्च स्थान प्राप्त कर लिया।

#### मानवा

मानवा का प्रांत जिस अलाउद्दीन खानजी ने १३०५ ई. में विजय किया था १३६८ ई. तक दिल्ली सामन्तन का एक अंग बना रहा। उसके सूबदार तियावरखा गोरी ने जिस सम्भवत फीराज ने नियुक्त किया था तिमूर के आक्रमण के उपरान्त दिल्ली के प्रभुत्व का जुआ उतार फेंका था और वास्तविक सुल्तान बन बैठा था। किन्तु मलिक उस शक की भांति उससे भी विधिवत सुल्तान की उपाधि नहीं धारण का। १४०६ ई. में उसकी मृत्यु हो गयी और उसका पुत्र जलपखी हुसैनशाह के नाम से सिंहासन पर बैठा। नया सुल्तान बार पराक्रमी तथा साहसी था। आक्रमणकारी युद्धों में उससे आनंद आता था और वह उसके सम्पूर्ण शासनकाल में जारी रहे। १४२२ ई. में उसने सहारा उपासी पर आक्रमण कर दिया और वहाँ से अतुल धन लूटकर लाया जिसमें ७५ हाथी भी सम्मिलित थे। इससे बाद उसने खैरत पर आक्रमण किया और उस पर अधिकार करके वहाँ के राजा को बन्दी बना लिया। उसने दिल्ली गुजरात जोनपुर तथा दक्षिण के बहमनी सुल्तानों के विरुद्ध युद्ध किये किन्तु इन आक्रमणकारों युद्धों से मानवा का अधिक लाभ नही हुआ और न सुल्तान के यश में ही वृद्धि हुई। निरन्तर युद्धों से जजरित होकर ६ जुलाई १४३५ ई. को हुसैनशाह ने सत्तार से चन बसा। उसका पुत्र गजीखी उत्तराधिकारी हुआ और मुहम्मदशाह के नाम से सिंहासन पर बैठा। वह एक निरन्तर अयोग्य शासक था और राजकाज की ओर तनिक भी ध्यान नही देता

1870-71 का सारा मासिक मूल्य म सुदुर्लभ पत्रिका म सुदुर्लभ का मासिक म  
 तब पूरक म सुदुर्लभ ओर म मवाह तदा वष नक पहुँचा गया ।  
 नियम मवाह न म सुदुर्लभ स्वाकार क निया था । उम म व सुदुर्लभ  
 उम म न भा मक पाम श्रमता दून-ममम मजा । फरिमा क बचनानुसार  
 बह नम वार मयाप्रिय तथा विमान था और मक गायनकान म मसका  
 मिक तथा मुमनमान मना प्रत्रा मुवा था और मक पारपरिव मियतापूण  
 ममम था । मयम हा का ममा वय वाना म अम मसन युद्ध न किया म  
 ममानिए कहा जाता है कि उमका सुमा मका घर और युद्धमत्र उमका  
 मियामममम वन गया था । अपन अवकाश क समय का व इतिहास-मथा  
 तथा ममार क विभिन्न गजवरवार क मममरणा क मुनन म विनाया करता  
 था । उमन २४ वय तक मयम किया ।

मियामुदान दूसरा मुल्लान मजा जा अपन पिता महमू का मृत्यु क उपरान्त  
 १४६६ ई म मिहामन पर बटा । वह धार्मिक प्रवृत्ति का मुक्क था और अपना  
 मियामन समय मवर प्राधता म विनाया करता था । वह ममिरा तथा इमाम  
 मारा निविद्ध अय भावन का वस्तुमा स परहज करता था । वह शक्तिप्रिय  
 था किनु उमक पुत्रा क पारपरिव डूड क कारण उमका पारिवारिक जीवन  
 कनहमूण था । उमक मवत बने पुत्र नामिमामन न १५०० ई म मसका मिय  
 मवर मार डाला और मिहामन हस्तगत कर लिया । तथा मुल्लान क्यभिषारी  
 तथा प्रजापीठक निक्ता । कहा जाता है कि उमक रनिवाम म १५००० स्त्रिया  
 थी । ममिरा पीन का मममन भा उमक अधिव था । १५१० ई म एक मिन  
 ममिरा क मम म वह एक हीन म गिरकर मय गया । उमका पुत्र महमू  
 मनीय क मम म मिहामन पर बटा । उमन ममरी क ममिनीराय नामक एक



उमर ग्यानिपर पर आक्रमण किया। यद्यपि यह दिन का विजय न कर सका किन्तु राजा मानसिंह का मुद्र-गानि-गुनि व रूप म प्रद्वन मा धन जौनपुर क मुल्तान का बना पया। इसी वीर शिन्धी तथा जौनपुर क ग्रीच म पुन गघप जाग्रम हा गया। यहनात तानी न हुसगशाह का पराजित करक बिहार म शरण ना पर बाध्य किया। उमर सम्पूण जौनपुर पर अधिकार करक अपन ज्यल पुत्र वारवाशाह का वही क सिहासन पर बिठा किया। बिहार म बठ कर हुसगशाह न शिन्धी मुल्तान क बिस्द निमम कुचश चनाय और जौनपुर राय क जमीनारा का उमर बिस्द बिना करन का भन्नाया। यहा कारण था कि वहनात क उत्तराधिकारी सिक्तर तानी का बठार नानि अपनाती पया और जौनपुर का स्याया रूप स शिन्धी सलतनत म सिनाना पया। १५० ई म बिहार म ही निर्वासित की तथा म हुसगशाह की मृत्यु हा गयी और उमर साथ शर्की राजपूश का भी जवमान हा गया। शर्की वश न लगभग पचामा वष तक जौनपुर म शासन किया। इस वश क शासनकाल म राय की भौतिक समृद्धि हुई और सांस्कृतिक कार्यों का प्रोत्साहन मिना। देश क प्रांतीय राया म जौनपुर न उच्च स्थान प्राप्त कर लिया।

#### मालवा

मालवा का प्रांत जिस अनाउद्दीन खानजी न १३०५ ई म विजय किया था १३६८ ई तक दिल्ली सलतनत का एक जग बना रहा। उमर सूबदार दिनावरखा गोरी ने जिस सम्भवत फीराज ने नियुक्त किया था तिमूर के आक्रमण के उपरांत दिल्ली क प्रभुत्व का जुआ उतार फेंका था और वास्तविक मुल्तान बन बठा था। किन्तु मलिक उस शक की भांति उसन भी विधिवत मुल्तान की उपाधि नहीं धारण का। १४६ ई म उसकी मृत्यु हो गयी और उसका पुत्र जनपखा हुसगशाह क नाम से सिहासन पर बठा। नया मुल्तान वार पराक्रमी तथा साहसी था। आक्रमणकारी युद्ध म उस आन आता था और वे उसक सम्पूण शासनकाल म जारा रह। १४२२ ई म उसन सहगा उनीसा पर आक्रमण कर लिया और वहाँ स अनुन धन लूटकर लाया जिमम ७५ हाथी भी सम्मिलित थ। इसक बाद उसन मरन पर आक्रमण किया और उस पर अधिकार करक वहाँ क राजा को बन्दी बना लिया। उसन दिल्ली गुजरात जौनपुर तथा दक्षिण क बहमनी मुल्ताना क बिस्द युद्ध बिय किन्तु इन आक्रमणकारी युद्ध स मानवा को अधिक लाभ नहा हुआ और न मुल्तान के यश म हा बद्धि हुई। निरंतर युद्ध स जजरित हाकर ६ जुलाई १४२५ ई को हुसगशाह इस सत्तार स चल बसा। उसका पुत्र गाजीखा उत्तराधिकारी हुआ और मुहम्मदशाह क नाम से सिहासन पर बठा। वह एक नितांत अधोग्य शासक था और राजकाज की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देता



शिरागामी राजा। मामा का अपने विरुद्ध अमीरा का मन करने के लिए आमंत्रित किया और अपना प्रभावशाली विजय किया। अन्त में राजपूतों के प्रभार के कारण मुगलमान अमीरा की शर्तों भक्त की जीर उम गति शाही यत्रा के विरुद्ध उठा। गुजरात के मुजराशाह शिरा म मन्थना की प्राधना का। शिरा मन्थिगम त राणा गागा का शिरा म स्वयं महमू का हा पराजित कर दिया। शिरा म विरुद्ध इन युद्ध में महमू शिरा म बना था गिमा गया शिरा म उमर साथ जयधिर उन्तरता का यत्रा किया और उमर राग्य लौटा दिया। गिसीरिया राणा के इन दयापूर्ण व्यवहार के बावजूद भी तत्ता मानवा का शक्ति तथा प्रतिष्ठा का ही पुन स्थापना हा गया और त मानवा तथा चित्तों के बाध सघप का ही जन हा पाया। मूग मन्थू राणा की उन्तरता की सराहना न कर सता और सागा के उन्तराधिरारी रत्नमिह पर उमर जाश्रमण किया। राणा रत्नमिह त वन्ता मन के लिए मालवा पर जाश्रमण किया और मन्थ का हुरामा। मन्थ का महमू न गुजरात के मुल्लान बहादुरशाह के छोटे भाई चाली का अपने यत्रा परण दी और इस प्रकार उस मुल्लान से शत्रुता मान त ना। १७ मार्च १५१६ ई का बहादुरशाह ने माण्ड पर अधिकार कर लिया और इस प्रकार मानवा की स्वतन्त्रता का अन्त ही गया। १५३५ ई में मुगल सम्राट हुमाय के आश्रमण तब वह प्रांत गुजरात राज्य का जग बना रहा। हुमाय तथा शरशाह के समय में यह दिल्ली साम्राज्य का प्रांत रहा। शरशाह ने शजातली का उसका ग्नेदार नियुक्त किया। शजातली की मृत्यु के उपरांत उसका पुत्र बाजबहादुर सूदेदार हुआ। इस्नामशाह मूर की मृत्यु के बाद की अराजकता के समय में बाजबहादुर ने मुल्लान की उपाधि धारण कर ला। १५६२ ई में मुगल सम्राट अकबर ने बाजबहादुर को पराजित करके मानवा का अपने साम्राज्य में मिला लिया।

### गुजरात

गुजरात के धनी प्रांत का अनाउद्दीन खलजी ने १२६७ ई में जीतकर दिल्ली सल्तनत में मिलाया था। उस समय से लेकर १४१६ ई तक वह दिल्ली का प्रांत बना रहा। १३६१ ई में पीरोज तुगलक के सबसे छोटे पुत्र मुहम्मदशाह तुगलक शिरीय ने जफरखी का जागक राजपूत मुसलमान का पुत्र था गुजरात का सूदेदार नियुक्त किया। केंद्रीय सत्ता की दुबलता तथा निमूर के आश्रमण से उत्पन्न हुई अव्यवस्था से लाभ उठाकर १४०१ ई में वह स्वतंत्र शासक बन बठा। कुछ समय के लिए उसका विद्रोही पुत्र तातारली ने उसे पतन्युत करके अपने आप को नासिरुद्दीन मुहम्मदशाह के नाम से मुल्लान घोषित कर दिया किंतु उसके चाचा शम्सली ने उसका वध कर दिया।

बनरहा न इमक बा पुन गदा प्राप्त कर ली और १४११ ई तक मुल्तान मरवापरशाह क नाम से शासन किया। मुजफ्फरशाह क शासनकाल म गुजरात तथा मालवा म सघष हुआ। मुजफ्फरशाह न मालवा क सुल्तान हुसगशाह का परास्त किया और धार पर अधिकार कर लिया। १४११ ई म उमकी मृत्यु हा गया और उसका पौत्र जहमशाह गदा पर बठा। उस मुल्तान का गणना गुजरात क महानतम शासक म है। उसी को उस राज्य की स्वतन्त्रता का मस्थापक माना जाता है और यह उचित हा है। उसन इस्तीस वष (१४११ म १४४२ ई) तक राज्य किया। वह महत्वाकाक्षा तथा पराक्रमी सुल्तान था और विजया द्वारा उसन अपन राज्य का विस्तार किया। उमन मालवा असारग राजस्थान तथा जय पन्नासा राज्या क शासक क विरुद्ध युद्ध किये। उमन महान शक्ति तथा महत्वाकाक्षा विद्यमान थी उसन शासन का पुन सफर किया और जसावल नामक पुरान कस्ब क स्थान पर आधुनिक जहमना बा नामक नगर का निमाण कर उस अपनी राजधानी बनाया। यहा पर उमन अनेक शानदार इमारतें बनवाया जिनम से एक विशाल मस्जिद आज भा गली हुई है। वह सफल शासन था और गुजरात क निहाम म अपनी याम प्रियता उदारता तथा दानशीलता क लिए प्रसिद्ध है। किन्तु वह धमाध धा और अपनी गर मुस्तिम प्रजा क प्रति उसका व्यवहार असम्पिणतापूर्ण था। १६ अगस्त १४४२ ई का उसकी मृत्यु हा गया। उमन बा उसक पष्ठ पुत्र मुहम्मदशाह न १४६२ ई म १४५१ ई तक शासन किया। फिर कुतबुद्दीन जहम जोर दाऊद नामक दो दुमन शासक हुए। दाऊद इतना अयोग्य था कि सिंहासन पर उठन क कुछ हा जिन क भीतर अमारा न उस अन्त्य करके अहमदशाह क पौत्र जयुन फतहगं का गद्दी पर बिठाया। उमन महुमूशाह का उपाधि धारण की। वह महुमू वगडा क नाम म प्रसिद्ध है।

महुमू वगडा अपन वष का महानतम शासक था। वह धार याज्ञा महान विद्वान तथा सफर शासक था। उसका शरीर पवताकार मछे लम्बा आकृति मंत्र तथा भृगु अभीम था। एक अधिकारपूर्ण गुजरात इतिहासकार क अनुसार महुमू वगडा न गुजरात राज्य क धर्म और प्रताप म बुद्धि का वह अपन म पहन तथा वा क सभा गुजरात शासक म सब प्रष्ठ था। उपाधि उदारता इस्लामी नियम का प्रचार तथा मुसलमान का अभिवृद्धि ठाम निणय-बुद्धि शक्ति पराक्रम तथा विजय मभा दृष्टि से और बापका जीवन तथा वृद्धावस्था म समान रूप से वह श्रम का था। उमन निरपेक्ष वष तक शासन किया। उसका पन्ना बाप उद किशोरी दरवारिया का मन करना था जा उसक भाई हमनगं का सिंहासन

पर विना चाहे था। मगध का उगा विजय की नाति जाग्भ की। उसन कषा क गुप्त और साइ गाम्पा का हराया और नूनाग तथा म्पानर क किल का जीत लिया। जगन (शरवा) क ममु। डाकुजा का उसन दण्ड दिया। मालवा क महमूद राजजी क विरुद्ध उगा विजयशाह बन्मना का पना लिया और राजजा का पराजित किया। उसक शासनकाल म गुजरात राज्य की सामाएँ विस्तार का पराराग का पहुँच गया। अपन शासनकाल क अन्तिम दिना म उमन मिस्र क सुतान का सहायता स पुनगानिया पर जाक्रमण किया जिहान भारतीय ममु। क नाभप्रत यापार पर एकाधिकार स्थापित कर रखा था। मिया येड का मनापति जग का सूदर अमार हुसन कुद था और भारतीय सना का मचाजन मन्त्र अयाज न किया। १५०८ ई म चोल क निकट एन पुतगाना दुस्ती की पराजय हुँ किन्तु १५०६ ई म पुतगानिया न अपनी हानि पूरी कर ली और ड्यू क निकट मिश्रा क वर का कुचन दिया। इम विजय स पुनगाली ममुनट पर अपन राज्य हुए प्रभुत्व को पुन प्राप्त करन म मफन हा सक। बाध्य हाकर महमूद बगन का उह ड्यू क निकट यापारिक बाठी बनान क लिए भूमि देना पना। नवम्बर १५११ ई म महमूद की मृत्यु हा गयी और उसका पुत्र मुजफ्फरशाह द्विनाय उत्तराधिकारी हुआ। नय सुतान न मन्नीराय राजपूत क विरुद्ध युद्ध दिया और महमूद खनजी का पुन मालवा की गद्दी पर बिठा दिया। १५२६ ई म उसका दहावसान हा गया। इमक उपरात सिक्दर तथा महमूद त्तीय नामक दा अयाग्य शासक गद्दी पर बठ किन्तु उहान कुछ महीना ही राज्य दिया। जुनाई १५२६ म मुजफ्फरशाह त्तीय का एक जय पुत्र बहादुरशाह सुतान हुआ।

बहादुरशाह न १५२६ ई स १५२७ ई तक राज्य दिया। उसकी गणना अपन समय क याग्यतम शासक म की जाती थी। अपन पितामह का भाति बह भी साहसी पराक्रमी तथा युद्ध प्रिय था। सिंहासन पर बठन क उपरात जीघ्र हा उसन विजयवाय जाग्भ कर दिया। मानवा के महमूद द्वितीय का हराकर १५३१ ई म उसन उस राज्य का गुजरात म सम्मिलित कर दिया। तदुपरात १५२१ ई म उसन मवाड पर जाक्रमण किया और चित्तौग न पर लिया। किन्तु उसन एक भून की हुमाय क विनाही चकर भाइया का शरण देकर उसन मुगल साम्राज्य स झण्डा माल न दिया अत हुमायू ने उस पराजित करके मानवा पर अधिकार कर दिया और फिर उस गुजरात स भी मार भगाया। किन्तु हुमायू का अपना सना वापस बुलानी पना। बहादुरशाह ने अपना राज्य पुन प्राप्त कर लिया और अब उसन पुनगानिया का गुजरात स मार भगाने की योजना बनायी क्याकि उहान हुमायू क विरुद्ध उस सहायता

नहा गया। फरवरी १५२७ ई म पुनगाला सूबदार डा नुतहा कूहा न धाना कर उम अपन एक जहाज पर बुना निया और विश्वासघान करव मम म दुवा निया। उमका मृत्यु क बाद गुजरात म क दुवल शासक हुए और राज्य भर म अवस्था फरी रहा। इसम लाभ उठाकर महान मुगल सम्राट अकबर न १५७० ई म गुजरात का जीतकर मुगल साम्राज्य म सम्मिलित कर निया।

**बगाल**

बगाल का चारहवां शताब्दी क अंतिम अंशक म बख्तियार खान मुहम्मद खान बख्तियार खानजा न विजय करव त्रिलो साननन म सम्मिलित कर निया था। किन्तु उसका मृत्यु क उपरांत उमक उत्तराधिकारिया न अपना स्वतंत्रता स्थापित करन का प्रयत्न निया। बगाल का प्रांत धना तथा शिवा स दूर था और स्वनाय स्वायत्तता का उपभाग करन का च्छुड़ वहाँ की जनता भी सम्भव उनका समयन करना था। इसलिये अपनी याजनाजा का वायावित करन क लिए उह और भी अधिक प्रोत्साहन मिला। बख्तियार न बगाल का शिवा का प्रभुत्व स्वीकार करन पर बाध्य निया और अपन पुत्र तुगलकों को वहाँ का सूबदार नियुक्त निया। किन्तु उसका मृत्यु क उपरांत तुगलकों स्वतंत्र हो गया। शिया मुद्दीन तुगलक न शासन की सुविधा क लिए बगाल का तम्नौता गनगोव और मुनारगोव न तीन टुकड़ा म बाँटकर समस्या का हल करन का प्रयत्न निया। किन्तु इसम भी बगालिया का विद्रोह होन म न राका जा सका। मुहम्मद खान तुगलक का भा शिवा का प्रभुत्व पुन स्थापित करन क लिए प्रयत्न करन पड थ। किन्तु उसका मृत्यु स पतल हो प्रांत न पुन शिवा स अपना सम्बन्ध ताड लिया। १३८५ ई म हाजी इतियास न प्रांत क विभाजन का समाप्त कर निया और शमसुद्दीन इतियासशाह क नाम स क मयुक्त बगाल का शासक बन बटा। वह मुद्दप्रिय शासन तथा महान पढा था। उमन उदागा तथा तिरहुत पर आक्रमण करव उनम कर वसूत निया। उमन शिवा गलतत का भूमि का भी पलाशान निया। परिणाम स्वरुप कागत्र तुगलक का बाध्य होकर उम दण दन क लिए बगाल पर आक्रमण करना पना। किन्तु बगाल का पुन विजय करन का उमका याजना रिक्त रहा। १३५७ ई म १२ वष क समृद्धपूण शासन क उपरांत इतियास का मृत्यु हो गया।

१३५७ ई म इतियास का पुत्र सिकन्दर मुनान हुआ। उमक शासन काल म पीगात्र तुगलक न बगाल पर अपना प्रभुत्व स्थापित करन का पुन प्रयत्न निया किन्तु वह अमफल रहा। १६ ई म ६ वष क सम्पन्न शासनकाल क उपरान्त सिकन्दर का दहावसान हो गया। उसका उत्तराधिकारी

भारत को भागनी पड़ी थी। गिरण्डर शक्तिशाही शासन तथा ख्वासी विद्या का पोषक था। ईरान अरब तथा मगोपाटामिया व अनक विद्वानों का उमक दरवार में हाजिरी स्थायी मित्र। विन्तु यन् धर्माध्य तथा अपनी प्रजा के धर्म का कट्टर शत्रु था। उगा हिन्दुओं पर अत्याचार किये और ब्राह्मणों का याता मुमनमान बना लिया अथवा काश्मीर में बाहर भगा दिया वंशवत् परिवारों का वही रहना किया। उगन अनक मन्त्रियों का नष्ट किया जिनमें मत्तन का मानक मन्त्रि अति महत्वपूर्ण था। यन् विज्ञान बना कृति आज भी आधा जनी हुई तथा भगनावस्था में पनी हुई है और अपना उपस्थिति से मुल्तान की युगिनी व उत्तमाह का परिचय देती है। अपनी इस धर्माध्यता के कारण ही वह गिरण्डर युगिनी व नाम से विख्यात हुआ। बाइस वष तथा नौ महीने के उपरांत १४१६ ई में यन् मृत्यु को प्राप्त हुआ और उमका पुत्र अलीशाह उत्तराधिकारी हुआ। उमन थोड़े ही वष राज्य किया। उसके भाई शाहखान ने उसे पच्छुत कर दिया और जून १४२० ई में स्वयं जनुअबीदीन के नाम से सिहामन पर बठा। जनुअबीदीन काश्मीर का महानतम मुल्तान था। वह खतना उगार दयानु तथा उग्वन विचारों का यकिन था कि उसे काश्मीर का अकबर कहा गया है। उसने काश्मीरी ब्राह्मणों के उन परिवारों का जिन्हें सिक्खर ने निर्वामित कर दिया था अपने घरों को वापस चोटन की जाना दी। उसने हिन्दू विद्वानों को भी अपने दरवार में जाधय किया और घृणित जजिया कर हटा दिया। उसने गो वध का निषेध कर दिया और अपनी सम्पूर्ण प्रजा का धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान की। काश्मीरी के अतिरिक्त जनुअबीदीन फारसी हिन्दी तथा तिब्बती भाषाओं का विद्वान था। वह साहित्य बना मगीत तथा चित्रवना का पोषक था। उमने महाभारत तथा राजतरंगिणी का फारसी में अनुवाद कराया। इसी प्रकार जरबी तथा फारसी के जनक महत्वपूर्ण ग्रन्थों का हिन्दी में अनुवाद कराया गया। उमने राहजनी का पूर्णरूप से दमन किया और कानून तथा न्यायस्था कायम करने का प्रयत्न किया। उसने जनता पर कर का बाण कम कर दिया और मुद्रा में भी सुधार किये। उमने वस्तुओं का मूल्य निर्धारित किया और बाजार पर नियंत्रण कायम किया। उसके शासनकाल में काश्मीर की असाधारण भौतिक उन्नति हुई। १४७ ई के अंत में किसी समय उसरी मृत्यु हो गया और उसका पुत्र हैदरशाह मुल्तान हुआ।

सम्भवत हैदर ही काफी योग्य पासक था किन्तु उसके उत्तराधिकारी दुर्जन तथा अयोग्य थे। परिणामस्वरूप चारा ओर अयोग्यता तथा कुप्रबंध छा गया। अनेक दिन उठ खड़े हुए और शक्ति व निष्पक्ष धर्म नष्ट। १५४० ई में मिर्जा हैदर नामक बाबर के एक सम्बन्धी ने काश्मीर का विजय

कर दिया। नाम के लिए उसने हुमायूँ के प्रतिनिधि के रूप में शासन किया किन्तु वास्तव में वह स्वतंत्र शासक था। १५५१ ई. में काश्मीरी अमीरा ने यह पराजित करके राज्य के बाहर खड़े किया किन्तु अमीरा का पारम्परिक गणतन्त्र प्रवृत्त चलता रहा। १५५५ ई. में चर कबीर ने अपना प्रभुत्व स्थापित कर दिया और उनका एक सदस्य काश्मीर का राजा हुआ। १५८६ ई. में अकबर ने काश्मीर का जीतकर मुगल साम्राज्य में सम्मिलित कर दिया।

### उड़ीसा

उड़ीसा का राज्य गंगा के डेल्टा से गान्धावरी के मुहाने तक फैला हुआ था। उसका संघटन अनासक्तवर्मा चौतले ने किया था जिसने लगभग ७ वष (१०७५-११४८ ई. लगभग) राज्य किया था। वह असाधारण शासक था। वार तथा विजयता होने के अतिरिक्त वह धर्म और सम्भूत तथा तन्त्र साहित्य का पापक था। उसने पुरी में प्रसिद्ध जगन्नाथ मन्दिर का निर्माण कराया। उसका उत्तराधिकारी प्रसिद्ध नरसिंह प्रथम हुआ (१२३८-६४ ई.)। उसने तथा उसके उत्तराधिकारी ने सफलतापूर्वक तुर्की आक्रमणकारियों का मुकाबला किया और राज्य की रक्षा की। उसकी मृत्यु के उपरान्त उसके वंश का पतन हो गया। १४३४ ई. में अथवा उससे लगभग उसके स्थान पर एक नया राजवंश की स्थापना हुई जिसने एक जनतापनी में अधिपति उड़ीसा पर शासन किया।

एक नया राजवंश का सम्स्थापक कपिलेश्वर योग्य तथा गान्धी शासन था। उसने विजयनगर तथा बहमनी शासकों के आक्रमणों में अपने राज्य की सफलतापूर्वक रक्षा की। उसके राज्य पुरुषोत्तम (१४७०-८७ ई.) राजा हुआ। उसके शासनकाल में राज्य का पतन हो गया और गान्धावरी के स्थान का प्रायः भाग उसमें पृथक् हो गया। उसके उत्तराधिकारी उसके पुत्र प्रताप (१४८७-१५४० ई.) हुआ। उस गान्धावरी के स्थान का अपने राज्य का प्रायः भाग विजयनगर के राजा का स्थापित। गान्धावरी के स्थान ने भी उड़ीसा पर आक्रमण किया और प्रताप के अपमानजनक शर्तों स्वीकार करना पड़ा। १५४१-४२ ई. के लगभग कपिलेश्वर के स्थान पर भास्कर की स्थापना हुई जिसने सम्स्थापक गाविलेश्वर अथवा गणेश जी का था। गान्धावरी ने १५५६ ई. तक शासन किया फिर मुगल साम्राज्य ने उसका प्रत्यक्ष किया। उसने उड़ीसा का मुगल साम्राज्य में सम्मिलित कर दिया। १५६८ ई. में उसका मृत्यु हो गया। अब मुगल तथा बंगाल के शासकों के मुहाने ने उड़ीसा पर तानाशाही स्थापित की। १५६८ ई. में बंगाल के मुहाने ने उसके जीतकर अपने राज्य में सम्मिलित कर दिया।



## मारवाड़

राजस्थान का एक अथ महत्वपूर्ण राज्य मारवाड़ था जिसे आजकल जायपुर कहा है। उम पर राजीव राजपूत शासन करने थे जो प्राचीन राष्ट्र गुर्जर थे। मारवाड़ का आधुनिक स्थापना पुनः के समय में जारी है। जिसे १३६४ ई. में १४२१ ई. तक शासन किया। उमरा उतरा गिराणी प्रसिद्ध जाया हुआ जिनमें जायपुर के दुम का निर्माण कराया गया पर एक नगर की स्थापना की जोर उस अपनी राजधानी बनाया। उमन एक अथ महत्वपूर्ण जिला भी थायाया जिसका नाम मन्तौर था। उमन १४२८ ई. में १४८८ ई. तक लगभग पचास वर्ष शासन किया। उसके एक पुत्र रिकता १४६४ ई. में लगभग आधुनिक बीरानेर राज्य की स्थापना की। उम युग में मारवाड़ का सबसे अधिक महत्वशाही शासक मान्यैव (१५३०-६२ ई.) हुआ जिनके समय में वह राजेश शक्ति के शिखर पर पहुँच गया। मान्यैव को शरणाह में मरण करना पडा जिसने अन्त में बाय होकर उस पराक्रमी नरम में सधि कर ली।

## आमेर

आमेर के राज्य पर जिसे आजकल जयपुर कहते हैं मूयवशी बड़वान् राजपूत शासन करते थे। वे अपने को अयोध्या के श्री रामचन्द्र का वंशज मानते थे। वनन जेम्स टॉन के मतानुसार आमेर राज्य की स्थापना दसवा शताब्दी में हुई थी। एसा प्रतीत होता है कि अपने इतिहास के प्रारम्भिक जिनमें यह मेवाड़ के प्रभुत्व में रहा। परन्तु १४वीं शताब्दी में उसका कुछ राजनीतिक महत्त्व बढ़ गया जोर मुगलकाल में आमेर राजस्थान की प्रथम शक्ति की रियासत हो गयी। उमन राजा भारमनन १५६१ ई. में अकबर की अधीनता स्वीकार कर ली।

## शिशु मन्त्रालय

## खानदेश

ताप्ती नदी की घाटी में स्थित खानदेश कीराज तुगलक के शासनका के अन्त तक दिल्ली सल्तनत का एक प्रांत बना रहा। उसके सूबदार मन्तौर राजा फरकी जिस पीराज न नियुक्त किया था उमकी मृत्यु के बाद की अवस्था के काल में स्वतंत्र शासक बन गये। उसने गुजरात के मुजफ्फरशाह प्रथम से युद्ध किया किन्तु पराजित हुआ। वह खानदेश शासक के रूप में विख्यात था। २६ अप्रैल १६६ ई. को उसकी मृत्यु हो गयी जोर उसका पुत्र मन्तौर नासिर उत्तराधिकारी हुआ। उसने अपने भाई हमन को हराया और असीरगढ़ के हिंदू राजा से वह जिनका छीन लिया किन्तु उमने गुजरात के मुल्तान का प्रभुत्व

स्वीकार करना पड़ा। बहमनी सुल्तान अलाउद्दीन बहमन के हाथ भी उस राज्य चली गया। उसका मृत्यु (१४३८ ई.) के उपरान्त क्रमानुसार दो दरबान सुल्तान गद्दी पर बैठे। १४५७ ई. में आन्तिकाई द्वितीय ने गानेश के मिहान बन पर अधिकार कर लिया। वह योग्य तथा साहसी शासन था। उसने गानेशवाला को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया और शासन व्यवस्था में भी सुधार किया। १५०१ ई. में उसकी मृत्यु हो गयी और उसका भाई राजा जनराधिकारी हुआ। १५०८ ई. में उस सुल्तान का भी मृत्यु हो गया। उसका पुत्र गाजीशाह गद्दी पर बैठा किन्तु गानेशवाला ने उसे अपने भातर से उस विषय पर सार डाला गया। तब गानेशवाला ने व्यवस्था का पुनः आगमन हो गया और उसके पत्नीमा गुजरात तथा गुजरात के सुल्तानों ने अपनी आन्तरिक दुर्बलताओं से लाभ उठाना चाहा। अतः आन्तिकाई तृतीय गानेशवाला का सुल्तान हुआ। वह गुजरात के सुल्तान महमूद बेगला का सम्भोग्य बान था जिसका गानेशवाला के अन्तरिक मामला में बहुत प्रभाव पड़ा गया था। आन्तिकाई को १५२० ई. में मृत्यु हो गयी। उसका उत्तराधिकारी भी उसकी पत्नी ही बन निकली। वह पठाणा शासकों के आक्रमणों में अपने राज्य की रक्षा में परम। १६०१ ई. में अकबर ने गानेशवाला का मुगल-शासन में मिला लिया।

#### बहमनी राज्य

बहमनी विन तुगलक के शासनकाल में कुछ स्थिती अन्तर्गत में उसकी अन्तःकारण नीति के विरुद्ध विद्रोह किया और अन्तःकारण नीति पर अधिकार कर लिया और अपने में से इस्माइल मुव नामक एक व्यक्ति को नामिन्दगीतशाह के नाम से सुल्तान घोषित कर लिया। नामिन्दगीतशाह तथा नय राज्य का सुल्तान हान के योग्य न था क्योंकि उसके पिता उससे बड़ा अधिक योग्य व्यक्ति था और गानेशवाला भी इसलिए उससे सिंगमन त्याग दिया। तब अमीरा ने अपने राजा को ३ अगस्त १४७७ ई. को अतुल मुजफ्फर अन्तःकारण बहमनशाह के नाम से सिंगमन पर बैठा। परिणत न एक कहानी ही है कि अपने प्रारम्भिक दिनों में बहमन गग नामक एक ब्राह्मण के यहाँ नौकर था ब्राह्मण ने उसके बहमनशाह का व्यवहार किया और उसका सुल्तान हान की अधिष्ठाणी था। इसा वृत्तता के रूप में बहमनी का उपाधि धारण की। किन्तु अन्तःकारण जनसंघाना ने मित्र कर लिया है कि यह कहानी कबल एक मने कहानी है। बहमन सम्पत्तियाँ के पुत्र प्रसिद्ध शराना वार बहमन का वंशज हान का नाम करता था इसलिए उसने बहमनशाह का उपाधि धारण की न कि बहमनशाह के वंशज ब्राह्मण उपकारी के नाम पर।

इस सम्पत्तियों का शासन मित्र हुआ। उसने अपने छोटे-से राज्य का अन्तःकारण विस्तार करने का मकसद किया। अन्तःकारण युद्धों के परिणामस्वरूप

वह उसकी सीमाओं को उत्तर में बानगंगा में नज़र दक्षिण में कृष्णा तक और पश्चिम में दौनताबाद से पूरब में भागिरी तक फैलाने में समर्थ हुआ। अपनी राजधानी बुन्दवर्ग में उसने सुयोग्य शासन-व्यवस्था की नींव डाली और अपने राज्य का चार प्रांत (तरफा) में विभक्त किया—गुजरागं नीलताबाद बरार और बीदर। प्रत्येक प्रांत के ऊपर एक मूंगार हाता था जो एक सना सपता था तथा अपने सनिक् और जमनिक् पन्नाधिकारिया की नियुक्ति करता था। ११ फरवरी १३५८ ई को हसन की मृत्यु हो गयी। अपने सहधर्मियों के साथ उसका व्यवहार व्यापक था और दरनाम का बन् प्रचारक था। उनका सबसे बड़ा पुत्र मुहम्मदशाह प्रथम (१२५८ ७७ ई) उनका उत्तराधिकारी हुआ। इसी सुल्तान का राज्य की शासन-व्यवस्था को ठोस आधार पर संगठित करने का ध्येय प्राप्त है। उसकी विदेश नीति का आधार विजयनगर तथा बरारगत राज्या के विरुद्ध शत्रुता थी। लगभग अपने सम्पूर्ण शासनकाल में उसने उनसे युद्ध किया। उन राज्या के शासकों को उसने पराजित किया और भारी युद्ध का हरजाना देने पर बाध्य किया। मुहम्मद का महान तथा अत्यन्त यत्न से प्रेम था। उसकी १३७१ ई में मृत्यु हो गयी और उसका पुत्र मुजाहिदशाह सुल्तान हुआ। उसने अपने पिता की विजयनगर के विरुद्ध युद्ध करने की नीति को जारी रखा। उसने विजयनगर को घेर लिया किन्तु हस्तगत करने में सफल नहीं हुआ और राजा से सन्धि करके गुलबर्गा को चूँट गया। उसके प्राण लेने के लिए एक षडयन्त्र रचा गया जिसके परिणामस्वरूप उसके एक सम्बन्धी दाऊदशाह का सिंहासन पर अधिकार हो गया। किन्तु दाऊद का भी मई १३७८ ई में वध कर लिया गया। तब अमीरा ने हसन के एक पौत्र मुहम्मदशाह को सिंहासन पर बिठाया जिसने १ ७८ ई से १३९७ ई तक शासन किया। वह स्वभाव से शान्तिप्रिय तथा विद्या का संरक्षक था। उसने मस्जिद का निर्माण कराया और दरबार में विद्वानों को एकत्र किया। उसने शासनकाल में विजयनगर से शान्तिपूर्ण सम्बन्ध रखा। उसके अन्तिम दिन दुःख और चिन्ताओं में बीत गया कि उसके पुत्रों ने सिंहासन प्राप्त करने के लिए कुचक्र रचे। अगस्त १३९७ ई में उसकी मृत्यु हो गयी। उसके बाद दो दुबल शासक हुए जिन्होंने केवल कुछ महीने शासन किया। नवम्बर १ ९७ ई में हमन के एक पौत्र ने सिंहासन पर अधिकार कर लिया और ताजुद्दीन फीरोज़ शाह का उपाधि धारण की। उसने १३९७ ई से १४२२ ई तक शासन किया। वह वीर शासक था और शस्त्र तथा विद्वानों के महान्प्रेम का उस शौक था। साथ ही साथ बन् धर्म-सुखा में भी निपट रखा था और सकीण विचारों का भी मुमनमान था। उसने अपने पूर्वाधिकारियों की विदेश-नीति कायम रखी और विजयनगर से तीन युद्ध लड़े जिनमें से दो में वह सफल रहा। अन्तिम

युद्ध में उसका पराजय हुई। वह अन्धवस्त्रिय रूप में युद्धभय से भाग खड़ा था किन्तु शत्रु ने उसका पाठा किया। विजयनगर का सना न बहमनी राज्य के दक्षिण तथा पूरबी जिला पर अधिकार कर लिया। उस पोराल का बन्त प्रान्तिन हाना पण जोर उसने शामन का उपभा करना प्रारम्भ कर दिया। उस पराजय के उपरान्त १४२० ई. में उसका भाई अहमद ने उस प्रान्त्य कर दिया।

अहमदशाह का शामनकाल दो महत्त्वपूर्ण घटनाओं के लिए प्रसिद्ध है। प्रथम, उसने गुजरात का छान्दर वास्त्र का अपना राजधाना बनाया क्योंकि उसका स्थिति अधिक अच्छा तथा जलवायु अधिक स्वास्थ्यप्रद था। दूसरे उसने दरबार में नशिणा दल तथा विश्वा दल में पारस्परिक प्रतिद्विद्धिता और भी अधिक बढ़ गयी। नशिणा दल में स्थानीय मुसलमान अमार थे जोर वह अप्रकाशित राज्य में उत्तम पत्र नही मिलते थे उनका समर्थन करने थे। दूसरा दल विश्वा दल के नाम से प्रसिद्ध था जिसमें तुर्क सराना तथा अरब बहमनी राज वश सम्मिलित थे जिन्हें दरबार और प्रान्ता में उच्च पद प्राप्त थे। नशिणा मुसलमान उनसे व्यापक करते थे। इसका अतिरिक्त धार्मिक मतभेदों के कारण राजनीतिक प्रतिस्पर्द्धा और भा अधिक बढ़ ही गया। दक्षिणा अमार मशा तथा विश्वा अधिकतर गिया थे। दरबारी झगडा के कारण शामन-व्यवस्था में भी विघिनता आ गया फिर भी अहमदशाह ने शक्तिपूर्ण विश्वा-नीति का अनुसरण किया। अपने भाई के समय का क्षति को पूरा करने के लिए उसने विजयनगर पर आक्रमण किया और उस घरे लिया। राजा घार सक्ठ में फन गया और भारा युद्ध का हरजाना दल पर बाध्य हुआ। १४२४-२५ ई. में अहमद ने वारगन का जीतकर उसका शासक का मार डाला। इस प्रकार वारगन के स्वतंत्र राज्य का अन्त हो गया। इसके बाद उसने भाववा के हूमनागह को पराजित किया और उस भाग क्षति पहुँचाया। गुजरात के विरुद्ध भी उसने युद्ध किया किन्तु सफलता नहीं मिली। कारण के सामन्त पर विजय उसकी अन्तिम सफलता थी। १४५० ई. में उसका मृत्यु हो गया।

उसका पुत्र अनाउद्दीन द्वितीय (१४५४-५७) उसका उत्तगधिकारी हुआ। अनाउद्दीन ने अपने भाई मुहम्मद के विश्वा का दमन किया और उस रायचूर दाश्राय का मुख्यालय नियुक्त किया जहाँ उसने अपने जावन के जन्त तक बसावारी से काम किया। आंतरिक दृष्टि का शान्त करने के उपरान्त उसने बाकद पर आक्रमण किया और उसका शासन का अपना प्रभुत्व स्वीकार करने पर बाध्य किया। उसने मगधगुजर राजा का पुत्रा में बसतूवक विवाह कर लिया। उसका स्वमुख गान्धर्व के नमीरगा ने अपनी पुत्रा का पण लेकर दरार पर आक्रमण किया किन्तु उगरी हार हुई। अन्त कृत का पराजय के

अनुसूल जनाउद्दीन ने विजयनगर के विरुद्ध युद्ध किया बहुत धन चूटा और राजा को बर देने पर बाध्य किया। जनाउद्दीन ने एक अस्पनात्र की स्थापना की जोर उसके लिए बहुत सा दान दिया। १४५७ ई. में उसकी मृत्यु हो गई। उसका उत्तराधिकारी उसका सबसे बड़ा पुत्र हुमायूँ हुआ जिसने १४५७ ई. से १४६१ ई. तक राज्य किया। वह अत्याचारी था जोर लोग उसका जातिम कहने लगे। १४६१ ई. में उसकी मृत्यु हो गई। तब हुमायूँ का एक अल्पवयस्क पुत्र निजामशाह सिंहासन पर बैठा। राजमाता मकदूमजहाँ ने उमरी अम्बिका की सहायता से राज्य किया। मुल्तान की अल्पवयस्कता का लाभ उठाकर उन्नीसा तथा ततगाना के राजाओं ने बहमनी राज्य पर आक्रमण किया किन्तु वे पराजित हुए। तदुपरांत मालवा के महमूद खलजी ने निजामशाह के राज्य पर आक्रमण किया किन्तु गुजरात के महमूद बगडा के हस्तक्षेप के कारण उस वापस लौटना पड़ा। १४६२ ई. में उस बालक मुल्तान की मृत्यु हो गई और उसका भाई महमूद उत्तराधिकारी हुआ। उसने मुहम्मदशाह तृतीय (१४६२-८२ ई.) की उपाधि धारण की। अपने बंधु के जय शासकों की भाँति उस भी मदिरा तथा यमिन्वार का शौक था। शासन का काम उसका प्रसिद्ध मंत्री महमूद गवाँ किया करता था जिसे रवाजजहा की उपाधि मिली हुई थी। वजीर ने तगन तथा स्वामिभक्ति के साथ बहमनी राज्य का सवा की। उसका पहला कार्य काकण के सिद्धू राजाओं का दमन करना था। उसने अनेक विजयें जीत लीं। सगमेश्वर के राजा से उसने खलना का किला जीत लिया। उसका गाँव भी जीत लिया जो विजयनगर साम्राज्य का सबसे अच्छा बंदरगाह था। उसके एक सहायक ने राजमहेन्द्रा तथा काडचौर के विजय पर अधिकार कर लिया। उसका सबसे महत्वपूर्ण आक्रमण विजयनगर पर हुआ। राजा की पराजय हुई और विजयताओं के हाथ अपार चूट का मान लगा। उन्नीसा पर भी एक आक्रमण किया गया जोर वहाँ से बहुत सा चूट का सामान जिसमें अनेक हाथी सम्मिलित थे बंदर लाया गया। किन्तु अनावृष्टि के कारण बहमनी राज्य को एक भयंकर दुर्भिक्ष का सामना करना पड़ा जो दो वर्ष तक चलता रहा। इस संकट के बाद एक दूमरा आपत्ति आयी। बजार महमूद गवाँ का बंधन किया गया। दक्षिणी अमीर वजीर से उसके प्रभाव तथा शक्ति के कारण ईर्ष्या करत थे। उन्नीसा के भूकाने पर शराब के नश में मुहम्मदशाह ने उसके बंधन की आज्ञा दे दी। अमीर ने मुल्तान के सामन एक जाती पत्र प्रस्तुत किया जोर उस विश्वास लिखा कि महमूद गवाँ विजयनगर के राजा के साथ विश्वासघातपूर्ण पत्रव्यवहार कर रहा है। १ अप्रैल १४८१ ई. का महमूद गवाँ का बंधन किया गया। वजीर विन्शी था और तान मुल्ताना के समय में उसने बहमनी राज्य की योग्यता तथा वफादारी से सवा की थी। वह

विजय का और विजय का सारा का उस भी था। वास्तव में उसने एक नया विधान का स्थापना का और बना सूझा में बहुत ही मूयवान यह वह एक विषय। उसका निजा जावन सांग तथा दाप रहित था किन्तु बान समय में जब उच्च पत्रभागा अमाग का भौति वह भी घमाय था और हिन्दुओं पर धार्मिक अत्याचार किया करता था। उसका मृत्यु के साथ बहमनी राज्य का एकता तथा शक्ति भी विना ही गया। शासन-प्रवस्था में प्रवृत्तता का गया। बहार का मृत्यु के बाद ही २० मार्च १६८० ई का मरणा मुस्तान मृत्यु-साह मा चत बसा।

उसका उत्तराधिकारी उसका छोटा पुत्र मन्सूर-शाह हुआ जिसमें पाषण्डता तथा बरिय का अभाव था। दीनता तथा विना अमाग में मरफ प्रवृत्त चला रहा। प्रतिष्ठी अमीरा तथा सूझाग न राज्य के विना का अवधाना करर अपन स्वाधी का आर अधिध ध्यान लिया। उन्हान राजशक्ति पर अधिकार कर लिया और स्वतंत्र बन बठ। राज्य का आकार कम हो गया और महसू का मत्ता राजधाना के निकटवर्ती जाम-प्रम तक ही साधित रह गया। मन्सूर की मृत्यु के उपरान्त एक के बाद एक तीन मुल्तान हुए किन्तु उनका भीति वह भी पहन कामिम बरी उत मुमानिक और उसका मृत्यु के बाद उसके पुत्र अमाज जती बरा के हाथा का बटपुतनी बन रह। उस का अन्तिम सन्तान कलीमु-शाह हुआ। १/७ ई में उसका मृत्यु के साथ बहमनी राज्य का भी अन्त हो गया और उसके अन्तर्गत पर पांच राज्य उठे गए। वे इस प्रकार थे—(१) बाजापुर का आदिनाशाहा राज्य (२) अहमदनगर का निजामशाहा राज्य (३) बरार का इमाशाहा राज्य (४) गानकुष्ठा का कुचशाही राज्य और (५) बादर का बगीशाही राज्य।

बहमनी राज्य १७५ वर्ष से भी कुछ अधिक चला और उस वक्त में उस वक्त के अन्तर्ह मुल्तान हुए। इस राज्य का इतिहास कुचका घृह-मुद्धा और पनामिया के विरुद्ध निरन्तर मरफों में बरा पडा है। बहमनी-वक्त के अन्तर्ह राजाओं में से पांच की हत्या का गया तान पञ्च्युत किये गये गे का अघा किया गया और दा अतिमय मरवान के कारण मर। १५१७ ई में अयाना गियन निकोटीन नामक एक नया पयटक न बहमनी राज्य का यात्रा का था। उसका कथन में पता लगता है कि दण की आबादा घना था किन्तु बहुसंख्य जनता निधन थी। इसका विपरीत अमार लोग अल्पधिक घनी थे और विनाम मय जावन विनाम थे। जब बहमी का अमीर बहा जाना था तो बाग पुद मवार उसका आग और तीन गो घुदगवार पांच गो पत्त मन्िक तथा ममानधी गववे आदि अल्प अन्तर्ह लाग उसका पीछ चला था। किन्तु मापारण जनता की दशा अत्यन्त दयनीय थी।

## दक्षिण के पाँच राज्य

## बीजापुर

बहमनी राज्य के पतन के उपरान्त जिन राज्या का उदय हुआ उनमें बीजापुर सबसे अधिक महत्वपूर्ण था। उसकी स्थापना यूसुफ जाज़िदशाह ने की थी इसलिए वह बीजापुर के आदिलशाहा राज्य के नाम से प्रसिद्ध है। अपने प्रारम्भिक जीवन में वह एक जाज़ियन मुलाम समझा जाता था जिसे महमूद गवाँ ने खरीद लिया था। किन्तु परिश्रम के अनुसार वह टर्की के सुल्तान मुराद द्वितीय का पुत्र था और अपने बड़े भाई से बचन के लिए वहाँ से भाग आया था। कुछ भाग रहा हो यूसुफ जाज़िदशाह में महान चरित्रवत् तथा योग्यता थी और महमूद गवाँ की सेवा में वह उच्च पद पर पहुँच गया था। १४८६ ई. में वह बीजापुर का स्वतंत्र शासक बन बैठा और योग्य प्रिय तथा शक्तिशाली सुल्तान सिद्ध हुआ। यद्यपि शिया सम्प्रदाय की ओर उसका अधिक झुकाव था किन्तु उसने अपनी सम्पूर्ण प्रजा का धार्मिक स्वतंत्रता दे रखा थी और हिंदुओं को भी सरकारी नौकरियाँ दीं। उसका शासन उत्तम तथा योग्यपूर्ण था और उसके दरबार में इरान तुर्किस्तान तथा अन्य मध्य एशियाई देशों के विद्वानों की भीड़ जमा रहती थी। उसके चार तात्कालिक उत्तराधिकारी उस जैसे योग्य नहीं निकले और उनके शासनकाल में कुचक्र तथा युद्ध चलते रहे। छठा सुल्तान अब्राहीम आदिलशाह द्वितीय (१५७६-१६२६ ई.) सद्दिष्ट तथा बुद्धिमान शासक था। मीडाज टेलर के मतानुसार वह आदिलशाही वंश का सबसे बड़ा सुल्तान था और बहुत सा धन उसका संस्थापक को छोड़कर सबसे अधिक योग्य तथा लोकप्रिय भी था। १६१८-१६ ई. में उसने बीदर को बीजापुर में मिला लिया। उसके उत्तराधिकारी महमूद आदिलशाह के समय में बीजापुर का मुगल सम्राट शाहजहाँ से संघर्ष हुआ। १६८६ ई. में औरंगज़ेब ने उस अपने साम्राज्य में मिला लिया।

## गोलकुण्डा

वारंगल का पुराना हिन्दू राज्य ही गोलकुण्डा कहलाता था। उसका संस्थापक बहमनी सल्तनत का कुतुबशाह नामक एक तुर्की जफ़्तर था। महमूद शाह बहमनी के शासनकाल में वह ततगाना का सूबेदार था। उसने १५१२ ई. अथवा १५१८ ई. में अपनी स्वतंत्रता की घोषणा की। उसने १५४३ ई. तक राज्य किया। उसका उत्तराधिकारी उसका पुत्र जमशान हुआ। तीसरे सुल्तान अब्राहीम के शासनकाल में गोलकुण्डा का विजयनगर से संघर्ष हो गया। अब्राहीम की मृत्यु के बाद परवर्ती शासकों की दुर्बलता के कारण गोलकुण्डा की शासन व्यवस्था छिन्न भिन्न हो गयी। १६८७ ई. में औरंगज़ेब ने उस जीत कर अपना राज्य में सम्मिलित कर लिया।

अहमदनगर

अहमदनगर राज्य का स्थापना मलिक अहमद ने की थी। उसका पिता निजामसुल्तान बहरी हिंदू से मुसलमान हुआ था और बहरी राज्य का प्रधान मंत्री बन चुका था। १४६० ई. में मलिक अहमद ने जो उस समय बनारस का सूबदार था अपने का स्वतंत्र घोषित कर लिया। उसने अहमदनगर शहर का स्थापना की और उसी का अपना राजधानी बनाया। १४६६ ई. में उसने गोलकुंडा का भी हस्तगत कर लिया। १५०० ई. में उसका मृत्यु हो गया और उसका पुत्र बुरहान निजामशाह उत्तराधिकारी हुआ। उस वंश के तामर शासक अहमदनगर १५६५ ई. में विजयनगर के विरुद्ध संधि में भाग लिया। इस राज्य के परवर्ती शासक दुर्जन निकेत। १६०० ई. में अकबर ने राज्य का गोलकुंडा और उसका शासक का हराकर अपना साम्राज्य बना लिया। १६५६ ई. में इस अन्तिम रूप में मुगल-शासक में मिला लिया गया।

बादर

बहमनी राज्य के सूबदारों के स्वतंत्र हो जाने पर भी उसका एक छात्रा नामा माय कायम रहा। उस पर बरीदा का अधिकार था। १५६६ ई. में अकबर १५७३ ई. में जमीर अलीखान ने नाममात्र के बहमनी सुल्तान का हटा दिया और स्वयं स्वतंत्र शासक बन बैठा। उसका वंश बादर के बराबरशाह वंश के नाम से विख्यात हुआ। १६१० ई. में उस बाजापुर में मिला लिया गया।

बादर

इस राज्य का सम्स्थापक फतेह उल्लाह अहमदनगर था जिसने १४६० ई. में अपने का स्वतंत्र घोषित किया। उसका अन्तिम पर राज्य का नाम बदल कर इमामशाह राज्य पड़ा। १५७४ ई. में उस अहमदनगर के सुल्तान ने बीनकर अपने राज्य में मिला लिया।

उपरोक्त पाँच राज्या में से बाजापुर तथा गोलकुंडा में से कुछ योग्य शासक हुए। पाँच राज्या का विजयनगर के हिंदू राज्य में टापरान तक संधि बनता रहा। अंत में उन सब ने मुस्लिम शासक १५६५ ई. में तारा वंश के युद्ध में विजयनगर के शासक का पराजित किया। वे आपस में भी सन्तुष्ट रूप जिम्मे दार्शन का शान्ति तथा समृद्धि में बाधा पड़ा।

विजयनगर साम्राज्य

उत्पत्ति

विजयनगर साम्राज्य का स्थापना मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल में अहमदनगर के शेरशाह ने की। उसका उत्पत्ति के विषय में अनेक मत हैं और विचारों का अभी अंत नहीं हुआ है। किन्तु इसका निश्चय है कि साम्राज्य



की स्थापना १३४६ ई. में सगम के पांच पुत्रों में से हरिहर और बुक्का दोनों की सीमाएँ आरम्भ में हीयसन राजा वीर वल्लभ तृतीय के यहाँ नौकर थे और जिन्होंने सल्तनत की आक्रमणकारों को नौकरों के विरुद्ध प्रतिरोध सगठित करने का श्रेय था। तुगलक के अधिपति तट पर स्थित अनगुनी नगरों की स्थापना सम्भवतः वीर वल्लभ तृतीय ने १२३६ ई. में की थी। यह नगर आगे चलकर साम्राज्य का केन्द्र बिन्दु बना। १२४६ ई. में वीर वल्लभ तृतीय के पुत्र तथा उत्तराधिकारी विस्वाक्ष वल्लभ की मृत्यु हो जाने पर हीयसना का राज्य हरिहर तथा बुक्का के अधिकार में जा गया। तुगलक के अधिपति तट पर स्थित विजयनगर का उद्घाटन अपना राजधानी बनाया। सम्भवतः इस नगर की स्थापना भी वीर वल्लभ तृतीय ने ही की थी किन्तु अपनी राजधानी बनाने के बाद हरिहर और बुक्का ने उसके अधिकार समुद्रतः किया होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि विजयनगर के संस्थापकों का प्रसिद्ध विद्वान तथा महान् माधव विद्यारण्य तथा उनके विख्यात अनुज वेण्कटकटाकार सायणाचार्य से अत्यधिक प्रेरणा और सहायता मिली थी।

### सगम वंश

विजयनगर के संस्थापक हरिहर तथा बुक्का सगम वंश के थे जिसका यह नाम उनके पिता सगम के नाम पर पड़ा था। हरिहर प्रथम ने सगम की उपाधि नहीं धारण की और न उसके उपरान्त उसके भाई बुक्का ने ही ऐसा किया। हरिहर तथा उसके भाई ने तुगलक उस समस्त प्रदेश पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया जो पहले हीयसन राज्य में सम्मिलित था। बुक्का ने १३७४ ई. में चीन का एक दूत मण्डन भजा। १३७८ ई. में उसकी मृत्यु के उपरान्त उसके पुत्र हरिहर द्वितीय उत्तराधिकारी हुआ। नये शासक ने महाराजाधिराज तथा राजपरमेश्वर का उपाधि धारण की। वह एक महान् यात्री तथा विजता था और उसने बनारस, मसूर, त्रिचनापट्टण, काञ्ची तथा चिन्नपट्टण प्रदेशों पर अपना आधिपत्य कायम किया। उसके शासनकाल में उसके पुत्र बुक्का द्वितीय ने कृष्णा तथा तुगलक नदियों के बीच म्थिन रायचूर राजा के नाम पर विजयनगर साम्राज्य तथा ब्रह्मनी सल्तनत के बीच संधि की जो थी वह पूर्व के हस्तगत करने का प्रयत्न किया किन्तु फीरोजशाह बहमनी ने उसे हराया। शिव का उपासक होने पर भी हरिहर द्वितीय का अन्धधर्मों के प्रति महिष्णतापूर्ण व्यवहार था। १४६८ ई. में उसकी मृत्यु हो गई और उसके पुत्र देवराय प्रथम उत्तराधिकारी बने। उनके शासनकाल में भी बहमनी राज्य में युद्ध हुए। १४२२ ई. में उनके मृत्यु हो गई। उसके बाद विजय बुक्का अथवा वीर विजय मगमट हुआ किन्तु उसने कुछ महान् शासन किया। उसके बाद देवराय द्वितीय मिहसन पर बैठा। उसने शासन

राज्या का पुनः संगठन किया और गना का ठास नाव पर सटा किया।  
 "युवशासन" वापार का निरीक्षण करने के लिए एक विशेष पदाधिकारी  
 नियुक्त किया। उसके शासनकाल में दो विदेशी यात्रा—टली का निकोना  
 बंग और ईरान का अहुर रज्जाक—विजयनगर का पर्यटन करने आए।  
 बहल नगर तथा साम्राज्य का विस्तृत वर्णन किया है। साम्राज्य में समस्त  
 स्थानों पर मन्मिन्त्रि था और उसकी सीमाएँ लका के तट को छूती थी।  
 १५४६ ई. में मृत्यु हो गयी। उसके उत्तराधिकारी दुर्जन  
 सिंहा है। विनाह तथा ब्राह्मण जाक्रमण आरम्भ हो गये। महमना सुल्तान  
 तथा जमा के राजा ने पूरबी प्रांतों को जाक्रात किया किन्तु चन्द्रगिरि के  
 रणितशासक मामत नरसिंह ने जाक्रमणकारियों का मार भगाया। अंत में  
 मामामन्त ने सगम वंश के अंतिम शासक विरपाक्ष शिवाय का पञ्च्युत करके  
 १५६६ ई. में सिंहासन पर अधिकार कर लिया।

#### सुनुव-वंश

इस घटना के उपरान्त जिस विजयनगर साम्राज्य के स्थापना में प्रथम  
 बरहण कहते हैं नरसिंह सुनुव न नय राजवंश की नीव डानी जो सुनुव वंश  
 के नाम से प्रसिद्ध है। नरसिंह ने यह वंश लक्ष शासन किया। वह योग्य तथा  
 कर्तव्य शासक था। उसने महमनी सुल्ताना तथा उडीसा के राजा के विरुद्ध  
 युद्ध किया और शीघ्र ही अनेक प्रांतों को पुनः विजय कर लिया। उसके उप-  
 रान्त एक के बाद एक उसके दो पुत्र गद्दी पर बैठे किन्तु वे निरान्त अपाय  
 निदल थे। उनके शासनकाल में राजशाक्ति साम्राज्य के स्थापना नरसिंह  
 के हाथ में रहा। १५०५ ई. में नरसिंह की मृत्यु हो गयी और उसके महारवा  
 कापी पुत्र वार नरसिंह ने नरसिंह सुनुव के निरन्तर पुत्र का पञ्च्युत करके  
 सिंहासन पर अधिकार कर लिया। पञ्च्युत प्रणय बहलता है।

#### सुनुव-वंश

वीर नरसिंह ने नय राजवंश की नीव डानी जो सुनुव वंश के नाम से  
 प्रसिद्ध है। एसा पता लगता है कि वह काफी शक्तिशाली था। उसने १५०५ ई.  
 में १५०६ ई. तक शासन किया और उसका मृत्यु के उपरान्त उसका  
 छोटा भाई कृष्णवराय (१५०६ ई. में) सिंहासन पर बैठे। कृष्णवराय  
 विजयनगर के महानायक तथा समस्त भारतीय इतिहास के महानायक नामक  
 थे वे लक्ष थे। यह लक्ष महान योद्धा और गनानायक था। उसने अनेक युद्ध  
 लिये और उन सभी में उसे शक्ति प्राप्त हुई। सबसे प्रथम उसने अपने  
 विनायक मामना के दमन किया और उसे अपनी प्रधानता स्थापित करने  
 पर विवश किया। उपरान्त उसने रामचूर नामक पर अधिकार कर लिया।

की स्थापना १३४६ ई. में सगम के पाँच पुत्रों में से हरिहर जीर बुक्का नाम की थी जो आरम्भ में हीयमन राजा वीर बल्लान तृतीय के यहाँ नौकर था और जिन्होंने सल्तनत का आश्रमणकारी नीति के विरुद्ध प्रतिरोध गमन करने का श्रेय था। तगभद्रा के दक्षिणी तट पर स्थित अनगुनी नगर की स्थापना सम्भवतः वीर बल्लान तृतीय ने १३३६ ई. में की थी। यह नगर आगे चलकर साम्राज्य का केंद्र बिंदु बना। १२६६ ई. में वीर बल्लान तृतीय के पुत्र तथा उत्तराधिकारी विरपाक्ष बल्लान की मृत्यु हो जाने पर हीयमन का राज्य हरिहर तथा बुक्का के अधिकार में जा गया। तगभद्रा के दक्षिणी तट पर स्थित विजयनगर का उद्घाटन अपनी राजधानी बनाया। सम्भवतः इस नगर की स्थापना भी वीर बल्लान तृतीय ने ही की थी किन्तु अपनी राजधानी बनाने के बाद हरिहर जीर बुक्का ने उसका अधिक समुन्नत किया होगा। ऐसा प्रतीत होता है कि विजयनगर के संस्थापकों का प्रसिद्ध विद्वान तथा सत माधव विद्यारण्य तथा उनके विद्यार्थी जनुज बना के टीकाकार सायणाचार्य से अत्यधिक प्रेरणा और सहायता मिली थी।

**सगम वंश**

विजयनगर के संस्थापक हरिहर तथा बुक्का सगम वंश के थे जिसका यह नाम उनके पिता सगम के नाम पर पड़ा था। हरिहर प्रथम ने सम्राट का उपाधि नहीं धारण की और ने उसके उपरान्त उसके भाई बुक्का ने ही ऐसा किया। हरिहर तथा उसके भाई ने लगभग उस समस्त प्रदेश पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया जो पहले हीयमन राज्य में सम्मिलित था। बुक्का ने १३७४ ई. में चीन का एक दूत मण्डल भेजा। १२७६ ई. में उसकी मृत्यु के उपरान्त उसका पुत्र हरिहर द्वितीय उत्तराधिकारी हुआ। नये शासक ने महाराजाधिराज तथा राजपरमेश्वर का उपाधिया धारण की। वह एक महान यात्री तथा विद्वान था और उसने कन्नडा, मसूर, त्रिचनापल्ल, काञ्ची तथा चिन्नपट आदि प्रदेशों पर अपना आधिपत्य कायम किया। उसके शासनकाल में उसके पुत्र बुक्का द्वितीय ने कृष्णा तथा तगभद्रा नदियों के बीच स्थित रायचूर दोआब को जो विजयनगर साम्राज्य तथा बहमनी सल्तनत के बीच संधि की जड़ था बनपूर्वक हस्तगत करने का प्रयत्न किया किन्तु फीरोजशाह बहमनी ने उसे हराया। शिव का उपासक होने पर भी हरिहर द्वितीय का अर्थ धर्मों के प्रति सहिष्णुतापूर्ण व्यवहार था। १४०६ ई. में उसकी मृत्यु हो गई और उसका पुत्र देवराय प्रथम उत्तराधिकारी हुआ। उसके शासनकाल में भी बहमनी राज्य से युद्ध हुए। १४२२ ई. में उसकी मृत्यु हो गई। उसके बाद विजय बुक्का अथवा वीर विजय सम्राट हुआ किन्तु उमन कुछ महीने शासन किया। उसके बाद देवराय द्वितीय सिंहासन पर बैठा। उसने शासन

धरण्या का पुनःसंगठन किया और सना का ठास नाव पर सन् किया ।  
 उन मामुनिक यापार का निराकरण करने के लिए एक विशेष पदाधिकारी  
 नियुक्त किया । उसका शासनकाल में ही विदेशी यात्रा—अरबों का निवास  
 राग और ईरान का अरब राजाक—विजयनगर का पक्षतन करने जाय ।  
 वहान नगर तथा साम्राज्य का विस्तृत वर्णन किया है । साम्राज्य में समस्त  
 शक्ति शासन सम्मिलित था और उसका साम्राज्य के अन्तर्गत का छूना था ।  
 अरबों के १४४६ ई में मृत्यु हो गयी । उसका उत्तराधिकारी अरब  
 सिंहासन पर विराट तथा ब्राह्मण जाति में जाय । अरबों का सुनान  
 का उपाय के राजा ने पूरबी प्रांता का आशात किया किन्तु अरबों के  
 शक्तिशासन शासन नरसिंह ने आक्रमणकारियों का मार्ग भराया । अतः  
 साम्राज्य ने समस्त पक्ष के अन्तिम शासक विरुपाक्ष तृतीय का पञ्च्युत करके  
 १४६६ ई में शासन पर अधिकार कर लिया ।

समुद्र-वशा

इन घटना के उपरान्त जिन विजयनगर साम्राज्य के अन्तिम में प्रथम  
 बरहण कहते हैं नरसिंह समुद्र के नये राजवंश के नाव डाली जा समुद्र के  
 नाम से प्रसिद्ध है । नरसिंह ने छह वर्ष तक शासन किया । वह शास्य तथा  
 शक्ति शासक था । उसने बहमनी सुल्तानों तथा उन्नीसों के राजा के विरुद्ध  
 लड़ा किया और स्वयं हुए जनक प्रांता का पुनः विजय कर लिया । उसका उप  
 शासन एक के बाद एक उसके दस पुत्र गद्दा पर बैठे किन्तु वे नितान्त अयोग्य  
 सिंहासन पर हुए । उनके शासनकाल में राजशाक्ति साम्राज्य के सनापति नरमनाथ  
 के हाथ में रहा । १५०१ ई में नरम की मृत्यु हो गयी और उसका महत्त्वा  
 का पुत्र और नरसिंह ने नरसिंह समुद्र के निरम पुत्र का पञ्च्युत करके  
 सिंहासन पर अधिकार कर लिया । यह अन्तिम अपहरण कहा जाता है ।

समुद्र-वशा

की नरसिंह ने नये राजवंश की नाव डाली जा समुद्र के नाम से  
 प्रसिद्ध है । एसा पता लगता है कि वह काफी मजबूत शासक था । उसने १५०२ ई  
 में १५०६ ई तक शासन किया और उसका मृत्यु के उपरान्त उसका  
 पुत्र का कृष्णवराय (१५०६-२० ई) सिंहासन पर बैठा । कृष्णवराय  
 विजयनगर का महानतम तथा समस्त भारतीय इतिहास के महानतम शासक  
 में से एक था । वह एक महान योद्धा और सनापति था । उसने जनक युद्ध  
 में और अनेक युद्धों में उच्च सफलता प्राप्त की । नवप्रथम उमर में  
 सिंहासन पर अधिकार कर लिया और उसने अपना अधिकांश सन्तान करने  
 में विफल किया । तत्पश्चात् उमर रामचूर दोआब पर अधिकार कर लिया ।

## अरविदु-वश

तानीकोट के युद्ध के उपरांत रामराय के भाई निम्मान ने वनुगाडा को राजधानी बनाया। उस युद्ध अशा म साम्राज्य की शक्ति तथा प्रतिष्ठा की पुन स्थापना करने में सफलता मिली। वह मन्त्रवाक्यापी यज्ञि था और १५७० ई म उमने मन्नाशिव को जपन्म्य करके मिहासन हस्तगत कर लिया। उमने अरविदु वश की नीव डाली। उमरा उत्तराधिकारी उसका पुत्र रग द्वितीय हुआ। वन् योग्य शासन था। उमके बाद उमरा भाई बबट द्वितीय मिहासन पर बटा और उमने १५८६ ई मे १६१४ ई तक राज्य किया। उमके शासन का म राज्य छिन्न भिन्न हाने लगा और उसने मसूर राज्य की जिसकी स्थापना १६१२ ई म थोडपार ने की थी पूण स्वायत्तता स्वीकार करके भयकर भूत की। इस वश का अन्तिम स्वतन्त्र शासक रग तृतीय हुआ। उमम इतनी शक्ति न थी कि विद्रोही सामन्ता का दमन कर सकता और बीजापुर तथा गोनकुप्पा व सुल्ताना व आक्रमणो का रोक सकता। परिणाम यह हुआ कि श्रीरगपट्टम बन्धुर मन्त्रा तजोर आदि के अधीनम्य नायका (सामन्ता) न अपन आप को स्वतन्त्र कर लिया और वस प्रकार साम्राज्य का अन्त हो गया।

विजयनगर साम्राज्य की शासन व्यवस्था

## केन्द्रीय सरकार

विजयनगर राज्य म राजा ही राज्य की सम्पूर्ण शक्ति का स्रोत माना जाता था किन्तु निरकुश हाने पर भी वह उत्तार तथा विचारवान होता था। यद्यपि वह साम्राज्य का सर्वोच्च सैनिक असैनिक तथा नाय अधिकारी होता था किन्तु वह अत्याचारी जथवा उत्तरदायित्वहीन निरकुश शासक न था। वन् धर्म के अनुसार साम्राज्य का शासन चलाता तथा राज्य और प्रजा की भलाई का सन्ध ध्यान रखता था। बृष्णदेवराय विजयनगर का सबसे अधिक महत्त्वशाली राजा था। उसका राजस्व सम्बन्धी आन्ध्र प्रशा के फडरिक् महान के समान था। अपनी जमुक्क माल्यन् नामक तनगू पुस्तक म वह लिखता है मुकुटधारी राजा को सन्ध धर्म पर दृष्टि रखत हुए शासन करना चाहिए। उसी पुस्तक म वह जाग कहता है राजा का अपने चतुर्दिक राजनीति म दक्ष लोगो को एकत्र करके शासन करना चाहिए राज्य म ऐसी गाना की खोज करनी चाहिए जा बहुमूल्य रत लनी हा और उन रतना को निकलवाना चाहिए प्रजा पर हन्का कर लगाना चाहिए शत्रुता का शक्ति द्वारा नुचनकर उनक कार्यों को रानना चाहिए मन्त्र व नाय मित्रतापूण बन्धनर करना चाहिए अपनी सम्पूर्ण प्रजा की रक्षा करनी चाहिए और जातिया व सम्मिश्रण को रोकना चाहिए ब्राह्मणा व गुणा म वृद्धि करनी चाहिए अपन विना को दू

एक चाहिए अठाठनाथ वन्मुजा की वन्ती रोकनी चाहिए और अपने नगरा  
 का अन्त का अन्त मन्त्र ध्यान रत्ना चाहिए ।

राजा को शासन-कार्य में सहायता देने के लिए एक मन्त्रिपरिषद् होती  
 थी। परन्तु इस मन्त्रिषदा का ठीक-संख्या का पता नहीं है किन्तु विजयनगर  
 में एक मन्त्र के लिए छह से लेकर आठ तक मन्त्री रह जाते। राजा उनकी  
 निर्णय तथा सन्तुष्टि करता था और वे राजा के प्रसाद पर्यन्त ही अपने पदा  
 पर काम करते थे। मन्त्री साहायण क्षत्रिय तथा वैश्य जातियों के हुआ करते  
 थे। रत्ना-वन्ता मन्त्री का एक विशेषानुगम भी होता था किन्तु यह सामान्य  
 मन्त्र नहीं था। एक राजकीय कार्यालय था। मन्त्रिषदा के अतिरिक्त निम्न  
 प्रकार के कार्य करने वाले पदाधिकारी भी होते थे जसे मुख्य कोषाध्यक्ष  
 तथा का रत्ना करने वाला पदाधिकारी धातुकार का निरीक्षण करने वाला  
 बरतार पुरिस अन्त्येष्ट घोषा का अन्त्येष्ट इत्यादि। राजा का शून्य विभाग भी  
 मन्त्रिषदा में दरबार में सामन्त पुराहिता ज्योतिषियों गवया विद्वाना  
 तथा कवियों की भीड़ लगी रहती थी। दरबार का बम्ब जिन पर राज्य  
 बतुन-मा धन पर किया करता था विजयी यात्रिया तथा वृष्टीतिथि के लिए  
 एक आश्वय का विषय था।

**मन्त्रपरिषद्**

विजयनगर साम्राज्य एक प्रांता में विभक्त था। कुछ अलका न जिनका  
 मन्त्र शासित प्रदेश के कथन पर या तारिन है भ्रमवश निम्न है कि साम्राज्य  
 मन्त्र में प्रांत थे। एक भूत का कारण सम्भवत यह है कि पन्च ने एक  
 सामन्त और प्रांतीय सूत्रारों का एक ही समझा था। प्रत्येक प्रांत एक  
 सूत्रार की अधीनता में होता था जिस नरयक काल में जीर जो राज  
 परिवार का मुख्य अथवा प्रभावशाली सामन्त होता था। प्रांत का मन्त्र  
 अमन्त्र तथा आय सम्बन्धा मन्त्र सूत्रार के ही हाथों में होती थी किन्तु  
 मन्त्र अपने प्रांत की आय-व्यय का तथा केन्द्रीय सरकार के सम्मुख प्रस्तुत  
 करना पड़ता था। आवश्यकता पड़ने पर उन मन्त्र सहायता भी मजबूरी पड़ती  
 थी। मन्त्र राजा शक्तिशाली होता और सूत्रारों पर नियन्त्रण रखता था  
 परन्तु मन्त्र ही अपने भेदाधिकारियों के व विस्तृत शक्ति का उपयोग  
 करते थे।

**प्रांतीय शासन**

प्रांत त्रिभुजा में और त्रिभुजा अन्त्येष्ट पत्नी के अन्त्येष्ट मन्त्रिषदा में विभक्त थे। प्रांत  
 की गवया त्रिभुजा इन्त्येष्ट गवया थी जो आत्मनिर्भर होता था। प्रत्येक गाँव में  
 आधुनिक पञ्चायत का भाँति की एक गाँव-सभा होता था। वह गाँव के नरयक

तोना चौकीदार अंगार का चौधरी और अनेक बशानुगत पन्नाधिकारिया की सहायता से गाँव का प्रबंध किया करती थी। इन पन्नाधिकारिया को जागीरा अथवा श्रुति की उपज के एक भाग के रूप में वेतन मिलता था। केन्द्रीय सरकार महानाथराय नामक एक पन्नाधिकारी द्वारा गाँव से सम्बंध कायम रखती थी। उस पन्नाधिकारी को गाँव के प्रबंध का निरीक्षण करने का अधिकार था।

### वित्त

भू राजस्व सरकार की आय का मुख्य साधन था। भू राजस्व से सम्बंध रखने वाला एक पृथक विभाग था। कर निर्धारण के हेतु भूमि का चार वर्गों में विभक्त किया गया था—सिंचित भूमि जल भूमि उद्यान तथा वन। हिंदू युग में सामान्यतया उपज का उठा भाग राज्य-कर के रूप में वसूल किया जाता था। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि विजयनगर के राजा से कुछ अधिक वसूल करते थे क्योंकि उन्हें बहमना सुल्तानों की निरन्तर आगुता से राज्य की रक्षा के लिए एक विशाल सेना रखनी पन्ती थी। भूमि-कर के अनिश्चित सरकार चरगाह-कर विवाह-कर वहि गल्ल तथा उद्यान और तस्तकारी की वस्तुओं पर भी कर लगाती थी। राज्य-कर भारी था किन्तु अनियमित रूप से जागा से घन नया वसूल किया जाता था। कर नकद तथा उपज के रूप में दोनों प्रकार में वसूल किया जाता था।

### सेना

विजयनगर सम्राट एक विशाल सेना रखते थे जिसकी सरया समयानुसार घटती-बढ़ती रहती थी। कृष्णदेवराय के समय में सेना में ३६०० अशवारोही सात लाख पत्तन और ६५१ हाथी थे। एक तोपखाना भी था किन्तु वह अविश्वसित अवस्था में रहा होगा। मनीष विभाग का प्रबंध महामनापति के अधीन था जिसकी सहायता के लिए अनेक अधीनस्थ पन्नाधिकारी भी थे। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि विजयनगर की सेना का सङ्गठन तथा अनुशासन दक्षिण के मुस्लिम सुल्तानों की अपेक्षा घटिया रहा होगा।

### याय

राजा याय का श्रोत था और स्वयं मुकद्दमा का फसला किया करता था। नियमानुसार सवानित यायालय भी थे। यायाधीशों को नियुक्ति स्वयं राजा करता था। गाँव के लोग गाँव मभाआ जयवा पचायता द्वारा अपने लक्ष्मण तय कर दिया करते थे। कभी-कभी यायाधीश जाग स्थानीय सम्बन्धों की सहायता से मुकद्दमा का निणय करते थे। जिन वानूना के अनुसार यायालयों में फसल होने के अत्यन्त प्राचीनकाल से चने आय से और

राज्यशासन नियमा रीति रिवाजों तथा देश के सवधानिक व्यवहारों पर प्रभावित था। दण्ड विधान कठोर था। चोरी-सभ्रम और राजकोश के लूटने और मृत्यु का दण्ड दिया जाता था। साधारण अपराधों के लिए दंडमाने का दण्ड दिया जाता अथवा मर्यादा जतन कर ली जाती थी। धार्मिक सहिष्णुता

विजयनगर के राजा गम्भीर धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। वे दण्ड व्यवसाय के विन्दु अथवा भारतीय तथा पूणतया जभारतीय धर्मों के प्रति भक्तता व्यवहार सहिष्णुतापूर्ण था। बारम्बार लिखा है कि राजा ने अपनी स्वतंत्रता रखी है कि कोई भी व्यक्ति इच्छानुसार विचरण कर सकता है तथा अपने धर्म के अनुसार जीवन बिता सकता है उसे न कोई कष्ट होगा और न यह धृष्टता कि तुम इसाइ मूढ़ता मुसलमान अथवा हिन्दू हो। विजयनगर की शासन व्यवस्था के दोष

विजयनगर की सम्पूर्ण शासन व्यवस्था विस्तृत रूप से सुसंगठित तथा व्यवस्थित थी किन्तु उसमें कुछ दोष भी थे जिनमें सबसे अधिक स्पष्ट यह था कि प्राचीय सूर्यारों के हाथों में अत्यधिक शक्ति थी और जतन में यही उसकी प्रगति हानि का कारण सिद्ध हुआ। दूसरे सैनिक संगठन इतना सुयोग्य नहीं था जितना कि होना चाहिए था और विशेषकर उस स्थिति में जबकि विजयनगर का निरन्तर बहमनी सुल्तानों से युद्ध करना पड़ता था। तीसरा राजाओं ने यह भ्रम था कि ध्यापानिक लाभ के उद्देश्य से पुतगात्रियों को राज्य के पश्चिमी तट पर बस जान दिया। चौथे उन्होंने नागा की-यक्तिवादी प्रवृत्तियों का ध्यान करने का प्रयत्न नहीं किया। अन्त में सब सुविधाओं का अभाव भी राजाओं ने स्थायी व्यापारिक नीति विकसित करने का प्रयत्न नहीं किया।

### सामाजिक जीवन

विष्णु धार्मिकता के नाम से हम विजयनगर के समाज के सामाजिक जीवन का एक चित्र मिलता है। समाज सुसंगठित था। स्त्रियों को समाज में उच्च स्थान प्राप्त था और वे सामान्य के राजनीतिक सामाजिक तथा आर्थिक जीवन में भाग लेती थीं। उन्हें बुद्धि आश्रमण तथा बचाव के लिए विभिन्न अस्पृश्यता के प्रयोग मगीत कला तथा नृत्य कलाओं की शिक्षा भी दी जाती थी। कुल का उत्कर्ष की माहिसियक गिता भी मिलती थी। समाज स्पष्ट है कि स्त्रियों के लिए विभिन्न प्रकार की सामान्य शिक्षा का अत्यन्त प्रबल प्रभाव था। मुक्ति मिलना है कि स्त्री शिक्षा रक्षण वातावरण की बननी और स्त्री अग्रगण्य है अतिरिक्त राजस्वकार में स्त्री पत्रकारिता स्त्री ग्यानिपी और स्त्री



भविष्यवता भी थी। गिरस गगीत नृत्य तथा अन्य ललित कलाओं में वे पुरातन से अधिक बढ़ी बढ़ी थी। धनी लोगों में बहु विवाह प्रथा प्रचलित थी। यान विवाह का सामान्य नियम था। धनी लोगों में बड़े पैमाने पर राज का रिवाज था। विधवाएँ अपने मृत पति का वंश धारण करने में जतन करती थीं। ब्राह्मणों का समाज में अधिक प्रभाव था। सामाजिक और धार्मिक जीवन में ही नहीं बल्कि राजनीति तथा शासन सम्बन्धी विषयों में भी उनका विशेष महत्त्व था। ब्राह्मणों का छोटा अर्थ मूल्य जानियाँ का निष्ठावानपन के प्रतिबन्ध नहीं था। राजा तथा साधारण जनता मानाहारी थी और वे गाय तथा बल का छोटा मभी प्रकार का गोशुल्क देते थे। पशु-यज्ञ का सामान्य रिवाज था। मन्त्रपूर्ण त्योहारों पर बकरों और भेड़ों की बलि चढ़ाई जाती थी।

### कला और साहित्य

कला और मस्तिष्क के क्षेत्र में विजयनगर में असाधारण उन्नति हुई। हम पहले उल्लेख कर जायें हैं कि कृष्णदेवराय उच्चकोटि का विद्वान तथा साहित्य का उत्तम मर्यादा था। अर्थ राजाओं का भी विद्या से अनुराग था और विद्वान तथा कवि उनके राज्य में निवास करते थे। उन्होंने सस्कृत तथा तमिल तथा ब्रह्म भाषाओं में साहित्य को प्रोत्साहन दिया। विजयनगर तथा शासन के प्रारम्भिक दिनों में धर्म के प्रख्यात भाष्यकार माधव तथा उनके भाई माधव विचारण्य हुए थे। कृष्णदेवराय के समय में साहित्य रचना का कार्य पराकाष्ठा का पहुँच गया था। महान कवि नाशिक तथा धर्मोपदेशक उमकंठ दरवार को मुशोभित करते थे। उच्च धर्म तथा भूमि-दानों का पुरस्कृत किया जाता था। राजा स्वयं उच्चकोटि का विद्वान तथा लेखक था। यह परम्परा जारी रही और उसके उत्तराधिकारियों ने भी उस जारी रखा। राजपरिवार के सन्तान सामान्य तथा अर्थ धनी लोग राजा का अनुकरण करते थे। मगीत नृत्यकला नाटक वाकरण हनुविद्या गणन तथा ज्ञान की अन्य शाखाओं पर अनेक ग्रन्थ रचे गये। कला तथा स्थापत्य की भी उपेक्षा नहीं की गयी। राजाओं ने अद्भुत सौन्दर्यपूर्ण मन्दिरों का निर्माण कराया। कृष्णदेवराय ने प्रसिद्ध हजारा मन्दिर बनवाया जो कला के मर्मज्ञों के मतानुसार शिदुआ की मन्दिर स्थापत्य कला का सर्वोत्तम आदर्श है। विद्वत्स्वामी का मन्दिर विजयनगर के स्थापत्य का अर्थ श्रेष्ठ उत्पत्ति है। विजयनगर के शासकों ने चित्र कला तथा मगीत को भी प्रात्साहन एवं सुरक्षण दिया और नाट्य-कला की भी उपेक्षा नहीं की गयी। सक्षम में विजयनगर साम्राज्य का शिदुआ साहित्यिक एवं कलात्मक रचनाओं का प्रसफुटन के लिए प्रसिद्ध है। एक विद्वान का मत है कि साम्राज्य ने दक्षिण भारतीय मस्तिष्क का गमकय किया।



हाथी की जिंभ वस्त्र तथा धातुओं के उद्योग मुख्य थे। इन निर्यातों का महत्त्वपूर्ण उद्योग था। उद्योगों तथा व्यवसायों के नियंत्रण के लिए जनक गये थे। एक प्रकार का कारोबार करने वाले लोग बहुत नगर के एक ही भाग में बसा करते थे। अन्तर्देशीय तथा सामुद्रिक दोनों प्रकार का व्यापार उपलब्धतावस्था में था। साम्राज्य में अनेक राजधानियाँ थीं और इन्हें मन्नासागर के तीरे मानवाती तीपमाला ब्रह्मा चीन जख्म परान्तिना अफ्रीका आदीसानिया पुतगान आदि के साथ अन्तर्देशीय व्यापार होता था। वस्त्र चावल लाल शाला शककर तथा ममाने निर्यात की मुख्य वस्तुएँ थीं। घाड़ हाथी मानवी तौरों कोयला पारा रश्म तथा मन्मन् वान्तर में मगाय जाते थे। सामुद्रिक व्यापार जहाज़ों द्वारा होता था। विजयनगर के पास अपना एक छोटा सा जहाज़ी बंदर था और यहाँ के लोग जहाज़ निर्माण-कला से भी भाँति परिचित थे। आन्तरिक व्यापार के लिए बने घोषा गान्धिया और गंधा का प्रयोग होता था।

विजयनगर साम्राज्य में सान तथा ताँबे के सिक्के चलते थे। कुछ चीनी के सिक्के का भी चलन था। उच्च तथा मध्य श्रेणियों के लोग धनाढ्य और उनके रहने महल का स्तर भी ऊँचा था। साधारण लोगों के लिए भी जीवन की आवश्यक वस्तुओं का अभाव नहीं था किन्तु उच्च जाति की तुलना में वे परिद्ध थे। साम्राज्य की आर्थिक व्यवस्था में एक पाप था साधारण जनता का राज्य कर का मुख्य बोझ सहना पड़ता था अथवा लोग मुग़ी थे। बहुमती राज्य की जनता में वे कहीं अधिक समृद्ध थे।

मक्षय में विजयनगर साम्राज्य में श्रेणियों के मुसलमानों के जात्रमणा के विरुद्ध हिंदू धर्म तथा सस्कृति का रक्षा करके एक महान ऐतिहासिक उद्देश्य पूरा किया।

#### BOOKS FOR FURTHER READING

1. BEG HINDU Gulistan : Ilrahimi alias Tarikh : Iarishita  
(English translation by Brigg)
2. SEWELL A Forgotten Empire
3. SHARWANI H K Mahmud Cavan
4. HAIG WOOLSELEY Cambridge History of India Vol III  
VENKATARAMANAYYA N Vijayana, ar Origin of the City  
and Empire
6. AIYANCIARE S K South India and her Mohammedan  
Invaler
7. SALFORD Social and Political Life in the Vijayana ar  
Empire Vols I and II

## सल्तनत की शासन-व्यवस्था

केन्द्रीय सरकार

सल्तनत साम्प्रदायिक राज्य

सल्तनत धर्मनिरपेक्ष राज्य नहीं था बल्कि एक त्रिपक्षीय धर्म म  
 नका सम्राज्य था। उन सम्पूर्ण युग में इस्लाम राजतन्त्र ही। सल्तनत अर्थात्  
 किना धर्म का शासन नहीं थी था उस विन्दु धर्म जिनके अनुयायी राज्य  
 में शासन के बहुसंख्यक लोग थे। राजवंश तथा शासक-वर्ग इस्लाम के मानने  
 वाले थे और मुस्लिम दृष्टि में राज्य के सभी शासन उन धर्म का रक्षा और  
 प्रचार के लिए थे। आधुनिक तर्क के बाद भी एक कुरान का कथन है कि  
 सल्तनत धर्म पर केंद्रित अवश्य था किन्तु पूरातया धर्म पर प्रबलत्व  
 नहीं था क्योंकि धर्मावलम्बित राज्य का मुख्य विधान यह है कि उमम  
 के पुराहित-वर्ग का शासन करना चाहिए। सल्तनत में यह विधि  
 पता किमान नहीं था। किन्तु यह तर्क था कि और वास्तविकता का उप  
 करना है। इस तर्क में बाद भी इनका नहीं कर सकता और डा कुरानों भा  
 मानते हैं कि प्रत्येक मुस्लिम राज्य में इस्लाम के शास्त्रीय कानून ही सर्वोच्च  
 हान है व्यवहार विधि उनका प्रधान होता है और वास्तव में उमा में जान हा  
 जाता है। यद्यपि मुस्लिम उनका निरिष्ट तथा कानुनगत नहीं थे किन्तु उन  
 हा धर्मांध और पक्षपातपूर्ण थे जितने कि बाद पुराहित हा मकन है और व  
 मन्व कुरान के कानून का कार्यान्वित करने तथा सूनि-यूजा और इस्लाम डाट  
 का मूला-छन्द करने पर जार दिया करते थे। शिरता सल्तनत में शासन का  
 वाचरण भा कुरान के नियमों द्वारा निर्वाचन होता था। मुस्लिम का अपन  
 निजा जावन" में हा नहीं बल्कि शासन के सम्बन्ध में भा उन नियमों का  
 पालन करना पन्ता था। वास्तव में मुस्लिम का इना कानून के अनुगार  
 शासन करना पन्ता था और यदि शासन के मामल में उन नियमों का

य सारा मानवीय दृष्टिकोण का कारण है कुरान के नियमों का पालन न  
 कर मर्यादा करते थे और निरिष्ट कानूनों में प्रवृत्त होते थे धार्मिक जाग  
 के अभाव के कारण नहीं।

कार्यावाही करा मय सफर नहीं होता था तो उसकी प्रजा व मनाह  
 यह उसका नियमानुमानि शासन नहीं रहता था । इसलिए भारत में इस्लाम  
 राज्य का आगम था तथा जो समस्त जनता का मुसलमान बनाना तथा  
 का मुनाहद्वान करना तथा जनता का मुहम्मद का धर्म जगीवार करल  
 बाध्य करके तब उन सब (गर मुसलमाना का देश) को दार उल इस्लाम  
 (मुसलमाना का देश) में परिवर्तित करना ।

नाममात्र का प्रभु खलीफा

इस्लामी प्रभुत्व सिद्धान्त व अनुसार गगार व मय मुसलमाना का का  
 वही भा है एक ही मुस्लिम शासक होता है । उस खलीफा कहते हैं ।  
 जिना में जबकि खलीफा को शक्ति चरममामा पर था वह खलीफा  
 विभिन्न प्राता व तबिए सूत्रदारा का नियुक्त किया करता था । जब कभी  
 सूत्रदार स्वयं शासक बन बैठता था अथवा कोई मुस्लिम साहसिक नेता  
 देश जातकर राजा बन जाता था तब भी अपन पद का स्थायित्व दन व  
 वह खलीफा व नाम का सहारा लता अपन को उसका अधीनस्थ सा  
 कहता और अपन पद व तबिए उससे मायता प्राप्त करता था यद्यपि तब  
 हारिक दृष्टि से वह पूण सत्ताधारी शासक की भांति आचरण करता । १५५  
 में मगान नेता हुनगू न अंतिम अब्बासी खलीफा मुस्तसीम का बध कर  
 लिया और इस प्रकार खलीफत का अंत हो गया किन्तु खलीफत की एतता  
 का आडम्बर फिर भी कायम रहा । अपन युग की प्रचलित प्रथा व अनुसार  
 दिल्ली सुल्तान भी अपन का खलीफा का नाम व कहते उससे मायता प्राप्त  
 करते और सिक्का तथा खुतबा में उसका नाम सम्मिलित करते थे । इस  
 परम्परा का तात्न वाला पहला सुल्तान अलाउद्दीन खनजी था । उसका पुत्र  
 मुबारक खलीफत व आडम्बर में विश्वास नहीं करता था इसलिए उसने स्वयं  
 खलीफा की उपाधि धारण की । इन दो का छोड़कर इस युग के सभी दिल्ली  
 सुल्तान नाममात्र व तबिए खलीफा का प्रभुत्व स्वीकार करते थे । आधुनिक  
 मुसलमान खलीफा ने तथाकथित इस्लामी जगत की एकता का वास्तविक मिद्ध  
 करने व तबिए इस राज की आवश्यकता से अधिक महत्त्व दिया किन्तु तथ्य  
 यह है कि किसी दिल्ली सुल्तान ने कभी भी खलीफा का अपना वास्तविक  
 प्रभु नहीं स्वीकार किया । फिर भी चूनि इस युग व शासक विन्शी और  
 मुसलमान थे इसलिए बाहरी इस्लामी जगत से रस्म व रूप में सम्बन्ध कायम  
 रखना व लाभप्रद समझते थे ।

सुल्तान

दिल्ली मल्तनत का प्रमुख सुल्तान कहलाता था । ऐसा माना जाता था  
 कि प्रभुत्व सम्पूर्ण सुन्नी जनता में निवास करता है और उस मिल्तनत कहते थे ।



है कि यह अपन राज्य की सम्पूर्ण प्रजा का शासन तथा बिक्रम जनता के मुस्लिम धर्म का धार्मिक प्रभुत्व भी था। इस प्रकार उत्तम कर्म तथा पाप दान की शक्तियों कल्पित थीं।

मुल्तान पूर्णरूप से निरक्षुण शासन था जोर उग्रही शक्ति सनिक बल पर निर्भर थी। राज्य की समस्त शक्तियों उसी के हाथ में कल्पित थी। यद्यपि मूलतः इस्लामी राज्य का रूप नासनाशिक था किन्तु परिस्थितियाँ के कारण दिल्ली सल्तनत की सरकार का एक केन्द्रीकृत संगठन का रूप धारण करना पड़ा। मुल्तान का शत्रुतापूर्ण हिन्दू जनता के बीच में रहना तथा काम करना पड़ता था। जब एक हिन्दू सामन्त था जो विदेशी सरकार के प्रसार को रोकने तथा अपनी स्वाधीनता की पुनः स्थापना करने के लिए प्रयत्न करने के दृष्टान्त थे। बाह्य सन्धियों में सर्व उपस्थित रहता था और सल्तनत का उत्तर पश्चिमी सीमाओं पर निरन्तर मंगला के प्रहार हानि रहते थे। इन परिस्थितियों में मुल्तान का सुरक्षा तथा शासन के केन्द्रीकरण के लिए एक विशाल सैन्य रखनी पड़ती थी।

### मन्त्रीगण

शासन में मुल्तान का सहायता देने के लिए मन्त्री होने थे जिनका सत्या समय समय पर घटती जाती रहती थी। तथाकथित गुनाम-युग में चार मन्त्री थे वजीर आरिज मुमानिक दावान इशा तथा दावाने रसानात। कभी-कभी नायब जयवा नायब मुमानिक भी हुआ करता था जिसका पद मुल्तान से नीचा तथा वजीर से ऊँचा होता था। जब मुल्तान दुर्गम हाना तब नायब के हाथ में अधिक शक्ति आ जाती थी किन्तु सामान्य समय में वह नाममात्र का नायब मुल्तान होता था और वजीर से बहुत नीचा समझा जाता था। जाग चलकर सन्ध मुद्दूर तथा दीवान राजा को भी मन्त्रियों के समकक्ष कर दिया गया। इस प्रकार सल्तनत के शासन के उत्कर्ष के दिनों में छह मन्त्री काम करते थे। इनके अतिरिक्त एक सानवाँ अय पद और भी था जिसका धारण करने वाला मन्त्रियों के समकक्ष न होता हुए भी अधिकतर मन्त्रियों से अधिक शक्तिशाली होता था। यह पद मुल्तान के घर के प्रधान का था।

### वजीर

प्रधान मन्त्री वजीर कहलाता था। उसकी स्थिति मुल्तान तथा प्रजा के बीच में थी। उसके हाथ में बहुत सत्ता थी और कुछ परिवर्धन के अंतर्गत वह मुल्तान का शक्ति तथा विभागाधिकारों का प्रयोग किया करता था। वह मुल्तान के नाम से महत्वपूर्ण पदाधिकारियों की नियुक्ति करता तथा सब पदाधिकारियों के विरुद्ध शिकायतें सुनता था। मुल्तान की रणायस्था और

अनुसूचित म तथा उमक अल्पवयस्क होन पर वह सुल्तान क म्थान पर काय रना था । सुल्तान का प्रजा का भावनाआ तथा आवप्रयकताआ स जवगत रगना और सभी राजकीय विषया म उस सलाह दना वजीर का जय महत्व पूा कतय था । सामान्य शासन व्यवस्था का अध्यक्ष हान क अतिरिक्त वह विषय म स कित्त विभाग का प्रमुख था । उस हैसियत स नगान के वन्धोवस्त क लिए नियम बनाना अय करा की दर निश्चिन करना तथा राज्य के यय का नियन्त्रण रखना उमका मुख्य उत्तरदायिण था । इसक अनिश्चित असनिक् प्नाधिकारिया क कार्यों का निरीक्षण भी वही करता था । सनिक व्यवस्था पर मा म्मता नियन्त्रण था मयानि सनिक विभाग की सभी आवश्यक्ताआ की पूनि उमा क द्वारा हाती थी । उसी क प्रधानम्य वमचारा सनिक प्नाधिकारिया तथा मियाटिया क वनन वीरन और तत्सम्यधी न्तिताव रयते । विद्वान तथा वराव नगा की जा दाप्रवृत्तिया तथा निवाह क त्रिण भक्त त्रिय जात थ उनका प्ररथ भा वजार क हा हाथा म था । उस प्रकार जन शासन की सभी शाखाआ पर उसका नियन्त्रण था और मूरदार स उकर चपरससा तब प्रत्यक् वमचारा का प्रयथ अववा अप्रत्यक्ष रूप म उमस काम पडता था । उन कर्तव्या का उपभोग करन के कारण राज्य म वजीर की उडा प्रतिष्ठा थी और एक उगा जागीर क राजस्व क रूप म उस अछा वनन मिटना था ।

वजीर का कार्यालय दावान बिजारत बहाना था । उमका महायता क त्रिण एक नाम वजीर हुआ करता था त्रिमर सुपुं डफतर का नाम होता था । नाम वजीर क नीच मुत्रिफे मुमानिक (महानयाकार) हाता था और उसक का मुल्तीफा ए मुमानिक (महानया परीशर) । मुत्रिफ मुमानिक प्रान्ता तथा जय विभागा स हान वा नी आय का तथा रखता था और मन्तवता परा त उमकी जांच किया करता था । फीरोडशाह तुगलक क शासनकाल म दग व्यवस्था म घाना सा परिवतन कर त्रिया गया था । महानयाकार जाम का और महानया-परी तब यय का हिसाब रगना था । महानयाकार की महायता क लिए एन नाजिर हुआ करता था । महानया परी तब की सन्तयता क त्रिण भी कुछ प्नाधिकारा हात थ । दावा क बड बड डफतर थ त्रिम अनक वरक काम करत थ ।

### दीवान-आदिब

दीवान आदिब अथवा दावान-अख राजधानी म जय महत्वपूर्ण मन्था था । हम उम मना मन्त्री अथवा सनिक विभाग का महाप्रवयर बह मरन है । उमका मुख्य काम सनिक की मन्तो करना मन्तिवा और पाटा का त्रिनिया रगना तथा फौजा का निरी तण करना था । पूंकि मना था महासनापति मुल्तान रकष हुआ करता था मन्तिए सामान्यमा आदिब मुमानिक का शाहा



पौत्र का सत्पापतिरय तथा कर्मा पढ़ाया था किन्तु कभी कभी सना क किसी भाग का अल्प उपाय किया जाता था। उसका मुख्य काम पौत्र क अनुशासन तथा सज्जगता और गुणधर्म म उमर कायों का निरीक्षण करना था। यह विभाग सत्ता महत्त्वपूर्ण था कि कभी-कभी गुणता स्वयं उसमें सम्बन्धित अनर कायों का सिद्धा करना था। उपाहरण क लिए अनाउद्दीन सलजी का सना क सगठन तथा उसमें जाया म बून र्चि था सत्तिए वह उसकी जा र निजा तीर स ध्यात किया करता था।

### दीवान इशा

दीवान इशा तासरा मन्त्री था। उम पर शाहा पत्र व्यवहार का भार था। उसकी महायता क लिए अनर द्वार जयवा सलर रण थ जा सलर शरी म दश हान क कारण र्थानि प्राप्त कर चुक हात थ। गुतान का जय राय क शासका महत्त्वपूर्ण अधीनस्थ गामता तथा राय क पत्ताधिकारिया स जा पत्रव्यवहार हाता था और जिमका बहुत कुछ अण गुप्त रखा जाता था वह सब र्मा विभाग द्वारा हाता था। गुतान क महत्त्वपूर्ण आदेशा क प्राप्ति इसी विभाग म तयार किय जात थ। उसका वाक क सुल्तान की स्वावृत्ति क लिए भज जात थ और जत म उनकी प्रतिनिधियों बनाया जाता और मुत्त कित्त करक मथास्थान भज दी जाती था। इस विभाग का काय गुप्त ढग का हान क कारण उसका अध्यक्ष एक अरबत विश्वसनीय पत्ताधिकारी हुआ करता था।

### दीवाने रसालात

इनक उपरान्त दीवान रसालात नाम का अय मन्त्री हाता था। इस मन्त्री क कार्या क सम्बन्ध म योगा म मनभूत है। डा आर एच कुरशा क मतानुसार उसका सम्बन्ध धार्मिक विषयों स था इसका अतिरिक्त विधाना तथा धार्मिक व्यक्तियों का जा न्त किया जात थ उनका भी भार उसी पर था। र्साक विपरीत डा हबीबुल्ला का कथन है कि वह विश्वा मन्त्री था और सत्तिए कूटनीतिक पत्रव्यवहार तथा विदशा की भज जान वान और वहाँ म आने वान राजदूता का भार उस पर था। डा हबीबुल्ला का मत सही प्रतीत हाता है। डा कुरशी न मन्त्र जय नगाया ह। र्साक अतिरिक्त उनका सिद्धांत स सिद्ध होगा कि सलतनत म एक ही काम क लिए अनिवाप र्प म दा पत्ताधिकारी रह हाग क्याकि धार्मिक विषयों धर्मस्व तथा दान क लिए प्रारम्भ स ही एक अय पत्ताधिकारी था जा सत्स सुदूर कहलाता था। दीवान रसालात बहुत ही महत्त्वपूर्ण पत्ताधिकारी था क्याकि सुल्तान दशी राजाओं क अतिरिक्त मध्य एशियाई शक्तियों स भी कूटनीतिक सम्बन्ध कायम करन के इच्छक रहते थ।

### सम-मुद्दर

सम-मुद्दर तथा दावान-बजा दा जय मन्त्रा थे। वहुधा उन दाना विभाग—धर्म विभाग तथा याय विभाग—का काम चतान व तिर एक कथा निपुत्र किया जाता था। मुख्य सद्र (सम-मुद्दर) का काम था इन्वामो नियमा और उपनियमा का लागू करना तथा यह दसना कि मुसलमान नाग उनका अपन दैनिक जीवन म पालन करत ह और प्रतिदिन नियमानुसार दिन म पांच बार नमाज पढ़त तथा राडा आदि रखत है। दान व रूप म वहुत सा धन वितरण करत तथा मुस्लिम उलमा विद्वाना और धार्मिक पुष्पा का शोक निवाह व तिर भक्त मजूर करत जाति का भार भी उमा पर था। अन्य बाडा याय विभाग का अध्यय था और राज्य भर म याय शासन का निराण करना उनका काय था।

### मजलिस-मन्त्र

सब मन्त्रिया व पन् तथा स्थिति समान नहा था। वजीर की हैमियत तथा अधिकार जय मन्त्रिया स उन अधिक थे। जय पांच मन्त्री ता कवन शिष्टा चार की दृष्टि म मन्त्री कहे जात थे वास्तव म उनकी स्थिति उगभग सुल्तान व सविवा (सम-दरिया) जमा थी। सुल्तान सब मन्त्रिया का एक ही समय तथा नाय-नाय परामश व तिर आमन्त्रित नहा किया करता था इमलिए मन्त्र परिषद जसा कोई मस्था नही थी। सुल्तान अपनी इ-ठानुसार उनका निपुत्र तथा पन्-पुत्र करता था जार उनम स किमा की जयवा सबका सलाह मानन व तिर वह काय नहा था। उनक अनिरिक्त सुल्तान व सनाहकारा का एक दया मरुपा थी जिनम अनन गर-नाग्वारी थे उन सबका मजलिस मन्त्रन कहत थे। इनम मुत्तान व निजा मित्र कुछ विश्वसनीय पन्नाधिकार मन्त्रन कहत थे। इनम मुत्तान व निजा मित्र कुछ विश्वसनीय पन्नाधिकार तथा प्रमुख उनमा मन्त्रिमलिन थे। समय-मय पर मुत्तान उह परामश व तिर बुताना या तथापि शासन पर कुछ उनका प्रभाव रहता था।

### भय विभाग

चार प्रथम श्रेणी तथा दा तिताय जणा व मन्त्रिया (सम-मुद्दर तथा मुख्य बाडा) व अनिरिक्त राजधानी म भय विभागाध्यय भा व जिनक ऊपर मन्त्रवपुत्र कायों का भार था। व म प्रकार थे—बरी मुमात्रिक (दाव तथा गुत्रर विभाग का अध्यक्ष) दीवान अमीर का अर्थात कृषि विभाग जिनकी स्थापना मुहम्मद तुगलक न की थी शीवान मुत्तगाज अधान वह विभाग जिनका काम बिगाना तथा कलकला म बचाया वपुत्र करना था और जिनका स्थापना अलाउद्दीन गजनी न की था और दीवान इतिहास अर्थात पन्ना विभाग।

## शाही गृह प्रबंधन

यद्यपि राजात्मिक दृष्टि से मुल्तान के गृह विभाग का अध्ययन उमक निजी मामला का दगरण करता था किन्तु शासन पर भा उसका काफी प्रभाव रहता था। शाही अंगरक्षक तथा मुल्तान का गर और तया दीवान बन्गालन नामक पन्नाधिकारिया के अधीन थे उसा की दरसन म काय करत थे। उन् मुद्द म भी भाग सना पन्ता था। अनक बारगसन थ जिनम सना तथा अय विभागा की आवश्यकता की वस्तुए बनायी जाती था। शाही जस्तबना म घान तथा जय पग थ जिनका मुद्द तथा सामान गोन के लिए प्रयाग किया जाता था। थ सब शाही गृह प्रबंधन के नियंत्रण म काय करत थे। उसका मुल्तान से सीधा सम्पर्क रहता था और कभी कभी वजीर से भा। इसलिये उसका हाथा म बहुत शक्ति थी और उस उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त था।

## प्रातीय शासन

दिल्ली सल्तनत कभी भा एकस प्राता म नहा विभक्त था और न उन सब की शासन-व्यवस्था ही एक ढंग की थी। कभी किसी मुल्तान ने प्राता को समान आधार पर संगठित करने का विचार नहा किया। १३वा शताब्दी म सल्तनत सनिक क्षत्रा म विभक्त था जा इकता कहनात थ। प्रत्येक इकता एक मुक्ता अथवा शक्तिशाली सनिक पन्नाधिकारिया के अधीन हाता था। तथाकथित गुनाम मुल्ताना के समय के इकता की सख्या हम उनकी शासन व्यवस्था का वर्णन करत समय बारहक अ याय म कर चुके हैं। अलाउद्दीन खानजी न दक्षिण सहित लगभग सम्पूर्ण देश का विजय किया और यद्यपि वह मौलिक तथा रचनात्मक राजनात्मिक था किन्तु उसन भी छाट तथा बन् प्रान्ता का पूववत रहन लिया। इसलिये उसका शासनकाय म दो प्रकार के प्राता का आविर्भाव हुआ जयान इकत जो उसका पूवाधिकारिया के समय से चल जाय थ और व राय जिह उसन विजय किया था। उसन इकता का कायम रखा और नव विजित राया पर सनिक सूबदार नियुक्त किये व क्षत्रफत तथा आय दाना की दृष्टि से इकता से बहुत बडे थे कयाकि विजय से पूव थ समृद्धशाली हिन्दू राय रह चुके थे। इनम उन हिन्दू सामन्ता के राया का जो दीजिए जिनकी स्थिति सूबेदारा की सी रह गयी थी। इस प्रकार अलाउद्दीन खानजी के शासन काय म हम द्वितीय सल्तनत म तीन प्रकार के प्रात पात है। एक के पन्नाधिकारी का नाम पूववत मुक्ता बना रहा। जिह नय सनिक प्राता का भार सपा गया व बन्नी और कभी-कभी अमीर कहलात थ। मुक्ता की तुलना म बन्नी का पन् तथा प्रतिष्ठा कही अधिक ऊची थी। बन्ने प्राता की सख्या समय-समय अनुसार घटती बढ़ती रहता था। खानजी तथा तुगलक मुल्तानो के शासनकाय

वे काल गुजरात जौनपुर मानवा सान्ना तथा शिवा मयम महन्वपूण  
 नरिच प्रान्त थ । मुक्तिया तथा वनिया जना का जपन अपन अधिकार-प्राप्ता  
 म बनाए रखना पटना था । पान्नि-व्यवस्था स्थापित करना जीर विनाही  
 जमापारा का एक दना ठही का कनय था । जपन अधीन पनाधिकारिया  
 का नियुक्त करन का एक अधिकार था और जपन जघानम्य सम्पूर्ण प्रशा  
 व शासन का उत्तरदायित्व उन्हा पर था । जब तर च मुल्लान का ज्ञान का  
 पानन करन और आवश्यकतानुसार मनिच सहायता उन रजन तब तक व  
 अर्गमित शक्ति का उपभाग करन थ । एक अपनी आय-व्यय का निमज  
 रखना पटना और यचन का धन कर्णाय सरकार व काय म जमा करना  
 पटना था । मुक्तिया तथा वनिया का इस्लामी बानूला का रना तथा उ  
 कापाचित करने उनमा की रखा करन याय शासन का प्रवध करन  
 यापायया व निणया से कायाचित करन राजमार्गों का ताकुआ म सुरमित  
 रजन तथा व्यापार वाणिज्य और भौतिक समृद्धि का प्रात्मानन उन का आत्मा  
 निया जाला था । फीराज तुगलक न अपन पुत्र फतहग्या का जब विध का  
 मूरार नियुक्त करके भेजा ता उनम उन किसाना का दूट और जत्याचार म  
 बचान विनाता तथा धार्मिक पुण्या का सहायता न और प्रजा की रखा करन  
 की मलाह ली । इन मद्भावतापूण आदला व वावज्ज साधारण समय म  
 प्राणीय मूरार विस्तृत गतिनया का उपभाग करन और अपन जघान क्षत्रा  
 म नष्ट निरकुश गामका जमा आचरण करन थ । एक मुल्लाना व समय म  
 व साम्प्रतिक शासना जमा व्यवहार करन तथा अपरिमित मत्ता का उपभाग  
 करन थ । फीराज तुगलक व एक उत्तराधिकारिया व समय म इनम न कु  
 मूरार सहायता म स्वतन्त्र शासन बन थ ।

एक प्रान्त म राजस्व वसूल करन व शिवा अन्तर समवागी रजन थ  
 जिनम नाजिर तथा वाबुफ मुख्य हात थ । एक अतिरिक्त मास्त्र शीवा  
 जयवा स्वाजा नामर उच्च पनाधिकारी होता था । सम्भवत बरीर की  
 गिरागिज व आधार पर ही मुल्लान उनमा नियुक्ति करना था । व शिवाय  
 रजना तथा उनका सम्प्रध म वेणीय सरकार व गाम विस्तृत शीघ्र भेजा  
 करना था । डॉ बुरशी व मतानुसार व मुल्लान व प्रति उत्तरदायी था ।  
 प्रान्त म बाजी तथा वर अय निम्न शरी व कर्मवागी भी हात थ ।

स्थानीय शासन

१ की सनारही म नवा म नीची शासन की शक्ति न थी । किन्तु १४वीं  
 सनारही म मल्लन व विगाए तथा सिद्ध नामाना व दमन व कारण प्रान्त  
 की शिवा म शक्ति आवश्यक हा गया । किन्तु एमा प्रीति हाता है कि प्रान्त

प्रायः मोगल नहीं लिया गया। हम जानते हैं कि मुल्तान तुगलक ने शिवा के मूल को पार तथा गेआव तो ला शिरों में विभक्त किया था। शिव का अध्याय शिरदार कहता था। सम्भवतः वह मन्त्रिक पदाधिकारी जाता था जो उमराव काम उगत अधिकारी-पत्र में जानता तथा व्यवस्था कायम रखता था। कुछ समय उपरान्त शिव मोगली शासन इकाई का प्रादुर्भाव आया। इन परगना बहन थे और वह बर्त गाँवों में मिलकर बनना था। इन बन्तूना गाँवों अथवा मौ गाँवों के मण्डल का शासन की इकाई का रूप में उत्पन्न करता है। परगना वह पत्र का नामा तथा कामों का सम्बन्ध में हम निश्चय रूप से ज्ञात नहीं है। प्रत्येक परगना में एक चौधरी तथा एक राजस्व वसूल करने वाला हाता था। सबसे छोटी इकाई गाँव था जो उमराव अपनी दलील की शासन व्यवस्था थी। प्रत्येक गाँव में वगण का निवटारा करने के लिए एक पचायत हुआ करती थी। गाँव के लोग एक राज्य की प्रजा के रूप में मण्डलित होकर अपने मामलों की देखभाल करने और सुरक्षा चौकीदारी प्राथमिक शिवा तथा सफार्स का प्रबन्ध करने में। साधारण समय में मुल्तान गाँवों के कामों में हस्तक्षेप नहीं करता था। प्रत्येक गाँव में आज की भाँति एक चौकीदार एवं जमान वसूल करने वाला तथा एक पटवारी होता था।

सेना

दिल्ली मुल्तान मूलतः शक्ति पर आधारित थी न कि जाति की अनुमति पर इसलिये उसे अपने राज्य के लिए जितनी सेना की आवश्यकता होती थी उतना बना बली फौज रखनी पड़ती थी। इस युग के अधिकतर समय में सेना के चार वर्ग होते थे—(१) के नियमबद्ध सैनिक जो स्थायी रूप से सुल्तान की सेना के लिए भरती किये जाते थे (२) के मन्त्रिक जो प्रांतीय सूत्रदारों और जमीरों की सेवा के लिए स्थायी रूप से भरती किये जाते थे (३) के रगरूट जो मुख्यतया युद्ध के समय में भरती होते थे और (४) मुसलमान स्वयंसेवक जो जिहाद अथवा धर्म युद्ध करने के लिए मना में सम्मिलित हो जाया करते थे।

दिल्ली में स्थित मुल्तान की सेना हथम कब्र कहती थी। उमराव का प्रकार के मन्त्रिक होते थे—प्रथम सुल्तान के और दूसरे दिल्ली में निवास करने वाले दरबारी मन्त्रियों तथा अन्य पदाधिकारियों के। सुल्तान के सैनिक नाम धन वस्तुओं थे और उनमें जानी बुद्धि तथा रण (जिन्दगी तथा अपराजित कृत्य) सम्मिलित होते थे। यद्यपि ये सैनिक स्थायी रूप में सुल्तान की सेना के लिए रहते थे फिर भी हम उन्हें म्याथी सेना का नाम नहीं दे सकते। उनकी संख्या कम होती थी और सफट तथा युद्ध के समय सुल्तान के लिए उन पर निर्भर रहना असम्भव था। दिल्ली मुल्तान के इतिहास में अनाउद्दीन यतजी

न उन बार एक म्यायी सना का नाव डानी जिम्का मीधी क्तीय सरकार बना करती और वेतन दना थी और उसके पन्थाधिकारों भा उमा का जधीनता नै बाय करन थ । उसम पन्था का विशाल मना क अतिरिक्त ४७५ ००० ब्रवागण थ । उन प्रकार ती मना मुहम्मद बिन तुगलक क समय तक बायम ग्नी । ईरात तुगलक न फिर उस एक मामला मगटन म परिबन्धित कर िण । सन्धियों की मना करीला क जाधार पर मगटन थी और उसम राग करमाता राहाना मूर तथा अम अपगान कवाता क राग मम्मिनित थ । क स्वत तथा मवा मगटन जयवस्थित था ।

अमीरा तथा प्रातीय मूरगारा की मवाण युद्ध क समय रावान आरिज का मौरी ज्ञानी था । उनक मगटन अनुशासन तथा वतन का भार स्वय मूरगार पर रत्ता था । उनकी भरती शिक्षण तथा तरक्की क लिए एतम नियम न थ । युद्ध क समय म विनाप रूप स भरती किये हुए मगटन नियम बढ मन्तिक नहा हान थ । उनक वतन क लिए भी कोट निबिन्धित नियम नही था । बढ कमी मुल्लान की सेना को रिमी हिंदू नामक क विरुद्ध रत्ता पत्ता था ता मुयतमान स्वयमवकों का उसम मम्मिनित हान क लिए प्रामात्निकिया जाता था । मौतवा और मवा राय म चारा आर मज निय जात थ और क मुम्निम जनता का हिंदू राजा क विरुद्ध रहन क लिए उनजिन करन थ । स्वयमवाता का गनकाण म वतन नया नियम जाता था उँ नूट क घात का एक भाग मितता था ।

मना गप्टाय मना नती की क्याकि समय तक नाजिक मरानी मगोव अपगान अग्र हती मारनीय मुमवमान तथा हिंदू सभा मम्मिनित रत्ता थ । क विराय क टट्टुआ का एक जमघट था जा घन क नाम म लत्त थ । उन एतता बायम समय क लिए एतमात्र मून मुल्लान का व्यबिन्धित थी था । विभिन्न तरवा म मितरर रती दूर् हाने क कारण मना म गप्टीय भावनाका का जनाय था किन्तु उसक अधिकतर मन्म्य तथा अपगार मुमवमान हाने थ एतलिए धार्मिक मुदुत्ता और कट्टरता की भावना अवश्य उँ अनुशासन करती था । यद्यपि का का एक कुरगी न मन्तन का मना का अति रजित प्रमा की थ फिर भी माता परगा कि य ममान रत्ता म थनी चकारिक त्य म दृष्टि पा हू मुयाम्य मना नया था जगा कि प्राग क राग मन्म अथवा प्राग क पदरिग विनियम प्रथम की मनाय था ।

इसकाराती ए ए तथा हाथी मना क मुख्य अय थ । मयम अरिज मूय वान अकाराती थ और ए मन्तिकमगटन की राइ ममम आत थ । प्रजा पुमवार क नाग का मवपारै एक मगा एक धनुष तथा बाण हात थ । की-वभी क रत्ता भी मारण करता था । मन्तिक कवा पन्तव तथा घात

को फोड़ने के प्रस्तर पत्थार जाते थे। मन्त्रिण ता मूय घाटे पर ही निभर रहता था मन्त्रिण अधिवतर घुल्लगवारा क पाम ता तो घाट मान थे। वाम्भव म अश्वारोपी तीन थणिया म विभनन थे — (१) मुस्तव अर्थात् ता घाट याता मन्त्रिण (२) मन्त्रिण जघान एव घाटे वाता मन्त्रिण और (३) तो जम्ब जिमर पाम पानतू घाट माना था किन्तु ता वाम्भव म अश्वारोपी नहीं था। जम्बे घाटे पत्थार म पत्थार गावघारी म नाम दिया जाता था जीर यह आवश्यक भी था। जम्ब तुकिस्तान और कभी-कभी म्म म जम्ब घाड मगाय जान थे। मुन्तव क जम्बवता म कई हजार पानतू घाट सना के लिए मन्व तयार रहते थे।

मना का दूसरा महत्वपूर्ण जग पत्थार म। वे पायक कन्वते थे। उनसे अधिवतर भारतीय मुसलमान हिन्दू तथा मुन्तव मान थे। वे तलवारों भाव और धनुष वाण धारण करते थे। धनुषारी धानुक कहलाते थे। यह शब्द संस्कृत के धनुष शब्द का विकृत रूप है।

इसके बाद हाथिया का स्थान था जिन पर सुल्ताना का बहून भरोसा था। कन्व जाता है कि बनवन मुद्ध म एक हाथी को ५० घुडसवारा के समान प्रभावोत्पादक समझता था। मुहम्मद तुगलक की सेना म तीन हजार हाथी थे। फीराज तुगलक के पास भी तगभग तनी ही मरुया थी। हाथिया का रखना मुन्तव का एक विशेषाधिकार माना जाता था। कभी-कभी किनी मीर का भी हाथा रखन की आज्ञा दे दी जाती था और यह जत्यधिक सम्मानमूचक चिह्न समझा जाता था। हाथी की पीठ पर किन्व के तग का बन्व का होना रखा जाता था और उनमें भीतर अम्न शस्त्रा स मुसजिन अनेक मन्त्रिण बटते थे। हाथिया के शरीर ताह के तबो म त्वे जाने और उनकी सूत्र तथा ताता म हसिय सुरम लिय जाते थे। उह भी युद्ध करना मिलाया जाता था। हाथिया का अध्यक्ष शाहनाएफीन कहलाता था।

उस युग म जाधुनिक ढग का तोपगाना नहीं था किन्तु युद्ध म त्रनशीन वाणा बरछा और त्रनशीन पत्थारों स भरे हुए पात्रा का प्रयाग किया जाता था। त्रगोता पनीना धूरगोता और आग तमान वादी गन्व का भी प्रयाग जाता था। त्रारु की सत्पायता म गाता फवन की भी मशीन थी। त्रनव अतिरिक्त मगनीक अथवा मगोनेत्र अथवा मगोने नाम की एव मशीन हाती थी त्रिमक त्रारा जाग के गात्र जाग तमान वात तार पत्थर के टुकड़ और पक्षी त्रनी चद्राने तथा त्रार के गात्र तक फके जा सनते थे। कभी-कभी विपन मांय और त्रिन्ड भी शत्रु-सेना म फर लिये जाते थे। मुन्तव क अधिवतर म नावा का एक विशेष बडा रहता था जिमका प्रयोग सामान तोने तथा नर्षिया के युद्ध म किया जाता था।

मुल्तान स्वयं अपनी मना का महासनापति हाता था । वह उसके सगठन तथा उम समुचित अवस्था में रखने की ओर स्वयं ध्यान दिया करता था कि भा एक सना मंत्री होता था जो दीवान आरिज कहलाता था । सनिकों की भरती उनके सगठन अनुशासन तथा तर्ककी आज्ञा विषयों का भार उमी पर था । सना शासन के आधार पर सगठित की जाती थी । अश्वारोही सना म सम सवारा की एक टुकड़ी हाती थी और उसके नेता को सरखेत कन्त था । सम सरखेत के ऊपर एक सिपहसालार दम सिपहसालारा के ऊपर एक इमीर म अमीर क ऊपर एक मन्तिक और म मन्तिका के ऊपर एक मान होता था । किन्तु एसा प्रतीत हाता है कि यह याजना कवन थागजी थी और एन युग क किसी भी मुल्तान के शासनवाज म इसको कार्याचित नहीं किया गया । बलवन के समय तक मेना क अधिकतर एन वशानुगत हो चुके थे । बलुन म सनिक युद्ध म तथा सनिक निरीक्षण क अवसर पर अपने प्रतिनिधि भेज दिया करते थे । अलाउद्दीन गजनी न दम भ्रष्टाचार को दूर करने का प्रयत्न किया उसन घोडा को शासन की प्रथा बनायी जिससे निरीक्षण के समय एक ही घोडा दो यात्र प्रस्तुत न किया जा सके जीर अच्छे के स्थान पर निम्मा टटटू न रखा जा सके । उसन आज्ञा निकारी वि प्रत्येक सनिक की शिपया रजिस्टर म लिखी जाय जिससे वाई सनिक अथवा अफसर अपन स्थान पर किसी दूसरे व्यक्ति का न भेज सके । इन सुधारों म सना म अनुशासन की पुनस्थापना हुई किन्तु फीराज मुगलक के समय म एन नियमों की उपक्षा का गया और सनिकों का अपने स्थान पर दूसरा को भेजने की आना दे दी गयी । मिकर तागी के समय तक सना म यही व्यवस्था और अनुशासन हीना प्रचलित रही, उम मुल्तान न पुन हुनिया जयवा धर्या दिखन तथा घोडा को शासन का नियम जारी किया ।

गजधानी म स्थित सना के सगठन तथा अनुशासन के सम्बन्ध म कांतीय सरकार बतारता का व्यवहार करती थी किन्तु जहाँ तक प्रांतीय सनाओं क सगठन का सम्बन्ध था उन पर उमका काई नियंत्रण नथा था । के वध म कवन एक यात्र निरीक्षण क लिए स्थानिक की जाती थी और उम समय दीवान आरिज अपने बनाव हुए नियमों का लागू कर सकता था ।

सना का कुछ दुबलिया प्रांता म सामरिक महत्व के स्थानों में रखा जाता था । सीमान्त जिला की रक्षा क लिए अनुभवी सनिक रसे जात थे । फिर म रखा तथा पशुआ क तारे क लिए समुचित प्रबंध करना किता के अर्थ म का ही कर्तव्य था ।

मुल्तान समर-नीति म दक्ष एसा रहत था । मिर्कत तथा सना आक्रमण करने की कता का बहुधा प्रयोग किया जाता था । युद्ध आरम्भ करने में एन



सनापति भावी युद्ध प्रवेश की अवश्य जाँच पड़ताल कर लेता और रणभेद विधिगत करने में भौगोलिक स्थितियों का ध्यान रखता था। युद्धभूमि में सनापति द्विवीजता में विभक्त की जाती थी जहाँ अग्रगामाएँ एक पक्ष स्थिति पार्श्व दायम पार्श्व तथा मरुभक्त अथवा गिजवएँ। सामने लड़ी लड़ किये जाते थे और उनके आगे अश्वारोहा। डा कुर्शी का मत है कि सनापति पार्श्वों में पार्श्वएँ भी हुआ करते थे। किन्तु हममें मान्य मान्य मान्य है। पानीपत की लड़ाई में इब्राहीम खान की सनापति पार्श्वएँ लड़ते थे। हमें विपरीत बाहर की सनापति में यह लड़ते थे और हमें कारण खानों की पराजय हुई थी। सनापति माय खानों तथा स्थानीय स्थितियों भी चले थे। शत्रु की गति विधियाँ का निरीक्षण करना तथा तत्सम्बन्धी समाचार सनापति को देना खानों का मुख्य कर्तव्य था। उनकी सेवा का अत्यधिक महत्त्व था।

सैनिक पदाधिकारियों का भू राजस्व के भाग के रूप में वेतन मिलता था किन्तु सैनिकों को नकद तनख्वाह दी जाती थी। सैनिकों का वेतन समयानुसार घटता रहता रहता था। अनाउद्दीन के शासनकाल में एक मुसलमान सैनिक का वेतन २४ टका प्रतिवर्ष था जबकि मुहम्मद तुगलक के समय में ५०० टका मिलता था। युद्ध के समय में सिपाहियों को भोजन वस्त्र तथा चारा मुफ्त दिया जाता था। जफररो का वेतन भी समय समय पर घटता रहता रहता था। खानों को एक लाख टका तथा सैनिकों का पचास या साठ हजार टका तक प्रतिवर्ष मिलता था। छोटे जफररो को एक से दो हजार टका तक प्रतिवर्ष दिया जाता था। जफररो के वेतन में उनके अधीन सैनिकों का वेतन भी सम्मिलित रहता था।

अनियमित सैनिकों को जाँच कर वजही कहलाने थे और जिन्हें घाड़े समय में लिए भरती किया जाता था किसी स्थानीय वाप से और कभी कभी केंद्रीय राजकोष से नकद वेतन मिलता था। फीरोज तुगलक ने सैनिकों को भी वेतन भू राजस्व के भाग के रूप में देने की प्रथा प्रचलित की थी। सैनिकों का वेतन तथा भत्त समुचित ही नहीं बल्कि बहुत अच्छे थे।

वित्त

सल्तनत युग की वित्त नीति मुस्लिम विधिविज्ञान की इनीकी शाखा के वित्त सिद्धान्त पर आधारित थी। भारत के प्रारम्भिक तुर्कों सुल्तानों ने अपने राजकीय पूर्वाधिकारियों से यह प्रथा अपना ली थी। शारा में जो राजस्व के मुख्य साधन बताये गये हैं और जिन पर सुल्तान निर्भर रहते थे वे थे— (१) उत्र (२) खराज (३) खम्म (४) जकात और (५) जजिया। इन अतिरिक्त आय के कई अन्य साधन भी थे जमे खानों में जाय भूमि में गन्ना हुआ धन निःसन्तान जागीरों की सम्पत्ति बहिशुल्क आबकारी-कर इत्यादि।

उप भूमि का था और मुसलमान भूमिपत्र का उम भूमि पर लगाया जाता था किन्तु मित्रा प्राकृतिक शासन में होता था। यह व्यवस्था का उम वसूत किया जाता था। सराज भी भूमि-कर था जो गर मुसलमानों की भूमि पर लगाया जाता था। अन्तर्गत कानून अनुसार अन्तर्गत कर ५ म १ तक होता था। अन्तर्गत कर वसूत कर १ का करण था जो वाणिज्य के विच्छेद मुद्र में प्रालय जाता था अन्तर्गत १/२ मना में वाट किया जाता था। उक्त घामिक कर था जो बबल मुसलमानों पर वसूत किया जाता था। यह कर कुछ निश्चित भूमि में अन्तर्गत का सम्पत्ति पर ला लगाता था। सम्पत्ति का वल भाग जो इन्स मुक्त था निगाह बहलता था। अन्तर्गत कर १/२ प्रतिगत था। अन्तर्गत कर वसूत वाता बाल कुछ निश्चित मन्त्र पर मुसलमानों के नाम के निग्न व्यय की जाता था जम मन्त्रिणा और वल्लो का सम्पत्ति घमन्त्र और घामिक लागता तथा अन्तर्गत को निय जान वात वल्ल अन्तर्गत।

अन्तर्गत क्या है ?

अन्तर्गत केवल गर मुसलमानों पर लगाया जाता था। अन्तर्गत कर सम्पत्ति में विगतों में मन्त्र ३। कुछ का वल्लो ३ कि यल घामिक कर था और गर मुसलमानों में वसूत किया जाता था और इसका वल्लो म उल्ल अन्तर्गत जावन तथा सम्पत्ति का रक्षा का आशवाहन मित्रता था और व सन्तिस सवा म मुक्त अन्तर्गत था। क्याकि वल्लो मुद्रो विधिनिष्ठा के अनुसार गर मुसलमानों का मुसलमानों के राज्य में रहने का अधिकार नहीं है। किन्तु कुछ प्राधुनिक मुस्लिम विद्वानों का मत है कि अन्तर्गत घमन्त्रिणा कर था और गर मुसलमानों पर अन्तर्गत लगाया जाता था क्याकि व सन्तिस सवा म मुक्त था। मुसलमानों का वल्लो म वल्लो मिद्वान्त अन्तर्गत रूप में राज्य को सन्तिस-सवा करनी अन्तर्गत थी। प्रारम्भिक मुसलमान विधिनिष्ठा न कर का दा वगैरे में विभक्त किया— घामिक और घमन्त्रिणा और अन्तर्गत को अन्तर्गत दूसरा वाटि म रगा। घामिक कर उक्त और मन्त्रा व जा बबल मुसलमानों पर लगाया जाड था। अन्तर्गत मुसलमानों पर नला लगाया जाता था और न उमक सम्पत्ति में कोई अन्तर्गत नियम हा था कि उमम हाट वाती आय का घामिक वाटों में हा व्यय किया जाय। यही कारण था कि मुस्लिम विधिनिष्ठा न उम घमन्त्रिणा कर का वाटि म रगा। किन्तु उक्त वल्लो-करण के आधार पर अन्तर्गत का घमन्त्रिणा कर बहना युक्तिगत नहीं है। प्रारम्भ में भारत के बाहर अन्तर्गतों में मन्त्र कर के समान का कुछ भा उद्भय रगा हा किन्तु इमम मन्त्र न। कि उक्त अन्तर्गत न निष्ठा विद्यय की उम ममय पर अन्तर्गत घामिक कर मन्त्रा अन्तर्गत लगा था। यह गर-मुसलमानों पर अन्तर्गत लगाया जाता था कि राज्य उक्त जावन और सम्पत्ति की रगा करण और सन्तिस-सवा से उक्त मुक्त

रखता था। त्रितीया क मुगलाना बढारता मे इग कर का वमून करना अपना धार्मिक बनध्य समझा थ। य आपुनिक लगक जा इग कर को धमनिरपेक्ष माना है धर्माता क पन्त भाग—जिम्मिया के जीवन तथा सम्पत्ति की रक्षा—को जायतार भूत जान है और कवन दूसर भाग—मनिक-मवा स मुक्ति—पर जोर देत हैं। मुगल युग क इतिहास मे स्पष्ट है कि अधीनस्थ त्रिदू राजा जा बाबर और हुमायुँ के समय मे अकबर के प्रारम्भिक त्रिना तथा औरंगजेब क शासनकाल मे मुगल सम्राटा की मनिक-मवा किया करत थ वे भी जजिया मे मुक्त नही थ। एम निश्चयपूर्वक जानत है कि उज्जयपुर क राणा न औरंगजेब की मवा के निण एक सनिक दुबली न गयी थी फिर भी जजिया के बन्दे मे उम अपनी भूमि का कुछ भाग मुगला के हवाल करना पन्त था। इसलिए यह स्पष्ट है कि जजिया का धार्मिक महत्व था। इस कर क सम्बन्ध मे बयाना के काजी मुगिसुद्दीन क निणय का हम पहले एक अध्याय मे उल्लेख कर चुके है।

एस समस्त युग के ऐतिहासिक तत्त्वा को ध्यान मे रखा हुए भी यह कहता कि जजिया तुरश का दण्ड जयवा अथ विसी कर की भाँति धमनिरपेक्ष कर था मरय से बहुत दूर होगा।

मित्रियाँ बच्चे भित्तारी तथा उगटे जजिया से मुक्त थे। एस कर के निण समस्त त्रिदू जनता को तीन वर्गों मे विभक्त किया गया था। पहले वर्ग को ८८ त्रिहम दूसरे का २४ त्रिहम और तीसरे को १२ त्रिहम चकाना पन्ता था।

### अथ कर

आयात पर भी कर लगता था जिमकी दर व्यापारिक वस्तुआ के निण २% और घोडा के निण ५ प्रतिशत थी। जायान-कर की दर भर मुसलमाना क निण मुसलमाना स दूनी थी। एमके अतिरिक्त मकान कर चरागाह-कर पानी-कर तथा अथ साधारण कर भी वमून किये जाते थ। खनिज पत्थरों तथा यकनिया को मिन हुए कोष का है राजकोष मे जमा हाता था। मुसलमाना द्वारा विजित देशा मे माना और चाँदी की शिनाआ तथा लान हुए मिक्का का भी एक भाग राज्य मे नेता था। जो योग नि सन्तान मर जात ५ और जिनका कोई उत्तराधिकारी न हाता था उनकी सम्पत्ति भी राज्य की हो जाती थी। आय का एक अथ महत्वपूर्ण साधन भी था। प्रतिवष सुन्तान को जनता पत्थरि कारिया तथा अमीरा स बट्टन सा धन भेंट के रूप मे मिन जाया करता था।

### भू राजस्व

त्रितीया सत्तनमे की आय का सबसे महत्वपूर्ण साधन भू राजस्व था और युद्ध मे प्राप्त लूट क धन के बाद उसी का स्थान था। राजस्व शासन की दृष्टि

न भूमि व चार मुक्त वा द—(१) राजमा भूमि (२) कनाम विनक्त भूमि  
 या भूमिवा का कुट निश्चित वर्षों अथवा जवन भर क विरा न वा जाना था  
 (३) सिद्ध मन्वन्ता क राज्य विन्तुनि मुन्तान का अधीनता स्वाकार कर वा  
 का और (४) मुक्तमान विमान तथा मन्त का इतान जयवा मिक् अथवा  
 वक्त क रूप म वा गया भूमि । नवानता भूमि का प्रवत्त माया कनाय माका  
 गरा हता था किन्तु मरवार प्रवत्त विमान न माया नया वधि चौरगा  
 महम आदि स्थानाज राजस्व पनाधिकारिया द्वारा भूमि-कर वसुत कना था ।  
 मरवार पनाधिकारा विमाना म नगान वसुत कना य जौ प्रवत्त म  
 (मन्वन्त कि म) आदिन नाम का एक पनाधिकारा गृहता ना नना राजस्व  
 इत्या करक राजकाय म जमा कना था । राजस्व का न्न वाम्बिक उपत्र  
 क शपार पर मावजाना म विमाव नगाकर नया वन्वि अनुमान म वा  
 निश्चित कर वा जाना था । कता म राजस्व निरागिन ल्या वसुत कना का  
 रूप कना क हाय म हाना था । वह अपना भाग कात्कर उचन का कनाय  
 सरकार क वाय म जमा कर कना था । उमका गिन नापमाय का वचन विमान  
 तथा विमा न विमा वदान नम अना न कन म वा था । मरिए वचार का  
 मराह म मुन्तान प्रवत्त इक्त क शिप स्वाता नामक गव पनाधिकारा का  
 निरस्त कना था जिसका नाम राजस्व का वसुता का लवग्य कना तथा  
 पना पर कुट नियन्त्रण रखता था । गुप्तचरा का पस्थिति क वाग्म स्वाता  
 तथा मुक्ता म झगडा नान की सम्भावना कम रकना था । कयाकि व स्थानाय  
 पनाधिकारिया क कामा का माया रिपाट कनाय मरवार का विमा कन थ ।  
 व सिद्ध राजा विन्तुनि मुन्तान का अधीनता स्वाकार कर वा था जवन अपन  
 सामा म पूण स्वायत्तता का उपभाग कन थ । मरवार मुन्तान का कर  
 नता पना था । इमा प्रकार जमादार नाग मरवार का निश्चित कर विमा  
 कन थ और लनक अधिचार-शया म गहन वात विमाना का अपन जमादार  
 का छात्कर अय विमा अधिवाग म सम्बन्ध नया था । वरर अथवा ननाम  
 क रूप म दी तथा भूमि राजस्व म मुक्त और भागीदार का वशानुगत सम्पति  
 ही जाता था ।

विन्ता सन्तात क सम्पूर्ण युग म मरवार व्यवस्था हा प्रचलित रहा ।  
 अराउरान मन्त्री पहला मुन्तान था जिसन राजस्व-लानि तथा व्यवस्था म  
 मन्त्वपूण परिवर्तन किये । उमकी नीति ना मुख्य सिद्धान्ता पर आधारित थी—  
 (१) राज्य का आय म अधिप ग अधिप वडि कना और (२) सामा का  
 अधिकर जमाव की दसा म रगना जिसन म विमान अथवा जमादार का  
 विचार भी न कर सके । इन उद्देश्य की पूरा कना क विना उमन निम्नविधित  
 उपाय किये

सबसे पहले उगने मुसलमान अमीरों का तथा मिर्जा (स्वामित्व अधिकार) नाम (निगुला भेंट) नाम (पगन) जोर वक्फ (धर्मस्व) व रूप म धर्म नाम पर ली गयी भूमि का जप्त कर लिया। उपयुक्त प्रकार की अधिकतर भूमि पर राज्य न अधिकार कर लिया किन्तु कुछ माफीदार पूर्ववत् अपने अधिकारों का उपभोग करते रहे। दूसरे सिद्ध मुकद्दम खुत चौधरी आदि राजस्व पदाधिकारियों का जो विगपाधिकार मित्र दृष्टि से उनसे छान लिये गए और जब उन्हें भी अय नागा की भाँति अपनी भूमि पर राजस्व तथा मकान और चरागाह पर दान पगन था। तीसरे उसने राजस्व का दर उपज का १/२ भाग निर्धारित की। चौथे उसने भू राजस्व तथा अय प्रचलित करा व जति रिक्त किसानों पर मकान-कर तथा चरागाह-कर भी लगाये और जतिया वहि शल्ले और जकात पूर्व-मुत्ताना व युग की भाँति चले रहे। पाँचवें उसने भूमि की वास्तविक उपज जानने के लिए भूमि की नाप करने का परिपाटी प्रचलित की और पन्चागिया व अभिनता की जाँच करवायी जिससे कि राजस्व विभाग चलाय निधारित करने के लिए सहा जानकारी प्राप्त कर सक। छठे सब प्रकार का राजस्व कटारता से वसूल करने के लिए उसने एक मुयोग्य विभाग का निर्माण किया और फसल की प्राकृतिक अथवा अय किसी प्रकार की हानि होने पर राजस्व में छूट करने का नियम नहीं रखा। यद्यपि नाप की परिपाटी सल्तनत के मकान प्राप्ति में प्रचलित नहीं की जा सकी किन्तु मुल्ताना की नीति का मुख्य उद्देश्य राजस्व में पर्याप्त वृद्धि करना तथा कर का बाँध किसान जमादार यापारी दुकानदार आदि सभी वर्गों पर डालना था।

अनाउद्दीन की नीति अत्यधिक कठोर तथा अप्रिय थी इसलिए उसका उत्तराधिकारी उसका अनुसरण नहीं कर सक। उसका अन्त कठोर नियम त्याग लिये गए किन्तु उसके द्वारा निश्चित की गयी लगान का दर में परिवर्तन नहीं किया गया। गियामुद्दीन तुगलक ने अनाउद्दीन की राजस्व-नीति का कठोरता का कुछ कम किया किन्तु राज्य कर की दर किसी प्रकार से नहीं घटायी और वह पूर्ववत् उपज का १/२ कायम रही। पहले उसने पगन का प्राकृतिक अथवा अय किन्हीं कारणों से हानि हान पर छठे दन व सिद्धान्त का स्वीकार किया और उचित अनुपात में राजस्व की छूट दी। दूसरे उसने खुत मुकद्दम और चौधरी नागा को भूमि-कर तथा चरागाह-कर से मुक्त कर लिया। तीसरे उसने नियम बनाया कि किसी एकना में १ वष में १- अथवा २- में अधिक राजस्व में वृद्धि न जाय। किन्तु गियामुद्दीन का राजस्व-नीति में दो मुख्य दोष थे। एक तो उसने भूमि की नाप करने की परिपाटी त्याग ली और पूर्ववत् अनुमति से राजस्व निर्धारित करने की नीति का अपनाया।

द्वारा उमन मन्त्र तथा अमन्त्रिक पश्चात्कारिया का आदेश उन का प्रधा का पद प्रचलित कर दिया ।

उमन-संस्थाधिकारी मुहम्मद तुगलक मन्त्रानु का राजस्व गमन का सुपरन्डिन्ट बन का आदेश था । उसका आशानुसार राजस्व विभाग न मन्त्रानु की आय और व्यय का विस्तृत तथा तयार करना आरम्भ किया जिससे मयस्त राज्य में एकमात्र राजस्व-व्यवस्था स्थानिक का आशानु और का शक्ति भूमि-कर में न बचकर ( किन्तु यह आवश्यक तथा आवश्यक कार्य बधुता ही हो गया । उसके दूसरे प्रयाग गण-उमना आशानु में भूमि-कर का आशानु प्रयत्न करवा करवा म वृद्धि करना था जबकि भूमि-कर का आशानु का शक्ति ५० प्रतिशत का काममें था । उमन न उमन न विच्छेद धार उमनाय प्रयत्न किया किन्तु मुहम्मद न उमन उमन का बधुता करना जाग गया । अनावृष्टि के कारण उमन पद गता जिमका ना उमन चिन्ता नया था । परिणामस्वरूप मयकर विद्रोह का स्वयं उमना किन्तु मुहम्मद न अपन अध्याय का वापस नया दिया । वापस उमन तबका शक्ति और शिवाय के लिए हुए भा सुधाय किन्तु तब तक उमन का न चका था । उन आशानु का सम्पूर्ण प्रयत्न बरबाद हो गया । मुहम्मद का उन उमन सुधार या कृषि विभाग का स्थापना करना जिम आशानु का न बन था । उमना उमन कृषि के धार में विस्तार करना था किन्तु यह याजना ना निश्चय था ।

१२५१ ई में पाराउ तुगलक के मिलायत पर बैठने के समय में उमना मन्त्रानु का कृषि-शक्ति का एक नया युग आरम्भ था । उमन राजस्व मन्त्रानु विषय का आशानु ध्यान दिया और जनता का शैक्षिक अभिवृद्धि के लिए हस्तक्षेप प्रयत्न किया । मयमें पद उमन प्रजा के उमन कृषि का दूर बन का प्रयत्न किया आ मुहम्मद तुगलक के सुधार के कारण यह था । उमन तबका प्रयत्न माफ कर दिया राजस्व विभाग के पश्चात्कारिया के बनन बड़ा शक्ति और उन आशानु याजनाका का उमन कर दिया जा सुधारा और राजस्व पश्चात्कारिया का भुगतनी पदती था । उमन अतिरिक्त उमन राजस्व मन्त्रानु मन्त्रानु का उमन गावधाना और परिणाम में जीव करवायी और सम्मन्त गातमा भूमि का राजस्व मन्त्रानु रूप में निश्चित कर दिया । तामर उमन २६ कष्टप्रद कर हटा दिया जिममें पण्डित मन्त्रानु तथा चरगाहा-कर भी सम्मिलित थे । तुगलक विहित करों में पाँच कर—पाराउ गमन जड़िया ज्ञान तथा शिवाय-कर कायम रहे । शीघ्र उमन गता का शिवाय के लिए पाँच तहरा का निर्माण कराया और अनेक हुए सुधाय । पाँचवें उमन गता निम्नलिखित अर्थीम आदि उमन पण्डितों के कृषि का प्रागाहन दिया । छठे उमन अनेक बाग सगबाय और पन्ना के उत्पानन का बढान का प्रयत्न किया । उन

मुधारा ग राज्य की आय में बहुत वृद्धि और सामान्य जनता का आर्थिक स्थिति में उत्थान हुई ।

विजयपुरी राज की राजस्व व्यवस्था में तीन भयंकर त्रुटियाँ—(१) भू राजस्व का ठेक पर उठाना व सिद्धांत का पुन लागू करना (२) भू राजस्व का रूप में वजन देना और तत्सम्बन्धा पत्रों का बचन की आत्मा देना तथा ( ३ ) जजिया व धन में वृद्धि करना और बढावा से उसका बसूत करना ।

यद्यपि फीरोज तुगलक व राजस्व सम्बन्धी यादगुण तथा उत्तर नियम उसका उत्तराधिकारियों व दुबन शासनकाल में और निमूत व आक्रमण व उपरान्त अवस्था व युग में त्याग स्थि गय फिर भी परवर्ती तुगलक तथा सय्यद मुल्तान उनका मूल तत्त्वा का अनुसरण करते रहे । जब लार्जिया व हाया में राजशक्ति आयी तो उन्होंने अपने राज्य का समस्त भूमि महत्वपूर्ण जफगान परिवारों में बाँट दी । सालसा भूमि का क्षय तथा महत्व बहुत कम हो गया । गिब्राल्टर नामी न भूमि का नाप करन का परिपाटा पुन प्रचलित करन का प्रयत्न किया जयथा उसने राजस्व नियमों तथा उपनियमों में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नही किया ।

दिल्ली मुल्ताना का राजस्व दर व सम्बन्ध में विद्वानों में वाद विवाद चलता है । एक आधुनिक विद्वान लिखता है कि इस युग में अधिकतर काल में लगान की दर उपज का  $\frac{1}{3}$  रही । यह मत अनुमान पर आधारित है और गलत प्रतीत होता है । पक्क मुसलमान विधिविज्ञान द्वारा निर्धारित इस्लामी कानून व अनुसार खराज की दर उपज के  $\frac{1}{3}$  से  $\frac{1}{2}$  तक होनी चाहिए । जसा कि हमें पता है प्रत्येक इस्लामी देश में और भारत में भी राज्य मुसलमान किसानों से उपज का  $\frac{1}{3}$  बसूत करता था यन्नि व अपने सेता का राजकीय नहरों तालाबों और कुआँ से नही सींचता था । यन्नि अपने सेतो की सिंचाई व लिए सरकारों नहरों और कुआँ व पानी का प्रयोग करन तो उन्हें सिंचाई-दर भी देना पन्ता था । यह भी निश्चित है कि सम्पूर्ण सल्तनत युग में हिन्दू व्यापारियों का व्यापार कर मुसलमानों से दूना देना पडता है । इसमें यह परिणाम निकालना युक्तिसंगत ही है कि हिन्दू किसानों का मुसलमानों से दूना भूमि-कर देना पडता होगा अर्थात् हिन्दू किसानों व लिए भूमि-कर की दर उपज का  $\frac{1}{3}$  रही होगी । यदि इस नियम का पालन भा किया गया हागा तो कबल तथाकथित गुनाम मुल्ताना व समय में । अलाउद्दीन खलजी न लगान की दर बढाकर उपज का  $\frac{1}{2}$  कर दी थी और दिल्ली व सिंहासन पर बठन वाल उसका सभी उत्तराधिकारियों सल्तनत व अंत तक वसी दर से भूमि-कर बसूत करते रहे । आधुनिक अनुमानों में सिद्ध कर लिया है कि शेरशाह उपज का

एक तिहाई कमूल करता था और उमक समय में यह उचित तथा वायपूण मात्रा जाता था और आग चलकर अक्बर महान ने भा इसी का अपना लिया था। इन तथ्या का ध्यान में रखते हुए प्रतीति हाना है कि सम्भवतः गुनाम मुल्तान के समय में भी उपज का एक तिहाई भूमि-कर के रूप में लिया जाता था। इस युग में भूमि-कर का छाटकर किसानों पर आय अनक कर भी लगाया जाता था। तत्कालीन इतिहासकार लिखते हैं कि कुतुबुद्दीन ऐबक ने उन करों का हटा दिया था जो मुस्लिमों के विरुद्ध थे किन्तु उमक बाद मुल्तान के कर बार-बार फिर हटाने पड़े। इससे स्पष्ट है कि दिल्ली मुल्तान के सम्पूर्ण युग में किसानों का शूराजस्व के अनिश्चित आय कर भी लगता था। यह प्रश्न निरर्थक है कि इन करों का जाग रखने का उत्तर शक्ति किस पर था और उनसे हानि वाला आय राजकाय में जमा होती या बकाया प्रकृत राजस्व पर अधिकारी मूल्तान और मात्रा उस हृत्प तत थे। ऊपर जो कुछ हम कह रहे हैं उससे यह सिद्ध है कि किसानों का अपना कमाव का एक तिहाई में अधिक उपभोग नहीं करने दिया जाता था।

धन्य का मुख्य मन्त्री—मुल्तान का परिवार सैनिक तथा अमनिरपक धर्मस्व तथा शान मुद्ध और विद्रोह खलाफा का बहुमूल्य भेंट तथा भारत के वास्तविक स्थानों के लिए दान।

याय तथा शांति

शासन का सबसे प्रबल तथा अत्यवस्थित विभाग दीवान उजा (याय विभाग) था। मुल्तान याय का छात था। उसका मुख्य उत्तरदायित्व कुरान के नियमों का कार्यान्वित करना और वायम रखना था क्योंकि सद्धान्तिक रूप में शिखा मानवने कबल इन्हा नियमों का मायता देता थी। इसलिए मुल्तान स्वयं याय विभाग का अध्यक्ष था। वह मल्तान में दो बार दरबार करता तथा स्वयं मुल्तान का परमला करता था। नाम के लिए उमका दरबार अर्थात् का उच्चतम यामानय था किन्तु वह मौजिक मुल्तान भी सुनता था। धार्मिक मुल्तान का निशय करत समय वह मुख्य मन्त्री तथा मुल्तान का गणायता तता था किन्तु धर्मनिरपण मुल्तान में बाज्रा उमकी गहायता करता था। इन सम्पूर्ण युग में इन दानों मन्स्वपूण पन्ना—मुख्य मन्त्री तथा मुख्य काजी के रूप में का कार्यभार सम्भालते थे किन्तु एक ही व्यक्ति नियुक्त किया जाता था। वह व्यक्ति दो रूपों में मुल्तान के साथ बटता था—धार्मिक मुल्तान में मुख्य मन्त्री और धर्मनिरपण के मामलों में काजी का है नियम न।

२. मैनिफेस्टो एण्ड शिबाग्वष हूण परशाह और उमक उत्तरदायित्वारी (अधजी गस्वरण) पृ० ७१-७६।



मुख्य राजा याय विभाग का अध्यक्ष होता था किन्तु वह नाममात्र का ही अध्यक्ष था क्योंकि यह विभाग का वास्तविक नियंत्रण मुल्तान के ही हाथ में था। जब मुल्तान परगना में नया बटोरा था तभी मुख्य राजा ज़ीनत के उच्चतम यायाधीश का कार्य करना था। ज़ीनत के उच्चतम यायाधीश के रूप में वह जो नियम बनाये गये भी मुल्तान में शासन के सक्ता था। प्रत्येक का दृष्टि से भी मुख्य राजा याय विभाग का प्रमुख नया था क्योंकि मुल्तान स्वयं प्रांत। एक जिनके काजिया जीर शहर के अमीर गंगा की नियुक्ति करता था। इन सम्बन्ध में वह राजा का सहायक बन जाता है किन्तु नियुक्ति स्थानान्तरण तथा पदच्युति का वास्तविक कार्य उसी के हाथ में था। मुख्य राजा राजधानी में ही रहता और कचहरी करता था। उसकी सहायता के लिए एक मुफ्त बटोरा था वह प्रांतीय यायाधीशों के कार्यों का निराकरण करता तथा उनके नियम के विरुद्ध अपील सुनता था।

वह नगर में अमार गंग नामक पदाधिकारी होता था जिसका तुलना हम आधुनिक मिट्टी मजिस्ट्रेट से कर सकते हैं। इसके दो मुख्य कार्य थे—अपराधियों का गिरफ्तार करना और राजा की सहायता में मुकदमा का फसला करना। यह यायाधीश तथा कार्यपालिका का पदाधिकारी दोनों ही थे। दूसरे रूप में वह राजा के नियमों का कार्यान्वित करता तथा मुहतामिब का सहायता से नियमों को लागू करता था। उसकी सहायता के लिए नाइब-नाइब नामक एक पदाधिकारी होता था।

प्रत्येक प्रांत तथा प्रत्येक जिले में एक राजा रहता था। महत्वपूर्ण नगरों में राजा तथा अमीर गंग भी होते थे। छान्द कस्बा जीर ग्रामीण क्षेत्रों को जिनमें दश की ६ प्रतिशत जनता रहती थी मुल्तान में छान्द रहता था और वहाँ याय करने के लिए अपने यायाधीश नहीं नियुक्त किया था। सौभाग्य से हमारे गांव आत्मनिर्भर गणराज्या का भाग है और उनकी अपनी पचासों हानी थी जो कबल पगड ही नहीं तय करती बल्कि अपने कर्मों का कार्यान्वित भी करती थी। इसलिए जनता प्रसन्न था कि उसके विन्शी शासकों ने उसे निर्विघ्न छान्द रहता था। गाँव में स्थानीय मुल्ताना के शासन का अस्तित्व केवल राजस्व वसूल करने के लिए था।

यद्यपि डा इशतियान हुसैन कुरशा न मुल्ताना की याय व्यवस्था का जिन रजिन्त प्रशंसा की है किन्तु तत्कालीन फारसी लेखकों के ग्रन्थों से हम उपयुक्त मालूम किन्तु उपनय होता है। उसके निरीक्षण से यह याय व्यवस्था में स्पष्ट दोष दिखायी देते हैं। यामानया का कार्य उचित प्रमत्त था और न उनका धनाधिकार ही निश्चित था। पर्याप्त जहाँ चाहता अपनी पदच्युति शिकायत कर सकता अथवा मुकदमा दायर कर सकता था। उन्हाहरण के लिए वह

अथ पर क राजा अथवा प्राजाय राजा अथवा मुन्नाय क राजा तत्र जा  
 मता था। अथवा का अथवा मयापानय मृत मुक्त्मा का भा निगय क  
 मता था। मयापानय का कायविधि भा निश्चिन नया था और न समस्त  
 राय म एवमा हा थी। विना जाच किय मुक्त्मा आग्मन कर त्रि जान थ।  
 मयापानय का कायवाहा विधा नया जाना जो और फमता वधा समस्त  
 (Samarv) म न जाना था। मयापानय म मुक्त्मा क निदमा र अनुमा  
 मय हाता था। त्रि और मुमनमाना क वाच मुक्त्मा का निगय भा राजा  
 म्हा निदमा क आधार पर करत थ। भिन्न धमा क जागा क वाच धमनिग्प  
 मक्त्मा का निग्प परम्परागत कानुना क अनुमा हाता था त्रि न विगिन  
 म हात थ। मयिग प्रत्येक मयापानय अपन चित्त का तत्र अथवा बुद्धि क  
 अनया तत्रा मस्या कर सकता था। मय परिणामस्वरूप त्रि जागा क  
 मय महान् अयाय हाता हागा जो काटा क मयमो नहा जान थ।

अथ विधान अत्यधिक बठार था। अथमधिया का मामापनया अथम  
 और मुक्त्मा मिया जाना था और अथमय म्वासाय कथान क निग अमि  
 मता का यानाए दा जाना था। यद्यपि त्रि का क मामाजित मामता म मर  
 का मुनयम ह्मन्मय करना था और तत्र मुक्त्मा का निगय म कात्रन क  
 मयमा करना था त्रि मरन का कथन थ त्रि भा जागा क माय घार जयाय  
 हाता जागा कयाकि उन त्रि मयापानय क मामन परयाया का दुष्टकाय व्यसन  
 करत क निग कवा न नहा जान थ। मुख्य काटा तत्र म माय प्रधान मयापानय  
 तथा मुख्य धमाधिकार क पत्रा पर काय करना था। अथ है कि मया व्यसन  
 तत्र मक्त्मा म जिनम एक पत्र म मुमनमान और दूसर म मर-मुमनमान हात  
 हाग शाय हा तत्रम तथा निग र नाति का अमरण कर पाता हागा। इमक  
 अनिश्चित मुख्य काटा तथा प्राजा त्रिना और नगरा क काजिया का अय  
 अनय धार्मिक तथा धमनिग्प र कथमा का पानन करना पन्ता था त्रिगव  
 काय तत्र मुख्य कथमा म अवश्य विन पन्ता हागा। मयापानय क निग  
 म अनाया और गामला का मयति तथा धमम्ब क रूप म म मया मयनि  
 का ममान और वगीयनताया का कार्याचित्त करना पन्ता था। त्रि मुमनमान  
 विपवाया का महायता करना और तत्र लिए याय पति रचना भा उनता  
 हा काय था। मावजतिव मार्गी तथा मन्ना का अतिरमण गहज का काय  
 भी उही क मुक्त्मा था। मयाय त्रि विनकुन मयमय न मयन वात इन अनय  
 कायी क काय तत्र मयाय मयमय कायी क पानन म अवय याया पटनी  
 हागा। मयम कदा मय यत था कि मय क अतिरमण शत्रा म का मयम  
 मयाय पन्नामिहारी नया थ मयिग जनता का अयन हाट्टी का निवारा करत  
 क लिए अपन माधन निवामन पटत थ।

एक सगर ११११ यहाँ तो कहा है कि हिन्दुओं में भी आयसमाज आदि कुछ सम्प्रदाय मूर्तिपूजा का गण्डन करते हैं। मध्ययुगीन मुसलमानों ने उन गिद्वानों को तार्किकता दिया जिनका आयसमाजी जाज प्रचार कर रहे हैं। डॉ. मन्मथ नाजिम का कहना है कि हिन्दू मन्दिर धर्म के भण्डार थे इसलिए उनमें उतर गये आये। विज्ञान मीनाता मुसलमान नबी की राय है कि हम मिनहाज उम मिगाज जियाउद्दीन बरनी शम्सुल्लाह-अफीफ और यन्विया बिन अहमद आदि उन मकानों के नगवा के जिनशयाकिनपूण कथना का विश्वास नहीं करना चाहिए जिनमें धार्मिक अत्याचार मन्दिरों के विध्वंस तथा मूर्तियाँ के तोड़ने के विषय बणन अपन ग्रन्थों में लिखे हैं क्योंकि वे भारत के बाहर के मुसलमानों के लिए लिखे गये थे।

उन मता की विस्तार में गमीशा करने की आवश्यकता नहीं है। तुर्कों की दुश्मनी स्पष्ट है क्योंकि उन नगवा को प्रश्न का दूसरा पक्ष देखने का अभ्यास नहीं है। हम पहना ही तक ले लें। यह कल्पना करना सरल है कि एक धर्मांध मुल्तान अपने स्वतंत्र हिन्दू पत्नी के विरुद्ध अकारण ही युद्ध की घोषणा करके मन्दिरों का नाश करता मूर्तियाँ के तोड़ने और निर्धोष हिन्दू जनता का मुसलमान बनाना और फिर भी अपने को धर्मात्मा समझता और सतोष में जाता कि मैंने यहाँ सब कुछ युद्ध में किया है और उनके आधुनिक समर्थक यह जानते हुए भी कि दिल्ली मुल्तानों ने जितने युद्ध लड़े थे उनमें से ८६ प्रतिशत अकारण थे उनका अत्याचार का इस सिद्धांत का आधार पर उचित ठहरा है कि प्रेम और युद्ध में सब कुछ उचित है। इसके अतिरिक्त अनेक ऐसे उदाहरण उपलब्ध हैं जिनमें सिद्ध होता है कि शांतिकान में भी मन्दिर ध्वंस गये थे और मूर्तियाँ तोड़ी गयी थीं। दूसरे तक के सम्बंध में हम केवल यह कहना है कि यदि मस्जिदों का मन्दिरों को परिवर्तित कर दिया जाय तो लम्बे का क्या लगेगा? यह निश्चित है कि इस रूपान्तरण के उपरांत भी वे पवित्र स्थान बनी रहेंगी। जहाँ तक इस तक का सम्बंध है कि पत्थर की मूर्तियाँ को तोड़कर हिन्दुओं को एकेवरवा की दीक्षा दी गयी थी यह यहाँ मानना पड़ेगा कि उस प्रकार में तो उद्देश्य ही विफल हो गया था। यहाँ योग का उनकी अच्छा के विरुद्ध बलपूर्वक स्वयं भेजने का प्रयत्न करना जसा ही था। दुर्भाग्य की बात यह थी कि हमारे तुर्क तथा अफगान शासक यह न समझ सके कि हिन्दू तो युगों से पत्थर की प्यता में विश्वास करते आये थे और मूर्तिपूजा उनके लिए केवल एक माध्यम थी साध्य नहीं। मन्तान् मुस्लिम विज्ञान अन्वेषणी ने हम तथ्यों को भलीभाँति समझा था। डॉ. नाजिम उन लोगों में से मानुस हान है जिन्होंने स्त्रियाँ का अस्तिता परने में बल दिया था कि गुण्ड पुराने उनके शीर्षक से आकर्षित होकर सबकुछ तोड़ कर दे। सम्भवतः वह इस नाम

का स्वागत करेंगे कि हिंदुओं का अपराध बवल इतना ही था कि ज्ञान  
 का प्रसारण न करके भित्त-पथता का जीवन बिताया  
 गया था। मालाना मुसलमान नबी की मरणा का तत्पश्च यह  
 प्रसंग है कि तत्कालीन मुसलमान तयका व विस्तृत वर्णना तय्या और  
 प्रकृत म विश्राम मत करके कथाकि व प्रचारक थ और जाधुनिक तयका न  
 व परिणाम निवार है उह टाक माना कथाकि २०वीं शताब्दी व योगा व  
 तका म प्रागेष्टा का स्थान नगा है । साम्प्रव म जाधुनिक पाठक अपन परिणाम  
 निगलन म स्वतंत्र है । व मर्याता स गण का भूम म जगत कर सकन है ।

मिना मल्लान तथा मल्लनन क वरुमन्वयक मुसलमान पक्व सूत्रा थे और  
 मिना तथा मल्लान क अय विद्रोहा सम्प्रदाया व कट्टर विरोधा र । मल्लाननी  
 मल्लन म विराय रखन बाल सभी विचारा का नाश करन का उनकी  
 बरता गी थी । साम्प्रव म व मल्लान क जगतन सभी प्रकार क विराय  
 का बल करना चाहत थ मल्लान उराने कर्माथा गिया महत्वा आदि  
 मल्लाना का निष्पत्तापूर्वक मन किया और उनके धार्मिक गति विचारा  
 का बलना । कर्मा-कर्म उनक नताथा व मल्लाना का और उनका बर भी  
 गिया । गिया तागा का विराय म्प म विरही समया जाना था । फीराज  
 मल्लान न ना गिया सम्प्रदाय क मर्याता पर प्रतिबंध लगान तथा उनके  
 अनुयायिणा पर जयाचार करन का भी ध्यय गिया था । उनन उनका धार्मिक  
 पुस्तका का सावत्रनिक म्प म जतबाया । यथासम्भव गिया तागा का राजराय  
 नौकरिया नगी न जाना थी । म्प मुग र किया भी मुत्तानन मल्लाना गियाजा  
 का म्प-वर्णन विचारा और उनर्यामित्त क पना पर नियुक्त नगी किया ।  
 मल्लान विराय मल्लान सम्प्रदाया क अनुयायिणा का जम-तुल होना स्थानाविक  
 था । मल्लानिया न म्प-तुलमिग तथा गडिया व मगरम मुन विरार और म्प  
 मल्लान अपन अमलाय का व्यवन गिया किन्तु निष्पत्तापूर्वक उनका मन कर  
 गिया गया । उनक गगों का भी जा उरार रहस्यवाणी थ म्प भाव म म्प  
 गाना था कथाकि व विचारा म कट्टर नगा थ और उनके अनुयायिणा की बदा  
 मर्या था । अन मलाय म म्प गह कर स्वतंत्र है कि मल्लाना था मुग मरीय  
 नगा मगर धार्मिक कट्टरता का मुग था ।

BOOKS FOR FURTHER READING

- 1 FALLOT & DOY on History of India to V I I to IV  
 Q. No 33 I II A to treatise of the Sultanate of Delhi
- 2 HARRISLAW & B M T. F. in I. I. Muslim Rule  
 in India
- 3 HARRIS WAHID A. in treatise of Justice in Muslim India
- 4 TRIPATHI H. I. Some Aspects of Muslim Administration

## उत्तर-पश्चिमी सीमा-नीति मगोल आक्रमण

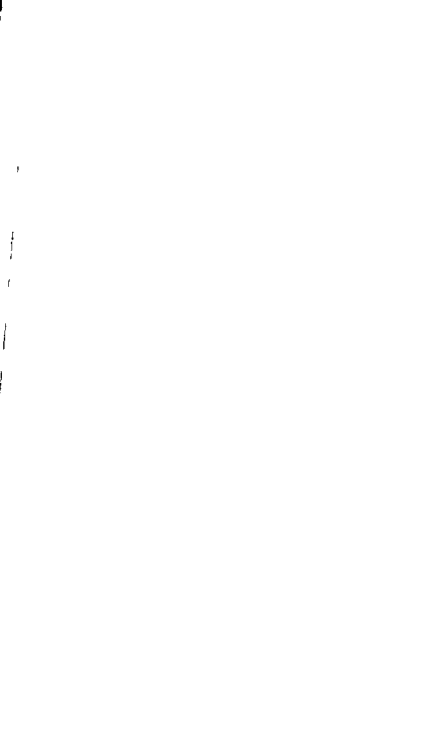
भारत के लिए धनात्मक सीमा की समस्या

मध्य युग में जबकि भाग में चतुर वान जगज नग थे हमारे दश पर वेबन उत्तर पश्चिमी वान में आक्रमण न मकता था । पूरबी हिमालय तथा आसाम की पन्थिया में हाकर भी विन्शी आक्रमणकारी की माग मिन मकता था । किन्तु उस वान में आक्रमणकारा सना क निण उह पार करना असम्भव था । यही कारण था कि प्राचीन तथा मध्य युग में विन्शी आक्रमणकारियो न हमारे प्रेश में उत्तर पश्चिम की आर स ही प्रवश किया । इसनिण इम सीमा की रक्षा करना सत्व हमारे शासना की नीति रही । किन्तु इस प्रेश की पवत वृषनाआ की स्थिति विचित्र है इमलिए वाबुन गजनी-कंधार प्रेश पर सनिक अधिकार तथा नियन्त्रण रखे बिना इस सीमा की सफनापूर्वक रक्षा नहा की जा सकती थी क्यकि यह प्रेश पजाब की उपजाऊ घाटिया के निण आने वान मार्गों की नाववनी करता है । इसनिण वाबुन गजनी-कंधार रेखा को जिमके पाशव में हिंदूकुश स्थित है सनी अर्थों में भारत की वज्ञानिक सीमा कहा जा सकता है । इम रेखा पर अधिकार रखने तथा उसकी रक्षा करने क साथ साथ काश्मीर तथा समुद्र क बीच स्थित प्रेश में बसन वाली उदृण्ड जानिया पर नियन्त्रण रखना भी आवश्यक था क्यकि इम पट्टी में होकर ही उपयवन रेखा तथा पजाब क बीच मान आत जात है । सिंध सागर दोआब क उत्तरी भाग में स्थित नमक की पन्थिया क प्रदेश में बसने वाली खोकरर आनि स्वनात्र तथा युद्धप्रिय जानिया की उपस्थिति ने समस्या का और भी अरिक् विषट बना लिया था । ग्याकरर लोग मय पजाब की नूटमार किया करत थे इसनिण म य युग में उत्तर पश्चिमी सीमा की रक्षा करना और भी अधिक कम्नि नो गया ।

यास्तविक सीमा ( १२०६ १२१७ ई )

११वा तथा १२वीं शताब्दी में पजाब पर शासन करने वाले गजनवी वश के मुल्ताना के मामा हम सन्ध में का विषय कठिनार् नही थी क्यकि वाबुन गजनी तथा कंधार उनक अधिकार में थ । यही कारण उनके उत्तरा धिकारी मुल्म्म गोरी को भी हम सन्ध में किमी विषय सवट का मामना





नया करारा पत्रा सिन्धु मुहम्मद का मृत्यु के उपरान्त सिन्धु के उपरान्त मुल्तान  
 कृतवगत एक न १२०८ में मंगुली पर अधिकार करके भाग्य का वितानिक  
 नामा तब पट्टेचन का निवन प्रयत्न किया। यह प्रयत्न रहा और मंगुली  
 का शासन पर राध्य हुआ। उसका उपरान्त पात्र का नम मुल्तान के सम्मुख  
 एक नयी समस्या उठ गयी थी। स्वार्थिम के पात्र न मंगुली पर अधिकार  
 कर लिया और अब उसका मास्राय का पूरवा सामाज मिथ का छन गया। एक  
 शक्तिशाली पनामी के सम्भव म आन के कारण नवस्थापित सिन्धु मल्लनन  
 का उत्तर-पश्चिमी सीमा का सीधा सतन उपस्थित न गया। सिन्धु भाग्य  
 से सिंधु नदी का स्वार्थिम तरा सिन्धु मल्लनन के बाव सामा था उपद्रवा म  
 मुक्त री कथानि मंगोला के न प्रसार के कारण स्वार्थिम-मास्राय स्वय  
 नरुणा रहा था। एक दशक के मानन न मास्राय सक्प्रस्त न गया  
 मंगोला न मध्य गणिया के मुस्लिम गाय का सिद्ध निद्र कर लिया और  
 बफगानिस्तान मंगुली तथा पनावर सन्नि उनका भूमि पर अधिकार कर लिया  
 इमनिग सिन्धी सन्तनन की उत्तरा पश्चिमा सीमा सिंधु नदी तथा रही बन्धि  
 पाद ह्कर पत्राव के मय तक आ गया। न परिस्थितिया म सिन्धी मुत्ताना  
 के लिए भाग्य की वितानिक सीमा पर नियंत्रण रखन का प्रश्न नो नो उठता  
 था। जो कुछ उमर अधिकार म था नम कम उताय रखा जाय यनी १२वा  
 शाही मंग उनका सामन मुख्य समस्या था। नम गाय की सीमा वर रखा  
 था जो मियातकार म नमर का पनायिया म नन्त तक फनी हुई री और  
 त्रिय पर क्लुनमिमा न १२१७ में के बाव अधिकार कर लिया था।

**इतुनमिमा तथा मंगोल**

१२२० ई तक अपने मंगल तथा चमजगी के ननुव म मंगोला न  
 स्वार्थिम के मास्राय का पूरूपम नाग कर लिया और उसका शासक अरा  
 गीन मुहम्मद का कम्पियन नागर का आर खले लिया जहाँ सीध ही उमरा  
 मृत्यु हो गया (१२२० में)। अरागीन का उत्तराधिकारी जतानुगीन मंगवनी  
 था नम के कारण मुरागान म मंगुली का भाग गया। चमजगी न तात्वन म  
 गका पीछा किया सन्निग वह मंगुली छाडकर हमारे देश की सीमाओं की  
 शर भाग गया। सिंधु के तट पर मंगोला न हम पर किया इमनिग पीछ  
 मुत्तर उम मुद्र करना पना सिन्धु पराश्रित हुआ। ह्नाग हाकर उमन अपने  
 परिवार के लोग का एक राव म विगकर नम रिया सिन्धु के सिंधु म  
 डब गये। यह समय तक पाड का पत्र नो म कू पहा और पात्र करके  
 पश्चिमी सिन्धु पर जा पहा और वहाँ म भागकर मिथ नागर राजाव म  
 करण थी। चमजगी तीव्र मंगने तक नया के नामे सिन्धु पर टारा सिन्धु  
 का भाग्य की धान था कि उमन उम पात्र करके नया मंगुली का पीछा



तही किया और दिल्ली सल्तनत की स्वाधीनता का ही उद्घोषण किया। यह उमने ऐसा करने का विचार किया होता तो मध्य एशिया के शक्तिशाली तथा पुराने मुस्लिम राज्यों की भाँति भारत की नरमथायित्व तुर्की सल्तनत भी मगाना के ही प्रहार में चरताचर हो गयी होती। किन्तु ऐसा प्रतीत होना है कि इल्तुतमिश ने मगाना तथा स किमी प्रकार का समझौता कर लिया था और सम्भवतः मगानों का शरण न देना का वचन ले लिया था। कुछ भी कारण रहा हो उमने स्वार्थिज्म के राजकुमार को दूर रखने की बुद्धिमत्ता पूर्ण नीति का अनुसरण किया जिससे कि मगानों का किसी प्रकार भी उत्तजनना न मिले। मुल्तान के मित्रतापूर्ण जाचरण के कारण चंगजखी न भारत में होकर बराबुरम को चोटन के अपने इरादों को जिसके सम्बन्ध में उमने इल्तुतमिश से आजाज माँगी थी त्याग दिया और इस प्रकार दिल्ली सल्तनत एक महान सफलता से वंचित गयी। चंगजखी १२२२ ई के शीतकाल में हिन्दूकुश होकर अपने देश को चोट गया।

#### सिन्धु में मगवनों के कार्यों का परिणाम

यद्यपि चंगजखी ने अपनी मावधानी से भारत के प्रभुत्व का सम्मान किया किन्तु उसके अनुयायी मगवनों को कष्ट पहुँचाने लगे और सिन्धु के उस पार के प्रदेश पर भी उत्तजनना अनेक धावे मारे। स्वार्थिज्म के राजकुमार ने नमक की पत्थारियाँ के प्रदेश में प्रवेश करके एक छोटी सना एकत्र कर ली और वहाँ के हिन्दू राजा को परास्त करके अपने लिये एक राज्य का निर्माण करने की तयारी करने लगा। परन्तु चंगजखी ने गजनी से एक सेना भगाकर राजकुमार का पीछा करने के लिए भेजी। उसीसे मगवनों पीछे हटकर चारों ओर अपने एक दूत जाइन उम मुल्तान की दिल्ली सुल्तान के पास भेजा जो शरण माँगी। इल्तुतमिश ने यह कहकर कि दिल्ली की जनवायु आपके अनुकूल नहीं पड़गी उसको शरण देने से इनकार कर दिया। तब मगवनों ने खोखर मरदार में शिवता कर ली जिससे अपनी पुत्री का विवाह उसके साथ कर लिया और सन्धि सन्धायता दी। मगोल सना जो राजकुमार का पीछा करने के लिए भेजी गयी थी पजाव में उमके पीछे नहीं पनी। सम्भवतः चंगजखी ने ही उम एजा न करने की हित्वायत कर ली थी अतः उसने केवल नमक की पत्थारियाँ के प्रदेश को चूटा।

मगवनों ने खोखर सना का सन्धायता से नासिरद्दीन कुबचा के राज्य पर जाक्रमण किया जो उम मुल्तान की आर भगा लिया। सन्धान तथा अथ कुछ महत्वपूर्ण नगरों पर उमने अधिकार कर लिया अहिलवाड के विरुद्ध भी एक सना भेजी और कुछ चूट का मान प्राप्त किया। उसी बीच में एक दूसरी मगोल सना उमका पीछा करने के लिए आ पहुँची। उसीसे



मंगोला की अधीनता में धुल्लान सिंध तथा पश्चिमी पंजाब

१२४० ई. में रजिया का पता हा गया और उगा साथ दिल्ली तथा मंगोला के मंगोलों का भी आत हा गया। १२४१ ई. में जंगल नाइव न एक विशाल मंगोल गना सकर गिन्धु तथा सो पार किया और पत्नी गार गौरी का पेट हाता। यही का मूंगलर अपनी प्राणरणा के निरु भाग रता हुआ सिन्धु जाता त वीरतापूण प्रतिराध किया। अत में उम समपण करना पत्। मंगोला न नगर तथा उसक दुर्गों को भूमिगत कर दिया। उनक लोट जाने के बाद गौरी के रकना का वेदन एक भाग फिर दिल्ली के अधिकार में आ गया। रावी नदी मंगोला के प्रभाव-क्षेत्र तथा मंगोल के बीच की यावत्कारिणीमा बन गयी।

१२४५ ई. में मुल्तान और सिंध भी दिल्ली मुल्तान के हाया स निवन गय। मुल्तान पर हमन काजग और सिंध पर विद्रोही कबीरगा के वशजों न अधिकार कर दिया। इन दोनों प्रान्तों पर मसूत के शासनकाय में (१२४५ ई.) बलबन ने पुन दिल्ली की सत्ता स्थापित की।

मंगोला का दूसरा आक्रमण गरी बहादुर के नेतृत्व में १२४७ ई. में हुआ और उन्होंने मुल्तान को घेर दिया। युद्ध के हरजाने के रूप में एक लाख दीनार पान पर उन्होंने घरा उठा लिया। तत्परान्त सत्री ने गौरी की आर कूच किया और वहाँ के सूरेदार का भारी हरजाना देने तथा मंगोला की अधीनता स्वीकार करने पर बाध्य किया। नासिरुद्दीन के सिन्धामनारोहण के उपरान्त किसी समय बलबन ने मध्य पंजाब पर आक्रमण किया किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि रावी के उम पार के प्रवेश पर जा कुछ समय से मंगोला के अधिकार में था पुन दिल्ली की सत्ता स्थापित करने में उस सफलता नहा मिनी। इसी प्रकार मुल्तान और सिंध १०५ ई. तक विदेशियों के अधिकार में रहे। उम वष शरखा नामक सलतन के एक पतिशानी सूरेदार न उन्हें फिर जीत दिया। उसके बाद भी इन प्रान्तों पर दिल्ली का अधिकार तिल मित रहा और अनेक बार उनका हस्तान्तरण हुआ। दिल्ली के कुछ मामल तथा पत्ताधिकारी गद्दार गिद्ध हुए और उन्होंने मंगोला से बातचीत की तथा उनसे जाकर मित भी गय। इस कारण परिस्थिति और भी अधिक पेचीला हो गयी। शरखा नामक सरदार एसा ही एक पत्ताधिकारी था। बलबन को उमे पुन अपन पत्ता में सिन्ध में बची कटिनाई हुई।

नासिरुद्दीन के रायारोहण के बाद मंगोला के अनेक आक्रमण प्त विशपकर सिंध तथा मुल्तान पर। बलबन उम समय मुल्तान के नाइव के पत् पर काय कर रहा था। उसने आक्रमणकारिया की प्रगति को रोकन के निरु मन्तु सतिव तयारिया का सिन्धु उगने मंगोला पारा अधिकृत प्रवेश पर

आक्रमण करने के उद्देश्य में सन्तान का उत्तर-पश्चिमी साम्राज्य का पतन करने का बड़ी प्रयत्न नहीं किया। ऐसा प्रतीत होता है कि उमर मरूफ सिध मुल्तान तथा पश्चिमी पंजाब का मगाना के हाथ में छाड़ना स्वीकार कर लिया था। मुल्तान में मगाना के अधीनस्थ सामन्तों का शक्ति में वृद्धि का प्रयत्न किया। बरबन ने १५८ ई. में शरका का भ्रष्टाचार में स्थानान्तरित कर दिया क्योंकि वह मगाना मूव्दार काशगुया में मुल्तान तथा च छानन का शासन कर रहा था। मगाना से शरण मानने का नाति के अनुसार ही उमर ऐसा किया। इस समयीत के आधार पर ही मुल्तान नामिररान महमूद तथा मगाना नरस तुलागु न दूसरे के लिये म अपन राजदूत भेज। इनके स्पष्ट है कि लिहा दखार न सिध मुल्तान तथा व्यास के उम पार के पंजाब प्रान्त का हानि का महत्त करना स्वीकार कर लिया था।

### बरबन का साम्राज्य

बरबन के शासनकाल के प्रारम्भिक दिना में सिध तथा मुल्तान के प्रान्त पर लिहा का अधिकार पुन म्थापित हो गया था किन्तु उत्तर-पश्चिमी पंजाब में मगाना का नरस हटाना जा सका। नरस का अवश्य नरस चंगुल में मुक्त करके मुल्तान और लिहापुर के सामान्य प्रान्त में सम्मिलित कर लिया गया। अपन शासन के प्रारम्भ में बरबन ने भ्रष्टाचार लिहापुर तथा नरस का मित्रावर एक सैनिक प्रान्त बना दिया जोर शरका का उमका मूव्दार नियुक्त किया। शरका का मृत्यु के उपरान्त मुल्तान सिध तथा लिहापुर मुल्तान के गवम बह पुत्र शाहजाह मुहम्मद और जय नाग जिसमें मुनम तथा समाना सम्मिलित थे दूसरे पुत्र बुगरासी के सुपुत्र कर दिया गये। इस प्रकार बरबन ने समस्त उत्तर-पश्चिमी साम्राज्य का शासन और प्रबन्ध का भार अपन पुत्रों का ही सीमा। समाना तथा मुनम के मूव्दार का मुल्तान तथा सिध के मूव्दार के अधीन कार्य करना पड़ा था। बरबन ने उत्तर-पश्चिमी साम्राज्य पर एक दुग श्रुतला का निर्माण किया और अनुभवों परान्त सैनिकों का उमकी रक्षा के लिए नियुक्त किया। साम्राज्य के लिए महत्त अलग-ह हजार की एक जलम मन्त्रा रनी गया और उसे इस प्रान्त में नियुक्त किया गया। सन्तान के जय साना भी मन्त्र सन्त्र का मुवावता करने के लिए तयार रहनी था। इस प्रागणीय प्रबन्ध के कारण सीमाएँ इतनी मजबूत हो गयी कि पछि बरबन के राज्यकाल में मगाना ने अन्तर् जोरदार आक्रमण किया किन्तु आग बढ़ने में उसे सफलता नहीं मिली। १७६ ई. में मगाना ने अपन आक्रमण पुन आरम्भ कर दिया और मुनम तथा के प्रान्त का गोल खाता। किन्तु मुल्तान में शाहजाह मुहम्मद गमाना से बुगरासी और लिहा से मुवावद बलिपार की पीला न मिलकर शर का पूरा रूप में पराजित किया और पश्चिमी पंजाब के

बाहर सदर लिया। मंगला का भय जाता रहा, किंतु यह था ही समय क  
 लिए था। १२८५ ई. में तमूरगाँव नरुत्व में उगा पुन तगौर और  
 पिपारपुर पर हमला किया। शाहजाह मुहम्मद उनका मुकाबला करत क लिए  
 आग बढ़ा किंतु परवरी १२८६ ई. में वह युद्ध करत हुए मारा गया। इस  
 भयकर विपत्ति क रावजू बचवा का प्रयत्न इतना सफल सिद्ध हुआ कि मंगल  
 और आग १ बढ़ सक और पीछे पीछे पर बाध्य हुए। मंगला क आक्रमण  
 क भय का बचवन का गृह तथा बाह्य नाति पर गम्भार प्रभाव पन। उस  
 अत्यधिक भारी राध पर एक विशाल सना ही नहा रखनी पडो बल्कि दश क  
 स्वतंत्र शासका की भूमि का विजय करन का विचार भी उम त्यागना पडा।

ककुबाद क समय में मुल्तान तथा निचल पजाब पर मंगला क दो आक्रमण  
 हुए। दूसरे हमन क दौरान में आक्रमणकारिया न मुल्तान से लाहौर तक क  
 प्रदेश का रीं डाना किन्तु क जाग न बर सब और दाना बार उह भारी  
 क्षति उठाकर पाछे लौटना पडा। बचवन न मल्तनत की सामाज्य का रक्षा  
 का जा ठास प्रवध कर रखा था उसकी बज से अथवा इसलिए कि मंगला  
 जीर दिल्ली सल्तनत क बीच राजनातिक समझौता चला आ रहा था अथवा  
 इन दाना ही कारण स मंगला न गुलाम वश क अत तक दिल्ली पर कभी  
 आक्रमण नही किया। गजिया क सिंहासनाखंड हान क समय स उहान  
 अपनी नीति बदल दी। पहल उनका उद्देश्य बवल लूटमार करना था अधिक  
 स अधिक क मुल्तान सिध अथवा पजाब को जीतना चाहत थ किंतु अब क  
 टिरी को जीतन का प्रयत्न करन लग। पजाब को आधार बनाकर उहोंने  
 मल्तनत की राजधानी पर लगातार आक्रमण आरम्भ कर लिए।

दिल्ली पर मंगोलो के आक्रमण रक्षा के लिए खतजियो का प्रवध

जलानुद्दीन के शासनकाल में मंगला का बवल एक आक्रमण १२६२ ई.  
 में हुआ। तगाँव क एक नाता क नरुत्व में एक मंगल सना जिसकी सख्या  
 एक डढ़ लाख थी सल्तनत के सामात प्रदेश में घुस आयी और मुनम तक आ  
 धमकी। सुल्तान न स्वयं आक्रमणकारिया का मुकाबला किया और हराकर  
 उह पीछे पीछे पर बाध्य किया। जलानुद्दीन न जगजला क एक वशज  
 उलगू तथा कुछ अ य मंगला को दिल्ली में बस जान का आना द दा। उहान  
 इस्नाम अगीकार कर लिया और सुल्तान क यहाँ नौकरी कर ली। सुल्तान न  
 अपनी एक पुत्री का विवाह उलगू के साथ कर दिया। य मंगल प्रवासी नय  
 मुसलमानो क नाम से प्रसिद्ध हुए।

जलानुद्दीन क शासनकाल में मंगला न दिल्ली का जीवन क अनेक प्रयत्न  
 किये। उनका सबसे पहला आक्रमण उनक सिंहासन पर बठन क कुछ ही  
 महीना क भीतर हुआ। सुल्तान क मित्र तथा सेनापति जफरखी न जालघर क

दिए गए आक्रमणकारियों का परास्त किया और मारी सरया में उनका महार कर दिया। दूसरा हमला १२८७ ई. में हुआ। इस बार मंगाला न मुल्तान के निरक्षित सिंधी वंशियों का हमला करने दिया किन्तु जफरखान ने उन्हें पन हारवा और १७०० आक्रमणकारियों का जिनमें उनका नता उनकी त्रियों तथा पुत्रियों भी सम्मिलित थी बन्नी बनाकर दितना भज दिया। १२२१ ई. में कुतलुग खाना व नवृत्त्व में मंगाला न दिल्ली की जातन का भयकर प्रयत्न किया। उद्धान राजधानी का घर दिया और रसत आन व माय काट दिया। सकेट इतना गम्भीर था कि कातवाल जला उल मुल्क न मुल्तान का उन पर आक्रमण करके अपना मवस्व सकेट में न डालने की मनाहदों किन्तु अनाउद्दीन ने इस मनाहद का ठुकरा दिया और मंगाला पर २२ पन्न का सकेल्प दिया। जफरखान ने धाव का संचालन किया और उद्धान परगल किया किन्तु वह स्वयं घिर गया और मारा गया। फिर भी आक्रमणकारियों पर जफरखान का दारता और साहस का इतना प्रभाव पड़ा कि वे पाद लौटने का वाध्य हुए। 'मक' वात् तान वष तक उनको आक्रमण करने का साहस न हुआ। किन्तु जब मंगाला का नवगाना में अनाउद्दीन का पराक्रम तथा राजस्थान में उसका 'यस्त' हान का समाचार पात हुआ तो १३०३ ई. में उनका एक नता तार्गी ने १२०००० सना तकर भारत पर आक्रमण किया और दिल्ली का घर दिया। अलाउद्दीन का सारा वंशित में मगल लना पड़ा। मंगाला न उस भा घर दिया। उद्धान आगपास व प्रदेश का नष्ट भष्ट कर दिया और दिल्ली का गतिया नक धाव मार। किन्तु उद्धान नियमपूर्वक घर का संचालन करने का अनुभव नहीं था इसलिए अन्त में उद्धान परा उताना पना। १०४ १०६ १०७ ई. तथा इसका वात् व वर्षों में मंगाला न भयकर आक्रमण किया किन्तु प्रत्येक बार उद्धान परागल हाकर लौटना पना। उद्धान दिल्ली पर अधिकार करने व प्रयत्न में ही अपना सम्पूर्ण जीवन लगा था। किन्तु अनाउद्दीन ने बन्दबन का सीमा रखा की नाति का अनुमरण दिया इसलिए वह राजधानी का बारा में मफत हुआ। उसने सामान्य रिया की मरम्मत कराया और उनकी रक्षा व त्रिए तम सनित नियुक्त किया। सना का रक्षा व त्रिए उगत एक विभाग सना रखा और १३०५ ई. में अनुभवों याददा गाडी मतिव का मामारणक व पन पर नियुक्त किया। गाडा मतिव न मंगाल आक्रमणकारियों व धिरउ अनेक युद्ध रिय और सामाया का सुरगिन रगा।

परवर्ती युग

अनाउद्दीन की मृत्यु के उपरान्त मंगाला न भारत का मुद्देन व प्रबल प्रयत्न किया। शियागुर्गिन मुगलत व समय में उनका एक आक्रमण हुआ किन्तु

आक्रमणकारियों को नतीला पराजित हुए और बगल बगलकर दिल्ली ल जाय गये। गदरत भयकर मगल आक्रमण १२२८ २६ ई म हुआ उनका नतीला तमासारी सलतनत को मध्य म स्थित बगल तब आ धमका। आक्रमणकारियों न मगल को प्रश को लूटा और गप्ट धप्ट कर लिया। किंतु मुहम्मद बिन तुगलक न उह हराया और आधुनिक गुर्दागपुर जिले म स्थित बगलानौर तक उनका पीछा किया। फीराज तुगलक को शासनासन म सलतनत मगल आक्रमण से मुक्त रही। मध्य एशिया म उनका शक्ति बहुत कुछ धाण हा चुना था और पश्चिम पजाब से भी उनके पर उलट रहे थ।

१४वा शताब्दी को उत्तराद्ध म यद्यपि दिल्ली सलतनत अत्यंत दुबल हा चुकी थी फिर भी मगल आक्रमण को उस तनिक भी भय नहा था। मध्य एशिया को मगलाने न इस्लाम अमीकार कर लिया था और महान तुर्की याद्धा तिमूर न एक शक्तिशाली साम्राज्य स्थापित कर लिया था। समरकंद उनका राजधानी थी। शताब्दी को अत म इसी यकिन न उत्तर पश्चिमी सीमाआ को पार करके दिल्ली सलतनत पर आक्रमण किया। जसा कि हम पहल तुगलक-वंश को इतिहास लिखते समय उल्लेख कर आय है दश को जितना कप्ट और दुख तिमूर न पहुँचाया उतना उसके पहल अथवा बाद को किसी एक आक्रमण कारा न एक हमले म नही पहुँचाया।

मगोल आक्रमणो को प्रभाव

दिल्ली सलतनत की जातिरिक्त और बाह्य नीति पर मगलाने को आक्रमणो को गम्भीर प्रभाव पडा। जब तक यह सक्कट गम्भीर रहा तब तक दिल्ली को शासको को अपना सनिक शक्ति अधिक से अधिक बढानी पडी। इत्तुतमिश से लकर मुहम्मद बिन तुगलक तक सभी सुलतानो को अपनी सेनाआ की ओर सबस अधिक ध्यान देना पडता और अधिक से अधिक धन उन पर खय करना पन्ता था। इसको अतिरिक्त उह आतारिक विद्रोहा तथा फूट को राकन को भी यथा सम्भव प्रयत्न करना पडता था जिमसे उत्तर पश्चिम से जात बाल आक्रमणकारा उनसे लाभ न उठा सक। यही कारण था कि उनको शासन इतना निरकुशला पूण हा गया। यदि बाह्य आक्रमणो को निरंतर भय न हाता ता उह कोस मामा तक निरकुश हान को जवसर न मिलता। इत्तुतमिश बनबत अलाउद्दीन खानजी तथा मुहम्मद बिन तुगलक को सदब सनिकवादी नीति अपनाती पन्ता और अपना राजस्व सनिक तयारियों म खय करना पन्ता। इस विषय म व प्रमाण अथवा असावधानी से काम नही कर सकत थे बगलकि ऐसा करत से दिल्ली सलतनत को भी वसा ही सत्यानाश हा गया हाता जसा कि मध्य एशिया को उससे अधिक पुरान और शक्तिशाली राज्या को हा गया था। दूसर उत्तर पश्चिम को सक्कट के कारण साधारण कोटि को सुलतानो को लिए आक्रमणकारा

नानि का अनुमरण करना तथा स्वतंत्र हिन्दू राज्या की विजय क लिए रण  
 यात्रा करना जमम्भव हा गया । उदाहरण क लिए बंगाल का न राजिए ।  
 अत्यधिक विजयानामा हात हुए भी वह कमा सिना का छाकर कहा जान  
 का साहस र कर सवा कवन बंगाल का विना दवान क लिए उसन एक  
 बार रणयात्रा का । इन परिस्थितिया म कवन जनाउरीन बनजी हा एमा  
 सिना जा श का बचान तथा स्वतंत्र शा राज्या का विजय करन की  
 इना नानि का अनुमरण कर सवा । मुहम्मद तुगलक न भा उमा क चरण  
 बिह्ला पर चलन का प्रयत्न किया सिन्तु उस विनाशकारा असफलता का  
 मयना करना पडा । इस प्रकार हम देखत ह कि मंगल जात्रमणा क भय र  
 सम्पन्न का नानि तथा भाग्य का अत्यधिक प्रभावित किया । यदि मंगला का  
 सफलता मिल गया हाता तो हमार दश का इन्दिम नितान भिन्न दिशा म  
 प्रवाहित हुया हाता । मलिनता का ता जन्त हा जाता बीट धमाबनम्वा हात क  
 कारण मंगल नी यूनाना शक तथा नगा की भानि हिन्दू-समाज म विलान हा  
 गय हात और भारत अत्यधिक पचीला सामाजिक धार्मिक तथा राजनतिक  
 उन्नता स बच जाना ।

#### BOOKS FOR FURTHER READING

- 1 ELLIOT & DOWSON History of India etc Vol II III IV
- 2 HAIL WOOLSELEY Cambridge History of India Vol III
- 3 HADIBELLAH A B M The Foundations of Muslim Rule in India



## समाज तथा सस्कृति

### मुस्लिम समाज

#### शासक वग

इस सम्पूर्ण युग में जिसके इतिहास का हम पिछले अध्यायों में वर्णन कर चुके हैं विश्वी मध्य एशियाई मुसलमान दश के शासक वग थे—१५वां १४वीं तथा १५वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में तुर्क तथा १५वां के उत्तरार्द्ध और १६वीं शताब्दी में अफगान। तुर्कों के साथ इरानी अरब हमी तथा मिस्री भी सम्बंधित थे और शासन सत्ता पूर्णरूप से इन्हें विदेशियों के हाथ में थी। तुर्क लोग इस विदेशी शासक वग के हिता के कट्टर रक्षक थे तथा वे ही वास्तव में इसका नेता थे। १३वीं शताब्दी में शक्ति का एकाधिकार उनके हाथ में रहा और उन्होंने एशिया के मुस्लिम जातियों का नृत्व किया। उन्हें नस्ल भेद का नीति में विश्वास था। उन्होंने भारतीय मुसलमानों का राजशक्ति में हिस्सा नहीं दिया और सरकारी नौकरियों से भी उन्हें पूर्णरूप से वंचित रखा। कुतुबुद्दीन ऐबक से लेकर कुतुबुद्दीन तुगलक तक मुसलमानों ने सत्ता पर तुर्कों का एकाधिकार कायम रखने का नीति का अनुसरण किया। बलवन्तता खुरदरे रूप से निम्न कुत्रोत्पन्न गर-तुर्कों से घृणा करता था। १४वीं शताब्दी के अन्त में मध्य एशिया के देशों से असह्य मुस्लिम शरणार्थी भारत में आये जिससे शासक वग की सरया में अत्यधिक वृद्धि हो गयी। इससे विभिन्न मुस्लिम नस्लें तथा जातियाँ में परस्पर सम्मिश्रण भी आरम्भ हो गया और अन्तर जातीय विवाहों के कारण धार धीरे-धीरे एक दूसरे में पूर्णतया घुल मिल गयी। रक्त का शुद्धता जिस पर उद्दण्ड तुर्कों का घमण था समाप्त हो गया और विभिन्न तत्त्वों के मेल से बनी हुई मुसलमानों की एक नयी जाति बन गयी। खलजी शासन के आरम्भ से ये सामाजिक तत्त्व इतने शक्तिशाली हो गये कि तुर्कों के हाथों से शक्ति का एकाधिकार जान बूझ कर और सल्तनत के इतिहास में प्रथम बार भारतीय मुसलमानों को शासन से सम्बंधित करने की नीति अपनायी गयी। इस नीति को प्रारम्भ करने का श्रेय अलाउद्दीन खलजी का था जिसने मन्कि काफूर नामक योग्य किन्तु कुछ हद तक पतित गुनाहम का अपना नाश्व नियुक्त किया।

एक सामक बग का जा विभिन्न तस्वा क सम्मिधण स बना था मिनकर  
 तया एउ उद्देश्य क लिए काय करन का जाणा नहा का जा सकता थी ।  
 मल्लन-युग क अमीर कबन गर मुमकमाना क विरुड युद्ध क दौरान म मिन  
 कर काय करत थ शांति क समय म निजी महत्वाकाक्षाओ प्रतिष्ठिता तथा  
 मयता क कारण उनम भयकर पुत्र रहनी था और क निजा स्वाय प्रति म नम  
 एते थ जिमम राजम क हिता का जयघिन आघात पकता था ।

### भारतीय मुसलमान

इस युग क प्रारम्भ म एम मुसलमानों की संख्या जितनी अपना धर्म त्याग  
 कर इस्लाम अंगीकार किया था उतन कम रहो किन्तु नवों क राज्य तथा  
 मता क प्रसार क साथ साथ उमम भी वृद्धि हाता मयी । उमम अधिकतर  
 राजा जानिया क हिंदू व जा अनेक कारणों म अपन पुत्रों का धर्म छोड़कर  
 मुसलमान हो गये थ । भारतीय मुसलमानों का विस्तारों का उषा म हा नहा  
 सम्पन्नित किया गया था बलिय जाधिक नवा मामाजिा विभाधिकारा म  
 भा उह हिस्सा नही मिलता था । सषुषण नशाकधिन गुनाय युग म इमांन  
 मुक्त रावन को छोड़कर किसी भी भारतीय मुसलमान का उच्च पद पर नहा  
 नियुक्त किया गया था और इमांन भा समित्त उच्च पद पर पहुँच मवा कि  
 उमम अपन माता पिता का नाम छिपा गया था और विष्णु मसलमानों का  
 मल्लान हान का घहाना बना दिया था । बलबल न उमक वण का पना उम  
 वान क लिए जाँ र करवायो और जब उम यम मानम का गया कि उमम  
 माता पिता भारतीय थ ता उसक प्रति मुल्लान का स्नेह उतन कम हा गया ।  
 इस मुल्लान क विषय म कहा जाता है कि उम सरकारी पद पर किसी भारतीय  
 मुसलमान का दाता सन्त नो कर सकता था । एक बार उमने अपन दर  
 बारिया का इमतिा बन्त युग मना कहा कि उल्लान जयराज जिन म ककर  
 क पद क निग एक भारतीय मुसलमान का इन किया था । इन्तुमिग क  
 विषय म भी कहा जाता है कि उल्लान भारतीय मुसलमानों म बहुत घृणा था ।  
 इस युग म इमांनहीन संघर्ष नो कबन एक तया यकिन था जा भारताय  
 मुसलमान हात हुए भी उच्च पद पर पहुँच गया किन्तु उल्लान म उम भी  
 अकारा तुकों क पदपत्र का निगार बनता पना । वरना न संघर्ष क परा  
 भव का जो कारण दिया है उतका गम्भीर मन्स्य है राज्य क अमीर तथा  
 नीरर मय शब्द तुकों रवन क थ और उच्च वण क साजिक थ । किन्तु इमांन  
 उदीन एव हिजरा और नपमक था उमक अनिरित्त वं विष्णुल्लान का  
 जानिया म म एक म उपम शशा था । फिर भी म्हा इन मय अमीरा एक  
 नामन करता था । व उम अक्षय्य म नग आ गय थ और अधिक समय तक  
 इन सहन नहा कर मकने थ । किन्तु चौदहवीं शताब्दी म विघति बन्त मयी

मंगला का गपलना का कारण मध्य एशिया से तुर्की का भारत में जाना था। हा गया इतिहास गलजा लामा का भारतीय मुगलमान का सन्तान का शानत का काम लाना हा अतम्भव हा गया। यहा कारण था कि अनाउहीन रसलजी न कुछ मट्टवपूण पना पर भारतमाय मुसलमाना को नियुक्त करन की नाति आरम्भ कर ना थी। किन्तु फाराज तुगलक व समय तत्र किता भारतमाय का एत पना पर नियुक्त नही किया गया जिमस वहा राज्य का नाति निर्धारित कर सकता। फाराज न पहला बार राजाजही का जा ब्राह्मण स मुसलमान हुआ था अपना प्रधानमंत्री नियुक्त किया। मुहम्मद बिन तुगलक और फीराज तथा प्रारम्भ से लेकर अत तत्र सन्तनत व सभा शासना का विदेशा अधिक पसन्द थ। किन्तु चौहवा शताब्दी व मध्य से भारतीय मुसलमाना का राज्य की नीबरिया व कुछ भाग मिनन गगा यद्यपि वह बहुत हा सीमित था।

दीपवान तब भारतीय मुसलमान की स्थिति बहुत ही दयनाय रही हागी। दश व शासन में उसका हाय नहा था और न शासक वग में ही उसका स्थान था। अपन बहुसंख्यक हिंदू देशवासिया से भी धन सामाजिक स्थिति तथा स्वाभिमान की दृष्टि से वह कहा अधिक नीचा था। उसका कवल यना सताय था कि मरा भी धम वही है जा शासक का और शुद्ध व तिन में भी उहा व साथ खटा हाकर मस्जिद में नमाज पना सकता हू। उसकी निरंतर यही इच्छा रहती थी कि विन्शी सहधमिया व साथ मरा समता का स्थान हा जोर उनकी शक्ति तथा धन में मुक्त भी हिस्सा मिन। अपन जीवन का महत्वाकांक्षा का पूरा करन व लिए उस अपन पूवजा का रहन महन तथा जीवन प्रणानी त्याग कर विदेशा डग तक अपनाता पडता था। यह भाव्य का हा कुटिन गति था कि इन कारणों से उसका अपन जीवित अथवा मृत्यु बहु बाधना से पूणतया सम्बन्ध विच्छेद हा गया था और अपना जन्मभूमि में ही वह परदशा बन गया था।

### मुस्लिम समाज में मुख्य वग

मुस्लिम समाज का काटिया में विभक्त था—तनवार व धनी तथा नखनी व धनी। पन्सी काटि में सनिक नाग सम्मिलित थ और उनमें से अधिकतर विन्शियो की सन्तान थ। व राजधानी तथा प्राता व सनिक सगठना में पनाधिकारिया अथवा सिपाहिया व पना पर काम करत थ। व खान मन्िक अमोर सिपहसानार सरखन जादि त्रगिया में विभक्त थ। इस धनी विभाजन में खान का सबसे ऊंचा जोर सरखेन का सबसे नीचा स्थान था। किन्तु एता प्रतात हाता है कि यह सगठन कवल कागज तक हा सीमित था। यव हार में वह प्रारम्भ से ही छिन्न भिन्न होन गगा था और १४वा तथा १५वी शताई दया तक उसका महत्त्व बहुत कुछ घट गया था। नखनी व धनी लोग

मम अधिकतर गर तुर्की विशेषी अथवा उनका वंशज थे। उनकी अत्यापन तथा धार्मिक सवाण उहा क हाया म था। उनम समय अधिक महत्वशाली बग धर्माधिकारिया का था जा उनमा कहनात थ। व मौनवो अध्यापक जीर बाजो हुआ करत थ। संस्कार तथा सामाज्य मुस्लिम जनता पर उनका काफी प्रभाव था।

मुस्लिम ममाज क सबसे नाच स्वर म शिल्पी सुरान्तार बनक तथा छोटे व्यापारी सम्मिलित थ। इन सम्पूर्ण युग म मुसलमान अधिकतर नगरा म ही बसते थ गाँवा म उनकी संख्या बहुत कम था। गुनामा का भी हम इसी कौटि म सम्मिलित कर सकते है और उस युग म उनकी संख्या भी बहुत ही बडा थी। प्रयेर शासक सामन्त तथा धनी व्यक्ति क पहली—जा क नौकरी करता हा और बाह्य पधमाय—जाक गुनाम होत थ उनम घरेलू स्वर करवायी जाती थी और उहेत म राजकीय कार्याना म काम करत थ। मुसलमाना म भिन्नारिया की बडी संख्या रही हागी क्याकि उहिदता को धार्मिकता का आधार माना जाता था।

उत्तमा

उत्तमा मे जीविकोपार्जन करने का न मुस्लिम वर्गो म सबसे अधिक प्रभाव शाली नाग धर्माधिकारी लोग र जा उनमा कहनात थ। व हा मुसलमाना क पारोरी थे। उनका समुदाय चतानगत तथा था और न उनम किसी तरह अथवा उश विरुध के ही नाग सम्मिलित थ। किन्तु उनम एसा मुसलमान शासक ना बाई रहा थे किमक भाना पिला नास्तीथ थ क्याकि उस युग म भारतीय मुसलमान धर्माधिकारिया क उच्च पर नहा पहुँच सकते थ। उस समय क बाबरू उनमा का एक मुसलमान ममाज था व अपन मन्त्र क नाताभाति समझा थ और अपन विद्याधिकारो क सम्बन्ध म बन्ध मचत थ। उश म जहाँ कहा भी मुसलमाना की कुछ संख्या होती वहाँ के पास जान थे और व्याय धम तथा नि हा सम्बन्धी नौकरिया पर उनका त्वाधिकार था। उनम म कुछ निजी तथा राजकीय शिक्षा-संस्थाओ म अध्यापका का पाय करत थ और कुछ न अपन मन्त्रमे स्थापित कर निय थ। उनम म अनेक कारिष मन्त्रानिव मुफती तथा बाजो थ और कुछ एम थ जा अपना शक्ति तथा समय धम प्रचार म समय बिता करत थ। इन युग क समस्त विद्यालय उमक ही उर्दी बरि मभी मारि मय कर्कि एकी समन्वित म सम्मिलित थ। मभी उनमा मुस्लिम धर्मशास्त्रा म पारंगत पाय जात थ। उनम म प्रदर का विशालस्त धार्मिक विषया पर फावा दर का अधिकार था।

तुर्की मन्तवता की स्थापना क समय म ही उनमा का बग अल्पित प्रभाव शाली था और गुनामा तथा उमने मन्त्रवतु बाजो विषया पर ही नहीं

यदि राजा की नीति व सम्बन्ध म भी उतना गलाह नी जाती थी । इमतिर धीर धीर उतरी स्थिति बहुत ही मन्स्वपूर्ण हा गयो थी । वे समझन नग थ वि धार्मिक अथवा धमनिरप । सभी विषया पर पूछ जान का म्पारा अधिकार हे । शिल्पा व प्रारम्भित मुल्तान ता नगभग पूणतया उन्ग व प्रभाव म थ । अताउद्दीन पहना मुल्तान था जिसन स्वतन्त्र नीति अपनायी और उनकी राय की उप ता की । उसन सुन रूप म धापणा की सि में इम बात की चिन्ना नग करना कि मरा जाघरण इस्लामी नियमा व अनुकून है अथवा नही में राय व हिता अथवा अवगर विषय व तिरा जा उचिन ममयता हू बही करता हू । किन्तु उसव उत्तराधिकारी उनन बठार तत्व व नहा बन थ जितना कि बह । इसतिर उहान सभी मन्स्वपूर्ण विषया पर उनमा की राय उन की पुरानी नीति पुन अपना ता । मुहम्मद तुगलक न अपने शासन व प्रारम्भिक वर्षों म इस वग व प्रभाव का कम करने का प्रयत्न किया किन्तु उनमा न उस इतना गताया और उसकी तनी निंदा की सि उम भी पराजय स्वीकार करनी पनी और अपन अतिम शिना म प्रायश्चित्त करना पन् । उसका उत्तराधिकारी फाराज तुगलक पूणरूप स उनमा की इच्छाआ का दास था और उनके परामश व बिना स्वतन्त्रतापूर्वक कुछ भी नही कर सकता था । मुल्ताना व मन्तिष्क पर उनमा का पूण प्रभुत्व था इसलिए एसा शक्तिशाली कोई मुल्तान नही हुआ जा उनकी सत्ता का पनीती द मवता ।

राय म उनमा का प्रभाव तथा राजनीतिक और शासन सम्बन्धी विषया म उनका इस्तक्षप अत्यधिक हानिकर सिद्ध हुआ । उनमा कितन ही विग्न रह हा व राजनीतिन जयवा शासक नही व । व सभी ममस्याआ की सकीण दृष्टिकाण म नेया करत थ इमतिर उनकी सत्ताह बहुधा शासका का बठिनाइया म फना शिया करती थी । धार्मिक विषया म भी उनमा का प्रभाव घानक था । उनने वग के नागा के विचार सकीण व वे काफिरा के विरुद्ध जिहाद का उपदेश किया करते थ । मूर्ति पूजा का मवनाश करना ही उनकी नीति नही था व इस्लाम के जातरिक भन्ग वा भी पूणतया नष्ट करना चाहत व । जब वभी बार् मुल्तान उनमा की सत्ताह के अनुसार काय करता तो उसे धार्मिक विषया म कट्टर हुना पन्ता तथा अपनी बहुसंख्यक प्रजा पर धार्मिक अत्याचार करन पन्ते व । इमम राय व विरुद्ध असन्ताप फटना तथा उमकी सत्ता की जच का खोसना होना अवश्यम्भावी था ।

### हिन्दुजा की शशा

दश की बहुसंख्यक जनता सिद्ध था । उन शिना उनकी सख्या ६५ प्रतिशत मे कम नग रग हागी । तुकों व आगमन स पन् व शासक तथा सम्पूर्ण देग

व स्वामिध और मानवतन युग म भी अत्रिका नूति पर का अधिभार रहा । तब स अनक धनी तथा समृद्धता मानव ध । शासन की निम्न शाखाएँ और विपणन राजस्व तथा वित्त विभाग उन्नी के न्याय म ध । मुन चौधरी तथा मुकद्दम सब हिन्दू ध । प्रमुख व्यापारी व्यवसायी तथा साधारण दुबानदार भी अधिकतर हिन्दू ही ध । माहूकारा तथा उन उन के पत्नी पर उनका लगभग एकाधिकार था । उस युग के अन्तिम प्रथा म मुल्तानी व्यापारियों तथा माहूकारा का भी अत्यन्त भिन्नता है कि वे उच्चकाष्ठ के सुकी अमाग तथा मानवता को भाग्यसा उधार लिया करते थे । मनाआ के साथ हिन्दू बजार चला करते थे । उस युग म रमन का समुचित प्रबंध नहा था अन्तिम यह बगानुगत बजारों ही सनिका का रमन पहुँचाया करते थे । अन्तिम का एक बहसम्पन्न बग कृषि म ही जीविकापाजन किया करता था । जनर हिन्दू अध्यापन चिक्किता अन्तिम भी करते हाग । ब्राह्मण नाग सामाज्यनया अध्ययन तथा धार्मिक कृत्या म अपना समय बिताने हाग ।

इस काल म सुकी शासन मात्र तीन सौ वर्षों म भा कुल अधिक चला । इन बीच म विजय तथा दमन का प्रक्रिया भा जारी गी इसविण इस युग म नागा हिन्दू मारे गये । नागा का युद्ध म मन्तर हुआ और नागा मित्रया तथा बच्चे मुनमान बनाने दामा के रूप म बच लिये गये । उन्नी के विना निमूर न मुन्मन्त तुगलक म मुन्त करन के पूर्व एक दिन म हा एव नाग हिन्दू अन्तिया को बरल करवा लिया । इमार दश के अन्तिहास के विषयी भी युग म—प्राग्भिन्न अथवा परवर्ती ब्रिटिश युग म भी नहा—मानव जावन का अन्तना नृगमनापूण नाग नहा किया गया जितना कि तुर्क-अफगान शासन के काल २५० वर्षों म । उच्च तथा मध्य धरिया के अन्तिम का मन्तर तथा अगन्तिक गरवारी नोकरिया म बचित कर लिया गया था । इनम समाज म एका अन्तिम हा गयी और अगणित परिवारों का कष्ट नागन पड हाग । इस युग म हिन्दू जनता का राजनीतिक तथा सामाजिक दृष्टि से उन्नी युग उन्नी पड । उन्नी शासन मन्त्रिया मून्तारा तथा मनापतिया के मन्तवपूण पन्ना म हा बना बचित किया गया अन्तिम उनक साथ पन्नापूण व्यवहार ही किया गया । सुकी मुन्तान तथा उनक प्रमुग अनुयायी समृद्ध हिन्दू परिवारों स अपन नियम पतिया प्राप्त करने के इच्छुक रन्त ध और इन इन्तु वे उच्च मानवता का अन्तना मन्त्रिया के पन्त विवग करते ध । मुन्तम बानून के अनुगार रन्त हिन्दू मन्त्रिया का पन्त अपन धर्म म बचित करके मुनमान बना लिया जाता और तब उनक साथ विवाह किया जाता था । तब सब के कारण मन्तान लिये अन्तिम का निम्न अगमानिज जाना पन्ना था और अन्तिम अगनी पन्नाजय तथा अन्तन के कारण नही अन्तिम वागव म वे विवगम बनने मग ध हिन्तवागव मन्तानि धर्म

तरस और विगपान् आचरण की शुद्धता नतिता और रत्न सन् की दृष्टि में हम में बहुत तीव्र है। विजयानन्द ने उच्च राजनीतिक अथवा आर्थिक बल पर ध्यान उठाया जाता है और बन्ना नया दुई जिनकी निम्नमान जनता व्यवहार धार्मिक ज्ञानात्मा और पारिवारिक सम्मान पर जाघात कारण हुई।

हिन्दू समाज जाति-व्यवस्था पर आधारित था। तुर्क शासन ने हिन्दुओं को अपना जाति सम्बन्धी नियम पढ़ने से भी अधिक जटिल बनाने पर बाध्य किया। तुर्कों को मुस्लिम हिन्दू परिवारों को अपनी पत्नियों बनाने का शौक था। इस कारण हिन्दुओं में बान विवाह का सामान्य नियम बन गया। उच्च तथा मध्य वर्गों में पार्ष्ण भी प्रचलित हो गयी। उम युग में नीची जातियों को छोड़कर अन्य लोग में से विधवा विवाह का विचार ही जाता रहा था। ऐसा प्रतीत होता है कि समृद्ध परिवारों को छोड़कर माधारण हिन्दुओं में स्त्री शिक्षा का पूण जभाव था किन्तु पढ़ना के लिए प्रारम्भिक शिक्षा का सबसे प्रचार था। प्रत्येक गाँव में एक पाठशाला होती थी जहाँ पढ़ने विद्यन तथा गणित की शिक्षा दी जाती थी। किसी प्रकार के सनिक शिक्षण का भी प्रचार रना होगा। तुर्कों सरकार के लिए सम्पूर्ण हिन्दू जनता का निशस्त्रीकरण करना असम्भव था इसलिए हिन्दू लोग अपने गाँवों की रक्षा का सम्पत्तापूर्वक प्रबन्ध करते थे। हिन्दुओं का अपने धर्म में विश्वास अनुराग था। उनमें से मुश्किल लोग एकेश्वरवादी विश्वास करते थे किन्तु बहुमूर्त्यक जनता मूर्ति-पूजा करती थी। लोग गूढ विश्वासों में फसे हुए थे। फलित ज्योतिष सामुहिक तथा जादू टोना में उनकी आस्था थी। उनका नतिक तथा यानि-जीवन उच्चकोटि का था। ऋण का लोग अतिबाध रूप में जना करते थे। यदि ऋणी स्वयं उसे जना न कर पाता था तो उसके पुत्र तथा पौत्र यात्र मन्त्रित उसका भुगतान करना अपना कर्तव्य समझते थे। सामान्य रूप में यकिनगत र्मात्कारी तथा आचरण की शद्धता का स्तर बहुत ऊँचा था।

पिछले कुछ दिनों से हमारे आधुनिक जगत् में यत् मिद्ध करने का एक पणन में चला पडा है कि तुर्की शासन के अन्तगत हिन्दुओं की रक्षा जड़ी थी। एक जगत् ने तो यनी तक कह दिया है कि तुर्की शासन में वे ऐसी राजाओं के शासनवादी में भी अधिन सुयी थे। हम नये सिद्धांत के समर्थन में कुछ अभिन्न सम्बन्धी साक्ष्य प्रस्तुत किया जाता है जिसकी प्रामाणिकता सन्निध है। यदि जहा तर्कों एक ही उस हिन्दुओं का उच्चारण मिनता है जिनका किमी विश्वास तुर्की शासन के सम्बन्ध में अच्छी राय थी तो मुसलमान

सेवकों के दो नये प्रकारों का उद्घाटन किया जा सकत है जिनके  
 हिस्सा के प्रति कि... नया धार्मिक अन्वेषण का प्रमाण  
 निरता है। इन प्रकारों पर सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाता है कि तुर्कों  
 शासन के उन्नात सिद्धियों के कि नकारा जा रहा है कि वाज...  
 और उनमें से कुछ का काना खूब पना पर देखें... किन्तु उन युवा के  
 त्यों का सम्हाल करन पर एक भाग उन सिद्धों का उद्घाटन त्यों मिलता जिन  
 मूल्य पर मंत्री नबिब जिनाया प्रपवा पाना के प्रयत्न के पर पर भी  
 निरत किया गया था। सिद्धों में चाधरी जी मुकम्मल न्यानाय धरमा म  
 बमानुष राजस्व उद्घाटितारी म और उनक मन्दाय के बिना शासन का बाय  
 पाना था अस्मभव था। नै प्राधुनिक व्यवस्था न उन्ना विचारा वात मुहम्मद  
 बिन ताउक के शासन का पूणपर न वाच का है किन्तु व रतन को छाबर  
 अथ एक भाग उन सिद्धों का उद्घाटन नहा नद मर है जिन उस मुन्नाय के  
 समय म का महत्वपूर्ण पर मिता था। कबल एक हिन्दू पनाधिकारा का  
 नियुक्ति का भी जा परिणाम था। उनम शासक वग नया सम्पूर्ण मुस्लिम  
 बनता था मन्दायना और जमनाया पर हा प्रकार पन्ना है शासन-अवस्था  
 का उद्घाटन सिद्ध नया पाना। रतन का सिद्ध का राजस्व पनाधिकारा नियुक्त  
 किया गया था न कि मूल्य पर नया कि हाकर महनीहुमन न सिद्ध करन का  
 प्रयत्न किया है। उनका नियुक्ति न प्रान्त की उद्घाटन मुस्लिम जनता का भाव  
 नाशा का भागी चाहे पढ़ना। उनम जा प्रमुद थ उहाने रतन के विरुद्ध  
 परपत्र रवा और उनका वय रवा किया। सम्पूर्ण सन्ततन-मुग म सिद्धयान  
 हा पन्ना नया अन्तिम सिद्धों का जिन सिद्धों दरबार म स्थान मिल गया।  
 पर भी उन्नाय महत्वपूर्ण स्थान नहा प्रान्त कर गया कि दरबार सिद्धों शासना  
 का आशय उन की नीति म विश्वास करना था बकि उन्नाय कि उनका अन्तिम  
 बना हा था जगा कि तुर्कों अमीरा और विवापरर बडीर का जा एक एक  
 मिल की मात्र म था जा मुन्नाय का वय करन म उनका सहायता म करना।  
 एक अन्तिम उन्नाय का पर भी वाज... था कि उन सिद्धों महानत अपनी  
 अन्तिम मीने भर गया था। रतन नया तुगतर शासना के समय म दरबार  
 म सिद्धों हिन्दू के लिए धनुष रणी का पर भी प्राप्त करन की वाज... ना  
 नहीं की जा सकती थी। मुन्नाय की मनाया म हिन्दुओं का मनिका प्रपवा  
 निरत पनाधिकारिया के पर पर नियुक्त किया जाता था का उद्घाटन महत्व  
 पर रतन वाज... अन्तिम म मनिका की नीति उह ना निराय के  
 उद्घाटन के पर म भर्ती किया जाता पर जोर पर परिणाम सम्पूर्ण करनवा के  
 समय म चली आयी थी। यदि... का अधिकार म हिन्दुओं के अधिकार म  
 था नै हमम भा उन्नाय शासना का उद्घाटन नया सिद्ध हाता म मन्दाय



म ये विवक्षित थे। मध्य-युग म कान् भी गम्वार घाट वह जितनी भी बलवती हाती हिन्दुआ जस शक्तिशाली तथा गृह जनममुत्थाय को भूमि म वचन करन म गपन गही हा सकती थी। हमारे पूवजा का दृढ विश्वास इम मध्ययुगीन लाषाकित स स्पष्ट प्रतिबिम्बित जाना है भूमि कोर कानीन नही है जिम काइ किन्ही अपवा मुल्तान गमन ने जीर अपन कथे पर गपन न जा सक। यह एग स्थानीय बात है कि अधिखतर मुस्लिम नगर नश की जनता को जिदशी तुर्की शासन क अन्तगत जो कष्ट नग जीर उमर प्रति उनकी जा भावनाए थी उह समयन म अममय है। जिसने पर म विभाई नही फन्ती वह पराई पीर को बग ममस सवना है। ममकानीन अनाट्य सादय क अति रिक्त सबडा बप से ऐसी अविश्वस्य परम्पराए चनी जायी है जिनसे प्रमाणित होता है कि तुर्की शासन अत्याचारपूण था। प्रकृति के कोष के कारण जब जनता के सिर कोई विपत्ति आ टूटती है ता हिन्दू लोग वेचना से चिल्लाने लगते हैं ईश्वर तथा तुम नोना हमार पीछे पड हैं इन भावनाओ को सरलता म समया जा मरता है कयाकि धम तथा पारिवारिक सम्मान यही मनुष्य की दो बहुमूल्य तिधियां हैं और तुर्की शासन म इनम से एक भी सुरक्षित नही थी। अनेक बप हुए नगक को कई अवसर ऐमे मिन थ जब उसने ग्रामीण जनता का तुर्की तथा अग्रजी शासन की तुनना करन हण सुना। उनके मत म अग्रजी शासन इमलिए बुरा था कि वह जनता का आर्थिक शोषण करता था किन्तु तुर्की शासन उसस भी अधि बुरा था कयोकि वह धम और सम्मान पर आक्रमण करता था।

### आर्थिक नशा

मध्य युग म हमारा देश अनुच धन सम्पत्ति के लिए विख्यात था। हमारे अपार धन की कल्पनिया मे नाशयित होखर ही महमूत गजनवी तथा उसके लुटरे अनुयायियो के झुञ्झ ने हमारे राज्या की वभवशाती राजधानिया पर आक्रमण किया और मन्दिरा को नूटा। मुहम्मद बिन कासिम को मिथ म जीर महमूत गजनवी को हिन्दुस्तान नाम म सोना चानी अनेक प्रकार के बहुमूल्य रत्ना सिक्का तथा अय प्रकार के सामान के रूप म जो करोना हपये के मृत्यु का मान नूट म मित्ता उसका वणन तत्कालीन राजको ने किया है उसस मरतना म विश्वास हो जाता है कि देश के वभव की कल्पनिया कवा कल्पना की उपज नहा थी वलिन उनका आधार वास्तविकता थी। प्रारम्भिक तुक आक्रमणकारी हमारे देश क धन को पूणरूप म बढोर ने जान म गपन गही हण थे। उत्पादन क साधना का मूनाद्धेदन करना उनकी सामर्थ्य के बाहर था। उसका मरम बना प्रमाण यह है कि दिल्ली मुल्ताना का उत्तरी

इस स्थिति में भारत के आर्थिक जीवन में अपार घन वृद्धि में मिला। युद्ध के उपरान्त  
 प्रजातन्त्र व्यवस्था और परिवार तथा महंगा के ठाट वोट पर धन पाना की  
 रीति बढाया। फिर भी भारत में इतना धन बच रहा कि चीन्हा आदि  
 देशों में निर्यात देना के बचन एक बान में खारा नहीं बचि जाया का  
 सामान उपकरण गया। इसलिए यह निर्विवाद सत्य है कि तुम अफगान युग  
 में हजारों अर्थव्यवस्था दृष्टि में समृद्ध था।

हमारे देश की सभ्यता का मुख्य साधन कृषि था। अधिकांश भाग में  
 भूमि का प्राकृतिक उपकरण गया था जयन्त प्राचीनकाल में चला आ  
 रही विचारों की सुविधाएँ जिन्हें फारस तुर्क न जोर भी अधिक समुद्र  
 बना दिया था तथा विमानों की पर्यटनशासना—इन सब कारणों से देश में  
 उत्तम उत्पन्न होता था कि उसमें समस्त जनता की आवश्यकताएँ भी पूरी  
 पूरी हो जाती थी बल्कि बाहर के देशों को भी उमका नियत होता था।  
 इस प्रकार निरन्तर अफीम आदि उत्तम फसलों के बड़े पैमाने पर उत्पादन की जाती  
 थी। देश के विभिन्न भागों में विभिन्न प्रकार के फल उपलब्ध हो जाते थे।  
 यह सब अर्थात् म उन्नत कर जाय है कि फीरोज़ तुगलक के राजस्व का  
 एक बड़ा भाग बागों से आता था। यद्यपि अधिकांश जनता के जीविकोपार्जन  
 का साधन कृषि थी किन्तु नगरों तथा ग्रामीण क्षेत्रों में अनेक महत्त्वपूर्ण  
 उद्योगों की चलत थी। तुर्कों के आगमन से शताब्दियों पूर्व औद्योगिक दृष्टि  
 में हजारों अर्थव्यवस्था सुसंगठित था। गाँवों तथा नगरों में अनेक शिल्प-मय थे जो  
 विस्तृत रूप से व्यापार किया करते थे। यद्यपि इन औद्योगिक मस्याओं का  
 राज्य की सहायता नहीं प्राप्त थी फिर भी बाह्य आक्रमणों तथा आन्तरिक  
 शान्ति के अभावों को महती हर्ष के जीवन रही। उद्योगों का प्रकार के  
 थे—एक के जिन्हें सहाय्य प्राप्त था जोर दूसरे के जिन पर व्यक्तियों का  
 निजी स्वामित्व था। निजी में सुनाता के अनेक कारखाने होते थे जिनमें  
 रेशम तथा अन्य प्रकार के कपड़े बुनने वाले महत्त्वपूर्ण कारखाने होते थे।  
 इन कारखानों का सम्मानपूर्वक धरत बनाने के लिए हजारों गज रेशमी  
 तथा सूती कपड़े तैयार किया जाता था। माना चीनी तथा कमीना आदि के  
 नाम के लिए अन्य कई प्रकार के कारखाने होते थे। निजी उद्योगों में सूती  
 कपड़े तथा रेशमी कपड़े रेशम रेशम की रेशमों का धातु कागज कागज कागज  
 इन पेशेवारी कर्म करने आदि के अनेक महत्त्वपूर्ण थे। इन अति  
 शक्तिशाली अर्थव्यवस्था काय पीतल तथा अन्य धातुओं के कर्मियों के अर्थ  
 प्राप्त थे। धरत उद्योगों का देश के सभी शान्ति में प्रचार था  
 किन्तु कपड़े के उत्पादन तथा निर्यात के लिए बंगाल और गुजरात विशेष रूप  
 में प्रसिद्ध थे।

यद्यपि तुर्क अफगान युग में राज्य देश की जनता की आर्थिक अभिवृद्धि की दृष्टि से व्यापार अथवा नीति का अनुसरण नहीं करता था फिर भी हमारा देशवामी घरेलू पंजी पर बाह्य तथा आन्तरिक व्यापार किया करते थे। भारत का बाह्य जगत में घनिष्ठ व्यापारिक सम्बन्ध था। वृषि की उपज सूती तथा रेशमी वस्त्र अफीम नील जस्ता जाम्बूग विदेशों का भजी जाता जोर छोड़े गन्धक तथा राजपरिवार और सामन्तों की विभिन्न वस्तुएं बाहर से मंगायी जाती थी। यह स्पष्ट है कि देश का निर्यात जायान में अधिक था और व्यापार का संतुलन मन्व्य हमारे ही पक्ष में रहता था। इससे नोका का सामान्य विश्वास था कि सभी देशों का व्यापारी भारत में निरन्तर शुद्ध मोना न जान और वहाँ से जड़ी बूटियाँ जोर गाँव का सामान ले आता है। इस युग में हमारा चीन मनाया शीपमसूह तथा प्रशांत महासागर के अन्तर्देशों में व्यापारिक सम्बन्ध था और समुद्री नोका द्वारा ये हमारे देश से सम्बद्ध थे। भूटान तिब्बत अफगानिस्तान इरान तथा मध्य एशिया के अन्तर्देशों के साथ हमारा व्यापार स्थानमार्गों में होता था।

किन्तु हमारा देश में धन के वितरण में बहुत विषमता थी। वास्तव में वह कुछ अल्पसंख्यक लोगों के हाथों में ही केंद्रित था। मुल्तान उनके सामन्त तथा उच्च पदाधिकारी अत्यधिक धनी थे और यही दशा हिंदू राजाओं सामन्तों तथा चाटी के व्यापारियों और साहूकारों की थी। हम पढ़ते देख चुके हैं कि सल्तनत युग में उच्च सैनिक तथा असैनिक पदाधिकारियों के वेतन बहुत भारी थे। पदाधिकारी तथा सामन्त विधान प्रासादों में रहते अनेक दाम्पत्यसिंहासन उनकी सेवा करती तथा वे बिलास और वभव का जीवन बिताते थे। मन्व्य-वर्ग भी जिसमें विभिन्न पेशा के लोग बल्क तथा व्यापारी सम्मिलित थे काफी सम्पन्न था। किन्तु देश की बहुसंख्यक सामान्य जनता दरिद्र थी और अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए भी उसके पास पर्याप्त साधन नहीं थे। पिछले अध्याय में हम लिख आये हैं कि किमाना के पास भूमि की उपज का बचन एक तिहाई भाग बच पाता था। राजकर का भारी बोझ उन्हीं पर पड़ता था। किन्तु ऐसा प्रतीत होता है कि साधारण समय में उन्हें भुला नहीं मरना पड़ता था। उनकी आवश्यकताएँ कम थी—उससे भी कम जो आज के किसानों की है—और उनके व्यवहार की वस्तुएँ मन्ती थी। किन्तु जब अनावृष्टि अथवा अन्य किसी प्राकृतिक विपत्ति अथवा मुद्दा में फँसना नष्ट होना के कारण दुर्भिक्ष पड़ जाता तब सचमुच जोर कभी-कभी हजारों की मध्या में साधारण लोग मर जाते थे। इस युग में दुर्भिक्ष अवश्य पड़ते थे—एक जनानुद्दीन फीरोज गजनवी के समय में जब सबका लोग यमुना में डूबकर मर गये और दूसरा मुहम्मद

बिन तुगलक व समय म जा बहुत हा भयकर था और जिसम मानव जावन का बहुत सत्यानाश हुआ ।

यातायात व साधना का कठिना व कारण दश व विभिन्न भागा म वस्तुजा व मूल्य एतम नहा थ और न इस बात का हा ज्ञासा करना चाणिए कि क्स सम्पूर्ण युग म एतम रह हांग । साधारण समय म वस्तुए सम्भा रहती था किन्तु दुर्भिक्ष तथा अभाव व समय म उनक मूल्य म असाधारण वद्धि हा जासा करता थी । उदाहरण क लिए मुस्लिम बिन तुगलक व समय म जब दुर्भिक्ष पडा ता एक सर अन का भाव मानह-मत्रह जानन तक पच गमा । इसा प्रकार युद्ध व समय म बीजा का कामत बट जाया करता था । जब पाराक तुगलक न दूसरी बार सिंध पर आक्रमण किया ता उस प्रण म एक मर अन्न का मूय आठ स दम जातल तक पढच गमा । अनाउदान खनजा क गामनकाल म दलिक व्यवहार का अधिकतर वस्तुजा का जा मूय था वह एक समयमा जाना था । उम युग म गड जाधा जानन जो चार जातल चावल पांच जातल दान पांच जातल मफ्ट शकरर गी जातल बच्चा गांट छट जीतल तिलहन और मास न जातल तथा धा सातह जातल प्रति मन का र म बिकता था । विभिन्न प्रकार क वस्त्रा क मूय इस प्रकार प— श्लिना का मतमन सत्रह टका तथा अनागढ का छह टका प्रति धान का दर म बिकती था एक बढिया कम्बन का मूय छतास जातल तथा घटिया का छट जीतल हुआ करता था । मिक्कर लाग का शासनकाल क अन्तिम वर्षी तथा इराहीम क सम्पूर्ण शासनकाल म वस्तुजा क मूय रिसाव तीर म कम रन । इराहीम क समय म कोई यकिन एक बहनाली म नस मन जल पांच मरतन थीर दस मज माग कपडा सराद सक्ता था । बहनाला नाम का मिक्का यहलाउ लाग न जारी किया था और उसका मूल्य बजल छह जातल था । दलिक व्यवहार की वस्तुए इतना मस्ता और कहा नहीं था तिनती कि बगाल म इगलिए तुक लाग उस मुत्तर वस्तुजा म परिपूर्ण नरक कहा करत थ ।

महाप म भारतीय तथा विश्वा सभा तत्काउल सक्का क प्रथा म इस युग का मामाय समृद्धि प्रमाणित हाती है । विश्वा पयटका म मार्कोपोला जियन १२८८ ई तथा १२९३ ई म दलिया भारत का यात्रा का इन्जुतूना जियन १२९४ ई तथा १२९२ ई क बाच नग क अनक नागा का अमल किया और चाना यात्री मातुआ जियन १४०६ ई म बगाल का पयटन किया विषय रूप स उत्तमगीय है क्यकि इन सबन नग का जा यणन छाग है उसम सिद्ध हाता है कि आधिक तथा औद्योगिक ज्ञाना दृष्टि स भारत ममृष्ट था और वही जावन की आवश्यकता का सभी कर्तुण प्रचुर मात्रा म उपलब्ध था ।

## साहित्य

## फारसी साहित्य

अभी पिछले वर्षों में एक आधुनिक लेखक ने हिन्दी गलतनीयता का पता चकर यह दावा प्रस्तुत किया है कि वह एक सस्कृति सम्पन्न राज्य था। इसका विपरीत अर्थ इतिहासकारों का मत है कि १२०६ ई. से १५२६ ई. तक का युग सांस्कृतिक तथा साहित्यिक दृष्टि से पूणतया निष्फल था। जना ही मत अतिवादी विचारों का प्रतीक है और सत्य से दूर है। जो राज्य साम्प्रदायिक था जो नग्न पशु बस पर अवलम्बित था जिसका कमचारी नगभग सभी विदेशी थे जिसकी भाषा सस्कृति आदेश और यहाँ तक कि प्रेरणा भी विदेशी थी और जिसने इस देश की तथा ६५ प्रतिशत जनता की भाषा सस्कृति और आदेशों की उपेक्षा तथा दमन किया उस सस्कृति सम्पन्न राज्य कहना एक ऐसा दावा है जिस पर सत्यता से विश्वास नहीं किया जा सकता। सस्कृति तथा धार्मिक कट्टरता का समागम नहीं हो सकता। इसके विपरीत यह साचना भी अयायपूर्ण होगा कि हिन्दी सुल्तान अहमद सन्निकथ और साहित्य काव्य तथा कलाओं में उच्च स्थिति ही नहीं थी। तुर्क अफगान शासक यद्यपि मूलतः सन्निकथ थे फिर भी उन्होंने इस्लामी विद्याओं और कलाओं को आश्रय तथा प्रास्ताहन दिया। कुतुबुद्दीन से लेकर सिक्न्दर लोदी तक प्रत्येक सुल्तान के दरबार में फारसी लेखकों का बड़ा दायित्व न्यायिक शास्त्रज्ञों तथा विधिविज्ञान का जमाव रहता था। कुछ सुल्तानों के दरबार में इतिहासकार भी रहते थे। इस कोटि में ताजुल मासिर के लेखक हसन निजामी तबकात नासिरी के रचयिता मिनहाजुद्दीन सिराज ताराख फाराजशाही तथा फतवाए जहाँगरी के लेखक जिमाउद्दीन बरनी तारीख फीराजशाही के लेखक शम्सिराज अफीफ तारीख मुबारकशाही (दक्खिन) के रचयिता यहिया बिन अहमद सरहिन्दी तथा फुतुह उस सलातीन के लेखक इमामी के नाम सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं। इनके अतिरिक्त अहमद एतिहासिक ग्रन्थों के रचयिता अमीर खुसरव तथा एन उन मुल्क मुल्तानी भी अधिक उत्तम लेखनीय हैं। इस युग के अनेक कवियों तथा शास्त्रज्ञों के नाम गिनाना अनावश्यक है। इनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध अमीर खुसरव तथा अमीर हसन देहलवी थे। अमीर खुसरव का मूल नाम मुहम्मद हसन था और उसका जन्म १२५ ई. में पटियाना में हुआ था। उसका पिता एक तुर्क शरणार्थी था जिसने कुछ वर्ष पहले वहाँ आकर शरण ली थी। अमीर खुसरव ने बलवन के यथेष्ट पुत्र युवराज मुहम्मदखान के यहाँ दरबारी कवि के रूप में नौकरी करनी थी और उसके बाद लगातार बलवन से लेकर गियासुद्दीन तुगलक तक हिन्दी सुल्तानों का सेवा का। आप चलकर उसने सत्तर से बराह तक लिखा और शक निजामुद्दीन

ओलिया का शिष्य हा गया। वह एक मफ्त लखक था और कहा जाता है कि उमन चार लाख से अधिक छन्द लिखे थे। यह निर्विवाद सत्य है कि वह फारसी में लिखने वाले भारतीय कविता में सर्वश्रेष्ठ था। उमन जतन गद्य ग्रन्थों की रचना का जिनमें सबसे अधिक प्रसिद्ध राजा गुलफतूह तुगलकनामा तथा तारीख अल्ताई हैं। वह पहला मुसलमान लखक था जिसने हिन्दी शब्दावली तथा भारतीय अलफाबी और त्रिपय वस्तु का प्रयोग किया। दुर्भाग्यवश परवर्ती लखकों ने उसका अनुसरण नहीं किया और जानबूझकर विदेशी शब्दावली, अलफाबी तथा विषय-वस्तु से विपट रहे। अमीर हसन दहलवी का पूरा नाम नाजिमुद्दीन हसन था। सुमरव की भाँति वह याग्य तथा प्रतिभाशाली कवि था जो दीक्षतावान् जाकर बस गया और वहाँ १३२८ ई. में उसका दहावसान हुआ। प्राचीन दरबारों में भी कवि तथा विद्वान रहते थे जिन्होंने फारसी में प्रचुर साहित्य की रचना की। इस युग के लखकों का अरब तथा फारसी से प्रेरणा मिलती थी और अर्धे हाँकर वे विदेशी लखकों का अनुसरण करते थे। महान कवि अमीर सुमरव ने जो याग्य लिखाया उसका उद्धान त्याग किया और 'मनुष्य' प्रणाली का अनुसरण करते हुए जानबूझकर भारतीय शब्दावली का अपनी रचनाओं में यहिष्ठित किया। भारतीय विषयों भारतीय अलफाबी भारतीय महापुराण पद्यता तथा नर्तिका सभा का निषेध था। यह प्रकार हम देखते हैं कि यद्यपि सल्तान याग साहित्य तथा कला के प्रभाव के विन्दु उद्धाने एक सामित प्रकार की सस्कृति को आश्रय दिया। इमके अनिर्विन सभा सास्कृतिक काम दरबार तथा अमीरों तक ही सीमित थे जिनसे स उनका बाह सम्पर्क नहीं था।

यद्यपि इल्हा सुल्तान जनता की शिक्षा का प्रबन्ध करता अपना काव्य नहीं समझते थे, फिर भी उद्धान अपनी मुस्लिम प्रजा की रक्षा के लिए स्कूल तथा मन्दिर (उच्च-यायानय) स्थापित करने में रचित निर्यायी। यह एक नियम था कि प्रत्येक मस्जिद से एक मस्जिद सम्बद्ध रहता था जहाँ युवानों की शिक्षा के अनिर्विन फारसी भाषा का निगमन तथा पढ़ना गिराया जाता था। मन्दिर इल्हा आगरा जालंधर पाराणावा आदि महत्त्वपूर्ण नगरों में स्थित थे और याग में प्राचीन राजवंशों का राजधानियों में भी स्थापित किए गए। उनमें उच्च साहित्य काव्य साधना दान तथा अन्य विद्याओं की शिक्षा भी जाती थी। मुख्य शिक्षा-केंद्रों में अनेक पुस्तकालय भी स्थापित किए गए थे जिनमें इल्हा का शाही पुस्तकालय सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण था। जयानुद्दान राजाजी ने अमीर सुमरव का उमका पुस्तकालय निरुद्ध किया था। जब मंगला के दबाय के कारण मध्य एशिया से विद्वान भाँकर इल्हा में लखक हुए तो वह नगर पुरय में इस्लामी विद्याओं का अनुपम केंद्र बन गया।

वहूँ कम मुमलमात गस्का पढ़न का लुट करी व । अनवगना व बा  
हम रिगी एग प्रसिद्ध मुगलमात का नाम रही मिनता जिगना सम्बन्ध सम्बन्ध  
गि ता स रहा हा । पीरोन मुगलन तथा गिगलर लानी जाति दा एक गल्लाना  
न ससृत्त व कुछ प्र वा ता पारंगी म अनुवात् कराया तित्तु एमन यह  
समयना गत हागा ति व सन्तात ससृत्त गाहित्य तथा ससृत्त व लगका व  
आश्रयताा थ । गिन पुगना का अनुवात् कराया गया उनका यावहारिक  
मूल्य था । हम एगा र्क प्रमाण तग मिनता जिगम मिद्ध हा मक् वि  
श्लिनी व रिगा भी गतान व दरवार म र्क सम्बन्ध वा विज्ञान रहना था ।  
प्राताय शासका न विगपकर वमान म ससृत्त ग्रथा व अनुवाद-काय का  
प्राग्गाह्य किया ।

ससृत्त तथा हिंदी साहित्य

हिंदुआ व मासृत्तिकाय हि दू राजाजा व दरबारा तथा हमार मुख्य  
विद्या व द्रा और तीथस्थाना तक ही सामित थ । उचन पुयन तथा सकटा  
व उस युग म जबकि हिंदुआ का रायाश्रय उपनध नहा था यह स्वाभाविक  
ही था कि थ कोर् एगा महान तथा अमर साहित्यिक कृति उत्पन्न न कर सकें  
जिसकी तुलना बानिदास भवभूति बाण तुनसी और सूर की रचनाआ स  
की जा सकती । फिर भी यह समयना गतत होगा कि तुकों की विजय व  
कारण हिंदुआ का मस्तिष्क निष्क्रिय हा गया वा और उनकी मृजनात्मक  
प्रतिभा सा गयी थी । सम्बृति तथा कला क क्षेत्र म हिंदुआ न तुकों की श्रष्टता  
कभी स्वीकार नहीं की । तुकों की विजय स मस्तिष्क पर जा सकुचित करन  
वाना प्रभाव पना उसकी चिंता न करत हुए वे साहित्य सवा म तग रह ।  
इसके परिणामस्वरूप प्रचुर मात्रा म धार्मिक तथा दाशनिक साहित्य की रचना  
हुन यद्यपि बह बहून उच्चकाटि का नहा थी । रामानुज न ब्रह्म सूत्रा पर  
टाकाए निरसा । पाथसारथी न कम मीमासा पर अनक ग्रथ रचे । शास्त्र  
दीपक नम सबस अधिक महत्वपूर्ण था । १२वा शताब्दी म जयदेव न प्रसिद्ध  
गीतगाविद की रचना की । हरकति नाटक नलित विग्रहराज नाटक प्रसन  
राघव (जयदेव द्वारा रचित १२०६ क लगभग) हम्मीर मन् मन्  
(जयसिंह सूरि द्वारा रचित १२१६ १२२६ इ) प्रद्युम्नाभ्युदय (रविवमन)  
प्रनापर कल्याण (विद्यनाथ) पावती परिणय (वामनभट्ट बाण) गगनास  
प्रताप विनास (गगाधर) विदाध माधव तथा ननित माधव (रूप गास्वामा)  
जाति अनेक सुन्दर नाटक एस युग म निर्य गय । हिंदुआ व प्रसिद्ध कानून  
ग्रथ मिताधरा की रचना विनाजयवर न एसी युग म की । इसी विषय वा  
अन्य महत्वपूर्ण ग्रथ दयाभाग भी जीमूतबाहन द्वारा निरता गया । ज्यातिप  
व प्रकाण्ड पण्डित भास्कराचार्य इसी युग म हुए । माण वशपिक तथा याय

नामा पर भा अनक टीकाए रचा गया । हनुविद्या का उत्पन्न हुआ और हम विषय पर जन तथा बौद्ध लक्षका न अनक ग्रन्थ विद्य । स्वसूत्रा हम युग का महानतम जन नयायिक था । जनक धर्म-मुधारक भा एक अतिव ज्ञानालन भा हम कान का हा मुख्य उपज था । विजयनगर मयाता न मस्तिन साहित्य का बन्त प्रामाण्य दिया । उनक साम्राज्य म अनक प्रसिद्ध विज्ञान विद्वान बरत थ । बन्त क टाकाकार मायण जनम म मया अतिव मन्त्रज्ञानी थ । मस्तिन साहित्य क प्रत्येक रूप का उत्पन्न हुआ किन्तु एनिहामिन् रचनाभा का जोर ध्यान नया दिया गया । कल्या की राजतरंगिणी या एक एसा रचना ह जिम एनिहाम ग्रन्थ कहा जा सकता है । एमका रचना १२वां शताब्दी क मध्य म कभा हूँ होगा ।

हम युग म साहित्य-साहित्य का भा विकास जान नया । साहित्य क प्रारम्भक लक्षका म पृथ्वीराज क दरबारा कवि चन्द्रबरदाई अधिक प्रसिद्ध थ । एहान पृथ्वीराजगमा नामक महाकाव्य का रचना की । माग्गधर दूमर प्रसिद्ध कवि हए जिहाने रणरम्भौर क राणा हम्मर क मन्वय म हम्मररासा तथा हम्मर काव्य नामक या का यन्वय विद्य । जगनक न जाह्मण नामक बृहत् काव्य रचा जिमम महाकाव्य क चन्द्र नरक परमर्षीत्व क ज्ञान तथा उन्नत नामक या महान याद्धाजा क वाग्जापूण कायों का आजपूण भाषा म बान है । कुछ जागचका का मत है कि अमीर गुमरक हिन्दी न भा कवि थ । हम युग म साहित्य-साहित्य का भा महान उत्पन्न हुआ । हम भाषा क एक महानतम लक्षक विद्यापति गकुर १४वीं शताब्दी क अन्त म हए । उहान भा साहित्य हिन्दी तथा मस्तिन म अनक ग्रन्थ रच । उनक बगता विद्या न प्रवर साहित्य उपन्न विद्या । मस्ति पर रचनान मित्र का ग्रन्थ सुविख्यात है विस्तार त उमका यहाँ उन्नत करना निरर्थक है । मागबार् न राजस्थाना म गुमपुर कविताए रचा । हम युग म अनक मराठी कवि भा हूँ जिमम नामक मवस अधिक प्रसिद्ध थ । गुम नानक न पजाबा म कविताए विद्या । हमारा जापुनिन भाषा क रिवाज का बहुत कुछ धय भक्ति ज्ञानानन का है ।

उद्भू भाषा

विज्ञाना तुकों तथा अर्थ मध्य एशिया क जानिया और साहित्य क पारम्परिक मध्यक क फलस्वरूप हम युग म एक नयी भाषा का जन्म हुआ । प्रारम्भ म यह उबान हिन्दी कहलानी था आरंभ कालक यह एक क नाम त विरवाड हूँ । यह पश्चिमा साहित्य को एक याता थी जा नयासाता त मरुत तथा साहित्य क निकटवर्ती प्रथम म भाग जाना था । उमक व्याकरण का टीका भारताय ही था किन्तु धीरे-धीरे उमम पारता तथा अरबा क साहित्य का प्राधान्य जान गया । कहा जाता है कि अमीर गुमरक बहुत मुस्लिम लक्षक थ जिहान अपन



विचारों का अभिव्यक्ति के लिए इस भाषा का प्रयोग किया। किन्तु इस युग के शुरू होने के बाद ही उगने के प्रोत्साहन की श्रिया क्योंकि भारतीय होने पर यह गिचनी थी और उह पारसी से अधिक प्रेम था।

### भक्ति आन्दोलन

प्राचीन हिन्दुओं का विचार था कि मोक्ष प्राप्ति के लिए जन्म मरण चक्र से मुक्त होना के तीन मार्ग हैं—ज्ञान, धर्म तथा भक्ति। सत्तन्त्र-युग के हिन्दुओं में जनक एक धार्मिक विचारक हुए जिन्होंने भक्ति का अधिक महत्त्व दिया और धर्म सुधार का एक नया आन्दोलन प्रारम्भ किया जो भक्ति आन्दोलन के नाम से विख्यात हुआ। स्पष्ट है कि यह आन्दोलन पूर्णरूप से नहीं था और इसकी उत्पत्ति का मूल कारण इस्लाम था जसा कि भ्रमवश कुछ आधुनिक लेखकों ने समझ रखा है। वास्तव में हुआ यह कि मूर्ति पूजा के शत्रु मुस्लिम धर्म प्रचारकों की उपस्थिति के कारण जिन्होंने हिन्दू धर्म तथा विचारों का संपन्न किया इस आन्दोलन को अधिक प्रेरणा मिली। आन्दोलन का इतिहास महान् धर्म सुधारक शंकराचार्य के समय से आरम्भ होता है जिन्होंने बौद्ध धर्म से सफलतापूर्वक टकरा कर ही और हिन्दू धर्म का एक ठोस तथा व्यापक दार्शनिक आधार पर खड़ा किया। उन्होंने एक तर्कसंगत अर्थ दर्शन की स्थापना की तथा मोक्ष प्राप्ति के तीन मार्गों में से प्रथम अर्थात् ज्ञान पर अधिक बल दिया किन्तु साधारण लोगों के हृदय से उनके विचारों का स्वागत नहीं किया। साधारण जनता के मस्तिष्क का हिन्दू धर्म की ओर आकृष्ट करने तथा उस जनता के जीवन का एक सक्रिय तथा स्फूर्तिदायक तत्त्व बनाने के उद्देश्य से हमारे मध्ययुगीन धार्मिक विचारकों ने तीसरे मार्ग अर्थात् भक्ति का अधिक महत्त्व दिया चूँकि विदेशी शासन में अधिकतर हिन्दू भौतिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक उपनिवेश बनने में असमर्थ रहे अतः भक्ति आन्दोलन की मुख्य विशेषता यह है कि जनता तथा भक्त नए सत्कार से बराबर लेकर भक्ति में ही परमानन्द प्राप्त करने लगे।

इस धार्मिक विचारधारा के सबसे पहले प्रवर्तक वृष्णव आचार्य रामानुज थे जो १२वाँ शताब्दी में हुए। उन्होंने सगुण ब्रह्म की भक्ति को लोकप्रिय बनाने का भरमबाँध प्रयत्न किया और कहा कि मोक्ष का यही एकमात्र मार्ग है। दूसरे सुधारक रामानुज सम्प्रदाय के अनुयायी रामानुज हुए जिनका जन्म इलाहाबाद में एक गरीब कुल में हुआ था। वे राम के उपासक थे। उन्होंने प्रत्येक जाति के स्त्री-पुरुषों का भक्ति का उपदेश दिया। उनके चारह शिष्य थे जिनमें एक नाम (सत) एक चमार (रदास) तथा एक मुस्लिम जुनाहा (बरीर) था। इस सम्प्रदाय के तीसरे आचार्य बलरामाचार्य हुए। वे वृष्णव के उपासक थे

इसलिए उन्होंने कृष्ण भक्ति शाखा का प्रतिपादन किया। उनका जन्म १४०६ ई. में बनारस में निकट हुआ था। उनके माता पिता तत्काल ब्राह्मण थे। वे नायकावादी के लिए भाग्य प्राप्त हुए थे और यही धर्म ग्राम था। अपने जीवन के प्रारम्भ में ही बाल्य में अत्यन्त मार्मिक प्रतिभा का परिचय दिया। काशी में उन्होंने विद्याजन किया और फिर विजयनगर सम्राट कृष्णदेवराय के दरबार में चले गये। वहाँ उन्होंने कुछ गद्य विद्वानों का शास्त्राध्यय में पराजित किया। उन्होंने गुरु इतना का प्रतिपादन किया। साधारण जनता में वे बहुत लोकप्रिय हुए गये किन्तु जाग चतुर नर अनुयायियों में जो अधिकतर ममूद लोग थे उनके दाप जा गये। इस परिणामस्वरूप वे दश में उनके सम्प्रदाय में वहाँ रूप धारण कर दिया जो पश्चिम में प्राचीन यूनानी शान्ति एपीक्यूरस के सम्प्रदाय का था।

भक्ति आन्दोलन के मन्तव्य में गत चतुर्थे थे। उनका जन्म बंगाल में नशिया के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था। जीवन के प्रारम्भ में ही उन्होंने उच्चैः की साहित्यिक प्रतिभा का परिचय दिया। चौदह वर्ष की अवस्था में वे गंगार त्यागकर साधु हुए गये और अपना गद्य जीवन प्रेम तथा भक्ति का मार्ग में बिताया। उन्होंने उत्तर तथा मणि मन्त्र के अधिकांश भागों का प्रमण किया और बहुत समय तक ब्रह्मचर्य में रहे। उनके उपदेशों का तार इस प्रकार है— जो व्यक्ति कृष्ण की उपामना तथा अपने गुरु की सेवा करता है वह माया-जान से मुक्त होकर कृष्ण के चरणों का प्राप्त कर लेता है। इसमें वह गंगार के बंधन में ऊपर उठ जाता है। उनका विश्वास था कि प्रेम तथा भक्ति नर और गंगार से अतीविक्रम जानने की एक अवस्था प्राप्त हो सकती है जिसमें मनुष्य ब्रह्म का साक्षात्कार हो जाय। चतुर्थे पुराहिता के प्रभु के तथा धर्म के बाह्य रूपों और कर्मकाण्ड के विरोधी थे। उन्होंने जानि तथा धर्म के भ्रमों का त्यागकर सभी लोगों का अपना उपदेश सुनाया। उनके प्रभाव इतना गम्भीर तथा म्यामा मिद हुआ कि उनके अनुयायी उन्हें विष्णु का अवतार मानते थे। १५१० ई. में उन्होंने दश साह का छाप दिया।

भक्ति-आन्दोलन के अर्थ मन्त्रवादी गत नाम्बे थे। वे महागुरु थे और उनके पिछे में सभी नया जानिदा के साथ सम्मिलित थे कुछ मुसलमान भी थे जिन्होंने हिन्दू धर्म अपनाकर कर दिया था। वे स्वयं जानि के श्रोत थे उनका जीवनकाल १५वीं शताब्दी का पूर्वार्ध माना जाता है। दश युग के अर्थ मुफ्तकी की भाँति उन्हें भी इतने पाए जाने में विश्वास था। वे भूति पूजा तथा कर्मकाण्ड के विरोधी थे। उनका विश्वास था कि ईश्वर भक्ति ही माँग जानि का एकमात्र साधन है।

भक्ति माँग के प्रवर्तकों में कबीर तथा नानक दा एत हुए जा हिन्दू तथा

इसनाम घमाँ व समन्वय व पक्षपाती थ । बचारे का प्रारम्भिक जीवन रम्य व आश्चर्य म र्का हुआ है । बटा जाना है कि व बचारेत की एक ब्राह्मण विधवा व गभ म उत्पन्न हुए थ उगा उह एक तानाब व किनार छाँ दिया जहाँ म एक मुसलमान जुलाहा उ उठा त गया । उनकी जन्म तिथि व विषय म विमाना म माना है परन्तु इतना निश्चित प्रतात जाना है कि व १७वाँ शताब्दी व अंत म हुए थ । आरम्भ स ही व चिन्तनशील तथा धार्मिक प्रवृत्ति व थ किन्तु दृढ़िवाणी नहा थ । बटा जाना है कि व रामानन्द व शिष्य हा गय थ । बचारे नाममात्र व मुसलमान रह हाग क्याकि उनका बचिताण निरमादट हा हिन्दुआ व उत्कृष्ट धार्मिक तथा दार्शनिक विचारा स आन प्राप्त ह । गूफा विचारा तथा श्रियाआ का भा उन पर प्रभाव पटा था । उान गृहस्थ जीवन बिताया तथा जीवन व दैनिक कृत्य क्रिय फिर भा व उचकाटि व भवन थ । उहान जाति तथा धम व भभाव का छाँकर सभा नागा का प्रेम का सञ्च सुनाया । हिन्दू तथा मुसलमाना म एकता स्थापित करना उनर जीवन का मुख्य उद्देश्य था । भक्ति मार्ग व अ य सन्ता का भाति कबीर भी जाति-व्यवस्था कमकाण्ड तथा धम व बाह्य जाडम्बरा व विराधी थ । उनका यह दृष्ट विश्वास था कि प्रेम तथा भगवत्भक्ति सहा माण प्राप्त हा सक्ता है । सनिए भजन म उनका गम्भीर आस्था थी । व सभी प्रकार व ढाग जाडम्बर तथा पावण की निन्दा किया करत थ । निम्नांकित पद म उनकी शिक्षाआ का सार अतनिहित है—

न जान तरा साहब कसा है ?

मस्जिद भीतर मुल्ला पुकार क्या साहब तरा बहरा है  
चाटी व पग नबर बाज सा भी साहब सुनता है ।  
साँव कहा ता मारत धाव झूठ जग पहिचाना  
जातम मारि पपानहि पूज उनमे कछू न नाना ।  
बहुत दन पीर ओलिया प विताव कुराना  
बह हिन्दू मोहि गम पियारा तुरव कह रहम्मुना ।

कबीर की भाति गुरु नानक न भी हिन्दू धम तथा रमनाम व सम वय का सन्देश दिया । उनका जन्म एक लया परिवार म १४६९ ई म तालबडी नामक गाव (आधुनिक नानकाना) म हुआ था जा लाहौर स दक्षिण पश्चिम स ३५ मील की दूरा पर आधुनिक पश्चिमा पंजाब व शकुपुरा जिन म स्थित है । उनके पिता पटवारा थ । नानक का शिक्षा मिला था । आग चलकर उहान अपन बहनार् सुल्तानपुर व जयसिंह व यहा नौकरी कर ली जयसिंह गान का व्यापारी था जीर दाऊदखी लोदा के यहाँ काय करता था । सुल्तानपुर म ही नानक का धार्मिक जीवन प्रारम्भ हुआ । उनका पहला बचन जिसने

रागा का ध्यान आकृष्ट किया, यह था— हिन्दुओं तथा मुसलमानों में कोई अन्तर नहीं है। उन्होंने अपना शप जीवन नश भर में घूम-घूमकर उपदेश देने में बिनाया वे नश के बाहर भी मक्का तथा मन्ना तक गये। जान-धर शेरशाह में स्थित करतारपुर में १५३८ ई. में उनका स्वागतमान हो गया। नानक न विवाह किया था उन्होंने गृहस्थ जीवन बिनाया और उनका पुत्र थे। उनका विश्वास था कि विवाहित जीवन जातिवत् उन्नति के माग में बाधक नहीं होता। उन्होंने प्राणीमात्र के प्रति मन्त्रिणता का उपदेश किया हिन्दू धर्म का बाह्य आडम्बरों जाति व्यवस्था तथा धार्मिक कट्टरता का वे विरोधी थे। ईश्वर की एकता तथा उसका प्रति अनन्य भक्ति यही उनकी शिक्षाओं का सार था। उनका शिष्या में हिन्दू तथा मुसलमान दोनों सम्मिलित थे। उन्होंने अगस्त नामक अपने एक शिष्य को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया। अगस्त ने अपने अनुयायियों को एकता तथा संगठन का मूत्र में बोधा। धीरे धीरे वे मिस्र पहुँचाने लगे।

भक्ति आन्दोलन व्यापक था और सार नश में उसका प्रचार हुआ। यह एक जनसाधारण का आन्दोलन था और स्वयं कारण उत्तम एक सम्भीर जागृति उत्पन्न हुई। बौद्ध धर्म के पतन के उपरान्त भारत में नाना व्यापक और लोकप्रिय अर्थ का आन्दोलन नश हुआ था। नानक का मुख्य उद्देश्य था। पहला हिन्दू धर्म का सुधार करना जिसमें वे स्वामी प्रचार तथा तत्त्वज्ञान का आश्रमण में अपनी रक्षा कर सकें। दूसरा हिन्दू तथा इस्लाम धर्मों में समन्वय तथा शान्ति गम्भीरता में मित्रतापूर्ण सम्बन्ध स्थापित करना। पन्ना उद्देश्य में नानक सफलता मित्रता पूजा पाठ में कुछ मरगता आयी और परम्परागत जाति-व्यवस्था कुछ उदार हुई। हिन्दू जनता में ऊँच तथा नीच वर्गों के भाग अपने अपने अलग-अलग मूठ विभागों का भूतकर सुधारका का नानक नानक में विभाग करने तक कि नानक की दृष्टि में सभी लोग समान हैं और जन्म मो का माग में बाधक नहीं हो सकता। आन्दोलन का दूसरा उद्देश्य हिन्दू मन्त्रिमण्डल की स्थापना करना पुरा नहीं हो गया। नानक नानकान नामका न और नानक मन्त्रिमण्डल का राम-भोगा की भक्ति का माग का अनुसरण किया। उन्होंने नानक विभाग करने में नानक किया कि राम और श्रीम ईश्वर और अन्तर्गत एक ही दृष्टि के विभिन्न नाम हैं परन्तु अन्तर्गत रूप में इस आन्दोलन का एक अर्थ टोग परिणाम हुआ—प्राचीन भाषाओं के शास्त्रिक का नानक का मुख्य ध्येय नहीं को है। नानक नानकसाधारण की भाषाओं में अपने नानक शिष्य और नानक प्रचार धीरे धीरे हिन्दी बोलनी मगगी मन्त्रिमण्डल आधुनिक भाषाओं का समुद्रत किया। नानक प्रचार नानकान प्राचीन भाषाओं के शास्त्रिक के विभाग का शिष्य के नानक मग मग मग हुआ।

### सन्निवृत्त काल

मत्तना युग में स्थापत्य के अनिश्चित अथवा निर्णय काल का विकास का हम काई प्रमाण नहीं मिलता है। यत्र-तत्र मत्तना उत्तम अवश्य आते हैं जिनमें गिद्ध होता है कि शाभा के लिए विभिन्न प्रकार की डिजाइनों कावाग पर निर्मित की जाती। फर्नीचर इथियाग तथा जमीना पर मानी जाता और ध्वजा तथा बन्द। पर काढी जाता भी। मगर अनिश्चित मिट्टी के बरतना तथा धातु की बस्तुओं को रंगा तथा डिजाइना द्वारा मजा की कला का भी अच्छा विकास हो चुका था। राजमत्तना सामन्ता तथा उच्च पदाधिकारियों के घरा में जड़ हुए धातु के बरतना और सज हुए पीतल तथा चाँदी के पात्रा का खूब प्रयोग होता था किन्तु युग में निपिद्ध हान के कारण मुल्तानो तथा मुस्लिम अमीरा न निवृत्त की उपयोग की फिर भी मुल्तान-कला का सबत प्रचार था। धार्मिक कारणों से कट्टर मुसलमान समीत से भी घृणा करते थे किन्तु उसका आवरण बनना प्रचल था कि पूरण रूप से उसका बहिष्कार नहीं किया जा सकता था। इसलिये इस युग में कुछ उल्लेखनीय गायक भी हुए जिनमें कवि जमीर खुरख का प्रथम स्थान था। उन्होंने अपनी कुछ कविताओं का भारतीय स्वरों में जाबद्ध किया। कला जाता है कि उन्होंने कुछ रागा का भी आविष्कार किया।

### स्थापत्य

मुल्ताना का स्थापत्य में बहुत प्रेम था। जिस समय तुर्कों ने हमारे देश को विजय किया उस समय तक मध्य एशिया की विभिन्न जातिया स्थापत्य की एक विशिष्ट शैली विकसित कर चुकी थी। वह शैली वहाँ की स्थानीय शनिया तथा द्वाभ आदिमयाग ईरान अफगानिस्तान ममापोटामिया मिस्र उत्तरी अफ्रीका पश्चिमी यूरोप के देश तथा मुस्लिम अरेबिया की शनिया के सम्मिलन से बनी थी। इस प्रकार १२वीं शताब्दी के अन्तिम दशक में तुर्की विजेता स्थापत्य की जो शैली भारत में लाये वह न तो पूरण रूप में म्नामी थी और न अरबी। इस स्थापत्य की मुख्य विशेषताएँ थी (१) गुम्बज (२) ऊँची मीनारें (३) महराब तथा (४) भूमिगृह (तहसाना)।

जब तुर्क हमारे देश में आये तो यहाँ उन्हें स्थापत्य की एक अत्यधिक विकसित शैली मिली किन्तु विजेता होने के नाते इस देश में हमारता के निर्माण में अपने विचारा तथा कला के रूपा को प्रदर्शित करना उनका लिए स्वाभाविक ही था। किन्तु वे तभी हमारतों बनाने में सफल न हो गए जो उनकी मध्य एशियाई इमारता का प्रतिरूप होती। उनकी इमारतों पर देशी कला

गयापुर्य के शहर में बुनारुदीन गबबर की नवप्रथम कृति लिखना की कृपा  
 उन इस्लाम नाम की मस्जिद की निर्माता निम्नलिखित ११६५ ई. में प्रारम्भ और  
 ११६८ ई. में समाप्त हुआ था। यह एक हिन्दू मस्जिद के चतुर्भुज पर तथा  
 अनेक हिन्दू मस्जिदों की सामान्यता से होती थी। इस मस्जिद के अतिरिक्त गाम्म  
 अथवा गिगर तथा मध्य भाग मूलक हिन्दू मस्जिद के अगले एक भूखण्ड और  
 मुस्लिम मस्जिद का आवाक्यवताओं के अनुसार निर्माण में उनमें अन्तर के  
 विषय था। अतः उनका गिगर तथा मध्य भाग एक ही विषय आ-  
 उत्पत्ति के अन्तर्गत लिखा गया था अथवा सीट-आउट के अन्तर्गत लिखा गया  
 था। इस प्रकार में इस्लामी शैली की कृपा एक ही विषय है—सामान्य एक  
 रूप की कृपा है किन्तु एक मुस्लिम कृपा की विशेषता तथा मन्दाकार है और  
 कृपा की आसनें लुप्त हुई हैं। अतः एक ही कृपा का नाम ही नामक लुप्त

इमारत भी एक मस्जिद ही है। इमारा निर्माण भी कुतुबुद्दीन इब्न हिने कराया था। यह इमारत वास्तव में एक महत्त्वपूर्ण विद्यालय थी जिन सभाट विद्वानों ने बसाया था। एक ऊपरी भाग का तोर फावर मुस्जिद तथा महाराज का भी गयी थी। स्तम्भों पर और यहाँ तक कि भीतर नज़ा पर भी अगणित मानव चित्र हैं जिनके चारों तरफ गाय-गर मिते हुए हैं। कुतुबुद्दीनार मुर्शि स्थापत्य का तीगरा महत्वपूर्ण आश्रम है। इसकी योजना एवम् न ११६६ ई में कुतुबुद्दीन नयार की थी और अस्तुतमिशन न उम पूरा किया था। मूलतः यह मीनार मुस्जिद के लिए बनायी गयी थी जो नग पर चक्कर मुसलमानों को गमाज के लिए एकत्र करने को अजरी किया करता था। किन्तु जाग चने कर यह विजयस्तम्भ के रूप में प्रियान हुई। इस इमारत की योजना तथा रूप मूलतः इस्लामी है। अस्तुतमिशन न कुतुबुद्दीनार को पूरा करने के अनिश्चित कुछ नयी इमारतों का भी निर्माण कराया उनमें सबसे अधिक महत्वपूर्ण उसके चचेष्ट पुत्र का मकबरा है जो मुत्तान गली के नाम से विख्यात है। भारत में तुर्कों द्वारा निर्मित यह पत्थर का मकबरा था जिनके कुतुबुद्दीनार के विपरीत स्थापत्य सम्बन्धी योरे की बातों तथा मजाबट की दृष्टि से यह इमारत हिन्दू शैली के अधिक निकट है। जय जिनकी मकबरा में हिन्दू शैली का प्रभाव नगरीय पत्थर का अस्तुतमिशन के समय से मुल्ताना की इमारतों में इस्लामी तरिका का अधिक समावेश होने लगा। उसने कुतुबुद्दीनार नाम मस्जिद को परिष्कृत किया और उसमें एक पत्थर की जाली बनवायी। उसने ढाई फीट का झण्डा में भी कुछ परिवर्तन किया। बनवने में अपने नियत नग महल नामक भवन का निर्माण कराया। दिल्ली में स्थित उमका मकबरा शब्द इस्लामी शैली का है। मकबरा के चारों तरफ महाराज भारत की मुर्ती महाराजों में सर्वोत्तम है। गजनी मुत्तान अनाउद्दीन मन्तान निमाता था। उसने अनेक इमारतें बनवायी जिनमें दा अधिक उत्कृष्टनीय है—निजामुद्दीन औतिया के मकबरे के पास जमयतखाना मस्जिद तथा कुतुबुद्दीनार के पास अलार् दग्वाजा नाम की प्रसिद्ध मस्जिद। इन स्थानों में इस्लामी स्थापत्य विचारा का प्राधान्य है। तुगलक-युग की इमारतें इतनी शानदार नहीं हैं जितनी कि मुत्तान तथा गजनी युग की। वे सरल पक्के तथा कठोर हैं। इस परिवर्तन के दो कारण प्रतीत होते हैं। तुगलक मुत्ताना के पास धन का अभाव था जिनके लिए वे इमारतों पर भारी खर्च नहीं कर सकते थे। एक अनिश्चित अपने धार्मिक विचारा तथा रुचि में वे बड़े बट्टर थे। उनकी इमारतों की पीवारों उदार चढ़ाव की तथा मोटी हैं और देखने में काफी ही गनी है। तुगलकशाह का मकबरा तुगलक शाह का नगर तथा बाटवा फीरोजशाह तुगलक स्थापत्य के महत्वपूर्ण आश्रम है। सय्यद तथा जोशी मुल्ताना ने गजनी इमारतों के अोज तथा चार्चित्य को

पुनर्जीवन करन का प्रयत्न किया किन्तु समय —हैं जागिक मफनता मिता ।  
 एक दश बराममन का मन है कि व तुगनक-युग व निस्तज वग्न वान प्रभाव  
 म अपन का मुवन नही कर सक । पगान व्मागता म मिक्त्त वाना के बडार  
 गरा निमित्त भाठ की मन्त्रि सन राट २ । आनाचना व मनानुमार नानी  
 म्वापय का यह सर्वोत्तम गाश है ।

### प्राचीन स्थापय

तुगनका व शासनकाल म स्त्री मन्तनन व पतन व कारण जो विभिन्न  
 प्राचीन गाय उठ गट हूण थ अनक गामका न नी अनक मन्त्रा मन्त्रिजा  
 तथा मन्त्रा का निमाण वगया । जर्न तर भूव नवा का मन्वध है प्रान्तीय  
 मन्त्रिया स्त्री का शक्ती म मिक्ती जुवनी है किन्तु कुट मन्त्रवपूण यीरे की  
 शक्तो म व एक-दूमर म तथा स्त्रिली की गती म भिन्न है । उदाहरण व तिए  
 प्राचीन राया की तुवना म स्त्री का म्वापय की अधिक शातार था  
 क्याकि उनर शामक उनता धन नहीं यय कर सकन थ जिनता कि स्त्रिली  
 गुवान । म्बक अतिरिक्त प्रागतक युग म चनी आया म्वालीय वता  
 परम्पराआ नया प्रान्ता का विशय परिस्थितिया व कारण वर्ग की शक्ति म  
 म्वापय हा गया था ।

### मुत्तान

य प्रान्त म्वास्त्रिया तक निम्तर मुम्बिम गामन के अतगत रहा था  
 इमति कर्न अनक म्वागनाय म्वागक है । मवम पट्ट व म्वागने का मन्त्रिने  
 थी—गक का निर्माण मुहम्मद जिन कानिम न करवाया था और दूसरी उम  
 शक्ति मन्त्रि व स्थान पर बनवायी गया था जिन करमाथा शामका न नए  
 कर दिया था । मुत्तान म ती मन्त्रवपूण म्वागक है—शाह सुमुद मन्त्रिजी  
 का मन्त्रग (११५० म निर्मित) र्नीन हर का म्वागक (१०६० म  
 निर्मित) तथा मममुदीन उपनाम शम्भ तत्रोडा का मन्त्रग (१०३० म  
 का निर्मित) । चौथा म्वागक र्बन जावम का मन्त्रग है जिनका निर्माण  
 गिमागुनेन तुगतर ने १२०० म तथा ४ म मध्य शिमी ममय करवाया  
 था । मन्त्रा नीन म्वागने ममय व प्रभाय व कारण वहुत वृत् नए म्वाग हा  
 गयी है और म्वाग जीर्णोद्धार करता पना था । चौथ मन्त्र व मन्त्रय म  
 कहा जाता है कि म्वाका व म्वाग म जिन ॥ म्वाग अय तक बराय  
 मन्त्र मन्त्र व मन्त्र मन्त्र गागार है । म्वाग म्वाग मुम्बारा म्वागनी है ।

### बगाल

मन्त्रि बगाल म्वाग प्राण था और वर्ग व म्वागका म म्वागका म्वाग  
 मन्त्रि तथा मन्त्रि व परिस्थितिया व अनुभूत बगाल का मन्त्रियायी जानी था



विश्व भी स्थायीय गुणात्ता को प्रथम श्रेणी की स्थापत्य शली विरमित करने म  
 गपत्ता गरी मिली । उाही इमारतें मुख्यतया ग्ग की बनी था पत्थर का  
 बहुत कम प्रयोग किया गया था । ग्ग स्थापत्य की तीन विशेषताएँ थी छोट  
 मम्भा पर नुकीली मन्दाया का प्रयोग परम्परागत हिन्दू मन्दिरो की शरी क  
 पत्र रेखाओं म वन वाणिगा का (रांग क ढीगा क अनुहरण पर निर्मित)  
 इस्लामी ग्ग ग्गा गया मजाबट क विण क मन्त्र प्रतीका मन्त्र उत्कीण हिन्दू  
 डिजायने । मगनीनी त्रिपती नया पादुआ म ग्ग म्मारता क भग्नावाप आज  
 भी उपलब्ध है । बगानी स्थापत्य शरी क मयम प्राचीन उदाहरण जकरगी  
 गात्री की मस्जिद तथा मन्दाया कै जिनगा निर्माण हिन्दू मन्दिरो की सामग्री  
 म किया गया था । पादुआ की सुविख्यात अनीना मस्जिद मिक्त्तरशाह ने  
 १४वीं शताब्दी क उत्तरार्द्ध म बनवायी थी । इमारत का आकार अत्यधिक  
 विंगान था । यद्यपि बगान म ससरी गणना ससार की आश्वयजनक वस्तुओं  
 म की जानी थी किन्तु सर जान मागन क मतानुसार ससरी जिजाइन ससे  
 आरार क अतुरूप नहा थी । जनानुगीन मुहम्मदशाह का मकबरा अय सुत्तर  
 इमारत है । ससरी गणना बगान क सर्वोत्तम स्मारका म की जानी है ।  
 गौन का दक्षिणन दरवाजा इटा की म्मारत का तना श्रष्ट तथा पूण  
 उदाहरण है जितना कि ससार म कहा भी उपलब्ध नहा हो सकता है । लोत्त  
 मस्जिद बना सोना मस्जिद छोटा मोना मस्जिद तथा कम्भ रसून मस्जिद  
 अय सुविख्यात म्मारतें है । तनम बना सोना मस्जिद अधिक गरन तथा  
 प्रभावोत्पाक है । बगान की शरी की अपनी अलग विंगपनाएँ है । योजना  
 पूणता तथा सजावट की दृष्टि म वे अय प्राता की शनिया मे बहुत घनिया हैं ।  
 गुजरात

प्रातीय स्थापत्य शनिया म गुजरात की शरी मयसे अधिक श्रष्ट तथा  
 सुत्तर थी । तुकों के जागमन स पत्त ही प्रात म एक सुत्तर दशी शली का  
 वियास हो चुका था । तुक विजताओं न स्थायीय कानारी की प्रतिभा का  
 प्रयोग किया और अनेक सुत्तर इमारतें बनवायी । उकडी पर सुत्तर नक्काशी  
 नादित्यपूण पत्थर के झरोख तथा प्रचर सजावट स गनी की विंगपनाएँ  
 है । अहमदाबाद नगर जिमकी स्थापना अहमदशाह न की थी अनेक उच्च  
 भग्ना म सुशाभित किया गया था । य डमारतें भी पुराने हिन्दू मदिरो तथा  
 मन्दा की सामग्री स बनायी गयी थी । गुजरात शरी का सर्वोत्तम आम्भ  
 अहमदाबाद की जाभी मस्जिद है जिमगा निर्माण १४११ ई म अहमदशाह  
 ने करवाया था । ससम पत्थर गुम्बज है जो लो लो मम्भा पर सध हुए है ।  
 अहमदशाह का मकबरा भी उतना ही सुत्तर म्मारत है । चम्पानर क नगर  
 म भी अनेक सुत्तर म्मारतें है जिनम मन्सून बगान की मस्जिद तथा विने

क नागरिक महल अधिक आकर्षणीय है। आ वर्गों में गुजरात राजा की अधिक प्रशंसा की है। उनका कथन है उसमें दशज राजा के मौर्य तथा पूषता के साथ-साथ उम आज़ के भी सम्मिश्रण है जिसका राजा राजा म अभाव है।

### सालवा

सालवा में भी एक विशिष्ट शरीर का विकास हुआ। प्रायः का पुरानी राजधानी धार में दो नये मस्जिदें हैं। इनमें से एक शून्यत संस्कृत विद्यालय की ओर एक मस्जिद में सम्बद्ध थी। आज भी वह भाजशाला के नाम से विख्यात है। उस मस्जिद का रूप न दिया गया था। दूसरी मस्जिद भी हिन्दू मस्जिद की सामग्री से बना था। इन राजा इमारतों में हिन्दू राजा का सम्भार प्रभाव दिखायी देता है। वनों तथा स्तम्भ भी हिन्दू राजा के हैं। विन्तु माण्ड की इमारतें जिस स्थानीय मुत्ताना न जपनी राजधानी बनाया था डिजाइन तथा शिल्प राजा की दृष्टि में स्वनामा राजा पर बनी हुई हैं और शिल्पी का इमारतों में मिलता जुलता है। जामा मस्जिद हिन्दू राजा महान जहाजमाल हूमगशाह का मकबरा तथा राजबहादुर और रूपमता के माल माण्ड की समय अधिक प्रसिद्ध इमारतें हैं। इनके चारों ओर पत्थर की रक्षा-वाले बनी हुई थी। जामा मस्जिद की योजना हूमगशाह न तयार की था और उसका निर्माण भी उसने प्रारम्भ कर दिया था। विन्तु महम्मद गजनवी ने यह पूरा किया था। दरबारमहल भी जिस शिष्टाचारमूलक कहते हैं सम्भवतः हूमगशाह ने बनवाया था। राजा हूमगशाह का मकबरा भी पत्थरी इमारत है जो पूषतया समसमर की बनी हुई है। जहाजमहल माण्ड की सर्वोत्कृष्ट इमारत है। इसकी महारथार राजा के कलात्मक मण्डप तथा मुत्तु तथा अधिक प्रसिद्ध है। राजबहादुर तथा रूपमती के माल नमता के दिनार पत्थर पर बन हुए हैं। मक्षप में माण्ड भारत के सुगमिन्त नगर में सबसे अधिक शानदार है।

### जौनपुर

जौनपुर के शरीर राजवंश में श्याम्य का अत्यधिक प्राणाह्वय है। मुत्ताना राजा निर्मित मारगों में हिन्दू तथा मुस्लिम श्याम्य राजिया का सम्मिश्रण है। राजा राजा की ओर सम्भ छाती मस्जिदें (cloisters) इन मारगों का विशेषता है। जौनपुर का मस्जिदों में राजा राजा हिन्दू मस्जिदों की सामग्री से बनी था। स्वनामा राजा का मानते नहीं हैं। अतः राजा की मस्जिदें जिसका निर्माण १७७० में प्रारम्भ तथा १७७० ई में समाप्त हुआ था राजा राजा का अत्यन्त भव्य आश्रम है। दूसरी जामा मस्जिद है जिसका निर्माण गजनवी (१४४२-७८ ई) ने किया था। तीसरी साथ

महाराजा मस्जिद है। शाहीरो तथा गानित मुगलिन अ य प्रमिड इमारतें थीं जिन्हें अब बेचन भगावणन विद्यमान है।

### काश्मीर

काश्मीर की दूरस्थ घाटी में स्थापित मुगलाना नगर तथा नवनी के स्थापत्य की पुरानी हिंदू परम्परा का ही अपनाया। उसमें उहाने स्नान से सम्बन्धित कला न कुछ विषय विषय तथा स्था का समाविष्ट कर दिया। परिणामस्वरूप अय प्रांत की भांति काश्मीर में भी हिंदू तथा मुस्लिम स्थापत्य विचारा का गुच्छर सम यय हुआ। यहाँ की कुछ महत्वपूर्ण इमारतें जन उन आबतीन (१४२० ७० ई) के समय की हैं। श्रीनगर में स्थित मन्त्री का मस्जिद काश्मीरी कला का भय आत्मा माना जाता है। श्रीनगर की जामी मस्जिद जिस मिस्तर बुतशिकन न बनवाया तथा जन उन आबतीन न परिवर्तित किया था प्राग् मुगल शली का अनुकरणीय उदाहरण है। श्रीनगर में भी शाह हमदान की मस्जिद अ य महत्वपूर्ण इमारत है। वह पूणतया नवनी की बनी हुई है।

### दक्खिन

दक्खिन में बहमनी मुल्तान कला का पोषक था। उहाने स्थापत्य की एक विशिष्ट शैली को जन्म दिया जो भारतीय तुर्की मिश्री ईरानी आदि तत्वा का सम्मिश्रण थी। गुजरात तथा बीर की मस्जिद इस कला का गुच्छर उदाहरण हैं किन्तु दक्खिनी स्थापत्य के सर्वोत्तम आदर्श बीजापुर में उपलब्ध हैं। मुल्तान आदिना का मस्जिद जो गोल गुम्बज के नाम से प्रसिद्ध है एक विशिष्ट शैली पर बना हुआ है। उसमें तुर्की आदर्शों का प्राधान्य है। गुजरात की जामी मस्जिद शैलनावाक की चार मीनार तथा बीर का महमूद गवाँ का विद्यालय अय प्रसिद्ध इमारतें हैं। बहमनी मुगलाना की अद्विक्तर इमारतें तोड़े हुए हिंदू मस्जिद के स्थान पर तथा उनकी सामग्री से ही बनी थी। अतएव हिंदू प्रभावा से पूणतया बच सकना असम्भव था। सर जान माशर का मत है कि बहमनी कला के विकास की प्रारम्भिक अवस्थाओं में दक्खिनी आदर्शों को अपन अस्तित्व के लिए तीव्र सघष करना पडा। किन्तु १५वीं शताब्दी के अंत से उनकी विजय हानि गयी। इस प्रकार अंत में भारतीय प्रतिभा विशेषी प्रभावा से प्रकट सिद्ध हुई।

### हिंदू स्थापत्य

जसा कि हम पहले चिन्तन आये हैं तुर्कों के जाने से पहले हिंदूओं ने स्थापत्य कला का चरम विकास कर लिया था। हिंदू स्थापत्य की मुख्य विशेषताएँ थी—(१) पतन तथा चौकार सम्भ (२) पुशें (३) नोक्कर

तदा कालावत् विद्वान् परं वना हुन् (एक साथ सपाट नहा बस्त्र ऊपर नाच) महारात्रे तथा (८) मजाबट का डिजायने । हिंदू धर्मार्थे भाभायतमा एतन्मया यी चीना तथा खुना हुइ नहा । हमार शासका का मन्त्रि तथा मन्त्रुन विद्वान्म वनवान का शीक था । एमा प्रतान हाता हे कि अपन मन्त्रा का थार उहने विशय ध्यान नहा लिया । मध्ययुगीन हिंदू म्यापय क नमून राजस्थान और विजापनया मवात् म पाय जान है । मवाड क अधिराज गामक बना तथा म्यापय क पापक थ । गणा कुम्भ न अनक सुयो तथा अय मारता का निमाण कराया । कुम्भनग का मिना तथा कार्तिस्नम्भ नम सयम अधिक सुन्दर है । स्तम्भ का गणना भारत म सबसे आबधजनक मीताग म है । मवा कुछ जग तान पथर का जीर कुछ मगमरमर का बना है । अनक हिंदू म्वा-दवताआ क चित्र उमवा माभा बगान है और चित्रा क नाच नग उरीण है । विलीट म एक और स्तम्भ भा हे जा जन स्तम्भ क नाम स प्रसिद्ध है । वं शिखरिया तथा नक्वामा क काम म जनकृत है । जयपुर क निवत् आमर म तथा राजस्थान क अय क भागा म एम युग का म्माता क म्मावाप विद्यमान है । विजयनगर क सम्राट भा बना क जाययताआ क रूप म सुविशयन थ । उहान मभा-मृहा महता मावजनिक कायालया मन्त्रि तथा नहरा का निमाण कराया । व सब अयधिन सुन्दर मान जात थ । विन्शा पयत्वा न उनका भूरि भूरि प्रामा का है । फम्पुमन का कथन है कि कृष्णवराय का बनवाया हुआ विद्वान मन्त्रि दक्षिण भारत म अपन डग का मव रत्त हमारन है ।

एमा प्रतान हाता है कि एस युग का हिंदू म्यापय दम्तामा विचारा क प्रभाव स भुक्त रहा । मुगला क आगमन स पहल हमार विनिमा पर दम्तामा बना का प्रभाव नहा पया ।

### BOOKS FOR FURTHER READING

- 1 HABIBULLAH H Foundations of Muslim Rule in India
- 2 ANWAR KUNWAR MOHD Life and Conditions of the People of Hindustan (1200-1500)
- 3 FARUQIYAH Influence of Islam on Indian Culture
- 4 GRIERSON SIR (FORGE) Modern Vernacular Literature of Hindustan
- 5 FARUQIYAH Outline of the Religious Literature of India
- 6 HAVELL Indian Architecture
- 7 HAIG WOODSLEY Cambridge History of India Vol III

## सल्तनत का सिंहावलोकन

हिन्दुस्तान का व्रतगति से पदाश्रित होना

यदि हम तुर्कों की भारत विजय के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो एक बात विशेष रूप से हमारा ध्यान आकृष्ट करगी। किन्हीं आक्रमणकारियों ने उत्तरी भारत के अधिराज भाग का बग़ मारना और बग से पलायन कर लिया। यह जानकर हम अत्यधिक आश्चर्य होना है कि महमूद गजनवी ने प्रतिबन्ध हमारे देश पर धाव मारने का कदम स्वयं तब जा घमका और हमारे धनी मन्त्रिण तथा समृद्धशाली नगरों का जीतकर गजना का गीट गया किन्तु इमक़े लिए किसी ने उस प्रभावोत्पादन दण्ड भी नहीं किया। उनके आक्रमणों को रोकने का प्रयत्न ही नहीं उठता था। यह विश्वास करना बर्ज़न है कि हमारी राजनीति तथा सैनिक व्यवस्था इतनी सखी हुई थी कि आक्रमणकारी को एक बार भी निर्णायक रूप से नहीं परास्त किया जा सका और न उसके दुष्प्रभाव आक्रमण रोके जा सके। फिर भी इतिहास का यह एक कट्टा सत्य है कि जिस भी हिन्दू राजा ने महमूद का कभी भी निर्णायक पराजय नहीं दी। इसका साथ साथ यह भी एक सत्य है कि भारतीय सैनिक तुर्कों की तुलना में किसी भी दृष्टि से घटिया नहीं थे बल्कि जहाँ तक साहस वीरता और मृत्यु से तनिक भी न डरने का सम्बन्ध था वे अपने तुर्कों शत्रुओं से अधिक श्रेष्ठ थे। और न हमारे राजपूत शासक ही किसी भी दृष्टि से कामरे जथवा सैनिक गुणा से हीन थे। फिर क्या कारण था कि तीस सान के अल्प काल में गजनी के आक्रमणकारियों ने सिंध से लेकर बनारस तक हमारे देश का इतनी सरलता से रौन डाला। सबसे पहला कारण यह था कि देश अनेक स्वतंत्र राज्यों में विभक्त था इसलिये उत्तर पश्चिमी सीमाओं की रक्षा का प्रबन्ध करना और आक्रमणकारी की प्रगति का रोकना किसी की जिम्मेदारी नहीं थी। पंजाब के हिन्दूशाही राजा ने अपने राज्य में महमूद का प्रतिरोध करने के लिए युद्ध किया किन्तु अपने पचासियों के राज्यों के विरुद्ध अभियान करने से उस रोकना उसने अपना कर्तव्य नहीं समझा। यही मनावृत्ति कभी राजा की थी और इस प्रकार यह राग फलता गया। उस युग में राजाओं के परस्पर अल्प सम्बन्ध नहीं थे इसलिये उनके लिए अपना शक्तिशाली समूह

बना तना अमम्भव था । दूसरे षण का माघारण जनता राजनानिक विषया व प्रति पूनतया उन्मात था । माघारण का उन्मात-पतन तथा तामका व आन जान म उन्मात प्रयाजन नहा था । व षण बात का चिल्ला नहा करत थ कि हमारा तामक वीन है । तमार तामका तथा जात्रमणरागिया व वीच हीन बाल मधयो का और फ्यात न तन तग व अपन सना व काम म जुग रह । राजनानिक उन्मातना तथा तामक व श्रमाव व कारण तामाय भारताया की तमा मनावृत्ति बन गया व कि व परतगिया तथा अपन तामवासिया म का अनर नहा समझत थ । तिन तमार तग व तना मरल तथा तत विजय का मवग बना कारण थ व कि मन्मू न महंगा जात्रमण का नाति म काम तिया । तमन विद्यत गति म तमार ममृदुशाता नगरा पर थावा मारा और फिर उमा वग म मुक्कर अपना राजधाना तनना का चोट गया । वह तत गति से अतिधान करता इन्तानुगार इधर उधर मुक्क जाता तामा जात्रमण करता और फिर उमा गति म पाछ चोट जाता । इम नाति का तमन अगणित वार तामा तिमम हमारा जनता म घबगहट तथा आतक पन गया और उमका मनावन टूट गया । तग उमा प्रकार विवश तथा अमशय-म तत मय जम तिया परिवार व बहादुर तिन तामतिप्रिय मन्मय तत माग्गा और शर डाकु व जात्रमण व ममय तत जात त । इमय पन्त कि व तत्र हारर अपना रणा व माधत जुग मवन जात्रमणकारा डाकु का नाति अनध्यान हा जाता । तग ममणन तगत कि वय हम मुर्गा तन त तिननु आवमणकारा फिर पून वग म सौतता तिया तूमन ममृदुशाता नगर तथा उमक घनी मन्दिरा पर टूट पन्ता और तूमन करक फिर चोट जाता । यत मवन तम प्रकार बनता रहा और जनता म विवशता तथा आतक तन गया । इन परिस्थितिया म रक्षा का एक हा उपाय हा मवता था—तम म तत्र करर गतिक तथा राजनानिक मगन हाता और मनाए विगत जात्रक तथा मावधान तनहा । तिननु यत तमा हा मवता था जब ममलत तग पर अपना कम म कम ममन्त तति भारत पर तत्र उन्मात व नताया का आधिपत्य हाता । यह बात उम युग म अमम्भव था ।

जम हा आग हम तिमण व पन पदमन है हम तत्र और आरवपजनक बात तग पन्ता है । मन्मू व हाया हमारी जनता का त्र अगणित कण तथा अपमान भाजन पद थ त वह हाथ हा मरवता म पुन गी । जात्रमणकारा न मगार न जम ही तिया ता वत ही वह पुववन प्रमाण म पन गया । तगान तन जात्रमण म का मवक नती सीगा और तन की रणा तथा बचाव व तिया उन्मात अवगत तिया तमका का ताम तहा उन्मात । त की तनाया व अतिम चरण म भी व तन हा अमणित तथा अनावधान व विद्यत कि

११वीं व प्रारम्भ म । अत मुस्लिम गारा त जय उत्तरी भारत का विजय  
 आरम्भ की ता उम भी वशिष्ठ प्रतिरोध का सामना नया करना पना और १५  
 वर्षों के भीतर पुन पुन । समस्त उत्तरा भारत का पनाशान कर डाला ।  
 दस बार व वगत की मोमाजा गत गुरुत गये वयादि १०वीं शताब्दी म भा  
 य ही कारण विद्यमान थे ता ११वां व प्रारम्भ म ।

स्वाधीनता की रक्षा व लिए हमारे प्रयत्न

दश का पनाशान करना एक घात था और उस पूणस्य स विजय  
 करना दूसरी । ता प्रशा का तनी त गत डाला था उम पर अधिकार स्थापित  
 करने म व सफल ता म । हमारे शशामिया त विजिताजा का वास्तविक  
 प्रतिरोध तय आरम्भ किया जय उता दश पर अधिकार करव उम पर  
 शासन करव का काशिश का । वनाचिन हमारे नाम का यह भ्रम था कि  
 आक्रमणकारा का प्राणित प्रभुत्व म का प्रयाजन नया है व ववन लटमार  
 म गतुष्ट हा जायगा । किन्तु जब ताता तया कि उमक सनातायक दश पर  
 अधिकार रखने व उद्देश्य स मनिज जड कायम कर रह है तय उहान उमका  
 प्रतिरोध करने के लिए समस्त प्रयत्न किये । पजाय व हिन्दूशाही राजाआ न  
 अपन जरव तथा तुक पनागिया व विरुद्ध जा शताब्दिया तक सघष किया व  
 स्वाधीनता की रक्षा व लिए किय गये प्रतिरोध की एक स्फूर्तिदायक कहाना  
 है । आक्रमणकारी ५० वर्षों स भी अधिक (६५६ १०२६ ए ) सतत प्रयत्न  
 करत व उपरांत पजाय के प्रांत का विजय करने म सफल हा सक । साभर  
 तथा अजमेर व चीहाना त मुस्लिम गारा व अफमरा का मार भगान व उद्देश्य  
 स जा दशक के अन्तत म चार बार विनाह का क्षण्डा सना किया ।  
 १५० वष तक युद्ध करने पर भी रणथम्भौर व तिन पर मुसलमान ता  
 अपना दृढ अधिकार कायम न कर सक । इस युग म सम्पूण राजस्थान वास्तव  
 म कभी भा अधिकृत नहीं किया ता सका ।

तबकात नासिरी व पृष्ठा व पन् स म तात हाता है कि कुतबुद्दीन एबक  
 स तवर बनवन तक सभा सुत्ताना का गगा यमुना व उपजाऊ दाआव पर प्रति  
 वष आक्रमण करत पडत थ फिर भी व पुणतया उसना दमन न कर सक ।  
 अय क्षत्रा की भाति एस प्रदेश का भी जातन की प्रतिवष प्रक्रिया सम्पूण  
 सलतनत युग म जारी रहा और वहाँ से बिना तलवार की सहायता के कभी  
 राजस्व त वसूव किया जा सका । सत्य ता यन् है कि समस्त सलतनत-युग म  
 हिंसा न तुक अफगान शासका व विरुद्ध सघष जारी रखा । यि हम अपन  
 दश का एशिया तथा यूरोप व उन देश व भाग्य स तुनना करें जिहान कापरता  
 पूवक जरव तथा तुक आक्रमणकारिया व सम्मुख आत्मसमर्पण कर दिया था  
 ता हम अपन पूवजा की सराहना तथा प्रशसा अवश्य ही करनी पडगी क्याकि

उन्होंने पाषाण तक उन प्रभुओं के विरुद्ध जिद्दान मरलना और वष समयार के तान महाद्वारा पर अपना सैनिक राजनातिक तथा धार्मिक प्रभुत्व स्थापित कर दिया था इन्कर मघप किया ।

भारत भूमि पर विदेशी उपनिवेशों का अस्तित्व क्या कायम रहा ?

इस युग के इतिहास के विद्यार्थी का एक जय आश्चय का सामना करना पड़ता है । हमारे पूर्वजों ने विदेशियों का उन स्थानों में मात्र भगान का प्रयत्न क्या नहीं किया जिन पर उन्होंने अपना आधिपत्य स्थापित कर दिया था ? मिथ मुल्तान तथा पंजाब में उन्हें अपना सत्ता क्या कायम रखने का यकीन ? अरबों ने आर्य या परास्त्रियों के मिथ तथा मुल्तान का स्थायी रूप में अधिभूत कर दिया । ११वाँ शताब्दी के आरम्भ में महमूद गजनवी ने पंजाब का जयन साम्राज्य में सम्मिलित कर दिया । शेष भारत पर पकिस्तानी हिन्दू राजा राज्य करने थे । उन्हें आठवाँ शताब्दी में मुल्तान तथा मिथ से अरबों का और ११वाँ शताब्दी में पंजाब से तुर्कों का मात्र भगान का प्रयत्न करना चाहिए था । एक प्रश्न का उत्तर यह है कि परम्पर लटन वान हिन्दू राजाओं में एकता स्थापित करने का पुरानी समझौता का क्या फल न निकला । उनका धारणा तथा स्थानाय दानभक्ति में विश्वास का सङ्कलन न निकलना । उस युग के कई दृजन मस्कुन में उरनाग वग मित्र ? जिनमें वान है कि कभी एक हिन्दू राजा ने और कभी उगन मरुटा का पराजित किया और उनके अधिभूत नगरों में कभी उस पर कभी उग पर अधिभार कर दिया । चौथान गुजर प्रविष्टार गुर्जरीन तथा बघन राजपूत राजवंश ने मिथ तथा मुल्तान के अरबों और पंजाब के गजनवी साम्राज्य के विरुद्ध मुल्तान में अन्धुत वारता और माह्य का परिचय दिया । व्यक्तिगत रूप में वे नानाभाति न सक्ता थे हिन्दु मित्रवर्ग तथा सम्मिलित रूप में उन्होंने प्रभुओं के विरुद्ध कभी मघप नहीं किया । दूसरे यह नाना प्रयत्न होता है कि युग में हमारे सामने में आक्रमणकारा भावनाओं का साथ ही पुका था । भारत के विना राजा न कभी किसी दूसरे दान अथवा राष्ट्र पर आक्रमण करने का शायद ही विचार किया है । तामर मिथ तथा मुल्तान के अरबों और पंजाब के गजनवी साम्राज्य ने जयन करने राज्या का हिन्दू प्रजा के साथ वारता जमा व्यवहार किया । यदि कभी किसी पंजाबी हिन्दू राजा ने इन विदेशी राज्यों में कभी पर आक्रमण किया तो अरब अथवा तुर्कों साम्राज्य में स्थापित विदेशी का सहार करने तथा वहाँ के प्रभुओं में और मूर्तिया का व्यवहार करने की धमकी न निकली थी । उग वान के जयन-ययन तथा इतिहास कारों ने विचार में वान किया है कि जिन प्रकार स्थानाय मुगलना साम्राज्य अपने का नष्ट होने के बखान के लिए एक सतुर नाति का प्रयास किया करते थे । अतः इतिहास मुहहनुम मुन्नाह नामक अन्वी पुस्तक में रिखाता है, ताम



एक (मुल्तान के मूल मस्जिद का मूर्ति का) स्तूप का लिए जाये है और इसका अभिषेकन करता अपना कर्तव्य समझता है। तब उसकी स्तानी थडा है कि जब कभी कार्द कागी हिन्दू राजा लूट अथवा मूर्ति का उठा न जान क उद्देश्य से मुल्तान पर आक्रमण करता है तो म्धागीय पुराहित एकत्र हाकर आक्रमणकारी का घमडी कर है कि मूर्ति तुमग गच्छ हा। तायगा जीर तुम्हारा सत्यानास कर दगी। यह मुनकर पुरा हा आक्रमणकारी अपना मन्थप त्याग दत है। यदि यह भय न हाता तो मुल्तान का अवश्य ही नाश हा गया हाता। (इलियट तथा डाउसन प्रथम जिल्द पृष्ठ ८२)।

अन मसौना नामक एक अरब इतिहासकार मुस्लिम उन जबब नामक अपना पुस्तक म जिसकी रचना ६४१ ई के तगभग हुआ था लिखता है जब काफिर लाग मुल्तान पर आक्रमण करत जीर मुसलमान जपन का उनका विराध करन योग्य नहा समझत ता क उनकी मूर्तिया का तात् खानन की घमकी दन है और शत्र तुरत ही वापस पीट जात है। (इलियट तथा डाउसन प्रथम जिल्द पृष्ठ २३)। हमार अय विश्वासी पूवज जा परवर्नी अरब तथा गजनवी शासना से कही अधिक शक्तिशाली थ इस प्रकार झांस म आ जात थ और यही कारण था कि मुल्तान सिध अथवा पजाय का जातन का उहोने प्रयत्न तक नहा किया।

राजवशों का बार बार परिवर्तन क्यों हुआ ?

यदि हम दिल्ली सल्तनत तथा उसके बाद के मुगल साम्राज्य म तुर्काना कर ता हम एक विषय धान देखन का मिलगी। मुगल युग म एक ही राजवश न २५० वर्ष से भी अधिक शासन किया जबकि उसके विपरीत सल्तनत-युग म अनक वशा का उत्थान पतन हुआ। १२०६ तथा १५२६ ई के बीच बारम्बार राजवशा का जा परिवर्तन हुआ उसके अनक कारण थ। पहला तुर्क तथा अफगाना म उत्तराधिकार का कार्द निश्चित तथा सबमाय नियम नही था। इस्लामी प्रभुत्व सिद्धांत के अनुसार कार्द भी मुसलमान जन्म तथा स्थिति के भन्भाव के बिना मुल्तान हाने का अधिकारी होता है केवल शत यह है कि वह शक्तिशाली तथा योग्य हो। इस सिद्धान्त के आधार पर महत्वाकांक्षी व्यक्ति सिंहासन प्राप्त करन की अभिलाषा करत थ चाहे उनका राजवश से सबंध था अथवा नहा। इस युग म अनक शक्तिशाली तथा महत्वाकांक्षी प्रांतीय सूबदारान सिंहासन प्राप्त करन की सपन चेष्टा की। इल्तुमिश जनाबुद्दान खनजी अनाउद्दीन खनजी गियासुद्दीन तुगलक और बहाना नोदी दिल्ली के मुल्तान बनन से पहल प्रांतीय सूबदार रह चक थे जीर उनसे अनाउद्दीन का छोडकर किसी का भी उस राजवश से सम्बंध नही था जिस हटाकर उहोने सिंहासन प्राप्त किया। इस युग म जो अनेक बिगह हुए

उनका भा कागण पूर्वोक्त ही था क्याकि जहा भा यकिन सफरतापूर्वक तबवार धारण कर सकता था वह ममझता था कि सिंहासन भरी पट्टीच क बाहर नहा है। दूसरे सरकार दुबल थी वह कानून पर नहा बकि यकिनगत शासन पर निभर थी। उसका आधार मुत्तान का व्यक्तित्व तथा चरित्र हाता था। एक माग्य शासक का उत्तराधिकारी भी उतना ही माग्य हागा इस बात की गारण्य नहा न सती थी। बल्कि नियम कुछ एमा बन गया था कि शक्तिशाला मुत्तान क उत्तराधिकारी दुबल ही हुए क्याकि उनका पालन पोषण राजमहला क विलासमय तथा दुव्यसना स दूषित वातावरण म हाता था। तुक बिन्धी म इमतिए उह निरन्तर हमारा जनता क प्रनिराध का मामना करना पडा उगन अपना स्वाधीनता का पुन प्राप्न करन क लिए प्रयत्न करना छाग नहा था। इन परिस्थितिया म दुबल यकिनया का सिंहासन पर बठना हिनकर नहा हा मरता था। यर्ग कारण था कि अमीर लाग सिंहासन क लिए एक माग्य सनिक का हो पगत करत थ चाह उमका राजवा म सम्बध हाता अथवा नहा। तामर इमार म म आकर ताम प्रया का जिसम एवक इलतुनमिश तथा बसबन जस माग्य नेता उत्पन्न हुए थ तजा स पतन हान गया। तासा का सम्पा हजारा तक पहुँच गया। उन सब का गुठ तथा शासन की उचिन गिगा दना सम्भव नही था किन्तु शासका क माय हान क कारण उह पर्याप्त पन तथा अवकाश मित्र जाना था और उनक साथ यवहार भा दूसरा का जपना अच्छा हाता था। इस सब का परिणाम यन हुआ कि ब प्रमाणी तथा विनामप्रिय हा गय। म प्रकार यह प्रया दूषित तथा भ्रष्ट हा गयी और माग्य व्यक्ति न उत्पन्न कर सकी। इसक अनिश्चिन इस युग म मतिर काफुर तथा मतिर गुमरब जन जा एक-दा माग्य दाग हुए भा क उनन स्वामिभवन न निकन जिनन कि उनक पूर्वाधिकारा थ। उनि अपन म्यामिया क परिवारा क हिना क जिड काय किया। मतिर काफुर न अपन स्वामा अलाउद्दीन क प्राण नन क निग पडक्य रचा और सम्भवन उग विध कर मरवा हाता था। उगा न गानकुमारा का जया करवाया और मति समय पर उमका वध न कर दिया गया हाता तज अलाउद्दीन क वग म बह जिता भा व्यक्ति का जीवित न छोप्ता। मतिर गुमरब न ता अपन स्वामा मुबारकाना का पया करक स्वय सिंहासन हस्तगत कर लिया। म प्रकार ताम प्रया उग युग म रात्रवता क बाग्म्बार परिवनता का मुख्य कारण मिड हुए। पीध अतक मुत्तान एग हग जिनक पाग शक्तिशाला म्याया मना नहा थी। अलाउद्दीन न इस आवयक मग्गन का नाब डामा किन्तु उमक उत्तराधिकारिया न उगरो छिन्न भिन्न हा जिन निगा और पूष मुत्ताना का भाति ब भी प्राणीय गुंकारा का सनाभा पर निभर रहन मग। इस प्रकार इतिहासा

गतिक शासक राज निर्माता था बटे। दाम्पत्य में सनिक शासक का पत्र गिरा  
 गन प्राप्त करन का एक साधन बन गया। बिना शक्तिशाली स्थाया सना क  
 दुःख गुल्लाग शक्तिशाली अमीरा क हाथा की उठानली बन गये। यह एक  
 मुख्य कारण था जिगम गान प्राचीन शासक दिल्ली सिंहासन पर पतन गये।  
 पाँचवें हिंदू सामन्त जितनी स्वाधीनता का अपहरण कर लिया गया था  
 बिगोही गुल का उधार फका क लिए मदद करन थ। उस युग क  
 पारंगी लतना का कहना है कि जजमर सांभर तथा मुजराण क राजपूतान  
 तुनुवुगी एवन क विरड बारम्बार बिगह किया। अस्तुतमिश क समय म  
 हिन्दुआ क शक्तिशाली बिगह हुए जीर अनक वर्षा तन चन। बनवन का जनना  
 तथा उसक नना राजपू सामन्ता क प्रहारा स नवस्थापित तुर्की सल्तनत का  
 बचान की बिगट समस्या का सामना करना पना था। अनाउद्दीन खलजा न  
 उनका दमन करन का प्रयत्न लिया किंतु उसकी जीख बंद हात ही हमार  
 दगवासिया न फिर मिर उठाना आरम्भ कर लिया। मुल्ताना का गमभग  
 निरंतर हिंदू शभवना क विरड युद्ध करन पन। इसी कारण उह अपना  
 सनाए सन्व तयार रखनी पन्ती थी। एसी स्थिति म जमार लोग अनुभवा  
 सनिक का ही जा हिंदू प्रतिश्रिया का सफलतापूर्वक मुकाबला कर सकता  
 सिंहासन पर बिठाना पशाद करत थ। दुबन गंगा का निदयतापूर्वक हटा  
 लिया जाता था। छठे बार बार हान वान मगात आक्रमणा न भी जिनका  
 आरम्भ १२४० इ म रजिया की मृत्यु क बाद हुआ दिल्ली सल्तनत क भाग्य  
 तथा नीति पर गहरा प्रभाव डाला। मगाल गंग अस्तुतमिश क समय स ही  
 हमार दश की उत्तर पश्चिमी सीमाजा पर मडरान लग थ। उहान मुल्तान  
 तथा पजाव क भीतरी प्रेशा पर अनक धाव मार। बनवन की मृत्यु क बाद  
 उहान हिन्दुस्तान क मध्य भागा पर आक्रमण मिय जीर अनक बार दिल्ली  
 का घर लिया। इसलिये मुल्ताना की सीमाआ की कितबन्दी तथा रक्षा क  
 काय का प्राथमिकता दनी पनी। हम पिछन एक अध्याय म लिख जाय है कि  
 मगात आक्रमणा क कारण बनवन जस मुल्तान का भी आंतरिक प्रदेश का  
 विजय तथा बिद्रोह क दमन क आवश्यक काय की आर से ध्यान हटाना पना  
 था। इसक अतिरिक्त मगाला के हमला स असल्लुष्ट तत्वा का भी प्रासाहन  
 मिना। जब कभी उनक आक्रमण हुए हिंदू सामन्ता तथा बिगोही मंत्रिवा  
 और अमीरा न अनिवाय रूप स उपन्व खड बिय। बनवन शक्तिशाली सरकार  
 ही परिस्थितिया का मुकाबला कर सनती थी। मगोल समस्या का सत्तनन क  
 भाग्य पर एक और भी प्रभाव पडा। चौदहवी शताब्दी क उत्तरार्द्ध म जब  
 मगात का भय जाता रहा ता दिल्ली सल्तनत का मनाबन भी क्षीण हा गया।  
 अब निरंतर सावधान रहना तथा सनाजा का तयारी की अवस्था म रखना

आवश्यक नया था। अतः मतिवा का मनापल गिर गया और उनका पतन होन लगा। मुस्लिम तुगलक व उपरान्त ऐसा काइ भी मुल्तान नहा हुआ किम उल्बकाति का मतिव वाप्यता हाती। जेता तर मतिर पत्ताधिकारिया वा मध्य था द्रो तथा भ्रष्टाचार एत मामाय नियम बन गया। मातरे मुल्तानों की सरकार शक्ति पर अवाग्बिधा थी जनता की अनुमति पर नहा। उमक कवन ता कनय्य व—शाति तथा व्यवस्था वाप्यम रचना जीर गजस्य वसूव करना। फीराज तुगलक वा छाबर जय किमी मुल्तान न प्रजा वा मतिव मति क लिए पुन भा नहा किया। अतिए एग वा वाम्भरक जनता म मुल्तान वा समयन करन की आगा नही वा जा मनी था। कभी-कभी प्रजा मुल्ताना क विहद जानदूहरर काय करन लगती थी क्याकि थ उम पर शासन करन थ। अतएरन क लिए रडिया वा कूठ विद्रोहिया अथवा डकुआ न बध कर लिया था। वाम्भरक जनता अपन शासका क विषय म क्या सोचनी था एग बात वा उम युग क तरावा क श्रधा म पता नही गता है। उत्कीण लया म भा एम उम विषय म काई महायता नही मिलनी क्याकि व अतिमयोक्तिपूण शता म निम हूँ। किन्तु यन् निश्चित प्रतीत हाता है कि जना अपने शासका क प्रति उन्मील था जीर एम बात वा भा बिन्धा नहा करता थी कि शिनी की गता पर कीर विराजमान है। हिन्दुआ न मय क समय म कभी रिना मुल्तान की मयायता वा न इमरा काई प्रमाण नही मिलता।

हमारे समाज पर तुर्की शासन का प्रभाव

जब जय तुक अफगान शिराता तथा अय मय रनिया जानिया अमार एग की जीनकर यनी बन गया और जनता क मयप म आपी ता उन्तन समाज और मयृति पर प्रभाव डाला जीर उमम मय नी प्रभावित हूँ। शिन्तुव तथा अन्तार क पारम्परिक धान प्रतिघात वा शिन्तान अत्यन्त शिन्तान है। आरवा तथा तथा शाशितिया म अन्व माग यन् मय्या म शिन्तानी आरव क पूरवा तथा पश्चिमा शिन्तान पर उम मय। मया पर प्रथम धार शाना धर्मों का मयपव अन्ना और उन्तान एग-दूगर का प्रभावित करता आरम्भ कर लिया। उनरी भारत जयवा का मिय विजय तक अन्तामी प्रभाव म मुक्त रहा। अन्तान का भारतीय मयृति पर प्रभाव —विषय का हा। ताराबन् न विषय अध्ययन किया है। विषय क उन्तान म जाकर व एम शिन्तान शिन्तान पाहा है कि शिन्तानवाय मया पर भा आ आरवा अन्तानी क अतिम अपका तथा एग क प्रारम्भिक यनों म आ ५ अन्तामी धम-अन्त का प्रभाव पया था यदकि कय यथाकार करन है कि इमार मन का पुति क लिए काई प्रथम प्रमाण उपलब्ध नही है। यन् शिन्तानवाय न अन्तान ६५५

या का गिद्धात् इत्याम म प्रण किया ता उन्तो मूर्ति पूजा का जिनके गभी  
 मुगन्तमान धाम्प्रकार कट्टर विरोधी है क्या गण्डा नहा किया । इस अनि  
 रिक्त क्या यं गत्य नहीं हो सकता कि जाना जानिया न एक दूसरे स प्रभावित  
 हुए जिना स्वार्थ रूप म अपनी धामिन् तथा धमनिर्णय विचारधाराआ का  
 विकास किया है । गवरासाय कं मन्त्रध म ता यं वात और भी अधिक  
 मरय है सक्ती है क्याकि म्ग गभी स्थीकार क्ता है कि अन्त म्शन कं मीज  
 श्रनिया म रिद्यमान है उनक (मकर) सिद्धात् प्राचीन क्रिया की गि ताआ  
 के विकास मान थे । पुन भी गरी कम म कम उत्तर भारत म तुक तथा  
 जफगाना री उपस्थिति का हमार धामिन् विचारा तथा क्रियाआ पर कोई  
 प्रातिकारी प्रभाव नहीं पडत । भक्ति जागानेन जमा कि हम पहन तिल  
 जाय है हिन्दुत्व तथा इत्याम क गीरे सम्भव का परिणाम नहीं था । इस युग  
 म दश की कराना जनता जहाँ तक उसक धामिन् विचारा तथा अनुष्ठाना का  
 सम्बन्ध था पूणतया अप्रभावित र्णी । हमारे उच्च वर्गों न निस्सन्देह दाना धर्मों  
 तथा सम्प्रदाया म सम्बन्ध स्थापित करन का प्रयत्न किया । उत्तर तथा श्तिण  
 दाना जगत् हमारी जनता तथा नताआ ने नव जागतुका क साथ उत्तरता का  
 व्यवहार किया । गवत्र विदेशिया को सम्मानपूण स्थान मिला और उह  
 स्वतन्त्रतापूर्वक हिन्दुआ म मुमन्तमान बनान दिया गया । हमारे कुछ नताआ  
 मुधारका जीर जाचार्यों न ता सुत्र रूप स एकता तथा मत्री का उपदेश किया ।  
 उदाहरण क तिए कबीर तथा नानक न इस तथ्य पर जोर दिया कि हिन्दुत्व  
 तथा इत्याम एक ही उद्देश्य री प्राप्ति के दो भिन्न माग है और राम तथा  
 रहीम कृष्ण तथा करीम और जहानाह तथा श्वर एक ही ब्रह्म के विभिन्न  
 नाम है । उत्पान कमकाण्ट तथा धम क बाह्य आडम्बरा की निष्ठा की और  
 भक्ति तथा जीवन की पवित्रता पर जोर दिया । हिन्दु मुसन्तमान सामूहिक  
 रूप स पृथक् रूप और हिन्दुआ न एकता तथा सम्बन्ध के तिए जो प्रयत्न किये  
 उनके महत्त्व को ये न समझ । हमारे बीच म इत्याम की उपस्थिति के दो  
 प्रभाव पड । पहला यह है कि इत्याम क प्रचार सम्बन्धी उमाह ने जिसका  
 उद्देश्य हिन्दू जनता पर विदेशी धम नादना था हमारी जनता को अनुत्तर  
 प्रवृत्तिया को पुष्ट किया । हिन्दू नताओ को विश्वास हा गया कि विचारा और  
 व्यवहार म कट्टर होना हा अपन धम तथा समाज का इत्याम के आघात से  
 बचाने का परमाश्र माग है । इसतिए जानि सम्बन्धी नियमा को अधिक जटिल  
 बनाने का प्रयत्न किया गया । दैनिक जीवन के नियमा को क्तनी कठोरता स  
 निर्धारित किया गया जितनी कि पश्चिम कभी नहीं देखी गयी थी । श्रतियो म  
 आचार विचार क तये नियम बनाय गये । माधव विश्वेश्वर जाति विद्वानो न  
 टीकाए तिली और जनता के तिए कठोर धामिन् जीवन का विधान किया ।

वान विवाह प्रचलित हो गया। पत्नी प्रथा बढारता में नगमू का गया। पान पान तथा विवाह के सम्बन्ध में भी अत्यधिक जटिल नियम बनाये गये। दूमरे श्वारे ननाआ तथा सुधारका न श्नाम के कुछ लाकनाश्रिक मिद्वान्ता को शृंग कर लिया जानिया की समानता पर जोर दिया गया और कहा कि जानि मान के माग में बाधक ननाहा मरनी। भक्ति आशानन यद्यपि हिन्दुव तथा श्नाम के सम्पक में प्रयत्न फल नहीं था फिर भी कुछ ही नये उम पर श्नाम की उपस्थिति का प्रभाव पया। हमारे सुधारका न श्वर तथा धर्मों की भौतिक एकता का श्पन्त दिया स्त्री प्रकार हमारे मास्त्रि पर भी कुछ प्रभाव पया यद्यपि वह बहुत गम्भिर नहीं था। उम युग में बहुत कम हिन्दुआ न अरबी तथा फारसी का अध्ययन किया। उम युग के सम्भूत तथा श्नी श्नाम की विषय वस्तु जयवा शरी पर श्नाम का कोन मरात्नीय प्रभाव नहीं शीय पहता। अमीर सुमरव के वां श्चिता में बार्ई उन्वतनीय सगलन नहीं हुआ इमतिण भारतमाय सगल पर श्नामी विचार का प्रभाव नहीं पया। इम वान का भी प्रमाण नहीं मिलता कि श्नी के प्रारम्भिक तुव अफगान शासका का चित्रकला में किमी प्रकार का प्रेम था। भारतीय चित्रकला विशिष्टा का उपस्थिति में प्रभावित हुए बिना अपन श्म में विकसित शनी रहा। तुव-अफगान शासन का हमारा जानि के चरित्र तथा प्रताप पर दूषित प्रभाव पया। हमारे उच्च तथा मध्य वर्ग के लोग का प्रतिनिधि शासका के सम्पक में आना पहता था श्मतिण जीवन निर्वाह करने के लिए उह धर्म सम्भूति तथा अर्थ विषया के सम्बन्ध में अपन विचार तथा भावनाएँ छिपानी पन्ता थी इममें उनके चरित्र में दाम भाव तथा सादृक्ताश्रिता का समावेश हो गया। श्मार अनेक दशवागा श्पन्त तथा प्रशसन हो गये। यहा कारण था कि श्नी श्मतिण आचरण की गरमता वाचना माह्य आंति गुणा का गये बटे।

तुव अफगान विद्वाना हमारे धर्म तथा सम्भूति के प्रभाव में अपन का पूरा तथा सुवने रगना श्पन्त थे विन्तु पन्ता करना श्वर श्मि भा सम्भर न हो गया। जिन श्चिद्वा न श्नाम अगाकार कर दिया वे अपन माय अपन पूजना के विचार तथा शीति श्चिद्वा का लन गये। मुगलमाना में फकीरा शीरा तथा मकदरा का पूजा प्रचलित हो गया। यन् श्चिद्वा में प्रचलित श्चानाय तथा जायाय श्पन्ता की पूजा का हो दूमरा कर था त्रिमय श्चानाय मुगलमान श्चकारा न पा गये थे। मुगलमाना के श्चकारा विन्वरेर गुणाय का हिन्दु श्चकारा में श्रेष्ठा मिली था। कुल मुगलमान विज्ञाना न था श्चकारा श्चिद्वा श्चिद्वा का अध्ययन किया और कुल न श्चिद्वा चिकित्सा पढी तथा श्चानिय शीरी। तुव अफगान शासका को भारतमाय भोजन अपनाना पया और श्चान श्चकारा श्चकारा की लक्ष्य श्चकारा श्चकारा का अन्वरण किया।

शासन के क्षेत्र में भी ये हमारी आत्मा तथा परिस्थितियों का प्रतीक बनने पर बाध्य हुए विफलता उठाते जिनका सम्बन्ध वित्त तथा राजस्व विभागों में था। मुद्रा में भारतीय इस्वीयारा का प्रयोग करना उनका विरोध था। अन्तर्देशीय व्यापार का जिन विदेशी अपने माय भाव भारतीय बना परम्पराओं के प्रभाव के कारण स्थायी नहीं गया और उसका मुद्रा अन्तर्देशीय रूप में ही जमा हो रहा। जमा हो रहा अत्यन्त लम्बे आय है हिन्दी मुद्रा। तथा प्राचीन शासकों ने जिन अन्तर्देशीय का निमाण कराया वह हिन्दू तथा विदेशी मूल्यमानों की मूल्य प्रतिभा और प्रयोग का फल था। यद्यपि शासकों ने पारसी का इस्वीयारा बनाया किन्तु उनका विरोध देनी भाषाओं में सम्मिलित करना आवश्यक हो गया जिससे परिणामस्वरूप उद्द का जन्म हुआ। इस प्रकार पारसीय सम्पत्ति के कारण धीरे धीरे भाषाओं का सम्बन्ध हुआ। इस प्रकार मुसलमानों के रीति रिवाजों तथा शिष्टाचार में भी गम्भीर परिवर्तन हुआ। देश के जनसंख्या में भारतीय मुसलमानों ने अपनी मूल्य मानों का बनाया गया। कुछ कुलीन मुसलमान परिवारों ने हिन्दुओं की सती तथा जोहर की प्रथाओं का अपनाना किया। मि. टाण्डल का यह कथन उचित नहीं है कि सब कुछ कह चुकने के उपरान्त इस ध्यान में सम्मिलित रह जाना कि अन्तर्देशीय न हिन्दुत्व पर जिनका प्रभाव डाला उसमें कहा अधिक परिवर्तन हिन्दुत्व में अन्तर्देशीय में कर लिया है हिन्दुत्व जिन मूल्यों तथा विश्वास के साथ अपने माय पर आज भी अग्रसर हो रहा है वह आश्चर्यजनक है।

हिन्दू मुसलमानों की आत्मसात क्या नहीं कर सके ?

सभी विद्वान इस बात का मानते हैं कि प्राचीन हिन्दू समाज की पावन शक्ति इतनी तीव्र थी कि यूनानी शासकों द्वारा प्रारम्भिक आक्रमणकारियों का उसका पूर्ण रूप में अपने में विघटन कर लिया। किन्तु इसका विपरीत वही हिन्दुत्व तुल्य अफगान विदेशियों का हिन्दुकरण करने में असमर्थ रहा। कुछ लोगों का विश्वास है कि हमारे पूर्वजों ने इन नव आगन्तुकों को अपने में समाज का प्रयोग नहीं किया और यदि हिन्दुओं ने मुसलमानों का अवसर लिया होता तो वे भारतीय दृष्टिकोण भावनाएँ तथा जीवन प्रणाली को अवश्य ही अपना लें किन्तु हिन्दुओं ने उन्हें अपने से दूर रखा और उनका लान चान तथा विवाह आदि का सम्बन्ध नहीं कायम किया। यह मत पूर्णतया सही नहीं है। एक अकाध्य प्रमाण उपलब्ध है जिनमें सिद्ध होता है कि प्रारम्भ में हिन्दू जनता तथा शासकों ने अरबों और तुर्कों के साथ अत्यधिक उत्प्रेरणा का प्रयोग किया। अन्तर्देशीय भारत में जहाँ कहीं शताब्दी में ही अरबों का बड़ी संख्या में बस गये वे हमारे शासकों ने उन्हें व्यापारिक सुविधाएँ ही नहीं दीं बल्कि हिन्दुओं को अन्तर्देशीय अंगीकार करने के लिए प्रोत्साहित किया। कालीकट के

जमाग्नि न आता जागी की कि भर गाय म जितन नी मठआ क परिवार है उनम म प्रयत्न म एक अथवा अधिक पुत्र्य मन्त्र्या तः मुमन्तमाना की भक्ति गालन-यापण किया जाय । पशुवर्ती युग क सुरापीय व्यापारिया की भक्ति जग्या का कुछ व्यापारिक विधायायिकार मिन दृष्ट धे जा तेशी व्यापारिक समुदाय का मन्त्र प्राप्त थ । जमा कि म्म अयत्न तिम चक है सिद्ध मुधाग्वा तथा आचार्यों न सिग्याया कि सिद्ध तया म्मनाम एक म्म म्म म्म नर पद्वैवा क रिण म्म भिन्न मात है । उन्तन क्क कि गम और म्मम कृष्ण और करीम अन्तत् तमा र्कवर एक ही गति क विभिन्न नाम है । उन्तन पुरातिया क कमराण्ण तमा बाह्य आम्भरा का निष्ठा कर्क तथा भक्ति पर बन कर सिद्ध तथा मुमन्तमान म्मना सम्प्रदाया म्म क्वला तथा म्मथी म्म्यायिन करन या इन्म म्म प्रयत्न किया । विन्धी मुमन्तमाना का आम्भर तथा सम्मान ती नर्ण किया गया बल्कि म्मनाम अगीकार करन वान भागतीया क हाथ भा निम्न जानिया क सिद्धा की अपथा अधिक जन्म तथा सम्मानपूष ध्यवन्तर किया गया । एक वान म्म अवश्य इमार तोगा न विन्धिया क गाथ शिष्टता का ध्यवन्तर म्म किया । उन्तने उनक माप स्वाध्यायन तथा विवाह का सम्बन्ध म्म कामम किया । म्मका कारण नी म्म म्म था । सिद्धा का म्मगीर म्मना निवाग-म्यान तथा मन की म्मना और म्मन्तना म्म म्म म्म विन्धाम म्म है । म्मक सिग्गीत तुव तथा अपमान क्क भागतीय मुमन्तमान भा म्मग्गीनी अग्या जमा जीवन विन्धान का म्म करन थ । म्मक प्रतिग्वित सिद्ध अधिरन्तर निगमिपनाती थ और जा म्मग गान भा थ व म्म म्म म्मना पाप मानन थ । जवकि मुमन्तमान मन प्रतिग्वि मामागरी । और या म्म तथा गा म्म म्म म्मनागन का उद्यत म्म थ । थ भक्ति क्क म्म का म्मरीर करन क रिण तयार नहीं थ । म्म अपन धम पर पमम म्म और म्मक धम क्क मनवन् निश्चिन्त क्कार तथा जन्म है म्मगिण उनका ध्यवन्तर म्मनाम क्क क्कर प्रचारका जमा था । एन और पाप था । मुमन्तमाना का जाति-म्वम्पा पर आपाग्नि तथा आचारिक पुत्रा म्म दान विगत सिद्ध-ममाज म्म विनीन इतन म्म क्क नाम म्म हा म्मका था । म्मक अतिग्वित म्मन सिद्धाग्रा क्क अनुमन्त्र म्मकार था और म्मगिण अथा पुषक म्मसितर का म्माम म्मन क रिण व दूध प्रतिप थ । म्म सिद्ध म्म म्म म्म म्म थ ता क्क सिद्धों का क्कदिग क्कार म्मना सिग्गीर क्कन थ । सिद्ध धम प्रचारका म्मदा आचार्यों का उन म्मना पर म्मन्तना तथा मिन म्मनी थी जा म्मनाम म्म म्मना हान वाना तथा मुमन्तमाना का अपना धम म्मना क रिण पुमवान धाना का म्मन्मन्म का अधिरागी म्मना थ । म्मि क्क सिद्ध विमन इन्माम अगीकार क्क निदा था पुन अपन पुषका क्क धम का धाम म्मोटी की म्मना प्रक क्कारा गा म्मना क्क क्कना क्क अनुमन्त्र म्म





## दिल्ली के नासिरुद्दीन खुसरवशाह की उत्पत्ति

खुसरवशाह मुबारक खानजी के बान् ७७ अथवा १२१० ई की नासिरुद्दीन खुसरवशाह लिखा की गयी पर वटा और ५ मिनम्बर १ २० ई तब उमर शासन किया । लिखी मन्तवज-काल (१२०६ १५२६ - ) में दिल्ली की गयी पर आसीन था एक भारतीय मुसलमान था । भारतीय इतिहासकारों के लिए हमारा उत्पत्ति एक विवादास्पद विषय बना हुआ है । यह सम्भाव्य है कि वह एक गुजराती हिन्दू था और १३०५ ई में मालवा पर एक उन्मुख मुस्लिमों के आक्रमण के समय उमर हार गया । तत्पश्चात् उमर मुसलमान बनाया गया और उसका नाम हमर रखा गया । वह मुस्लिम अनाउद्दीन ख्वरज़ी के शीखों में भरती किया गया और शरवार के डिप्टी हाजिब मलिक शाही के अधिकार में रखा गया ।<sup>१</sup> घन-परिवर्तन अर्थात् मुसलमान होने में पूर्व वह किस जाति का था इस सम्बन्ध में मसकानीन इतिहासकारों ने तीन भिन्न मत व्यक्त किए हैं उहान उस अलग अलग बराना (Barado) बराव (Barao) तथा बरवार (Barwar) बताया है परन्तु ये तीनों एक ही शब्द के विकृत रूप प्रतीत होते हैं । अमीर तुगलक ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ तुगलकनामा में हमर का बराना<sup>२</sup> लिखा है इमामी ने यह बरव<sup>३</sup> कहा है और जियाउद्दीन बरनी ने उसे बरवार<sup>४</sup> बताया है । उन्मुखानीन चरवा<sup>५</sup> अर्थात् शब्दों में भी लिखा एक न एक का मान लिया है । इनमें से कुछ ने तो शब्दों के अर्थों का समझकर इसे अपनाया है किन्तु कुछ ने अर्थ का बिना समझ ही शब्दों का प्रयोग कर लिया है । उदाहरण के लिए शरीफ-उ-मुबारकशाह ने बराव<sup>६</sup> लिखा है तबकानत अरबकी में भी बराव<sup>७</sup> लिखा है मूलतः उन

१ बरनी इत शरीफ उ पीराउद्दीन (फारसी लिपि) पृ० २८१ ।

२ औरंगजाब मूल पाण्डुलिपि पृ० १६ ।

३ पुस्तक उम-अलानोन (आगरा में प्रकाशित प्रति) पृ० २६२ में बराव लिखा है । तिसराउद्दीन मन्तवज बरन खाला का पठनी है लिखित एक मुसल (हिन्दी) के स्थान पर तीन मुसल लगा दिए हैं ।

४ शरीफ-उ-पीराउद्दीन (बरेलली में प्रकाशित मूल पाण्डुलिपि) पृ० ४६० ।

५ शरीफ-उ-मुबारकशाही पृ० ८५ ।

६ तबकानत अरबकी लिख एक पृ० १०५ ।

तयारीय म बर्यार<sup>७</sup> त्रिगा है और परिष्ठा न पर्यार<sup>८</sup> त्रिगा है। एमा  
 गात हाता है त्रि लेगर (परिष्ठा) भूस से बर्यार की जगह पर्यार त्रिग  
 गया है। मध्यरात्री इतिहासकारा न इमा को नीच जाति का मुजराती  
 बताया है त्रिगव वजन प्रसिद्ध और निर्भीक घोड़ा र<sup>९</sup> व।<sup>१०</sup> त्रिनु क्याकि  
 इमा ही पन्ना भारताय मुमनमान था त्रिगा कुतुनीन मुजरात का बध बरख  
 त्रिनी की मही का इस्तमन करने का नाम त्रिया था वम जब तक त्रिनी  
 की मही पर मध्य एशिया न त्रिशी तुर्कों ता ही एकाधिपत्य रहा था  
 अणव तत्कालीन इतिहासकारा न त्रिशी मुमनमान और पेशवर धम प्रचारक  
 (मोल्बी) इने व ताते हसन व त्रिग नीच वमीन वृत्तधन नमकराम तथा  
 धृत आत्रि शन्ता का प्रयाग त्रिया है। एन थाथी बताया म ही प्रभावित हाकर  
 यूरोपीय इतिहासकारा न भी मध्या कपना कर ती है त्रि बरखार आजकल  
 का पर्यार या परवारी ही रण होगा। कुछ यूरोपीय इतिहासकारा ने ता  
 गम्भीर चिन्तन व बिना ही यह निष्कर्ष निरान त्रिया है त्रि हसन उपनाम  
 तुमरवशाह परवारी या घृणित चाण्डाल था जिसके स्पश मात्र से ही  
 उच्च वण के हिन्दू अपन जापको अपवित्र मानते थे। परिष्ठा व अनुवादक  
 त्रिगस न सबप्रथम हसन व सम्बन्ध म एम प्रकार कता है— परवारी एक  
 जन्तु हिन्दू है जा सबप्रकार का माम ग्याता है और इतना गन्ता रहता है  
 त्रि गन्ती व कारण एस नगर म मरान बनाकर नही रहने त्रिया  
 जाता।<sup>११</sup> मोल्सबथ व अनुमार परवारी एक नीच जाति है। इम  
 जाति के नाम प्राय गाँव व चौकीदार त्रारपान अथवा भारवाही होत हैं।  
 परवारी भी डड जीर माहुर जाति व समान एक जाति है।<sup>१२</sup> एडव  
 थामस नामक एक अन्य प्रसिद्ध इतिहासकार न भी त्रिगस के कथन की ही  
 पुष्टि की है।<sup>१३</sup> मायता प्राप्त यूरोपीय इतिहासकारा म बूल्जन थ्य  
 नवीनतम<sup>१४</sup>। आपन इस विषय म अपने विचार ज्यत दृष्ट शन्ता म  
 व्यक्त करत हुए कहा है नीच तुमरव उन नीच जातिया म से एन जाति  
 का था त्रिग सबण हिन्दू जम्पृश्य जीर अपवित्र मानते हैं त्रिगका मुख्य  
 पशा (यवसाय) महतर का होता है जीर जा उन मृत पशुओं का

<sup>७</sup> मुनगाव उन तवारीय त्रिद एक पृ० २३।

<sup>८</sup> परिष्ठा पृ १२४।

<sup>९</sup> तुगनकनामा पृ० १६ परती पृ० ५१६ इनबतूता त्रिद तीन  
 पृ० १६८ परिष्ठा पृ० १२४।

<sup>१०</sup> परिष्ठा (अनुवादक त्रिगस) त्रिद एन पृ० ३८७—नोट।

<sup>११</sup> मोल्सबथ वृत्त मराठी-अधजी डिवशनरी (त्रितीय सम्करण) पृ० ४६२।

<sup>१२</sup> वोनियल्स जाव द पतान त्रिगस आव दन्ती पृ १८४—नोट।

मान जाता है जिन्हें घूर या मल में बाहर फेंकना उसका काम है।<sup>१३</sup> आधुनिक भारतीय इतिहासकारों में जिन लोगों ने यूरोपीय इतिहासकारों के मत का ही स्वीकार कर लिया है डा इश्वरीप्रसाद और डा महंताहूमन के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। डा ईश्वरीप्रसाद का अपनी ही विद्वत्ता के उपाधि के लिए (The Qaraunah Turks in India Vol I) जिन अनेक विद्वान्तास्पद विषयों का निणय करने में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ा उनमें से नामिल्लीन की जाति का निणय भी एक समस्या है। २४० शब्दों की पुस्तक लिखनी में डा इश्वरीप्रसाद ने हम पर प्रकाश डाला है और अंत में लिखते हैं मल का ही घूरान स्वीकार कर लिया है (Refer Qaraunah Turks in India Vol I pp 8 11—fn 21)। आपन तो मुगल का और भी अधिक नाच बलनाया है। मंगोलो-तुर्कवा के समान आपन भी उस लम्बा जानिल्लीन जयविषय परिवार बताया है जिसमें सभी मरण घूना करते हैं। डॉ महंताहूमन का कथना है कि बख्शार शाह का चित्त परिवार का जगत् छप गया है (Refer Rise and Fall of Muhammad bin Tughlaq p 28—footnote) किन्तु अंत में आपन भी लिखते लम्बा घूरान ही मल का ही स्वीकार कर लिया है।

यूरोपीय इतिहासकारों में एक लम्बा नाम है डा मुसतमान इतिहासकारों का उमर शेर आधेय का मतत्व महा लता जा उपाधे नामिल्लीन मुगल के सम्बन्ध में लिखा है। उन लोगों के मतानुसार मुगलशाह परमार राजपूत था। आदर्श के लिए जम्म बह न भोगत-ल अल्पनी के अग्रजा अनुवा इस्ली अर्ध मुजरात में लिखा है कि बख्शार परमार का हा रूप है।<sup>१४</sup> बनी<sup>१५</sup> और राजर्षियम लीनर<sup>१६</sup> ने भी उमर हा मल का समर्थन लिखा है। अपना पक्ष में उमर मुख्य तर्क है—(१) लिखते में घूरान परमार का परिवार लड़ लिया है। (२) मुगलशाह इतिहास जाति का कभी नया हो सकता ब्याक्ति उमरकी जाति के लोग ना पागला और गनिह-लता के लिए प्रसिद्ध शोध और उपाधे औरन को मकर में शानकर मुद्रा में अपनी बीगता का परिचय दिया था तथा साथ ही साक्षात्क के कर्मों को लिख साध्या में उपाधे लिखा उपाधे जाति के व्यक्ति लता कर मल ५।

<sup>१३</sup> इतिहास इस्ली आर इस्लिया लिखते में पृ १०।

<sup>१४</sup> इस्ली अर्ध मुजरात पृ० १९७।

<sup>१५</sup> महारत मंगलशाह शासनकी ल मुजरात पृ० ६१—नाम।

<sup>१६</sup> इस्ली अर्ध इस्लिया अर्ध अतिरक्त लता लिखते पाठ लता १ पृ ६८।

उक्त शीर्षक मा अनुमान अथवा कल्पना पर आश्रित है अतः अविश्वसनीय है। प्रथम अरबी विधि में लिखा गया प्रमाण अथवा परमाणु कभी परिवार नहीं पड़ा जा सकता क्योंकि पहला भीम (१) में लिखा जाता है और दूसरा याव (२) से। यह बात माता यावय नन्दा है कि उसने से परिष्ठा तक जितना भी सगभण एक राजन चलाया। पर फारसी के ग्रंथों का सम्पादन किया जा गभीर शिष्टा (spelling) की भूत की हा और फिर वह भूत आजकल पर फारसी के विज्ञान इतिहासकारों की दृष्टि से भी निरस्त नहीं है। दूसरे यदि सुमरवशाह यावय में प्रमाण माना जा तो वह भी मिमोन्धिया राजौर तथा कल्याण की भांति सामान्य राजपूत बना जाता। मध्य युग के मुसलमान राजत शासियों की इन जानिया से भनीभांति परिचित थे और यदि वह परमार हाना तो वे (मध्य युग के मुसलमान राजत) उम नीच जाति का हिन्दू बनापि नहीं लिखते। प्राफेसर श्लीवाना<sup>१०</sup> ने यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया है कि अमीर सुमरा से परिष्ठा तक मध्ययुग के सभी मुसलमान इतिहासकार हिन्दुओं की जाति उपजाति तथा फिस्वा की जन्मिता से अपरिचित थे किन्तु यह बात सत्य प्रतीत नहीं होती है। हम आप चतुरर देसोंगे कि कम से कम अमीर सुमरा बरनी निजामउद्दीन अहमद और बन्धुना ता सुमरवशाह की असनी जाति से भनीभांति परिचित थे। अन्तिम बात यह है कि सुमरवशाह के सम्बन्धी प्रायः सभी हिन्दू थे और उनके नाम जहारिया रखी जाति थे (रामधोत्र नाम चलन है जसा कि प्राफेसर थोराम शमा ने भूल से अनुमान लगा लिया है)। इन नामों में जान हाता है कि सुमरवशाह की असनी जाति परमार जयवा कोई उच्च शिष्ट जाति नहीं रही होगी वरन् वह जाति कोई नीची जाति ही होगी।<sup>१५</sup>

परन्तु ऐतिहासिक तथ्य की दृष्टि से सुमरवशाह भनी जाति का भी प्रतीत नहीं माना। पहली बात तो यह है कि मध्यकालीन इतिहासकारों ने उसे नीच जाति का तो कहा है किन्तु उनमें से किसी एक ने भी उसे अथवा उमके पूर्वजा का महत्तर जाति का नहीं बताया है। यह सूझ ब्रिग्स की उबर कल्पना मात्र है जिसका दूसरे यूरोपियन इतिहासकारों ने भी अनुकरण कर लिया है। दूसरी बात यह है कि सुमरवशाह तथा उसकी जाति के लोग गुजरात के रहने वाले थे और १३२ ई. में गात्री तुगलक पराजित होकर वहां भाग कर चले गये थे। गुजरात में महत्तरों की परिवारी नहीं रहती है किन्तु ब्रिग्स

<sup>१०</sup> स्टीडिज इन इण्डिया मुस्लिम इस्ट्री पृ० ७०।

<sup>१५</sup> बरनी इन इण्डिया एण्ड डाउसन जिन् तीन पृ० २२२ तथा तबकान ए-अकबरी जिल्द एक पृ० १५७।

तथा एवम् घामस न बरवार या परवार का परवार शब्द स निकाला हुआ मान लिया है। गुजरात में परवारी शब्द या माहर का पर्यायवाची नहीं माना जाता है। तीसरे समकालीन तथा उत्तरकालीन प्रमुख इतिहासकार स्वीकार करते हैं कि सुमरवशाह तथा उनका जाति का नाम धार माडा था और उनमें से कुछ तो अत्यन्त समृद्धशाली एक श्रेणी के प्रतिष्ठित लोग माने जाते थे। महत्तर दंग में परदत्तित हा गृह्त आय है और इन्होंने धाढ़ा अथवा प्रशासक के रूप में कभी भी कार्य नहीं किया है।

प्रस्तुत सप्तक विभिन्न कठिनाइयों के हात हुए भा प्रारम्भिक हानावाला था कि एम लाल तथा प्रारम्भिक थाराम शमा के इस मत से सहमत नहीं है कि सुमरव की जन्मी जाति का नाम ता का पना है और न पना उगाया हा जा सकता है।<sup>१६</sup> फारमा के तत्कालीन मौखिक ग्रन्थों से परिचित भारतीय मध्यकालीन इतिहासकार यह अवश्य स्वीकार करते हैं कि सुमरवशाह का जाति का वाचक जितन भा शब्द का प्रमाण किया गया है वह सब बरवार शब्द का ही रूपान्तर है। जिमाउद्दौल बरनी ने जो सुमरवशाह का मित्रबुद्ध तत्कालीन या सुसम्बन्ध के सम्बन्ध में बार बार कही शब्द का प्रयोग किया है। यह भी निश्चय है कि बरनी तथा फारमा के अन्य विद्वान इतिहासकारों ने जिन बरवार शब्द का प्रमाण किया है वह बरवार (Bharwar) या भरवाड (Bharwad) से ही मिलता जुलता है। अरबों विधि में ये ताना शब्द ही प्रायः समान रूप से लिखे जाते हैं और फारसी का घमात्त में वह एक से ही पढ़े जाते हैं जिनके कारण शब्दों के अन्तर्गत रूपों के जानने में भ्रम हा सकता है। एम भाय गुजराती शब्द-कोष के अनुसार भरवाड या भरवार शब्दों का अर्थ गर्भिया<sup>१७</sup> है और सुमरवशाह के जन्म-स्थान गुजरात प्रांत में भरवाड का आधिकार है। उनमें से पहले भा बहुत-से लोग पनवान था और अब भी है। ये लोग पहले का भीति आज भी नये पावन और गता करते हैं। गर्भिय हिन्दुओं में न तो उच्च जाति के समझ जाते हैं और न समार धानुक पामी या भगा के समान नाम जाति के। ये भरवाड (जो उत्तर प्रांत में गर्भिया कहलाते हैं) अहार कुर्मी और साधे के समान हैं तथा अत्यन्त पुरातना और बतवान हुए हैं। इन गुणों के कारण हा अमीर और राजा इन्हें अपने अपने द्वारा पाने निजा तबक तथा सैनिक के रूप में नोकर रगत थे। निजामउद्दौल अहमद का

<sup>१६</sup> इन्हाज्जुन शब्द मुग्लिम हिन्दू पृ० ६६ हिन्दू भाव श गतजा पृ० १५१ नागिरहान सुमरवशाह इन इन्डियन हिन्दु रिक्व कशागता १८५०।

<sup>१७</sup> डी का कतकर हा जादनास (गुजरात विद्यापीठ द्वारा प्रकाशित)।

यह वषा टात है कि भग्वाहा का धरसू नौकरा क रूप म नौकर रगा जाता था और य ताग गुजरात म अधिा मरगा म पाय जात थ।<sup>२१</sup> यहिया न सुमरवशाह का पागारा या शरपात<sup>२२</sup> उािा ही बहा है और फरिशा का उस गुजरात क पहनवाा म म रर बनाा भा ठीक है।<sup>२३</sup> अत यह सिद्ध हाता है कि तानिरगीत सुमरवशाह गुजरात की भग्वाहा या गरिया जानि का था।

प्राफसर श्रीराम शर्मा न हात म अपना एन दूमरा मन व्यक्त करक म समस्या का और भी जटिल बना िया है। जापना कना है कि सुमरवशाह न ग्ा पर बना समय इस्लाम धम का परित्याग कर दश म हिंदू राय का स्थापना का प्रयत्न किया था यद्यपि उमन अपना नाम या उपाधि हिंदू नहा रगी था। प्राफसर शर्मा निगत है कि यह स्वाभाविक हा था कि मिहासन पर बठन समय ब् अपना पतृ धम का हा पुन अपना न। वह अपन पूर्ववर्ती शासका क शान्ती महन म रहा था और मिहासन पर बठन क समय मुसलमान रीतिया क स्थान पर हिंदू रानिया का हा पावन किया गया था। जिस प्रकार आठवा शताा म जाधपुर क राजा अजीतसिंह न प्रशासक राजा क रूप म का हिंदू उपाधि धारण नहा की थी उमी प्रकार सुसरवशाह न भी काई हिंदू उपाधि धारण नहा की थी।<sup>२४</sup> प्राफसर शर्मा का यह मत किसी समवाचीन जयवा उत्तरवाचीन प्रामाणिक त्त्व क आधार पर नहा बनाया गया है। उहान प्राचीन फारसी ग्रंथा म जा नहा निखा है उस पन् का प्रयत्न किया है। अमीर सुसरा स उरर फरिशा तक किसी भा त्त्व न न तो स्पष्ट रूप स और न गातमान यह बहा भा बहा है कि सुसरवशाह न इस्लाम धम का त्याग कर िया था और हिंदू राय स्थापित करना चाहा था। इसक विपरीत इतिहासकार निजामउद्दीन अहमद न स्पष्ट रूप स िया है चकि भरवारा म अधिकतर हिंदू धम क मानन वान थ अत इस्लाम की रीतिया का धक्का पहुँचा और मूर्ति पूजा का प्रात्गाहन मिला मूर्ति-पूजा का प्रचार हुआ और मस्जिद अपवित्र हू।<sup>२५</sup> द्ग पुष्ट प्रमाण स प्राफसर शर्मा क मन का गण्टन हा जाता है और अत म यह सिद्ध हा जाता है कि सुसरवशाह पहन की भांति ही मुसलमान रहा था किन्तु उसके महन म रहने वान उसके सम्बधी हिंदू धम का ही मानन रह थ।

<sup>२१</sup> तबकात ए अकवरी जिल्द एक पृ० १७६।

<sup>२</sup> तारीख ए मुसरवशाही पृ० ८२।

<sup>२३</sup> फरिशा जिल्द एक पृ० १२४।

<sup>२४</sup> एण्डियन हिस्टारिकल क्वाटरली १६५०।

<sup>२५</sup> तबकात ए अकवरी जिल्द एक पृ० १८७।

## दिल्ली के सुल्तानों का तिथि-क्रम

सुल्तानों का नाम	ईसा सन	हिजरी सन
<b>यामिनी-वंश</b>		
१ मसूद यामिन उरीगा (गजना का) भारत पर प्रथम आक्रमण	६६८ १०००	८८
२ मुम्मज	१० ०	४२१
३ मसूद प्रथम	१० ०	४२१
४ मोदूद	१०४०	४३२
५ मसूद त्ताय	१०४८	४४०
६ अला	१०६६	४६०
७ अलतुन रशाद	१०५०	४४४
८ परगजाद	१०५	४४४
९ इब्राहिम	१०५८	४५१
१० मसूद तृतीय	१०८८	४८०
११ गरजाद	१११५	५०८
१२ अरमनामशाह	१११६	५०९
१३ बहगामशाह	१११८	५१२
१४ तुमरबशाह	११५०	५४३
१५ तुमरब मन्विक	११६०-८६	५५५
<b>शासकना-वंश</b>		
१ मसूदीन मूरा	११४८	५६
२ अनाउदान हुगन जगत शाह समुद्रगि मुम्मज	११४८ ११६१	६४४ ५६
४ तियासुदान बिन माम	११६	५५८
५ मुदिमुदीन मुम्मज शाह गजना म सिगासनाराणा परदाय पर विजय शाह म गिहाननाराहन	११७ ११८६ १२०१-६	५६६ ५६६ ५६६
<b>तुनुबा-वंश</b>		
१ तुनुबुदीन लखन	१ ०६	६००
२ अरामशाह	१ १ ११	६०३
<b>इस्तुतमिग परिवार</b>		
१ इममुदीन इस्तुतमिग	१२११	६०७
२ तुनुदान परिवार	१२१६	६ ३



गुप्तार्थ का नाम	ईसा सन	हिजरी सन
१ रजिना	१२३६	६२३
८ मुईजुदीन बंगाम	१२६०	६३७
५ अगाउदीन मंगू	१२६२	६२६
६ तामिगरीन मंगू	१२४६ ६५	६४४
<b>बगदा-बरा</b>		
१ बहाउदीन बगदा	१२६५	६६४
२ मुईजुदीन बकुषा	१२८७	६८६
नामगुदीन बगुमार	१२६०	६८८
<b>गलजा-बरा</b>		
१ जगानु दीन फाराज गलजा	१२६०	६८६
२ रकुतुदीन इब्राहिम	१२६६	६६५
अताउता महुम्मद	१२६६	६६५
६ तिराकुदीन उमर	१३१६	७१५
५ कुतुबुदीन मुबारक	१२१६	७१५
६ तामिगरीन गुमरब (गलजा ११)	१२२०	७२०
<b>सुगनर-बरा</b>		
१ गियासुदीन सुगनर प्रथम	१२२०	७२२
२ मुहम्मद बिन सुगनर	१२२५	७२५
फाराज बिन राजर	१३५१	७५२
४ गियासुदीन शिमाय	१२८८	७६०
५ जयूषर	१३८६	७६१
६ मुहम्मद बिन फाराज	१३६०	७६२
७ मिबदर	१३६५	७६५
८ महमूद	१२६५	७६७
९ नसरतशाह	१३६६	८०१
१० महमूद	१३६६	८१५
११ दौनतला ११ (निवाचिन)	१४१ १५	८१५
<b>सय्यद-बरा</b>		
१ मिज्जली सय्यद	१४१५	८१७
२ मुईजुदीन मुबारक	१४२१	८२४
३ मुहम्मदशाह	१४३५	८३७
४ अलाउदीन जा नमशाह	१४४५ ५१	८४६
<b>लोदी बरा</b>		
१ बन्वान लानी	१४५१	८५५
२ मिबदर लानी	१५१७	६२६
३ इब्राहीम लानी	१५१७ २६	६२६ ३२

परिशिष्ट न

## मुरय प्रामाणिक ग्रन्थ

सल्तनत युग के इतिहास की जानकारी के मुरय साधन फारसी के और कुछ अरबी में हैं। इनके लक्षण बिना ही कुछ जयवा अफगान के उद्देश्य भारत में इस्लाम की प्रगति तथा दरबारी मामला में ही विशेष रुचि थी। वे बर्तानिक इतिहासकार नहीं थे। उनका ध्यान शासकों के कार्यों तक ही सीमित था साधारण जनता के जीवन में उद्देश्य निश्चयी नहीं थी। उनका ग्रन्थ का हम दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं—(अ) इतिहास ग्रन्थ तथा (ब) यात्रा-वृत्तांत।

### इतिहास ग्रन्थ

#### (१) खचनामा

यह ग्रन्थ अरबों की सिंधु विजय का इतिहास है और मौलिक रूप से अरबी में लिखा गया था। मुहम्मद अली बिन अबूबक्र कूपी ने नासिरुद्दीन बुवचा के समय में इमरा फारसी में अनुवाद किया और उसका शासक का समर्पित किया। हाल में बरौची के डा. दाऊदपाना ने इसका सम्पादित तथा प्रकाशित किया है। ग्रन्थ में मुहम्मद बिन कागिम के आक्रमण में पहल तथा बाद के सिंधु का सिंधु का सिंधु इतिहास दिया हुआ है। इसमें स्थानों के नाम तथा महत्वपूर्ण घटनाओं के विस्तृत वर्णन भर पड़े हैं। अरबों का विजय के समय सिंधु का दशा तथा विजय सम्बन्धी जानकारी के लिए यही हमारा प्रमुख साधन है।

#### (२) अकबर के मोर मुहम्मद मासूम गजिन तारीखे सिंधु, उपनाम तारीखे मासूम

यह सिंधु का विस्तृत इतिहास है और १६०० ई. में लिखा गया था। इस पुस्तक में अरबों की विजय के समय से अकबर के शासनकाल तक उम्र प्रान्त का इतिहास का वर्णन है। इसमें चार अध्याय हैं। यद्यपि यह ग्रन्थ तत्कालीन नहीं है और मुख्यतया खचनामा पर ही आधारित है फिर भी इसमें अरबों की विजय तथा मुहम्मद बिन कागिम के सफलता के कारणों का ठीक-ठीक विवरण दिया हुआ है।

#### (३) अकबर के मुहम्मद अल जबरत उतबा रजिन किताबल-यमीना

इसमें मुख्यतया तथा महत्त्वपूर्ण गजिनतों के नामों का १००० ई. तक का इतिहास वर्णित है। यह ग्रन्थ इतिहासिक की अफगा साहित्यिक अधिक है।

और अन्वयार्थ तथा टङ्गी मन्त्रा शब्दावलि का सभरा पन्ना है। उनका न यौरे की भाग नहीं थी है। महमूँ व जाफ़रमणा का एतसा हा वणन है उसन तिथियाँ भी कम थी है। एतसा व हान हुए भी महमूँ व प्रारम्भित जीवन तथा वायाँ व सम्बन्ध म यह प्रथम श्रणी का प्रामाणिक ग्रन्थ है।

#### (४) अबू सईद रचिन जनुल अलब्यार

मूलत यह ग्रन्थ रंगना का इतिहास है कि नु इससे महमूँ गजनवा व जावन पर भी प्रभाव पन्ना है। उस मुत्तान व कार्या का इमम जल्दा वृत्तान्त है एतसी तिथियाँ तथा घटनाएँ भी अधिक सहा है।

#### (५) अबुल फजल मुहम्मद बिन हुसन जल-बहारा रचिन तारीख मसूदी

इमम महमूँ गजनवी तथा मसूँ का इतिहास वर्णित है। दरबारी जीवन तथा पदाधिकारियाँ व कुचक्रा का इमम अच्छा चित्रण है। यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।

#### (६) अलबरनी रचित तारीख उल हिन्द

लखक का जन्म ६७० ७१ ८ म ह्वारिम म हुआ था। वह भारत आया तथा महमूँ गजनवी व यहाँ नीकरी कर ती। वह अरबों तथा फारसी का अच्छा विद्वान था। गणित चिकित्सा हनु विद्या दशन धर्मशास्त्र और धर्म म उसका रुचि थी। अपन युग का वह महान विद्वान था। उसने भारत म कई वष रहकर संस्कृत हिन्दू धर्म तथा दशन का अध्ययन किया। उसने दो संस्कृत ग्रन्थों का अरबी म और अनेक अरबी ग्रन्थों का फारसी म अनुवाद किया। वह अनेक ग्रन्थों का रचयिता था जिनम हमारे निय सजस महत्त्वपूर्ण तारीख उल हिन्द है। इसम ११वीं शताब्दी व आरम्भ व हिन्दुओं का साहित्य विद्वान तथा धर्म का जीवा देखा वणन है। उसन सर्वनापूर्वक चाजा का निरीक्षण किया उसन जो कुछ निम्ना वह सत्य तथा वर्णनापूर्ण है। महमूँ गजनवा व जाफ़रमणों व समय व भारत की दशा की जानकारी व लिए तारीख उन हिन्द प्रामाणिक मूल ग्रन्थ है। ग्रन्थ विद्वत्तापूर्ण अरबी म लिखा गया है। इसका फारसी म अनुवाद किया गया था। सचाऊ न इस सुन्दर अग्रणी म अनूदित कर लिया है। अलबरनी की १ ३८ ३६ ई म मृत्यु हुई।

#### (७) शख अबलहसन उपनाम इनुल असीर रचित कमोलुत तवारोख

लखक मसोपाटामिया का निवासी था। उसन अपना ग्रन्थ १२३ ई म पूरा किया। वह मुख्यतया मध्य एशिया का और विशपकर मार व शसबनी राज वश का इतिहास है किन्तु इसम मुहम्मद गारी की भारत विजय का भी अच्छा वर्णना है। इनुल असीर तत्कालीन लखक था इसलिए आलोचनात्मक निगम उसका ग्रन्थ की विशपता है। भारतीय विषयों का वर्णन बहुत ही सविष्ट है

और बह-मुन के आधार पर लिखा गया प्रस्ताव है। विधियाँ तथा मुख्य घटनाएँ अवश्य महा है।

(८) हसन निज़ामी रचिन ताज़न भासिर

यस ग्रंथ स ११६२ स १२०० तक की घटनाओं का वर्णन है इसलिए पुस्तकानुसार ग्रंथ के आवृत्त तथा नामन और अनुक्रमण के प्रारम्भिक वर्षों के इतिहास के लिए सम्बन्धपूर्ण प्रामाणिक ग्रंथ है। इसकी भाषा अत्यधिक अनूठ है। इसमें निज़ामी लिखा था। मुस्लिम शाही के एक आक्रमण के समय में वह भारत आया और यहाँ बस गया। तत्पश्चात् उसके ज्ञान के कारण उस सम्बन्धपूर्ण घटनाओं के सम्बन्ध में मूल जानकारी प्राप्त करने की सुविधाएँ उपलब्ध थी। इसलिए उसका पुस्तक लिखना मूलतः के प्रारम्भिक इतिहास के लिए मूल प्रामाणिक ग्रंथ है।

(९) मिनहाज़ुल अक़ उमर बिन मिराज़हान अल-जुज़िफ़ानी (मिनहाज़ उल मिराज़) रचिन तबक़ात नासिरी

यह एक तबक़ातान ग्रंथ है जिसमें इस्लाम के नामा के जगत का सामान्य इतिहास वर्णित है। इस १२६० ई में पूरा किया गया था। इस ग्रंथ का विषय महत्त्व यह है कि इसमें मुस्लिम शाही का भारत विजय तथा भारत का नवम्ब्यापित मुर्क़ी सन्तान का आरम्भ से लेकर १२५० ई तक निज़ाम ज्ञानकारी के आधार पर वर्णन है। मिनहाज़ इस मिराज़ तबक़ातान ग्रंथ का नाम था बल्कि जिन घटनाओं का उल्लेख वर्णन किया है उनमें से कुछ में उल्लेख स्वयं भाग लिया था क्योंकि नासिरी के समय में उल्लेख लिखना के मुख्य बाधा के पर बाध किया था। किन्तु मिनहाज़ लिखने तक नहीं था। मुस्लिम शाही तथा अनुक्रमण के वर्षों के सम्बन्ध में उसका दृष्टिकोण पक्षपातपूर्ण था। वह बलवान का बड़ा प्रभाव था। उसका उल्लेख महान् धार तथा निर्णय शासक के रूप में किया गया है। किन्तु पक्षपातपूर्ण ज्ञान पर भी तबक़ातान मिनहाज़ लिखना मूलतः के प्रारम्भिक इतिहास के लिए प्रथम श्रेणी का प्रामाणिक ग्रंथ है। इसके न घटनाओं का प्रमत्त वर्णन किया है और विधियाँ तथा मुख्य सामान्यतया साथ के निकट है। मिनहाज़ वर्णन के रचनाकारों के समय तक जीवित रहा किन्तु उल्लेख अनेक ग्रंथों का नासिरी के मृत्यु तक पूरा नहीं किया। इस कारण १२६० स १६५ ई तक का इतिहास अप्रकार में है। रचने के नाम ग्रंथ का अद्यतन में अनुवाद कर लिया है तथा सम्बन्धपूर्ण लिपिगर्भों द्वारा उल्लेख महत्त्व का और भा बढ़ा दिया है। अनुवाद सम्पूर्ण शोधरहित है।

(१०) अमार गुमरक रचिन मज़ाब-नुब-नुबु

उल्लेख एक महान् बर्क़ि या और उल्लेख काय के सभी रूपों में वर्णन

रचना का। १२६० से १२५५ तक उमन राज-व्ययि का पत्र धारण किया इसलिए वह जलापुरा गलजी से मुहम्मद बिन तुगलक तथा सभा स्थिती मुल्तान का गमवाली था। राजाय मुल पुत्र का उमन जलाउद्दीन के दरबारा निहाय के रूप में लिगा इसलिए उन घटनाओं का जोर ध्यान नहीं किया जा उससे सरदार के प्रतिपत्त थी। उससे जलापुरा के वध तथा मगाना जरा अलाउद्दीन का पराजय का उदय नहीं किया है। अपन सरक्षक का सफलता का उससे अनिश्चयानिपूर्ण घणन किया। इन दोषों के हात हुए भी ग्रंथ का ठोस मूल्य है। सगल न झूठ से वचन का प्रयत्न किया है जोर घटनाओं तथा तिथियों का ठीक विवरण दिया है। जनन घटनाओं का ता उससे स्वयं दगा था यहाँ उमन घणन का विषय मूल्य है। ग्रंथ अत्यधिक अनृत फारसा में लिगा गया है। प्रा. हबीब न अलाउद्दीन खनजा का रण-यात्राए नाम से उसका अग्रजी में अनुक्ति कर दिया है और स्वर्गीय वृष्णस्वामी आयगर न उसकी भूमिका लिखी है।

### (११) जियाउद्दीन बरनी रचित तारीख फीरोजशाही

नगल उच्च वंश में उत्पन्न हुआ जोर उससे पूवज खलजी शासकों के समय में उच्च राजकीय पदा पर काय कर चुके थे। बरनी स्वयं गियासुद्दीन मुहम्मद बिन तुगलक तथा फीरोज तुगलक का ठोस समकालीन था और मुहम्मद बिन तुगलक से उसका घनिष्ठ सम्बन्ध था। उसका ग्रंथ बनबन के रायाराहण से आरम्भ तथा फीरोज तुगलक के शासन के छोटे वय में समाप्त होता है। इसलिए खनजी युग मुहम्मद बिन तुगलक के शासनकाल तथा फीरोज के रायकाल के कुछ वर्षों के लिए वह अत्यधिक महत्त्वपूर्ण प्रामाणिक ग्रंथ है। इस १३५६ ई. में पूरा किया गया था। इसमें उपाख्यान भर पडे हैं किन्तु तिथियाँ तथा जोर की याता का अभाव है। ऐसा प्रतीत होता है कि बरनी को लम्बे लम्बे याख्यान देन का शौक था जोर कहीं नहीं उससे तथ्यों की तोट मराठ की है। अनेक घटनाओं का घणन भी उससे निजी दृष्टिकोण से रगा हुआ है। तिथिग्रम का भी उससे उचित ध्यान नहीं रखा है। पुस्तक का विषय मूल्य यह है कि नखल न राजस्व विभाग में महत्त्वपूर्ण पदा पर काय किया था और राजस्व व्यवस्था से भलीभाँति परिचित था उससे उससे विस्तार से घणन किया है।

बरनी सुशिक्षित व्यक्ति था जोर इतिहास नखल के दायित्व का भली भाँति समझता था फिर भी वह मूल विश्वासा से मुक्त नहीं था। उससे शली दुर्लभ है इसलिए कहीं कहीं उसका समझना कठिन हो जाता है। बगान की एशियाटिक सोसाइटी ने ग्रंथ को प्रकाशित किया है।

## (१२) फनवाए जहादारी

इस ग्रन्थ की रचना भी जियाउद्दीन बरनी ने की थी। १४वां शताब्दी के आरम्भ में इस पूरा किया गया था। इस ग्रन्थ में नफस ने राज्य की नीति के सम्बन्ध में-धार्मिक तथा धर्मनिरपेक्ष-पर अपने विचार लिखे हैं। राजनीतिक आचरण के लिए यह एक आदर्श विधि-संग्रह है। उसमें चाहता था कि मुस्लिम साम्राज्य का इसी के अनुसार चलना चाहिए।

## (१३) खाना भूखण्ड इसामी रचित फुतूह उस-सलतौन

यह ग्रन्थ गज़नवी वंश के समय में मुस्लिम विजय युग के एक शिखर की मुहूर्तिका का कायात्मक प्रतिनिधक है। इस १३४६ ई में पूरा किया गया था। इसकी रचना रजिबुल्लेखी ने की थी और बहमनी वंश के प्रथम शासक अलाउद्दीन हसन का समर्पित किया गया था। इस महनीयुक्त न केवल प्रवाहित किया है। शिखर की स्तम्भित न इतिहास के लिए यह उपयोगी ग्रन्थ है।

## (१४) इन्वन्तुहा रचित चित्त उत रहला

यह ग्रन्थ मोरक्को के विख्यात पद्यकार इन्वन्तुहा का यात्रा-वृत्तान्त है। उसने १२२७ ई में यात्रा आरम्भ की और उत्तरी अफ्रीका अरब ईरान चीन तथा कुम्भुनूनिपा के भ्रमण किया। तत्पश्चात् वह भारत जाया और १२ मिनवर्ष १३३३ ई की तिथि में उनका। हमारे देश में वर्ष १२४० ई में लकड़गा। मुस्लिम विजय युग के उग्र शिखर का राजी नियुक्त किया। आठ वर्ष तक उसने इस देश पर काय किया। उसके बाद मुस्लिम न अप्रमत्त शासन उग्र कागजार में शासन किया। कुछ समय उपरांत वह मुक्त कर दिया गया और १४२ ई में गजदून अलावर तीन भेजा गया। मार्ग में जहाज के टूट जाने में उग्र एक दुर्घटना का शिकार हुआ तथा अज्ञान व अज्ञानता के कारण आया फिर वह भारत में द्वीपगमन गया और एक वर्ष तक उसने यात्रा की व एक वर्ष पर काय किया। १४५ ई में उसने लकड़गा की यात्रा की, वहाँ में वह चौदह वर्ष तक आया और मरुत में ठहरा। अंत में वह मरुत की ओर चला गया और वहाँ में १२४६ ई में स्वयं चला गया। कुछ समय उपरांत उग्र मध्य अफ्रीका का पुनः भ्रमण किया और जून में १२५३ ई में अपने देश मोरक्को में निश्चित रूप में बस गया। वहाँ पर उग्र अपनी यात्रा का वृत्तान्त लिखा। १३३७ ई में उग्र का अन्त हुआ। इन्वन्तुहा मुस्लिम विजय युग के उग्र अन्त का प्रतिनिधक है। हमारे देश में वर्ष १२४० ई में लकड़गा और अज्ञान में उग्र का पतन का सम्बन्ध था। अज्ञान घटनाओं की टांगें तक जानकारी प्राप्त करने की सहायिका थी। इस कारण अज्ञान का अन्त मुस्लिम युग के अन्त का अन्त तथा

उत गमय वा नश वा नशा रीति गियाज ताकि क सम्बन्ध म प्रामाणिक मूत ग्रन्थ है किन्तु गमम मुल शोध भी है। तगर म बन्धन-कता गये तजान की प्रवृत्ति शीघ्र गणी है। इमर अतिगिवा उत फारमा तथा इन्गी का जन्डा नात गी या गगतिग यन् मय गाधना म जानकारी नगी एक्त्र कर गता था।

### (१५) शम्स तिराज अफीफ रचित तारीखे फीरोजशाही

यन् ग्रन्थ फीराज तुगनव क शासनकाल का इतिहास है। तगर का जन्म १५०६ म हुआ था। आग तनकर बन् फीराजशाह क ख्वाब का मन्स्य हा गया। उमने अपना ग्रन्थ निमूर क चत आत क उपरात १३६८ ई म रचा। फीरोजशाह के शासनकाल क त्रिग मह प्रथम शरी का प्रामाणिक ग्रन्थ है।

### (१६) सीरते फीरोजशाही

इम ग्रन्थ क तगर का नाम नात नही है। इमरी रचना १३७० ई म फीराज तुगनव की आजा से की गयी थी। उम मुल्तान के शासन क सम्बन्ध म यन् प्रथम शरी का ग्रन्थ है।

### (१७) फुतूहाते फीरोजशाही

इमम फीरोज तुगनव के अत्यादेश का सग्रन्थ है। उम मुल्तान की आजा नुमार ही इम ग्रन्थ की रचना की गयी थी और उसके शासन के इतिहास क त्रिग बहूत उपयोगी है।

### (१८) यहिया बिन अहमद रचित तारीखे मुबारकशाही

सुर्यवंश क इतिहास के त्रिग यही एक तत्वातीन प्रामाणिक ग्रन्थ है। गमम नी हुई तिथिया तथा घटनाओं का वणन सामान्यतया सच्चा है।

### (१९) अहमद यादगर रचित तारीख सलातीन ए-अफगना

इमम भारत म अफगाना क इतिहास का वणन है। तांग तथा मूय-वंश के उत्थान-पतन का इमम विशद वणन है। ग्रन्थ की रचना खल्व न अकबर क समय म की थी, इस्लाम तत्वातीन ग्रन्थ नही है। फिर नी तांग युग के इतिहास क त्रिग इसका महत्त्व है।

### (२) अब्बास सरखानी रचित तारीख शरशाही उपनाम तोहफा-ए-अकबरशाही

मूनत यन् मूर वंश का इतिहास है किन्तु तांगिया का भा वसम कुछ वणन है। इसका रचना अकबर की आजा से की गयी थी इसलिए यन् तत्वातीन ग्रन्थ नही है। फिर नी तादी वंश क इतिहास के त्रिग उपयोगी है।

(२१) नियामतुत्ता रचित मयजने अपगना

इस ग्रन्थ की रचना ज्ञानीगीर व शासनराज म हुई थी। इसमें विभिन्न अपगान कबीरा का सामान्य वृत्तान्त दिया हुआ है। इसमें गहर का तारीख मानेजनी तांगे वा मयजन अपगना नामक एक अन्य ग्रन्थ भा है। तौरी-युग व विण जाना उपाधी है।

(२२) अनुल्ला रचित तारीख दाऊदा

इस ग्रन्थ की रचना भी ज्ञानीगीर व शासनराज म हुई थी। इस अपगान ग्रन्थ की भाँति इसमें उपाध्याय तथा अपगाना की प्रथमा भरी गयी है। इसमें निषिद्या का अभाव है किन्तु भा तात्रिया व इतिहास व विण एगव बिना काम नया पद मचना। इसकी एक प्रति पटना व शृणावरण पुस्तकालय म उपलब्ध है।

अबबर व समय म विण गय कुल अन्य ग्रन्थ भी इस युग व इतिहास के विण उपाधी है जम अबुन फज्ज रचित अबवरनामा तथा जाइने अबरगी बशायनी रचित मुत्तमय उत-नशारीख निजामुदीन अन्मत् रचित तबवान म अबरगी तथा त्रिदू बग रचित तारीख फरिदना। तांगे वग व अन्तिम कथा व इतिहास व विण तुजुन म बाबरग भी उद्भूत मन्त्रपूण है।

### यात्रा वृत्तान्त

(१) अरबानी

मशान् मुर्की विमान अरबना भागन म बहुत पढ़न जान वाल पयन्का म म एक था। जगा कि हम पढ़न विण आय है वन् इतिहास म आया था और कुछ समय तक हमारे ने म टहगा था। उगात प्रसिद्ध ग्रन्थ अरबानी व भारत व नाम म विख्यात है। मशाऊ शाग इस अरबी म अनुलि विद्या गया है। (दुम्नम आखियन्त मागात्र) (इतिहास इतिहास ग्रन्थ न ६)।

(२) इन्तखुता

यह एक मारी था। ११२६ म बहू मिथ म उगात जीर आठ बय तक इस म म टहगा। उगात ज्ञा तुल मगा उगात वृत्तान्त अपा प्रसिद्ध ग्रन्थ म विद्या है। इसका विस्तृत पान्त म पढ़न से पक है (इतिहास इतिहास ग्रन्थ न १)। इसका अरबी म एक अनुवाक मी और दूसरा गिना न विद्या है।

(३) शाहीपोलो का यात्रा-वृत्तान्त (अरबी अनुवाद मूल द्वारा)

इस विवरिविषयात पयन्क न १११० इतिहास म भागन का प्रथम विद्या और ज्ञा तुल मगा उगात वृत्तान्त एक पुरान व म म विण विद्या। इस



षण म यीरे की घाता की बमी है फिर भी एम युग के इतिहास के लिए उगवा महत्व है ।

#### (४) अहुर राजा

राजा एर रानी राजदूत या और विजयनगर के मन्नाट के दरबार म आया था । यानी य १४४२ ई म १४४२ ई तक रहा । उसन विजयनगर की राजनीति म शासन मन्वधी आरिष तथा मामूति मशा का अर्या वणन एाडा है । अहुर राजा के वणन का प्रयाग मिय बिना विजयनगर मामाय का इतिहास पूण नहीं हो सकता ।

#### (५) निहोसो कोण्टी

कोण्टी रानी का पयटक था वह हमारे देश म १५२ ई म आया था । उसन हमारे देश का यानी के रीति रिवाजा तथा जनता की मशा का जो वृत्तान्त छोटा है उसका भी उतना ही महत्व है जितना कि अहुर राजा के वृत्तान्त का ।

#### (६) डोमिंगोस पेड्र

पेड्र पुतगाती पयटक था । उपरोक्त दो यात्रिया की भांति उसने भी दक्षिणी भारत की यात्रा की । उसन विजयनगर का विस्तृत वणन छोटा है । उसम रोम मध्य भर पडे है जिंका वस्तु मय है ।

#### (७) एडोर्डो चारयोसा

चारयोसा ने १५१६ ई म विजयनगर की यात्रा की थी । उसका दक्षिण भारत का और विशपसर विजयनगर का वणन महत्वपूर्ण है ।

उपरोक्त साधना के अतिरिक्त कुछ साहित्यिक ग्रंथ भी हैं जो एम युग म देश की दशा पर अच्छा प्रकाश डालते हैं । इनम सबसे अधिक महत्वपूर्ण पुसरव का किरान उम सानेन तथा एन उन मुल्क मुल्तानी का मुशा ए माहूर हैं ।



